यूरी गेर्मान

आदर्श की साधना

यूरी गेर्मान

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक डा० मदनलाल 'मधु'

Ю Герман

ДЕЛО КОТОРОМУ ТЫ СЛУЖИШЬ

на языке хинди

हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९७८

सोवियत संघ में मुद्रित

$Г\frac{70300-498}{014(01)-8}$ 61—78

येव्गेनी ल्वाविच श्वात्स
की स्मृति को समर्पित

अनुक्रम

पहला अध्याय

प्राकृतिक विज्ञान

वह नौवे दर्जे मे पढता था, जब एकाएक बिल्कुल ही बदल गया। वोलोद्या को किसी भी चीज़ मे कोई दिलचस्पी न रही, शतरज के खिलाडियो की मडली मे भी नही, जो उसके उदासीन होते ही टूट गयी, अपने दर्जे के अध्यापक स्मोरोदिन मे भी नही, जो उसे अपनी कक्षा का सबसे अच्छा छात्र मानता था। और तो और उसे वार्या स्तेपानोवा मे भी कोई रुचि न रही थी, जिसके साथ उसे नवम्बर की छुट्टियों तक धीरे धीरे बहती हुई उचा नदी को उसके खडे तट से देखने मे बडा मजा आता था। खुशी से भरपूर और दिलचस्प, अत्यधिक व्यस्त और हो-हल्लेवाली और छोटी-बडी सभी चीज़ो के जादू स भरी हुई उसकी ज़िन्दगी अचानक मानो रुककर रह गई, हर चीज़ ने जैसे दम साध लिया, कान लगाये और मानो यह कहते हुए चौकन्नी होकर खडी हो गई—"देखेंगे नौजवान, आगे चलकर तुम्हारा क्या होता है!"

ऐसा प्रतीत होता था मानो कुछ भी तो खास बात नही हुई थी।

वोलोद्या और वार्या सिनेमा देखने गये थे। उस रात को भी हर दिन की तरह पतझर की बूदा-बादी हो रही थी। वार्या सदा की भाति "नाटक कला" के बारे मे अपनी ऊल-जलूल बात करती जा रही थी (वह अपने स्कूल की नाटक मडली की प्रमुख अभिनेत्री थी)। चित्रपट पर किसी विशेष नसल की कुछ अजीब-सी मुर्गिया पख फडफडा रही थी। अचानक वोलोद्या बिल्कुल सावधान हो गया, उसने नाक से सू-सू की और दम साध लिया।

"चुप हो जाओ," उसने वार्या से कहा।

"क्या बात है?' वार्या ने हैरान होकर पूछा।

चुप भी रहोगी या नहीं ?' उसने खीझते हुए धीरे से कहा।

चित्रपट पर एक वैज्ञानिक प्रकट हुआ था। वह पिचकारी में कोई तरल पदार्थ भर रहा था। उसका माथा चौड़ा, होंठ पतले और चेहरा खरा खरा सा था। इस महान वैज्ञानिक में कोई लुभावनी बात या बोलने के ढंग में कोई 'आकर्षण' नहीं था। वह अपना काम भी खास चतुराई से नहीं कर रहा था। शायद वह कुछ घबराया हुआ भी था क्योंकि समाचारों के लिए उसके चलचित्र खींचे जा रहे थे। इस तरह के लोग तो फोटो खिंचवाना भी पसन्द नहीं करते और अब उसे कैमरामैन घेरे हुए थे।

वार्या को प्रयोगशाला के गिनी पिग पर बड़ी दया आ रही थी।

'आह, बेचारा!' वार्या ने डरी-सहमी नजर से वालोद्या की ओर देखते हुए कहा।

वालोद्या ने तो अब शी शी करके भी उसे चुप नहीं कराया। सफेद चोगा और सफेद टोपी पहने हुए वैज्ञानिक जो कुछ कह रहा था, वालोद्या बहुत ध्यान से उसी को सुन रहा था। वह तो मानो खिल उठा था। वैज्ञानिक बता रहा था कि किसी जमाने में एक बूढ़ा और बुद्धिमान चिकित्सक आस्क्लेपियस और उसकी बेटी पानासीआ रहते थे।

'मेरे तो कुछ भी पल्ले नहीं पड़ रहा,' वार्या ने फुसफुसाकर शिकायत की। 'कुछ भी तो नहीं। तुम्हारी समझ में कुछ आ रहा है, वालोद्या?'

वालोद्या ने सिर हिलाकर हामी भरी। वैज्ञानिक के बारे में समाचार-चित्र के बाद अब फीचर फिल्म चलती रही। वालोद्या गुमसुम, अपने नाखून काटता और सोच में डूबा हुआ बैठा रहा। फिल्म देखकर वैज्ञानिकों की ... फिर भी वह एक बार मुस्कराया तक नहीं। कभी-कभी वह ऐसा हो जाता था। अचानक सभी से दूर हो जाता था, छोटी मोटी बातों की दुनिया से भागकर गहरे चिन्तन में खो जाता था, अपने ही कल्पना-संसार में मगन लगता था। इस बार भी ऐसा ही हुआ। फिल्म खत्म होने पर वह वार्या को उसके घर छोड़ने गया, उसके साथ चलता हुआ भी उसके साथ नहीं था, अपने ही विचारों में डूबा-खोया हुआ था।

"क्या सोच रहे हो तुम?" वार्या ने पूछा।

"कुछ भी तो नही।" अपने ही विचारो मे डूबे वोलोद्या ने झल्लाकर उत्तर दिया।

"कितना मजा आता है तुम्हारे साथ रहने पर।" वार्या ने कहा। "बस, कुछ पूछो न। मुझे लगता है कि हसते-हसते मेरे तो पेट मे बल पड जायेंगे।"

"क्या मतलब?" वोलोद्या ने पूछा।

इस तरह वे लगभग तीन महीनो के लिये एक-दूसरे से जुदा हो गये। वार्या बुरा मान जानेवाली और गर्वीली थी। इधर वोलोद्या खोज और मानसिक उथल-पुथल, बहुत पहले से जाने जा चुके सत्यो की खोज और जागरण की रातो की दुनिया मे खो गया था। वह खो गया था असीम ज्ञान के ससार मे, जहा स्वय उसका अपना कोई महत्त्व नही था, जहा वह झक्कड मे धूल के एक कण के बराबर था। वह ऐसे शब्दो के भवर मे फसा रहता, डूबता-उतराता रहता, जिनके लिये उसे बार-बार विश्वकोश देखना पडता। वह ऐसी किताबो पर मत्थापच्ची करता, जो उसकी समझ मे बिल्कुल न आती। कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते, जब वह अपने को पूरी तरह असहाय अनुभव करता हुआ रुआसा सा हो जाता। पर फिर ऐसे क्षण भी आते, जब उसे लगता कि बात उसकी समझ मे आ रही है, कि वह स्पष्ट हो रही है, कि अब कठिनाई नही रही। काश कि वह फला अध्याय मे फला पृष्ठ समझ जाये। उसे तो बस, अब उसकी गहराई मे उतरना है और तब पूरी तरह बात बन जायेगी। पर वह फिर से अधेरे मे भटकने लगता, क्योकि अभी छोटा ही था, बुआ अग्लाया के शब्दो मे "बुद्धू" ही तो था।

"यह क्या है?" एक बहुत ही ठडी रात को बूआ ने वोलोद्या को "माद" मे आकर पूछा। बहुत अर्से से उसके छोटे से कमरे को "माद" ही कहा जाता था।

"कहा?" बडी मुश्किल से किताब से नजर हटाते हुए वोलोद्या ने पूछा।

"अरे, वह। तुमने क्या चित्र खरीदने शुरू कर दिये हैं?"

"वे चित्र नही हैं। वह तो 'डाक्टर तूल्पिउस के शरीररचना विज्ञान का पाठ' नामक रेम्ब्रात के चित्र की एक कापी है।"

"ओह यह बात है" अग्लाया ने कहा। "अरे बुद्धू, तुम्हे क्या जरूरत पड गई शरीर रचना-विज्ञान के पाठ' की?"

मुझे क्या जरूरत है 'शरीर रचना विज्ञान के पाठ' की? बूआ अग्लाया पेत्रोना मुझे इसकी इसलिये जरूरत है कि मैं डाक्टर बनना चाहता हू वोलोद्या ने जोर से अगडाई और मजे से जम्हाई लेते हुए कहा। 'मैंने ऐसा ही फैसला किया है।"

तुम्ह इतना और जोड देना चाहिये कि फिलहाल तुमने ऐसा फैसला किया है अग्लाया ने सलाह दी। "तुम्हारी उम्र म फैसल अक्सर बदलते रहते है। मुझे अच्छी तरह से याद है कि कभी तुमने हवाबाज और फिर जासूस बनने का भी फैसला किया था।"

वालोद्या चुप रहकर केवल मुस्करा दिया। हा, उसे याद था कि कभी उसन इस तरह का इरादा भी ज़ाहिर किया था।

'यह तूल्पिउस क्या कोई अच्छा डाक्टर था?" अग्लाया ने पूछा।

"वह हालडवासी था" धुधले पडे हुए चित्र को ध्यान से देखते हुए वोलोद्या ने उत्तर दिया। 'उसका नाम था वान तूल्प। वह गरीबो का डाक्टर और अमस्टडम के विश्वविद्यालय मे शरीर रचना विज्ञान का प्राफसर था। अक्सर उस मोमबत्ती लिय हुए डाक्टर के इस आदश वाक्य के साथ, जो कहावत बन गया है, चित्रित किया जाता है– दूसरा को रोशनी देता हू, अपना आप जलाता हू'।"

बहुत सुदर!' अग्लाया न गहरी सास ली। 'अरे, वाह, कैसी अच्छी अच्छी बात सीख गये हो तुम। और किताबे भी कितनी इकट्ठी कर ली है तुमने अपनी इस माद म "

बूआ अग्लाया ने शरीर रचना विज्ञान की एटलस खोली, जा वालोद्या पुस्तकालय से लाया था। वह उसे देखते ही काप उठी।

ओह कसी भयानक चीजें है इसम! आओ, चलकर चाय पियें। काफी देर हो चुकी है! चलो भावी तूल्पिउस।"

जाडे की छुट्टिया आत न आते वोलोद्या की रिपोट म इतने अधिक बुर अक दज हो चुक थे कि वह खुद भी हैरान रह गया। वह किसी स बात करक अपना मन हल्का करना चाहता था। वह गुस्स स बौखलाया हुआ चरचराती बफ पर लम्बे-लम्बे डग भरता वार्या स मिलने के लिय प्रोलतार्स्काया सडक की आर चल दिया। वह खोया-सा सोचता जा

रहा था—"दूसरो को रोशनी देता हू " यह वाक्य वहुत बुरी तरह दिमाग मे घुसकर रह गया था।

"वार्या तो घर पर नही है, रिहसल करने गई है," वार्या के सौतेले भाई येव्गेनी ने कहा। वह गोल-मटोल चेहरे और ढीली-ढाली चालवाला नौजवान था। वह वालो को सवारने के लिये जाल लगाये हुए था (येव्गेनी अपनी शक्ल-सूरत का बहुत ध्यान रखता था, उसे बालो को वढिया ढग से सवारे रखना पसन्द था और इसके लिये वह सभी तरह की उल्टी सीधी हरकते करता था)। वह इत्मीनान से सोफे की टेक लगाये हुए भौतिक विज्ञान की पुस्तक पढ रहा था। फ्लैट मे वैनिला बिस्कुटो की बडी प्यारी सुगध फैली हुई थी। येव्गेनी की मा की एक सहेली, मदाम लीस, साथवाले कमरे म पियानो बजा रही थी। वहा से दो आवाजें सुनाई दे रही थी। येव्गेनी की मा वाले तीना आद्रेयेव्ना की थकी-सी और दोदिक की भारी भरकम आवाज। दोदिक मोटर साइकल और कार चलाने तथा टेनिस खेलने के लिये प्रसिद्ध था और नगर तथा प्रदेश के खेलो का मुख्य निर्णायक भी था।

"कार खरीदने का इरादा नही है क्या?" येव्गेनी ने पूछा। "दोदिक बेचना चाहता है। १६१४ का 'इस्पानो-सूईज़ा' मॉडल है, बहुत अच्छी हालत मे। वह दो कारे वेचकर एक नयी कार खरीद भी चुका है। वह वहुत तुरत फुरत काम करता है। मुझे तो उससे ईर्ष्या हाती है।"

वोलोद्या चुप रहा।

"वडी वेहूदा ज़िदगी है," येव्गेनी ने ऊवी-ऊवी आवाज़ म कहा। "तोते की तरह कितावें रटते जाओ, रटते जाओ, पर इसमे तुक ही क्या है? फिर भी पढना तो हमे होगा ही," उसने दूसरा, उत्साहपूण तथा कामकाजी बातचीत का ढग अपनाते हुए कहा। "यही मैं कर भी रहा हू। पर लोग कहते हैं कि तुम इसके लिये कोई कोशिश नही करते।"

"हा, यह सही है," वोलोद्या ने उदासीनता से स्वीकार किया।

"वस, यही तो बात है! पर यह अच्छा नही है। अब तुम मुझे ही लो। कुछ विषय है, जो मेरे दिमाग मे किसी तरह भी नही घुसते। बडा ही ज़ोर डालना पडता है दिल दिमाग पर। फिर तुम तो जानते हो कि मै कभी तपेदिक का भी रोगी था।"

'वाह र तपेदिक क मरीज! येव्गेनी के लाल-लाल चेहरे को दखते हुए वोलोद्या न हसकर कहा।

इस मामल म ना सूरत वहुत ही धोखा दे सकती है," येव्गेनी न वुरा मानत हुए उत्तर दिया। कुल मिलाकर, तपेदिक को ऐसा मामूली राग नहा समझना

कुल मिलाकर —यह येव्गेनी का तकिया कलाम था। उस "कुल मिलाकर क नाम स ही पुकारा जाता था। यव्गेनी ने तपेदिक की विस्तत चर्चा की और यह बताया कि कस इस भयानक बीमारी से उसे बचाया गया था। हा, यही कहना चाहिय कि उसे बचाया गया था और इसके लिये हर तरह की दवाई यहा तक कि ऐलो और शहद म चर्वी मिलाकर भी ग्राजमायी गई थी।

मा का प्यार तो वडे वडे करिश्मे कर सकता है!" यव्गेनी ने भावुक होते हुए कहा। उस कभी कभी करुणारस की धारा म वहना अच्छा लगता था। मगर वोलोद्या की लम्बी जम्हाई के कारण उसकी तपेदिक की दास्तान अधूरी ही रह गई। अब उसने अपने दोस्त की आलोचना करनी शुरू की।

तुमन भी समूह क जीवन से नाता तोड लिया है," येव्गेनी ने सदभावना से कहा। "कुल मिलाकर तुम अपने म ही खोकर रह गये हो। यह वुरी वात है। तुम्ह युवा कम्युनिस्ट लीग के एक सच्चे सदस्य की भाति ज्यादा जोश दिखाना चाहिये। यह मत भूलो कि हम किसी वुर्जुआ कालेज म नही अच्छे सोवियत स्कूल म, मजदूरा के स्कल मे पढ़ रहे है।

तुम्ह कसे मालूम है कि मरा स्कूल अच्छा है?' वालाद्या न पूछा।

कुल मिलाकर हमारे सभी स्कूल वुर्जुआ कालेजो स वेहतर है,' यव्गेनी न यह कहत हुए आख मारी, दो जवाव!"

वोलाद्या को झटपट काई जवाव नही सूझा। यव्गेनी ने अपनी वात जारी रखी—

"अगर तुम्ह कठिनाइया का सामना करना पड रहा है, तो छात्र और अध्यापक तुम्हारी मन्द करगे। तुम्हार यहा क्या समूह म एका और हल-मल नहीं है? जरूर हागा। सहपाठी-साथी तुम्हारी मन्द करग।

अरे, बाबा सुखारेविच भी तो तुम्हारे ही दर्जे म है न! वैसे ता खैर वह गधा है, पर सद्भावनाओ से ओतप्रोत गधा। मैंने सुना है कि पढाई मे पिछडे हुए छात्रा की वह हमेशा मदद करता है। उससे कहो, वह तुम्हारी मदद कर देगा।"

बगलवाले कमर म दोदिक ने जोर का ठहाका लगाया। येव्गेनी उठा, घरेलू स्लीपर फटफटाता हुआ दरवाज़े की ओर गया और उसे कसकर बन्द कर दिया।

"मेरी तो समझ म नही आता कि मैं क्या करू," उसने ज़रा परेशान होते हुए कहा। "माटर कारा और मोटर साइकिला का धधा करनवाला यह कामरेड तो लगभग चौबीसा घटे यही जमा रहता है। मेरी मा को न जाने उसम क्या दिखाई देता है? जब सागर-गजन घर आयेगा, तो मज़ेदार बातचीत होगी "

वोलोद्या खाली-खाली आखा से उसकी ओर देखता रहा। "सागर-गजन' से येव्गेनी का शायद अपने सौतेले बाप से ही अभिप्राय था। उन किताबा स मत्थापच्ची करते हुए, जिनका स्कल के विपया से कोई सम्बध नही था, वोलोद्या न जो उनीदी राते बितायी थी, उनके कारण उसकी गुद्दी में दद हो रहा था और आखें जल रही थी।

"मज़ेदार बातचीत क्यो होगी?" वोलोद्या न पूछा।

"तुम अनुमान नही लगा सकते क्या?"

"नही।"

"मेर ख्याल मे तापति इस तरह की स्थिति को पसन्द नही करत।"

येव्गेनी ने दरवाज़े की ओर सकेत किया, जिसके पार अब मदाम लीस की ज़ोरदार हसी सुनाई दे रही थी। वोलोद्या की समझ म फिर भी कुछ नही आया।

"पर खैर, तुम यह बताओ कि मुझे क्या करना चाहिय?" वोलाद्या ने पूछा।

"कुल मिलाकर, मैं तो यही कहूगा कि तुम अपने को सम्भालो," येव्गेनी न जवाब दिया। "अगर मैं तुमसे वैसे ही साफ साफ बात करू, जैस मद मर्द से, तो हकीकत यह है कि तुम मुझसे कही ज्यादा समझदार हो। पर मुसीबत यह है कि तुम किसी एक चीज़ म देर तक अपना मन ही नही लगा पाते। वेशक यह बहुत ही उबानेवाली चीज़

है, मगर हम स्कूल की पढाई तो खत्म करनी ही है। ग्राज तो मा-बा हैं, पर कल हम होगे ग्रौर हमारी किस्मत। ग्राखिर हम कोई कुली उली तो बनना नही चाहते "

यव्गेनी ने ग्रपनी भौतिक विज्ञान की पुस्तक सोफे पर फेंक दी ग्रौर वोलोद्या को कुछ हिदायत देने लगा। वह तो सदा की भांति सदभावनापूर्ण था, किन्तु उसका उपदेश सुनते हुए वोलोद्या को ऐसा लगा मानो उसने मतली लानेवाली बहुत ज्यादा मिठाई खा ली हो। यह सच है कि येव्गेनी सही बात कह रहा था, पर न जाने क्या वास्तव में वह सही नही था। उसके सहीपन म कुछ तिकडमबाजी थी कुछ चालाकी थी। ग्रपनी पारदर्शी ग्राखो से सामने की ग्रोर एकटक देखता हुग्रा येव्गेनी बनावटी ढग से शब्दो पर जोर देकर कह रहा था –

"स्कूल की मण्डली को ही ले लो। यह तुम्हारा व्यक्तिगत मामला है, पर स्कूल के लिये यह ग्रच्छी बात है कि उसम कोई बढिया नाटक मण्डली हो ग्रौर वह जब-तब कोई बढिया नाटक प्रस्तुत कर सके। ग्रध्यापको की सभा मे इस चीज़ की ग्रोर ध्यान दिया जाता है। या फिर दीवारी समाचारपत्र को ही ले लो। मैं साल भर से उसका सम्पादक हू। वैसे तो खुद मुझे भी उसम कोई खास दिलचस्पी नही है, पर स्कूलवालो के लिये वह बहुत महत्त्व रखता है। तुम यह समझते होगे कि इसम बहुत वक्त लगता है, पर मैं सारा हिसाब किताब जोडकर देख चुका हू सभी ग्रध्यापक यह जानते है कि मैं सम्पादक हू ग्रौर वे जाने ग्रनजाने मेरी जन सेवा की भावना के लिये मुझे रियायत दिये बिना रह ही नही सकते। फिर ग्रध्यापको मे भी इन्सानी कमजोरिया होती ही हैं। समाचारपत्र म ग्रपनी प्रशसा के कुछ शब्द पढकर वह धन्यवाद हो या केवल शुभकामनाए, उन्हे भी खुशी तो होती ही है। ग्रब तुम ग्रपने को ही ले लो। तुम्हे प्राकृतिक विज्ञानो म दिलचस्पी है। यह बहुत ग्रच्छी बात है। स्कूलवाला को ऐसे शौक बहुत पसन्द हैं, मगर विशेष सीमाग्रो, स्कूल की सीमाग्रो म ही, मेरे दोस्त! तुम्हे यह बात हरगिज नही भूलनी चाहिये। तुम्हे ऐसी दिलचस्पीवालो का एक मण्डल बनाकर ग्रपने ग्रध्यापक के पास जाना ग्रौर यह कहना चाहिये – प्यारे शतान इवानोविच या जो भी उसका नाम हो हम सभी

छात्र आपसे यह प्रार्थना करने आये हैं कि आप हमारे प्राकृतिक विज्ञान मण्डल के अध्यक्ष बन जायें। हम आपको, केवल आप ही को चाहते हैं। बस, कुछ ऐसी बकवास करनी चाहिये। समझे?"

येव्गेनी ने अपने सिरहानेवाली मेज की दराज में से एक सिगरेट निकालकर जलाई और अंगडाई लेकर बोला—

"समझ गये न?"

"तुम मूर्ख नही हो," वोलोद्या ने कहा।

"जैसा तुम समझो," येव्गेनी ने कुछ निराश होते हुए कहा। "क्या तुम वार्या की प्रतीक्षा करोगे?"

वोलोद्या कुछ बुझा-बुझा-सा घर की ओर वापिस चल दिया। वैनिला बिस्कुटो की गंध और येव्गेनी की ऊबानेवाली आवाज देर तक उसके दिल दिमाग पर छायी, रही। जब उसने उस नुक्कड को लांघा, जहा रादीश्चेव का स्मारक था तो उसे वार्या दिखाई दी। वह लडको की एक भीड मे चली जा रही थी। उसने हाथ हिलाकर वोलोद्या का अभिवादन किया। स्कूल की नाटक मण्डली के मुख्य दिग्दर्शक सेवा शापीरो की ऊची आवाज ठिठुरी और जमी हुई हवा मे गूज रही थी—

"मैं बायमेकेनिक्स के सिद्धान्तो का समर्थन करता हू और स्तानिस्लाव्स्की के विचारो के सर्वथा विरुद्ध हू। बडा सम्मान करते हुए भी "

"बुद्धू छोकरे," वोलोद्या ने ऐसे सोचा मानो वह कोई बुजुर्ग हो। पर वह इस विचार से चौक पडा। कारण कि कुछ ही समय पहले तक खुद उसे भी इन चीजो में बडा मजा आता था।

"टन!"—ऊचे आकाश मे घंटे की आवाज जोर से गूज उठी। वह शनिवार का दिन था और गिरजाघर मे सन्ध्या की प्रार्थना हो रही थी। घंटा बज रहा था—टन, टन।

सभी पादरी मुर्दाबाद,
सभी धर्म के ठेकेदार।
हम बोलेंगे नभ पर हल्ला
दूर भगायें ईश्वर, अल्ला

स्कल क नास्तिक क्लब के लडके-लडकिया का एक दल सडक पर उक्त पक्तिया गाता चला आ रहा था। वोलोद्या न उनकी मुखिया गाल्या अनाखिना को रोककर कहा—

'दूर भगाय दूर भगाय!' इस तरह के प्रचार मे भला क्या तुक है? इसक बजाय तुम्ह ईसाई धम के जाच-न्यायालय (इनक्विजिशन) के बारे म कोई वार्ता सुननी चाहिये।"

लडके लडकिया वोलोद्या और गाल्या के गिद जमा हो गय। वे बडे रग म थे और जिओर्दानो ब्रूना या नोलानत्स ब्रूना (जसे कि वालोद्या उस महान व्यक्ति का नाम लेता था) की दुखद कहानी नहा सुनना चाहते थे। इस समय तो उन्ह मिगेल सेर्वेत के बारे म भी कुछ सुनन की इच्छा नही थी। उसे दो बार जलाया गया था पहली बार तो उसका बुत और फिर उसके द्वारा लिखी गई सभी पुस्तको के साथ उसे जिन्दा जलाया गया था। शरीर रचना विज्ञान के जनक आन्द्रिआस वेसालिअस की भी हत्या उन घणित धार्मिक जाच कर्ताओ ने करवा डाली थी। उन्होने उसे पवित्र धरती—इजराइल—की धम-यात्रा के लिये भजा था मगर उसे ले जानेवाली नाव डूब गई थी।

'जानते-बूझते उसकी हत्या की गई" वोलोद्या के एक मित्र बोरीस गूबिन न कहा। यह सब पहले से ही तय किया हुआ था।"

जहा तक गलिलेय का सम्बध है" वोलोद्या कहता गया, 'तो उसका तो दम खुश्क हो गया था। उसने उनकी बाइबिल पर हाथ रखकर यह कहा था कि वह श्रद्धेय मुख्य पादरी का बडा सम्मान करता है और इस बात के लिये कसम खाई थी कि पवित्र धम के प्रचार म यकीन रखता है और उसे सही मानता है। हा यह सही है कि उस समय तक वह बूढा हो चुका था '

'टन! टन! टन!' गिरजे के घटे की गज सुनाई दे रही थी।

'घर आओ चले," गाल्या ने कहा। "वोलोद्या, वैसे अगर तुम खुद ही इस विषय पर एक वार्ता दे डालो तो कुछ बुरा न रहे "

वोलोद्या के इस पाडित्य उसकी आखो की गुस्से से भरी चमक और उसके दुबलेपन से कुछ-कुछ परेशान होकर वे सभी एकसाथ वहा स चल गय।

"जब देखो, वह शिक्षा देता है, शिक्षा देता रहता है," गाल्या ने झल्लाकर कहा। "बडा आया शिक्षक कही का!"

"ऐसा नही कहो," बोरीस गूबिन ने कहा। "वह तो सचमुच सोचने समझने और बहुत कुछ पढनेवाला लडका है।"

पिता घर आये

घर मे दाखिल होने और ड्योढी की बत्ती जलाने के पहले ही तम्बाकू तथा चमडे की हल्की गन्ध से वोलोद्या यह समझ गया कि पिता जी घर आये है। ओवरकोट पहने-पहने ही वह खुशी से चिल्लाता हुआ पिता के कमरे की ओर भागा गया। अफानासी पेत्रोविच सदा की भाति तने हुए मेज पर बैठे अखबार पढ रहे थे। वे अच्छे ढग से इस्तरी की हुई फौजी कमीज़ पहने थे, जिस पर हवाबाज के कालर की फीतिया और आस्तीनो पर सुनहरे पद चिह्न लगे हुए थे। उनकी पेटी कुर्सी की टेक पर लटक रही थी, जिसका यह मतलब था कि वे रात को घर पर ठहरेगे, फौरन चले नही जायेंगे। उन्होने सदा की भाति हाथ मिलाकर एक दूसरे का अभिवादन किया। पिता ने अपनी आखो को ज़रा सिकोडा और बेटे को अपने साथ सटा लिया। पर उन्होने एक दूसरे को चूमा नही। वे ऐसा नही कर पाते थे। अफानासी पेत्रोविच ने एक दो बार बेटे के कधे को थपथपाया और कहा कि कोट उतारकर खाने की मेज पर बैठ जाये। बूआ अग्लाया मछली से तैयार की गयी साइबेरियाई ढग की कचौरिया से भरी प्लेट लिये हुए रसोईघर से आई। उसका चेहरा खिला हुआ था और आखो मे खुशी की चमक झलक रही थी। वह अपने भाई को बहुत प्यार करती थी, उसे उन पर गर्व था और उनके घर आने के अवसरो को वह अक्सर पर्व की तरह मनाती थी।

"अपना हालचाल सुनाओ," ठडी वाद्का का एक जाम पीने के बाद पिता ने कहा।

वोलोद्या ने उन्हे सभी कुछ कह सुनाया, कुछ भी नही छिपाया। अफानासी पेत्रोविच अपने बडे-बडे हाथो मे एक कचौडी लिये हुए टकटकी बाधकर बेटे की ओर देख रहे थे।

"वह यह सब अपने मन से बना रहा है," अग्लाया ने चिल्लाकर कहा। "यह सच नहीं हो सकता। वह तो हमेशा पढ़ाई में इतना अच्छा था, स्कूल का सबसे अच्छा छात्र था।"

'ऐसा किसलिये हुआ?' अपनी बहन की बात की ओर ध्यान न देते हुए अफानासी पेत्रोविच ने पूछा।

"मैं यह बाद में बताऊंगा" वोलोद्या ने जवाब दिया। "खास बात यह है कि मैंने वनपालिक बनने का पक्का इरादा कर लिया है।"

पिता के चेहरे पर मुस्कान की झलक तक भी नहीं थी।

"वह रात रात भर पढ़ता रहता है," बूआ अग्लाया ने फिर टोका। 'उसने घर में इतनी किताबें लाकर भर दी हैं कि आदमी दंग रह जाता है और अब यह अजीब-सी बात सुनने को मिल रही है। यह झूठ है बिल्कुल झूठ है!

बाद में जब बूआ अग्लाया मेजबानी की दौड़धूप से थककर सो गई तो बाप-बेटा एक-दूसरे के करीब बैठ गये और वोलोद्या अपने पिता की बात सुनने लगा।

"मेरे लिये गलत सही का निर्णय करना कठिन है," सिगरेट पीते हुए अफानासी पेत्रोविच ने कहा। "मैं तो विद्वान नहीं, हवाई सेना का हवाबाज हूं। फिर भी मेरे ख्याल में हर विज्ञान की अवश्य कोई नींव होनी चाहिये। मसलन मेरे हवाबाजी के धंधे को ही ले लो। यह कहना बहुत आसान लगता है—लीवर आगे, लीवर पीछे—मगर फिर भी "

वे एक-दूसरे से सटे हुए बैठे थे और इसलिये वोलोद्या यह नहीं जान सकता था कि उसके पिता किधर देख रहे हैं। पर वह उनकी गम्भीर, शान्त और कड़ी नजर को बिल्कुल उसी भांति अनुभव कर रहा था, जैसे अपने हड़ीले कंधे के निकट अपने पिता की मजबूत मांस पेशियों को। वह खुश था, अपने को सुरक्षित महसूस कर रहा था, बहुत ही खुश था। कठोर आकृति और खुरदरे चेहरे पर झुर्रियोंवाला यह दिलेर और साहसी हवाबाज उसका पिता है और उसके साथ दोस्त की तरह बात करना तथा सोच समझकर शब्द चुनना—यह एक ऐसी अनुभूति थी, जिसकी दुनिया में किसी भी चीज से तुलना करना सम्भव नहीं था।

"फिर भी, मेरे बेटे, यह बात इतनी सीधी-सरल नही है," अफानासी पेत्रोविच विचारो मे डूबे-डूबे से कहते गये। "जाहिर है कि अगर कोई अपने से आगे जानेवाले व्यक्ति के बराबर रहना चाहता है, तो उसे इसके लिये कोई खास कोशिश करने की जरूरत नही होगी। पर यदि वह हवाबाजी को एक कदम, या कुछ कदम आगे बढाना चाहता है, तो इसके लिये बहुत ही मजबूत नीव की जरूरत होगी। तब केवल हो-हल्ला करने से काम नही चलेगा। मेरी इस बात को गाठ बाध लो। मैं काफी जिदगी देख चुका हू और तुम उसकी राह पर अभी अपना सफर शुरू ही कर रहे हो "

इसके बाद रात को वे वोलोद्या की "माद" मे गये, जहा सभी ओर किताबें, पत्र-पत्रिकाए और सक्षिप्त टिप्पणिया बिखरी हुई थी और दीवार पर रेम्ब्रान्त द्वारा बनाया गया "शरीर रचना-विज्ञान का पाठ" चित्र लगा हुआ था। वहा बेटा अपने पिता को प्राकृतिक विज्ञाना के बारे मे बताने लगा। अफानासी पेत्रोविच वोलोद्या के बिस्तर पर बैठे बेटे के उत्तेजित और उतरे हुए चेहरे को बहुत ध्यान और पैनी नजर से देख रहे थे और चिकित्साशास्त्र की नयी उपलब्धियो, सच्चे नवीकारक के लक्षणो, कृत्रिम प्रोटीनो की खोज और मानव हृदय के आपरेशन की विधि के बारे में वोलोद्या की जोशीली बाते सुन रहे थे।

"यह तो तुम बेपर की उडा रहे हो, बेटा," अफानासी पेत्रोविच ने कहा। "मानव हृदय का आपरेशन, यह अतिशयोक्ति है।"

"अतिशयोक्ति!" वोलोद्या चिल्लाया। "आप इसे अतिशयोक्ति कहते है। मैं क्षमा चाहता हू, पिता जी, पर आपके शब्द मुझे उन लोगो की याद दिलाते हैं, जो पिछली शताब्दी के नौवे दशक मे जानवरा के दिला मे टाके लगानेवाले रूसी सजन फिलीप्पोव पर हसा करते थे। ऐसा ही जमन सजन लूदविग रेहन के साथ हुआ था, जिसने १८६६ मे दिल के घाव को टाका लगाया था और रोगी जिदा रहा था। इन पर हसनेवाले लोग विज्ञान के क्षेत्र मे दकियानूसी हैं "

"अच्छी बात है, मेरे नवीकारक," पिता ने बेटे को शात करते हुए कहा। "हा, हा, बात आगे बताओ। तुम लोगो के कटे हुए सिरा को तो फिर से नही जोडने लगोगे?"

यह ता आप मज़ाक कर रहे हैं,' वोलोद्या ने बिगडते हुए कहा। 'सयोगवश आप हवाबाज है और उडनवाले आदमी के बारे म सपन "

अच्छी बात है अच्छी बात है," अफानासी पत्रोविच ने टोकते हुए कहा। ' म समझ गया तुम्हारी बात, पर दुनिया म युद्ध जैसी चीज़ें भी ता है

पर यहा युद्ध का क्या प्रश्न पैदा होता है?" वोलोद्या ने बातचीत का सम्बध न समझते हुए पूछा।

तुम समाचारपत्र तो पढते ही होगे?

पढता ता हू पर नियमित रूप स नही।'

नियमित रूप से पढा करो। तुम्हे हिटलर, गोयबेल्स और हिम्मलर तथा उस बदमाश गोएरिंग की भी जानकारी होनी चाहिये, जो अपने आप को हवाबाज कहता है। तुम्ह क्रूप्प वान बोहलेन के बारे म भी जानना चाहिये। कुछ ही दिन पहले हमारे यहा एक कमिसार आया था बहुत ही समझदार आदमी। उसने वक्तवादियो के लिये नही, बल्कि सेना के लिये विशेष रूप से तैयार किया गया बहुत बढिया विश्लेषण प्रस्तुत किया। इसलिये, मेरे बेटे, अगर युद्ध शुरू हो गया, तो तुम्हारी ये सभी कृत्रिम प्रोटीन जहा की तहा धरी रह जायेगी "

सच? वोलोद्या ने उदासी से पूछा।

निश्चय ही। अगर सभी देशो के साम्राज्यवादी बाधा न डालते, तो विज्ञान यकीनन बहुत आगे बढ गया होता।"

अफानासी पेत्रोविच ने अपनी फौजी कमीज़ के कालर का बटन खोला घडी भर का विचारो म डूब गये और फिर उदासी और साथ ही कुछ झेंप भरी मुस्कान के साथ बोले—

'हमारा वश अच्छी तरक्की कर रहा है। तुम्हारे दादा खार्कोव म गाडीवान थे मैं एक फौजी हवाबाज़ हू, एक रेजीमेट का कमाडर। और मेरा बेटा कृत्रिम प्रोटीनें बनायगा, वैज्ञानिक बनेगा। बडे दुख की बात है कि आज तुम्हारी मा इस दुनिया मे नही है, वरना उसे बहुत खुशी होती। अच्छा अब मुझे और कुछ बताओ अपने बारे म।'

आधी रात बीतने के बाद तो वोलोद्या सचमुच ही बहुत बढ चढकर बात करने लगा। कोरे सपनो को उसने सामान्य वैज्ञानिक तथ्य बताया और बहुत दूर भविष्य की कल्पनाओ को वास्तविकता के रूप म प्रस्तुत

किया। उसके पिता गहरी सास लेते, मगर उनकी ग्राखो मे खुशी की चमक झलकती रही।

"हमारे यहा एक फौजी इजीनियर है—प्रोनिन," सहमा टोकते हुए ग्रफानासी पेत्रोविच ने कहा। "वह खासा ग्रच्छा ग्रादमी है, ग्रपने काम मे बडा समझदार ग्रौर होशियार। पर बहुत देर तक उसकी बाते सुनना खतरनाक चीज है।"

"क्यो?" वोलोद्या ने पूछा।

"इसलिये कि वह धरती की ग्रोर तो देखता ही नही, ग्रासमान पर ही उसकी नजर रहती है। लेकिन रास्ते मे गढे ग्रौर दूसरी बहुत-सी चीजे भी हो सकती है ग्रगर उनमे तुम्हारा पाव पड जाये, तो जूतो को साफ करने की जरूरत होती है। बेटे, ग्रब तुम्हारा सोने का वक्त हो गया।"

ग्रफानासी पेत्रोविच न बेटे के चेहरे पर निराशा की झलक देखी। वे बोले—

"फिर भी हमेशा जमीन पर नजर गडाये रहने की ग्रपेक्षा बहुत दूर देखना कही बेहतर है। पर जमीन की ग्रोर देखना भी जरूरी होता है।"

सुबह वोलोद्या को ग्रपने पिता का लिखा हुग्रा एक पुर्जा ग्रौर कुछ रकम मिली। पुर्जे मे लिखा था कि वोलोद्या "कृत्रिम प्रोटीना का जल्दी से जल्दी उत्पादन करने के लिये," सभी जरूरी किताबे ग्रौर ग्रन्य चीजे खरीद ले। उसके नीचे हस्ताक्षर थे—"ग्र० उस्तिमेको" ग्रौर पुनश्च मे इतना ग्रौर जोड दिया था—"इस बीच एक मेहनतकश नागरिक की तरह स्कूल मे ग्रच्छी तरह पढाई करो। मुझे विश्वास है कि तुम निराश नही करोगे।"

ककाल बिकाऊ नहीं

खासी बडी रकम थी यह—तीस रूबल के नोटो की एक गड्डी ग्रौर छोटे नोटा की दो गड्डिया। यह दौलत तो जैसे ग्रासमान से ग्रा गिरी थी। वोलोद्या ने बाहर जाकर फौरन वह चीज खरीदने का फैसला किया, जिसका वह एक लम्बे ग्रर्से से सपना देखता रहा था।

कुछ ही समय पहले शहर के बाजार के नजदीक स्कूली चीजो की दुकान खुली थी। यह जगह [illegible] ही थी। यहा वालोद्या

को गम क्चौरिया के खोमचेवाले के निवट वार्या खडी दिखाई दी। वह मास और पत्तागोभी की दो क्चौरियो को जोडवर एवसाथ खा रही थी। उसके बूट और स्केटस फीते के सहारे उसकी वाह पर लटव रहे थे। स्केटिग रिंव की ऊची वाड के पीछे वड बज रहा था।

कचौरी खाओगे?" वार्या न ऐसे सामान्य ढग से पूछा मानो वे एक ही दिन पहले मिले हो। "अच्छी वनी हुई हैं! मुझे इस तरह की क्चौरिया और खास तौर पर दो तरह की क्चौरिया एवसाथ खाना बहुत पसन्द है।"

वार्या की टोपी कचौरिया और उसके कोट की आस्तीन पर वडे-वडे और भारी हिमकण पड रहे थे।

'रिंव पर वफ फिर से नम हो जायेगी न, वोलोद्या? वसा निकम्मा जाडा है इस साल!' वार्या ने गौर से वोलोद्या को देखते हुए कहा–

अरे तुम तो बिल्कुल मोटा हो गये हो!"

वाड के पीछे छन छन ताशे बज रहे थे।

"स्केटिग कर चुकी हो?" वोलोद्या ने पूछा।

'हा!' वार्या न यह मानते हुए कि उनकी यह मुलाकात न जाने किस करवट बैठ जाये झूठ बोल दिया और धडकते दिल से सोचा– "ओह कितना अधिक प्यार करती हू मैं इसे! यह तो शोभा भी नही देता!'

आओ चलकर ककाल खरीद लायें," वोलोद्या ने कहा।

क्या?"

"ककाल, मानव का अस्थिपजर। स्कूली चीजो की दूकान के शोकेस मे मैंने देखा है।

'स्कूल के लिये?'

'किस स्कूल के लिये?" वोलोद्या ने झटपट कहा। "अपने लिये।"

तुम्हारा मतलब है तुम खुद अपने लिये खरीदना चाहते हो?" वार्या ने उगली से उसकी तरफ इशारा किया।

वे दोना चल दिये। पर जव वे दूकान पर पहुचे, तो पता चला कि वोलोद्या ने जैसी आशा की थी, स्थिति उससे विल्कुल भिन्न है। गजे सिर और खुश्क मिजाज विक्रेता ने जिसके मुह म साने के बहुत-से

दात थे, उन्हे बताया कि मानवो और जानवरा के व
सस्थाम्रो का बेचे जाते हैं, सो भी लिखित आवेदन-
पैसे लेकर नही। किसी व्यक्ति को ऐसा ककाल नही

"अगर वह वैज्ञानिक हो, तो?" वार्या ने बोल
किया। बाते करने मे वह बहुत तेज़ थी।

"वैज्ञानिक अपनी विज्ञान-सस्थाम्रा के ज़रिये ह

"अगर उसका किसी विज्ञान-सस्था से सम्बध :

"तब उसे इक्का-दुक्का व्यक्ति माना जायेगा,"
दातो की चमक दिखाते हुए कहा।

"आप क्या समझते हैं कि हम आपके इस गले
कमाई करने का इरादा रखते हैं?" वार्या ने गुस्से
आदमी को इसकी जरूरत हा तो? अगर किसी न
जीवन समर्पित कर दिया हो, तो वह क्या करे?

वोलोद्या दूकान से बाहर आ गया। उस शम ३
क्या लडकी है यह वार्या! हमेशा उलझने को तैय
इन्तज़ार करता रहा, करता रहा, मगर वह बाहर
बीसेक मिनट बाद वोलोद्या फिर दूकान म गया।
बडी-बडी और बचकाना लिखावट में शिकायतो
लिख रही थी। वोलोद्या ने उसके पीछे खडे होक

"नकद पैसे लेकर ककाल बेचने से इनका
धृष्टता "

"वार्या, यह क्या लिख रही हो!" वोलोद्या ने

"हटाओ भी, तुम मत होओ," उसने फौरन

"मगर यह तो हास्यास्पद लगता है!"

"बडी धृष्टता या इससे भी कुछ अधिक बुराई
लिखती गई।

"बुराई नही, बुरा," वोलाद्या ने फुसफुसाकर र

"खुद समझ जायेंगे!" वार्या ने कहा। "खैर,
वोलोद्या। मुझे बात की तह तक पहुचने दो।"

उसके गाल तमतमाये हुए थे। उसके छोटे-से कान

इस तरह कवाज खरीदने का प्रयास असफल रहा। इसके बजाय वोलोद्या ने गिरजाघर के करीब दसवें अक्तूबर चौक में पुरानी किताबों की दुकान से शरीर रचना विधान-सम्बन्धी एक साफ-सुथरी और सस्ता एटलेस खरीद ली। यह १६०० का संस्करण था। वार्या उसके साथ साथ चल रही थी उसके स्केट्स टनटना रहे थे और टोपी खिसककर कुछ टेढ़ी हो गयी थी। वह नौकरशाही की चर्चा करती हुई गुस्से से लाल पीली हो रही थी। वह कह रही थी कि नौकरशाही अभी भी हर जगह साफ दिखाई दे रही है और अतीत के इन भयानक अवशेषों के विरुद्ध डटकर संघर्ष करने की जरूरत है।

तुम्हारे पिता खत तो लिखते है न?" वोलोद्या ने पूछा।

'पिछले इतवार को एक खत आया था', वार्या ने जवाब दिया। उसने नौकरशाही की चर्चा बन्द करते हुए वोलोद्या को बताया कि शायद वह मास्को से आये आर्ट थियेटर द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले "चाचा वान्या' नाटक के दो टिकट खरीद पायेगी। "थियेटर के कलाकार तो यहां आ भी चुके है 'मोस्क्वा' होटल में ठहरे हैं ' वार्या ने कहा। 'जीना त्रियूवावा ने दो को देखा भी है। वह निश्चयपूर्वक तो नही कह सकती कि वे कौन थे मगर सायी क्चालाव और साथी लिवानोव हो सकते है। वे दोनों फर के अस्तरवाले कोट पहने थे। तुम क्या फिर से कुछ सोच रहे हो?'

'तुम्हारा यह थियेटर का शौक तो निरी सनक है,' वोलोद्या ने कहा। "वार्या तुम मुझे गम्भीरता से बताओ कि इस कला की किसे जरूरत है? बिल्कुल बेमानी, वक्त की बरबादी मानसिक शक्ति का अपव्यय, एकदम पागलपन है।'

उनमे फिर से कुछ झगड़ा हुआ, मगर बहुत अधिक नही। उस रविवार को वार्या ने वोलोद्या में उस गुण को देखा जो अभी तक बड़ा उम्र के, समझदार और पढ़े लिखे लोगों की नजर से चूक गया था। उसने अनुभव किया कि वह कोई मामूली व्यक्ति नही है। वह सुखद आश्चर्य की गुदगुदाती हुई अनुभूति के साथ वोलोद्या की "माद' में दाखिल हुई, जहां बहुत समय से नही गई थी। लड़खड़ाती हुई कुर्सी पर बैठकर वह हैरानी से मुह बाये हुए पस्तर और कोख, पाव्लोव और मेच्निकोव, पिरोगोव और जाखारिन के बारे में उसकी बात

सुनने लगी। वोलोद्या ने उसे यह भी बताया कि कैंसर का इलाज करने की क्या सम्भावनाए है, कृत्रिम प्रोटीनें बनाना कहा तक मुमकिन है। वह वोलोद्या के साथ शाम का खाना खाने के लिये ठहर गई।

"वोलोद्या, मेरा तो सिर चकराने लगा है," शोरवा खाते हुए वार्या ने कहा।

"किस कारण?"

"इसलिये कि तुम पूरे तीन घटो से लगातार बोलते जा रहे हो।"

"यही तो मै कहती हू!" बूआ अग्लाया व्यगपूर्वक से चिल्लाई। "तुम तो कुछ देर बाद घर चली जाओगी, पर मेरी बात पूछो तो? मैं काम से थकी हारी लौटती हू, मेरा सिर फटता होता है और यह शुरू हो जाता है अपना कीटाणुओ का राग अलापने!"

पर खैर, वोलोद्या वार्या के साथ "चाचा वान्या' नाटक देखने गया। मास्को आर्ट थियेटर के कलाकारो ने नगर मे ऐसी हलचल पैदा कर दी थी कि वोलोद्या और वार्या को नये सस्कृति भवन के सामने जमा भीड को चीरते हुए बडी मुश्किल से अपना रास्ता बनाना पडा। वे अभी सस्कृति भवन से काफी दूर ही थे कि लोग उन्हे रास्ते मे बार-बार रोककर पूछते– कोई फालतू टिकट है? इन लोगो के चेहरो पर परेशानी झलकती और बार-बार लोगो से प्रश्न पूछने के कारण उनकी आवाजें खरखरी हो गई थी। इन दोनो का फौजी वर्दी पहने हुए एक बुजुर्ग के लिये तो सचमुच बहुत ही अफसोस हुआ, जिसने बडी हताशा के साथ कहा कि मैं अपने लिये नही, बल्कि अपनी बेटी के लिये टिकट की "भीख माग" रहा हू।

"यह जनता का जनून है," वोलोद्या ने कहा। "प्रसिद्ध श्राइपेलिन ने इसके बारे मे कुछ लिखा है।"

वार्या ने अपनी आह को भीतर ही भीतर दबाते हुए सोचा–"तो अब श्राइपेलिन आ धमका।"

इन दोनो की सीटें छज्जे की पहली कतार मे थी। वोलोद्या ने कार्यक्रम की एक प्रति खरीदी और उस पर नजर डाले बिना ही उसे वार्या को पकडा दिया। फिर उसने अपनी श्रेष्ठता की अनुभूति के साथ स्टालो और खचाखच भरे बक्सो की ओर देखा।

आखिर हल्की-सी सरसराहट के साथ पर्दा हटा और करिश्मा शुरु हुआ। बस अगर सतही तौर पर देखा जाये, तो उस्तिमेको हवाबाज़ के बेटे वोलोद्या को भला इस बात से क्या लेना देना था कि सोया, चाचा वाया और डाक्टर आस्त्रोव के साथ क्या बीत रही थी। वे तो एक दूसरे युग एक ऐसी दुनिया के लोग थे, जिनसे न तो वोलोद्या और वार्या का न उनके पिता और शायद न ही उनके दादाओ का कभी वास्ता पडा था। वालोद्या ने इस बात के लिये एडी चोटी का जोर लगाया कि वार्या के सामने वह एक मद के अनुरूप अपनी गरिमा और गम्भीरता बनाये रहे। उसने दस तक गिनती की, अपने दातो को इतने ज़ोर से भीचा कि उनम दद होने लगा, वह तरह-तरह की दूसरी बातो के बारे मे सोचता रहा, पर कम्बख्त आसू, नादान और बेतुके आसू बहते ही रहे और उनम से एक तो वार्या के हाथ पर भी जा गिरा जब उसने कायत्रम लेने के लिये हाथ बढाया। अन्तिम अक म वोलोद्या की धीरता गम्भीरता पूरी तरह हवा हो गई। अब वह न तो दस तक गिनती करता था न दात भीचता था, बल्कि अपने को आग की ओर झुकाये और गुस्से से उबलते हुए मानव जीवन की यातनाओ का दश्य देख रहा था और मन ही मन कुछ करने की कसम खा रहा था। वह पसीने स तर अपनी मुट्ठियो को भीच रहा था और लगातार उमडते आ रहे आसुओ को पोछ रहा था

अन्तिम अक लगभग समाप्त हो चुका था जब वोलोद्या की बगल म सरसराती रेशमी पोशाक पहने बैठी प्रौढा अचानक चीख उठी और बहाशी की-सी हालत म कुछ बडबडाने लगी। वोलोद्या ने उसे चुप रहने का सकेत किया मगर वह बडबडाती रही और उठने लगी। अय लोगा न भी सी-सी की पर वह चीख उठी। खुशकिस्मती ही कहिये कि नाटक खत्म हो चुका था। आसुओ स तर आखा के बीच से वोलोद्या का उस नारी का फक हुआ चेहरा और विकृत मुह दिखाई दिया। वह पूरे जार स चीखने ही वाली थी।

चूहा! चूहा! चूहा! हरी पाशाक पहने हुए एक अन्य नारी चिल्लाई।

इगम इम तरह उत्तजित हान की क्या बात है?" पास बैठा हुई महिला क घुटन पर स अपना पालतू सफद चूहा उठाते हुए वोलोद्या

ने कहा। "इसमे डरने की कौन-सी बात है? मैं आज उसे खिलाना-पिलाना भूल गया। वह ऊब के मारे बाहर निकल आया।"

पर खैर, उसे मिलिशियामैन के पास ले जाया गया। संस्कृति भवन के छज्जे की पहली कतार में वोलोद्या की बगल मे बैठे लोगो के दिल कला के प्रभाव से नम नही हुए थे। "चाचा वान्या" नाटक मे लगातार आसू बहाने के बाद अब उन्होंने बडी कठोर आवाजों मे बुजुर्ग मिलिशिया-वाले को यह बताया कि इस नौजवान ने दुर्भावना से शरारत की है। मिलिशियावाले ने उनके बयान लिख लिये। वार्या एक कोने मे बैठी हुई आख मारकर वोलोद्या का उत्साह बढा रही थी। वह अपने को किसी चीज के लिये अपराधी अनुभव कर रही थी।

लोगो की शिकायतें दर्ज करने और उनके चले जाने के बाद मिलिशियामैन ने वोलोद्या से चूहा दिखाने को कहा।

"यह रहा!"

"अरे, सफेद चूहा!"

"मेरे पास तो ऐसे बहुत-से है," वोलोद्या ने उसे बताया। "अपने तजरबा के लिये। मगर मुझे उनके लिये दुःख होता है। वे बहुत समझदार है और यह पालतू है। लीजिये, इसे हाथ मे ले लीजिये।"

मिलिशियावाला घडी भर के लिये चूहे को अपनी लाल-लाल हथेली पर टिकाये रहा, फिर उसने वोलोद्या से पूछा कि वह अपने चूहा को क्या खिलाता पिलाता है और बिना किसी झझट के उसे जाने को कहा।

"धन्यवाद, साथी अफसर," वार्या ने कहा। "इस चीज मे सारा मजा ही किरकिरा हो गया। नाटक इतना बढिया था और फिर अचानक बात का बतगड बनाते हुए लोग हमे आपके पास खीच लाये।"

मूछोवाला मिलिशियामैन बहुत ध्यान और कडी नजर से वार्या के चेहरे को देख रहा था। वार्या जब अपनी बात कह चुकी, तो उसने पूछा –

"यह बताओ कि तुम्हारा चेहरा मुझे जाना-पहचाना क्यो लग रहा है?"

"आप उस मारपीट को भूल गये, क्या?"

"मैं सभी मार-पीटो को तो याद नही रख सकता," उसने जवाब दिया। "मेरे पेशे मे तो ..."

पर वह मार पीट तो अभी कल ही स्केटिंग रिंक पर हुई थी। कल ही। निश्चय ही आप उसे तो नही भूल होगे?"

वार्या ने जरा झेपते हुए उन्हे बताया कि बस एक दिन पहले स्केटिंग रिंक पर लडके आपस मे उलझ पडे थे। चूकि किसी ने उन्हे अलग करने की कोशिश न की, इसलिए वही बीच मे जा धमकी और इसलिए खुद उसे भी कुछ घूसे लग गये। पर वह जरा भी नही डरी और उसने फिर से उन्हे अलग करने की कोशिश की और खुद भी जोर से चीख उठी। उसकी चीख सुनकर फौरन लोग मदद को आये

'आह तो तुम स्तेपानोवा हो' मिलिशियामैन ने कडाई से कहा। स्तेपानोवा वार्या। अच्छा तुम लोग जा सकते हो।"

घर लौटते हुए वार्या ने फिर से अपने मनपसन्द विषय, अर्थात थियेटर की चर्चा शुरू कर दी। उसने कहा कि मेरी दृष्टि मे तो मास्को आर्ट थियेटर अपनी आखिरी सास ले रहा है। व्सेवोलोद मेयरहोल्द का रग भी फीका पड गया है। मसलन उसका "कैमेलिया के फूलावाली महिला' नाटक उसके "अन्तिम टक्कर' जैसा नही था।

"क्या तुमने ये नाटक देखे है?' वालोद्या ने पूछा।

'मैने नाटक देखे तो नही, पर उनके बारे मे पढा है" वार्या ने उत्साह से कहा। 'मै पत्र-पत्रिकाए पढती रहती हू और नाटक सम्बधी समीक्षाओ की पूरी जानकारी रखती हू। इसके अलावा हम अपनी नाटक मडली मे भी बहुत-सी बातो पर विचार विनिमय करते रहते है।

बडी अजीब-सी रात थी यह! वे किसी चीज पर सहमत नही थे, मगर फिर भी जुदा होना नही चाहते थे। वे टहलते रहे, बेच पर बैठे रहे ठड से ठिठुरे और लगातार यह अनुभव करते रहे कि वे एक दूसरे के बिना रह ही नही सकते। मगर क्यो? उन्हे यह मालूम नही था

इन्सान सब कुछ कर सकता है

सभी तरह की कठिनाइयो के बावजूद वोलोद्या उस्तिमेन्को दसवे दर्जे मे पहुच गया। अध्यापको की अगली बैठक मे उसके बारे मे बहुत कुछ कहा गया। रमोरोदिन ने तो खास तौर पर बहुत नाराजगी जाहिर

की। इस बूढ़े अध्यापक ने तो ऐसे अनुभव किया, मानो उसके साथ विश्वासघात किया गया है। "ज़रा कल्पना तो कीजिये!" उसने चिल्लाकर कहा। "ज़रा कल्पना तो कीजिये कि उस कच्ची अक्ल के छोकरे ने मुझसे क्या सवाल पूछा था! उसने पूछा था कि साहित्य से क्या लाभ है? वह मानव को केवल दुर्बल बनाता है! फिर उसने 'चाचा वान्या' के बारे में, जिसे उसने देखने की मेहरबानी की थी, पूरा सिद्धान्त प्रतिपादित कर डाला था।"

अन्य अध्यापकों ने भी वालोद्या के सम्बन्ध में बहुत कुछ बुरा भला कहा। स्कूल को उस पर गर्व हो सकता था, मगर इसके बजाय वह अब एकदम नीचे चला गया था। किन्तु सबसे बुरी बात तो थी उसका रवैया, उसकी उदासीनता। ऐसा क्यों था? क्या कारण था इसका?

बूढ़ी आन्ना फिलीप्पाव्ना ने वोलोद्या का पक्ष लिया। उसने कहा कि वोलोद्या इतना बुरा नहीं है और उसमें बहुत सी खूबियाँ भी हैं। उसके गुणों की ओर से आँख मूँद लेना उचित नहीं। पर कुल मिलाकर (आन्ना फिलीप्पोव्ना ने ज़रा सहमते हुए पाठ्यक्रम विभाग की डायरेक्टर तात्याना येफीमोव्ना की ओर देखा, जो नाखुश दिखाई दे रही थी), कुल मिलाकर, वालोद्या हाथ से निकल गया है, बहुत ही बेलगाम हो गया है और उसे ठीक करने के लिये फौरी कदम उठाना ज़रूरी है।

"कहते हैं कि वह प्राकृतिक विज्ञानों में उलझा हुआ है," भौतिकी के अध्यापक येगोर अदामोविच ने कहा, जिसे छात्र केवल अदाम कहते थे। "मैं इस बात को निरी बकवास मानता हूँ। विज्ञान में दिलचस्पी रखनेवाले लड़के अपनी कक्षा की खिड़की से बाहर नहीं कूदा करते और अपने मित्रों को ऐसी गुंडागर्दी के लिये कभी नहीं उकसाते। ज़रा ख्याल तो कीजिये—'चपायव के साथियो, चलो मेरे पीछे!' चिल्लाकर वह मूर्ख और ऊट का ऊट खिड़की से बाहर कूद गया तथा उसके पीछे..."

तात्याना यफीमोव्ना ने पेंसिल से मेज़ खटखटाई। वह नहीं चाहती थी कि बैठक का ध्यान खिड़की से कूदनेवाली घटना पर केन्द्रित हो। कारण कि उसका अपना बेटा भी कूदनेवालों में शामिल था। यह सोचते हुए कि अदाम हमेशा ही व्यवहारकुशलता की कमी का परिचय देता है, उसने वोलोद्या के पक्ष में कुछ कहने का निर्णय किया।

"बात यह है कि लड़के की मा नही है, जो उसकी देखभाल करती, और अगर सच कहा जाये तो उसका बाप भी नहीं है," उसने कहा। 'उसकी बुआ की नौकरी बहुत जिम्मेदारी की है और वह उसकी देखभाल के लिये वक्त समय नही दे सकती। जाहिर है कि उसकी गणित की अध्यापिका के नाते मैं भी यह नही कह सकती कि मैं उससे सतुष्ट हू मगर '

प्रत्येक अध्यापक अध्यापिका के स्वाभिमान को वालोद्या की गतिविधि से ठेस लगी थी और इसे ही वे व्यक्त कर रहे थे। उनमे से किसी ने भी यह नही सोचा (जैसा अध्यापकगण अक्सर करना भूल जाते हैं) कि लडका किसी मुश्किल म पड गया, कि वह किसी तरह के गडबड-झाले मे उलझ गया है कि यह ऐसा गडबड-झाला नही है, जिसम बुद्धू किस्म के आलसी छोकरे उलझ जाते हैं बल्कि ऐसा है, जिसमे कभी-कभी प्रतिभाशाली बालक फसकर रह जाते हैं।

अध्यापकों की बैठक ने यह तय किया कि वोलोद्या के पिता से इस मामले पर बातचीत की जाये अगर पिता कही बाहर गये हुए हो, तो वोलाद्या की बुआ अग्लाया पेत्रोव्ना से बातचीत कर।

अग्लाया पेत्रोव्ना अगले ही दिन स्कूल मे आई। बदमिजाज तात्याना येफीमोव्ना बुआ से रुखाई से मिली। दफ्तर की खिडकियो पर बरसात की बूदे टपाटप ताल दे रही थी। बाहर खडजा पर जाते हुए ठेले की नीरस खटखडाहट सुनाई पड रही थी। तात्याना येफीमोव्ना नकियाती आवाज म बोलती थी और अपनी नाक सिनकती जाती थी। उमे मामूली-सा जुकाम था जिसे वह "इन्फ्लूएंज़ा" कहना अधिक पसन्द करती थी।

'मैं इस चीज से इनकार नही कर सकती कि आपका भतीजा लायक है ' तात्याना येफीमोव्ना ने कहा। 'लेकिन यह उसी के लिये घातक सिद्ध हो रहा है। आइये, हम यह मान ले कि वह प्राकृतिक विज्ञानो मे गहरी दिलचस्पी ले रहा है। बहुत अच्छी बात है! मगर वह अकेला ही तो ऐसा नही है! आज हमारे विस्तृत देश के हजारो युवा नागरिक अपने रेडियो सेट या हवाई जहाजो के माडेल बना रहे हैं। फिर भी वे अपने दिल दिमाग का विकास करने के लिये सभी कुछ करते हैं "

वग्रा ग्रग्लाया ने ग्रचानक जम्हाई ली। तात्याना येफीमोव्ना ने यह देखा, तो बुरा मान गई।

"वेशक यह सही है कि ग्राप भी जन शिक्षा के क्षेत्र मे काम करती हैं, पर ग्राप हाल ही म वहा काम करने लगी हैं। जिस मजदूर किसान निरीक्षण-सस्था म ग्राप पहले काम करती थी, उसकी कुछ ग्रपनी विशेपताए थी। सयोगवश यही बात युवा किसानो के उन स्कूलो के बारे मे भी कही जा सकती है, जिनका ग्राप ग्रब सचालन करती हैं "

"मै सहमत हू," ग्रग्लाया पेत्राव्ना ने उदासीनता से कहा। "मगर युवा किसानो के स्कूल भी है तो सोवियत स्कूल ही।"

"ग्रौर हमारा भी कोई जारशाही के वक्त का हाई स्कूल या धममठ का स्कूल नही है। यह बहुत बढिया सोवियत स्कूल है "

"ग्रोह, मैं यह जानती हू।" बूग्रा ग्रग्लाया ने हताश होते हुए कहा। "ग्राइये, हम इस तरह की ग्राम बातो मे समय बरबाद न करे। मेर ख्याल मे ग्रापने किसी जरूरी काम से मुझे बुलाया है।"

"मैंने ग्रापको एक ग्रप्रिय बात कहने के लिये बुलाया है," तात्याना येफीमाव्ना ने कहा। ग्रब वह पूरी तरह से ग्रापे से बाहर हो रही थी। "ग्रगर ग्रापका भतीजा ग्रपने को नही सम्भालता या यह कि ग्राप उसे नही सम्भालती, ग्रगर वोलोद्या ग्रपने स्कूल की इज्जत की सच्ची चिता नही करेगा, ग्रगर वह यह नही समझेगा कि इक्की-दुक्की प्रतिभाग्रो का विकास करना हमारा काम नही, तो "

"तात्याना येफीमोव्ना, ग्रापने मुझे यह बताने के लिये नही बुलाया है," बूग्रा ग्रग्लाया ने उसे टोका। "वोलोद्या ने खुद ही मुझे यह बताया था कि किसी दूसरे ही कारणवश मुझे बुलाया गया है। ग्रगर मैं गलती नही करती, तो कारण यह है कि भौतिकी के पाठ के बाद लडके खिडकी से बाहर कूदे थे।"

तात्याना येफीमोव्ना की ग्राखें झुक गइ। उसने यह तो सोचा तक नही था कि वोलोद्या ने यह सारा किस्सा ग्रपनी बूग्रा का कह सुनाया होगा। इसम तो उसका ग्रपना बेटा भी शामिल था।

"खिडकी मे से बाहर कूदना तो महज शरारत हुई," तात्याना येफीमोव्ना ने शान्त रहने की कोशिश करते हुए कहा। "यह बहुत दुखद बात हो सकती है, पर है शरारत ही। फिर भी जब मैंने ग्रापके

भतीज से यह पूछा कि इस शरारत के लिये सबसे अधिक जिम्मेदार कौन है तो उसने साफ साफ और कुछ हद तक गुस्ताखी के साथ भी उकसानेवाले का नाम बताने से इनकार कर दिया।"

मुझे इस बात का अफसोस है कि वह गुस्ताखी से पेश आया, मगर यह अच्छा ही है कि चुगलखोर नही है," तात्याना येफीमोव्ना की आखो में झाकते हुए अग्लाया पेत्रोव्ना ने कहा। "मैं समझती हू कि जो व्यक्ति स्कूल में चुगलखोर होता है उस पर युद्ध-क्षेत्र में कभी भरोसा नही किया जा सकता।"

'तो यह बात है?'

'हा बिल्कुल यही बात है," बूआ अग्लाया ने रुखाई से जवाब दिया। फिर भी इस विषय पर लोगो मे मतभेद पाया जाता है। जो और भी ज्यादा दुख की बात है।"

लाल लाल गालो और गदराये बदनवाली अग्लाया उठकर खडी हो गई। उसकी सफरी काली आखें मानो मजाक उडाती हुई चमक रही थी।

'आपका मतलब है कि अपनी अध्यापिका के साथ खुलकर बात करना तात्याना येफीमोव्ना ने कहना शुरू किया पर बूआ अग्लाया ने उसे टोक दिया—

"खुलकर बात करना एक चीज है और चुगलखोर होना दूसरी चीज। इधर उधर आहट लेना खबरे पहुचाना और चुगली खाना, यह बहुत घृणास्पद आदत है। आपको यह कोशिश करनी चाहिये कि छात्र एक दूसरे के सामने निडरता से सचाई कह दें, न कि यह कि वे यहा दफ्तर में चुपचाप आकर, चोरी चोरी कुछ बात आपके कानो में डाल जाया करे अच्छा नमस्ते।'

तात्याना यफीमोव्ना ने कोई उत्तर नही दिया और बूआ अग्लाया ने सोचा— आह लोगो को अपना दुश्मन बनाना भी कोई मुझसे सीखे।'

बाहर आकर वह गुस्से से बडबडाई—"बडी आई है पाठयक्रम विभाग की अध्यक्षा! बुद्धू कही की।"

वालोद्या घर पर ही था। वह दूध पीता हुआ गलग्रन्थि के बारे कुछ पढ रहा था। उसे तो याद ही नही रहा था कि उसकी बूआ स्कूल में बुलाया गया है। उसकी आखें खुशी से चमक रही थी।

"बूआ अग्लाया, यह गलग्रन्थि तो सचमुच बडी अजीब चीज है!" वोलोद्या न कहा। "आप सुन रही है न! है न यह आश्चय की बात।"

वोलोद्या के गुलाबी होठो पर दूध की हल्की रेखाए बनी हुई थी और उसकी आखो मे खुशी की हल्की-हल्की चमक दिखाई दे रही थी। कुल मिलाकर, वह अभी भोला भाला और कच्ची अक्ल का छोकरा था। अग्लाया उसके नज़दीक गई, उसका सिर झुकाया और उसकी गुद्दी चूम ली। इस तरह खुलकर तो वह साल मे एक दो बार ही प्यार करती थी।

"अगले साल ऐसा कुछ नही होना चाहिये," बूआ अग्लाया ने यथासभव कडाई के साथ कहा। "सुना, तुमने वालोद्या?"

"क्या नही होना चाहिये?" वोलोद्या ने खाये-खाये पूछा।

"मेरा मतलब कक्षा की खिडकियो से छलागें मारने और बुरे अक लेन से है। वादा करते हो?"

"हा, वादा करता हू," अभी भी अपने ही ख्यालो मे उडानें भरते हुए वोलाद्या ने जवाब दिया। "पर आप गलग्रन्थि के बार मे मेरी बात नही सुन रही है।"

"मैं सुन तो रही हू, मगर अच्छी तरह से नही। मुझे काम पर जाना है। तुम तो जानते ही हा कि वहा लोग मेरा इन्तजार कर रहे हागे।"

"तो खैर, जाइये।"

"अनुमति दने के लिये धयवाद," बूआ अग्लाया न सचित मुस्कान के साथ कहा। "तुम्हारे दिमाग मे यह पूछने का कभी ख्याल नही आयेगा कि बूआ अग्लाया, कौन आपका इतज़ार कर रहा है, क्या नया हालचाल है, कल आप इतनी निश्चित थी, पर आज फिक्र मे क्यो डूबी हुई हैं? आह, तुमसे ऐसी आशा करना बेकार है। देखना, कही मैं बुढापे म किसी से प्यार और शादी न कर बैठू। कही, तुम्ह अकेले ही न छोड जाऊ!"

"आज उन्हे हुआ क्या है?" वोलोद्या न कुछ हैरान होते हुए घडी भर को सोचा। पर फौरन ही वह फिर से अपनी किताबा म खो गया, जा कुछ इसी समय पढा था, उस पर विचार करने लगा। उसे दीन-दुनिया की खबर न रही।

गर्मी लगभग आ गई थी। हवा बादलो को ले उडी थी और खुले खिडकी के बाहर श्रीदारु के वक्ष एक-दूसरे से अपने दिल की बातें कह रहे थे आपस म खुसुर-फुसुर कर रहे थे। घटो तक वह दुनिया से बेखबर फिर अपनी किताबो मे खोया रहा। वोलोद्या का खाना गर्म करने को मन नही हुआ, इसलिये उसने थोडी डबल रोटी खाकर कुछ दूध पी लिया जो जरा-जरा खट्टा भी हो चुका था। उसे इस बात की हैरानी हुई कि अधेरा होने लगा था और बत्ती जलाने की ज़रूरत हो गई थी। थोडी देर बाद येव्गेनी स्तेपानोव परेशान सा उसके यहा आया। वह कुछ क्षण तक सफेद चूहो से खेलता रहा, लडखडाती दोलन-कुर्सी पर बैठा हुआ झूलता रहा और फिर शिकायत के लहजे म बोला-

'मैं बड चक्कर म हू, मेरे दोस्त।'

'क्या मतलब है?"

मेरे अन्नदाता ने मुझे खत लिखने की मेहरबानी की है। उन्होंने सलाह दी है कि मैं नौसेना की अकादमी म भर्ती हो जाऊ।"

'तुम्हारा मतलब यह कि रोदिओन मेफोदियेविच का खत आया है?

"हा उन्ही का।

तो फिर परेशानी क्या है? हो जाओ भर्ती।'

पर तुम समझते क्यो नही कि यह मुश्किल काम है?"

वोलोद्या ने कधे झटके।

खत म कविता की कुछ पक्तिया भी है" जेब स एक मुडा मुडाया लिफाफा निकालते हुए येव्गेनी ने कहा। "'सागर गजन' जब भडक उठना है तो बडी परेशानी पैदा करता है।"

येव्गेनी ने सरसराहट के साथ कागज़ खोल और पढा-

नहीं किया अपराधी, खोटा का दुश्मन को क्षमा कभी
सघर्षो का झण्डा तुम तो बार-बार हो लहराते,
बाल्टिक की लहर, तवरीदा के तट भावी पीढी
अब तो मनमाटक आकपक किस्सा व हित रचते जाते।

तो इसम क्या बात है? वोलोद्या न पूछा।

"मैं कोई मनमोहक, आकर्षक किस्सा उत्तराधिकार मे नही पाना चाहता। समझे?" येव्गेनी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

उसने खत को ढग से लिफाफे मे डाल लिया, गहरी सास ली और बोला—

"न जाने संघर्षों के किस झण्डे की यहा चर्चा है? क्रान्ति तो कभी की सपन्न हो चुकी है। ठीक है न? मालूम नही उन्हे और क्या चाहिये?"

वोलोद्या तो यही चाह रहा था कि येव्गेनी चलता बने। किसलिये वह लोगो के घरो मे जाकर उन्हे परेशान करता रहता है? क्या उसे अपना व्यक्तित्व इतना नीरस लगता है? मगर येव्गेनी ने जाने का इरादा जाहिर नही किया। वह दोलन-कुर्सी पर झूलता रहा और उसने अपनी शिकायते जारी रखी—

"बात यह है कि मेरी अपनी कोई दिलचस्पिया नही हैं। मैं अभी तक अपने को खोज नही पाया।"

"खोज लोगे!"

"क्या खोज लूगा?"

"जो अब तक नही खोज पाये। मैं भी यही कह रहा हू कि तुम खोज लोगे।"

येव्गेनी को यह बुरा लगा, पर थोडी देर के लिये ही।

"मैं तो तुम्हे दोस्त मानकर तुम्हारे पास आया हू और तुम कान भी नही देते," उसने कहा। "मैं खुद को नही खोज पाया हू।"

"ओह, मैं अब समझा," वोलोद्या ने अस्पष्टता से कहा और मन ही मन लगभग यह प्रार्थना करने लगा—"जाओ येव्गेनी, जाओ भले लडके।"

मगर येव्गेनी नही गया। वास्तव मे उसके लिये जाने की कोई जगह ही नही थी। उस दिन वह अपने मनबहलाव के सभी तरीके आजमाकर देख चुका था। वह दो फिल्मे देख चुका था, चिडियाघर मे जाकर नवागत जिराफ को देख आया था, कई आइसक्रीमे खा चुका था और निशानेबाजी कर आया था।

"वार्या ने मुझे बताया है कि तुमने बडा आदमी बनने का इरादा बना लिया है। यह सच है क्या?"

'क्या मतलब है तुम्हारा ?'

सुना है कि तुमने विज्ञान पर धावा बोल दिया है ?"

तुम्हारा दिमाग चल निकला है क्या! धावा बोलने से क्या मतलब है तुम्हारा ? मुझे विज्ञान दिलचस्प लगता है।"

दिलचस्प है! यव्गेनी ने इस शब्द को खींचते हुए कहा। "क्या दिलचस्प है उसमें ? बाद में डाक्टरी के विद्यालयों में भी वे तुम्हें यह सब कुछ सिखायेंगे और तुम्हें सीखना होगा।"

अचानक उसकी आँखें चमक उठीं और उसने कहा—

'सुनो मैं भी डाक्टरी के क्षेत्र में ही क्या न अपने को आजमाकर देखूँ ? क्या ख्याल है तुम्हारा ? मेरे विचार में तो वहाँ भी किसी एक शाखा, जैसे मजरी थरापी या बाल चिकित्सा में विशिष्टता प्राप्त करनी पड़ती है। फिर संचालन करनेवाले डाक्टर भी होते होंगे ?"

मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा ' वोलोद्या ने कहा।

मेरा मतलब यह है कि खुद ही तो सब कुछ नहीं करना पड़ता होगा, जैसे लाशों को चीरना फाड़ना, उनके भीतर की जाँच-पड़ताल और बीमारों की चिकित्सा करना तथा खुर्दबीन से कीटाणुओं को देखना। इन सभी कामों का संचालन करनेवाले भी तो होते होंगे ?"

'शायद होते होंगे, अनुभवी डाक्टर और प्रोफेसर,' वोलोद्या ने जवाब दिया। "सबसे अधिक जानकारी रखनेवाले लोगों के अलावा भला कौन संचालन करेगा ?'

तुम क्या ऐसा ही समझते हो ? यव्गेनी ने संदेहपूर्वक पूछा। उसने अपना सिर खुजलाया घड़ी भर कुछ सोचा और बोला—

'शायद तुम ठीक कहते हो। माँ ने यहाँ के सबसे प्रसिद्ध सर्जन प्रोफेसर झोवत्याक से ही अपने अपेण्डिसाइटिस का आपरेशन कराया था। वह अब भी कभी-कभार हमारे घर आ जाता है। उसका कहना है कि केवल डाक्टर बन जाने का कोई महत्त्व नहीं होता। असली चीज तो बाद में आती है—थीसिस लिखने या डिग्री हासिल करने के बाद। मुझे अच्छी तरह से याद नहीं है कि उसने किस डिग्री का ज़िक्र किया था। उसकी बात का सार यह था कि अगर कोई कैंडीडेट है तो वह पहले दर्जे में सफर करता है और अगर डी० एस-सी० हो तो डी लक्स एक्सप्रेस में। कुल मिलाकर यह है खासा मुश्किल काम। मगर फिर भी

इसके लिये कोशिश क्यो न की जाये? साथी झोवत्याक कोई खास अक्लमन्द आदमी तो नही है, फिर भी वह बडे लोगो की कतार मे जा पहुचा है। सचालक भी है। या फिर क्या वह बढिया प्रोफेसर है?"

येव्गेनी अपनी छोटी छोटी टागो पर जमकर खडा हो गया, उसने अपना कोट खीचकर ठीक किया, जो दोदिक ने उसके लिये अपने ही दर्जी से सिलवा दिया था, बडी गम्भीर मुद्रा बनाई और ऊची आवाज मे घोषणा की—

"डाक्टर येव्गेनी रादिओनोविच स्तेपानोव।"

कुछ क्षण चुप रहकर उसने इतना और जोडा—

"या प्रोफेसर स्तेपानोव। अगर डाक्टर बनना ही है, तो शानदार डाक्टर बना जाये। प्रोफेसर, इससे कम कुछ नही। क्या ख्याल है तुम्हारा?"

येव्गेनी की आखो मे मजाक की चमक थी और वोलोद्या अपने को बुद्धू-सा अनुभव कर रहा था। येव्गेनी की उपस्थिति म वह अक्सर ऐसा ही महसूस करता था। बिल्कुल बुद्धू तो नही, हा भोदू-सा।

बूआ काम से घर लौटी और आते ही बिगड उठी।

"सचमुच यह तो हद हो गई! तुम अपना खाना भी गम नही कर सकते। तुम सारा दिन घर मे ही क्यो बने रहते हो, मेरी जान की मुसीबत?"

वोलोद्या एक अपराधी की भाति मुस्करा दिया। बूआ अग्लाया को उसकी यह मुस्कान उसी भाति प्यारी थी, जैसे स्वय वोलोद्या, जिसे वह उसी दिन से इसी तरह प्यार करती आ रही थी, जब से तीन महीने के बच्चे के रूप में वह उसकी देख रेख मे आया था। अब वह अच्छा खासा जवान हो गया था।

"तुम जिराफ हो, जिराफ! सिफ गदन ही गदन दिखाई देती है तुम्हारी," बूआ ने कहा।

येव्गेनी खाना खाने के लिये ठहर गया। खाना खाते हुए भी उसने शिकवा शिकायत जारी रखा—

"हमारा घर तो निरा जहन्नुम है। वही होता है, जो दोदिक चाहता है। वार्या घर छाडना चाहती है एक के बाद एक हगामा होता रहता है।"

"तुम जरा कमचुगली निन्दा किया करो, तो अधिक अच्छा रहे, बुआ अग्लाया ने कहा।

'मैं तो आपको अपने मित्र मानते हुए अपने दुख दर्दों का साथी बना रहा हू" येगेनी ने गहरी सास छोडते हुए कहा। "मेरे मन पर भी बहुत भारी बीत रही है, अग्लाया पेत्नोव्ना। इस वक्त मैं जीवन के दोराहे पर खडा हू। पिता शिक्षाप्रद उसूलो से भरपूर गम्भीर पत्र लिखते रहते है। वार्या युवा कम्युनिस्ट लीग के छोकरो के साथ गीत गाने म व्यस्त रहती है और अब वह दल-मुखिया बनकर गर्मी भर के लिये पायनियर कैम्प मे जा रही है और मैं रह जाऊगा अकेला अपनी उलझन सुलझाने के लिये।'

तुम भी पायनियर कम्प मे चले जाओ," बुआ अग्लाया ने जरा मुस्कराकर सुझाव दिया।

कौन मैं?'

हा, तुम।

"नही धन्यवाद। मेरी वार्या जसी सेहत नही है। मैं दूसरे ही रक्त मास का बना हुआ हू।'

'हा यह तो हमे मालूम ही है," मेज पर से उठते हुए बूआ अग्लाया ने कहा। 'स्पष्टत तुम तो नीले खून वाले हो।"

यव्गेनी ने इस बात का बुरा नही माना। अप्रिय बाता को वह सुनी अनसुनी कर देता था। इसके अलावा वह अग्लाया पेत्नोव्ना या अपन सौतेले बाप की बातो के प्रति तो कभी गभीर ही नही होता था, मानो वह उनस उम्र म बडा और अधिक समझदार हो।

सयोगवश अब जब रक्त की चर्चा छिड ही गई है तो आपको यह भी बता द कि मैं और वोलोद्या मिल-जुलकर सोच विचार करते रहे हैं और मर ख्याल म मैंने भी चिकित्साशास्त्र को अपना जीवन समर्पित करन का निणय कर लिया है।"

भाग्य खुल गय चिकित्साशास्त्र के।" बूआ अग्लाया ने मजाक किया।

क्या नही? प्रोफसर झावरयाक मरी मा का मित्र है। मरी भी उसस जान-पहचान है। उसकी बडी प्रतिष्ठा है, जरूरत होन पर वह मेरी मदद करगा।

"सुनो, येव्गेनी, यह बडी घिनौनी बात है!" बुग्रा अग्लाया का अचानक पारा चढ गया। "क्या तुम खुद यह नही समझते?"

"हे भगवान! पर जीवन तो जीवन है!" उसने निष्कपटता से कहा। "वोलोद्या की बात दूसरी है, क्योकि वह बहुत प्रतिभाशाली है। पर मैं क्या करू? महात्मा बनकर तो आदमी बहुत आगे नही जा सकता!"

उसने बताया कि क्यो वह नौसेना मे नही जा सकता—

"मुझे यकीन है कि समुद्री जहाज मे तो मेरी तबियत अवश्य ही खराब रहा करेगी। मुझे तो नदी मे भी मतली होने लगती है। कुल मिलाकर यह कि समुद्र मेरी रोजी रोटी नही हो सकता। मैं आधिया और तूफानो से नही जूझ सकता। इस दृष्टि से मेरे अन्नदाता पिता स्वप्नद्रष्टा है। अब, जरा गौर कीजिये "

आखिर येव्गेनी चला गया। दिन भर की थकी-टूटी बूआ अग्लाया सोने चली गई और वोलोद्या को चैन मिला। आधी रात को उसके कमरे का लैम्प सी-सी करने लगा। वोलोद्या को चिन्ता हुई कि अध्याय समाप्त होने के पहले ही बत्ती बुझ जायेगी। सी सी होती रही, मगर लैम्प बुझा नही। वोलाद्या मुट्ठिया कसे हुए पढता रहा। वह जब-तब उछलकर खडा हो जाता और इधर उधर टहलता हुआ खुशी से फुसफुसाता—

"कितनी अदभुत, कितनी बढिया बात है! इनसान का दिमाग सब कुछ कर सकता है, हर कमाल कर सकता है!"

"तब इस आदमी ने," वोलोद्या पढता रहा था, "जो कुछ लोगो का घृणापात्र और दूसरो का प्रशसापात्र बना, इस एकाकी अनुसधानकर्त्ता ने चिकित्साशास्त्र को रूढियो से निजात दिलाई। उस चिकित्साशास्त्र को, जो कभी विज्ञान का गौरव था और जो समय बीतने के साथ उसका कलक बनता जा रहा था।"

वोलोद्या का चेहरा जल रहा था, उसे अपनी पीठ पर झुरझुरी सी अनुभव हुई। अब इसे, इसी वोलोद्या को, जिसकी अध्यापको की बैठक मे इतनी भत्सना हुई थी, जो कुछ वह पढता था, अधिक अच्छी तरह समझ मे आ जाता था। वह पहले से अधिक समझता था, पर सब कुछ नही

सुबह के चार बज चुके थे, जब दरवाजा खुलने खुलता हुआ सुना। उस उनींदी-सी बूआ अगनाया दिखाई दी। उसके काले बालों की चोटियां पीठ पर लटक रही थीं।

मैं तुम्हें घर से निकाल दूंगी," बूआ ने कहा। "कैसे तुम अपनी सेहत को इस तरह सत्यानास कर रहे हो! देखो तो, कैसी भयानक सूरत बनी हुई है तुम्हारी! इस चीज का कभी अन्त भी होगा या नहीं?

कभी नहीं! वालोद्या ने मुस्कराये बिना ही जवाब दिया। 'कभी नहीं बूआ अगनाया! कृपया बिगड़िये नहीं। इसके बजाय, आइये चलकर कुछ खायें। भूख के कारण मुझे उबकाई आ रही है।"

वालोद्या ने चुपचाप तले हुए छः अण्डे और मक्खन लगाकर रोटी का एक बहुत बड़ा टुकड़ा खाया, दही पिया तथा कुछ और खाने के लिये इधर उधर नज़र दौड़ाई।

बस काफी हो गया! तुम्हारा पेट फट जायगा," बूआ ने कहा।

'इनसान सब कुछ कर सकता है!" अपने ही विचारों के सिलसिले को जारी रखते हुए उसने कहा।

"तुम्हारा मतलब खाने से है?' बूआ ने मुस्कराकर कहा।

वोलोद्या ने सहमी-सहमी नज़र से बूआ की ओर देखा।

दूसरा अध्याय

टाइफस

१६१६ के फरवरी महीने मे "पेत्रोपाव्लोव्स्क" युद्ध पोत के दूसरी श्रेणी के भूतपूर्व जहाज़ी रोदिम्रोन स्तेपानोव को प्रचानक पेत्रोग्राद रेलवे जक्शन का सहायक मुख्य सचालक नियुक्त किया गया और कुछ समय बाद मुख्य सचालक बना दिया गया। मार्च तक वे अपने दफ्तर की मेज़ पर ही सोते रहे, पर अचानक उन्होंने अपने को बहुत थका हुआ अनुभव किया। उन्होंने अनुरोध किया कि उन्हें कम से कम इतनी जगह तो ज़रूर दे दी जाये, जहा वे ढग से सो सके। जैसे ही उन्हें भूरे कागज़ पर अस्पष्ट हस्ताक्षर और धुधली-सी मोहरवाला आडर मिला, वे फुरश्तादस्काया सडक की ओर चल दिये। ठीक पते पर पहुचकर उन्होंने अपनी जहाज़ी की गुदी हुई मज़बूत मुट्ठी से बलूत के दरवाज़े को ज़ोर से खटखटाया। जिस औरत ने दरवाज़ा खोला, स्तेपानोव ने उसकी ओर नज़र उठाकर भी नही देखा और सीधा अपने कमरे की तरफ बढ गये। कमरा बहुत बडा था और उसकी बेनिसी ढग की खिडकियो पर भारी पर्दे लगे हुए थे। कमरे मे लाल चमडे से मढा हुआ एक बहुत बडा सोफा भी था।

वे अपने साथ जो सामान लाये, उसमे हालैंड के बढ़िया कपडे की दो कमीज़ें, जो विशेष आदेश के अनुसार रेलवे कर्मचारियो को दी गई थी, कुछ नम और भारी डबल रोटी, हवाना के छ सिगार, नगान मार्क की पिस्तौल, आध पौंड बिना साफ की हुई पीली शक्कर और पुराना फौजी थैला शामिल थे।

रोदिश्रान स्तेपानोव हाल के महीना मे जिस तरह की जिंदगी क अभ्यस्त रहे थे उसे ध्यान म रखते हुए ठडा हाने पर भी यह कमरा उन्हें बडा आरामदेह लगा। व कमरे म दाखिल होते ही सोफे पर ढह पडे और हल्की मी आह के साथ बेहोश हो गये। उन्होने जिस चीज को थकावट समझा था, वह वास्तव म टाइफस का आरम्भ था।

श्रीमान गोगोलेव की नौकरानी अलेवतीना या आल्या, जैसे कि बैरिस्टर बोरीस विस्सारिओनोविच गोगोलेव उसे बुलाता था, अपनी मालिका के भाग जाने के बाद पाच महीने के बेटे के साथ यहा रह गयी थी। वह देर तक शैतान कमिसार" का कराहना सुनती रही और बाद मे इस ख्याल मे डरकर कि अगर कमिसार को कुछ हो गया, तो उसे जिम्मेदार ठहराया जायेगा, सहमी-सहमी-सी कमरे मे आई।

"पानी! नौसैनिक चिल्लाये।

तो वे इतनी दूर से कराह नही रहे थे, बल्कि पानी माग रहे थे।

अलेवतीना पानी लाई और घिनाते हुए (गोगोलेव दम्पति ने नौकरानी को सफाई की बडी शिक्षा दी थी) चीनी टी सेट के नाजुक प्याले म पानी दे दिया। इसके बाद बेटे येव्गेनी को गोद मे लिये हुए वह ऊपरवाली मजिल मे पीटसबर्ग के एक बहुत ही फैशनदार नारी रोग चिकित्सक फोन पाप्पे के पास भागी गयी। गुस्ताव एल्फ्रेडोविच असली कॉफी पी रहा था और शुरू म तो उसने कमिसार को देखने के लिये जाने से बिल्कुल इकार कर दिया। लेकिन कुछ देर बाद यह सोचकर कि यह शैतान की नानी अलेवतीना उसकी शिकायत कर देगी, गोगोलेव के यहा चला आया।

टाइफस,' उसने अपनी औरतो जैसी बारीक आवाज मे कहा। 'ध्यान करना कि कहा वह अपनी छूत यहा न फैला दे। तब तुम्हारा और तुम्हारे जेन्या का भी अन्त समझो।'

भूतपूर्व नौकरानी ने उदासी से डाक्टर की तरफ देखा। डाक्टर ने भी अपने शब्दो की कठोरता को कुछ नम्र करने के लिये जेन्या का पेट गुदगुदाया और हवा म अपनी उगलिया लहराकर इतना और कह दिया—

"मुसीबत के मारे हमारे लोगो को क्या कुछ नही सहना पडता!"

उसी वक्त सिगारो पर डाक्टर की नजर जा पडी।

"इह तो मैं ले जाता हू," उसने झटपट कहा। "इस कमिसार को तो इनकी बिल्कुल जरूरत नही है।"

"जरूरत है!" सोफे पर से स्तेपानोव की कठोर, यद्यपि क्षीण आवाज सुनाई दी। "तेरे बुर्जुवा तोबडे की जरूरत नही है।"

अलेवतीना को सम्बोधित करते हुए कमिसार ने आदेश दिया–

"श्रीमती, इसे धक्का देकर बाहर निकाल दो!"

शायद इसलिये कि रादिओन मेफोदियेविच पूरी तरह होश मे नही थे, उन्होने कुछ टेढे शब्द और कह दिये, जिन्हे सुनकर फोन पाप्पे परेशान हाकर भाग गया। कमिसार ने अलेवतीना को यह आदेश भी दिया कि वह रेलवे स्टेशन पर जाकर उनके दफ्तर से उनका राशन ले आये और कहे कि वे कोई "असली डाक्टर" भेजें, और "कुछ मदद करे।" "बेकार ही मरने मे क्या तुक है!"

"विश्व क्राति के दृष्टिकोण से यह अनुचित है," कमिसार ने धीमी, किंतु दृढ आवाज मे कहा। "श्रीमती, वहा ऐसा ही कह दीजिये कि यह अनुचित है। समझी?"

अलेवतीना नही गयी।

"तो क्या यह जान-बूझकर अवहेलना हो रही है?" स्तेपानाव ने पूछा। "अपने इस भेजे में इतनी बात समझ लीजिये कि अगर मेरा दम निकल गया, तो तुम्हे इसका जवाब देना होगा।"

"मैं जा रही हू," अलेवतीना ने उत्तर दिया, "लेकिन आपका यहा अकेले क्या हाल होगा?"

कमिसार व्यग्यपूवक मुस्कराये और बोले–

"हम लोगो के बारे मे यह कविता सुनिये!"

इस व्यक्ति के रोब मे आई हुई अलेवतीना डरकर कुर्सी के सिरे पर बैठ गयी। कमिसार ने मुह जबानी ये पक्तिया सुनायी–

> बडे समुद्री पक्षी जैसे, वीर, भटकते नौसैनिक
> तूफानो की बडी दावतो के तुम ता हो मतवाले,
> तुम उकाब के सगी-साथी, नौसैनिक, ओ नौसैनिक
> गीत भेंट करता हू तुमको, जलते, अगारोवाले।

ग्रौर पूछा। –

"ममझी, श्रीमती?"

कमिसार की ग्राखो म हसी की चमक थी।

ग्रलेवतीना ग्रपने बच्चे को गोद मे लिये हुए रेलवे स्टेशन तक के लम्बे रास्ते पर चल दी। दो घण्टे वाद मानो पूर का पूरा प्रतिनिधिमण्डल कमिसार के पास ग्राया। ये सभी ग दे-म दे ग्रौर थके-हार, किन्तु ग्रजाब ढग से बहुत ही खुश लोग थे। इस चीज़ के बावजूद कि य सभी एस शब्दा का प्रयोग करते थे, जि ह वह गोगोलेव परिवार म रहत हुए भूल गयी थी, उसे ये लोग ग्रचानक ग्रपने ही ग्रौर बहुत भले लग। नस का रूमाल बाधे, चेहरे पर झुरियो ग्रौर खुरदरे, दहातिया जमे गाठ-गठील हाथावाली एक बुजुग ग्रौरत ता उसे खास तौर पर बहुत ग्रच्छी लगी।

"विघवा हो क्या?" उसने ग्रलेवतीना से पूछा।

ग्रलेवतीना की ग्राखें झुक गयी।

"तब तो ग्रौर भी बोझिल है तुम्हारी ज़िदगी," बुजुग ग्रौरत ने कहा। ' लेकिन साथी, ग्रासू नही बहाग्रो। ग्रब वे ज़मान लद गये, ग्रब तुम्ह जन-समथन प्राप्त होगा "

सभी कुछ ग्रनूठा ग्रसाधारण ग्रौर ग्रप्रत्याशित था। पहले जो चीज़ इतनी लज्जाजनक ग्रौर ग्रपमानजनक मानी जाती थी, उसे ग्रब जन समथन प्राप्त था, बुजुग ग्रौरत का उसे "साथी" कहना भी ग्रजीब था ग्रौर वे लोग, जि ह वह ग्रपन मन मे "उजड्ड" कहती थी ग्रौर गोगोलेव ' तुच्छ" कहता था, उसके साथ इतनी ग्रच्छी तरह से पश ग्रा रहे थे। इतना ही नही, उन्हाने तो उसे ग्रपने साथ घोडे के मास का शोरबा ग्रौर बाजरा खाने को भी ग्रामत्रित किया। इन सभी चीज़ा न घडी भर मे ही ग्रलेवतीना के लिये ज़िदगी को बदल डाला, उसे नया रूप दे दिया। ग्रब उसम ग्रधिक ग्रात्मविश्वास ग्रा गया, वह ग्रब नज़र नही झुकाती थी, इस बात स लजाती शमानी नही थी कि उसका पति नही है ग्रौर कभी नही था।

कमिसार जल्दी-जल्दी स्वस्थ हाने लगे।

ग्रलेवतीना ने गुप्त स्टोर खाला, वहा से बिस्तर के लिये साफ-सुथरी चादरे, ग्रादि निकाली ग्रौर चीनी मिट्टी का प्राचीन फानूस बेचकर

खाने पीने की चीजें, यहा तक कि पीटसबग मे श्पीक कहलानेवाली चर्बी का एक टुकडा भी खरीद लाई। जब स्तेपानोव की दाढी बहुत बढ गयी, तो कुछ झिझकते हुए उसने विदश भाग गये अपने मालिक के पीले, अंग्रेजी चमडे के ड्रेसिग केस मे से सात बढिया उस्तरे निकाले। हर उस्तरे पर सप्ताह के एक दिन का नाम—सामवार, मगलवार, आदि खुदा हुआ था।

"उस शैतान के बच्चे को सात उस्तरा की क्या जरूरत थी?" स्तेपानोव ने हैरान हाकर पूछा।

"धातु को आराम करना चाहिये।" अलेक्तीना ने गोगोलेव का वाक्य दाहरा दिया। "इसलिये हर दिन का अलग अलग उस्तरा है।"

"कुत्ते के पिल्ले!" कमिसार ने खुशमिज़ाजी से गाली दी।

स्तेपानोव न "इतवार" अभिलेखवाला उस्तरा अपने पास रख लिया और बाकी छ अपने साथियो मे बाट दिये।

"आपको ऐसा करने का हक नही है!" अलेक्तीना चिल्ला उठी। "ये आपके नही है। बोरीस विस्सारिओनोविच लौटेगे!"

"किसलिय लौटेगा वह?" स्तेपानोव ने शान्तिपूवक आपत्ति की।

"ये उनके उस्तरे है!"

"सही है कि एक उसके लिये भी रखा जा सकता था, मगर सात बहुत ज्यादा है," कमिसार ने राय जाहिर की। "श्रीमती, अब तो ये सब चीजे जनता की है और आपका बडबडाना बेमानी है।"

"फिर भी बोरीस विस्सारिओनोविच आपको इसका मजा चखायेंगे।"

"हो सकता है कि मैं उसे मजा चखाऊगा।"

स्तपानोव की आखा मे फिर से हसी झलक रही थी।

अपन ही किन्ही विचारो मे खाये-डूबे कमिसार देर तक यह गुनगुनाते रहे—

है दलान से हिलती-डुलती बत्ती का
हल्का-हल्का-सा प्रकाश बाहर आता,
ऊबा-ऊबा वहा सन्तरी जीवन से
पहरा देता हुआ एडिया टकराता

"तो आप जेल मे भी रहे हैं?" एक दिन अलेवतीना ने पूछा।

"नही, भलेमानस, मैं जेल मे नही रहा। हा, अगर आपका अभिप्राय रूसी साम्राज्य कहलानेवाली जातियो की जेल से है, तो बात दूसरी है।"

कमिसार की बात अलेवतीना के पल्ले नही पडी, फिर भी उसने महानुभूति जताते हुए गहरी सास जरूर ली। कुछ अर्सा पहले बोरास विस्सारिओनोविच के पास दढियल, लम्बे-लम्बे बालोवाले कुछ बहुत ही बातूनी महानुभाव कभी-कभी आते थ, जिन्हे बैरिस्टर की बीवी 'जन शहीद' कहती थी। बाद मे यही "जन शहीद" कुछ समय तक फौजी वर्दिया और वट पहने पैदल या मोटरो मे फिरते रहे और गोगोलेव दम्पति के साथ ही कही गायब हो गये। कुछ भी समझ पाना सम्भव नही था। लेकिन अलेवतीना अपने कमिसार को अधिकाधिक देर तक ताकती रहती, उनसे अधिकाधिक देर तक बाते करती, उनकी बिना सिलसिले की बातो को अधिकाधिक ध्यान से सुनती। रोदिओन मेफोदियेविच भी उसे एकटक ताकते रहते है, इस बात की तरफ भी कभी-कभी उसका ध्यान जाता।

स्तेपानोव जैसे ही बिस्तर से उठने के लायक हुए, वैसे ही उन्होने अलेवतीना को गोगोलेव परिवार के फ्लैट के सभी गुप्त स्थान खोलने का आदेश दिया। अलेवतीना रोने लगी और नन्हा जेन्या भी अपनी मा का साथ देने लगा।

"मैं अपने लिये ऐसा नही कर रहा हू," रोदिओन मेफोदियेविच ने उदासी से कहा। "मैं तो इन सब चीजो को खुद अपने से और तुमसे बचाना चाहता हू। इन्हे धीरे धीरे बेचना नही, सरकारी जब्ती मे शामिल करना चाहिये।"

अलेवतीना और भी ज्यादा जोर से रोने लगी। इस तरह सिसक सिसककर रोना उसने गोगोलेव की पत्नी विक्तोरिया ल्वोव्ना से सीखा था। जेन्या अपनी थोडी-सी ताकत के मुताबिक मा के रोदन का साथ देता, मगर काफी ददनाक असर पैदा करता। फिर भी स्तेपानोव ने कायदे-कानूनो के अनुसार सारी चीजो को सरकार के लिये जब्त कर लिया। पेन्सिल को थूक से भिगो भिगोकर उन्होने "भूतपूर्व नागरिक गोगोलेव की पालतू वस्तुओं" की सूची बनायी और गोगोलेव

के ही मोम और मुहर से उसके सभी सदूको, कालीनो, अलमारियो, स्टोरो और गुप्त स्थानो को मुहरवद कर दिया।

"आप तो कोई पागल लगते है!" अलेवतीना ने सिसकिया लेना जारी रखते हुए कहा। "आप इनका इस्तेमाल करते रहते, करते रहते!"

"मैं पागल नही, क्रान्तिकारी नौसैनिक हू!" रोदिग्रान ने समझाते हुए कहा। "हमने तुम्हारे निकोलाई की इसलिये गद्दी नही उलटी है कि खुद चुपके चुपके मौज उडायें। हमने सारी जनता की भलाई के लिये उसका तख्ता उलटा है ,सयोगवश तुम्हे यह भी बता दू कि फानूस को भी मैंने सूची मे दज करके यह स्पष्ट कर दिया है कि उसे टाइफस से मेरी मुक्ति के हेतु बेच दिया गया।"

जब्ती के इस काम और अलेवतीना के रोने धोने से स्तेपानोव थककर लेट गये। इसी शाम को न जाने क्यो, अलेवतीना न उसे अपनी जिदगी की कहानी सुनायी। अपनी शक्तिशाली बाहो को सिर के नीचे रखे और सोफे पर लेटे हुए कमिसार चुपचाप उसकी दास्तान सुनते रहे। उनकी आखें अध मुदी थी।

"तो मुह पर ही तमाचे मारतो थी?" रोदिग्रोन ने अचानक पूछा।

"हा!" होठ काटते हुए अलेवतीना ने सिर झुकाकर हामी भरी।

"कितनी उम्र थी तब तुम्हारी?"

"सोलह की भी नही हुई थी।"

"नीच, कमीने, खुदा इह गारत करे," रोदिग्रोन न कहा।

"आप गालिया क्यो दे रहे हैं?"

"तुम पर तरस आता है, इसलिये।"

रोदिग्रान मेफोदियेविच ने कुछ देर बाद पूछा—

"जेया का बाप कौन है?"

"यहा एक छोटा फौजी अफसर आता था, बडा प्यारा-सा "
अलेवतीना फिर से सिसकने लगी।

"रोग्रो नही। कहा है वह?"

"कौन जान?"

"कह दिया न, कि नही रोग्रो! अब नयी जिन्दगी शुरू हुई है। तुम्ह पढना चाहिये। अपनी ही हिम्मत मे किसी भी ओहदे पर पहुच सकती हो।"

"लेकिन मैं तो बहुत कम पढी लिखी हू।"

"और तुम्हारे ख्याल म मैं कौन हू?"

"जैसे हो, वैसे ही रहोगे—अनपढ जहाजी।"

रोदिओन मेफोदियेविच ने बुरा नही माना, घिरते झुटपुटे म मुस्करा दिये और बोले—

"यह तुम झूठ कर रही हो, आल्या! सवहारा की क्रान्ति को अनपढ नौसनिको की जरूरत नही है। प्रतिक्रांति के साप के सिर कुचल जाने पर मैं पढाई शुरू कर दूगा।"

अलेवतीना ने स्तेपानोव की ओर तिरछी चोर नजर से देखा और उस अदम्य आत्म विश्वास से आश्चयचकित-सी रह गयी, जो उनमे प्रस्फुटित हो रहा था। श्रीमान गोगोलेव के अध्ययन-कक्ष की सुन्दर छत की ओर देखते हुए वे विचारो मे खोये-खोये से कहते गये—

"हा, जब मैं नौसेना मे भर्ती हुआ था, तो बिल्कुल अनपढ बद था। मैं बहुत दूर से, वोज्नेसेन्स्क जगलो से आया था। कभी नाम सुना है तुमने उनका? मेरे बाप बिल्कुल अनपढ थे। पर, खैर मैं धीरे धीरे तारपीडो मारनेवाला बन गया और फिर मेरा पद कम करके मुझ 'पेत्रोपाव्लोव्स्क' जहाज पर दूसरी श्रेणी का जहाजी बना दिया गया। वैसे मैं समझ रहा था कि मामला क्या रख ले रहा है। मैं उस समय 'अवोरा' जहाज पर ही था, जब उसने शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी की थी।"

"तो तुमन शिशिर प्रासाद पर गोलाबारी की थी?" अलेवतीना न आश्चयचकित होते हुए कहा।

"गोलाबारी तो अन्य तोपचियो ने की थी, हमने तो केवल एक बार खाली धमाका किया था। मुझे गोले बरसाने का सौभाग्य नही प्राप्त हुआ', उन्होने मुस्कराकर कहा। "फिर भी मैंने 'अवोरा' पर काम जरूर किया है

इतना कहकर उन्होन अलेवतीना का हाथ अपने हाथ मे ले लिया। वह किसी तरह का विरोध किये बिना धीरे-स उनकी ओर झुक गई। व दूर हट गय और बोले—

"पर हा जाओ, अलवतीना। कही तुम्ह टाइफस की छूत न लग जाय।'

मगर अलेवतीना धीरे धीरे मुस्करा रही थी। वह अब कमिसार की बीवी बनने का सपना देख रही थी। उनके जैसा भोला भाला पछी तो बहुत आसानी से फासा जा सकता है। वे बडे ही नमदिल है। जब अलेवतीना ने अपनी पिटाई की चर्चा की थी, तो वे काप उठे थे। वास्तव मे कोई खास बात नही हुई थी—उसने इत्र की एक शीशी तोड डाली थी और इसलिये उसे कुछ डाटा-डपटा गया था

"मुझे वह गाना सिखा दो, जो तुम हर समय गाते रहते हो," अलेवतीना ने कहा।

"कौनसा गाना?"

"बत्ती और जिन्दगी से उबे हुए सन्तरी के बारे मे।"

"अच्छी बात है," स्तेपानोव ने कहा और धीरे धीरे गाने लगे—

रात अधेरी, अवसर का उपयोग करो तुम
किन्तु जेल की दीवारे पक्की सारी,
उसके गुमसुम और मौन से फाटक पर
लगे हुए लोहे के दो ताले भारी।

पति-पत्नी

एक महीने बाद वे पति-पत्नी के रूप मे रहने लगे। अब येव्गेनी के साथ उसका कुलनाम स्तेपानोव जुड गया और अलेवतीना श्रीमान और श्रीमती गोगोलेव की नौकरानी न रहकर कमिसार की पत्नी, एक बाइज्जत औरत और घर की मालकिन बन गई थी। अपने घृणित अतीत को पूरी तरह भुला देने के लिये उसने रोदिओन से अनुरोध किया कि हम नगर के किसी दूसरे भाग मे, वासील्येव्स्की ओस्त्रोव या कम से कम वीबोगस्काया स्तोरोना के इलाके मे जा बसे।

"'कम से कम' से तुम्हारा क्या मतलब है?" रोदिओन ने बिगडते हुए कहा। "समझो तो, यह तुम क्या कह रही हो?"

"वीबोगस्काया स्तोराना म मजदूरो के अतिरिक्त कोई नही रहता। केवल असभ्य अशिष्ट ही रहते हैं वहा," अलेवतीना ने स्पष्ट किया।

"तुम बेवकूफ हो," उन्होने साफ ही कह दिया। "तुम अपने को क्या समझती हो? तुम कौन-सी किसी कुलीन घराने की बेटी हो?"

"मैं कुलीन घराने की बेटी तो नही, मगर एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की पत्नी तो हू,' उसने नजर झुकाये हुए उत्तर दिया।

वे वासील्येव्स्की आस्त्राव म जाकर रहने लगे। वसन्त अपने साथ अकाल लेकर आया। स्तेपानाव लगभग दिन-रात रेलवे जक्शन पर रहते। जब कभी उन्हे घर आने का मौका मिलता, तो वे थके हारे अलेक्सीना की बगल म बिस्तर पर आ पडते, नीद म दात पीसते और भयानक शब्द चिल्लाते—

"ताड फाड करनेवालो! कमीने मगरमच्छो, मैं तुम्हे गोली से उडवा दगा। तब तुम्हारे हाथ मलने से भी कुछ हासिल नही होगा"

बिना पर्दो की खिडकियो के पीछे दूधिया राते बीतती जाती थी, भयानक और बेचनी की राते। अलेक्सीना अपने जवान पति के अत्यधिक थके हारे चेहरे और धसी हुई आखो, उनके मुरझाये हुए होठो को देखती और बडी पीडा तथा दद के साथ अपने उमग भरे सपनो के ताने-बाने बुनती। वह चाहती थी कि स्तेपानोव बडा अधिकारी बन जाये, सबसे बडा अधिकारी, सभी के ऊपर हुक्म चलानेवाला बडा अधिकारी, हर कोई उससे डरे और तब अलेक्सीना सामने की बडी बडी बत्तियावाली मजबूत और लाल कार मे, वसी ही कार मे जैसी बैरिस्टर की बीवी, श्रीमती गोगोलेवा के लिये घर के दरवाजे पर आती थी, बठकर नगर की सर करेगी। महत्त्वाकाक्षाए उसे खाये जा रही थी, उसके लिये यातनाए बनी हुई थी। बस मेरा वक्त आ जाये! तब मैं उन सब को अपने रग दिखाऊगी! तब सब देखेंगे मेरे ठाठ! इस बीच वह रातो को पति का इतजार करती हुई राजकुमारो, नवाबो और जागीरदारों के जीवन के बारे मे अधिक से अधिक उपन्यास पढती, अपने बेटे को उसी ठाठ-बाट से मखमली सूट, फीतेवाले कॉलर, छोटी छोटी बढिया इञ्जेंनार और दूसरी टोपिया ओढाती जैसे गोगोलेव दम्पत्ति अपने बच्चे को ओढाते थे। यह ड्रेसडेन के बहुत ही शानदार चीनी के प्याले म गाजर की चाय डालती।

पतझर म स्तेपानाव को अस्त्राखान बेडे की क्रान्तिकारी सनिक परिषद् म भेज दिया गया और व नगर स चले गये। कभी-कभी स्तेपानाव

के दोस्त अलेवतीना से मिलने आते, उसका राशन लाते और सलाह देते कि वह कही नौकरी कर ले। वह उनसे रुखाई से पेश आती, गुमसुम रहती और लम्बी चौडी वातचीत करने का बढावा न देती। पति के कारण उसे जा कुछ मिलना चाहिए था, वह सभी कुछ पेत्रोग्राद के खाली गोदामा मे पा लेती और इसके अलावा उसे कुछ और भी मिल जाता। उसने बातचीत का वह अदाज भी झटपट अपना लिया, जिसे वह अपनी सफलता के लिये जरूरी समझती थी।

"तो तुम मोटी तोदोवाले मजे कर रहे हो!" फूले-फूले गालावाले अपने बालक का, जिसे वह ऐसे अवसरा पर विशेषत गदे मदे कपडे पहनाकर लाती थी, गोद मे उठाते हुए कहती। "और कमिसार की बीवी बेशक फाके करती रहे? खैर, कोई बात नही, मैं चेका मे जाऊगी और तब तुम सभी को आटे दाल का भाव मालूम हो जायेगा। बुर्जुवा बदमाशो, व अच्छी तरह से तुम्हारी अक्ल ठिकाने करेगे। वे तुम जैसे कुछेक का जेल म डाल देंगे, तब मुझे आन की आन मे मुरब्बा मिल जायेगा।"

अलेवतीना को मुरब्बा मिल जाता, फिर भी जीवन बहुत कठिन था। बडी-बडी बत्तियावाली कार सपना ही बनी रही और रेशमी कपडा और तिनको के काले टोपा की तो कोई बात तक नही सोचता था। मगर अलेवतीना इन्तजार कर रही थी, बहुत ही हठपूवक, बहुत कटु और पागलपन की हद तक पहुची हुई बेकरारी के साथ। वह "अपने आदमी" का हर तरह का नाच नचवायेगी, उससे अपनी हर मनमानी पूरी करवायेगी। हा, निश्चय ही! वह किन्ही ऊल जलूल चीजो की माग नही करेगी। नही, नही, वह इस किस्म की औरत नही है। उसे अपन खाली कमरे मे बहुत ही खूबसूरत, बहुत कीमती, अद्भुत और भाति भाति की चीजा की दुनिया दिखाई देती। उसे नजर आती बढिया और इत्र मे महके फाका से भरी नक्काशीदार और पीतल से सुसज्जित आलमारिया, "चिप्पनडेल" की कुर्सिया—जिनका नाम वह नही भूली थी—इत्र की शीशिया, फर के गुलूबद, सेबल की ओढनिया, दस्ताने, छोटे नम सोफे, ड्रेसिग गाउन, कालीन, फुरश्नाद्त्स्काया मडक पर नवाब रोजेनाऊ के घर के समान बिल्कुल नीला स्नानघर, जालीदार नकाब, पाउडरा के बक्स, चाय और डिनर के सट, पहियावाली मेजे

उसने पहले तो ये चीजे देखी ही थी, किन्तु अब वह उन्हे खुद पाना चाहती थी। वह एक के बाद एक दरवाजा खोलती हुई कई कमरो के सेट मे शान से चलने की कल्पना करती थी, अपने घर की बाइज्जत महिला मालिकिन और महारानी बनना चाहती थी।

"कई कमरो का सेट।" उसने खुश्क होठो से इन शब्दो को फुसफुसाया, जिनकी गूज उसे बहुत प्रिय लगी। "उत्तरी एक्सप्रेस गाडी! या ज्यूली अगीठी के सामने पर्दा कर दो।"

या फिर उन बडे-बडे डिब्बो मे चाक्लेटो का ख्याल आता।

खैर कोई बात नही मैं इन्तजार करूगी।

मैं जब तक जरूरी होगा इन्तजार करूगी, पर आखिर मेरा जमाना भी आयेगा।

इसी बीच रोदिओन स्तेपानोव डाकुओ के अराजक सरदार नेस्टोर मास्नो का पीछा करते हुए उक्रइना की धूल फाकते फिर रहे थे। मास्नो ने स्तेपानोव के दस्ते को तीन हजार वर्स्ट लम्बी दौड लगवाई और सामने डटकर लोहा नही लिया। इस तरह उसने अपना पीछा करनेवालो को थका मारा। उनके आगे आगे स्तपी की देहाती सडको पर मशीनगनो से लदी गाडिया तेजी से भागी जा रही थी। मास्नो के आदमी अमीर जमीदारो के पास ऐसे पुर्जे छोड जाते, जिनमे सोवियत सत्ता का मजाक उडाया गया होता और पके बालोवाले धनी किसान नाक भौ सिकोडते हुए स्तेपानोव के आदमियो की केवल कुए के पानी से ही खातिरदारी करते। गर्मियो की उन गर्म रातो मे आकाश मे बादल चैन से आनन्द विभोर होते हुए गडगडाते और सुहानी मूसलाधार बारिशे होती रहती।

क्रान्तिकारी सैनिक परिषद के प्रतिनिधि और चार अन्य चेकावालो के साथ स्तेपानोव को मास्नो से सधि और उसके लोगो मे प्रचार-कार्य करने के लिये भेजा गया। इस काम के लिये दक्षिणी मोर्चे के कमाडर फ्रूजे ने जिन छ कम्युनिस्टो को चुना था उनमे से किसी को भी कमाडर की गाडी से निकलते हुए जिन्दा लौटने की उम्मीद नही थी।

स्तारोग्रस्व की एक नीची छतवाली और सुगध से महकी हुई झोपडी मे नेस्टोर मास्नो रोयो के नर्म बिस्तर पर बडी शान से फैला पडा था। वह पसीने से तर, बेचैन और पीली पीली आखोवाला

व्यक्ति था। उसके दुमछल्ले अपनी अस्त्राखानी टोपियो को गुद्दियो पर किये हुए उसके गिद खडे या बैठे थे।

"शायद शस्त्रा अस्त्रो के बिना गपशप करना ज्यादा अच्छा होगा?" सरदार माख्नो ने कहा और अपने लम्बे बाल झटके। "मुझे हथियार पसन्द नही है। मैं दयालु और शान्तिप्रिय व्यक्ति हू।"

"इसमे क्या शक है," स्तेपानोव ने कहा, किन्तु अपनी पिस्तौल को अपने पास ही रखा।

अगले तीन महीना मे स्तेपानोव लगभग नही सोये माख्नो उन छहो को किसी भी समय खत्म कर सकता था। ऐसा इसलिये भी करना आसान था कि वे सभी उसकी सेना के अलग अलग यूनिटा म रहते थे। मगर उनका धीरे धीरे और बडे यत्न से किया जानेवाला काम फलप्रद हुआ। माख्नो के लोगा की अपने सरदार के प्रति वफादारी अधिकाधिक डावाडोल होती गई और वे अधिकाधिक दृढता से बोल्शेविका के साथ सधि करने की चर्चा करने लगे। जब सोवियत सत्ता ने नौ वर्षों तक किसानो को जमीन देने की ज्ञप्ति जारी कर दी, तब तो रोदिम्रोन को इस बात का कोई कारण ही दिखाई नही देता था कि माख्नो के लोग उनका गला काटेंगे।

उस समय की कुछ निशानिया जीवन भर के लिये उनके पास रह गईं। ये निशानिया थी—कलाई के ऊपर सफेद निशान, जहा ब्राउनिग गोली लगी थी, कधे की हड्डी मे लगे छर्रे का चिह्न और घुटने के नीचे एक घाव, जिसमे लम्बे अर्से तक हल्का-हल्का दद होता रहा था।

एक प्यारी और शान्त रात मे सेना का वह डिवीजन, जिसमे बाल्टिक बेडे के जहाजी स्तेपानोव कमिसार थे, अजोव सागर के तट पर पहुचा। सनिक नहाने धोने के लिये समुद्र में कूद गये। स्तेपानोव को अचानक बुरी तरह बेचैनी महसूस हुई। वे अनुभव करते थे कि उन्ह नौसेना मे ही काम करना चाहिए, कि सागर के बिना वे मर जायेंगे, कि उनके लिये अपन असली काम पर लौटने का वक्त आ गया है।

तभी से जिन्दगी इतनी मुश्किल हो गई कि उसकी तुलना म गृहयुद्ध के कष्ट बच्चा का खेल प्रतीत होने लगे वे स्कूल में दाखिल हो गये थे। अब उन्ह बीजगणित, रेखागणित और त्रिकोणमिति म पारगत होना था। उन्ह रेखाचित्र बनाने होते थे, अग्रेजी और जमन भाषा के

लिखने-पढने का अभ्यास करना था और इतिहास की गहरी जानकारी प्राप्त करनी थी। उनके लिये पढाई करना इस कारण जरूरी था कि कुछ समय बाद पुरानी विचारधारा के किसी अफसर, नौसेना के तथाकथित विशेषज्ञ के साथ कप्तान के मच पर खडे होने के बजाय वे युद्ध-पोत, टारपीडो-बोट या बडे जगी जहाज की खुद कमान सम्भाल सके।

बने ठने सुसस्कृत और खिल्ली उडानेवाले शिक्षक अपनी पना नजरा से कुलीनो के बेटा की तुलना मे भूतपूर्व जहाजियो के लिये पत्ना लिखना कही अधिक कठिन बना देने थे। पढनेवाले य मजदूर जवान, य भूतपूर्व जहाजी तोपची और सुरग बिछानेवाले, जिन्होंने गृहयुद्ध की भारी मुसीबत सही थी और जिनकी उन दिना की उनीदी राता की अब तक नीद नही पूरी हुई थी सावधान होकर उन लोगो के ज्ञानवधक उपदेश सुनते थे, जिन्होने कुछ ही समय पहले सोवियत सत्ता को मान्यता देने की कृपा की थी। स्तेपानोव को अक्सर, बहुत अक्सर खून खद कर देनेवाले य शब्द सुनने पडते—

क्या ये चीज तुम्हारी समय म नही आती? इसलिये, मरे दोस्त, कि तुमम सामान्य विकास की कमी है। और यह चीज फौरन नही आ जाती। यह हासिल हानी है मा के दूध के साथ। प्रखर सुसस्कृत होना, जो नौसेना क कमाडर के लिये बहुत जरूरी है, वह भी कोई किताबें रटकर नही बन सकता। क्षमा चाहता हू कि मैं मार्क्सवादी नही हू। इसलिये यह कहूगा कि सुसस्कृत होना जन्मजात गुण होता है"

विद्यार्थी रोदिओन स्तेपानोव गुस्से स आग-बबूला हो उठते, मगर चुप रहते। 'बकते रहो गले-सडे अवशेष," व सोचते, "दस-बीस साल और बीत जाने दो। तब तुम चौककर आखे खाओगे, पर तब दर हो चुकी होगी। तुम बुलबुल लोगो की तुलना म हम कही अच्छे बुद्धिजीवी बन चुके होगे।'

रादिओन बार घटा से अधिक न सोते। पर वे "रविवार' के चिह्नवाले पुराने उस्तुरे से हर दिन हजामत जरूर बनाते। अब उनकी अंग्रेजी भाषा की जानकारी नौसेना-सम्बन्धी विशेष पारिभाषिक शब्दों और वाक्यों तक ही सीमित न रह गई थी जिन्हे जानना उनके लिये जरूरी था। शब्दकोश की सहायता से नौसेना के अनुभवों का वर्णन करनेवाले लेख भी व पढ सकते थ, जिन्हे उपयोगी समझते थे। वे

वाल्टिक, काले और अज़ोव सागर के समुद्री वेडो के अपने मित्रो के साथ अंग्रेज़ी भाषा मे वैसे ही वडी शान से, सिगरेट का धुआ उडाते और ज़रा रुक-रुककर वात करने की कोशिश करते, जैसे कि उनके मतानुसार वडे-वडे अंग्रेज़ समुद्री अफसर अपने नौसेना विभाग मे करते हैं। इस विद्यार्थी काल मे उच्च गणित ने स्तेपानोव के लिये विशेष महत्त्व प्राप्त कर लिया। वह उनके लिये केवल आतक ही नही, खुशी का स्रोत वन गया। उसी वने-ठने और अत्यधिक सुसस्कृत शिक्षक ने ही, जिसने कुछ समय पहले स्तेपानोव को यह वताया था कि सुसस्कृत होना अनिवाय रूप से जन्मजात गुण होता है, वातो वातो म किसी से कहा —

"कम्बस्त स्तेपानोव, है तो वडा समझदार।'

य शब्द स्तेपानोव के कानो म पड गये। उन वर्षो म वे इससे अधिक प्रशसा की कल्पना नही कर सकते थे शत्रु ने अपनी हार मान ली थी और यह वहुत वडी वात थी।

अलेवतीना हर वक्त यही शिकायत करती रहती कि मैं बहुत थक-हार गई हू, मुझे ऊब अनुभव होती है। वह विल्कुल निठल्ली रहती, अक्सर अय "महिलाओ" से मिलने चली जाती या फिर उन्हे अपने घर वुलाकर उनकी आव भगत करती। अपनी कनिष्ठाए वाहर निकालते हुए वे वेहद पतले, लगभग पारदर्शी प्यालो से चाय की चुस्किया लेती, नन्हे येव्गेनी से लाड प्यार करती और धीरे धीरे, अलसाये अलसाये ढग से वात करती। उनकी वातें अजीव अजीव होती और उनके शब्द स्तेपानोव को अनजान अपरिचित लगते। अपने केश विन्यास को वे "वोव' कहती और नन्हे येव्गेनी के वारे म राय जाहिर करती कि वह "निर्वासित राजकुमार" जैसा लगता है। कुछ कुर्सिया को वे "मोडन' वताती और कुछ को "रोकोको"। वे किसी ऐसे क्लव की भी चर्चा करती, जहा लोग "स्थिर मुद्राओ से खूव हाथ रगते है"। वे किसी न किसी तरह पेरिस से सभी के लिये "शानेल इत्र की एक शीशी प्राप्त कर लेती।

स्तेपानोव से तो वे कभी ही वातचीत करती और तव उनके सम्मानपूर्ण अन्दाज में व्यग्य का तीखापन छिपा रहता। वे उसे "हमारा भावी नल्सन" या मारात की सज्ञा देती अथवा यह कहती "खाक से

खुदा बनेगा'। जब इस तरह के व्यग्यवाण छोडे जाते, ता रोदिग्रोन मफोदियेविच का मन होता कि वे अपने पुराने क्रान्तिपूव ढग से गालिया बक द और कोई प्याला जिन्हे अलेवतीना "पुराने सक्सोनी प्याले" कहती थी उठाकर जोर से फश पर पटके और चकनाचूर कर डाल। पर जाहिर है कि वे ऐसा कुछ नही करते थे। वे तो केवल माथे पर वल डालते और अपनी लडखडाती मेज़ पर जा बैठते। अपनी किताबा, टिप्पणियो और रेखाचित्रा म उनके मन को चैन मिलता।

वार्या अभी बच्ची ही थी। येव्गेनी की तुलना म अलेवतीना उसे बहुत कम प्यार करती थी। उसे लडके पर हमेशा तरस आता रहता और साये हुए यव्गनी के पास अलेवतीना की यह फुसफुसाहट सुनकर स्तेपानोव के दिल को अक्सर चोट लगती—

मरे यतीम बच्चे सौतेले वापवाले मेरे नन्हे वेटे, मर जिगर के टुकड मा तुम्हारी रक्षा करेगी वह किसी का तुम्हे डाटने डपटने नही दगी तुम कोई चिन्ता न करो मेरे यतीम बालक "

कौन डाटता डपटता है उसे? रोदिग्रोन मेफोदियेविच न एक रात का परेशान हात हुए कहा। ऐसी वेहूदा वात क्या किया करती हा? उल्टे वह ही डाटा डपटा करेगा। अभी से वह किसी को खातिर म नहा लाता। आज दोपहर को उसने भारतीय स्याही की वातल ताड डाली और जव मैंन उसके कान खीचन की धमकी दी, तो "

मगर वह तुम्हारा अपना खून हाता तो तुम कभी उसे इस तरह की धमकी न देते अलवतीना न कहा। 'मुझे यकीन है वार्या का ता तुम कभी उगली तक भी नही लगाओगे।"

पर क्या मैंन उस भी कभी उगली लगायी है?" रोदिग्रोन मफोदियेविच हक्वकाकर रह गय।

अलवतीना न इस प्रश्न का सुना अनसुना कर दिया और अपने वट क पास बैठी फुसफुसाती रही। रादिग्रान मफोदियेविच न कध झटके और फिर स अपन रेखाचित्रा म जाकर डूब गय। उन्ह अपन इलाके परन्तु आवाज—दीवार घडी की टिकटिक वार्या की गहरी सास अलेवतीना द्वारा उपयाग म लाय उवटन की हल्की सरसराहट सुनाई द रही थी। या ता यह परिवार ही, पर कसा परिवार?

रोदिम्रान मेफोदियेविच विचार-सागर मे गोते नही लगा सक्ते थे। उनके पास इसके लिय फुरसत ही नही थी। समय उड रहा था देश तेजी से वढ रहा था और वे पीछे नही रह सक्ते थे। उन्हे समाचारपत्रो किताबो, सम्मेलनो, सभाम्रो वार्ताम्रो और व्याख्यानो म—हर चीज़ म दिलचस्पी थी। व हर चीज म हिस्सा लेना चाहत थ। जव व म्रलेव तीना को उसकी भूतपूव मालिकिन के ये शब्द—"मैं ऊब स मरी जा रही हू" दोहराते सुनने तो झल्ला उठते। पर वे इस वात की ओर ध्यान न दते, आपे से वाहर न होते।

"म्रलेवतीना, तुम क्या मुझे अपना मन बहलानेवाला सरकस समझती हो?" आखिर एक दिन व भडक ही उठे। "मैं सकडो वार तुमस कह चुका हू—तुम किसी चीज म अपना ध्यान लगाम्रो। म्राज तो तुम्हारे लिय सभी दरवाज़े खुले हुए हैं। जाम्रो जाकर पढो लिखो। तुम अगर चाहो, तो जन-कमिसार भी बन सक्ती हो।'

"बहुत जान खपा चुकी हू मैं," म्रलवतीना गुस्स स चिल्ला उठी। 'मैं अभी सोलह ही नही, पन्द्रह वरस की भी नही थी कि कोल्हू के वैल की तरह काम म जान दी गई थी। म्रव मुझ आराम करने और इन्सान की सी जिन्दगी बिताने का पूरा हक हासिल है। म्रोह पर तुम्हारे साथ रहत हुए तो इसकी भी उम्मीद नही की जा सक्ती। तुम ता मुझे एक नौकर भी रखकर नही दे सक्ते।"

"नौकर? तुम्हारे लिय?" रादिम्रोन मेफोदियेविच को वडा आश्चय हुआ। "यह 'नौकर' शब्द तुम्हारे दिमाग मे कहा स आ घुसा? आजकल हम उन्हे घरेलू काम करनेवाली मज़दूरिन कहते है, अब नौकर-चाकर नही रहे।"

"चलो ऐसा ही सही, घरलू काम-काज करनेवाली मज़दूरिन ही रख दो। मरी वना स, तुम उन्हे किसी भी नाम से पुकारो, पर मैं क्राति के वाद काम करने के लिय मजबूर नही "

"सिरफिरी," रोदिम्रोन मेफादियेविच ने तग आकर कहा।

"मै नही, तुम सिरफिरे हो," म्रलेवतीना ने जवाब दिया। "बडा आया क्रान्तिकारी जहाजी! किसलिय घाव करवाये थ अपने तन पर? समाज म दर्जा पाने के लिय ही न? और कुछ नही ता पाच कमरो का फ्लट ही पा लिया होता? नही, वह भी नही। तुम्हारा सिर सफेद

होता जा रहा है और तुम अभी तक स्कूली छोकरा की तरह किताब रट रहे हो। तुम्हारी तनख्वाह म जसे-तैसे काम चलता है और अगर मरे अपने व्यापार का सिलसिला न होता, तो "

'किस व्यापार के सिलसिले से अभिप्राय है तुम्हारा?" उन्होंने लाल पीला होते हुए पूछा। "किस व्यापारिक सिलसिले के फेर म हो तुम?

अलेवतीना डर-सहम गई और उसने कोई जवाब नही दिया।

इस घटना के कुछ ही समय बाद येव्गेनी को तपेदिक हो गया। डाक्टरो न कहा कि उसे पेत्रोग्राद मे हरगिज़ नही रहना चाहिए। अलवतीना घबरा उठी। उसे वोज़्नेसेन्स्क के जगलो का स्मरण हो आ जिसकी स्तेपानोव चर्चा किया करते थे। उसने अपने पति स वहा नगर के बारे म पूछ-ताछ की। डाक्टरो ने वनो, वहा के जलवायु औ उचा नदी के तटवर्ती स्वास्थ्यप्रद वातावरण का एक स्वर स समर्थन किया। मई १९२३ म रादिओन स्तेपानोव अपने परिवार को उस नगर म ल गये जहा से कभी वे अपने ज़ार और देश की नौकरी करने के लिये रवाना हुए थे।

उस नगर म उनका एक पुराना दोस्त हवाबाज़ अफानासी उस्तिमेन्को रहते थे। अफानासी की बहन अग्लाया न प्रोलेतार्स्काया सडक पर स्तपानोव परिवार के लिये एक फ्लैट तय कर दिया। परिवार के ढग स बस जाने पर दोनो मित्र – विधुर अफानासी और परिस्थितिया वश विधुर हुए स्तपानोव अपनी अपनी पढाई जारी रखने के लिये पेत्रोग्राद की ओर रवाना हो गये। धीरे धीरे चलती हुई गाडी म उन्होंने वोदका पी ठडा चिकन खाया और गहयुद्ध के दिनो की यादें ता करने लगे। उन दिनो अफानासी सोपविच हवाई जहाज़ म उड़ा करते हुए सफेद गार्डों पर घोषणाओवाले झण्डे फेंका करते थे। आखि १९२० म उनका जहाज़ गिरा लिया गया था।

फिर स शादी करने का इरादा है क्या?' रादिओन ने पूछा।

'बिल्कुल नही। तुम्हारी वालन्तीना को एक नज़र देखते ही मैंने यह सोच लिया था – बाज़ आया ऐसी मुहब्बत स।'

कौन वालन्तीना? तुम्हारा अभिप्राय अलवतीना स है।'

उससे कहना है कि मैं उस वालन्तीना ही बुलाऊ, अफानासी

वोले और उन्होने जम्हाई ली। "उसने मुझसे कहा कि मैं उसका अलेवतीना नाम भूल जाऊ। एक एक जाम और हो जाये?"

उन्होने एक एक जाम और पिया और अचारी सेब खाया।

"तुम्हारा वेटा वहुत अच्छा है, मुझे वहुत पसन्द है," रोदिओनोव ने कहा।

"कौन, वोलोद्या? हा, वह अच्छा लडका है, थोडा शरारती है।"

बेटी

भूतपूर्व अलेवतीना अब वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना हो गई थी। उसने लेनिनग्राद लौटने से इनकार कर दिया और स्तेपानोव ने भी इसके लिये जोर नही दिया। वे अधिकतर अपने जहाज या फिर क्राश्तादत म रहते, जहा उन्होने नौसेना के किसी अधिकारी की बूढी विधवा के घर म एक कमरा किराये पर ले लिया था। उनके पास वहुत कम फालतू समय होता और उसे वे पढने म विताते। जब उन्होने पहली वार "युद्ध और शांति", "अतीत और चिंतन", "कज्जाकी", "वार्ड न० ६" और "हमारे समय का नायक", आदि किताबें पढी थी, उस समय वे लगभग तीस वष के हो चुके थे। वे अपनी बीवी को प्यार नही करते थ। यह वात उन्हे इतनी ही स्पष्ट थी, जितनी यह कि उनकी बीवी को भी उनसे प्रेम नही है। पर वे चाहते थे कि किसी को प्यार कर, वे चाहते थे कि सीनियर अफसर मिखाल्यूक को नही, वल्कि किसी नारी को नताशा रोस्तोवा के वारे मे यह पढकर सुनायें कि वह अपने मामा के घर मे कैसे गाती थी। उनका मन होता था कि किसी दूधिया रात म वे मिखाल्यूक को नही, वल्कि अपन दिल की रानी को साथ लेकर महान पीटर के स्मारक पर जायें। वे चाहत थे कि कोई उन्हे प्यार भरे पत्र लिखे और वे उनके उत्तर दें।

फिर अचानक उसके जीवन म बडा विचित्र, उग्र और सुखद परिवत्तन हो गया।

वालेन्तीना ने उन्हे लिखा कि वार्या से पार पाना उसके बस की वात नही रही। लडकी गुस्ताख और वदतमीज है, विल्कुल वात नही

माननी पूरी तरह हाथ स निकल गई है। उसे सम्भालने की जरूरत है, और इसलिय यही बहतर होगा कि व घर आकर इस बारे म कुछ तय कर।

रोदिग्रोन न थाडा सोच विचारकर वालेन्तीना को यह लिख भजा कि वह वार्या का आश्नादत भेज द।

रादिग्रोन अपनी बेटी वार्या का लनिनग्राद के स्टेशन पर लिवाने गये।

यह जान समझे बिना ही कि उन्ह क्या हो रहा है, उन्होने वार्या को ऊपर उठा लिया और उसके चित्तियोवाले माथे, उसकी कसी हुई छोटी छोटी चोटिया और उसकी गदन और पतल-पतले कधो को चूम लिया। खुशी से धीरे धीरे कुनमुनाती हुई वार्या अपन पिता की लिनन की गाढी सफेद फौजी कमीज के साथ चिपकी रही।

पिता होना कसी खुशी की बात है उन्ह इस बात की अनुभूति हुई।

आदमी प्यार के बिना जिन्दा नही रह सकता," वे इन दिनो सोचा करत। वह जिन्दा नही रह सकता और उसे रहना भी नहीं चाहिये। शादी के मामल म तो किस्मत ने साथ न दिया, मगर बटी के सिलसिले म मैं खुशकिस्मत हू। बडी प्यारी है यह बच्ची। इस पर अपना प्यार निछावर कर मैं सुखी हो सकता हू।

नौसेना अधिकारी की विधवा ने वार्या के बालो म सुन्दर नीले रिबन बाध दिये। रोदिग्रोन ने उसे बढिया चमडे के नये जूते पहनाये और उगली थामकर अपने जहाज पर ले गये। उस दिन तेज हवा चल रही थी धूल उड रही थी और गर्मी थी। सागर की ओर से नमी आ रही थी। वे वार्या को अपने असली घर और उन लोगो के पास ले जा रहे थे जिन्हे वे सचमुच अपना कह सकते थे। उनकी ठोडी, जो हजामत बनाते वक्त उस सुबह जरा कट गई थी सदा की भाति हठीली नही लग रही थी। उधर जाते हुए रास्ते मे वे एक दूसरे के साथ वयस्को की भाति बातचीत करते रहे। पजा को कुछ-कुछ भीतर की ओर मोडकर चलती हुई वार्या समद्रचिरलियो उस पानी ही पानी और "अत्यधिक नील आकाश को देखकर आश्चयचकित होती रही। रोदिग्रोन ने जानना चाहा कि वह अपनी मा की बात क्या नही मानती वह गुस्ताख और अक्खड क्या है।

"ओह, पिता जी, क्या आप इस किस्से को ले बैठे हैं?" वार्या बोली। "सभी कुछ इतना अच्छा लग रहा है और अब आपने भी मा के समान बात शुरू कर दी है।"

वार्या न तो गुस्ताख थी, न ही अक्खड। उसका अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व था, वह किसी से दबती नही थी और बहुत ही उदार थी। वार्या के स्कूल मे जाने के पहले ही दिन से यह बात चालू हो गई थी कि वह गुस्ताख है। दूसर पाठ के बीच मे ही नन्ही सी वाया न ढग से अपनी किताबें थैले मे डाली और दरवाजे की ओर चल दी। अध्यापिका ने उसे गुस्से से वापिस बुलाया। पर वार्या ने दरवाजा लाघने के बाद ही जवाब दिया—

"मुझे भूख लगी है।"

छोटी छोटी चोटियावाली यह मज़बूत और नन्ही सी लडकी त्योरी चढाय हुए स्कूल से निकलकर घर चली गई थी। "यव्गेनी कभी ऐसा न करता!" उसकी मा ने चीखकर कहा। येव्गेनी न सहमति प्रकट की कि वार्या ने यह बहुत भयानक बात की है।

इसके बाद वाया ने पडास की लडकी को अपना नया पेशबन्द दे दिया, क्योकि उसके पास दो पेशबन्द थे, जबकि उस लडकी के पास एक भी नही था। येव्गेनी की एक पेटी उसने प्लस्तर करनेवाले चाचा साशा को दे दी, क्योकि यव्गेनी के पास चमडे की कई पेटिया थी, जबकि चाचा साशा अपन पतलून मे रस्सी बाधकर काम चलाता था। वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने वार्या को कोडे लगाय। बच्ची चीखी चिल्लायी नही, पर इसके बाद वह मा के करीब कभी नही फटकी।

"बडी उपद्रवी लडकी है," जहाजी कहते और उसे प्यार करते। वह बुंदकियावाला लाल स्कर्ट लहराती हुई केन्टीन, ऊपरी या नीचेवाले डेक पर जहा भी जाती, वही उसे खूब लाड प्यार मिलता। वह न तो कभी रूठती, न मुह बनाती और न ठुनकती, बडी फुर्ती से बात मानती और उसकी फैली फैली तथा चमकती आखो मे हमेशा सुखद आश्चय की झलक दिखाई देती।

उस जाडे मे वार्या क्राश्तादत के स्कूल मे पढती रही। पिता के लिये यह बहुत खुशी का वक्त था। वे अपनी शाम सिनेमा मे बिताते, लेनिनग्राद जाकर कोई नाटक देखते या फिर वे वार्या की सहेलिया का

दशमलव के प्रश्न हल करने मे मदद देते और उनके साथ खुद
तालाबो और गाडिया के बारे म सवाल हल करते। इसके बाद वा
समोवार का काज सम्भालती चाय डालकर देती और उसके पि
गव से मगर मन ही मन यह सोचते—"कैसी अच्छी बेटी है, क्या
कमाल की लडकी है यह! वार्या स्तेपानावा, मेरी बेटी है!
उसके समान दुनिया मे कोई दूसरी ढूढ तो लो!"

वसन्त के शुरू म ही नौसेना अधिकारी की विधवा चल बसी और
स्तेपानोव को समुद्री यात्रा का आदेश मिल गया। हर जहाजी वार्या का
विदा करने आया। आसुओ से उसका चेहरा सूजा हुआ था और बडी
मुश्किल से ही हिल डुल पा रही थी। उसने बारी-बारी से हर जहाजी
और हर अफसर के गले मे अपनी नन्ही-नन्ही बाहे डाली, अपने बालसुलभ
नम होठो स उनके खुरदरे और कठोर गालो को चूमा और कहा—

'चाचा मीशा हमारे पास आकर रहिये। हमारे यहा अच्छी नौ
भी है "

चाचा पेत्या, मैं सच्चे दिल से कह रही हू कि आप हमारे पास
आकर रहे!'

"चाचा कोस्त्या सेना से छुट्टी मिलते ही हमेशा के लिय हमारे
पास आ जाइयेगा "

जाडे म स्तेपानोव अपने परिवार से मिलने गये। वे एक अजनबी
की तरह अपने घर म दाखिल हुए। येव्गेनी अपने सिर पर हेयर नेट
बाध और सोफे पर लेटा हुआ एक सचित्र पुस्तक पढ रहा था। अगला
कमरा नेस्टोर माल्नो के बगले की तरह सुगन्ध से महका हुआ था।
वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना थियेटर देखने और वार्या अपनी सहेली के
घर गई हुई थी। येव्गेनी ने अगडाई ली और पूछा—

क्या नया समाचार है, पापा?'

'कुछ खास तो नही' स्तेपानोव ने जवाब दिया। "यह कौनसी
किताब पढ रहे हो?'

१८६४ की नीवा पत्रिका," येव्गेनी ने जवाब दिया। "बडी
ऊब भरी है यह।'

"अगर इतनी ऊब भरी है, तो पढते ही क्यो हो?'

पर और कुछ भी तो क्या?

कुछ देर बाद वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना घर आई। फर के कोट मे वह अधिक सुन्दर और खिली खिली लग रही थी।

"ओह, तो महान जहाजी ने हमारे यहा आने की मेहरबानी की है। धन्य भाग्य हैं हमारे!" उसने व्यग्यपूर्वक कहा।

अब वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना व्यग्य-बाण छोडना सीख गई थी।

एक खास तरह की केतली मे से चाय डाली गई, पनीर के बहुत ही पतले-पतले टुकडे काटे गये, सासेज के टुकडे तो लगभग पारदर्शी थे। रोदिग्रान मेफोदियेविच से यह पूछने तक का किसी को ख्याल नही आया कि ठड मे इतने लम्बे सफर के बाद क्या वे ढग का खाना, वोदका का जाम पीना या फिर बढिया-सा बडा ऑमलेट खाना चाहते हैं।

"खैर, मैं सयोगवश यह बता देना चाहती हू कि मैंने इस सिलसिले मे तुम्हे इसलिये कुछ भी नही लिखा कि तुमने मेरे सारे पत्र वार्या को दिखा दिये थे। पर अब तो उसने नाक मे दम कर दिया है। वह सारा-सारा दिन पायनियर बालको के साथ रहती है, अटपटे गीत गाती है और मेरी आलू चना "

"तुम्हारा मतलब यह है कि तुम्हारी आलाचना की परवाह नही करती?"

"हा, हा, वही!" वालेन्तीना ने झल्लाकर कहा। "वैसे भी, कुल मिलाकर, वह अत्यधिक सोवियत लडकी है "

रोदिग्रोन मेफोदियेविच के माथे पर बल पड गये, उनके गालो पर सुर्खी दौड गई।

"क्या मतलब है तुम्हारा इससे?"

"वही, जो मैंने कहा है!"

"तो साफ-साफ कहो।"

"वह निरी मूर्खा है और अपने को बहुत अक्लमन्द समझती है," येव्गेनी न अपनी कुर्सी मे झूलते हुए कहा

रोदिग्रोन मेफोदियेविच दो सप्ताह तक यहा रहने का इरादा बनाकर आये थे, पर केवल तीन दिन ही रहे। उन्होने ये तीन दिन वार्या के साथ ही बिताये। वे उसके साथ स्केटिंग रिक पर, उस्तिमेको परिवार मे अग्लाया पेत्रोव्ना और वोलोद्या के पास और थियेटर मे गये। उन्होने

पायनियर बालकों की एक सभा में भी हिस्सा लिया और वहा सोवियत नौसेना के बारे में एक वार्ता दी। उस वार्ता के बारे में वार्या ने कुछ खास अच्छी राय जाहिर नही की।

'आपकी वार्ता बहुत ही सरल थी, पापा," वार्या ने कहा। "हमारे लडके-लडकिया खास समझदार हैं। वे यह नही चाहते कि उनके सामने पका-पकाया खाना परोसा जाय।"

वार्या के पिता का चेहरा सुख हो गया।

मैं खासी बडी हो गई पर आप मुझे अब भी बच्ची ही समझते है वार्या ने आह भरकर कहा।

"आप जानते है कि मैं क्या सुझाव देना चाहती हू," वार्या ने कहा। आइये आज हम खाना खाने के लिये घर न जायें। यहा करीब ही एक भोजनालय है। वहा सलाद तो बहुत ही बढिया होती है और कभी कभी तो वहा कटलेट भी अच्छे होते है "

वार्या ने मोमजामे के मेजपोश पर से रोटी के कण साफ करते हुए और पापा की ओर देखे बिना कहा—

'पापा यह बताइये कि आपने पहली बार कब प्यार किया था? आपकी उम्र काफी हो गई थी न?

ओह बहुत तो नही स्तेपानोव ने परेशान होते हुए जवाब दिया।

पर मैं जानती हू कि कुछ लोग छोटी उम्र में ही प्रेम करने लगते है और सो भी दीवानो की तरह, वार्या ने दूसरी ओर मुडकर कहा। हा हा दीवानो की तरह।"

स्तेपानोव के चेहरे पर खोयी-खोयी मुस्कान झलक रही थी। तो उनके जीवन की अन्तिम मुस्कान भी छिन जायेगी, वे नितान्त एकाकी ही रह जायेंगे। नही नही वह अभी बहुत छोटी है।

प्रेम करने की ऐसी क्या उतावली है। अभी बहुत वक्त पडा है इसके लिये उन्होने धीरे-से कहा।

पर वार्या ने उनकी बात नही सुनी। शायद उसका ध्यान कही और था।

स्तेपानोव उसी रात को वहा से चले गये।

तीसरा अध्याय

खुमिया

अगस्त के एक इतवार को वार्या, वोलोद्या और वोलोद्या का मित्र वोरीस गूबिन, गोरेलिश्ची स्टेशन पर खुमिया बटोरने गये। शुरू मे उन्होने सभी तरह की खुमिया जमा की और फिर केवल बढिया-बढिया ही चुनने लगे। दिन धुधला धुधला और गम था, हल्की हल्की बूदा-बादी हो रही थी। वे भीग गये या यह कहना अधिक सही होगा कि भीगे नही, अत्यधिक सीले हो गय थे। उन्होन आग जलाई और उसके गिद बैठकर आलू भूनने लगे। वोलोद्या न कहना शुरू किया—

"फ्रासीसी बेकन का यह मत था कि इसान को अपने मन से कुछ भी बनाना या गढना नही चाहिये और प्रकृति जो कुछ करती और अपने साथ लाती है, उसी की खोज करनी चाहिये। इससे अधिक सक्षिप्त एक और गुर है—प्रकृति पर उन्ही की विजय होती है, जो उसकी आज्ञा का पालन करते है। किन्तु यह तो मानना ही होगा कि इस तरह के तक से बहुत लाभ नही हो सकता। बात कही तो बहुत ढग से गई है, मगर साथ ही वह हम बहुत निष्क्रिय बनाती है। इसके विपरीत "

वार्या शिष्टता दिखाते हुए मुह फेरकर झपकी लेने लगी। भलामानस बोरीस गूबिन जागता रहा। पर अचानक उसन मुह फाडकर जोर की जम्हाई ली, जिससे उसकी सदय आखो म आसू आ गये। वोलोद्या को इस बात से गुस्सा आ गया और वह बोरीस पर झपट पडा। उनकी हाथापाई से पत्ते और चीड की सुइया इधर उधर उडने लगी। बोरीस ने सुलगती हुई आग मे पैर मारा और जोर से चिल्लाया।

वार्या चौंककर जाग उठी। लडके खुशी से चीखते चिल्लाते और सडा मिट्टी उछालते हुए कुश्ती करने लगे। वे भला ऐसा क्या न करते? जिंदगी में उमंग थी वे हृष्टपुष्ट जवान और स्वस्थ थे।

'मे मी मै भी वार्या चिल्लाई। "जितने ज्यादा, ही अधिक मजा।

वार्या दोना लडका के ऊपर जा गिरी और अचानक उन त को बडी झप महसूस हुई। वार्या की आखो मे परेशानी झलक उठी

'बुद्धू कही के! उसने रुआसी होकर कहा।

वार्या ने अपना स्कट नीचे किया और अपनी टागा को सिकोड लिया। वोलोद्या और वोरीस एक दूसरे से आखे नही मिला पा रहे थे।

अगली बार हमारे बीच टाग मत अडाना " वोलोद्या ने कुछ देर बाद कहा। दो के बीच कुश्ती होती है और तीसरे के आ जाने स दगा हो जाता है बोरीस मेरा चाकू कहा गया?"

दाना लडके दिखावा करते हुए चाक ढूढने लगे।

उन्ह ऐसी झप महसूस हो रही थी कि उसे छिपाने के लिये बोरीस न कोई गीत गाना शुरू कर दिया। पर झेपकर वह अपनी ही कविता सुनाने लगा—

होती है पतझर की बारिश, शोर मचाये
कलखाजी तो मास उबाले सूप पकाये,
लगे गूजने नुक्कड पर बाजे के स्वर
हम जिसम जाते, वह नूतन अच्छा घर

आह बोरीस बस भी करो अब! वोलोद्या ने अनुरोध किया।

व तीना स्टशन की ओर वापिस चल दिय। बूदा-बादी अब भी जारी थी। खुमिया स भारी हुई उनकी टोकरिया धीरे धीरे चू चू कर रहा था। जब य झल्लाय और थके-हारे हुए तीना व्यक्ति रेलवे पर पहुचे तो झुटपुटा हो चुका था। वहा उन्ह लोगो की भारी भीड दिखाई दी। कोई चौदह साल का गडरिया रेल की पटरी के पास पडा हुआ बुरी तरह स चीख चिल्ला रहा था। वह अभी तक होश म था। पटरिया और तख्ता तथा बाल तल स सनी हुई राडी पर भी खून

• —

ही खून फैला हुआ था। लडके से कुछ ही दूर एक टाग कटी पडी थी, जिसके पैर मे पुराना-सा रबड का जूता था। एक बुढिया ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी और कई किसान बुत बने खडे थे, समझ नही पा रहे थे कि लडके का क्या करे। करीब ही एक भेड भी दम तोड रही थी। वह भी गाडी के नीचे आ गई थी।

वोलोद्या भीड को चीरकर आगे गया। दृश्य देखकर उसका चेहरा फक हो गया। उसने अपनी कमीज उतारी और अपने अनुभवहीन हाथो से जल्दी-जल्दी रक्तबध बाधने लगा। किसी ने उसकी मदद की। उसे केवल बाद मे ही इस बात का एहसास हुआ कि वह वार्या थी। तिनको का जजर टोप ओढे हुए एक किसान ने सहायता करते हुए कटी टाग वोलाद्या की ओर बढा दी। वोलोद्या ने उसे बुरा भला कहा। बोरीस भागकर स्टेशन पर गया और कोई बीस मिनट बाद स्ट्रेचर के साथ एक डाक्टर ट्रॉली म आया।

"किसने बाधा है यह रक्तबध?" रेलवे के बूढे डाक्टर ने जानना चाहा।

तिनका के टापवाले किसान न वोलाद्या की ओर सकेत किया।

"विद्यार्थी हा क्या?"

वोलोद्या ने काई जवाब नही दिया।

"ये शैतान के बच्चे, आज सभी पिये हुए है," डाक्टर ने झल्लाकर कहा। "आज धार्मिक पव है। तुम क्यो गला फाडकर चिल्ला रही हो?" डाक्टर ने बिगडते हुए सवलाये चेहरेवाली बुढिया से कहा। "भेड के लिये?"

डाक्टर ने सिर हिलाकर ट्रॉली की ओर सकेत किया और वोलोद्या का अपने साथ चलने के लिय कहा।

स्टेशन के प्राथमिक डाक्टरी सहायता के छोटे से कक्ष म डाक्टर ने वालाद्या का सफेद लबादा देने का आदेश दिया और गडरिये को एटीटेटनस सीरम की सूई लगाई। घडी भर का वोलोद्या ने ऐसा अनुभव किया मानो उसे गश आ गया हो। उसे डाक्टर की कक्श आवाज तो जैसे सपने म सुनाई दी।

"सचमुच तुमने अच्छा काम किया है। डाक्टरी के प्रथम वष मे विद्यार्थी से इसस अधिक की आशा नही की जा सकती। असली

चीज तो यही है कि तुम्हारे होश हवास कायम रहे। तुम्हारा चेहरा क्यो ऐसा जर्द हो रहा है? नस, इसे अमोनिया सूघने को दो। इसे बाहर हवा म भेज दो।'

वार्या और वोरीस बाहर बेंच पर बैठे हुए थ।

'तुम्हारी टोकरी कहा है?" वोरीस ने पूछा।

वोलोद्या ने कधे झटक दिय। उस मतली हो रही थी। "मैं कभी अच्छा डाक्टर नही बन सकगा कभी नही, कभी नही," वह दुखी होता हुआ सोच रहा था।

टोकरी के खो जान का भी उसे गम हो रहा था। उसे खमिया या अफसोस नही था। भाड म जाये वे तो! उसे तो कुछ-कुछ शर्म आ रही थी।

दो दिन बाद वोलोद्या न प्रादेशिक समाचारपत्र म एक विनम्र सोवियत विद्यार्थी के बारे म एक लेख पढा। लेख म कहा गया था कि उसे अच्छी जानकारी तो थी ही पर साथ ही उसन समय-बय और साहस का भी परिचय दिया और वह अपना नाम बताये बिना ही गायब हो गया। निष्कप यह निकाला गया था कि ऐसे अज्ञात नायक केवल हमारे ही देश म हो सकते है। वोरीस गूबिन ने सभी को यह घटना सुना दी और जब पतझर के शिक्षाकाल के पहले दिन वोलोद्या स्कूल म आया तो उसका जोरदार स्वागत किया गया।

हा तो अज्ञात नायक मुझे सुनाओ तो वह पूरी घटना। बहुत उत्सुक हू मैं सुनन को वोलोद्या की बूआ ने उसी शाम को वोलोद्या से कहा।

क्या वार्या ने भडाफोड किया है?'

हो सकता है।

'बात यह है कि मैंने जगी अस्पताल की सर्जरी के बा व्याख्याना की एक किताब खरीदी थी।

'हा हा कहत जाओ।

वही स मैंन रक्तबध बाधना सीखा था। पर मैं कभी डाक्टर नही बन सकगा। मुझ यह मानते हुए शर्म आती है कि मेरा सिर बुरी तरह चकरा रहा था।

शुरू म सभी का एसा हाल होना है चमकती आखो से अपन भतीजे की ओर दखते हुए बूआ न कहा। काश तुम अनुमान लगा

सकते कि मैं, जो पहले धोबिन होती थी, जब पहली बार स्कूल मे गई थी, तो मेरा क्या हाल हुआ था।"

इस घटना के बाद वार्या तो बिल्कुल नम्र हो गई और अब किसी भी बात के लिये वोलोद्या से बहस न करती। केवल येव्गेनी ही इस मामले की व्यग्यपूर्ण ढग से चर्चा करता—

"वे तुम्हारी खुमिया उडा ले गये न?" उसने जान-बूझकर तीखे अन्दाज मे कहा। "यह फल मिलता है दयालुता, उदारता और समझ-बूझ के बीज बोने का।"

"तुम क्या चाहते कि तुम्हारे मुह की ज़रा खातिर कर दी जाये?" वोलोद्या ने पूछा।

"यह छिछोरापन है!" येव्गेनी ने कडाई से कहा।

"कभी-कभी तर्क वितर्क करना निरर्थक होता है," वोलोद्या ने जवाब दिया। "अच्छी पिटाई कर दी जाय, तो मामला खत्म हो जाता है।"

"तो कानून किस मर्ज की दवा है? तुम क्या समझते हो कि मैं तुम्हे ऐसे ही छोड दूगा, तुम पर मुकदमा नही चलाऊगा? मेरे अच्छे दोस्त, तुम्हे सीधे दिमाग ठीक करनेवाले श्रम शिविर मे भेज दिया जायेगा," येव्गेनी ने समझाते हुए कहा।

वोलोद्या ने येव्गेनी की ओर देखा, तो उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि वह गम्भीरतापूर्वक बात कर रहा था। वह शान्त और सयत, अपनी फिट कमीज और कधेवाली पेटी पहने हुए चुस्ती का नमूना और बिल्कुल ऐसा बाका जवान लग रहा था जैसा हम पोस्टरो मे देखते हैं। "तो क्या मैं लगा ही दू उसके मुह पर एक चपत?" वोलोद्या सोच रहा था। पर अचानक उसे ऊब महसूस हुई और वह वहा से टल गया।

"पिता और बच्चे"

वोलोद्या अभी स्कूल म ही था कि उसने सेचेनोव नामक डाक्टरी सस्थान के विद्यार्थी का जीवन बिताना शुरू कर दिया। उसे बोरीस गूबिन से पता चला कि सस्थान के कुछ विभाग विद्यार्थियो के लिये

मण्डल चलाते है जिनमे सभी को जान की अनुमति है। उसी नि
म वह शरीर विकृति विज्ञान के विभाग द्वारा सगठित मण्डल म जाने
लगा। नाटे माटे और गजी चादवाले प्रोफेसर गानिचेव इस मण्डल
का सचालन करते थे। इस लम्बी गदनवाले नौजवान की तरफ उनका
फौरन ध्यान गया। यह सही है कि वे वालोद्या से कभी कोई सवाल
नही पूछते थे फिर भी अक्सर ऐसा लगता था, मानो वे वोलोद्या
के लिये ही व्याख्यान दते हो। स्कूल मे वोलोद्या की गाडी ठीक ठाक
ही चल रही थी, मगर अध्यापकगण उसके मामले म सावधानी स काम
लते और उनम स कुछ शत्रुता की भावना भी रखते थे। अध्यापको
की बैठक म वे उसे 'अदभुत लडका" कहते थे और शिक्षा-सचालिका
तात्याना येफीमोव्ना ने अनेक बार साफ साफ ही कह दिया था कि
वोलोद्या बहुत व्यक्तिवादी है, उसका दृष्टिकोण बहुत अस्पष्ट है और
वह इस आत्मविश्वासी लडके स कुछ अधिक आशा नही करती। सभी
अध्यापको का ऐसा मत नही था मगर उसके साथ बहस करने का
मतलब था झगडा मोल लेना। झगडा कोई उससे करना नही चाहता
था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, अध्यापक वोलोद्या से अधिकाधिक
नाखुश होते गये। उसकी एकाग्रता जो कभी-कभी छोकरा जसे शरारत
भरे शोर शराबे का रूप न लेती, उसका रुखाई भरा एकाकीपन और
अपने आन्तरिक जगत से उसका लगाव, जिसम वह स्कूल के ढर्रे स
अलग-थलग रहता हुआ खोया रहता था इन सभी चीजो से अध्यापकगण
चिढते थे। वे इस बात स भी खीझते कि वह आत्म निर्भर है कि
पाठ्यपुस्तको म दिये गये अकाट्य सत्यो स सतुष्ट न होकर सत्य की
सतत खोजता रहता है।

'काश कि मैं जल्दी स चिकित्साशास्त्र का विद्यार्थी बन जाऊं!
वहां वही वास्तविक अचूकता और स्पष्टता है। केवल वही असली
चीज है!' वोलोद्या रातो को जाग म अक्सर यही सोचता रहता।

दूसरा बार गानिचेव अपने विद्यार्थियो म मुस्कराकर जो कुछ
कहते यह उसका उदाहरण न होगा। वे कहते—

हमारे पास अभी बहुत गडबड बात सोच विचार कर लीजिये।
... ... कहा है कि चिकित्साशास्त्रियो को
हमेशा यह कोशिश करना चाहिये कि उन दवाइयो को ...

हो। अगर आप इस बात पर विचार करे, तो बात जैसी साधारण लगती है, वैसी है नही। हिप्पाक्रेट्स ने और जो सलाह दी है, उसका अनुकरण करन से व्यक्ति के अहम को चोट लगती है। उसने कहा है कि अगर कोई बीमारी किसी डाक्टर की समझ मे न आये, तो उसे बेधडक अन्य डाक्टरो को बुलाना चाहिये ताकि वे लाग उसे मरीज की हालत समझायें और जरूरी इलाज बतायें "

गानिचेव ने यह भी कहा—

"मेरे प्रिय मित्रो, गेटे को पढिये। मेफिस्टोफेनेस ने कुछ ऐसी कटु, मगर सच्ची बाते कही हैं, जिनका महत्त्व आज भी कम नही हुआ है। ऐसा मत सोचो कि गुनो के ऑपेरा म आपन उन सभी सत्या को सुन लिया है। उस पढिये और साचिय, उस पर गहरा चिन्तन कीजिये, वहा कुछ खोजिये और अपन मे यह पूछिये—क्या असली तौर पर मुझमे उस सबमे बडे प्रलोभन, अर्थात् विचारहीन कत्तव्यपालन से बच निकलने की ताकत है "

इधर उधर हिलते डुलते तसमावाले अपने चमकते जूते से ताल देते हुए वे जमन भाषा मे गेटे का पाठ करते और साथ-साथ उसका अनुवाद भी करते जाते—

> समझना मुश्किल नही है, चिकित्सा की आत्मा को
> छोटी और बडी दुनिया का
> यत्न से अध्ययन करो,
> और फिर हर चीज़ का
> भगवान की इच्छा पर चलन को छाड दो

गानिचेव झल्लाते और भुनभुनाते हुए चिकित्साशास्त्र के इतिहास म पेशेवर सकीणता की प्रथा, उन दपपूण और मूख बूढो के बारे मे अपने विद्यार्थियो को बताते, जो प्रतिभाशाली युवाजन के विचारो को इसलिये दबा घाट देते थे कि उनके विचार परेशान करनेवाले होते थे। प्रोफेसर गानिचेव का वह शपथ जबानी याद थी, जो सदिया पहले प्रसिद्ध बोलोगना विश्वविद्यालय के स्नातका को लेनी पडती थी।

"'तुम्हें अवश्य यह कसम खानी चाहिय'," गानिचेव की आखें गुस्से से जलने लगती और वे बहुत गभीर होकर यहा तक कि दम्भपूवक

इस कसम को दोहराते "'तुम्हें यह कसम खानी चाहिये कि हमेशा बोलोगना विश्वविद्यालय और अन्य प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की शिक्षा का पक्ष पोषण करोगे जहां ऐसे ग्रथकारों के विचारों के अनुसार शिक्षा दी जाती है जिनकी सदियो से प्रशसा हो रही है और जिनका प्रतिपादन तथा व्याख्या विद्यालय के सिद्धात और खुद प्रोफेसर कर रहे हैं। तुम अपनी उपस्थिति में अरस्तू गालेन, हिप्पोक्रेटस तथा अन्य के सिद्धान्तो और निष्कर्षों का कभी विरोध या महत्त्व कम नहीं करने दोगे

तो लीजिये यह थी वह कसम यह प्रतिज्ञा जो कभी ईजाद की गई थी गढी गई थी। इस तरह विज्ञान के गले में एक फन्दा डाल दिया गया था। हां हां एक फंदा! कारण कि मौलिक या नये का निश्चय ही यह मतलब है कि पहले से स्वीकृत मान्यताओं के बारे में नये विचार प्रकट करना अन्य की तो चर्चा ही क्या है, महान अरस्तू गालेन और हिप्पोक्रेटस के निष्कर्षों के सम्बन्ध में भी नये विचार व्यक्त करना। शैतान ही जाने कि ये अन्य कौन थे। ऐसा करने का मतलब होता था बड़े धार्मिक न्यायलय में पेश किया जाना और फिर आग में जिन्दा झोंक दिया जाना। इसलिये यह स्वाभाविक ही है कि उन दिनो के अधिकाश प्रतिभाशाली लोग ईमानदारी से काम करने के बजाय हमारे चिकित्साशास्त्र के जनक हिप्पोक्रेटस के इन शब्दों – निपुणता चिरस्थायी जीवन छोटा है प्रयोग में जोखिम है, तर्क वितर्क अविश्वसनीय है'– से अधिकतम लाभ उठाते। जिआर्दानो ब्रूनो ने उस जमाने के डिप्लोमा प्राप्त मन्दबुद्धिवालो का घिसा पिटा मार्ग छोडकर दूसरा ही रास्ता अपनाया। 'मैं ऐसी अकादमी का अकादमीशियन हू जिसका अभी तक अस्तित्व नहीं ' महान ब्रूनो ने अपने बारे में कहा। अज्ञानता के पवित्र पादरियो में मेरा कोई सहयोगी नहीं है। जैसा कि आप जानते हैं, इसका बहुत दुखद अन्त हुआ था

नाटे-मोटे प्रोफेसर गानिचेव सन्देह का प्रचार करते थे। वे पहले से ही उन रटटू तोतो को सस्थान से दूर रखना चाहते थे जिनका ऊचे अक पाना मात्र ही लक्ष्य था। वे नहीं चाहते थे कि माताओं के लाड-प्यार से बिगडे और ऊबे हुए ऐसे नौजवान सस्थान में आयें,

जिन्होने अभी तक इस बात का तय नही किया है कि वे अपनी प्रतिभाओ का कहा इस्तेमाल करे। प्रोफेसर विद्यार्थियो से कहते कि वे निरन्तर नवीनता की खोज कर। वे उन्ह बताते कि किसी भी डाक्टर की पुस्तिका, पाठ्यपुस्तक या बहुत ध्यान से तैयार किये गये व्याख्यानो से "आएसकूलापिउस की भावी पीढी," जैसा कि वे उन्ह कहना पसद करते थे, को तब तक कोई लाभ नही होगा, जब तक वह स्वय निरन्तर नवीनता की खोज नही करेगी।

"पर पाठ्यपुस्तके तो अभी तक कायम हैं न?" वोलाद्या की बगल मे बैठे हुए गोरे-चिट्टे, लाल गालो और फूली फूली आखोवाले मीशा शेरवुड ने एक दिन गानिचेव से पूछा।

"पाठ्यपुस्तके भी भिन्न भिन्न होती है," गानिचेव न सोचते हुए जवाब दिया। "मिसाल के तौर पर, हमारे जमाने मे रोगी और उसके परिवार के लोगो का जी खुश करने और चिकित्सा विज्ञान की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये ऐसी दवाइया दने की सिफारिश की जाती थी, जिनसे न कोई लाभ हो, न हानि। हमारी पीढी के समय म औषध-विज्ञान ने तरह-तरह की ऐसी बहुत सी औषधिया तैयार की थी, जो सर्वथा प्रभावहीन थी। पाठ्यपुस्तको ने भी डाक्टरो की कई पीढियो को इस आधार पर रोग निदान करन की शिक्षा दी कि किस दवाई से रोगी को लाभ होता है। समझे आप लोग? «Ex juvantibus»।

"बडी अजीब-सी बात लगती है!" शेरवुड ने कहा।

"पुराने जमान म," गानिचेव कहते गये, "जादू-टोना और ज्योतिष समेत दुनिया की सभी चीजो से लोगो का इलाज किया जाता था। गठिये और जोडो के दर्द के लिये मेढक की कलेजी को उपयोगी माना जाता था, सुनहरी पृष्ठभूमि पर बबर का चित्र गुर्दे की बीमारियो को दूर करता था और ऐसा माना जाता था कि आक के अर्क से पीलिये का केवल इसलिये इलाज किया जा सकता है कि उसका रग पीला है। ऐसा भी समझा जाता था कि चाद की घटा-बढी के साथ साथ मानवीय मस्तिष्क का आकार भी घटता-बढता है और सागर के उतार चढाव का खून के दौरे पर असर पडता है। मालियेर ने अपने पात्र बेरालड के मुह से बिल्कुल ठीक ही कहलवाया है कि इस

ढग की शास्त्री कना की शान-बान उन बेतुकी, गंभीर और विद्वत्तापूर्ण अनाप शनाप बातों म निहित थी, जिनम शब्दाडम्बर और झूठे आडम्बर समझबूझ का स्थान लेत थे।"

"क्या आजकल भी ऐसी चीजें होती है?" फूली फूली आखोवाले नौजवान न फिर पूछा।

"इन्सान ही पाठ्यपुस्तकें लिखते हैं और चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा भी इन्सान ही देते हैं," गानिचेव ने अपनी बात ऐसे जारी रखी मानो उन्होने नौजवान का सवाल सुना ही न हो। "महान डाक्टर भी इन्सान ही थे। अतीत के महान चिकित्सकों का मानवीय आलोचना स परे घोषित करने की, उनकी गलतियो और उनके द्वारा लिखी बकवास की अवहेलना करने की एक गलत रवैया, मैं तो यह तक कहने की हिम्मत करूगा कि एक हानिकारक, कमीनी और सडी हुई प्रवृत्ति पाई जाती है। यह प्रवृत्ति विज्ञान की प्रगति म बाधा डालती है। जाहिर है कि हमारे बडे समकालीन वैज्ञानिक भी भूल और कभी-कभी बकवास भी करते है। ऐसी गलतिया लोगो के दिमागो मे भर दी जाती है क्योकि उन्हे करनेवाले लोग बहुत ही सम्मानित और कुछ तो बहुत ही जाने-माने अकादमीशियन होते हैं। पर आपको अपने दिमाग़ का इस्तेमाल करना चाहिये, वरना आप लोग डाक्टर नही, बल्कि केवल ऐसे ही बनेंगे, जिनके बारे मे मोलियेर ने लिखा था—'वे लातीनी मे यह बताते है कि तुम्हारी बेटी बीमार है।'"

"नकचढा बूढा!" फूली फूली आखोवाले मीशा शेरवुड ने फुसफुसाकर वोलोद्या से कहा।

"और तुम जवान गधे हो," वोलोद्या ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

"होश मे आकर बात करो!" शेरवुड गरम पडा।

"तुम कुछ जानना चाहते हो क्या?" गानिचेव ने पूछा।

वोलोद्या चुप रहा।

पतझर की तिमाही पढाई खत्म होते तक वोलोद्या ने अध्यापको स ऐसे प्रश्न पूछने की आदत से निजात पा ली, जिनके सभी के लिये उत्तर देना सभव नही होता था। जहा तक उनके प्रश्नो के उत्तर देने का सम्बध है, सो वह खरी-खरी कहने की अपनी जन्मजात आदत

के कारण वैसे ही जवाब नही दे पाता था जैसे कि अध्यापक चाहते थे। इसलिये वोलोद्या को जब भी ब्लैक बोर्ड पर बुलाया जाता छात्रों को एक मुफ्त तमाशा देखने को मिल जाता। ज़ाहिर है कि अध्यापक की तुलना में उसकी जानकारी कम और यकीनन सतही होती थी, मगर वह हमेशा यह दिखा देता कि उसका ज्ञान काफी विस्तार था। वह अक्सर ऐसी बातें कहता, जो अध्यापक के लिये भी नई होतीं और ज़ाहिर है कि पाठ्यपुस्तकों में उन्हें नही ढूढा जा सकता था। वोलोद्या के उत्तर अक्सर सभी छात्रों को गहरे चिन्तन की प्रेरणा देते और हर कोई वोलोद्या और अध्यापक के बीच होनेवाले वाक्-द्वन्द्व को बहुत दिलचस्पी से सुनता।

"यह कोरा भाववाद और रहस्यवाद है, पोपवाद है!" अध्यापक ने एकबार चीखकर कहा।

"मार्क्सवादी को तजरबे की अवस्था से सामने आनेवाले तथ्य को ही बुरा कह देने के बजाय उसकी जाच पडताल करनी चाहिये," वोलोद्या ने शान्त रहते हुए दृढता से कहा। "मैंने आपके सामने एक तथ्य पेश किया है और आप डाटने डपटने लग गये।"

वोलोद्या इत्मीनान से अपनी डेस्क पर जा बैठा। अदाम ने कापते हाथों से पहले तो उसकी रिपोर्ट में २ और फिर ५ अक लिख दिये। अपनी सभी त्रुटियों के बावजूद वह ईमानदार आदमी था। वोलोद्या के मित्रों ने उसकी खूब तारीफ की और एक-दूसरे को इस तरह के पुर्जे लिखकर भेजे— "कर दिया न उसने अदाम का दिमाग ठिकाने!" या "वह हमारा गर्व और हमारी शान है!" या "जाने आगे चलकर वह क्या बनेगा?" मगर वोलोद्या ने किसी पुर्जे की ओर ध्यान नही दिया, कुछ भी देखा-सुना नही। वह तो अपने डेस्क पर बैठा हुआ खून के दौरे के सम्बन्ध में एक नई किताब पढने में व्यस्त था। इस किताब को वह केवल अगली शाम तक ही, जब चिकित्सा-मण्डल द्वारा आयोजित व्याख्यान होनेवाला था, अपने पास रख सकता था। १६वी शताब्दी में स्पेनवासी मिगुएल सेर्वेत ने खून के दौरे की समस्या को लगभग हल कर लिया था, पर उसे जिन्दा जला दिया गया था। ओह, कमीने कही के!

यह तुम क्या बड़बड़ा रहे हो?" वोलोद्या के पास बैठे हुए नाद ने पूछा।

कौन मैं बड़बड़ा रहा था?' वोलोद्या ने चौंककर पूछा।

फिर भी यह बड़ी मुश्किल से ही डाक्टरी के कालेज में हुआ। उसने तुर्गेनेव की रचना पिता और बच्चे' को अपना निबंध के लिये चुना और बाज़ारोव पर ही अपना सारा ध्यान केंद्रित किया। लगभग जनून की हद तक पहुंचे हुए अपने जोश में उसने बाज़ारोव को इसी विज्ञान के नये और अछूते मार्गों का पथप्रदर्शक कहा। दूसरी ओर बेचारे तुर्गेनेव को उसने "एक निठल्ला बुनने वाला" बताया जो कला को कला के लिये मानते हुए ही लिखते थे या शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि अपना ऐसा फालतू समय बिताने के लिये ही लिखते थे जब वे पालीना वियारदो का गाना और ताना का रस नहीं लेते थे। वोलोद्या को यह कलापूर्ण वाक्य अच्छा लगा और उसने उसे रेखांकित कर दिया। जाहिर है कि उसे तो भूलकर भी यह ख्याल नहीं आया होगा कि इसी वाक्य को पढ़कर अत्यधिक संवेदनशील परीक्षिका अपने दिल को ताकत देने की दवाई पीने को विवश हो जायगी। विद्यार्थी चुनाव-समिति की बैठक में वोलोद्या के निबंध के कुछ अंश पढ़कर सुनाये गये। उन्हें सुनकर सभी लोग खूब हंसे और उन्होंने भर्त्सनापूर्ण विचार प्रकट किये। केवल गानिचेव ही नहीं हंसे। चूंकि कालेज में सभी लोग उनका सम्मान करते थे और उनसे जरा दबते भी थे इसलिये बैठक में उपस्थित सभी लोगों ने इस बात की ओर खास ध्यान दिया कि वे हंस नहीं रहे हैं।

'यह सही है कि नौजवान का दृष्टिकोण गलत है," गानिचेव ने सोचते हुए और अफसोस के साथ कहा। उसने बुरी तरह और बहुत बड़ी भूल की है। मगर उसने वही कुछ लिखा है, जो वह ईमानदारी से सच मानता है। प्यारे दोस्तो बात यह है कि उसने परीक्षा पास करना या हमारी नजर में अच्छा बनना नहीं चाहा, अपने को इस तरह प्रस्तुत करने की कोशिश नहीं की कि हम उस पर मुग्ध हो जाते। उसने तो केवल बाज़ारोव की सफाई पेश की है। वोलोद्या अभी कमउम्र है और इसलिये यह नहीं जानता या अभी तक यह मालूम नहीं कर पाया कि रूस में बाज़ारोव का पक्षपोषण करनेवाला वह

पहला आदमी नही है। उसन वहुत ही ज्यादा जोर शोर से बाजारोव की वकालत की है। पर, मेरे प्यारे सहयोगियो, आप इस जोरदार वकालत के तथ्य को ही ले ले। एक नौजवान, वास्तव म एक छोकरा ही, रूसी विज्ञान की वकालत करने के लिये सामने आया है। उसने सच्चे दिल से महसूस करते हुए अपने विचार प्रकट किये है। वोलोद्या ने बाजारोव मे सेचेनोव और मेचनिकोव तथा पिरोगाव के लक्षण खोज निकाले हैं। आप लोगो की अनुमति से मैं एक अजीव बात कहना चाहता हू। तुर्गनेव अगर आज जिन्दा होते और इस निवन्ध को पढते, तो कभी वुरा न मानते। वे जरा हस देते, मगर वुरा हरगिज न मानते और शायद यह निवध उनके दिल को छू भी लेता। वह इसलिये कि जोश म जो कुछ अनाप शनाप लिख गया है अगर उसे हटा दिया जाये, तो इसमे एक नागरिक के कत्तव्य की समझ बूझ देखी जा सकती है। जहा तक हमारे कालेज, हमारी सस्था का सम्बन्ध है, मैं यह कहना चाहता हू कि इस आवदक ने जो शैली अपनायी है, उससे एक ऐसे व्यक्तित्व का आभास मिलता है, जो सक्रिय डाक्टर, एक जुझारू और सघपशील व्यक्ति बनेगा। मैं इस आडम्बरपूण भापा के लिये क्षमा चाहता हू। हा, वह असहिष्णु होगा, किन्तु उसके व्यक्तित्व मे मौलिकता और ध्येयनिष्ठा होगी वह दूसरो से भिन्न होगा। इस बात को ध्यान म रखते हुए हमे ऐस विद्यार्थियो की बहुत सख्त जरूरत है कि एक खास तरह के युवाजन केवल सस्थान म प्रवेश पाने की इच्छा रखते हैं। वह सस्थान कैसा भी क्या न हो, उन्हे इसस कोई मतलब नही, केवल विद्यार्थी बनना ही उनका ध्येय होता है। यह सही है कि कभी-कभी हमारे यहा से उच्च शिक्षा प्राप्त वढिया स्नातिकाए निकलती हैं, मगर वे असली अथ मे डाक्टर नही होती। कभी-कभी हमारे यहा से वहुत प्यारे डाक्टर भी निकलते हैं, किन्तु "

गानिचेव बनावटी ढग से मुस्कराये और उन्होंने ऐसे हाथ झटका मानो बात को आगे जारी रखने म कोई तुक न हो।

"जहा तक उस्तिमेको का ताल्लुक है, मैं उसे अपन अध्ययन-मण्डल से जानता हू। मैं साफ-साफ यह कह देना चाहता हू कि बेशक कोई कुछ भी क्या न सोचे, मैं तो व्यक्तिगत रूप से न केवल उसे

विद्यार्थी ही बनाना चाहूंगा बल्कि अपना काम भी सौंपना चाहूंगा। बशर्ते कि यह अपनी धुन का दीवाना नौजवान शरीर विकृति विज्ञान के अध्ययन में अपने को पूरी तरह लगा दे। आप यह तो जानते ही हैं कि कभी कभी हम अपना काम किसी अजनबी को नहीं, बल्कि एक ऐसे पर घर अगर उन्तिम को ये सम्बन्ध में सभी साथी एकमत नहीं हैं तो हम उस बातचीत करने के लिये बुला सकते हैं "

सभी साथी एकमत नहीं थे और इसलिये बोलोद्या को दोपहर के २ बजे विद्यार्थी चुनाव-समिति की बैठक में बुलाया गया। बोलोद्या बारह बजे आ गया और लम्बे तथा अंधेरे दालान में इधर-उधर टहलने लगा। जैसे ही वह घूमा कि उसे येव्गेनी दिखाई दिया। उसके रंग-ढंग में सदा का सा बनावटीपन था, पर इस समय वह बहुत ही सजग और खुश दिखाई दे रहा था।

तुम यहां किसलिये आये हो?" बोलोद्या ने हैरान होकर पूछा।

दाखिल होने और किसलिये? येव्गेनी को बोलोद्या के सवाल में हैरानी हुई। "तुम्हें तो यह मालूम ही है कि मैंने इसके बारे में तुम्हारी सलाह भी ली थी। हां, और मेरा अन्नदाता भी खुश है। न जाने क्यों मगर तुम्हारे बारे में उसकी बहुत अच्छी राय है। इसलिये वह खुश है कि हम इकट्ठे पढ़ेंगे। मैंने तो तीसरे वर्ष के विद्यार्थियों से दोस्ती भी कर ली है और उनका कठोर रोमांस भी सीख लिया है। सचमुच, बहुत प्यारा सा गीत है।"

कैसा रोमांस?" बोलोद्या समझ नहीं पाया।

मैं तुम्हें गाकर सुनाता हूं। उसका शीर्षक है 'मेरे चीर फाड़ करनेवाले दोस्त के नाम।"

येव्गेनी खिड़की के दासे पर बैठ गया, उसने अपना लाल-लाल मुंह खोला और मज़े से गाने लगा (वह घर पर, स्कूल और शौक़िया कला कार्यक्रमों में अक्सर गाता था) —

टूट चुके हों जब सारे रिश्ते-नाते
और लिटायें जब मुझको संगमरमर पर,
सावधान तुम रहना, तनिक कृपा करना
नहीं गिरा देना दिल मेरा पत्थर पर

येव्गेनी का गाना सुनकर कुछ लोग जमा हो गये थे। उसने अपने भावी सहपाठियों को बताया—

"इस गीत के बारे मे सबसे अजीब बात यह है कि गाशिन न इसे रचा था, जो चीर-फाड करनेवाला भी था। है न यह प्यारा गीत? आप लोग एक और गीत सुनना चाहते हैं, डाक्टरी के पुराने विद्यार्थियो का गीत? यह चीर-फाड के कक्ष के बारे में है जहा हमारी किस्मत में भी बहुत-सा वक्त बिताना लिखा है।"

दालान म दो परीक्षक आते दिखायी दिये। येव्गेनी ने उन्ह गुजर जाने दिया और फिर लगभग फुसफुसाते हुए गाना शुरू किया—

> बडा अजब यह युवक, भला क्या खुश पाता
> बदबू वाले शवघर म हर दिन जाता,
> जाता है इसलिए, ज्ञान कुछ ले पाये
> लेकिन हर दिन भूले ही करता जाये

आश्चर्य की बात थी कि येव्गेनी लोगो को पसद भी आ सकता था। दालान मे गाये गये गीतो से उसके कुछ मित्र भी बन गये थे। यह सब उनके साथ चहलकदमी करता था, ठहाके लगाता था, कधे थपथपाता था और हर किसी को घनिष्ठता से उसका नाम लेकर बुलाता था।

"ऐ भावी पिरोगोव-स्क्लीफोसोव्स्की-बुर्देन्को के मिले-जुले रूप, इधर हमारे पास आ जाओ," येव्गेनी ने वोलोद्या को आवाज दी। "लो, परिचय कर लो इस भीड से—यह है न्यूस्या योल्किना, यह स्वेतलाना और ओगुर्त्सोव '

माथे पर बल डाले, दुबला-पतला, लम्बी बाहो और गालो की उभरी हड्डियो तथा घनी भौहोवाला वोलोद्या विद्यार्थी चुनाव-समिति के सामने आया। जिस किसी ने भी कोई सवाल पूछा, वोलोद्या न उसका अपने ढग से, नपा-तुला और बेधडक जवाब दिया। पर उसने अपने जीवन-यापन के रूप मे जिस विषय को चुना था उसके प्रति उसका अपना रवैया इतना गभीर था कि बातचीत करनेवाले लगभग सभी लोगो ने खुशी स एक दूसरे की आखों म झाका और कुछेक न तो

अर्थपूर्ण ढंग से कभी-कभी आह भी भरी। केवल एक ही व्यक्ति वालोद्या का शत्रुतापूर्ण दृष्टि से देख रहा था—गेन्नादी तारासोविच पावल्याक। वह देखने भालने में पूरा प्रोफेसर लगता था—चांद निकली हुई, ढंग से छंटी हुई और उंगलियों में अंगूठियां पहने हुए। वालोद्या में कोई ऐसी चीज़ थी, जिसके कारण उसे खीझ आ रही थी—शायद बड़ों के प्रति आदर का अभाव। फिर भी सब कुछ ठीक-ठाक ही रहा। ट्रम्प छल्लावाली घडी जेब से निकालकर पावल्याक ने उस पर नज़र डाली और किसी रोगी को देखने चला गया। वालोद्या को अच्छे ढंग से जाने को कहा गया।

विद्यार्थी

'सचमुच बडी खुशी होती है" डीन ने कहा। "ऐसे लडके मिलकर खुशी होती है। मैं बैठा-बैठा सोच रहा था कि नोवोरोस्सीइस्क नगर के विश्वविद्यालय में वालोद्या जैसा लडका कभी नहीं आया, कम से कम मेरी कक्षा में तो नहीं। अब यह चर्चा चल ही गई है तो मुझे एक और लडके का ध्यान आ गया है। वह भी मुझे अच्छा लगा बहुत ही जवान है, सेब जैसे लाल लाल गालोंवाला। ज़ाहिर है कि बहुत प्रतिभाशाली तो नहीं, पर बहुत ही अच्छा लगनेवाला नौजवान है। बहुत अच्छा प्रभाव डालता है मन पर देखिये, उसका नाम भूल गया '

येवगेनी स्तेपानोव का नाम डीन के दिमाग से निकल गया लगता था। पर कुछ अध्यापक जानते थे कि येवगेनी का डीन के घर में आना-जाना है, कि वह वहां अक्सर रोमांस भी गाया करता है, कि डीन की बेटी इराईदा उस पर लट्टू है, इसलिये उन्होंने डीन को उसका नाम याद दिला दिया।

"हां, हां, मेरे ख्याल में स्तेपानोव ही है उसका नाम," डीन ने हामी भरी। 'बहुत अच्छा और बहुत नेकदिल लडका है, इसमें कतई सन्देह नहीं। हमारे जमाने में ऐसा को भोला भाला जवान कहा जाता था। उसमें असली रूसी की झलक मिलती है, स्तेपियाई गंध आती है, बड़ा उदार और हिम्मती है वह!"

डीन ने अनुभव किया कि वह येव्गेनी के बारे मे जरूरत से कुछ ज्यादा ही कह गया है और इसलिये उसने फिर से वोलोद्या की चर्चा शुरू की और उसे "भावी सोवियत डाक्टर का आदर्श रूप" कहा।

"यह ज्यादा अच्छी बात कही आपने," बहुत खुश होते हुए गानिचेव ने अपनी सहमति प्रकट की। "वह सभी विषयों में उच्चतम अक पाने और चमकते हुए लाल लाल गालोवाला म से तो नही है। हा, वह यह जानता है कि उसे किस बात की धुन है। मेरे कहने का ढग तो बहुत अच्छा नही, पर बात है सोलह आने सही है कि वह ऊचे उसूलोवाला नौजवान है। यह कहने की कोई जरूरत नही कि वह परेशान तो करेगा, पर ऐसी परेशानी बरदाश्त करने के लायक होगी। वह धृष्ट है, खुले तौर पर धृष्ट है "

प्रोफेसर गानिचेव के अदाज से यह स्पष्ट नही हुआ कि वोलोद्या का धृष्ट होना उन्ह पसद है या नही। फिर भी ऐसा लगा कि उन्ह यह पसद है।

"वह मोवल्याक भी नही बनेगा," गानिचेव कहते गये। "मैं यकीन दिला सकता हू कि किसी हालत मे भी ऐसा नही होगा। साथ ही मैं यह भी स्वीकार करता हू कि हमारे अत्यधिक सम्मानित प्रोफेसर मे *गोगोल की 'कुल मिलाकर आकर्षक महिला'* या उनके इपान्का जैसे एक अन्य बहुत भद्र व्यक्ति का सा आकर्षण अवश्य है।"

वोलोद्या जिस दिन डाक्टरी के कालेज का विद्यार्थी बना, उसी दिन उनके पिता हरे रग के एक अजीब और छोटे-से हवाई जहाज मे यहा पहुचे। हवाई अड्डा उचा नदी के तट पर था। अफानासी पेत्रोविच हवाबाज के कक्ष से बाहर आकर इस तरह अपनी टागें सीधी करने लगे, मानो वे बहुत देर तक ठेले मे बैठे रह हो। वे शिरस्त्राण नही पहने थे और उनमे ठाट-बाट की कोई चीज नही थी। घास पर बैठे हुए अन्य हवाबाज उछलकर सीधे खडे हो गये और उनके चेहरा से यह बिल्कुल स्पष्ट हो रहा था कि वे वोलोद्या के पिता को जानते हैं और उनका आदर करते हैं। पिता के प्रति गर्व की भावना से उसके चेहरे पर सुर्खी दौड गई। उसे गर्व था अपने पिता की बाहरी सादगी और सरलता पर, ठहाका लगाते समय उनकी आखो के गिर्द पड

जानेवाली झुरियो और उस शक्ति पर, जिसे वे मानो जान-बूझकर छिपाये रहते थे और उसे नाज़ था उनकी उदारता पर।

"रोदिग्रान न अभी तक रिपोट नही की?"

'नही अभी तक ता नही," वोलोद्या न मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

अपनी सैनिक परम्पराओ के अनुसार वोलोद्या क पिता कभी यह नही कहते थे कि वह "आया" या नही, बल्कि यह कि उसने "रिपोट' की या नही, "सोने जा रहा हू" ऐसा न कहकर यह कहते कि "आराम करने जा रहा हू"।

'ऐ शैतान, बूढे आदमी पर हसता है!" अफानासी पेत्रोविच ने कहा और वोलोद्या को जोर से धकेल दिया।

वोलोद्या लडखडाया, मगर गिरा नही। सैनिक हवाबाज़ कुछ बातचीत कर रहे थ। 'सम्भवत मेरे पिता के बारे म ही!" वोलोद्या ने सोचा।

बूआ अग्लाया किसी बैठक मे भाग लेने गई थी और खान क समय ही घर आई। बढिया खाना तैयार करने के लिये वह पिछली शाम और आज सुबह के कई घटा तक काम मे जुटी रही थी। येव्गनी भी खाना खान, या जैसा कि वह लज़ीज़ खाने की सम्भावना होन पर कहता था–'जवान का लटका' लेने आया। वह भी डाक्टरी के कालेज म दाखिल हो गया था। बेशक यह सही है कि इसक लिये इराईदा न अपनी मा पर दवाव डाला था और मा न अपने डीन पति स अनुरोध किया था। इसके बावजद भी वह कालेज म आसानी स नही घुस पाया था। शुरू म तो सूची म उसका नाम नही लिखा गया था और केवल लम्बी चौडी बातचीत के बाद ही अन्त म 'जोडा' गया था। इस समय यव्गेनी अपने को ऐस आदमी की भाति अनुभव कर रहा था जा लम्बी दौड लगाकर चलती ट्राम पर चढ ता गया हो, पर अभी तक जिसका दम फूला हुआ हो। पर उसका मूड न केवल बहुत बढिया, बल्कि विजेता का सा था। सच तो यह है कि डीन के अतिरिक्त कोई भी यह नहा जानता था कि इस मामले को सिरे चढाया गया है। इसलिय अब उस यह ज़ाहिर करने की क्या ज़रूरत पडी थी कि यह बहुत कृतघ्न है बडा आभारी है, इत्यादि

येव्गेनी के सौतेले बाप को भी बहुत खुशी हुई थी। बेशक यह सही है कि लड़के मे कोई खास प्रतिभा नही है और मा ने लाड-प्यार से उसे बहुत बिगाड दिया है, फिर भी अगर वह कालेज मे दाखिल हो गया है, तो उसमे कुछ खास बात तो है ही। यहा कोई गडबड-घुटाला नही हो सकता। यह प्रतियोगिता का मामला है, यहा तिकडम बाज़ी नही चल सकती।

"जब मेरे जिस्म की मोटर कुछ गडबड हो जायेगी, तो तुम उसकी मरम्मत कर दोगे। क्यो, ठीक है न?" उन्होने येव्गेनी से कहा।

रोदिम्रोन मेफोदियेविच असैनिक पोशाक मे उस्तिमेको के घर आये। केवल उनके अत्यधिक सवलाये हुए चेहरे और झूमती झामती चाल से ही यह पता चलता था कि वे जहाज़ी हैं। वे वार्या और उसी तरह वोलोद्या को भी घडी भर के लिये अपने से दूर नही होने देते थे। वोद्का का एक जाम पीने के बाद उन्होंने ज़ोर का चटखारा भरा और बोले –

"पी ले, भाइयो, पी ले यहा, दूसरी दुनिया मे शराब कहा? और अगर होगी वहा, तो हम पी लेगे यहा, पी लेगे वहा"

रादिम्रोन मेफोदियेविच के पिता, मेफोदी स्तेपानोव कुछ देर बाद आये। वे उसी समय स्नानघर से आये थे और लम्बी रेशमी कमीज़ पर वास्कट पहने थे। बहुत सन्तोषी जीव लग रहे थे वे।

"बढिये, हमारे परिवार की जान, उसके प्राण," रादिम्रान मेफोदियेविच ने अपने पिता से कहा। "खूब खुशी मनाइये, आपको अपने पोते का डाक्टरी के कालेज का विद्यार्थी बनते देखन का दिन नसीब हुआ है। वोलोद्या भी विद्यार्थी बन गया है। इस खुशी मे सबसे बडे गिलास उठाये जाने चाहिये।"

"डाक्टरी मे क्या रखा है, भूमि सर्वेक्षक बनता, तो ज्यादा अच्छा रहता।"

मेफोदी स्तेपानोव की हर चीज के बारे मे अपनी राय थी।

"तुम वर्दी के बिना क्या आये हो?" उन्होंने अपने बेटे से पूछा। "तुम बडे अफसर हो, इसलिये लोगो का दिखान के लिय ही वर्दी पहननी चाहिये। मैं जब जापान के युद्ध स वापिस लौटा था, तो बहुत अर्से तक फौजी पट्टिया लगाये रहा था। इसस आदमी की ज़रा

शान बनी रहती है। जैसे ही मैंने उन्हें उतारा कि मामूली देहाती सा देहाती हो गया।

इसके बाद उन्होंने अग्लाया से पूछा—"हेरिंग के लिये तुमने क्या लिया?

बस! अग्लाया ने जवाब दिया।

और भेड़ के मांस के लिये?"

आह छोड़िये भी पिता जी। आपको क्या लेना-देना है इससे? रोस्मिआन मफान्यिविच ने कहा।

'मैं तो सिर्फ बात करने के लिये ही पूछ रहा था,' बूढ़े ने जवाब दिया।

वार्या अपने पिता के साथ सटकर फुसफुसाई—

'पापा कुछ दिन तक हमारे पास रहिये, कृपया रुक जाइये। लम्बी छुट्टी ले लीजिये और गाली मारिये अपनी नावों को'

'नाव नहीं जहाज पापा ने उसकी गलती ठीक की। "यहां तो केवल तुम तीनों को ही मेरी ज़रूरत है और वहां ढेरों डर लोग है। ज़रा सोचो तो बेटी तुम क्या कह रही हो!"

'कोस्तिया बड़ा अजीब-सा हो गया है वार्या ने शिकायत की। 'मैं तो उसे समझ ही नहीं पाती।

कोई बात नहीं हम इस पर विचार कर लेंगे।"

अफानासी पेत्रोविच एक बड़ा-सा फीता बंधी हुई गिटार ले आये और सुरों को धीरे धीरे छेड़ते हुए गाने लगे—

> ओह रात तुम बड़ी अंधेरी काली-काली!
> बहुत अंधेरी बहुत अंधेरी पतझर वाली!
> कहो रात क्या तुम ऐसी गुस्से में आयी?
> नहीं एक भी तारा अपने संग मे लायी

अग्लाया ने अपने जोरदार और भारी स्वर से अन्तिम पंक्ति को दोहराया—

> नहीं एक भी तारा अपने संग में लायी

न जाने क्यों पर हर किसी पर अजीब-सी उदासी छा गई। बूढ़े मेफोदी ने ही कुछ और देर तक महफिल का रंग बनाये रखने की कोशिश की पर फिर वे भी चुप हो गये।

"क्या मामला है?" अग्लाया ने कहा। "गाना अधूरा ही क्यो छोड दिया?"

रोदिम्रोन मेफोदियेविच के माथे पर वार-वार वल पडे थे। अफानासी पेत्रोविच गिटार को सोफे पर टिकाकर वेटे को ताकने लगे थे। येव्गेनी ने फुसफुसाकर वोलोद्या से कहा कि उसे फौरन यहा से खिसक चलना चाहिये, कि कुछ यार-दोस्त नदी के तट पर इकटठे होकर सीख-कबाव भूननेवाले हैं। उसने बताया कि वहा इराईदा और मीशा शेरवुड आयेंगे और शायद खुद डीन भी पधारें। समझ गये?

"समझ गया," वोलोद्या ने रुखाई से जवाब दिया।

झुटपुटा होने पर वार्या के भविष्य की चर्चा होने लगी। वोलोद्या ने सुझाव दिया कि वह डाक्टरी के कालेज में दाखिल हो, अफानासी पत्रोविच ने प्रौद्योगिकी की खूब प्रशसा की, जब कि बूग्रा अग्लाया केवल मुस्करा दी और उसने कुछ भी नही कहा। वार्या ने भौहो के बीच दृढता को रेखाए वनाते हुए टनटनाती आवाज़ मे कहा—

"मैं कला-क्षेत्र मे काम करूगी।"

"यह क्या बला है?" बूढे मेफोदी ने पूछा। उन पर अब तक शराब का कुछ असर हो चुका था।

"मसलन थियेटर में," वार्या न अधिक ऊची आवाज मे और कुछ झल्लाते हुए जवाव दिया।

"वह भी कोई काम होता है," बूढे ने जम्हाई ली।

"पर तुमम इसके लिये आवश्यक गुण भी है?" वार्या के पिता ने धीरे-से पूछा। "देखो, वेटी, मैं तुम्हारे दिल का ठेस पहुचाने के लिये ऐसा नही कह रहा हू, पर तुम्हारी आवाज तो खास अच्छी है नही। इसके अलावा, तुम खुद भी शलजम की तरह गोल मटोल और मज़बूत हो। ऐसी अभिनेत्री तो मैंने कही देखी नही।'

"मैं लम्बी हो जाऊगी," वार्या ने उदासी से जवाव दिया। "मुझे अनाज की चीजे भी कम खानी चाहिये। रही आवाज़ की बात, तो मैं ऑपेरा मे नही जा रही हू और फिर आवाज को साधा भी जा सकता है।"

वोलोद्या ने दया की नज़र स वार्या की ओर देखा। वार्या ने उसे जबान दिखाकर मुह फेर लिया।

दर गये उसी रात को अफानासी पत्रोविच सोफे य सिरे पर इत्मीनान स अपने पैर टिकाकर लेट गये और चमकदार जिल्दवाली काई पतली-सी किताब पढने लगे। मजे से सिगरेट के कश लगाते हुए उन्होंने अपना आश्चर्य प्रकट किया—

'सुनो तो, वालोद्या' दुनिया मे उकाब ही एक ऐसा पक्षी है, जो सूरज की ओर सीधे देख सकता है। यही से 'उकाब की आखोंवाला' मुहावरा निकला है। तुम यह जानते थे वोलोद्या?"

"नहीं।

वडे खबसूरत होते है ये शैतान," उसके पिता कहते गये। "उन दिनो जब मै 'सोपविच' हवाई जहाज उडाता था, तो उन पर मुग्ध हुआ करता था। वे सीधे हवाई जहाज पर झपटते थे, हवाई जहाज को इधर उधर हटाना पडता था। बडे बहादुर पक्षी है वे "

अग्लाया अपने भाई की बात सुन रही थी, उसके होठो पर स्वप्निल सी मुस्कान और काली आखो म हल्की-हल्की चमक थी। मेज पर रखा हुआ समावार धीरे धीरे गुनगुना रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे तीनो सदा एसे ही एकसाथ थे और हमेशा ऐसे ही एकसाथ रहेंगे, हमेशा ही

पौ फटने पर वोलोद्या के पिता चले गये। उन्होने वोलोद्या और अपनी बहन को विदा करने के लिय साथ जाने से मना कर दिया।

'विदा करने के लिये देर तक साथ रहने का मतलब है अधिक आसू' अफानासी पेत्रोविच न चहकते हुए कहा। उन्होने चाय खत्म की वोलोद्या के कधे पर उसी तरह टहोका दिया, जैसा कि मिलने के वक्त किया था बहन को गले लगाया और चल दिये।

वोलोद्या खिडकी से झुककर अपने पिता को देखने लगा।

वोलोद्या के पिता ड्योढी पर खडे हुए धुधलाते आकाश की ओर देख रहे थे। उकाब की आखोंवाला', ये शब्द फिर से वोलोद्या के दिमाग म गूज गये। उनके पिता अपनी टोपी हाथ म लिये हुए थे। उनके नगे सिर पर हल्की-हल्की रोशनी पड रही थी। वोलोद्या ने अन्तिम बार अपने पिता को इसी रूप म देखा था और सदा के लिये इसी तरह वे उसके मानस-पटल पर अकित होकर रह गये—ड्योढी पर खडे आकाश को ताकते हुए हवाबाज के अपने भाग्य को देखते हुए।

चौथा अध्याय

उपहार

अफानासी उस्तिमेन्को जब हवाई अड्डे पर पहुचे, तो उजाला हो चुका था। रोदिग्रोन स्तेपानोव जहाजिया की सफेद फौजी वर्दी पहने पहले से ही वहा मौजूद थे और नदी के तट पर इधर-उधर टहल रहे थे।

"मैंने तो तुम्हे मना किया था," अफानासी पेत्रोविच ने अप्रसन्न होते हुए कहा। "पूरी नीद क्यो नही ली?"

"सो नही सका," रोदिग्रोन स्तेपानोव ने जवाब दिया। "मैं तुम्हे परेशान तो नही कर रहा हू न? जाओ, उडाओ अपना जहाज। मैं पूछ के साथ नही लटकूगा।"

ड्यूटी पर तैनात फौजी अफानासी उस्तिमेन्को के पास आया और सक्षिप्त बातचीत की। दो और व्यक्ति उनके पास आये। उस्तिमेन्को ने इजन की आवाज सुनी और फिर रोदिग्रोन के साथ सिगरेट के कश लगाये।

"तो अब फिर कब मुलाकात होगी?" रोदिग्रान मेफोदियेविच ने पूछा।

"मेरे ख्याल मे बहुत जल्द तो नही।'

"छुट्टिया कहा बिताने का इरादा है?"

"कीचड का इलाज कराना चाहता हू," अफानासी पेत्रोविच ने जवाब दिया। "घाव तो बहुत पुराना है, पर मुझे परेशान करता रहता है। यह रोनी सूरत क्यो बना ली है, जहाजी?"

"नही, नही, कोई बात नही," रोदिग्रान मेफादियेविच की आह ने उनके शब्दो की वास्तविकता स्पष्ट कर दी।

हवाई जहाज का इंजन जोर से घरघरा उठा, उसकी आवाज धीमी पडी और वह फिर जोर से घरघराया। मिस्त्री लोग उसकी जाच कर रहे थे। उस्तिमेंको ने अपना मजबूत और खुरदरा हाथ स्तेपानोव के हाथ मे मिलाया, दस्ताने पहन और छोकरे की सी फुर्ती से हवाई जहाज पर चढ गये। जमकर बैठने से पहले वे दाय-बायें हाथ हिलाते रहे। इसके बाद उन्होंने अपने हवाबाज को आदेश दिये और उनका जहाज धावनपथ पर दौडता हुआ उछलने लगा। कुछ ही क्षणों में काला धब्बा आकाश की नीलिमा मे लुप्त हो गया।

"तो अब कैसे जीना चाहिये मुझे?" रोदिओन मेफोन्येविच सोचने लगे। "निश्चय ही ऐसे जिन्दगी नही चल सकती। या चल सकती है? शायद अन्य लोग भी इसी तरह का जीवन बिताते है पर इसके बारे मे सोचते नही, अपने को परेशान नही होने देते?"

पर खैर उस समय जब वे अनुचित रूप से गुस्से में आये हुए हो तो उन्हें इस सवाल पर विचार नही करना चाहिये। इस समय वे सचमुच ही गुस्से में थे। जब येव्गेनी से सम्बन्धित कोई बात होती, तो वे अपने गुस्से पर काबू नही पा सकते थे। अग्लेवतोना से भी वे कभी शान्ति से बात नही कर पाते थे। उनके साथ वे न तो कभी शान्ति से काम ले सकते थे और न ही तर्कसगत हो सकते थे। कम से कम वे ऐसा ही मानते थे, क्योकि वे स्वय अपने कटु आलोचक थे। फिर से हजारवी बार उनके सामने उनकी बीवी का चेहरा घूम गया, सजे-सवरे वेश और एक दिन पहले उनके आने पर जिस तरह उसने उन्हें देखा था, छिपी-छिपी घृणा की दृष्टि से।

'मैं देहाती बगले में रहने जा रही हूं' रोदिओन मेफोदियेविच के घर आते ही उसने कहा। 'गर्मी भर इस धूल और तपन में रहना मुश्किल नही। वैसे ही इन परीक्षाओं के कारण मैं बुरी तरह थक गई हूं।"

"किन परीक्षाओं के कारण?'

येव्गेनी की, और किसकी।

तो तुम क्या उसे पढाती रही हो?" रोदिओन मेफोन्येविच यह कह बिना न रह सके।

"मैंने उसकी सुख सुविधा की व्यवस्था की," उसने कहा। "तुम तो अभी भी इतना कम कमाते हो कि मैं एक नौकर भी नही रख सकता "

"तो तुम जहा से चली थी, वही लौट आइ न?" स्तेपानोव ने गुस्से से लाल पीले होते हुए कहा। "या शायद तुम्ह वही पुराने नाम पसद हैं, जब तुम "

"चुप रहो!" वह चिल्ला उठी।

अलेवतीना इस वात से तो वहुत ही डरती थी कि लोगा को उसके अतीत के वारे मे पता चले। वह ता मानो चोर थी या उसने किसी की हत्या की थी।

ऐसा पुनमिलन हुआ था पति-पत्नी का।

अलेवतीना और येव्गेनी भी यही चाहते थे कि वे चले जायें, मगर रोदिओन मेफोदियेविच ने रुकने का निणय कर लिया। वार्या तो थी और फिर वे जाते भी तो कहा, जव उनका जहाज़ मरम्मत के लिये भेज दिया गया था। छुट्टी तो जैसे उन पर लाद दी गई थी और किसी विश्राम-केन्द्र मे जाकर आराम करने का वे प्रवध नही कर पाये थे। अलेवतीना अपनी सहेली के साथ देहाती वगले मे जाकर रहना चाहती है, तो रहे। मैं यहा रहूगा। यह अच्छी आराम की जगह है। मेरी खिडकी के करीव चिनार और वच के कुछ वृक्ष है, फव्वारा स्नान करने के वाद मैं किताव लेकर लेट जाया करूगा, शाम का वड सुनने के लिय पाक मे चला जाया करुगा और वार्या जव स्कूल की पढाई खत्म कर लेगी, तो हम किसी पोत पर सैर करने चले जायेंगे या ऐसी अन्य अनक चीजें की जा सकती हैं

खैर, आज तो मुख्य वात यह है कि सव खुश रह!

आखिर येव्गेनी डाक्टरी के कालेज का विद्यार्थी हो ही गया था। शायद मैं लडके के साथ ज्यादती करता रहा हू, शायद इसीलिये ऐमा हुआ कि वह मेरा अपना वेटा नही है। मुझे यह सव कुछ वदलना चाहिय, इस दिन का हर किसी के लिय खुशी का दिन वनाना चाहिये। वालाद्या और अग्लाया के लिये, अपने वूढे पिता और येव्गेनी और वार्या के लिये। वे जानते थे कि उन्होंने यव्गेनी के साथ अन्याय किया था, केवल वार्या का ही ओशतादत म अपने पास वुलाया था, जवकि यव्गेनी अलेवतीना के पास रहा था। फिर अपन सौतेले वेटे के साथ

उन्होंने खुलकर कभी बात भी तो नहीं की थी। उन्होंने अभी और इसी समय यर्गेनी से अपने सम्बन्ध सामान्य बनाने का निश्चय कर लिया, उन्हें भावी डाक्टर यर्गेनी के दिल की चाबी खोजनी थी।

इन्हीं विचारों में डूबते उतराते हुए उन्होंने इस समय जबकि अन्य सभी लोग सो रहे थे, दाढ़ी बनायी, फव्वारा स्नान किया, जब में बहुत-सी रकम डाली और खरीदारी करने चल दिये। उन्होंने एक कैमरा और खान-पान के बड़े स्टोर से पेस्ट्रियां, केक, सारडीन मछलियां, स्ट्राबेरियां, शराब की बोतलें और अन्य बहुत-सी जायकेदार और क़ीमती चीज़ें खरीदीं। रोदिओन स्तेपानोव फ़िजूलखर्ची कभी नहीं करते थे। उनका बचपन बहुत कठिनाइयों मुसीबतों में गुज़रा था, उन्हें भर पेट खाने को भी नहीं मिलता था। इस चीज़ ने बचपन में ही उन्हें पैसे का महत्त्व स्पष्ट कर दिया था। पर इस स्मरणीय सुबह को उन्होंने खुशी खुशी और खुले दिल से पैसा खर्च किया। उन्होंने वार्या के लिये लाल स्वेटर खरीदा और अपने बाप के लिये जूते। बोनाद्या के लिये उन्होंने हर्ज़ेन की रचनाओं का एक शानदार और चमड़े की जिल्दवाला संग्रह खरीदा। उन्होंने उन सभी के लिये "फ़ाउस्ट" ऑपेरा के टिकट भी खरीद लिये। मास्को के ऑपेरा हाउस के अतिथि कलाकार यह कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे थे और टिकट खरीदने में बड़ी कठिनाई हो रही थी। बड़ी झेंप और घबराहट अनुभव करते हुए वे थियेटर के स्थूलकाय मैनेजर के पास गये और बोले कि मैं नौसेना का अफ़सर हूं, छुट्टी पर आया हुआ हूं और चाहता हूं कि

"हर कोई ऐसा ही चाहता है," मैनेजर ने गुस्ताखी से जवाब दिया था। 'मगर दुख की बात है कि हमारा संस्कृति भवन लाचशीर नहीं है।'

फिर भी रादिओन मेफोदियेविच ने अठारहवीं कतार के छः टिकट हासिल कर लिये। पसीने से तर माथे को रूमाल से पोंछते हुए वे चीज़ों से भरी हुई टैक्सी में आ बैठे।

रादिओन मेफोदियेविच जब घर लौटे तो वार्या जा चुकी थी। यर्गेनी घुटी-घुटी-सी आवाज़ में किसी से टेलीफ़ोन पर बात कर रहा था।

"जी तंग आ गया है, पर किया क्या जाय। आख़िर वह कौन है। कौन जाने कि ज़िन्दगी क्या करवट ले। ठीक ही तो कहते हैं कि

बेटे, कुए मे नही थूको, हो सकता है कि किसी दिन उसी मे से पानी पीना पड जाये "

"मैंने तो इसे दूसरे ही रूप मे सुना है," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने भोजन-कक्ष मे प्रवेश करते हुए कडाई से कहा। "उस कुए से पानी नही पिग्रो, जिसमे थूकना चाहो!"

येव्गेनी ने रिसीवर पर हाथ रखकर तिरछी नजर से अपने सौतेले पिता की ओर देखा।

"खूब, मगर अव्यावहारिक," उसने कहा। "मेरे प्यारे पिता जी, जिन्दगी ऐसा मजाक नही है।"

येव्गेनी ने आरामकुर्सी ली और अपने किसी दोस्त से लम्बी चौडी गपशप करने बैठ गया। वह अपना बालो का मनहूस जाल लगाये हुए था। बातचीत करता हुआ वह लगातार अगडाइया और जम्हाइया लेता रहा। स्तेपानोव म शत्रुता की भावना जाग उठी, पर उन्होंने उसे दबा लिया। उन्हाने एक बार फिर अपने को यही कहकर शात किया कि बच्चे नही, बल्कि मा-बाप ही हर चीज के लिये कुसूरवार होते हैं। स्तेपानाव उन लोगो मे से थे, जो अपने को उस समय भी अत्यधिक दोपी मानते है, जब उन्हे यह मालम होता है कि वे सवथा निर्दोप हैं। अगर उन्हे ऐसा लगता है कि वे अप्रत्यक्ष रूप से दोपी हैं, तो अपने को और भी ज्यादा जिम्मेदार ठहराते हैं। उन्हाने फिर से, बेशक कृत्रिम रूप से, वही मूड लाने की कोशिश की, जो सुबह अनुभव किया था। जब तक येव्गेनी टेलीफोन पर गपशप करता रहा, उन्होंने भोजन-कक्ष की मेज पर सारे उपहार सजा दिये और सबसे ऊपर थियेटर के टिकट रख दिये।

येव्गेनी ने रिसीवर रखा, एक बार फिर अगडाई ली और धीरे-धीरे, छोटे छोटे कदम रखता हुआ मेज के करीब आया।

"यह अच्छा कैमरा है," येव्गेनी के सौतेले बाप ने कहा। "पास रखने लायक चीज है। हमारे कैमरे उच्च कोटि के हैं और कभी-कभार खुद एकाध फोटो खीच लेने मे बडा मजा रहता है "

शब्द बडी मुश्किल से उनके मुह से निकले। वाक्य अटपटा और लम्बा-सा बना और उनकी आवाज मे मानो गिडगिडाहट थी।

"मेरे ख्याल मे रिफ्लैक्स कैमरे अधिक सुविधाजनक रहते है," येव्गेनी ने सोचते हुए जवाब दिया। "हमारे डीन की बेटी इराईना के पास जेस रिफ्लैक्स कैमरा है, देखने म भी बडा खूबसूरत है, बहुत ही कमाल का। फिर इस कम्बख्त के लिये स्टैंड की भी जरूरत होगी। है भी बेढब-सा।'

"मैं स्टैंड भी खरीद लाया हू," उसके पिता ने झटपट जवाब दिया। "तुम ठीक कहते हो, बिल्कुल ठीक कहते हो कि स्टैंड के बिना कोई खास फोटोग्राफी नही हो सकती। मगर, येव्गेनी, मेरे बटे, शुरू करने के लिये ऐसा कैमरा बहुत अच्छा है। हमारे साथ स्कूल म एक लडका पढता था। सयागवश उसका नाम भी येव्गेनी ही था। वह तो बस चित्रकार ही था। उसने एक बार एक बक्व्हीट के फूल से शहद बटोरती हुई मधुमक्खी का फोटो खीचा। बडा ही सजीव छायाचित्र था वह। मधुमक्खी के बाल तक भी साफ-साफ उभरे थे फोटो मे। उसका यह छायाचित्र तो एक प्रतियोगिता के अन्तगत समाचारपत्र मे भी छपा था। तुम्हारे कैमरे की तुलना मे बहुत ही साधारण था उसका कैमरा "

"पर मैंने कब कहा है कि यह कैमरा बुरा है। अच्छा है, मगर जरा बेढब-सा और हमारे लडके अब ऐसे कैमरे इस्तेमाल नही करते।"

"कौन हैं य लडके?"

"आप जानते तो हैं–किरीलोव, बोरीस और सेम्याकिन। हम अक्सर मिलकर समय बिताते हैं "

रोदिओन मेफोदियेविच ने प्रत्यक कुलनाम का सुनकर हामी भरी, यद्यपि वे किसी का भी निश्चित रूप मे नही जानते थे।

"तुम वोलोद्या का नाम क्या नही लेते?' रोदिआन मेफोदियेविच न अपनी गदन आगे बढाते हुए पूछा। 'वोलोद्या का नाम क्या नही लिया तुमने? क्या वह तुम लोगा के साथ समय बिताने के लायक नहीं है?'

यव्गेनी के चेहरे का जरा रग उड गया। उसकी आखो म रोदिओन मफोदियेविच की जानी-पहचानी, दबी घुटी नफरत झलक उठी।

"एक बात यह पिता जो ' काफी दूर खडे हुए येव्गेनी न उनस कहा। "मेरी समझ म यह नहीं आता कि आप मुझसे चाहत क्या

है, ईमानदारी से कहता हू कि मेरी समझ मे नही आता। आपका वो लोद्या जनूनी और सनकी है, और हम है साधारण लडके। मैं यकीन के साथ नही कह सकता, पर मुमकिन है कि वह बडा आदमी बन जाये। मैं यह नही कहता कि वह बडा आदमी नही बनेगा, मगर मैं यह कहना चाहता हू कि हम जवान लोग है और जीवन म जो कुछ दिलचस्प और अच्छा है, हम उसका मजा लेना चाहते है।"

"ठीक है। बात साफ हा गई," रोदिओन मेफोदियेविच न कहा।

"सोवियत सत्ता तो आखिर सावियत सत्ता है," येव्गेनी कहता गया। वह अब रग म आ गया था और उसका अन्दाज मैत्रीपूण हो गया था, यहा तक कि उसम अपनत्व भी झलकने लगा। "निश्चय ही आपने इसलिये ता सघप नही किया था और मा ने बरसो तक इसलिय तो मुसीबते नही सही थी कि आपके बच्चे कोई खुशिया न देखें "

"बात समझ मे आ गई," येव्गेनी के सौतेले बाप ने उसे बीच म ही टोक दिया।

रोदिओन मेफोदियेविच को लगा कि उनका दम घुट जायेगा। उन्होने खिडकी चौपट खोल दी और मेज पर रखी सुराही से कुछ तपा हुआ पानी पिया। "मैं झगडा नही करूगा, झगडा नही करुगा," उन्हान अपने आपसे कहा। "मैं गुत्थी को सुलझाकर रहूगा। यह तो अलेवतीना ने उसके दिमाग मे सभी तरह की ऊल-जलूल बात भर दी हैं। यह उसी की कारगुजारी है, वही लडके का सत्यानास कर रही है।" बातचीत का सिलसिला बदलन के लिय उन्हाने येव्गेनी से पूछा कि दहाती बगले म उसकी मा का क्या हालचाल है।

"बहुत ही ऊब भरी जिन्दगी है वहा," येव्गेनी ने कुर्सी पर अपना पर रखकर बूट के तसमे बाधते हुए कहा। "वहा उसकी दर्जिन ल्युसा उसके पडास म रहती है।"

"कोई फासीसी औरत है क्या वह?"

"फासीसी क्या, रूसी है। वह मा की सहेली है, मगर वे खूब जोर शोर से झगडती भी हैं। अभी उस दिन उसने मा की आरगडी खराब कर डाली।"

"क्या खराब कर डाली?"

"मा की ओरगडी—सख्त और रग बिरगे छापेवाला कपडा।"

"समझ गया," कुछ भी न समझते हुए रोदिओन मेफोदियेविच ने कहा। "एक और बात पूछना चाहता हू—वह नई तस्वीर क्या है?"

स्तेपानोव उस चित्र की ओर देख रहे थे, जिस पर अभी अभी सुबह के सूर्य की किरणें पडी थी। उसमे बालुआ लाल मदान और कुछ पौधे चित्रित थे, जो कटीले मस्सो से ढके हुए प्रतीत हो रहे थे।

"ओह, नाग-फनी," येव्गेनी ने लापरवाही से कहा। "यह मा का नया शौक़ है। वह और ल्युसी इन्हे उगाती हैं।"

"नाग फनी कहा न तुमने?"

"हा।"

"इनका मुरब्बा या ऐसा ही कुछ बनाया जाता है क्या?"

"नही, मुरब्बा वरब्बा नही बनाया जाता," येव्गेनी ने हसकर कहा। "वे सुदर है न? केवल सजावटी हैं।"

"मछलीघर का क्या हुआ? वह यहा नजर नही आ रहा।"

"मछलीघर को घर से बाहर कर दिया गया है। मछलिया बीमार होकर चल बसी। याद रखिये मरी नही, चल बसी। अगर आप कहेंगे कि मर गइ, तो मा बुरा मानेगी।"

'चल बसी," रोदिओन मेफोदियेविच न दोहराया। "समझ गया। पर यह नाग फनीवाली बात मेरी समझ मे नही आई। क्या ये फूल खिलकर सुन्दर लगते है या इनकी सुगध बहुत अच्छी होती है?"

"दोनो मे से कुछ भी नही। वे तो बस हरे और कटीले होते हैं। आजकल इनका चलन है। समझे न? आजकल ऐसा कहने का फशन है—'हे भगवान, खूबसूरत हैं न ये!' बस, इतना ही।'

"खैर, इनकी काफी चर्चा हो गई। देखो हम वार्या के आने का इन्तजार करेंगे और फिर अग्लाया तथा बालोद्या के साथ कुछ खा पीकर थियेटर चल देंगे। क्या, क्या ख्याल है तुम्हारा?'

येव्गेनी चुप रहा।

'वहा गुनो का 'फाउस्ट' ओपेरा प्रस्तुत किया जायेगा," रोदिओन मेफोदियेविच न कुछ देर बाद कहा। "स्वेरलोगिन गायक मेफिस्टोफेलेस की भूमिका मे गायेगा। बडी गजब की आवाज है उसकी।"

"स्वेरलोविन हो या कोई ग्रौर, पर मैं तो नही जा सकूगा, पिता जी," येग्गेनी ने धीरे-धीरे कहा। "मैं ग्राज रात को कही ग्रामन्त्रित हू ग्रौर इनकार करना बडा ग्रटपटा होगा। ग्राज दोपहर को हम फुटबॉल का मैच देखने जा रहे हैं। उचा की टीम 'तोरपेडो' के साथ खेलनेवाली है, कोई मजाक थोडे ही है। इसलिये मेरे विना ही काम चलाना होगा।"

"समझ गया," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने एक वार फिर दोहराया। "विल्कुल समझ गया।"

वे सिर झुकाये हुए कमरे से बाहर चले गये।

दादा

वार्या ग्रभी तक घर नही लौटी थी। उमस भरा दिन वेमानी ग्रौर वेतुके ढग से गुजरता जा रहा था।

ग्राखिर वूढे मेफोदी घर ग्राये। वे हरे प्याज का गुच्छा, ग्रखवार मे लपेटकर कुछ मूलिया ग्रौर डोलची मे क्वास लाये। वुजुर्ग मेफोदी ग्रलेवतीना की ग्रनुपस्थिति मे ही ग्रपने वेटे के पास ग्राकर रहते। ग्रलेवतीना के साथ उन्हे ग्रधिक समय तक घर मे रहने की हिम्मत न होती। वुजुर्ग जव नगे पैर या विना पेटी की कमीज पहने हुए फ्लैट म घूमते या वोदका का जाम पीकर पतली ग्रौर भावुक ग्रावाज मे गाने लगते—"ग्ररी दर्जिन, ग्रो वेचारी दर्जिन, तू सोलह साल की हो गई," या फिर ग्रचानक मेहमानो की खातिरदारी करते हुए यह कहने लगते—"खाइये, खाइये, हमारे यहा ग्रौर भी वहुत है," तो ग्रलेवतीना ग्राग-ववूला हो जाती। कुछ दिन रहने के वाद दादा डरे-सहमे ग्रौर हडवडाये से रहने लगते, वार-वार पलक झपकाते, जरूरत से वही ज्यादा झुकते हुए सलाम करते, गुमसुम रहते ग्रौर ग्राखिर गाव की ग्रपनी उसी खाली ग्रौर छोटी सी झोपडी मे लौट जाते, जहा पखा ग्रौर राख की गध ग्राती थी।

जव ग्रलेवतीना, जो ग्रव वालेन्तीना ग्राद्रेयेव्ना कहलाती थी ग्रौर जिसे वूढे मेफोदी शतान की नानी ग्राद्रेयेना कहते थे, कही गई होती, तो दादा ग्रधिक निडर होकर घर मे रहते, न केवल रसोईघर म, वल्कि दालान मे भी पाइप के कश लगाते ग्रौर ऊची ग्रावाज मे वार्या

को अपने सस्मरण सुनाते। पर जब येव्गेनी के मित्र आते, तो दा
गुमसुम हो जाते और ज़रा मुस्कराकर यह कहते हुए दूर रहते–आज
छैने जब तक मौज मनायें, अपन राम तो पास न आयें। रोदिओन
मेफोदियेविच ने एक बार येव्गेनी के एक मेहमान को बूढे मेफोदी से
यह कहते सुना कि वे उसके लिये सिगरेट खरीद लायें।

रोदिओन मेफोदियेविच को यह देखकर बहुत तकलीफ होती कि
उनके बूढे पिता और भी अधिक दब्बू होते जा रहे है। पर जब वे
अलेवतीना के मेहमानो के सामने आते, तो अलेवतीना शर्म से ऐसे लाल
हो जाती कि स्तेपानोव यह निर्णय न कर पाते कि पिता या पत्नी म
से कौन अधिक सहानुभूति के योग्य है। वे अफसोस और राहत की
मिली-जुली भावनाओं के साथ पिता को स्टेशन की तरफ रवाना करते
हुए उनकी जेब मे कुछ अतिरिक्त पैसे डालकर कहते–"हो सकता
है अचानक कोई ज़रूरत पड जाये।"

इस तरह वार्या का बेकार इन्तजार करने के बाद उन दोनो ने
खाना खाया। दाढीवाले दादा माप से कही लम्बी जैकेट पहने बैठ थे
और उनकी बेटे के समान छोटी छोटी तथा भूरी आखो म बेटे के प्रति
गम्भीर श्रद्धा की सी चमक थी। वे बेटे को "रोदिओन" कहते,
लेकिन इस तरह मानो साथ मे पैतृक नाम भी ले रहे हो। दादा ने
सकोचवश केक और सारडीन मछलियां नही खायी और इनकी जगह
हरे प्याजो से मुह भर लिया। उन्हे चबाते हुए बुजुर्ग ने यह भी कहा
कि चूकि इस बरस प्याज इतने सस्ते हैं, इसलिये अवश्य ही उनकी
फसल बढिया हुई होगी। इस अप्रत्यक्ष ढग से बाप ने बेटे को यह
स्पष्ट किया कि वे फजूलखर्ची नही करते हैं और रोदिओन के घर
के हितो का बहुत ध्यान मे रखते है।

दोनो ने मिलकर प्लेटे साफ की।

"पिता जी अगर हम आज शाम को थियटर जायें, तो कैसा
रहे?" रोदिओन मेफोदियेविच ने पूछा। 'मन है आपका? शायद सरकस
के अलावा तो आप कही नही गये?"

"थियटर, तो थियेटर ही सही' दियासलाई से दात साफ करते
हुए बुजुर्ग ने कहा। 'मुझे क्या आपत्ति हो सकती है। जहा दूसरे लोग
जा सकते हैं, वहा मैं भी जा सकता हू। इसमे क्या बात है।'

पर उनकी आखो मे चिन्ता झलक उठी और वे जल्दी जल्दी आख झपकाने लगे, मानो किसी कारण डर गये हो।

आखिर वार्या और वोलोद्या आये। वार्या के पिता दिन भर उसकी प्रतीक्षा करते रहे थे, और वह गई थी वोलोद्या के साथ, जो वार्या के शब्दा म अपने "पहले असली सूट, विद्यार्थियो के कोट और पतलून को मापने गया था।"

"'विद्यार्थिया का कोट और पतलून'—यह क्या होता है?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने झल्लाकर पूछा।

"ग्रोह, वह ता योही वेसिरपैर की वाते कर रही है," वोलोद्या ने जवाव दिया। "पिता जी की वर्दी का उ्होंने मेरे लिये सूट वना दिया है। वार्या को तो खैर कुछ न कुछ कहना ही होता है "

वोलोद्या सोफे पर बैठकर कोई किताव पढने लगा और कुछ ही क्षण वाद उसे दीन दुनिया की खवर न रही। वार्या ने खुशी से झूमते हुए पेस्ट्रियो और कचौडियो का जोडकर खाना शुरू कर दिया, क्वास के घूट के साथ उसने हरे प्याजा को गले से नीचे उतारा, फिर नमक मे उगली डालकर उसे चाटा और वोली—

"मजा आ गया।"

चाय खत्म हाते ही बुजुग मेफोदी थियेटर के लिये तैयार होने लगे। उ्हाने रसोईघर मे अपने घुटना तक के वूट साफ किय और फिर अडरवीयर पहने हुए बेमतलब एक के वाद दूसरे कमरे म चक्कर लगाने लगे। इसके वाद परशानी स आख झपकाते हुए उ्होंने पतलून को पहले तो लम्वे वूटो मे घुसेडा और फिर वाहर निकाला। रोदिग्रान मफोदियेविच वैठे-वैठे सिगरेट का धूग्रा उडाते हुए यह साच रहे थे कि इतने वर्पो म वूढे वाप के लिये अच्छा-सा सूट खरीदने का समय नही मिला। "ग्रोरगडी, मछलीघर, नाग फनी," वे खीझ पैदा करनेवाले शब्दो का मन ही मन दोहरा रहे थे।

"लीजिये, मेरा सूट पहन लीजिये," रोदिग्रोन मेफादियेविच ने कहा। "आप खास लम्वे ता हैं नही, यह आपको विल्कुल पूरा आयेगा। मेरी नाक नही कटवाइयेगा, ढग के कपडे पहनकर चलिये "

"मेरी नाक नही कटवाइयेगा" इन शब्दा को सुनकर वूढे पिता इनकार नही कर पाये। उ्हाने वेटे की सफेद कमीज और नीला गम

सूट पहन लिया। इसके बाद उन्होंने दर्पण के सामने खड़े होकर भयंकर सा मुंह बनाया और कहा—

"अरे वाह, तेरी ऐसी की तैसी!"

रास्ते में उन्होंने अग्लाया को अपने साथ ले लिया। वह सुन्दर पोशाक पहने हुए ड्योढ़ी में इन्तजार कर रही थी। उसकी काली आंखें चमक रही थी और गालों पर सुर्खी थी।

ऑपेरा के दौरान बुजुर्ग मेफोदी मंच की ओर इशारे करते और लोगों की शी शी की परवाह किये बिना सवाल पूछते रहे।

'यह कौन है? उसे क्या तकलीफ है? कौन-सी है उसकी बीवी?'

या फिर वे गुस्से से कहते—

"उल्लू है! बिल्कुल उल्लू है वह! जरा ख्याल करो, अपनी आत्मा बेच रहा है। हाय, हाय!"

इर्द गिर्द बैठे हुए लोग दबे दबे हंसते रहे। रोदिओन मेफोदियेविच मुस्कराये और उन्होंने अग्लाया की ओर देखा। इस नारी को चुप रहकर मुस्कराने में कमाल हासिल था।

विराम के समय बरामदे में इधर-उधर टहलते हुए दादा को जहां भी दर्पण दिखाई देता, वे उसके सामने जा खड़े होते और गुस्सेवाली भयानक सूरत बनाकर कहते—

"अरे वाह, तेरी ऐसी की तैसी!"

बूढ़े को मेफिस्टोफेलेस सबसे अधिक पसन्द आया।

"बड़ा ही चालाक है वह," दादा ने कहा। "बिल्कुल शैतान है। वह अपना उल्लू सीधा करके रहा। अगर सम्भव हो, तो ऐसे लोगों से तो वास्ता ही न डाला जाये। मैं ठीक कहता हूं न, वार्या?"

थियेटर के बाद

घर लौटकर उन्होंने खाना खाया। येगेनी अभी तक नहीं लौटा था। वार्या वोलोद्या के साथ कुछ खुसुर फुसुर कर रही थी। रोदिओन मेफोदियेविच को लगा कि वह अपना नखरा-टखरा दिखा रही है। दादा ने मन मारकर सूट उतारा, वोदका का एक जाम पिया और सोने चले गये। अग्लाया और रोदिओन मेफोदियेविच खिड़की के करीब बैठे हुए बातचीत कर रहे थे। अग्लाया ने किसी तरह का शिकवा

शिकायत न करते हुए कहा कि मैं बहुत थक जाती हू, कि मुझे ऊबड-खाबड रास्तो पर सारे प्रदेश मे मोटर दौडानी पडती है और कुछ कर्मचारियो का बेहूदा और दफ्तरी घिसघिस का रवैया परेशान कर डालता है।

"अब जवानी तो रही नही," उसने अचानक कहा। "पहलेवाला दम भी नही रहा। कभी-कभी बात का बतगड बना देती हू, किसी पर बरस पडती हू "

अपने छोटे छोटे सावले हाथो को घुटनो पर टिकाकर अग्लाया कुछ देर तक उनकी ओर देखती रही और फिर रोदिओन मेफोदियेविच से नजर मिलाते हुए उसने पूछा—

"तुम्हारी जिन्दगी भी कुछ आसान नही है, रोदिओन? देख रही हू कि कनपटियो पर सफेदी झलकने लगी है "

वे अपराधी की तरह मुस्कराये और उन्हाने अपने लिये शराब का जाम भरा।

"नौसेना की नौकरी के सिलसिले म मुझे कोई शिकायत नही, प्यारी अग्लाया, पर यहा मामला कुछ उलझ गया है, बात कुछ बन नही रही येव्गेनी को ही ले लो "

"येव्गेनी को क्या हुआ है?" अग्लाया न पूछा।

"होना क्या था? उसे समझ ही नही पाता हू," रोदिओन मेफोदियेविच ने दुखी होते हुए कहा। "कोई सिर पैर समझ म नही आता उसका "

"वोलोद्या समझता है उसे। सो भी अच्छी तरह। वोलोद्या!" अग्लाया ने भतीजे को आवाज दी। "येव्गेनी के बारे मे आज सुबह हमारी जो बातचीत हुई थी, वह रोदिओन मेफोदियेविच को बताओ।"

"हटाइये भी!" वोलोद्या न सिर हिलाया।

"बताओ भी," रोदिओन मेफोदियेविच न कहा। "क्या बात है "

"मैं खरी-खरी बात कर सकता हू,' साफ़े स उठते हुए वोलोद्या न कहा। "मुझे लाग-लपेट से काम लना नही आता '

रोदिओन मेफोदियेविच ने मुस्कराने की कोशिश की—

"ऐसा करन को तुम्ह कहता ही कौन है।"

"मैं नही जानता कि इसके लिये कौन दोषी है, और मैं इसका निर्णय करने के चक्कर मे भी नही पड़ूगा," वोलोद्या ने कहा, "पर इतना कह सकता हू कि आपका येव्गेनी टेढ़े-मेढे ढग से जीता है। आप समझे न मेरा मतलब? हाल ही मे उससे हुई बातचीत के समय मैंने खुद उसे यही कहा था और इसलिये आपके सामने भी बेझिझक इसे दोहरा सकता हू।"

वोलोद्या ने अपना सिर झटका, कुछ सोचा और फिर खरखरे, कठोर और समस्वर मे बोला—

"मेरी बात सुनकर उसने मुझे उपदेशक, भोला बच्चा और अन्य कई विशेषणो से सम्बोधित किया। बस, इतनी ही कसर रह गई कि पदलोलुप नही कहा। पर मेरी बला से, मैं तो ऐसा ही समझता हू और ऐसा ही समझता रहूगा। हमारे राज्य मे हर आदमी को अपनी मेहनत के बल पर जीना चाहिए, अपने बाप दादा की मेहनत के सिर पर नही। मैं सही कह रहा हू न रोदिओन मेफोदियविच?"

'ठीक ही है ' न जाने क्या, पर स्तेपानोव ने रुखाई से जवाब दिया।

"कुछ ही दिन पहले मैंने और आपकी बेटी ने दराती और हथौड़े के बारे मे सोच विचार किया। इससे बेहतर राज्य चिह्न की कल्पना नही की जा सकती थी। दराती और हथौड़ा हमारी सामाजिक व्यवस्था के प्रतीक है और इनका अर्थ केवल मजदूर किसानो तक ही सीमित नही है। इस प्रतीक मे हमारे जीवन का कानून, मुख्य कानून निहित है। क्यो है न ऐसा ही रोदिओन मेफोदियविच?"

"पर अफसोस की बात है कि सभी ऐसा नही मानते," रोदिओन मेफोदियविच ने अब रुखाई से नही उदासी के साथ उत्तर दिया। 'वार्या को ही ले लो, यह भी किसी चक्कर मे पडी हुई है, कभी मनस्तत्वविज्ञान की बात सोचती है तो कभी थियेटर की। जहा तक समाज के लिये उपयोगी होने का सम्बन्ध है "

'अब मेरी बारी आ गई, वार्या बिगड उठी। "अपने पेशे का चुनाव करने मे क्या परेशानी नहीं होती?'

'परेशानी परेशानी?' वोलोद्या ने टोकते हुए कहा। "वास्तव मे तुम कुछ ज्यादा ही परेशान हो रही हो। पर खैर, इस समय

हम तुम्हारी बात नही कर रहे। रोदिग्रोन मेफोदियेविच, येव्गेनी अपने लिये ही जीता है और मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि सो भी अपने नही, आपके बल पर शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि आपकी मदद से जीता है वह। इतना ही नही, वह अपन जीवन को उस प्रतीक से बिल्कुल अलग-थलग रखता है, जिसकी मैंने अभी अभी चर्चा की है। ऐसा नही है कि वह आपका नाम भुनाता है। नही, वह ऐसा बिल्कुल नही करता, पर आपको अपना आखिरी पत्ता समझता है—जाने कब इसे चलने की जरूरत पड जाय। उसका दृष्टिकोण बिल्कुल गलत ह। वह यह मानता है कि चूकि स्वय आपन और वाले तीना आद्रेयेव्ना ने बहुत कठिन और मुसीबतो का जीवन बिताया है, इसलिये आपका यह कत्तव्य हो जाता है कि आप उसके और वार्या के लिये शानदार जीवन की व्यवस्था करे। वह और उसके बहुत-से दोस्त, जिन्ह मैं व्यक्तिगत रूप स जानता हू यही मानते है कि क्रान्ति उन्ही के लिये की गई है कि इसका मुख्य उद्देश्य ही यह था कि वे आराम और मजे की जिन्दगी बिता सक। यह गलत है और आपकी गलती यह है कि आप बच्चा के लिये ही सब कुछ की नीति पर चलते हैं। मैं अब और कुछ नही कहूगा, आप नाराज हो जायेंगे "

"मेरा भी कुछ-कुछ ऐसा ही अनुमान था," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "हा, कुछ-कुछ ऐसा ही। पर तुम लागा को भला काई समझ भी सकता है? भगवान जाने, कैसे लाग हो तुम "

रोदिग्रोन मेफादियेविच कमर के पीछे हाथ बाधे और दृढ कदम रखते हुए भोजन-कक्ष मे इधर-उधर टहलने लगे। उनके चेहरे पर परेशानी, लगभग दुख की छाप अकित थी।

"यव्गेनी समय-सेवी है," वोलाद्या न धीरे, मगर दृढतापूवक कहा। "नौउम्र हाते हुए भी इसका बढिया नमूना है। बहुत घुटा हुआ है इस फन म।"

स्तेपानाव न त्योरी चढाई।

'तुम्ह पक्का यकीन है?" उन्हान पूछा।

वालोद्या न चुपचाप कधे झटक दिये।

"कभी-कभी हम जिन्दगी का कुछ ज्यादा ही उजला रूप देन की कोशिश करते हैं, अग्लाया न कहा। "बेशक यह सही है कि जिन्दगी

है ही उलझी हुई चीज। मसलन, स्कूल म ही चुगलखोर और मुखबिर हो जाना क्या ये पक्के चरित्र के लक्षण नही है? रोदिग्रोन, मैं तुमसे साफ-साफ और दो टूक कहना चाहती हू कि तुम्हारा येव्गेनी तो मुझे एक अर्से से फूटी आखो नही सुहाता और तुम्हें उसे सुधारने की कोशिश ही नही, बल्कि उसके विरुद्ध हर तरह से सघर्ष करना होगा "

"किस तरह से सघर्ष करना चाहिए, साफ-साफ कहिये न?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने चेहरे पर कटु मुस्कान लाते हुए पूछा। "क्या आप ऐसा नही समझते कि येव्गेनी के सिलसिले म मेरे अधिकार केवल सीमित ही नही, बिल्कुल है ही नही। कर्त्तव्य हैं, पर अधिकार नही। पर खैर क्या तुक है इस बातचीत मे "

बुजुर्ग मेफोदी अडरवीयर और जहाजियो का काला बडा कोट पहने हुए अन्दर आये।

"यहा कही थोडी क्वास है क्या?" उन्होंने पूछा। "पानी की तीन डोइया चढा गया हू, पर उनसे कुछ नही बना। फिर मैंने ऐसी कोई चीज भी तो नही खायी "

उन्होंने बारी-बारी से सभी पर नजर डाली। फिर अचानक उनका ध्यान इस ओर गया कि उनके नीचे पहनने के पाजामे के बन्द लटक रहे हैं और झेंपते हुए किसी दूसरी जगह क्वास की तलाश करने चले गये।

"तो यह किस्सा है,' रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "वक्त अच्छी और दिलचस्प रही आज की शाम। खैर, आप मुझे क्षमा करे "

मेहमानो के जाने के बाद उन्होंने वार्या को चूमा और उसकी आखो म दया की झलक देखकर बोले कि मैं सोने जा रहा हूँ। मगर किसी चीज से उन्हे सख्त चिढ थी, तो वह थी दया। उन्ह बहुत देर तक गुसलखाने से वार्या के पानी छपछपाने की आवाज सुनाई देती रही और इसके बाद यह भी बिस्तर पर जा लेटी और सभी ओर सन्नाटा हो गया। रोदिग्रोन फिर से ध्यान के कमरे म आ गये, उन्होंने ठडी चाय प्याले म डाली और कमरे म इधर-उधर टहलने लगे।

येव्गेनी देर से घर लौटा, उसने अपनी चाबी से दरवाजा खोला और ध्यान के कमरे म गया। उसके सौतेले बाप उगलियो मे बाल सिगरेट दबाये अभी तक इधर-उधर टहल रहे थे।

"नमस्ते," येव्गेनी ने कहा।

"नमस्ते," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने जवाब दिया और साथ म यह भी जोड़ा कि उसे कुछ पहले घर आ जाना चाहिए था। वैसे उन्होंने खीजे बिना ही यह कहा था। उन्हें लगा था, मानो वह कोई अजनबी है, जो बिन बुलाये ही आ धमका है।

यह अजनबी अब मेज़ पर बैठकर खाने पीने और न जाने क्या, बहुत जल्दी जल्दी यह बताने लगा कि कैसे फुटबॉल में दायें पहलू खेला, मैच के बाद वे शोलिन के उपनगरीय घर म गये, कैसे वहा उन्होंने बर्फ जैसा ठंडा लिमोनाड पिया, नहाये और इस तरह उन्होंने खूब बढ़िया समय बिताया। रोदिग्रोन मेफोदियेविच चुपचाप सुनते रहे। बहुत सम्भव है कि अगर मैं चुपचाप सुनता रहूं, तो मुझे येव्गेनी के दिल की खोयी चाबी मिल जाये। कभी ऐसा समय भी था, जब वे नन्हे-से, बीमार और बहती नाकवाले येव्गेनी को बहुत-बहुत देर तक गोद मे उठाये रहे थे। कभी तो उन्होंने अपने आत्मसम्मान की परवाह न करते हुए पेत्रोग्राद मे उसके लिये चीनी हासिल की थी, कभी तो उसे ककहरा पढ़ाया था। यह भला कैसे हो सकता है? येव्गेनी समय-सेवी है? यानी वह पराया व्यक्ति है? ऐसा व्यक्ति, जो सब कुछ अपने लिये ही करता है?

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने फिर एक बार अपने से यही सवाल किया—यह सब कब, कैसे और क्यो हुआ?

अचानक इसका कारण उनकी समझ मे आ गया।

हकीकत तो जैसे उनके सामने आकर खड़ी हो गई। ऐसा इसलिये हुआ था कि कभी अलेवतीना का पूरा ध्यान येव्गेनी पर केन्द्रित रहा था। वही सब कुछ था, सब कुछ उसी के लिये किया जाता था, वह कुछ भी कर सकता था। रोदिग्रोन मेफोदियेविच जब परेशान और थके-हारे हुए घर आते थे, तो क्या उन्हें बीयर की एक बोतल, सिगरेट या दियासलाई की एक डिबिया खरीदने के लिये येव्गेनी को भेजने का अधिकार होता था? लड़के को केवल मौज मनानी चाहिए और अगर आज नहीं, तो पढ़ना चाहिए। बचपन ही तो सबसे ज्यादा खुशियों का वक्त होता है, अलेवतीना बार-बार यही कहती। अगर रोदिग्रोन मेफोदियेविच कोई आपत्ति करते, तो वह कहती—

"तुम इसी लिये ऐसा कहते हो कि वह तुम्हारा अपना खून नहीं है। वह बेचारा यतीम है और इसलिये ज़ाहिर है कि पर ध्यान रहे कि मैं किसी को भी उसके साथ बुरी तरह पेश नहीं आने दूंगा। यह बात गांठ बांध लो।"

लगभग पांच वर्ष पहले दोपहर का खाना खाते हुए येव्गेनी उनके साथ बहुत बुरी तरह पेश आया था। सभी दयालु लोगों का भांति रोदिओन मेफोदियेविच भी झटपट आपे से बाहर हो जाते थे। गुस्से से आग-बबूला होते हुए उन्होंने तश्तरियां उठाई और उन्हें फ़र्श पर पटक दिया। अग्लेवतीना चीख उठी थी, नन्ही वार्या रोदिओन मेफोदियेविच की बांह से जा चिपकी थी और येव्गेनी ने पीले-ज़र्द होंठों से धीरे से कहा था –

"पागल कहीं का।"

इसके बाद स्तेपानोव खाने के कमरे से बाहर चले गये। बगलवाले कमरे में उन्होंने अग्लेवतीना को सहमी-सहमी और दबी-सी आवाज़ में कुछ कहते सुना। येव्गेनी बीच-बीच में यह कहता जाता –

"ओह, भाड़ में जाये यह उल्लू, बूढ़ा खूसट!"

इसके बाद उन्हें बरामदे में येव्गेनी के इधर-उधर टहलने, पैर पटकने और दिलेरी से गाने की आवाज़ सुनाई देती रही। वह गा रहा था अपनी शक्ति, अपने अधिकार और सौतेले पिता की विवशता को अनुभव करते हुए। वह भला गाता भी क्यों नहीं? वह बहुत ही जल्दी उत्तेजित हो जानेवाला लड़का था, जबकि उसका बाप फूहड़, गंवार और तुच्छ था, तलछट में से आया था। यह अन्तिम शब्द अग्लेवतीना ने श्रीमती गोगोलेवा से सीखा था और उसके दिल-दिमाग़ में इसने अपनी गहरी जड़ जमा ली थी।

इस तरह येव्गेनी बिल्कुल बेगाना बनकर रह गया था।

अब वह बैठा हुआ कचौरियां, सारडीन मछलियां और स्ट्राबेरी खा रहा था, चाय पी रहा था। बड़ी अजीब बात तो यह थी कि उसकी आंखों में अपनत्व और स्नेह झलक रहा था। अपने सौतेले बाप के लिये उसकी आंखों में जो भाव झलका करते थे, ये उससे बिल्कुल भिन्न थे। आह, कितनी जानी-पहचानी थी उसकी यह नज़र। अग्लेवतीना की ऐसी नज़र तभी होती थी जब लगातार बक-झक करने, झ

पति को सतान के वाद वह घर मे शान्ति कायम करना चाहती थी। येव्गेनी भी घर मे शान्ति चाहता था, अपने सौतेले वाप के साथ अपने सम्वध वेहतर बनाना चाहता था, अपने को उनके अनुकूल ढालना चाहता था। वस, यही वात थी, इसस अधिक कुछ नही रोदिग्रान मेफोदियेविच ने अनुभव किया।

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने गहरी जिज्ञासा से इस नौजवान अजनवी के चेहरे को वहुत गौर से देखा। कही भी तो कोई खरावी नही थी उसके चेहर मे। सवलाया हुआ और साफ-सुथरा था उसका चेहरा आखे निमल थी, वाल नम और दात सफेद थे। उसकी नजर मे स्पष्टता थी, निश्छलता थी। रोदिग्रोन मेफोदियेविच लोगा के चरित्र को वहुत अच्छी तरह से पहचानते थे हजारा लोगा स उनका वास्ता पड चुका था। पहली ही नजर मे घटियापन और कमीनेपन का अच्छाई से अलग कर सकते थे। इस मामले मे वहुत ही कम, शायद कभी भी उनसे गलती नही होती थी।

"हा, मुझे एक और वात याद आई पिता जी," येव्गेनी ने कहा। "मुझे आपसे एक अनुरोध करना है। हमारे डीन वहुत ही भले वुजुग हैं। खास प्रतिभाशाली तो नही है, किन्तु मुझ पर वडे मेहरवान है। उनकी बेटी मेरी सहेली है। कल उसका जमदिन है और आपका तथा मुझे वहा निमन्त्रित किया गया है।"

"मगर मेरे वहा जाने मे क्या तुक है?'

"तुक क्यो नही है। आप उन्ह अपने कुछ अनुभव सुना सकते हैं। निश्चय ही अपने शानदार अतीत के आधार पर आप कुछ न कुछ सुना ही सकते है। नेस्टोर माम्नो या फिर चेका के अपन काम के वारे म ही कुछ वताइयेगा। आपके पास ता कई दिलचस्प वात सुनाने का हैं, ठीक है न? जरूर चलियेगा, उन्हाने वहुत अनुरोध किया है "

"मैं इस वात पर विचार करूगा," रोदिग्रान मेफादियेविच न वडा मुश्किल से जवाव दिया।

वे अपनी जेबा म सिगरेटें टटोलन लगे, जो उनके सामन मज पर ही पडी हुई थी।

पाचवा अध्याय

पोलूनिन

वोलोद्या के लिये पढाई काफी यातनाप्रद रही।

कालेज के पहले वर्ष मे उसने पिरोगोव की प्रसिद्ध किताब "सर्जीकल क्लीनिक का इतिहास" पढी। लेखक ने इस किताब मे अनेक ऐसे सत्यो के बारे मे सन्देह प्रकट किया था जो उनके समय मे सर्वस्वीकृत रहे थे। इससे कई बातो के बारे मे वोलोद्या के मन को भी सन्देहो ने आ घेरा। कई अध्यापको के आत्मविश्वास ने वोलोद्या को चौकन्ना कर दिया, जबकि उसकी स्थायी सन्देहपूर्ण दृष्टि से अध्यापक खीझ उठते। सेचेनोव मेडिकल कालेज की पढाई मे उसका सारा कस-बल लग जाता। वोलोद्या यह समझ ही नही पाता था कि अध्यापको के व्याख्यान को गैरदिलचस्पी से, मगर तरीके-सलीके से लिखकर बाद मे रटा कैसे जाये। येव्गेनी जो कुशलता और प्रोफेसरो के प्रति आदर सम्मान प्रकट करने की दृष्टि से आदर्श और सबको अच्छा लगनेवाला व्यक्ति था, ऐसा ही करता था। वोलोद्या परीक्षाओ के लिये पागलो की तरह सामग्री को कभी रट नही सकता था। वह बहुत ध्यान से व्याख्यानो को सुनता और महत्त्वपूर्ण जरूरी और उपयोगी बातो को याद कर लेता। जो कुछ उसे घिसे पिटे निष्क्रिय प्रतीत होते, उनकी ओर वह इसलिये ध्यान देता कि इन अकाट्य सामान्य सत्यो के बारे मे आपत्तियाँ ढूंढेगा और समय मिलने पर उन्हे गलत सिद्ध करेगा। फिर भी उसे हमेशा यह मालूम होता था कि उसमे क्या जानने की आशा की जाती है। वास्तव मे तो उसका ज्ञान अधिक ही होता था, किन्तु अपने ही

विचित्र ढग से। गानिचेव, जिन्ह् वोलोद्या प्यार करता था, अक्सर उससे कहते –

"एक बहुत ही समझदार फ्रासीसी शरीर विकृति विज्ञानी कि द्वतापूर्ण उपाधियो की खिल्ली उडाता, मगर ऐसा मानता था कि उन उपाधियो के शिखर पर पहुचकर ऐसा करना कही अधिक सुविधाजनक होता है न कि नीचे खडे रहकर। याद रखिये, उस्तिमको, कि ज़ीने के नीचे खडा हुआ व्यक्ति यदि ऐसा करता है, तो उस पर मन्द-बुद्धिवाला और ईर्षालु होने का आरोप लगाया जा सकता है।'

कालेज के तीसरे वर्ष मे वोलोद्या को प्रोफेसर पोलूनिन बहुत अच्छा लगने लगे। सुनहरे बालोवाले व लम्बे-तडगे व्यक्ति गानिचेव के बहुत घनिष्ठ मित्र थे और हर समय कुछ-कुछ हाफते रहते थे। पोलूनिन के गाल टमाटर की तरह लाल-लाल थे, गर्दन मोटी थी और बाल थे घुघराले तथा सन जैसे। उनकी आवाज भारी भरकम और दहशत पैदा करनेवाली थी। अन्य अध्यापक जिन बातो की प्रशसात्मक ढग से चर्चा करते, वे उनके प्रति उपेक्षा का भाव दिखाते और अक्सर ऐसे अजीबोगरीब किस्से-कहानिया सुनाते, जो सर्वथा असगत प्रतीत होते।

"मिसाल के तौर पर, फ्योदोर इवानोविच इनोजेमत्सेव को ले लीजिये," उन्होने एक बार विद्यार्थियो से कहा। "हमारे चिकित्साशास्त्र के इतिहास म काफी बडा नाम है उसका। बहुत प्रतिभाशाली, बहुत रोशन दिमाग, मै तो यहा तक कहूगा कि बहुत-सी बातो म बहुत दूर की कौडी लानेवाला आदमी था वह। जाहिर है कि बहुत ही शानदार नैदानिक था वह। मेरे ख्याल मे उसे आजकल सर्वश्रेष्ठ नैदानिक कहा जाता है। जाहिर है कि अपने समय मे उनकी डाक्टरी खूब चलती थी। मेरे ख्याल मे तुम लोग प्राइवेट प्रेक्टिस का मतलब तो समझते ही हो?"

"जी हा," विद्यार्थियो की धीमी सी आवाज सुनाई दी। प्राइवेट प्रेक्टिस के बारे म इन सब की जानकारी मुख्यत चेखोव की कहानी "इओनिच" पर आधारित थी।

"तो इनोजेमत्सेव को यह प्राइवेट प्रेक्टिस खूब चलती थी और इसके साथ ही उसके अपने भी खूब मजे थे। वह अपने मन का चैन बनाये रखना चाहता था और बैंक मे जमा होती हुई खासी बडी रकम

ऐसा करने म समय थी। चूकि वह अपन अनेक रोगियो का इलाज अकेला ही नही कर सकता था, इसलिय उसे अपन अनेक सहायक रखन पडे जो 'निकीत्स्काया के पटठे' कहलाते थ। उन्हें एसा नाम उस बडी इमारत के सम्मान म दिया गया था, जिसका मालिक इनोजेमत्सेव था और जो हमारे सबसे पवित्र नगर मास्को की निकीत्स्काया सडक पर थी। अपनी व्यावहारिक ख्याति के उन दिनो मे वह अमोनिया को बहुत सी बीमारियो के लिये, विशेष नजले-जुकाम के लिये तो रामबाण मानता था। मेरे दोस्त, यह अमोनिया का सिद्धान्त इनोजेमत्सेव के दिनो म प्रचलित अन्य सिद्धान्ता स कुछ बुरा नही था। मगर अजीब बात तो यह है कि जबकि ऐसे ही अन्य हवाई और मनगढन्त सिद्धान्त जल्द ही भूली बिसरी बाते हो गये, यह अमोनिया का सिद्धान्त खूब फलता फूलता रहा। आप बता सकते हैं कि क्यो?"

पोलूनिन न उत्तर की आशा करते हुए अपने श्रोताओ पर एक पैनी दृष्टि डाली। किन्तु उत्तर नही मिला। उन्होंने निराश होते हुए गहरी सास ली और अपनी बात आगे बढाई।

'इसलिये कि सभी जवान अधेड और बूढे 'निकीत्स्काया के पटठे' बडे धूर्त्त लोग थे, बडे अनुभवी और अपनी गाठ के पक्के, व अपने मुखिया को केवल उन्ही रोगियो की सूचना देते, जिन्हें इस कमबख्त अमोनिया से खूब फायदा होता था। इनोजेमत्सेव का जी खुश करनेवाली बातो की चर्चा कर उन्होने वास्तव मे ही एक शानदार डाक्टर की ख्याति उसके विद्यार्थियो मे धूल मे मिला दी। वे तो अमोनिया के इलाज की खिल्ली भी उडाने लगे थे। फिर भी इनोजेमत्सेव अपने पट्ठो या नीम हकीम चाटुकारो के प्रति खूब दरियादिली दिखाता। उन्हे रोटी भी मिलती मक्खन भी और मुरब्बा भी। उसका आभार मानते हुए और अपने स्वामी और सरक्षक को निराश न करने के उद्देश्य से वे बडी बेहयाई से उसकी आखो म धूल झोकते रह। पिरोगोव के अनुसार वे 'खूब खाते मोटाते, गुदगुदे गद्दो पर सोते और जनता की मुसीबत की घडियो म झूमते-झामते चलते'। जहा तक इनोजेमत्सेव का सम्बन्ध है, तो उसे विज्ञान की सेवाओ के लिये उसका यथोचित सम्मान मिला मगर वह अपने समकालीनो की नजर म उल्लू बनकर रह गया। चूकि समकालीनो म अनिवार्य रूप से इतिवृत्तकार भी होत

हैं, इसलिये कोई भी चीज बहुत समय तक रहस्य नही बनी रह सकती। मैंने इनोज़ेमत्सेव का महत्त्व कम करने के लिये यह कहानी नही सुनाई है। मेरा कतई ऐसा अभिप्राय नही है। मैंने तो केवल यह चेतावनी देने को यह घटना सुनाई है कि प्यारे साथियो, आएसकूलापिउस के सपूतो, कभी अपने टुकडखोरा, अपने अधीनो और मातहतो को अपनी खार्जे कसौटी पर कसने का काम न सौपें। लोगा की नजरो मे उल्लू बन जाना बडी भयानक चीज है। बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति के भूल करने पर वह देर तक उसका पिड नही छोडती। खुद को और अपन सहयोगियो को बहुत सावधानी से इस खतरे से बचाये। उनकी भलाई को ध्यान मे रखते हुए, दोस्ती और अपने डाक्टरी के पेशे के नाम का बट्टा न लगाते हुए उन्हे सच केवल सच और हमेशा सच ही बताइये "

जसे-जैसे वक्त गुजरता गया, वैसे-वैसे पोलूनिन वोलोद्या की ओर अधिकाधिक ध्यान देने लगे। कभी-कभी वे दाना कालेज के शान्त बगीचे म बैठकर लम्बी-चौडी बातचीत करते। थेरापी की क्लीनिक मे काम करन के बाद पोलूनिन इस बगीचे मे आराम किया करते थे। वह खुद बनायी हुई मोटी-माटी सिगरेटा के कश लगाते, आकाश को ताकते और ऐसे सोच विचार करते रहते मानो अधूरी रह गई किसी बात की कडिया जाड रहे हो।

"काश कि कोई महान डाक्टरो की गलतिया के बारे मे एक किताब लिखता! अभी हाल ही म एक अक्लमन्द आदमी को मैंने यह सुझाव दिया। आप कल्पना भी नही कर सकते कि वह कैसे आग-बबूला हो उठा और उसने कैसे भारी भरकम शब्दो का उपयोग किया — यह तो बदनामी करना, जोश पर ठडा पानी डालना, वैज्ञानिक विश्व दृष्टिकोण के महत्त्व को कम करना होगा। बहुत ही बुरी तरह से लाल-पीला हो उठा वह अक्लमन्द आदमी! बडी अजीब बात है यह! अभी हमारे यहा बहुत कूपमडूकता है। कभी कभी दम घुटने लगता है इस वातावरण मे। सभी आदरणीय, श्रद्धेय किसी न किसी तरह महान लागो की कतार म आ खडे होने की आशा कर रहे हैं, बेशक हेरा फेरी से, मगर ऐसी आशा बनाये रहते है वे। लेकिन ऐसा कर पाना इतना आसान तो नही है। इसीलिये वे पहले से ही अपनी सफाई

पेश करते है ताकि उनकी गलतियो की कोई चर्चा न करे। उन्हे चिंता करने की जरूरत नही ऐसा तो हो ही जायगा। उनकी नहा, महान लोगो की गलतिया दिलचस्प होती हैं। मगर नही, वे तो कान देने को ही तयार नही है। पिरोगोव इतने महान थे कि उन्हे अपनी गलतियो के बारे म लिखते हुए भी कोई झिझक नही हुई। ग्रानेवाली पीढ़ियो के लिये यह चीज़ बहुत शिक्षाप्रद रही। मगर नही, ये लोग कहते हैं कि यह बिल्कुल दूसरी ही चीज थी। जाहिर है कि ऐसा ही है। फिर भी मैंने जो सामग्री जमा की है वह बहुत कमाल की है। इस ग्रक्लमन्द ग्रादमी ने इसके कुछ हिस्सा को देखा ग्रौर मुझे याद दिलाया कि हमारे डाक्टरो के कबीले ने वेरेसायेव की रचना 'एक डाक्टर की टिप्पणिया' का कसा स्वागत किया था। उसने कहा कि वे तो केवल फूल ही थे, हम तुम्हे यह दिखाना चाहते हैं कि उसमे कसे फल ग्राये।"

एक दिन पोलूनिन की सडक पर मुलाकात वालोद्या से हो गई। पोलूनिन ने उसे वह किताब दिखाई जो उनके हाथ म थी। उसकी जिल्द चमडे की थी सुनहरा हाशिया ग्रौर सुनहरा शीर्षक था।

"कमीनेपन की हद हो गई!" पोलूनिन ने गुस्से से कहा। "ज़रा ख्याल करे इस किताब का शीर्षक है–'ग्रोदेस्सा म प्लेग'। यह शोध काय है जो चित्रा कायँयोजनाग्रा खाका ग्रौर रेखाचित्रा से सुसज्जित है। सबसे पहले तो ड्यूक दे रिशेलियो का चित्र है, उसके बाद पूरी सज धज के साथ वोरोत्सोव का। वह तो ऐसे लगता है, जसे कि दुनिया के छोटे मोटे लोगो को खातिर म ही नही लाता हो। इसके बाद बैरन मेयेन्दार्फ ग्रौर ग्रोदेस्सा की महामारी के ग्रय विजताग्रा के चित्र दिये गये ह। पर मैं ग्रापसे इस बात की ग्रोर ध्यान देने का ग्रनुरोध करता हू कि यहा एक भी डाक्टर का चित्र नही है। इसने चूहे का चित्र है। प्लेग की छतवाल काले चूहे की तिल्ली का, साथ ही काले चूहे की ग्रथि का भी चित्र है मगर डाक्टरा के लिये इसमें कही कोई जगह नही थी। वे इस सम्मान के योग्य नही थे। उनकी यह नम्रता नीचता की हद तक पहुची हुई है। मैंने इस पुरानी किताबो की दूकान स खरीदा उलट-पलटकर दखा तो मरे तन-बदन म ग्राग लग गई। क्या जरूरत थी इन तमगा ग्रौर पदकोवाले ड्यूका काउटा ग्रौर बैरना के चित्र यहा छापने की ग्रौर हमारे गामालया को–उस

ग्रदभुत, निडर और नेकदिल डाक्टर को इस सम्मान से वचित करने की? पर, खैर, नमस्ते!"

किसी और दिन, बगीचे की अपनी मनपसन्द बेंच पर बैठे हुए उन्होंने बोलोद्या से कहा—

"हम सभी यह जानते हैं कि हमारे महान बोतकिन ने रूसी चिकित्सा-क्षेत्र मे विदेशी प्रभुत्व के विरुद्ध बहुत बडा और साहसपूर्ण सघर्ष किया था। ऐतिहासिक दृष्टि से उनका सघर्ष न्यायपूर्ण भी था, क्योंकि महारानी मरिया के समय म मुख्य चिकित्सा निरीक्षक रियल न, जो दरबारी डाक्टर था, केवल कहा ही नही, बल्कि लिखा भी कि 'जब तक मैं महारानी मरिया की सस्थाओं का निरीक्षक रहा, कोई रूसी मेरे सचालन मे चलनेवाले अस्पताल म बडा डाक्टर बनने की बात तो दूर, मामूली डाक्टर भी नही बन पाया'। यह भी ध्यान म रहे कि रूस म ही ऐसा लिखा गया था और शासक परिवार ने, जो सयोगवश रूसी नही जानता था, इसका अनुमोदन किया था। बोतकिन का गुस्सा हमारी समझ मे आता है, पर भला उन्होंने, बोतकिन ने ही, ऐसा व्यवहार क्यो किया? रियूल के स्तर से ऊचा उठने के बजाय वे रियूल के स्तर पर ही आ गये। खीझ और गुस्से के कारण पूरी तरह आपे से बाहर होते हुए उन्होने ऐसी हरकते की, जिन्होने खुद उनकी और उनके देश की इज्जत पर बट्टा लगा दिया। अपनी इस झोक मे वे घटियापन की हद तक पहुच गये। आपको यह तो मानना होगा कि अधराष्ट्रवाद या राष्ट्रवाद किसी भी शक्ल मे बुरी चीज है। यह सही है कि रियूल बदमाश और नीच था, पर उसी के तरीको को क्यो अपनाया जाये? हमारे महान बोतकिन ने बिल्कुल ऐसा ही किया। वे इस मामले को यहा तक खीच ले गये कि जब उन्हे उम्मीदवारो मे से अपने डाक्टर चुनने होते थे, तो वे केवल उन्ही नामो की ओर ध्यान देते थे, जिनके कुलनामा का रूसियो के ढग पर 'ओव' या 'इन' के साथ अन्त होना था। इस सिलसिले मे मैं आपको एक घटना सुनाता हू, जो बहुत दुखद है। बोतकिन ने दोलगोह नामवाले एक बहुत ही प्रतिभाशाली नौजवान को नौकरी देने से इनकार कर दिया। वे अस्पताल म अपने परामर्श देने और घर पर मरीजो को देखने के कामो मे बहुत व्यस्त थे और इस तरह हमारे

महान बातकिन ने यह तय कर लिया कि साइबेरियावासी यह नौजवान अन्य सभी मीनिहा लीविहा, 'रीतिहा' तथा अन्य 'इहा' की भांति जर्मन है जिनसे वे नफरत करते थे। बातकिन के इस सिद्धान्त के अनुसार डाक्टरों का चुनाव कितनी लज्जा की बात है मैं इस बात पर बहुत जोर नहीं देना चाहता पर मैं यह जरूर कहूंगा कि इस मामले में भी ईमानदार लोगों को बातकिन की ज्यादतियों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिये था। इसके बजाय उन्होंने यही बेहतर समझा कि इस मामले की ओर से आंखें मूंद ली जायें, इसे देखा अनदेखा कर दिया जाये। इस तरह उन्होंने हमारे बातकिन के नाम और उनकी महानता को उनके जीवनकाल में और उसके बाद भी आलोचना का शिकार हो जाने दिया। क्या होने दिया गया भला ऐसा?"

एक दिन व्याख्यान देते हुए पोलूनिन ने कहा—

रूसी विज्ञान के साथ उन्होंने कैसी ज्यादतियां नहीं कीं ओह, क्या कुछ नहीं किया उन्होंने! रूसी डाक्टरों की पूरी पीढ़ी के उन सबसे बड़े गुरू सर्गेई पत्रोविच बातकिन को उन्होंने उस बुढ़ाती हुई कुतिया उस महारानी मरिया का दरबारी डाक्टर नियुक्त करने का निर्णय किया। इस तरह उन्हें काफी अर्से तक अकादमी छोड़ने को विवश किया। पर अकादमी तो उनकी जिन्दगी थी। कारण कि जिन्दगी का मतलब है कुछ करना। बोतकिन की प्रतिभा अपने शिखर पर थी। यही तो वह समय था कि वे कड़ा श्रम करते। इसके बजाय उन्हें लिवादिया या कानस या सेंट रमो अथवा मेनटोन में चहलकदमी करते हुए यह पूछना पड़ा— महारानी जी आपको नींद तो अच्छी तरह से आई? कितनी शर्म की बात है यह!

पोलूनिन अपने विद्यार्थियों के सामने इधर-उधर टहल रहे थे। उनकी मुस्कराती हुई स्निग्ध आंखों के गिर्द झुर्रियां उभरी हुई थीं। वे विद्यार्थियों से अतीत के शानदार डाक्टरों की चर्चा कर रहे थे, जिनके बारे में उन्हें इतनी अधिक और इतनी सविस्तार जानकारी थी, मानो उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित हों। वालोद्या का इस बात की ओर ध्यान गया कि आलोचनात्मक दृष्टिकोण के बावजूद पोलूनिन को लोगों के बारे में अच्छी बात करके मजा आता था, वे उनकी प्रखर बुद्धि, विचार की गहराई और शक्ति, उनकी कार्य-क्षमता और

स्वय उनके शब्दा मे "अपने का अपने काय म पूरी तरह खो देने" पर मुग्ध होते थे।

"चिकित्साशास्त्र का इतिहास उनकी जीवनिया को बहुत ही नीरस ढग से प्रस्तुत करता है," उन्होने कहा। "हमारे सभी महान डाक्टर बहुत भले और चिकने चिकने से लगते है, दीप्तिचक्र स सजे धजे। ऐस प्रतीत होता है मानो वे न तो रोटी खात थे, न प्यार करते थे और न कभी गुस्से से लाल पीले होते थे। मगर वे भी इन्सान थे पुश्किन या अन्य किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति की भाति। मैं एक और बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हू कि किसी चिकित्साशास्त्री को उसके सही रूप मे प्रस्तुत करने के मामल म हम बहुत कजूसी से काम लेते है। मेरा अभिप्राय यह है कि उसके दिमाग तथा जिस महनत स उसने काम किया, हम उसे उसका पूरा श्रेय नही देते। हमारे चिकित्साशास्त्र-सबधी लेखक इस मामले मे बडी कजूसी दिखाते है। वे किसी मृत की कुछ अधिक प्रशसा करते हुए घबराते है। स्पष्टत इसका एक कारण तो यह है कि अपन सिद्धाता का प्रतिपादन करते हुए उनम से प्रत्येक ने कोई न कोई गलती तो अवश्य की हागी। इसलिय जरा बच-बचकर चलना ही बेहतर है। मैं एक ऐस महामूख को जानता हू, जिसने हमारे उस अदभुत प्रतिभा-सम्पन्न ज़ाखारिन की कीटाणु विज्ञान की जानकारी न हाने के लिये कडी आलोचना की थी। मैं यह जानना चाहता हू कि ज़ाखारिन के ज़माने म यह महामूख स्वय ही क्या करता और कीटाणुशास्त्र के विकास के उस तूफानी दौर म खुद भला क्या तीर मारता? विद्यार्थी स्तेपानोव, आप मुझे ऐसी व्यग्यपूण दृष्टि से क्यो देख रहे हैं? क्या मैंने काई भयानक बात कही है? मैं आप लोगा को पहले से आगाह कर देन के लिये ही यह सब कुछ कह रहा हू। मेरे विद्यार्थियो, मैं यह नही चाहता कि विज्ञान के क्षेत्र म आप इस तरह की बेहूदा करवट के चासे म आ जायें"

विद्यार्थी मन्त्रमुग्ध स सब कुछ सुन रहे थे। येव्गेनी ने "बेहूदा करवट" समेत सभी कुछ बहुत ध्यान से लिख लिया। यह अनुभव करते हुए कि पोलूनिन उससे चिढे हुए है, येव्गेनी उनसे डरता था, उनसे नफ़रत करता था।

वालोद्या अपनी ठोडी को हाथ पर टिकाये बैठा था। उसे यकीन थ कि कोई दिलचस्प बात सुनने को मिलेगी। और पालूनिन कह रहे थे-

"आइये, वोतकिन की चर्चा करें, हमारे लिये यह ज्यादा अच्छा है। सयोगवश यह भी बता दू कि सर्जरी की अकादमी मे उनका सहयोगी मेकलिन नाम का वनस्पति विज्ञान का प्राफेसर, किसी समय शानदार डचेस येलेना पाव्लोव्ना का माली था। यह अत्यधिक सम्मानित विद्वान कागज पर लिखे अपने व्याख्यान शब्दश पढा करता था और वह शब्दश यह पढता था—'पौधा उसी भाति कोठको का बना होता है, जैसे पत्थर की दीवार ईंटो की'। पर आखिर वह तो स्वय शानदार डचेस का माली रहा था इसलिये प्रोफेसरी मे भी टाग क्यो न अडाया जाय? बोगदानोव्स्की एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था, अपनी आस्थाओ पर अटल रहनेवाला और लिस्टर के सिद्धात का कट्टर विरोधी। वह भी उस समय अकादमी मे पढाता था। वह हर दिन की पोशाक मे ऑपरेशन करता था और अपने फ्राक-कोट का गन्दा होने से बचाने के लिये उसके ऊपर काले मोमजामे का पशबन्द पहन लेता था। शिराओ को बाधने के लिये रेशम की डोरिया खिडकी की सिटकिनी पर लटकी रहती थी और जब उसे डोरी की जरूरत पडती, तो उसका सहायक उसे मजबूत करने के लिये थूक से गीला करता और उसे अपने जनरल की ओर बढाते हुए बडे आदर से यह कहता—'हुजूर, यह लीजिये, यह अधिक भरोसे की है।' जाहिर है कि कार्बोलिक एसिड या कीटाणु-नाशक किसी घोल की एक बूद तक इस्तेमाल नहीं की जाती थी। मगर इसी समय प्रोफेसर पेलेखिन, जो लिस्टर का बहुत बडा प्रशसक था, सफाई की सनक मे इस हद तक आगे बढा कि उसने केवल अपनी मूछ और दाढी ही नही, भौहा तक भी हजामत कर डाली

विद्यार्थी हस दिये।

"साथियो, हमारे भावी डाक्टरो, इसमे हसने की कोई बात नहीं है," पालूनिन ने बिगडते हुए कहा। 'विज्ञान का मार्ग दुखद होता है। पेलेखिन ऐसा मानता था—आप लोग यह समझते हैं न?—वह ऐसा मानता था और उसने खुद अपने को तथा अन्य लोगो को इस विचार को मानने का शिकार बनाया कि लोगो की जानें बचाने का

यही एक उपाय था। मैं महसूस करता हू, साथी स्तेपानोव कि आपका पेलेखिन हास्यास्पद प्रतीत होता है, मगर मैने – और मैं यह स्वीकार करते हुए तनिक भी लज्जा अनुभव नहीं करता – जब मैंने अपने प्यारे पेलेखिन की भौह साफ कर डालने की कहानी सुनी तो म रो पडा। कसी भयानक सूरत लेकर वह अपने परिवार के सामने इतना ही नहीं अकादमी के सामने गया होगा।

पोलूनिन ने अपने थैले म कुछ टटाला जरूरी पुर्जा निकाला और उस लहराकर बोले –

"सुनिये! रूस म प्रसाविकी और नारी रागविज्ञा की पहली काग्रेस के उद्घाटन के समय प्रोफेसर स्नेगिर्योव न यह कहा था। यह काग्रेस १९०४ म हुई थी। वास्तव म काई बहुत समय ता नहीं बीता है यह हमारे समय और युग की ही बात है।

"'यह याद कर मेरे रोगटे खडे हो जात ह कि एक, दो या तीन घटो तक पेट को चीरकर खुला रखा जाता था। रोगी सजन और उसके सहायका पर ५% कार्बोलिक एसिड के घोल की अविरत बौछार की जाती थी। (बौछार क्या होती है यह ता आप लोग जानत ही हैं।) हर किसी के मुह म उसका मीठा मीठा स्वाद पहुचता और श्लेष्मल झिल्ली का सूखापन-सा आ जाता। डाक्टरा और रोगी क पेशाब म ढेर-सा कार्बोलिक एसिड निकलता। इस तरह हम खुद अपन अन्दर और अपनी रोगिया के शरीर म विष पहुचात थ क्योकि हम यह मानते थे (मानते थे!) कि इस तरह रागी क शरीर और इद गिद की हवा म छूत के कीटाणुआ का नष्ट कर रह हैं। हमारी इस सनक के लिये हम क्षमा किया जाय! जब सबलामट न कार्बोलिक एसिड की जगह ली, ता स्थिति और भी खराब हा गयी। हम अपन हाथो और स्पजा को इस घोल म धाते थ हमार दात जात रहत थ और रोगी अपनी जाना से हाथ धा बैठती थी।'

पोलूनिन के बडे-स चेहरे पर बल पड गये और पुर्जे का अपन थले म रखते हुए उन्हाने कहा –

"तो लिस्टर की महान शिक्षा को इस तरह शुरू म अमली शक्ल दी गई। है न यह मजाक की बात? नहीं यह मजाक की बात नही है। एक शानदार रूसी सजन व्रोयानाव कार्बोलिक एसिड स रक्त

विषाक्त हो जाने के कारण गुर्दे की सूजन से मौत के मुह में चला गया। यह भी कोई मजाक की बात नही है। आइये, फिर से बोतकिन की चर्चा करे, उसी बोतकिन की, जो हमारे चिकित्साशास्त्र का गुरु था और जो हमारे विज्ञान के लिये बहुत कठिन समय मे खिला। फिर भी उन्होने अपनी विचारधारा को जन्म दिया, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे एक शक्तिशाली आन्दोलन शुरू किया और कोई बहुत अच्छा वक्ता न होने पर भी उनका व्याख्यान सुनने के लिये चार सौ और कभी कभी तो पाच सौ श्रोता तक सदा आ जाते थे। रोग निदान की दृष्टि से वे अपने सभी समकालीनो से बहुत ही बढ चढकर थे। वे जानते थे कि रोगियो की बाते कैसे सुनी जाये, कैसे तक वितर्क किया जाये, रोगी और रोग के लक्षणो को क्रमबद्ध किया जाय और समस्या का कुशलतापूर्वक हल ढूढा जाय। अनेक तथ्य निदानिक के रूप में उनकी योग्यता की पुष्टि करते है जिनका हम उल्लेख कर चुके है। पर मैं एक और तथ्य की चर्चा करना चाहता हू। एक दिन एक अधेड उम्र की नारी को क्लीनिक म लाया गया। डाक्टरी जाच से कोई उपयोगी सूचना न मिली पर रोगिणी ने स्वय ही डाक्टरो को यह बतलाया कि कोई आठ दिन पहले पाइक मछली का शोरबा खाने के बाद वह बीमार पड गई थी, उसकी भूख मर गई थी और उसने चारपाई थाम ली थी। लक्षण थे थे—खासी, चेहरे पर नीलापन, अगो का ठडापन, खुराक से नफरत और नीद की खुमारी। अनुभवी डाक्टरो ने इसे क्रोनो निमोनिया बताया। तब बोतकिन आये और बहुत ध्यान स रोगिणी की परीक्षा करने के बाद उन्होने धीरे धीरे कहा—

'कल शरीर का व्यवच्छेदन करके मध्यस्थानिका के पिछले भाग म भोजन नलिका के करीब सूजन ढूढने की कोशिश करो।

"अब जरा कल्पना कीजिये कि यह सुनकर उन अत्यधिक प्रतिष्ठित डाक्टरो, उन गम्भीर विद्वानो किन्तु प्रतिभाहीन लोगो के चेहरो पर कैसी हवाइया उड रही होगी। बोतकिन वास्तविक विभूति थे।

व्यवच्छेदन किया गया और यह निष्कर्ष निकाला गया—भोजन-नलिका की दीवार म पीपदार सूजन उसका छिद्रण और फलत मध्यस्थानिका के पिछले भाग म फोडा तथा रक्त विषाक्त हो गया है।

"सारी बात बिल्कुल साफ हो गई। भोजन-नलिका मे मछली की एक हड्डी फस गई थी, जिससे मध्यस्थानिका मे पीपदार सूजन हो गयी जिसके बाकी सभी परिणाम हुए थे।

"साथी विद्यार्थियो, मैंने विभूति शब्द का सयोगवश उपयोग नही किया है। बोतकिन विभूति थे, क्योंकि जा चीज औरो को दिखाई सुनाई नही देती थी, वे उसे देख सुन लेते थे। व यह जानत थे कि क्लीनिकल विश्लेपण को दद के असली कारण और वहुत ही अदरूनी प्रक्रियाओ पर कैसे केद्रित किया जाय। सवसे महत्त्वपूण वात तो यह है कि वे बीमारी की 'जड' तक पहुचना जानत थे। मगर वे स्वय यह नही वता सकते थे कि कैसे यह सव अनुभव करत और जान जाते थे। अय किसी को भी दिल की धडकन की तब्दीली का पता न चलता, किन्तु वे ज़ोर देकर कहते कि उन्हे 'धडकन मे कुछ तेजी' अनुभव हो रही है और कुछ देर बाद उन्हे दिल म 'शार' सुनाई देता। बीमारी जव उग्र रूप ले लेती, तभी अय प्रोफेसरो को दिल की धडकन म वह कुछ सुनाई देने लगता, जिसके बारे मे वोतकिन ने उन्हे शुरू स ही विश्वास दिलाया था। अपने चश्मे पर दूरवीनी शीशा रखते हुए वे कहते—'मुझे त्वचा मे कुछ भूरी-वैंगनी झलक मिल रही है।' उनकी नज़र कमज़ोर थी, फिर भी वे ऐसी चीज़ें देख लेते थे, जो दूसरे नही देख पाते थे। वे कहते—'मैं साफ तौर पर यहा छोटा-सा उभार अनुभव कर रहा हू।' कोई अन्य डाक्टर अभी इसे अनुभव नही कर पाता था। इसलिये वोतकिन के शब्द हमेशा और सवथा निर्विवाद रहते थे "

पोलूनिन अपने विद्यार्थिया के तनावपूण चेहरा को ध्यान से देखते हुए रुके। वे सभी जानते थे कि शीघ्र ही उन्हे सवसे अधिक महत्त्वपूण वात सुनने को मिलेगी। वह बात, जिसके कारण पिछले कुछ समय से वोतकिन का इतनी अधिक वार नाम लिया जान लगा था।

"किन्तु निर्विवादता म भी एक अजीव दुखद तत्त्व निहित रहता है। इस छोटी-सी घटना का उल्लेख करत हुए मेरा उद्देश्य महान डाक्टर के माथे पर कलक का टीका लगाना नही, वल्कि आपको, भावी डाक्टरो को, इससे आवश्यक परिणाम निकालने के योग्य वनाना है। जिस

वप यह घटना घटी, उस वप वोतकिन न टाइफस के रोगियो म विशप दिलचस्पी ली। हुआ यह कि वोतकिन न अपने विद्यार्थियो के लाभ के लिये जिस व्यक्ति को अध्ययन और क्लीनिकल विश्लेपण के हेतु चुना, वह किसी दवाफरोश का सहायक था। रोगी स्वस्थ हो गया, मगर लगातार सिर-दद की शिकायत करता रहा। पर चूकि वोतकिन के विश्लेपण के ढाचे म सिर-दद ठीक नही बैठता था, इसलिय दवाफरोश के इस सहायक को अधिकृत रूप से—इस बात की ओर ध्यान दीजिये—छद्म रोगी घोपित कर दिया गया, जिसने क्लीनिक के डायरेक्टर के सूत्र—'स्वस्थ, काम के योग्य' का पालन करने से इन्कार कर दिया था। क्लीनिक के कुछ डाक्टरो का वोतकिन से भिन मत था, किन्तु वे मौन साधे रहे। जहा तक उस सोलह वर्षीय किशोर का सम्बन्ध है वह तो चल बसा, बस, चल बसा। शव-परीक्षा से पहले प्रोफेसर रूदनेव ने अपने विद्यार्थियो से कहा—

''इस शव से हम एक रोग के रूप मे छद्म रोग का अथ समझने जा रहे हैं, जिससे अचानक मृत्यु हो जाती है।'

"रोगी दिमाग की सूजन से मरा था।

"इस मामले मे एक सच्चे प्रतिभाशाली डाक्टर की प्रतिष्ठा की निर्विवादता के फलस्वरूप उस किशोर की मृत्यु हुई। मेरे भावी डाक्टरो, कठिन समस्याओ का समाधान करते समय चाहे वोतकिन जसे योग्य प्रोफेसर भी क्यो न उपस्थित हो, सामूहिक निणय करना आवश्यक होता है। और अगर कोई जाना माना डाक्टर गलती करता है, तो आपका इस गलती के खिलाफ बोलना सच्चा कत्तव्य हो जाता है।"

पोल्निन एक दो मिनट तक विचारो मे डूबे रहे और फिर उन्होने अचानक ही पूछा—

"अच्छा यह बताइये कि अपने समकालीन प्रोफेसर क्लोदनीत्स्की, उसके सहायको और छात्रो के बारे मे आप क्या जानते हैं?"

विद्यार्थी खामोश रहे।

"मगर आप यह तो जानते ही हैं कि प्रोफेसर क्लोदनीत्स्की हमारा प्रमुखतम महामारी विशेषज्ञ है?"

अनेक पुस्तको के लेखक भी,' मीशा गोरवुड बोला, "प्रसिद्ध किताबो के लेखक।"

"एक प्रमुख वैज्ञानिक, सम्भवत अनेक पुस्तकों का लेखक भी होना ही है," पोलूनिन ने वैमनस्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। "सदा की भाति, आज भी ठीक ही हैं आप शेरवुड!"

पोलूनिन कुछ देर चुप रहे।

"इस बात से मुझे एक और बात याद आ गई। मैं मृत्यु और शव-परीक्षा के बारे में एक अन्य घटना आप लोगो को बताना चाहता हू। अगर मैं गलती नही करता, तो २ अक्तूबर, १९१२ को देमीन्स्की नामक एक रूसी डाक्टर ने, जो प्रोफेसर क्लोदनीत्स्की का मित्र और सहायक था, सबसे पहले प्लेग से बीमार हुए एक मारमोट के रोग जीवाणु को अलग किया था। यह अस्त्राखान गुबेर्निया की बात है। वहा प्लेग की कई घटनाए हो चुकी थी। तो इस तरह देमीन्स्की को फेफडो की प्लेग हो गई। उसने अपने कफ का विश्लेषण किया और इर्कूत्स्क नगर मे क्लोदनीत्स्की को तार भेजा। मेरे भावी डाक्टरो, मेरा यह सुझाव है कि आप इस तार के शब्द लिख ले, ताकि उन्हे हमेशा याद रख सके "

सधे-सधाये कदम रखते हुए पोलूनिन ने सयत और शान्त प्रतीत होनेवाले स्वर मे तार के ये शब्द लिखवाये—

"'मुझे मारमोटो से फेफडो की प्लेग हो गई है। मैंने जो रोग जीवाणु प्राप्त किये हैं, उन्हे आकर ले लीजिये। मेरे सभी रेकाड सुव्यवस्थित हैं। बाकी चीजें आपको प्रयोगशाला से मालूम हो जायगी। मेरे शव को चीर फाडकर एक ऐसे प्रयोगीय व्यक्ति के रूप मे इस्तेमाल कर, जिसे मारमोटो से प्लेग की छूत लगी है। अलविदा। देमीन्स्की।' लिख चुके?"

"जी हा," पीच ने जवाब दिया।

"जी, लिख चुके," ओगुर्त्सोव ने दोहराया।

"जाहिर है कि क्लोदनीत्स्की वहा पहुचा," पोलूनिन ने अपनी बात जारी रखी। "उसने मृतक की अन्तिम इच्छा पूरी की और कब्रिस्तान मे, खुली हवा मे उसका शव चीरा और इस तरह खुद भी छूत लगने का खतरा मोल लिया। में चाहता हू कि आप ऐसे लोगो से शिक्षा ग्रहण करे।"

घ्यानाना होंग म गामानी राई थी, गरी गामाना पौर न्सा था।

पोचूरि र पिर स वातरिन की धरा गुर की, मगर इन बा प्लेग की महामारी के गिरागिर म।

"मर नोजवान गामिया मास्टर का भपने विचारों क अनुसार बनाय गाा ग गुद ही कभी धागा नही गाना चाहिए। ऐमा होन पर यह बहुत-सी अप्रिय बाता का गिार हा मकना है। उन्नीसवी शताब्द म नोव दशर य मन्न म बहुा ही प्रतिभागाली और भद्भुत गणितज्ञ हमार शानदार वातरिन का इस बात का लगभग विश्वास ही था कि वाला तट य देहाता म फैली हुई प्लेग अवश्य ही सेंट-पीटसबग में भी आयगी। यह प्लग 'वान्यास्ताया' नाम से जानी जाती है। ह तो प्लेग फैलन का इनजार करत हुए वातविन अपन रोगिया की रस ग्रन्थिया की सूजन की ओर ध्यान दत रह। उन्हान यह कल्पना की कि बहुत बडी सख्या म ऐसी ग्रन्थिया का सूजना प्लेग की बीमारी के सेंट-पीटसबग म फैलन का व्याधिकीय आधार होगा। तभी नाऊम प्रावोमियव नाम का एक गडर बुहारनवाला रोगी के रूप मे उनके पास आया। वह वोतकिन द्वारा पहले स तैयार किये गय खाके म ठूक जच गया। उसके सारे शरीर की ग्रन्थिया सूजी हुई थी। इस प्रकार करके बडे निरीक्षण मे रख दिया गया और डाक्टरी के विद्यार्थियो के सामन निर्विवाद रूप स यह घोषणा कर दी गई कि उसका रोग प्लेग है। खुद वातकिन न कहा है कि प्लग है' स्वय महान बातकिन न! और चूकि सदेह करनवाला मे से (ऐसे कुछ थे भी) किसी ने इस मामले मे भी जबान खोलने की जुरत नही की, इसलिये बहुत बडा हगामा हो गया। पीटसबग के तानाशाही और काम-काजी लोग भाग खडे हुए। शाही नगर से बहुत तेजी से बग्घिया भाग चली और भीड से अटी-अटायी गाडिया जाने लगी। डर स थर थर कापते हुए बड पदाधिकारी अवकाश प्राप्त जनरल व्यापारी और मुख्य सनिक कार्यालय के सभी अफसर अपनी जागीरो की तरफ निकल भागे। उन्होंने जितना भी सम्भव हो सका, प्लेग से दूर भाग जाने की कोशिश की। तो ऐसे रहा यह किस्सा, साथी स्तेपानोव! '

वाद-विवाद और झगडा

येव्गेनी को न तो गानिचेव और न पोलूनिन ही फूटी आखा सुहाते थे। वे क्या कहते हैं, उसकी समझ मे ही नही आता था। उनके व्याख्याना के दौरान उसके चेहरे पर परेशानी अकित रहती। उसने तो युवा कम्युनिस्ट लीग की एक सभा के सामने मामला पश करते हुए यह शिकायत भी की कि मैं नकारात्मक व्याख्यान सुन-सुनकर तग आ गया हू। मुझे तो निश्चित निर्णीत ज्ञान चाहिये, मुझे विज्ञान की महान उपलब्धिया के बारे मे सन्देहपूर्ण फब्तिया म कोई दिलचस्पी नही। इनके दर्जे मे सबसे बडी उम्र का विद्यार्थी पीच, जिसके बाल पकन लगे थे और चाद निकलने लगी थी और जो हमेशा गुमसुम और व्यस्त रहता था, अचानक भडक उठा और एक टन ईंटा के बोझ के समान येव्गेनी पर बरस पडा। पीच के बाद सभा म उपस्थित कम्युनिस्ट पार्टी और युवा कम्युनिस्ट लीग के सभी सदस्यो न येव्गेनी की खूब लानत-मलामत की। येव्गेनी ने अपना दष्टिकाण स्पष्ट करने के लिये फिर से बालने की अनुमति मागी, मगर उसे इन्कार कर दिया गया। उसने अपनी भूल स्वीकारने के लिये कुछ शब्द बोलन की इजाजत चाही, पर उसे वह इजाजत भी नही दी गई। किन्तु "बूढा" पीच फिर से मच पर आया।

"साथियो!" उसने घुडसवार सैनिक की खरखरी सी आवाज मे कहा। "प्रोफेसर गानिचेव और पोलूनिन हमे सोचना, तक वितक करना सिखाते है। हा, हमे तो पाठ्यपुस्तको के साधारण सत्या के बारे म सन्देह प्रकट करना भी कठिन प्रतीत होता है। मगर वह समय भी आयगा, जब हममे स प्रत्येक अपन रोगी के साथ अकेला हागा। वहा न तो प्रोफेसर की सहायता उपलब्ध होगी और न ही क्लीनिक होगी। किसी दूर दराज के झोपडे मे बस डाक्टर और मरीज ही हागे। उस दिन हम जिन चीजो की जरूरत होगी, क्या उन सभी को जबानी याद करना सम्भव है? मगर हम जो सीख सकते हैं, वह है चिकित्सको की तरह, डाक्टरा की तरह सोचना, तक वितक करना। मैंने अपनी बात पूरी तरह स्पष्ट कर दी है न?"

व्याख्यान हाल म खामोशी छाई थी, गहरी खामोशी और तनाव था।

पोलूनिन न फिर स बोतकिन की चर्चा शुरू की, मगर इस बार प्लेग की महामारी के सिलसिले म।

"मेरे नौजवान साथियो, डाक्टर को अपने विचारो के अनुसार बनाये रखने से खुद ही कभी धोखा नही खाना चाहिये। ऐसा होने पर वह बहुत-सी अप्रिय बातो का शिकार हो सकता है। उन्नीसवी शताब्दी के नौवे दशक के अत म बहुत ही प्रतिभाशाली और अद्भुत गणवान हमारे शानदार बोतकिन को इस बात का लगभग विश्वास हो था कि वोल्गा तट के देहातो मे फली हुई प्लेग अवश्य ही सट-पीटसबग म भी आयेगी। यह प्लेग 'वेतल्यान्स्काया' नाम से जानी जाती है। हा तो प्लेग फैलने का इतजार करते हुए बोतकिन अपने रोगियो की रस ग्रन्थियो की सूजन की ओर ध्यान देत रह। उन्होने यह कल्पना की कि बहुत बडी सख्या मे ऐसी ग्रन्थियो का सूजना प्लेग की बीमारी के सेट पीटसबग मे फैलने का व्याधिकीय आधार होगा। तभी नाउम प्रोकोफियेव नाम का एक सडक बुहारनेवाला रोगी के रूप मे उनके पास आया। वह बोतकिन द्वारा पहले से तैयार किये गय खाके म खब जच गया। उसके सारे शरीर की ग्रन्थिया सूजी हुई थी। इस अलग करके कडे निरीक्षण मे रख दिया गया और डाक्टरी के विद्यार्थियो क सामने निविवाद रूप से यह घोषणा कर दी गई कि उसका रोग प्लेग है। खुद बोतकिन ने कहा है कि प्लेग है! स्वय महान बोतकिन ने! और चूकि सन्देह करनेवाला मे से (ऐसे कुछ थे भी) किसी ने इस मामने मे भी जबान खोलने की जुरत नही की, इसलिये बहुत बडा हगामा हो गया। पीटसबग के तानाशाही और काम-काजी लोग भाग खडे हुए। शाही नगर से बहुत तेजी से बग्घिया भाग चली और भीड से अटी अटायी गाडिया जाने लगी। डर से थर थर कापते हुए बड पदाधिकारी, अवकाश प्राप्त जनरल व्यापारी और मुख्य सैनिक कार्यालय के सभी अफसर अपनी जागीरो की तरफ निकल भागे। उन्होने जितना भी सम्भव हो सका, प्लेग से दूर भाग जाने की कोशिश की। तो ऐस रहा यह किस्सा साथी स्तेपानोव।

वाद-विवाद और झगडा

येव्गेनी को न तो गानिचेव और न पोलूनिन ही फूटी आखो सुहाते थे। वे क्या कहते हैं, उसकी समझ मे ही नही आता था। उनके व्याख्याना के दौरान उसके चेहरे पर परेशानी अकित रहती। उसन तो युवा कम्युनिस्ट लीग की एक सभा के सामने मामला पेश करते हुए यह शिकायत भी की कि मैं नकारात्मक व्याख्यान सुन-सुनकर तग आ गया हू। मुझे तो निश्चित निर्णीत ज्ञान चाहिये मुझे विज्ञान की महान उपलब्धियो के बारे मे मन्देहपूण फब्तिया मे कोई दिलचस्पी नही। इनके दर्जे मे सबसे बडी उम्र का विद्यार्थी पीच, जिसके बाल पकने लगे थे और चाद निकलने लगी थी और जो हमशा गुमसुम और व्यस्त रहता था, अचानक भडक उठा और एक टन इटा के बोझ के समान येव्गेनी पर बरस पडा। पीच के बाद सभा मे उपस्थित कम्युनिस्ट पार्टी और युवा कम्युनिस्ट लीग के सभी सदस्यो ने येव्गेनी की खूब लानत-मलामत की। येव्गेनी न अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करने के लिय फिर से बोलन की अनुमति मागी, मगर उसे इकार कर दिया गया। उसने अपनी भूल स्वीकारने के लिये कुछ शब्द बोलने की इजाजत चाही पर उसे वह इजाजत भी नही दी गई। किन्तु "बूढा" पीच फिर से मच पर आया।

"साथियो!" उसने घुडसवार सैनिक की खरखरी सी आवाज मे कहा। "प्राफेसर गानिचेव और पोलूनिन हमे सोचना, तक वितक करना सिखाते हैं। हा, हमे तो पाठ्यपुस्तका के साधारण सत्या के बार म सन्देह प्रकट करना भी कठिन प्रतीत होता है। मगर वह समय भी आयेगा, जब हमम से प्रत्येक अपने रोगी के साथ अकेला हागा। वहा न तो प्रोफेसर की सहायता उपलब्ध होगी और न ही क्लीनिक हागी। किसी दूर-दराज के झोपडे मे बस डाक्टर और मरीज ही हागे। उस दिन हम जिन चीजा की जरूरत होगी, क्या उन सभी को जबानी याद करना सम्भव है? मगर हम जो सीख सकते है, वह है चिकित्सका की तरह, डाक्टरा की तरह सोचना, तक वितक करना। मैंन अपनी बात पूरी तरह स्पष्ट कर दी है न?"

पीच बहुत देर तक बोलता रहा और सभी बडे चाव और ध्यान से उसकी बात सुनते रहे। यह जानकर सभी को बडी प्रसन्नता हुई कि "बूढा पीच, जिसे सभी प्यार करते थे और जो पढने में इतनी मेहनत करता था, गानिचेव और पोलूनिन को इतनी अच्छी तरह से समझता था। चूकि दुनिया में कोई रहस्य भी स्थायी रूप से रहस्य नही रहता, इसलिये गानिचेव और पोलूनिन से भी यह बात छिपी न रह सकी। उन्हे सभा के बारे में और यह भी मालूम हो गया कि विद्यार्थियो ने कितने उत्साह से उनकी चर्चा की थी

पोलूनिन इस प्रदेश के प्रमुख चिकित्सक थे। वे डाक्टरी के कालेज में व्याख्यान देने, थेरापी की क्लीनिक का सचालन करते और चिकित्सालय में रोगियो को देखते। दव जैसे लम्बे-तडगे और प्रायः सफेद कलफ लगे लबादे मे, जिसकी आस्तीनें ऊपर को चढी रहती थी स्वास्थ्य का मूर्त रूप प्रतीत होनेवाले पोलूनिन यद्यपि प्रायः विद्यार्थियो से रुखाई से पेश आते, व्यग्य करते, पर जब वास्तव में कोई पीडित कोई सख्त बीमार उनके सामने आ जाता, तो वे बहुत विनम्र हो जाते बडे सब्र से काम लेते। तब ऐसा प्रतीत होता, मानो उन्हे अपनी भारी भरकम आवाज, अपने लाल-लाल गालो, अपने बढिया स्वास्थ्य और अक्षय शक्ति के कारण लज्जा अनुभव हो रही है। वे बहुत होशियारी-समझदारी से रोगियो की जटिल परीक्षाए करते, बातूनी विद्यार्थियो की भीड अन्दर लाकर कभी रोगियो को नाराज या लज्जित न होने देते, उनकी बीमारियो का लम्बा वर्णन और प्रश्न कर उन्हें परेशान न करते। वे विद्यार्थियो की जरूरत की बात उन्हें ऐसी भाषा में बताते जिसका वे विशेषत क्लीनिक में ही उपयोग करते थे और विद्यार्थी उन्हें अच्छी तरह समझ जाते थे।

धीरे धीरे वोलोद्या यह अनुभव करने लगा कि पोलूनिन के जीवन में क्लीनिक ही मुख्य चीज है। क्लीनिक में पोलूनिन किसी रोगी के रोग का स्पष्टीकरण करने के मामले में न तो समय की परवाह करते और न श्रम की। वे शरीर की सामान्य से भिन्न स्थिति का कठिन से कठिन स्पष्ट तौर पर विद्यार्थियो को समझाने की कोशिश करते। तब वे सभी तरह की गल्तियो को एक तरफ में गिराते और रास्ता दिखाते। शुरू में वे तनिक हिचकिचाते, उनकी भारी आवाज

म सावधानी की झलक होती, फिर उनकी आवाज म दृढ़ता आ जाती "क्या ऐसा है?" यह वाक्य गायब हो जाता और उनके दृष्टिकोण की ठोस तार्किकता खूब उभरकर सामने आ जाती। बार-बार छोटे मोटे और सायोगिक तथ्य उभरकर उनके दृष्टिकोण मे बाधा डालते, व भुनभुनाते हुए उनका सामना करते, अपनी चौडी हथेली से उन्हे एक ओर को हटाते प्रतीत होते और अपने बडे-बडे हाथो से सकेत करते हुए वे मीनार-सी खडी करने लगते, जिसका शिखर-बिन्दु होता था—रोग निदान।

"देखा न?" वे विजयी ढग से फुसफुसाकर पूछते। विद्यार्थी मन्त्रमुग्ध-से उन्हे देखते होते, मानो वे कोई जादूगर हो। "मेरे नौजवान साथियो, हमे दिमाग से काम लेना चाहिये, एक कुशल रणनीतिज्ञ की भाति समस्या को हल करना चाहिये। हम शत्रु की सेनाओ की स्थिति, उसकी सेना-सख्या और सुरक्षित सेनाए निर्धारित कर चुके हैं। अब, हम क्या कुछ कर सकते हैं?"

वालाद्या का दिल ज़ोर-ज़ोर से धडकता होता। एक घटे पहले तक जो कुछ अस्पष्ट था, धुधला-सा प्रतीत हुआ था, ढेरो लक्षणो, चिह्नो और समानताओ के जगल मे उलझा-उलझाया हुआ था, अब उसने एक निश्चित रूप ले लिया था—रोग का नाम तय हो गया था। रोग कोई बहुत दुर्लभ, यहा तक कि बिल्कुल दुर्लभ नही, बहुत आम था। भावी डाक्टरो को निश्चय ही इससे बहुत बार वास्ता पडनेवाला था। पोलूनिन को वह चीज पसन्द नही थी, जो, दुर्भाग्यवश, अभी तक चिकित्साशास्त्र के कुछ अध्यापको मे लोकप्रिय है वे बहुत ही दुर्लभ रोगो का अपने विद्यार्थियो के सामने प्रदर्शन नही करते थे, क्योकि वे उन्हें या कुछ "दिलचस्प रोगियो" की अत्यधिक जटिल बीमारियो का युवा डाक्टरो के लिये बहुत जरूरी नही मानते थे।

"मेरे नौजवान दोस्तो, अगर आप असमजस मे पड जायें, तो हमेशा ही एम्बूलेस हवाई जहाज को बुला सकते हैं। हम किसी अधे युग में नहीं रह रहे, यह सोवियत राज्य है। आपके कालेज का कर्त्तव्य है कि वह आपको बडे पैमाने पर डाक्टरी सहायता देने की शिक्षा दे, आपको जीवन का विस्तृत दृष्टिकोण रखनेवाला, योग्य और उत्साही डाक्टर बनाये, न कि विज्ञान की किसी सकरी शाखा का विशेषज्ञ "

पोलूनिन की विचार विधि और वसे वे एक अर्थ की भांति ता टेक-टक्कर एक के बाद दूसरे सवाल की ओर बढते थे, यह सब न्दूरा बहुत खुशी होती थी। वे रोगी की तिल्ली और जिगर की जाच करते, एक्स र और प्रयोगशाला की परीक्षाओं के परिणामो का देखते और इस तरह शरीर विकृति, शरीर रचना और शरीर क्रिया विज्ञान से लस होकर वे अस्पष्टता की खाइयो और अन्तर्विरोधो की परवाह न करते हुए बधडक आगे बढते जाते और अचानक तथा ज्ञान का ज्ञान म गडबड-झाले, बेहूदगी और बकवास तथा विरोधी लक्षणो को सान जस्यपूर्ण और सुदर-सुघड स्वरूप मे बदल देते तथा उनका मानार के शिखर पर होता — रोग निदान।

पावन-सी कपकपी अनुभव करते हुए, जैसे कि कोई देव मन्दिर मे जा रहा हो, वोलोद्या न अन्य विद्यार्थियो के साथ चीरफाड के विभाग की इमारत मे प्रवेश किया, जिसके दरवाजे के ऊपर लातीनी भाषा म लिखा था — «*Hic locus est ubi mors gaudet succurrere vitam*» ('यहा मृत्यु जीवितो की सहायता करती है')। वह रोगी, जिसके बारे मे पोलूनिन ने एक महीना पहले ही कह दिया कि वह बच नही सकेगा चल बसा था। किस कारण मृत्यु हुई थी उसकी? यह उन्हे अब सबसे बडे और सबस खरे पारखी गानिचेव से पता चलेगा।

लम्बे-तडगे पोलूनिन चीरफाड की मेज के क़रीब ही एक कुर्सी पर बैठ गये। चीरफाड करनेवाले व्यक्ति ने, जिस विद्यार्थी चाचा साशा कहते थे, अपना काम शुरू किया। गानिचेव जो चीर-फाड के कमरे मे न तो खुद कोई मजाक करते थे, न दूसरो को ही ऐसा करने देते थे ममस्वर म कुछ स्पष्ट कर रहे थे जो विद्यार्थियो की समझ म नही आया। यह बात डरावनी और अजीब सी होती हुई भी खुशी प्रदान करनेवाली थी कि पोलूनिन न एक महीना पहले जो कुछ कहा था, वह सोलह आने सही था। एक्स र और प्रयोगशाला की परीक्षाओं की सहायता स उन्होने एक महीना पहल ही अदृश्य को देख लिया था। रोगी मर गया था। विज्ञान इस रोग के इस अवस्था म पहुच जाने पर इसका इलाज करने म असमर्थ था। किन्तु विज्ञान ने उन क्षेत्रो मे प्रवेश करना शुरू कर दिया था, जो कुछ ही समय पहले तक उसके लिए अगम्य थे। विज्ञान ने इस रोगी की भी जान बचा

दी होती, अगर वह कुछ समय पहले, बस, थोडा पहले इसके दरबार म आ गया होता था

शव-परीक्षा खत्म हो गई। पोलनिन, गानिचेव और सभी विद्यार्थी बाहर बगीचे मे आकर बैठ गये थे। पतझर के दिनो का ठडा सूरज खूब चमक रहा था, मेपल और बच के पीले पत्ते धीरे धीरे जमीन पर गिर रहे थे। गानिचेव ने सिगरेट सुलगा ली। पोलनिन अपने चौडे माथे पर बल डाले, सिर झुकाये और खीझे-खीझे बैठे थे।

"काश कि हम ढग से इलाज करना जानते!" व अचानक और लगभग एक पागल की तरह कह उठे।

गानिचेव ने स्नेहपूवक उनका कधा थपथपाया। पोलूनिन उठे और वहा स चले गये।

"क्या काई खास बात हो गई है?" वोलोद्या न गानिचेव से पूछा।

"नही, कोई खास बात नही हुई," गानिचेव ने हल्की सी आह भरते हुए जवाब दिया। "मगर सोचने-समझनेवाले डाक्टरा को कभी-कभी ऐसे दौरे पडा करते है, जैसा कि आपने अभी अभी दखा।"

उहाने फिर आह भरी और कहा—

"बिलरोथ ने, जो सयोगवश कुछ बुरा डाक्टर नही था, लिखा था कि 'हमारी सफलता का माग लाशो के पहाडो के बीच से हाकर जाता है।' कुछ ऐस तथाकथित डाक्टर भी हैं, जा बडी आसानी से इस बात को स्वीकार कर लेते है और जिनके लिये तीस वष की उम्र हाने के पहले «exitus letalis» (रोगी मर गया) लिख देना बहुत साधारण बात होती है। कितु पोलूनिन जैसे दूसरे डाक्टर भी हैं, जो हर मौत के लिये अपने को जिम्मेदार मानते हैं। अधिकतर पालूनिन जसे डाक्टर ही चिकित्साशास्त्र को आगे बढाते हैं। समझे?"

"सो तो हम समझते हैं," उठी हुई नाक और लाल-लाल गालावाली न्यूस्या योल्किना ने कहा। "मगर, साथी प्रोफेसर, आपको यह ता मानना ही होगा कि आदमी जिदगी भर हर चीज को दिल स नही लगा सकता, मजबूत से मजबूत दिलवाले लाग भी यह तनाव महन नही कर सकते। शान्त-सयत रहना भी एक डाक्टर के लिय बहुत महत्वपूण चीज है न?'

"यह बिल्कुल सही है," गानिचेव न झटपट स्वीकार कर लिया और फिर से चीरफाड के कक्ष मे चल गये।

मगर ये फौरन ही लौट आये, बैठे नही और बलूत की मजबूत छडी का सहारा लेकर बोलने लगे—

"पट्टेकोफेर और एम्मेरिख हैजा के रोगाणुओ को निगल गये थे। इतना ही नही ऐसा करने के पहले उन्होने सोडा पी लिया, जिससे उनके मेदा के हाइड्रोक्लोरिक एसिड को निष्क्रिय कर दिया गया था। हमारे अपने मेचनिकोव डाक्टर हेस्टरलिक और डाक्टर लतापी ने भी ऐसा ही किया था। लगभग साठ वर्ष पहले तीन नौजवान इतालवियो —वोजिओनी गेजी और पास्सीओल्ली—ने आतशक (सिफिलिस) के प्रोफेसर पेलीज्जारी से यह अनुरोध किया था कि वह उन्हे, स्वस्थ और नौजवान लोगो को आतशक के टीके लगाये। पेलीज्जारी ने शुरू म तो साफ इन्कार कर दिया किंतु बाद मे नौजवानो ने उसे राजी कर ही लिया। साथी योल्किना, आपको यह तो मालूम ही है कि उन दिनो आतशक का दूसरे ही ढग से—पारे से!—इलाज किया जाता था। डाक्टर लिडेमान हर पाच दिन के बाद अपने को लगातार दो महीने तक आतशक के टीके लगाता रहा। पेरिस की चिकित्सा विज्ञान अकादमी द्वारा नियुक्त किये गये एक आयोग ने उसकी हालत के बारे मे रिपोर्ट दी थी साथी योल्किना। मुझे उसका निष्कर्ष अच्छी तरह स याद है कधो से लेकर कलाइयो तक डाक्टर लिडमान की दोनो बाह फोडो से भर गई थी, जिनम से कुछ फोडे आपस मे घुल मिल गय थे और उनके गिर्द अत्यधिक पीडायुक्त और पीपवाले नासूर हो गये थे और खैर, इस बात की तो चर्चा ही क्या की जाये कि उसके सारे शरीर पर ढेरो छाले भी हो गय थे। मगर इसके बावजूद डा० लिडमान यह क्रम जारी रखना चाहता था, इलाज नही कराना चाहता था। साथी योल्किना डाक्टर के मानसिक सतुलन के बारे म, जिस आप अभी से सुरक्षित रखने को इतनी उत्सुक हैं बस इतना ही काफी है'

गानिचेव का थलथल चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वे चिल्ला उठे—

'अभी कुछ नही बिगडा है! जाओ, जाकर सिलाई सीखो!

शाटहैण्ड की कक्षा मे दाखिल हो जाओ! अपनी मा, बाप, पति के पास भाग जाओ, जहन्नुम मे चली जाओ! "

यूस्या ने बाद मे शिकायत की—

"क्या मजाल कि मुह से एक शब्द भी निकालने दे! फिर सिलाई का और शाटहैण्ड की कक्षा का सवाल क्यो उठाया गया? हमारे देश मे सभी पेशे सम्मानित माने जाते है। मेरी समझ मे नही आता कि शाटहैण्ड को शरीर विकृति विज्ञान से घटिया क्यो समझा जाये "

यूस्या के गुलाबी गाल आसुओ से भीगे हुए थे और उसकी आखो म गुस्से की चमक थी।

"सचमुच, तुम शाटहैण्ड क्यो नही सीख लेती?" वोलोद्या अनचाहे ही कह उठा। "अगर आज की बातचीत से तुम्हारे हाथ-पल्ले कुछ नही पडा, तो अपनी मनमानी करती जाओ। वहा जीवन अधिक दिलचस्प और चैन भरा होगा।"

"मगर दूसरी ओर तुम हर डाक्टर से यह उम्मीद भी तो नही कर सकते कि वह अपने को आतशक के टीके लगाये?" येव्गेनी ने टोकते हुए कहा। "और कुछ नही, तो यह बडी बेतुकी बात जरूर है।"

"तुम्हे, ऐसा करने को कहता ही कौन है!" वोलोद्या आपे से बाहर होता हुआ चिल्ला उठा। "बात यह नही है!"

"समय बेरोक-टोक उडता रहा "

केवल वार्या ही ऐसी थी, जो चिकित्साशास्त्र से कोई सम्बध न रखते हुए भी सब कुछ समझ जाती थी। वोलोद्या के लिये जो कुछ महत्त्वपूर्ण होता, जो उसके जीवन पर छा जाता, जिसमे उसकी आखो की नीद उड जाती, उसे दुख या खुशी होती, वार्या उसे अपने अनोखे ढग से सुनती और समझती। वह गानिचेव या पोलूनिन को नही जानती थी, किन्तु उन्हे महान व्यक्ति समझती थी। वोलोद्या के मुह से न्यूस्या सम्बधी घटना सुनकर उसने उदासीनता से उसका अभिवादन किया। चिकित्सा के बारे मे आम तौर पर और विशेषत सर्जरी के सम्बध म वह प्राविधिक विद्यालय मे अपनी सहेलियो को वह बताती, जो उसे मालूम होता। वह केवल वोलोद्या के ही विचारा

को अभिव्यक्त न करती। नही, नही, य उसके अपने विचार होते जो वालोद्या की प्रेरणापूर्ण कुछ अटपटी और सुखद बात सुनकर उसके मन म आते।

एक दिन यह घटना घटी। रविवार का दिन था और वे पुरानी चीजो के बाजार म यह देखने गये कि वहा उन्हे कौन सी किताबें मिल सकती है। कभी-कभी वहा अच्छी किताबें मिल जाती थी। वालो पुरानी किताबो के ढेर को देख रहा था कि इसी बीच वार्या आगवा स्टाल दखने लगी और अचानक खुशी से मुह बाये जहा की तहा खडी रह गई। उसे तह हो जानेवाली कुर्सी पर एक महिला तेज धूप मे बैठी दिखाई दी, जिसकी बगल म एक पुराना कालीन प्रदशनार्थ लटका हुआ था। जरूर यह कोई भतपूव काउटेस या कुछ ऐसी ही होगी," वार्या ने सोचा। यह महिला एक लम्बे और पतले होल्डर म लगी हुई सिगरेट के कश लगाती हुई बहुत ही अदभुत चीजें बेच रही थी। इन चीजो म एक कोर्सेट शुतुरमुग के कुछ पख, एक विचित्र सी वस्तु, जिसे महिला बोआ" कहती थी, दो काफी ग्राइडर, झूठ मोतियो की माला इत्र की कुछ शीशिया, शतरज का सेट और सबसे अधिक अदभुत चीज – एक खोपडी एक इन्सान की असली, साफ-सुथरी और पीली खोपडी शामिल थी।

"क्या कीमत है इसकी ?" वार्या ने पूछा।

'कुमारी जी को खोपडी मे दिलचस्पी है ?' "काउटस" ने पूछा और दस्ताना लगा हाथ पीली खोपडी की गुद्दी पर फेरा।

"वास्तव मे तो मुझ पूरे पजर मे दिलचस्पी है," वार्या न कहा। आपके पास पजर है क्या ?

'कुमारी ने मुझे क्या समझ लिया है!" काउटेस ' ने चिल्लाकर कहा। "पूरा पजर! कहा मिल सकता है पजर आपको ?'

'स्कूली साज-सामान की दूकान म कभी कभी आते हैं, पर वे लिखित आदेश होने पर और सो भी केवल सस्थाओ को ही बिकते हैं मिलनसार वार्या ने स्पष्ट किया। 'मैं तो सस्था नही, केवल एक व्यक्ति हू।

'आह आजकल व्यक्तियो पर भारी गुजर रही है, 'काउटस' न सहमति प्रकट की।

वार्या ने खोपडी खरीद ली। इसके निचले भाग मे धातु की एक छोटी सी प्लेट लगी थी, जिस पर खुदा हुआ था कि यह फला फला व्यक्ति की ओर से फला फला को उपहारस्वरूप दी गयी।

"शायद कुमारी जी की शुतुरमुग के पखो मे भी दिलचस्पी हो?" "काउटेस" ने पूछा।

"कुमारी जी को न तो शुतुरमुग के पखो, न नथ और न ही इसानी मुड मे दिलचस्पी है!" वोलोद्या ने अचानक यहा आकर रुखाई से कहा। "कुमारी उसका अश नही है, जिसे तोड फोड और खत्म कर दिया गया है। वह युवा कम्युनिस्ट लीग की सदस्या है। आओ चले वार्या!"

वार्या ने खोपडी को अखबार मे लपेट लिया था, और घर पहुचने से पहले वोलोद्या को इस बात का आभास भी नही हुआ कि वह उसे कसे आश्चर्यचकित करनेवाली है। वह अपनी सभी जेबो मे किताबें और गुटके ठूसे हुए था। वह बहुत ही पतली-सी एक पुस्तिका अपने हाथ मे लिये था, जिसे रास्ते भर उलट-पलटकर देखता रहा।

धूल मिट्टी, बाजार के शोर शराबे और ग्रामोफोन के चीखते चिल्लाते रिकार्डों से परेशान होकर वे घर लौटे। उन्होने नल का थोडा पानी पिया, किताबो की आलमारी पर खोपडी के लिये जगह बनाई, दम लिया और कार्ल मार्क्स की हास्यपूर्ण स्वीकारोक्तिया पढने बैठ गये।

"जरा ठहरो, मैं तुम्हारा मुह पोछ दू, वह बिल्कुल तर हुआ पड़ा है," वार्या ने कहा।

वोलोद्या की देखभाल करने म उसे बडा सुख मिलता था। जब उसका कोई बटन गायब होता या उसका रूमाल मैला होता, तो उसकी तो बाछें खिल जाती। "तुम मद लोग तो बिल्कुल नाकारा होते हो!" वह कहती। "कुछ भी तो खुद नही कर सकते।" पर वह अनिवाय रूप से यह अवश्य जोड देती, "पापा के सिवा। व ता सब कुछ कर सकते हैं। जहाजी तो ऐसे ही होते है!"

"तुम्हारी कमीज का कॉलर भी मैला है," वह बोली।

"मुझे परेशान न करो," वोलोद्या ने रुखाई से कहा। सामने रखी किताब पर नजरे गडाये हुए ही उसने पूछा—

"वार्या स्तेपानावा, सुख का अथ तुम क्या समझती हो?"

९

"गहरा और शाश्वत आपसी प्रेम!" वार्या ने लजाते हुए, किन्तु झटपट और दिलेरी से जवाब दिया।

"बैठ जाओ, सन्तोषजनक उत्तर नही है तुम्हारा।"

वार्या ने यह जानने की कोशिश की कि किताब म क्या लिखा है, मगर वोलोद्या ने उसे परे धकेल दिया।

"देखो मुझे तो इसम कोई खास हास्यपूण बात नही लगती," वोलोद्या ने कहा। "सम्भवत कुछ पाखण्डिया को यह पसन्द नही आयी होगी और इसीलिये उन्होने इसे हास्यपूण कह दिया। इसे सुनो और अगर तुम्हारा दिमाग काम करे, तो इस पर सोच विचार करो "

वोलोद्या पढने लगा और गुलाबी गालोवाली, सीधी-सादी वार्या, जो अपने सिर पर बडा-सा फीता बाधे थी, थोडा-सा मुह खोले हु सुनने लगी। वह अभी बच्ची ही तो थी।

"लोगो का कौन-सा गुण आपको सबसे अधिक पसन्द है?" वोलोद्या ने सवाल पूछा और उत्तर दिया—"सादगी! मर्दों की कौन-सी खूबी आपको अच्छी लगती है? ताकत। औरतो की? कमज़ोरी।'

'मैं कमज़ोर नही हू, वार्या ने कहा। "मेरा मतलब यह है कि बहुत कमज़ोर नही हू "

"कौन, तुम? वोलोद्या बोला। 'यह तो खूब रही, वार्या! तुम, जो एक मामूली और मासूम मेढक को देखकर चीख उठती हो!'

"उसके माथे पर यह तो लिखा नही रहता कि वह मासूम है। इसके अलावा उसकी आखें तो फिर भी बाहर को निकली निकली होती हैं।

"तो, तुम अपने को मज़बूत समझती हो! ज़रा सूरत तो देखो इस मज़बूत औरत की! मुझे तो सुनकर उबकाई आती है "

वोलोद्या अचानक 'ओह' कह उठा—

"ज़रा इस पर विचार करो! विचार करो! सवाल यह है—आपका मुख्य लक्षण क्या है? उत्तर है—उद्देश्य निष्ठा।'

"कमाल! वार्या ने कहा।

"कमाल नही गज़ब आगे सुनो—सुख का आपका क्या आशय है? उत्तर है—सघप करना। सुनती हो, वार्या सुख का मतलब है

संघर्ष करना। अगला प्रश्न है—तुम्हारी दृष्टि मे दुख क्या है? अधीनता "

"मैं तो बहुत सी बातो मे तुम्हारे अधीन हू, पर इससे मुझे कोई दुख नही होता," वार्या ने कहा।

"यह दूसरी बात है," वोलोद्या ने कडाई से कहा। "तुम दिमागी तौर पर मेरे अधीन हो, समझी?"

"उल्लू!"

"चुप रह री, पिद्दी!"

वगलवाले कमरे से वूआ अग्लाया ने चिल्लाकर कहा—

"वोलोद्या, वस करो, तुम उसे फिर रुला दोगे।"

मगर उन्हे वूआ की आवाज सुनाई नही दी। वे दोनो एक दूसरे से सटे हुए किताब पढने मे मस्त थे। उनके कधे आपस मे छू रहे थे।

"'अवगुण जिसे आप सबसे अधिक घृणा करते हैं?—जी हुजूरी। आपके मनपसन्द कवि?—शेक्सपीयर, ईसकिलस, गेटे। आपका मनपसन्द रग?—लाल। आपकी मनपसन्द सूक्ति?—जो कुछ मानवीय है, मैं उसे पराया नही मानता। आपका मनपसन्द मूलमन्त्र?—हर चीज पर सन्देह करो '"

वूआ अग्लाया दरवाजे के निकट दिखाई दी। वह फव्वारा स्नान करके निकली थी और उसके भीगे हुए काले बाल चमक रहे थे

"तुम दोनो मे कुछ अच्छी, कुछ बहुत ही अच्छी चीज है," उसने कहा। "पर फिर भी तुम दोनो हो वुद्धू ही।"

वह वार्या के पास बैठ गई।

"तुम दोनो तो मार्क्स और एगेल्स को आसानी से समझ लेते हो, क्योकि तुम खासे पढे लिखे लोग हो। पर हे भगवान, कितनी कठिनाई होती थी मुझे उन्हे समझने मे!" उसने दुखी होते हुए कहा।

इस रविवार के बाद वोलोद्या और वार्या अक्सर इकट्ठे बैठकर सोच विचार करते। वार्या उसकी तुलना मे बहुत कम पढती, पर जब वोलोद्या कुछ कहता, तो शब्द उसके मुह से निकलने के पहले ही वह सब कुछ समझ जाती। "पवित्र परिवार " पढने के बाद वोलोद्या ने वार्या के सामने इस विषय पर भाषण दिया। इसके बाद वह "दर्शन

की दरिद्रता" पढ़ने में जुट गया, जिसे समझने में वार्या को कठिनाई हुई। इसके बाद उसने 'लुई बोनापार्ट की अठारहवीं ब्रूमेर" को पढ़ने में कई रातें लगाई।

"तुम्हें मालूम है कि जब उन्होंने यह पुस्तक लिखी थी, तो उनके पास बाहर पहनकर जाने को कुछ भी नहीं था। उनके सारे कपड़े गिरवी रखे हुए थे" बूआ अग्लाया ने कहा।

वोलोद्या ने भावशून्य दृष्टि से उसकी ओर देखा, मुंह में कुछ रोटी भर ली और आगे पढ़ना जारी रखा। सुबह के समय उसने शिलर के संग्रह के पृष्ठ उलटे-पलटे और यह देखकर उसे सुखद आश्चर्य हुआ कि उस भारी-भरकम ग्रन्थ में उसे अधिकाधिक हीरे-मोती मिलते जा रहे हैं।

> समय बेरोक-टोक उड़ता रहा।
> वह शाश्वतता के लिये यत्नशील है।
> तुम भी शाश्वत रहोगे तो उसे बांध लोगे

हां, समय बेडा गर्क हो इसका! वह सचमुच ही उड़ता जाता था और वोलोद्या के लिये अभी बहुत कुछ करना बाकी था। हर चीज मनोरंजक, महत्त्वपूर्ण और आवश्यक थी। गैरदिलचस्प चीजें भी दिलचस्प थीं क्योंकि वे भी ध्यान देने की मांग करती थीं। पर कभी-कभी उंचा नदी में तैरने को उसका मन ललक उठता। उसका जी होता कि स्त्रपानोव के पुराने घर के सामने जाकर किसी उठाईगीरे की भांति जोर से सीटी बजाकर वार्या को बुलाये, गयी रात तक नदी-तट पर उसके साथ घूमता रहे, उसे जम्हाइयां लेते देखे और कला के बारे में उसकी बकवास सुने। वह थियेटर के बारे में अब कुछ गपशप और इधर-उधर की बातें भी जानती थी। मसलन, उसने बताया था कि नगर का प्रमुख अभिनेता गालिलियेव प्रेस माक केवल छोटी छोटी भूमिकाएं ही खेल सकता है। "अभिनेताओं को हमेशा बड़े तनाव का सामना करना पड़ता है" वह दावा करती। वोलोद्या खिलखिलाकर हंस देता और वह उसे घूसा मार देती।

"ऐ, देखो, तुम्हारा हाथ बहुत भारी है!"

कभी ऐसा भी समय था, जब वह घूसे का जवाब घूसे से देता था, पर अब किसी कारणवश यह असम्भव हो गया था। अब उसने कुश्ती करना भी बन्द कर दिया था। वार्या अब बहुत जल्दी नाराज़ होने लगती थी और वह अपने जल्दी से उमडनेवाले प्यारे प्यारे आंसुओं को बहाती हुई रोने लगती। वोलोद्या को वार्या के लिए बहुत अफसोस होता और अपने पर बडी शर्म आती। पर वह उससे माफी कभी न मांगता और केवल इतना ही बुदबुदा देता–

"अब हटाओ भी! आखिर बात ही क्या है? तुम तो कविता पाठ करने के बजाय रो रोकर इसका सत्यानास ही कर देती हो। तुम्हारा कविता-पाठ सुनकर तो मतली होने लगती है"

"उल्लू, कहीं के, छन्द और लय के बारे में ग्रास भी तो नहीं जानते और चले हो पारखी बनने। हमारी अध्यापिका एस्फीर ग्रिगार्येव्ना का कहना है कि "

"ठीक है, ठीक है, पर मेहरबानी कर रोना बन्द करो"

वोलोद्या बहुत ही परेशान करता था वार्या को। वार्या उससे उम्र में छोटी थी, अपनी पूरी कोशिश भी करती थी पर कभी कभी कुछ चीज़ें उसके बस की नहीं होती थीं।

"तुम्हारी उम्र में हर्ज़ेन और ओगार्योव ने वोलोद्या कहना शुरू करता।

"मगर मैं न तो हर्ज़ेन हूं और न ओगार्योव" वार्या चीख उठती। "मैं वार्या स्तेपानोवा हूं और अपने को कोई विशेष व्यक्ति नहीं मानती हूं।"

"पिछले शनिवार को मैंने तुम्हें 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन' किताब पढ़ने को दी थी। तुमने अभी तक

"ओह, वोलोद्या "

"मैं दोहराता हूं, पिछले शनिवार "

"मगर पिछले शनिवार को हमारी ड्रेस रिहर्सल था," वार्या हताश होती हुई चिल्लायी।

"और आज कौन-सा दिन है?"

"शनिवार।"

"तो तुम्हें पूरे हफ्ते में किताब खोलने तक की फुरसत नहीं मिली?"

वार्या के लिये खामोश रहने के सिवा कोई चारा न रहा।

वहा बैठ जाओ जो कुछ मैं कहता हू, वह पढो और अब अपना काम करने दो उसने हुक्म दिया। "खबरदार, जो अब थियेटरो फिल्मो और क्लबो का नाम भी लिया तो! हा, और तुम यह इत्र क्या लगाये हुए हो? जानती हो या नही कि इत्र अधिकतर वही लोग इस्तेमाल करते है जो गन्दे होते हैं?"

मैं तुम्हे काट खाऊगी वार्या ने एक बार कहा और बहुत जोर से वोलोद्या के कान पर दात काटा। इसके बाद उसने यह कहकर उसे तसल्ली दी–

'नतीजा इसस भी बुरा हो सकता था! तुम्हे तो मालूम ही है कि मेरे दात कितने पने है। मैं तुम्हारे गन्दे कान का बिल्कुल सफाया ही कर डालती!

'बूआ अग्लाया, वोलोद्या ने पुकारकर कहा। "अपनी इस प्यारी वार्या को यहा से ले जाइये वह दात काटती है!'

फिर भी इकट्ठ होने म बडा मजा था। उन्हे अपनी लम्बी खामोशी बहुत अच्छी लगती जब वे दोना अपने ही खयालो म खोये रहते और एक-दूसरे की ओर कोई ध्यान न देते। अचानक इस चेतना से उनम खुशी की लहर-सी दौड जाती कि वे दोनो इकट्ठे हैं, एक दूसरे के निकट हैं–वोलोद्या अपनी मेज पर और वार्या खिडकी के करीब। हमेशा ही उनके पास बातचीत करने को झगडने और फिर फौरन दोस्ती कर लेने को कोई न कोई मसाला होता।

कभी-कभार वार्या अपनी किताबें साथ ले आती–यानी ललित साहित्य। अगर वोलोद्या दयालु या कुछ रग म होता तो वह उसे कुछ पृष्ठ पढकर सुनाती जिन्हे वह बहुत ही सुन्दर मानती थी। ऐसे अवसरो पर उसका चेहरा सुर्ख हो जाता अपने लाल हुए काना के पीछे, जिनम वह बालियाँ पहन रहती बाला को ठीक करती और माना मिन्नत-समाजत के लहजे म प्रार्थना करती ... कुछ अश पढकर सुनाती।

'यह बहुत मु... वोलोद्या जा... सन हुए कहता। "किस ... की? ... था और हुवा तोलिय की ... रही थी?

"मगर यहा तो ऐसे नही लिखा है वार्या विरोध करती। 'यहा तो बिल्कुल ऐसे नही है "

"आगे पढो!"

वार्या आगे पढने लगती जल्दी-जल्दी और मानो अपना सफाई देती हुई।

"तुम अभिनय नही करो ' बोलोद्या टोकता। नखरे करके मुह बनाने मे क्या तुक है? तुम हुस्सारो का रजन ना उलन म रहा!"

"मगर मैं "

"आगे पढो!"

यातनाए सहन करती हुई वार्या पढती जाती। बोलोद्या पाइप से ठक-ठक करता, कागजो की सरसराहट और टाट म अनचाहे ही बहुत ध्यान से सुनने लगता। पहले मे ही यह अनुमान लगाना कभी सम्भव नही होता था कि किस चीज़ स उसके हृदय म तार झनझना उठेंगे। किंतु धीरे धीरे यह बात वार्या की समझ म आ गई कि बोलोद्या का किस तरह की रचनाओ की आवश्यकता है। 'आवश्यकता ' यही बिल्कुल सही शब्द थे। इससे अधिक सही शब्दा की वह कल्पना नही कर सकती थी। बोलोद्या को कैसी किताब पसद है यह बात वार्या की समझ मे पहली बार तब आई जब उसने तब ताल्स्ताय की रचना "स्मिम्वर म सेवास्तोपाल ' पढकर सुनाया।

"'आप सेवास्तोपोल के रक्षका को समझने लगते है बोलोद्या का कनखियो से देखते हुए वार्या घबरायी घबरायी सी पढ रही थी। बोलोद्या ने अब कागजो को सरसराना बन्द कर दिया था और निश्चल तथा विचारो म डूबा हुआ बैठा था। ''किसी कारणवश इस आदमी की उपस्थिति में आपकी आत्मा आपको धिक्कारने लगती है। आप अनुभव करते हैं कि अपनी सहानुभूति और प्रशसा को अभिव्यक्त करने के लिये बहुत कुछ कहना चाहते है किंतु आपको इसके लिए शब्द नहा मिलते अथवा उनसे सन्तोष नही होता जो आपके दिमाग में आते हैं। आप इस व्यक्ति की मूक चेतनाहीन महानता और आत्मा की दृढता तथा अपने ही गुणा के प्रति झेंप पर नतमस्तक हो जाते हैं।'"

"यह है असली चीज़!" बोलोद्या न अचानक कहा।

वार्या के लिये खामोश रहने के सिवा कोई चारा न रहा।

"वहा वठ जाओ जो कुछ मैं कहता हू वह पढो और मुझे अपना काम करन दो उसने हुक्म दिया। "खबरदार, जो अब थियेटरो फिल्मो और क्लवा का नाम भी लिया तो! हा, और तुम यह इत्र क्यो लगाये हुए हो? जानती हो या नही कि इत्र अधिकतर वही लोग इस्तेमाल करते है जो गदे होते हैं?"

"मैं तुम्हे काट खाऊगी' वार्या ने एक बार कहा और बहुत जोर से वोलोद्या के कान पर दात काटा। इसके वाद उसने यह कहकर उसे तसल्ली दी—

नतीजा इससे भी बुरा हो सकता था! तुम्ह तो मालूम ही है कि मेरे दात कितने पैने हैं। मैं तुम्हारे गन्दे कान का विल्कुल सफाया ही कर डालती!"

"बूआ अग्लाया, वोलोद्या ने पुकारकर कहा। "अपनी इस प्या वार्या को यहा से ले जाइये वह दात काटती है!"

फिर भी इकट्ठे होने मे बडा मजा था। उन्हे अपनी लम्बी खामोशी बहुत अच्छी लगती जब वे दोना अपने ही खयाला म खोये रहते और एक दूसरे की ओर कोई ध्यान न देते। अचानक इस चेतना से उनम खुशी की लहर सी दौड जाती कि वे दोनो इकट्ठे हैं, एक दूसरे के निकट है—वोलोद्या अपनी मेज पर और वार्या खिडकी के करीब। हमेशा ही उनके पास वातचीत करने को झगडने और फिर फौरन दोस्ती कर लेने को कोई न कोई मसाला होता।

कभी-कभार वार्या "अपनी' किताब साथ ले आती—यानी ललित साहित्य। अगर वोलोद्या दयालु या कुछ रग म होता, तो वह उसे कुछ पृष्ठ पढकर सुनाती जिन्हे वह बहुत ही सुन्दर मानती थी। ऐसे अवसरो पर उसका चेहरा सुर्ख हो जाता अपने लाल हुए कानो के पीछे जिनम वह वालिया पहने रहती, बालो को ठीक करती और मानो मिन्नत-समाजत के लहजे मे प्राकृतिक सौन्दय-सम्बन्धी कुछ अश पढकर सुनाती।

'यह बहुत लम्बा है! वोलोद्या जान बूझकर अगडाई लेते हुए कहता। किसे जरूरत है इस सब की? आकाश बनफशई था और हवा तौलिये की भाति थपेडे मार रही थी?"

"मगर यहा तो ऐसे नही लिखा है," वार्या विरोध करती। "यहा तो बिल्कुल ऐसे नही है "

"आगे पढो!"

वार्या आगे पढने लगती, जल्दी जल्दी और मानो अपनी सफाई देती हुई।

"तुम अभिनय नही करो," वोलोद्या टोकता। "तरह-तरह का मुह बनाने मे क्या तुक है? तुम हुस्सारो का कर्नल तो बनने से रही!"

"मगर मैं "

"आगे पढो!"

यातनाए सहन करती हुई वार्या पढती जाती। वोलोद्या पेंसिल से ठक-ठक करता, कागजो को सरसराता और बाद मे अनचाहे ही बहुत ध्यान से सुनने लगता। पहले से ही यह अनुमान लगाना कभी सम्भव नही होता था कि किस चीज से उसके हृदय के तार झनझना उठेंगे। किन्तु धीरे धीरे यह बात वार्या की समझ मे आ गई कि वोलोद्या को किस तरह की रचनाओ की आवश्यकता है। "आवश्यकता है" यही बिल्कुल सही शब्द थे। इससे अधिक सही शब्दो की वह कल्पना नही कर सकती थी। वोलोद्या को कैसी किताबें पसन्द है, यह बात वार्या की समझ मे पहली बार तब आई, जब उसने लेव तोलस्तोय की रचना "दिसम्बर म सेवास्तोपोल" पढकर सुनायी।

"'आप सेवास्तोपोल के रक्षको को समझने लगते हैं,'" वोलोद्या को कनखियो से देखते हुए वार्या घबरायी-घबरायी-सी पढ रही थी। वोलोद्या ने अब कागजो को सरसराना बन्द कर दिया था और निश्चल तथा विचारो मे डूबा हुआ बैठा था। "'किसी कारणवश इस आदमी की उपस्थिति मे आपकी आत्मा आपको धिक्कारने लगती है। आप अनुभव करते हैं कि अपनी सहानुभूति और प्रशसा को अभिव्यक्त करने के लिये बहुत कुछ कहना चाहते हैं, किन्तु आपको इसके लिये शब्द नही मिलते अथवा उनमे सन्तोष नही होता, जो आपके दिमाग म आते हैं। आप इस व्यक्ति की मूक, चेतनाहीन महानता और आत्मा की दृढता तथा अपने ही गुणो के प्रति झेंप पर नत-मस्तक हो जाते हैं।'"

"यह है असली चीज!" वोलोद्या ने अचानक कहा।

"क्या है असली चीज़ ?" वार्या समझ न पाई।
अपने ही गुणों के प्रति झेंप। आगे पढ़ो!"
वार्या पढ़ती गई। वोलोद्या अपनी तग सी चारपाई पर सिर के नीचे हाथो को टिकाये हुए लेटा था। उसके चेहरे पर मानो अस्पष्ट-सी परछाइया यलक रही थी कभी तो उसकी त्योरी चढ जाती और कभी वह आन की आन म खुशी से मुस्करा देता। वह सुन रहा था और अपने ही विचारो मे खोया हुआ था। वोलोद्या हमेशा ही कुछ न कुछ सोचता रहता था कुछ ऐसी गुत्थिया सुलझाता रहता था, जिन्हे केवल वही जानता था और जो हमशा जटिल और यातनाप्रद होती थी।
"'किसी पदक किसी उपाधि के लिए या डर के कारण लोग ऐसी भयानक परिस्थितिया को स्वीकार नही कर सकते," वार्या पढ़ जा रही थी। "कोई दूसरा ऊचा और प्रेरक कारण होना चाहिये यह कारण है वह भावना जो बहुत कम प्रकट होती है रूसियो म दबी-सहमी रहती है पर हर किसी की आत्मा की गहराई मे छिपी होती है। यह है मातृभूमि के प्रति प्यार की भावना।'"
'खूब बहुत खूब मगर हम?" वोलोद्या ने अचानक कोहनिया के बल उचकते हुए पूछा।
"हम?" वार्या भौचक्की-सी रह गई।
"हा हम युवा कम्युनिस्ट लीग के दो सदस्य—कोई स्तेपानोवा और कोई उस्तिमेको। हम कैसा जीवन बिताते हैं? किसलिए जीते हैं? हमने पृथ्वी पर जन्म ही किसलिए लिया है?"
वार्या डरी-सहमी सी आखे झपकाने लगी। वह हमेशा इसी तरह अप्रत्याशित ही झपट पडता था। आखिर उसे क्या चाहिये? आखिर क्या चाहता है यह सन्तापक? तभी वोलोद्या शात हो गया और कड़ाई से बोला—
'खैर, आखें मत झपकाओ! सभी किताबें किसी लक्ष्य को सामने रखकर लिखी जानी चाहिये। समझी? यह सब कि सूर्यास्त के समय आकाश नीलगू था और हवा मानो जकडे हुए तौलिये के समान "
'ओह, अपन मन से बाते नही बनाओ, वोलोद्या! "
'या फिर वह—'पिछले वर्ष की पिघलती हुई बर्फ म से नमी की हल्की गध आ रही थी '"

"तुम बक रहे हो।"

"मैं बक नही रहा हू। किताबें ऐसी होनी चाहिए कि आदमी को शानदार लोगो से ईर्ष्या होने लगे, खुद भी वैसा ही बनने की इच्छा पैदा हो, कि उन्हे पढकर हम आत्म आलोचना करने लगें। समझी, लाल बालोवाली?"

वार्या के प्रति विशेष स्नेह उमडने पर ही वह उसे "लाल बालोवाली" कहता था, यद्यपि उसके बाल लाल नही, हल्के बादामी थे।

"और कविता?" वार्या ने पूछा।

"कविता—मयाकोव्स्की के अतिरिक्त सब बकवास है।"

"वाह? पुश्किन? ब्लोक? लेर्मोन्तोव के बारे मे क्या कहना है तुम्हे?"

वोलोद्या ने त्योरी चढा ली। तब वार्या ने बहुत धीरे-से ब्लोक की एक पक्ति का पाठ किया—

"'है शाश्वत सघर्ष। शान्ति के हम केवल सपने देखें '"

"यह क्या कहा है तुमने?" वोलाद्या न हैरान होते हुए पूछा।

वार्या ने सारी कविता सुनाई। वोलाद्या आखें बन्द किये हुए सुनता रहा और फिर उसने यह पक्ति दोहराई—

"'है शाश्वत सघर्ष। शान्ति के हम केवल सपने देखें '"

"कमाल की पक्ति है न?" वार्या ने पूछा।

"मैं इसके बारे मे नही," वोलोद्या ने अपने विचारो म खाये खोये ही कहा, "किसी दूसरी चीज़ के बारे मे सोच रहा हू। काश कि हम अपना जीवन ऐसे ही बिता सकते कि वह 'है शाश्वत सघर्ष। शान्ति के हम केवल सपने देखें' बन जाता "

"तुम्हारा दिमाग तो ठीक है?" वार्या ने सावधानी से पूछा।

"मेरा दिमाग बिल्कुल ठीक है। अब तुम अकेली ही कविता पाठ करो और मैं अपना काम करूगा। रसायनशास्त्र पढूगा। कभी नाम सुना है इस विज्ञान का?"

वह अपनी मेज़ पर जा बैठा, उसने मरम्मत किये हुए हरे शेडवाला पुराना लैम्प जलाया, किताब पर सिर झुकाया और उसे वार्या का तो होश ही न रहा। पीछे बैठी वार्या उसकी पतली गर्दन और कमज़ोर

कथा को देखती हुई बड़े उत्साह और उत्कर्ष से सोच रही थी–"तो यह बैठा है भावी महान व्यक्ति। मैं उसकी सबसे पक्की और घनिष्ठ मित्र हू। शायद मित्र स कही बढ चढकर होऊ, यद्यपि हमने अभी तक कभी एक-दूसरे को चूमा भी नही।"

यह सोचे-समझे बिना ही कि वह क्या कर रही है, पीछे स को लाद्या के निकट आ गई, उसने अपना हाथ वोलोद्या की ओर बढाया और मानो आदेश देते हुए कहा–

"चूमो इसे!"

"यह क्या किस्सा है?" वोलोद्या हैरान रह गया।

"चूमो मेरा हाथ!" वार्या न दोहराया। "अभी, इसी घडी!"

"यह भी खूब रही!"

"खूब की कोई बात नही!" वार्या ने कहा। "हम नारिया ने तुम पुरुषा को जन्म दिया है और इस कारण तुम्ह सदा हमारा आभारी रहना चाहिये "

वोलोद्या ने वार्या को नजर उठाकर देखा, दात निपोरे और अटपटे ढग से वार्या की गम और चौडी हथेली का चूम लिया।

"अब ठीक है!" वार्या ने सन्तोष के साथ कहा।

छठा अध्याय

तलाक

उस वर्ष की पतझर के अन्त मे रोदिग्रोन स्तेपानोव, जैसा कि उन्होने कहा, "उधर से गुजरते हुए" कुछ समय के लिए घर आये। उनकी पत्नी के पास मेहमान आये हुए थे। उनमे अधेड उम्र की सिगरेट पीनेवाली दो नारिया थी। दोनो ही मोटी थी और अपने बुरे मूड, अपने दिल की गुप्त धडकन की ही चर्चा करना पसन्द करती और यह बताती कि इनका कारण "स्नायु-दुर्बलता" ही है। वहा डीन की बेटी इराईदा भी थी, लम्बी, छरहरे बदन की और हरी-हरी आखोवाली, अनेक जजीरे और लटकने पहने तथा तमगे लगाये हुए मानो कुत्ता-प्रदर्शनी के सभी इनाम उसी ने जीत लिये हो। नगर की सबसे अच्छी दर्जिन श्रीमती लीस भी वहा थी, जिसकी ओर सभी बहुत अधिक ध्यान दे रहे थे। इनके अलावा वहा दो मर्द थे—दनिइल पोल्यास्की या "दोदिक", जो बडे ठाठ से पाइप के कश लगा रहा था, तथा उसका दोस्त माकावेयेन्को। माकावेयेन्का बडी तोद और भूरे बालोवाला व्यक्ति था, जिसकी हसती हुई धृष्ट आखें मानो बाहर निकली पड रही थी। उन्हे प्रोफेसर झोवत्याक के आने की भी आशा थी, पर उसने टेलीफोन कर दिया था कि उसके लिये आना मुमकिन नही और उसे इस बात का "बेहद अफसोस" है। चोर बाजार मे खरीदे गये वेर्तीस्की और लेश्चेन्को के रेकार्ड सुनने के बाद उन्होने खाना खाया और फिर लिकेर मिली कॉफी की चुस्किया लेने लगे। उन्होने स्पेन की घटनाओ की चर्चा की। दोदिक ने स्पेन के प्रधान मन्त्री हिराल का ऐसे जिक्र किया, मानो वह उसका अच्छा दोस्त हो। उसने होसे

दिग्रास के सम्बन्ध मे भी अपनी राय प्रकट की। रोदिग्रोन मेफोदियेविच बडे सब्र से दोनो महिलाम्रो, माकावेयेको और डीन की बेटी इराईना की बात सुनते रहे। इन सभी ने स्पेन की स्थिति के बारे मे अपने मत प्रकट किये और मिखाईल कोलत्सोव के सवादो को दिलचस्प और प्रेरणाप्रद बताया। किंतु दोदिक का मत इनसे भिन्न था।

"बात यह है कि स्पेन के बारे मे अपनी आखो से देखनेवाला कोई भी व्यक्ति कोलत्सोव की तुलना मे अधिक रगारग और सुन्दर ढग से लिख सकता है। मुख्य बात तो है—जनता के बीच होना "

"और साडो की लडाई, मेरे ख्याल मे वह भी स्पेन मे ही होता है? अपने सदा की भाति थके से स्वर मे वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने पूछा।

"बिल्कुल वहा ही होती है," माकावेयेन्को ने पुष्टि की। "यह उसी भाति उनका राष्ट्रीय खेल है, जसे कभी हमारे यहा हिडोले होते थे या मुक्केबाजी। मैड्रीड मे इस खेल को बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता है "

रादिग्रोन मेफोदियेविच ने कॉफी खत्म किये बिना ही अपना प्याला मेज पर रख दिया और बाहर चले गये। वार्या घर पर नही थी। येव्गेनी रसोईघर म बैठा शोरबा खा रहा था।

"तो क्या हालचाल है?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने पूछा।

"अखबार तयार करते रह हैं,' येव्गेनी न उदास भाव से कहा। "बुरी तरह थक गये हैं। टाइप हमारे पास हैं नही, सामग्री गरदिलचस्प और सनही है। सभी के लिए खुद ही लिखना पडता है, रात को जो हो जाता है। बात यह है, पापा, कि मैं कालेज के बहुत बडी प्रतिसध्यावाले समाचारपत्र का सम्पादक हू।

"तुम सब के लिये मत लिखा करो।" रादिग्रोन मेफोदियेविच न सलाह दी। "दूसरो के लिये लिखना तो धोखेबाजी है "

"आप आदर्शवादी हैं, प्यारे पापा!' येव्गेनी ने गहरी साम ली।

रादिग्रोन मेफोदियेविच कमरा म टहलते रहे, उन्होंने सिगरेट के कश लगाये और इसके बाद सयोगवश ही उन्हें ड्योढ़ी म अन्तोनीना और दोदिक की बातचीत सुनाई दी और उनके माथे पर बल पड गये।

"इस सवाल को एकबारगी और हमेशा के लिए हल कर देना चाहिये। अब इस आदमी के इस घर म आने का मैं और अधिक सहन करने का इरादा नही रखती। वह मेरी आत्मा के लिए और वसे भी पूरी तरह अजनबी है। हे भगवान, तुम यह समझते क्या नही कि इस वातावरण म मेरा दम घुटता है "

"ठीक है, ठीक है, मैं राजी हू," दोदिक ने झटपट जवाब दिया। "पर आज ही तो ऐसा नही किया जा सकता

"मैं आज ही कह दूगी।" अलेवतीना न जोर देकर कहा।

प्रवेश द्वार फटाक से बद हुआ। वह नारी, जिसे रोदिओन स्ते पानोव अपनी पत्नी मानते थे, भोजन-कक्ष मे आई। कसकर मुट्ठिया भीचे, निश्चल और जर्द चेहरे के साथ रोदिओन मेफोदियेविच ने उसे आदेश देते हुए कहा—

"आज ही कह दो।"

"तो तुम छिप छिपकर बाते सुनते रहे हो।" अलेवतीना ने चीखते हुए कहा। "बहुत खूब। बस, अब इसी की कसर बाकी रह गई थी।"

"तुम खुद ही सब कुछ कह दो," उन्होने दोहराया। "मैं एक अर्से से यह सब कुछ जानता हू। कोई मूख ही यह समझे बिना रह सकता है। पर खैर तुम मुझे अपना आखिरी फैसला बता दो। बोलो।"

"क्या बोलू?"

"तुम तलाक चाहती हो?"

"मैं इन्सान के लायक जिन्दगी चाहती हू।" वह चिल्ला उठी। "तुम्हारा फर्ज है मुझे ऐसी जिन्दगी देने का, किन्तु मेरे पास क्या है? किसलिये मैंने इतने वर्षो तक यातनाए सही? दूसरो के पास सभी कुछ है—निजी मोटरे, बगले और वे साल म तीन बार काले सागर पर आराम करने जाते है "

वही पुराना किस्सा शुरू हो गया था—वही आसू बहने लगे थे। अभी वह दिल को सम्भालने की दवाई मागेगी, फिर येव्गेनी उसकी नब्ज गिनेगा। नही, अब वे और अधिक बर्दाश्त नही कर सकते।

"आओ लडाई-झगडे के बिना अलग हो जाय," रोदिओन मेफोदियेविच ने शान्त, पर कुछ-कुछ खरखरी आवाज मे कहा। "तुम दोदिक के साथ चली जाओ "

"यह भी खूब रही," वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना बोली। "मैं एक कमरे म रहूगी और तुम यहा मौज मनाओगे। कामरेड स्तेपानोव, यह तिकडम नही चलेगी "

"तो मामला कमर का है?"

"कमर का ही नही, बाकी सभी चीजा का भी। मैं भिखारिन बनने का इरादा नही रखती। जो कुछ हमने मिल-जुलकर जुटाया है, सब आधा आधा

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने सिर हिला दिया, वे कुछ भी कह न पाये। दस मिनट बाद उन्हाने अलेक्तीना को अपनी सभी सहेलिया को बारी-बारी से टेलाफोन पर काम-काजी ढग स जल्दी-जल्दी कुछ कहते सुना। वह उनस अपनी तकलीफो की चर्चा करत हुए कुछ सिसकता सुबकती और एक से तो उसन भावनापूण ढग स यह भी कहा—

"आह, मरी प्यारी, दहकान को इसान नही बनाया जा सकता!"

इस किस्से को फौरन खत्म करना जरूरी था। जैसे ही वार्या घर लाटी, वैसे ही रोदिग्रोन मेफोदियेविच न परिवार के सभी लोगो को खान की मेज पर जमा किया, ठडे पानी का एक बडा गिलास पिया और रुक रुककर कहा—

हमने अलग होन का निणय कर लिया है। तुम दोना काफी बडे हो, सब कुछ समझ सकते हो। पर एक बात का निणय तुम्हे खुद ही करना होगा—तुमसे से कौन मेरे साथ रहगा और कौन मा के साथ जायगा '

वार्या ने कसकर अपने पिता की आस्तीन पकड ली और मुह से कुछ नही कहा। उसके गालो पर लाली दौड गई थी। यव्गेनी, जो धारीदार नाइट सूट पहने था और बाला पर नट लगाये था, मेज और अलमारी के बीच की जगह पर इधर उधर आ-जा रहा था।

"येव्गेनी!" उसकी मा मिन्नत करत हुए चिल्लाई। "यव्गेनी, तुम कसे झिझक सकते हो?'

येव्गेनी ने राखदानी मे सिगरेट बुझाई, वह जरा हसा और उसने आखें सिकोडते हुए कहा—

"बहुत अजीब इसान हो मा, तुम भी। तुम यह सोच ही कैसे सकती हो कि म रोदिग्रोन मेफोदियेविच का स्थान उस सुदर,

बने-ठने और दिलकश, मगर, क्षमा करना, उस कमीने को दे सकता हू?"

स्तेपानोव एकटक येव्गेनी की ओर देख रहे थे। क्या आशय है उसका? क्या बात है इस समय इसके मन मे?

"तफसील मे न जाकर केवल इतना कहता हू कि मै उसी आदमी का बेटा रहना चाहता हू, जिनका हर चीज़ के लिए आभारी हू," येव्गेनी ने साफ-साफ कह दिया। "प्यारी मा, इससे तुम्हारे लिए भी रास्ता सीधा हो जायेगा। तुम आज़ाद हो जाओगी, अपने को जवान महसूस करोगी और नये सिर से जिन्दगी शुरू कर पाओगी। ठीक है न?"

उसने अपनी मा को गले लगाया, चूमा और बाहर चला गया।

सुबह को दोदिक अपनी कार मे आया। वह बहुत झल्लाया हुआ सा दिखाई दिया, रुखाई से रोदिओन मेफोदियेविच से सलाम की और वालन्तीना आन्द्रेयेव्ना के कमरे मे चला गया। फिर उसने रोदिओन मेफोदियेविच के कमरे पर दस्तक दी।

"हमे मर्दो की तरह बातचीत करनी है," उसने बैठते और अगूठे से पाइप मे तम्बाकू दबाते हुए कहा। "हम घर, फर्नीचर और दूसरी चीज़ो का प्रबन्ध करना है। वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना इसके बारे मे चिन्तित है और आप जा रहे हैं "

"हा, मैं तो जा रहा हू," स्तेपानोव ने उसकी बात काटते हुए कहा। "येव्गेनी के साथ सभी कुछ तय कर लीजिये। वह समझदार लड़का है और बस।"

उन्होने खिड़की की ओर मुह कर लिया।

स्तेपानोव को अलेवतीना और दोदिक के जाने की आवाज सुनाई दी। फ्लैट का दरवाज़ा फटाक से बन्द हुआ और कार चलती बनी। वाया दबे पाव भीतर आई।

"पापा, चाय पियेंगे?" उसन पूछा।

"नही," रोदिओन मेफोदियेविच ने उदासी से जवाब दिया।

"काफी बना लाऊ?"

"नही, कॉफी भी नही चाहिये।"

"तो शायद कुछ वोदका पियेंगे?"

"तुम मुझे तसल्ली देना चाहती हो क्या?" उन्होंने मुस्कराकर कहा। 'इसकी जरूरत नही है, बेटी। काफी कुछ सहन की हिम्मत है मुझमे।'

'शायद आप यह चाहेंगे कि मैं और येव्गेनी अशतादत म आपके पास आकर रहे?'

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कुछ देर तक सोचने के बाद जवाब दिया।

"देखो बिटिया, मैं जो कुछ कह रहा हू, तुम इसकी किसी से चर्चा नही करना – फिलहाल तुम्हारे वहा आने म कोई तुक नही है, क्योकि मैं अपने बारे मे भी यह नही जानता कि कल कहा हूगा।'

"क्या मतलब है आपका?"

'यही कि मुझे लम्बे सफर पर भेजा जा सकता है। वोलोद्या के पिता को गये हुए दो हफ्ते हो चुके हैं।"

वार्या अपने पिता के कधे से चिपटी रही।

"मैं समझती हू, सब समझती हू, पापा," वह फुसफुसायी। "पर वालोद्या को तो कुछ भी मालूम नही।"

"कुछ देर बाद हम उसके पास जायेंगे और तब उसे सब कुछ मालूम हो जायेगा।"

वार्या और उसके पिता जब घर म नही थे, उसी समय येव्गेनी दोदिक के साथ घर के भाडे-बरतनो, किताबो, फर्नीचर और रिहायशी जगह को लेकर कभी खीझते और कभी हसते हुए सौदेबाज़ी कर रहा था।

'सुनो, तुम क्या मुझे उल्लू बनाना चाहते हो?" दोदिक ने झल्लाकर कहा। मैं बच्चा तो हू नही।'

"सो तो मैं भी नही हू,' येव्गेनी ने जवाब दिया। "मैं सारी सम्पत्ति के चार हिस्से कर रहा हू – तीन हिस्से हमारे हैं, एक आपका। किसी भी वकील स पूछ लीजिये। वह आपको यही हल बतायेगा। बस भी यह है बड़ी अजीब-सी बात आप प्यार करते हैं आपको प्यार मिलता है और फिर भी आप छोटी-छोटी चीज़ो के लिए सौदेबाज़ी कर रह हैं। मेरी राय म तो यह बडी भद्दी बात है। किसी अखबार के लिए दिलचस्प मज़मून हो सकता है यह तो "

"और यह बडा पियानो?" दोदिक ने क्षुब्ध होते हुए कहा।
"यह पियानो है, बडा पियानो नही। आप इसका क्या करेगे? मा तो पियाना बजाती नही।"
"बडे ही सगदिल हो तुम," दोदिक भडक उठा।
स्तेपानोव रात की गाडी से चले गये।

हम लाल सिपाही

इस दिन के बाद वार्या और वोलोद्या की दोस्ती और भी अधिक गहरी हो गई। अब उनका एक साझा राज था, ऐसा राज, जो वे हर किसी से छिपाते थे। वे अपने पिताओ—हवाबाज अफानासी उस्तिमेको और नौसेना के अफसर रोदिओन स्तेपानोव—पर गव और उनकी निरन्तर चिता करते। वे किसी का भी अपना राजदा न बनाते, बूआ अग्लाया को भी नही। वोलोद्या और रोदिओन मेफोदियेविच के बीच यह तय हो गया था अग्लाया को परेशान करन मे कोई तुक नही है। उसने तो वैसे भी जिदगी मे बहुत दुख दद जाने थे, अब भाई की जान की चिन्ता के बारे मे उसे रात दिन और अधिक परेशान क्या रखा जाय? उहाने उससे कह दिया कि उहे एक खास काम से भेजा गया है, पर कहा, यह मालूम नही।
"स्पेन?" उसन कडाई से पूछा था।
"हमे क्या मालूम," रोदिओन मेफोदियविच न मुख होते हुए जवाब दिया था, क्योकि झूठ बोलन की कला म व बहुत कच्चे थे।
अग्लाया न तो केवल सिर हिला दिया था। ऐसा माना जाता था कि वह कुछ भी नही जानती। इसलिये स्पन का नक्शा भी जान बूझकर वोलोद्या के कमरे मे नही, वार्या के कमरे मे लटका दिया गया। वोलोद्या को बताये बिना अग्लाया न भी अपने लिए एक नक्शा खरीद लिया। रात को वह कमर का ताला बद कर लेती, ताकि वोलोद्या भीतर न आ जाये और फिर इस नक्शे को गौर म देखती रहती। वह जानती थी कि उसके भाई अफानासी स्पन म है। उनका वहा जाना जरूरी था, ठीक वैसे ही जस कि उसका दिवगत पति भी यकीनी तौर पर वहा गया होना। वह बोल्शेविको को उग

...। स दृढ़ आवाजवान उन नौजवानो से भली भाति परिचित थी, जिन्होने सभी तरह के दुख द्वन्द झेले थे और कभी हिम्मत नही हारी थी। गृहयुद्ध के वर्षो मे वे लगभग अपढ थे और अब अकादमिया के स्नातक। सभी कुछ तो कर सकते थे ये इस्पाती लोग। तन को काटते हुए जाड़े-पाले मे उन्होने पेम नगर के लिये लड़ाई लड़ी और तन झुलसती गर्मी मे वे तुर्कमेनिस्तान मे वासमाची दलो के विरुद्ध जूझे। भूख से निढाल होते हुए भी उन्होने अपने जीवन मे पहली बार पुश्किन की रचना येवगेनी ओनेगिन पर आधारित ऑपेरा सुना और दुश्मन के अड्डे मे जोरदार हमले करने के बाद उन्होने ढंग से सांस भी नही ली थी कि स्कूलो के डेस्को पर जा बैठे और अंग्रेजी के दो कारका-कर्त्ता और संबंध-का ध्यान से पढने लगे।

रात की निस्तब्धता मे बुआ अंग्लाया घंटो तक नक्शे को देखती रहती और उसके कानो मे वह गीत गूजता रहता जिसे अफानासी और उसका पति ग्रीशा बड़े चाव से गाया करते थे—

> भूपतियो बैकवालो से लोहा हम डटकर लेंगे
> सभी शोषको सब कुलको को नष्ट एक दिन कर दे
> सभी गरीबो की रक्षा को लाल सिपाही है बढते
> खेतो-खलिहानो आज़ादी की खातिर हम तो लड़ते

बाहर नवम्बर महीने की तेज हवा सीटिया बजा रही थी। वोलं सिर के नीचे हाथ बाध चित लेटा हुआ अंधेरे को घूर रहा था अ ाडो से जूझनेवाले सेविल्ल नगर के उन पट्टो को बुरी तरह को हा था जिन्होने विद्रोही जनरल कैयपो दे ल्याना के सामने घुटने टे य थे। तभी उनीदी मे उसे मिनोरका द्वीप और जगी जहाज ल्मीराट मिराडा पर वालसीओ का अभियान ल दिखाई दिया। ो जहाज ने अपने इंजन बन्द कर दिये थे और रोदिग्रोन स्तपानोव ी दूरबीन से स्थिति का जायजा ले रहे थे। तभी वालोद्या न पिता के निर्देशन मे जल विमानो को स्पेन के उजले नीले आकाश ड़ान भरते देखा। सभी सबसे अच्छे हवाबाज व सभी जो सबसे और सच्चे थे ... इतालवी जर्मन फ्रासीसी, बुल्गारियाई, सभी आगे उसके पिता के पीछे उड़ान भर रहे थे

वोलाद्या के दिमाग मे लातीनी शब्द स्पेनी नगरा के नामा से मिलकर गड्ड मड्ड हो गये। सारागोस्सा अचानक पट की पशी 'मुस्कुल्युम रेक्टी अवदामिनिस' और बारगास 'क्वादरीसेप्स फेमोरिस' से गडबडा गया। उसने बहुत समय से शव परीक्षा नही की थी। उसे अवश्य ही शव परीक्षा कक्ष मे गानिचेव के पास जाना आरम्भ करना चाहिये। और इवीजा मे उतारी गई फौजा का क्या हुआ? अब वहा क्या हो रहा है? समाचारपत्रो न इसके बारे म क्या नही लिखा?

वार्या अब स्पेनी टापी पहनती। वह अधिक दुबली पतली और बडा उम्र की दिखाई दन लगी थी। वार्या के नाम पर "वहा" से पत्र आते थे। अगर सही तौर पर कहा जाय, तो "वहा" से पत्र नाम की काई चीज नही आती थी। कोई अजनबी साथी नियमित रूप से पिता की आर से उन्ह शुभकामनाए और यह सूचना दता था कि सब कुछ ठीक-ठाक है। वोलोद्या और वाया इसी को पयाप्त मानते। किसी और चीज की आशा करना बेवकूफी होता। वह ता फासिस्टा का केवल उकसावा देना हाता।

कभी महत्त्वपूण प्रतीत होनेवाली जीवन की सभी बाते अब बेमानी-सी लगन लगी। यह ख्याल आने पर वाया काप उठती कि जब उसके पिता इन्तज़ार करते होते थे, ता वह हमशा घर पर क्या नही हाती थी। उसके वही पिता, जो अब सारी दुनिया की आज़ादी के लिये लड रहे थे उस दूरस्थ, अजीब और अद्भुत स्पन मे। सम्भवत अब वे अपन प्यारे काला तटी उच्चारण के साथ स्पेनी भाषा बाल सकते है, सम्भवत वे हमेशा अच्छी तेज चाय की तलाश मे रहते हागे। शायद स्पन म चाय नही पी जाती? काई भी तो वाया के इस सवाल का जवाब दनवाला नही मिलता था कि स्पेनी कभी चाय भी पीते है या केवल कॉफी ही?

जब कभी अखबारो म कोई बुरी खबर छपती तो वालोद्या के माथे पर बल पड जाते और अच्छी खबर हान पर यह खिल उठता। उस लगता कि जहा उसके पिता और उनके उत्राव जूझ रह हा, वहा कुछ भी बुरा नही हो सकता। वोलोद्या के सामने उसके पिता का चित्र घूम जाता—धूप के कारण कुछ भूरे हुए बाल और सफाचट

रूसी नया आगे हुए प्रांगण में जमा हुए। वे मानो सर्किल में घटने, ढंग से अपना गाने पर बैठ जाते और बोलते —

'सावधान !'

रूसी भाषा में 'सावधान' को क्या कहते हैं ? शासन के लिए 'अमीरों' और दमन के लिए 'गरीबों' का उपयोग किया जाता है पर 'सावधान' के लिए कौन-सा शब्द है ? काश कि यह उन सभी का व्यवसाय रूप माना — गरीबी जिसमें जनरल सुराव और अपने पिता थे। इस प्रांगण में वे उस वहाँ ? अरस्तामी का स्पनो रूप क्या होगा ? और राष्ट्रगान सर्वाधिक पवित्र था ? वे दाना-जहाजों और हवाबाज — क्या अभी मिलते भी हैं ?

वोलोद्या अब मानव के अस्तित्व के उद्देश्य के बारे में बहुत देर तक और गहरा सोच विचार करता। यह अपने उन सहपाठियों से अधिकाधिक दूर होता जा रहा था जिनकी आकांक्षा केवल अच्छे अंक पाने तक ही सीमित थी या जो कालेज में स्नातकोत्तर विद्यार्थी बने रहने के उपाय खोजते थे या फिर उन तमाम नौजवानों से भी, जो अपने पेशे का चुनाव इस बात का ध्यान में रखकर करते थे कि बस उनके लिये देहातों-बस्तियों में जाने के बजाय नगर में रहने के अधिक अवसर हो सकते हैं।

और माता पिताओं के प्रति उसका क्या रुख था ?

उन माताओं के प्रति जो रेक्टर के दरवाज़े के बाहर आँसू बहाती थीं ? उन सैनिक अधिकारियों, बड़े कर्मचारियों, विद्वानों और मजदूरों के प्रति उसका क्या रुख रहता था, जो डीन पर "दबाव डालते थे" या यों कहना अधिक सही होगा कि अपने प्रभावशाली मित्रों से ऐसे पत्र लाते थे कि उस विद्यार्थी को एक और मौका दे दिया जाय, जो डाक्टर के लिए अनिवार्य विषय का सही उत्तर नहीं दे पाया था।

वोलोद्या युवा कम्युनिस्ट लीग के कालेज संगठन का सेक्रेटरी था। उसके पास फटकने की किसी को हिम्मत नहीं होती थी। सच तो यह है कि कभी-कभी तो डीन भी, जो कमजोर आदमी था, वोलोद्या से मदद करने को कहता। ऐसा तब होता जब उससे बहुत अधिक अनुरोध किये जाते और वह परेशान हो उठता। वोलोद्या ऐसे लोगों को रुखाई से, निर्दयतापूर्वक और खरी-खरी सुनाकर चलता कर देता।

"ढागी।" यूस्या योल्किना ने उनसे कहा।

वालोद्या उदासी से मुस्करा दिया।

"सेचेनोव चिकित्सा संस्थान से केवल उस्तिमेंको ही स्नातक होकर निकला। वह और किसी को इसके लायक ही नहीं समझता।" स्वेतलाना ने कहा।

"लकीर का फकीर।" मीशा शेरवुड ने उनके बारे में कहा।

वोलोद्या ने आँखें सिकोड़कर शेरवुड की द्वेषपूर्ण, भरी और फूली फूली आँखों में देखा। यह लड़का अवश्य काफी आगे जायगा। अभी से, जबकि उसने कोई तीर नहीं मारा है, वह संस्थान की पढ़ाई खत्म करते ही शोध प्रबंध लिखने का विषय ढूंढ रहा है। पर फिर भी उनके अंकों, परीक्षाओं और शोध-प्रबंधों की इस दुनिया में परवाह ही कौन करता है? केवल वे खुद ही तो?

बूढ़ा पीच

इसी समय के दौरान पीच या पावेल चिर्कोव के साथ, जिसे विद्यार्थी "बूढ़ा" कहते थे, वोलोद्या की गहरी छनने लगी। वह चौंतीस वर्ष की आयु में संस्थान में दाखिल हुआ था।

पीच गुमसुम और रूखा था तथा उसकी ज़बान बहुत तेज़ थी। उसकी छोटी छोटी, हल्की नीली आँखें अचानक किसी को इस्पाती बर्मे की तरह छेदना शुरू कर देती। वह आसानी से चीज़ों को न समझता, दूसरों की तुलना में उसे ज्ञान अर्जन में अधिक देर लगती। पर वह बड़ा मेहनती था और हर चीज़ की गहराई में जाता था। इसलिये अपने अधिक प्रतिभाशाली साथियों की तुलना में वही अधिक जानता-समझता था। वोलोद्या अक्सर उसकी मदद करता। पीच न तो कभी उसे धन्यवाद देता, न किसी और ढंग से अपनी कृतज्ञता प्रकट करता और गहरी सांस लेकर सिर्फ इतना ही कहता—

'वोलोद्या, तुम बड़े समझदार हो।"

वह किसी तरह की ईर्ष्या के बिना, यहां तक कि कुछ रूखी कोमलता से ऐसा कहता। ये दोनों ही गानिचेव और पोलूनिन के

श्रद्धालु थे और एक इस व्याख्यान के बाद गालिचेव ने दोनों को ही रोक लिया।

'सुनिये मेरे होनहार साथियो," दरवाजा बन्द करते हुए गालिचेव ने कड़ाई से कहा। 'मैं पिछले कुछ समय से आप लोगों के बारे में एक चीज देख रहा हूं। वह यह कि आप दोनों को घृणित और लज्जाजनक बीमारी जिसे चिकित्सा-सम्बन्धी सशयवाद कहते हैं, लग गई है। इसके लिये शायद मैं भी जिम्मेदार हू। आपके, क्षमा कीजिये बालक जैसे मुंह से 'नीम हकीमी', 'वैज्ञानिक लफ्फाजी और लातीनी शब्दाडम्बर' जैसे शब्द अक्सर सुनाई देते हैं। मेरे जवान शैतानो! आप अभी बच्चे हैं और आपके लिये यह उचित नहीं है कि सचाई जानने के लिये सदियों से जो खोज की जा रही है आप उसकी खिल्ली उड़ायें। मैं और प्रोफेसर पानूनिन आपकी चिन्तन शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं, पर हमारा यह उद्देश्य कदापि नहीं कि आप लोग सामयिक विज्ञान की स्थिति की खिल्ली उड़ायें। आप लोग खोज कीजिये किन्तु खिल्ली नहीं उड़ाइये! आपको ऐसा करने की जुरत ही नहीं करनी चाहिये! मानव की अद्भुत बुद्धि किसी तरह के यन्त्र के बिना आदमी के दिल की धड़कन सुनकर यह बता सकती है कि उसके किस हृत्कपाट में क्या और कैसा दोष है, इस दोष का क्या स्वरूप है—कोई कमी है या हृत्कपाट में सकुचन है। दर्द की रोक थाम करनेवाली दवाइयों के बारे में क्या ख्याल है आपका! और वक्सीनों के बारे में!"

गालिचेव बहुत ही नाराज़ थे। उन्होंने बहुत जोर से अपनी नाक सिनकी और आदेश देते हुए कहा—

"जाइये पिरोगोव को पढ़िये और निष्कर्ष निकालिये!"

गालिचेव ने उन्हें एक किताब दे दी जिसमें आवश्यक स्थलों की ओर संकेत करने के लिये कागज के पुर्जे रखे हुए थे और वे चले गये।

"हमने उन्हें परेशान कर दिया है," पीच ने कहा।

"इसके लिये मैं दोषी हूं," वोलोद्या ने जवाब दिया। "तुम्हें याद है न कि कल जब मैंने औषधि विज्ञान में नीम हकीमी की बात चलाई थी, तो उन्होंने कैसे बिगड़ते हुए कहा था—'जब सिर में दर्द होता है, तो क्या तुम पिरामीदान नहीं पीते?

उस रात उन्होने छात्रावास मे पीच के बिस्तर पर बैठकर पिरागाव की किताब पढी।

"भयानक है ये आकडे तो!" पीच ने अपनी थकी हुई आखा को बद करते हुए कहा। "ऑपरेशन किये गये लोगो म से तीन चौथाई पीप पडने के कारण मर जाते है।"

"ऐमा पिरोगोव के जमाने म होता था" वालोद्या ने कहा।

"साफ है "

"देखो, इसमे क्या लिखा है—'सरजरी की इस भयानक प्रवत्ति के बारे मे मैं कुछ भी तो अच्छा नही कह सकता। यह रहस्य है—इसका आरम्भ और विकास क्रम भी।'"

वोलोद्या ने अगला अकित पष्ठ खोलकर पढा—

"जब मुझे उन कब्रिस्तानो का ध्यान आता है, जहा उन लोगो की इतनी अधिक कब्रें है, जो अस्पतालो म पीप पडने से मरते हैं, तो मेरी समझ मे यह नही आता कि उन सजना की दृढता पर हैरान होऊ, जो अभी भी नये नये ऑपरेशन करते जाते हैं या समाज के उस विश्वास पर, जो वह अभी तक अस्पताला मे प्रकट कर रहा है?'

"तुम्हारा निष्कप?" पीच ने पूछा।

"अग्रेज सजन लिस्टर।"

"उसकी एन्टीसेप्टिक प्रणाली।"

"बिल्कुल सही! बहुत ही समझदार हो, तुम पीच!" वोलोद्या ने कहा। "तो ऐसा ही क्यो न कहा जाये कि सजन जो कभी पीप के सामन गुलामा की तरह सिर झुकाते थे, अब उन्होने उस पर विजय पा ली है। तब सारी बात पूरी तरह हमारे ओगुर्त्सोव की शैली मे हो जायेगी। उसे इस तरह की शैली बहुत पसद है।"

"तो इसमे बुराई भी क्या है? कभी-कभी इस तरह की शली अच्छी रहती है," पीच ने गम्भीरतापूवक जवाब दिया। "हम बाते ही करते रहते हैं, किन्तु डाक्टर बनने के लिये भविष्य के किसी लिस्टर पर विश्वास करना भी जरूरी है।

'केवल विश्वास से काम नही चल सकता,' वोलोद्या ने आह भरकर कहा। 'याद है कि प्राचीन यूनानी क्या करते थे? और बाद मे भी? आइसीपस ने अपन बुखार के रोगियो के लिये भोजन करने

ग्रौर डिग्रास्सीपस ने पानी पीने की मनाही कर दी थी। सिलवियाम इस बात के लिये अनुरोध करता था कि उन्हे खूब पसीना आये और बूढा ग्रस्से उनके बेहोश होने तक उनका खून बहाता रहता था, जबकि केरी उन्ह ठडे पानी से नहलाता था "

'खैर ठीक है, पर हमने अपने वेरेसायेव को भी तो पढा है न!" पीच न मल्लाकर कहा।

'वह बढिया डाक्टर था!"

"सुनो अब तुम घर जाओ," पीच ने कहा। "मेरा तो वसे ही सिर फटा जा रहा है।"

पर बोलोद्या घर नही गया। पीच ने अपने घुटनो तक के फटे पुरान जूते उतारने शुरू किये। उसके साथ रहनेवाले विद्यार्थी लौट आये, किन्तु बोलोद्या ने अपनी बात जारी रखी।

'शरीर क्रिया विज्ञान हम अब तक बहुत कुछ दे चुका है और हर दिन हमारे ज्ञान मे अधिकाधिक वद्धि करता जाता है," उसन कहा। "मैंने कही पढा था कि सैद्धान्तिक चिकित्साशास्त्र तो वास्तव म शरीर क्रिया विज्ञान है। इस तरह शरीर क्रिया विज्ञान से ही हम अपनी जरूरत के निष्कर्ष निकालने होगे और तब व्यावहारिक चिकित्साशास्त्र तैयार हो जायेगा। जहा तक लातीनी शब्दाडम्बर का सम्बन्ध है "

"इस बीच हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो, तुम्हारा यही मतलब है न?' साशा पालेश्चुक ने कहा।

कमरे म शारगुल मच गया। पीच ने अनजाने ही अपने जूते पहनने शुरू कर दिये। गृहयुद्ध के दिनो से ही उसे ऐसी आदत हो गई थी कमरे म किसी तरह का शोर होते ही वह पूरी तरह जागे बिना ही जूते पहनना शुरू कर देता था।

"तो तुम यह सुझाव देते हो कि हम शुद्ध विज्ञान की हवाई दुनिया म उडान किया करें?" विरले दाता और चित्तियावाले नौजवान ग्रागुर्ल्योर न बोलोद्या पर आक्षेप किया। 'बोलोद्या, साफ-साफ कहो न! क्या भी तुम यह क्या बेतिरलैर की बात कर रहे हो? "

'बेतिरलेर की बात क्या है? बोलोद्या न बिल्कुल सही कहा है, माशा नेरखुर न कानाफान म हिम्मा लेते हुए कहा। 'शायद तुमम

से किसी को याद हो कि किसी एक बुद्धिमान अरब हकीम ने एक बार यह कहा था कि ईमानदार आदमी को चिकित्साशास्त्र के सिद्धान्त से प्रसन्नता तो हो सकती है, पर बेशक उसका ज्ञान कितना ही अधिक क्या न हो, उसकी आत्मा उसे कभी भी डाक्टरी नही करने देगी "

"क्या ?" पीच ने चिल्लाकर पूछा।

शेरवुड ने अपनी बात दोहराई।

"बहुत खूब, बढिया निष्कर्ष है हमारी इस बहस का," अपनी छोटी-छोटी नीली आखो से बोलोद्या को बेधते हुए उसने कहा। "हम इतने ईमानदार हैं कि केवल चिकित्साशास्त्र के सिद्धान्त का ही मजा लेते रहेंगे। हम इतने ईमानदार और इतने सच्चे है कि जब तक सिद्धान्त पूरी तरह विकसित नही हो जाता, लोगो को मरने-सडने देंगे। नारियां बेशक प्रसव के समय मर जाये, बालक सैकडो की सख्या मे दम तोडते रहे, बेशक सोवियत लोग डिपथीरिया, टाइफस और स्पेनी फ्लू के शिकार होते रहे, मगर हम अपनी सीटो से हिलने का नाम नही लेगे। हम अपनी प्रयोगशालाओ मे बैठकर हर चीज का वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालेगे, हर चीज पर सन्देह करने की कला मे अधिकाधिक निपुण होते जायेंगे और आखिर अपने काम मे पूरी तरह विश्वास खो बैठेंगे। ऐसा करना अधिक सुविधाजनक है।"

पीच उठा, उसने पानी का एक गिलास पीया और सभी पर छा जानेवाली खामोशी मे ऐसे जोश और प्रभावपूर्ण ढग से बोलने लगा कि बोलोद्या, जिसने "बूढे" को पहले कभी इस तरह बोलते नही सुना था, सकते मे आ गया।

"श्चीनिन हमारी रेजिमेन्ट का कमाडर था, बहुत ही बहादुर और ऐसा व्यक्ति, जिसके बारे मे दन्त-कथाए प्रचलित थी। पर एक दिन कूच के दौरान वह बीमार पड गया। बर्फ का भयानक तूफान दहाड रहा था, बेहद ठड थी, हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नही था और ऐसे मे हमारा कमाडर सरसाम की हालत मे बेसिरपैर की बाते कर रहा था। हमारी रजिमेन्ट मे एक बूढा डाक्टर था, जिसने सिर्फ तीन वर्षों तक डाक्टरी के स्कूल मे पढाई की थी। उसका नाम था तूतोचकिन। उसे जबदस्ती सेना मे भरती किया गया था। वह ऐसा बढिया घुडसवार था कि क्या कहिये! हमे उसके जीन पर पक्षा का

तकिया बाधना पड़ता था। अच्छा खासा मजाक था वह तो! उसने झीलिन का देखा और बोला कि इसे तो खसरा है। जाना-पहचाना खसरा। इसके अलावा झीलिन का दिल भी ढग से काम नही कर रहा था। चुनाचे हमने बहुत ही महगे दामो पहो से थोडा-सा सूरजमुखी का तेल खरीदा, उसे उबाला, हमारे कूनोनकिन ने उसमे थोडा-सा काफूर मिलाया और झीलिन को इसकी गुद्दया लगाने लगा। उसके सारे शरीर पर बडे-बडे फोडे निकले। पर इसके बावजूद वह फिर से ठीक-ठाक हो गया और सफेद गार्डों के विरुद्ध उसने अपनी रेजिमेट का नेतृत्व किया। तो खैर! यह वैज्ञानिक चिकित्सा है या तजरबे? मैं सिर्फ यह कहना चाहता हू कि सस्थान के प्रोफेसर मुझे ऐसी शिक्षा दे दें, मुझे कूनोनकिन जैसा बना दें, ताकि दम तोडते आदमी को झीलिन की भाति उसकी सेना म लाकर खडा कर दू, जो बाद म डिवीजिन-कमाडर और फिर किस्से-कहानियो की ख्यातिवाला सेना कमाडर बना! बस इतना ही कर दें हमारे प्रोफेसर! मैं आप लोगो से एक कम्युनिस्ट के नाते बात कर रहा हू हमें अपने काम की जटिलता और कठिनाई को अवश्य ही समझना चाहिए! मेरा अभिप्राय है, जैसे कि गानिचेव और पोलूनिन हमारे अन्दर यह विचार भरना चाहते हैं, कि हर रोगी के सिलसिले मे हम किसी अनूठी और अनजानी बीमारी का सामना करने के लिये पूरी तरह तैयार रहना चाहिए। हमे हमेशा नई-नई चीजो की खोज करते जाना चाहिए, पर साथ ही हाथ मे लिये हुए काम भी जारी रखने चाहिए। साथी शेरवुड के वे सभी अरबी सिद्धात बेतुके है और हम उनकी धज्जिया उडा देनी चाहिये। और वोलोद्या मैं तुम्हे भी यह सलाह देता हू कि तुम थोडा सोच विचार करो। तुम्हे ऊची शैली म बात करना पसद नही है, मगर मुझे यह अच्छा लगता है। बस इतना ही कहना है मुझे! अब सोने का वक्त हो गया!"

पीच फिर से अपने बूट उतारने लगा। वोलोद्या चुपचाप कमरे से बाहर आया, सीढिया से नीचे उतरा और बर्फीली ठडी हवा मे उसने अपने तमतमाये हुए चेहरे को ऊपर किया। चक्कर खाती बर्फ मे सडक के लैम्पो की गोल और पीली पीली आखे अधी-सी लग रही थी। उसे शर्म आ रही थी, बेहद शर्म आ रही थी। स्थिति को और

अधिक बोझिल बनाने के लिये शेरवुड उसके पीछे-पीछे बाहर आया और उसने अपने नपे-तुले और साफ साफ वाक्यों में कहा—

"उस्तिमेंको, पीच अगर जली-कटी सुनाने पर उतारू हो जाये, तो तुम मेरी हिमायत करना। मेरा अपना सुसगत दृष्टिकोण है और पीच का अपना। पर वह यह चाहता है कि सभी लोग उसी का दृष्टिकोण अपना ले, जबकि मैं "

"मैं पूरी तरह पीच से सहमत हू," वोलोद्या ने कहा। "तुम्हारे उस अरब का सर्वथा विरोध करता हू। इस तरह के दृष्टिकोणों की बड़ी बेरहमी से धज्जिया उडा दी जानी चाहिये।"

"ओह, तो यह बात है?!"

"हा, यही बात है," वोलोद्या ने दृढतापूर्वक कहा। "अगर तुम ऐसे दृष्टिकोण को ही अपने शोध प्रबन्ध का आधार बनाओगे, तो कूडे करकट के ढेर मे ही गिरकर रह जाओगे।"

"मेरा शोध प्रबन्ध ऐसे ही दृष्टिकोणों पर आधारित होगा, जो विश्व के प्रति हमारी धारणा के अनुरूप होगे। अन्य कोई आधार नही होगा उसका। जहा तक 'कूडे-करकट के ढेर' का सम्बन्ध है, तो मैं यही कहूगा कि तुमने यह बहुत गुस्ताखी भरी और भोडी बात कही है, जो तुम्हे शोभा नही देती।"

शेरवुड ने अपने कधो पर झूलते ओवरकोट को सम्भालकर ऊपर किया और छात्रावास मे वापिस चला गया। वोलोद्या ट्राम की ओर भागा, चलती हुई ट्राम पर चढा, गाली बकी और उसने इसी समय वार्या से सारी बात कहकर अपना दिल हल्का करने का फैसला कर लिया। वह उसे यह बताना चाहता था कि खुद से कितना निराश है। स्तेपानोव परिवार के लोग अब आसीवाया सडक पर रहते थे। वार्या के दादा ने दरवाज़ा खोला। वार्या के पिता ने जाने से पहले यह बडी हिदायत कर दी थी कि वह अपने दादा के साथ मिलकर घर की व्यवस्था करे और किसी भी सूरत मे दादा को फिर से गाव न जाने दे।

"अच्छा मेहमान हमेशा खाने के वक्त ही आता है,' बुजुर्ग ने खुलकर कहा और रसोईघर की ओर चले गये, जहा से तले जाते आलुओं की प्यारी गध आ रही थी।

"वोलोद्या आया है।" वार्या ने दादा से पूछा।

"और हो ही कौन सकता है!" दादा ने रसोईघर से जवाब दिया। "वाया बिल्ले को अपने पास बुला लो। वह नीम को सूंघ रहा है!"

वार्या प्रवेश कक्ष में आई। वह कंधों पर ऊनी शॉल डाले हुए थी और उसके चेहरे पर ताज़गी झलक रही थी। बिल्ला उसकी टांगों से अपना तन रगड़ने लगा।

वोलोद्या तुम चाहे कुछ भी क्यों न कहो, भूगर्भविज्ञा तो मैं कभी भी न बन पाऊंगी उसने हताशा से कहा। "मैंने अपना इरादा बना लिया है मैं तो रंगमंच को ही अपना पेशा बनाऊंगी। मैं यह बिल्कुल साफ़-साफ़ कह दे रही हूं। तुम यह मुंह बाये क्या देख रहे हो?"

'वाया तुम पहले प्राविधिक स्कूल की पढ़ाई खत्म कर लो," वोलोद्या ने मिन्नत करते हुए कहा।

'यह किसलिये?"

'इसलिये कि तुम मैं जानता हूं कि तुम कि तुम सफल अभिनेत्री नहीं बन सकोगी

क्योंकि मुझमें प्रतिभा नहीं है?'

वोलोद्या ने अपनी लम्बी-लम्बी बरौनियों के बीच से उसकी ओर उदासी से देखा और कोई जवाब नहीं दिया। वार्या ने शाल अपने इर्द गिर्द लपेट ली और प्रतीक्षा करती रही। बिल्ला उसकी मज़बूत और सुघड़ टांगों के साथ अपना तन रगड़ता रहा।

सुनो वार्या वोलोद्या ने कहना शुरू किया। "बात यह है, लाल बालोंवाली, कि अभी अभी छात्रावास में हम लोगों के बीच बहस होती रही है। बहस का विषय स्पष्ट करना तो ज़रा कठिन है मगर जो कुछ मैं समझता हूं वह यह है कि हम जो भी काम करें, वह न केवल हमारे लिये ही बल्कि हर किसी, समाज और जनता के लिये भी दिलचस्प और ज़रूरी होना चाहिये। किन्तु यदि यह केवल तुम्हारे लिये ही ऐसा महत्व रखता है तो अचानक अर्थहीन हो जायेगा।

"अन्दर आ जाओ जहां ठंड नहीं है, वहां मत खड़े रहो,' दादा ने रसोईघर से पुकारकर कहा। "आलू बन गये हैं, वार्या मेज़ लगाओ। तहखाने से कुछ अचार भी ले आओ।"

सभी न चुपचाप खाना खाया। दादा वातचीत मे बडी दिलचस्पी लेते थे और हर चीज के बारे मे खूब जोर शोर से अपनी राय जाहिर किया करते थे। इसलिये आम तौर पर वे अकेले ही बोलते रहते थे और खब जी भरकर अपने मन की कहते थे। पर आज वे अपने रग मे नहीं थे और इसलिये केवल बिल्ले के बारे मे ही बडबडाते रहे।

"नाक मे दम आ गया है इसके मारे बहुत बिगाड दिया गया है इसे। चूहे पकडने का नाम नहीं लेता, उन्हे देखकर केवल आखे झपकाया करता है। सुबह एक चूहा आया और यह उसे देखकर भाग गया। शायद हमे इसकी दुम काट देनी चाहिये?"

"वह किसलिये?" वार्या ने घबराकर पूछा।

"इसलिये कि दुमकटी बिल्लिया अधिक फुर्तीली होती है," खट्टी पत्ता गोभी लेते हुए दादा ने जवाब दिया। "साइबेरिया के किसान अपनी सभी बिल्लियो की दुम काट देते है। वे इसलिये ऐसा करते हैं कि ठड बडी जोरो की होती है और बिल्लिया अपनी लम्बी दुमो को घसीटती हुई अन्दर आने मे बहुत देर लगाती है। उनके अन्दर आने और बाहर निकालने मे ही घर की सारी गर्मी खत्म हो जाती है। पर दुमकटी बिल्ली अन्दर आने और बाहर जाने मे आधा समय लगाती है। यह हिसाब की बात है। घर के अन्दर भी वे अधिक फुर्ती दिखाती है। उन्हे डर रहता है कि उनकी दुमे और न काट दी जायें।"

"दादा, अगर आप बिल्ले की दुम काट देंगे, तो मैं घर छोडकर भाग जाऊगी। बिल्कुल माल्यूता स्कुरातोव* है मेरे दादा तो,' उसने वोलोद्या से कहा।

वार्या जब तक बर्तन साफ करती रही, वोलोद्या अपनी बात कहता रहा। उसने अपनी लानत मलामत की और पीच की तारीफो के पुल बाधे। यव्गेनी भी घर आ गया और उसने वोलोद्या को डाटते फटकारते हुए कहा–

'तुम क्लब मे क्यो नहीं आये थे? तुम अपने सामाजिक कर्त्तव्यो से कन्नी काटते हो। विद्यार्थियो ने प्रसिद्ध लेखक लेव गूलिन को

---

*जार इवान रौद्र का एक निकटवर्ती दरबारी, जो अपनी निर्दयता के लिए विख्यात था।

ग्रामन्त्रित किया था। हम सोवियत विद्यार्थियो स यह ग्राशा की जाती है कि उसकी किताब पर बहस कर, साथीपन की भावना स उस पर खुलकर विचार विनिमय कर ग्रौर हालत यह है कि दो तिहाई विद्यार्थी ग्रपनी सूरत दिखान की भी तक्लीफ नही करते। यह तो सरासर बन्त मीजी है।"

"पर यदि मैंन लेव गूलिन की किताब ही न पढी हा, ता?' वोलोद्या ने पूछा।

'यह तुम्हारे लिये बहुत शम की बात है। लेव गूलिन सावियत सघ की यात्रा करता हुग्रा ग्रपने पाठको से मिल रहा है।"

तो खैर ठीक है, तुम ग्रनपढो मे ही हमारी गिनती कर सकते हो,' वार्या ने गुस्से से कहा। "तुम हमारा पिड क्यो नही छाडते?"

"इसमे तो तुम्हारी ही भलाई है," येव्गेनी ने बुरा मानते हुए जवाब दिया। "सचमुच, क्या तुम इतना भी नही समझते कि जिदगी जिदगी है, कि तुम्ह लोगा से मिलना-जुलना चाहिये, दूसरो की सुननी ग्रौर ग्रपनी कहनी चाहिये। क्या खाने के लिये सिफ ग्रालू ही बने है?" वह इसी ग्रदाज मे कहता चला गया। मुह भरे भर ही उसने उन्ह यह बताया कि कसे वह मच पर गया था ग्रौर साफ-साफ तो नही, फिर भी यह स्पष्ट कर दिया कि शेम्याकिन के रूप म ग्राधुनिक विद्यार्थी को पदलोलुप, चालाक ग्रौर वेपेंदी का लाटा चित्रित करके लेखक ने जाने ग्रनजाने सभी सोवियत विद्यार्थियो का कलकित कर दिया है।

"तुमने किताब पढी है?" वार्या ने पूछा।

'मैंने विचार विनिमय से पहले उसे उलट पलटकर दख लिया था। मैंने ग्रलोचको की राय भी पढ ली थी। इसलिय मुझे ग्रपना रास्ता मालूम था। तुम्हे मेरे बारे मे चिन्ता करन की जरूरत नही

"प्यारे यव्गेनी, तुम निश्चय ही बहुत दूर तक पहुचोगे,' वार्या न ग्राह भरकर कहा।

'प्यारी बहन मेरा कही नजदीक ही ठहरन का इरादा भी नही है। मैं ऐसा कर ही नही सकता, क्योकि तब हर किसी का यह स्पष्ट हो जायगा कि यव्गेनी स्तपानोव बहुत प्रतिभाशाली नही है। पर जब

मैं दूर पहुच जाऊगा, और अगर भगवान ने चाहा, कुछ ऊचा भी उठ जाऊगा, तब "

"जाओ यहा से!" वार्या चिल्ला उठी। "येव्गेनी, कृपया जाओ यहा से!"

अगली सुबह को बोलोद्या पीच के पास गया और बोला कि मैं पूरी तरह तुमसे सहमत हू और, अपने मूर्खतापूर्ण सन्देहवादी दृष्टिकोण को त्याग दूगा। बूढे ने ऐसे इत्मीनान से इस स्वीकारोक्ति को सुना कि बोलोद्या के दिल को हल्की ठेस-सी लगी। पर बहुत जल्द ही वह सम्भल गया। कुछ ही देर बाद वे तथाकथित "चमत्कारी फूक" की रोगहर शक्ति की चर्चा करने लगे। बोलोद्या ने इसी सुबह को सस्थान जाते हुए ट्राम मे इसके बारे मे पढा था। उसने पीच को इसके बारे म बताया। तुर्की झाड फूक करनेवाले आम तौर पर अपनी जादुई चिकित्सा मे बहुत समय लगाते थे। वे रोगी के गले मे तावीज लटकाते, मन्त्र फूकते, धूप-लोबान, आदि जलाते, उसके इद गिद नाचते, चीखते-चिल्लाते और अन्त मे जोर की फूक मारते। किन्तु वास्तव मे खोजा–रोगहर–ही, जिसकी "चमत्कारी फूक" होती थी, रोगी को रोगमुक्त कर सकता था। पुस्तिका का लेखक एक विख्यात डाक्टर था, जिसने तुर्की झाड फूक की विधि का विस्तृत और गहरा अध्ययन किया था। उसने बहुत जोर देकर अपने पाठको का यह विश्वास दिलाया था कि "चमत्कारी फूक' रोगी को रोगमुक्त करने मे सहायक होती थी।

पीच ने घडी भर सोच विचार किया, अपनी थकी हुई आखो को मला जैसा कि वह अक्सर करता था, और फिर बोला–

"व्यक्तिगत रूप से मैं तो इसे डाक्टर म रोगी के विश्वास की बात ही समझता हू। मान लो अगर मै और तुम सही रोग निदान करे और ठीक इलाज बताये, तो भी हम किस काम के डाक्टर होगे, अगर रोगी का विश्वास नही जीत पायेगे? रोगी युद्धक्षेत्र के सनिक के समान होता है, उसे अपने कमाडर पर पूरा भरोसा होना चाहिय, यह समझना चाहिये कि वह अपने सैनिको को कभी धोखा नही देगा, कि उसकी कमान मे वे दुश्मन के छक्के छुडा देगे और सही-सलामत लौटेगे।"

"शायद तुम ठीक ही कहते हो "

इस दिन के वाद वालोद्या और पीच हमेशा इक्टठे पढते। उनमे से किसी न भी ऐसा सुझाव नही दिया, पर यह अपने आप ही हो गया। पीच शाम को वालोद्या के पास आता, वोश्च की वडी प्लट भरकर खाता, देसी तम्बाकू की सिगरेट के कश लगाता और इसके वाद ये दोना काम करन वैठ जाते। पीच वेहद मेहनती था, वालोद्या वहुत ही समभदार। पीच कभी-कभार वुरी तरह उलझकर रह जाता और वोलोद्या वहुत आगे निक्ल जाता। पर उसका ज्ञान अजन कभी कभी सतही होता। पीच गहरा हल चलाता, वहुत गहराई तक पहुचता, जबकि वोलाद्या कल्पना की ऊची उडानें भरता। वे आपस मे ज्यारा की वहस करते, झगडते, एक दूसरे को भला-वुरा कहते, पर एक दूसरे के विना उ ह चैन भी न पडता।

"सस्थान की पढाई खत्म होन पर हमे अगर एक ही अस्पताल मे नियुक्त कर दिया जाये, तो कितना अच्छा रहे," वोलोद्या न एक बार कहा।

"यह वुरा होगा," पीच ने रखाई से उत्तर दिया। "हम एक दूसरे से गुस्ताखी से पेश आने के आदी हो गये हैं और तुम जानते ही हा कि अस्पताला म कैसे काम चलता है—'माफ कीजिये, पावेल लुकीच। —'नही, नही, यह मेरा दोप है, प्यारे व्लादीमिर अफानास्येविच ' वहा डाक्टर की प्रतिष्ठा बनाये रखनी होती है।"

और इस तरह वसन्त आ गया।

सातवा अध्याय

प्राथमिक सहायता

वह बडी ही खुश्क गर्मी थी, पानी की एक बद भी नही बरसी, उमस रहती, धूल उडती और अक्सर आधिया आती। उचा नदी के दूसरे किनारेवाले जगल मे आग लगी हुई थी और नगर के ऊपर धुआ छाया रहता था। नगर म कई और जगह भी आग लग गई—यामस्काया स्लावोदा और पारचनाया सडक के पुराने गोदाम भी एक आधी मे जलकर राख हो गये।

वालोद्या प्राथमिक डाक्टरी सहायता सेवा मे परिचारिक के रूप मे काम करता था। नगर की प्राथमिक डाक्टरी सहायता सेवा के पास केवल दो कारे थी, पुरानी 'रेनो' कारे, जिनके ढाचे नीचे और रेडिएटर छोटे थे। किन्तु बग्घिया बहुत-सी थी, अगल बगल रेड क्रास क चिह्न और खडखडाते हुए शीशोवालिया। इनके शीशो पर सफेद रोगन किया हुआ था। घोडा को खूब अच्छी हालत मे रखा जाता था। वोलोद्या आम तौर पर कोचवान की बगल मे ही बैठता और उसे डर रहता कि कही देर न हो जाय। वह लकडी का बक्स लिये हुए, जिस पर रेड क्रास बना होता था, डाक्टर के साथ रोगी के घर के दरवाजे पर जाता, दस्तक देता या घटी बजाता और जब यह पूछा जाता कि "कौन है?" तो जल्दी से जवाब देता—"प्राथमिक डाक्टरी सहायता"।

वोलोद्या ने अनेक बार लोगो को मरते देखा था। उसने बहुत दु खद और लाइलाज रक्त स्राव से मृत्यु होते दखी थी। उसने मौत से पहले लोगा को छटपटाते भी देखा था। उसने मृतको को "उस

दुनिया' में जैसा कि वह मन ही मन कहता था, सोचते भी डरता था। बूढ़े और बहुत ही समझदार नजरवाला डाक्टर मिर्वेशिन ऐसा 'वापसी' को चमत्कार नहीं मानता था। किन्तु बड़े जोर से उसकी सहायता करते हुए कोनाश्या को तो मानो स्वर्ग-सुख की अनुभूति होती। जब ऐसा चमत्कार न हो पाता, जब मिर्वेशिन अपने खास अन्दाज में अपनी ऐनक को ऊपर करता, गहरी सांस भरता और उस कमरे से बाहर जाने को घूमता, जहां "विनाश अगम्य हो गया था", तो उसे भारी निराशा होती।

'बात यह है कोनाश्या, कि," डाक्टर मिर्वेशिन बग्घी में चलता हुआ कहता "हम पहुंचने में कुछ देर हो गई। मगर हम एक या दो घंटे पहले पहुंच जाते, तो शायद..."

दरवाजा खटाक से बन्द होता और बग्घी सड़कों पर धक्के खाती तथा दायें-बायें होती हुई चलती जाती। कोनाश्या को मुड़कर देखते हुए डर लगता, बड़ी शर्म आती। उसे ऐसा प्रतीत होता, मानो शोकग्रस्त परिवार के लोग घृणित दृष्टि से उसे देख रहे हैं, कि वे विनान, मिर्वेशिन और कोनाश्या को कोस रहे हैं। पर किसी दूसरी जगह पर जाने का सन्देश मिलते ही वह कुछ मिनट पहले के अपने विचारों को भूल जाता।

कापूर, कैफीन और मार्फिया की सूई लगने के फौरन बाद वह आदमी को फिर से जिन्दा होते देखता। उसका भयानक दर्द गायब हो जाता और वह भौचक्का-सा इधर उधर देखने लगता। यह सूईवाली पिचकारी, एम्प्यूल और मिर्वेशिन के हाथों और तजरबे की करामात होती थी कि वह "उस दुनिया' से वापिस आ जाता था।

"तो यह बात है,' मिर्वेशिन कहता और अपने चश्मे को ठीक करता। "अब उसे थोड़ा चैन और शान्ति चाहिये और सब कुछ ठीक ठाक हो जायेगा।'

"सुनते हैं आप लोग, सब कुछ ठीक ठाक हो जायेगा!" कोनाश्या का मन होता कि वह चिल्लाकर कहे। "इसकी बीवी, इसकी बेटी और तुम सभी लोग–तुम समझ रहे हो न कि यह आदमी मर चुका था। अब वह कोई खट्टी चीज पीना चाहता है, पर कुछ देर पहले वह मुर्दा हो चुका था!"

बग्घी प्लातोनोस्काया स्लोबोदा सडक के गड्ढों पर खडखडाती हुई चलती जाती और कोचवान स्तीमश्चिकोव अपनी "समृद्ध" दाढी को थपथपाता हुआ कहता –

"मेरा दिल कहता है कि आज वे लगातार बुलावे भेजते रहेंगे। स्नानघर में भाप-स्नान का मज़ा लेने का मौका नहीं मिलेगा।"

एक घटना ने तो वोलोद्या को बहुत ही प्रभावित किया। वास्तव में तो वह बहुत सीधा-सादा मामला था, पर वोलोद्या को चमत्कार प्रतीत हुआ और अनेक वर्षों तक उसके दिल में इसकी याद बनी रही। यह अगस्त के मध्य में हुआ। आधी रात के बाद उन्हें कोसाया सडक पर एक अहाते के बाजू में रहनेवाले किसी बेल्याकोव के घर फौरन आने को कहा गया। नीची छतवाले साफ-सुथरे कमरे में चौडे से बिस्तर पर एक अधेड उम्र का आदमी लेटा हुआ था। कई घंटों की पीडा से बेहाल वह धीरे-धीरे और पीडायुक्त मृत्यु के मुंह की ओर बढा जा रहा था। उभरी हुई पसलियोंवाली उसकी चौडी छाती असमान गति से ऊपर-नीचे हो रही थी, उसके माथे से पसीना चू रहा था जो उसकी आखो के गढ़ों में भर जाता और फिर गालों से नीचे बहता। लम्बी ऐंठन से वह कराहता और दांत किटकिटाता।

एक दुबला-पतला स्कूली छोकरा मिकेशिन को जल्दी-जल्दी बता रहा था –

"साथी डाक्टर, शुरू में तो मेरे पिता को बेचैनी महसूस हुई। वे कभी उछलकर खड़े हो जाते, तो कभी बैठ जाते और अचानक ड्योढ़ी में भाग गये और फिर कांपने लगे। ऐसी कंपकंपी तो मैंने पहले कभी देखी ही नहीं। इसके बाद वे बोले कि मुझे भूख लगी है। 'अनातोली, आओ, खाना खायें,' उन्होंने कहा। अनातोली मेरा नाम है।"

"यह क्या है?" मिकेशिन ने सूई लगाने की दवाई की खाली शीशी उठाते हुए पूछा।

"यह? वे अपने को इन्सुलिन की सूई लगाते है। उन्हें प्रमेह का रोग है," लड़के ने बताया।

मिकेशिन ने सिर हिलाया। वह एक-दो क्षण तक बेल्याकोव के चेहरे को ध्यान से देखता रहा और फिर बोला – "जल्दी से थोड़ी

चीनी लाग्रो"। इसी समय वेल्याकाव को ऐंठन का ऐसा दौरा पड़ा कि छटपटाहट से उसका पलग चरमरा उठा। मिकेशिन न उसे सीधे लिटा दिया और तेजी तथा कुशलता स उसके मुह म चीनी डालने लगा। साथ ही उसने वालाद्या को आदेश दिया कि यह ग्लूकोस की ग्रत शिरा सूई लगान के लिये सारा सामान तैयार कर द। कोई बीस मिनट बाद, जब ऐंठन जाती रही, वेल्याकोव को ऐडेनलिन की सूई लगाई गई। वह अब वेहद खुश और आश्चर्यचकित-सा लेटा हुआ था। दुबला पतला छोकरा कान मे खड़ा हुआ उस भयानक दृश्य को याद कर रा रहा था।

"मरे दोस्त, आपने अधिक मात्रा म इन्सुलिन की सूई लगा ली थी ' मिकेशिन ने रोगी से कहा। "भगवान न करे, अगर फिर कभी ऐंसे तबियत खराब हो जाये, तो झटपट सफेद रोटी का टुकडा या चीनी की दो डलिया खा लीजियगा। आगे को अधिक सावधान रहियगा। कल अस्पताल मे आइयेगा "

अधेरी ड्योढी को लाघते हुए मिकेशिन ने अचानक गाली वकी और झल्लाकर कहा —

"मैं कोई पादरी, बडा पादरी या ऐसा क्या हू?"

वग्धी मे बैठते हुए वह कहता गया —

"उस छोकरे ने तो मेरा हाथ चमने की कोशिश की!"

बोलोद्या कोचवान की बगल में जा बैठा और दबी घुटी आवाज म बोला —

"साथी स्नीमश्विकोव, विज्ञान के बराबर कोई दूसरी शानदार चीज नही है। घडी भर पहले डाक्टर मिकेशिन ने एक आदमी का मौत के मुह से निकाल लिया, यकीनी मौत के मुह से।"

"यकीनी मौत से कोई किसी को नही बचा सकता," कोचवान न कडाई से कहा। "अगर मौत यकीनी हो, तो उस आदमी को बचाया ही नहीं जा सकता। तुम तो अभी हमारे साथ जाने लगे हो पर मैं तो काई बीस साला स तुम्हारे इस विज्ञान को देख रहा हू। यकीनी मौत से बचा लिया यह भी अच्छी रही! हमारे बूढे मिकेशिन को तो बात ही क्या है, प्रोफेसर भी कुछ आदमिया को नहीं बचा सकते, जिसकी मौत यकीनी हो!"

स्नीमग्चिकोव सन्देहशील मन का व्यक्ति था और डाक्टर मिकेशिन की जरा भी इज्जत नही करता था। बात यह है कि मिकेशिन बेहद विनम्र था और हर समय – "कृपया ऐसा कर दीजिये", "आपका बडा आभार मानूगा", "आपकी बडी मेहरबानी होगी", आदि वाक्य कहता रहता था। इसके अलावा उसके पास केवल एक ही ओवरकोट था, जिसे वह हमेशा पहने रहता था और कोचवान उसे "सबमौसमी" ओवरकोट कहता था।

रात के दो बज चुके थे। चाद नगर के ऊपर, उसके धूलभरे चौको, कुलीनो के भूतपूर्व पार्क, व्यापारियो के भूतपूर्व पार्क, गिरजाघर के गुम्बजो और चौडी ऊची नदी के ऊपर तैर रहा था। भूखे और गुस्से मे आये हुए कुत्ते भौक रहे थे और अपनी जजीरो को खनखना रहे थे। नदी के दूसरे तट से जलते हुए जगल की गध आ रही थी। प्राथमिक डाक्टरी सहायता केन्द्र पहुचने पर डाक्टर मिकेशिन बग्घी से निकला, उसने अपनी सफेद टोपी उतार ली और बैठी-सी आवाज मे कहा –

"सुन्दर दृश्य है न, वोलोद्या!"

"धन्यवाद, अन्तोन रोमानोविच," वोलोद्या बुदबुदाया।

"किस चीज के लिये?"

"यही मुझे शिक्षा देने के लिये।"

"मैं? तुम्हे शिक्षा देता हू?" मिकेशिन ने सचमुच हैरान होते हुए कहा।

"मेरा मतलब उस शिक्षा से नही है। मेरा अभिप्राय है मसलन आज रात को " वोलोद्या बिल्कुल घबरा गया था।

"आह, आज रात का!" मिकेशिन ने उदासी से कहा। "तुम्हारा मतलब उस बेल्याकोव से है? मगर वह तो बहुत साधारण, बहुत ही मामूली बात थी।"

मिकेशिन की आवाज मे वोलोद्या को एक जाने-पहचाने अन्दाज – पोलूनिन के अन्दाज – की झलक मिली। उसी अन्दाज की, जिसमे कुछ मजाक, कुछ व्यग्य और थकान का पुट होता था।

पढाई शुरू ही हुई थी कि नदी के दूसरे तट पर लकडी के गोदामो म आग लग गई। पौ फटने के समय उन बैरको मे आग भडक उठी

जहा खुली मो रह ये और विमी वो भी वस्न पर प्राग नही खुली। तज हवा ये लाने लाल अगारा और सुलगती राख या इधर-उधर विखरा रह थे। म्नीमश्चिवरव ये मुश्री घोडे हिनहिनाये, भड और खाई म उतर गय। आग बुमानेवाली मोटर घटियाँ वजाती हुई एव दूसरी ये पीछे तेजी से पुल ये पार जा रही थी। तिरपाल वे लवादे पहने हुए जिनम धुमा निवल रहा था, आग बुभानेवाले लाग जल हुमा वो लपटा म स बाहर निवाल रह थे और अस्पताल के परिचारिक भाग भागकर उन्ह एम्बुलेस गाड़ियो और वारा म पहुँचा रह थे।

"जल हुमा वा इलाज वरन वे मामले म हम अभी भी असमय है जब इस भयानक अग्नि वा ग्रस्त हुआ, ता मिवेशिन न वहा।

उसवी आँखें सूजी हुई था और होटा पर पपडी जमी थी। उसकी सफेद टापी वही खो गयी थी और अब उसवे बाल रायो की तरह सीधे खडे हुए थे।

इसी परेशानी वे दिन की दोपहर को वोलोद्या ने वार्या वो लेनिन सडक पर जाते देखा। वार्या न उसे दूर से ही पहचान लिया। वह सदा की भाँति कोचवान की बगल मे बैठा था। वार्या ने अपना हाथ जरा ऊपर भी उठाया, पर हिलाने की हिम्मत न कर पाई। वोलोद्या के चेहरे पर बेहद परेशानी और कठोरता झलक रही थी।

पतझर के दिनो की पढाई शुरू होते होते वोलोद्या न बहुत-सी बाता को अतीत की चिन्ताएं मान लिया। इन्ही मे सूजन के लक्षण थे, जिन्हे उसन एकबार कविता की भाँति मुँह जबानी याद कर लिया था—कालोर, डोलोर, टयमर, रूवोर एत फुक्तिसओलेसा। इनका अर्थ था—जलन, दद, अर्बुद, लाली और काय-बाधा। उसका यह विश्वास भी कि किसी विषय का सार-तत्त्व आसानी मे समझा जा सकता है, बीती बात बन चुका था। मध्ययुगीन चिकित्सा प्रणाली की पहेलियाँ और डाक्टर पारासेलसस के बारे मे वाद विवाद भी अतीत की कहानी हो गया था। पारासेलसस दिल की शक्लवाले पत्ता स दिल का और गुर्दे की शक्लवाले पत्ता स गुर्दे का इलाज किया करता था। शव परीक्षा कक्ष के भारी दरवाजे को देखकर जिस पर यह लिखा हुआ था—'यहाँ मृत्यु जीवितो की सहायता करती है," उसके दिल मे जो डर पैदा होता था वह बहुत पहले ही उससे निजात पा

चुका था। अब इस कक्ष मे वह आत्मविश्वास और अपने को पूरी तरह शान्त अनुभव करता। यहा मौत उसके लिये रहस्य न रहकर "कलमुही चुडल" बन गई थी, जिससे हर दिन चौकस रहना और मोर्चा लेना जरूरी था। पर विजय को कैसे सुनिश्चित किया जाये?

शव देखकर अब वोलोद्या भयभीत नही होता था। पर एक दिन शव-परीक्षा कक्ष की मेज पर एक उन्नीस वर्षीय नौजवान खिलाडी का सवलाया हुआ और शानदार शव देखकर उसके दिल की बहुत बुरी हालत हुई। उसे लम्बे और स्वस्थ जीवन के लिये तयार किया गया था। उसकी जान क्यो नही बचायी जा सकी? उस "कलमुही चुडैल" की क्यो जीत हुई? कब तक डाक्टर आहे भरते और हाथ झटकते हुए बेकार ही यह कहते रहगे कि विज्ञान अपनी निहित शक्तिया से अभी तक अनजान है?

वह बहुत कुछ पीछे छोडकर आगे बढ चुका था पर अभी कितने दरवाजे उसे खोलने थे और क्या कुछ उनके पीछे छिपा हुआ था?

अब वोलोद्या ने जवानी के दिनो की कट्टरता और निर्णायकता स अपने प्रोफेसरो और अध्यापको को समझदार और बुद्धू की काटियो मे बाट दिया। पाच ठीक ही कहता था कि मानवजाति को लेव तालस्तोय, चायकोव्स्की, मेन्देलेयेव, लोमोनोसोव, मयाकोव्स्की और शोलाखाव की इसलिये जरूरत है कि वे ऐसे प्रतिभाशाली गिने गिनाये हैं, जबकि सभी डाक्टर प्रतिभाशाली नही हो सकते। "सभी क्षेत्रो के लिये उनकी सख्या काफी नही रहगी। समझे, मेरे गममिजाज दोस्त!"

साल के आरम्भ मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पडा। "अपना आप जलाकर दूसरो को रोशनी देना' इतना आसान नही था, जितना कि लगता था। सबसे पहले तो यह जानना जरूरी था कि ऐसी "रोशनी" कैसे दी जाये, जो कुछ काम आ सके। पर तब क्या किया जाये अगर मिकेशिन जसा अनुभवी अच्छा और ईमानदार डाक्टर भी गर्मी के दौरान उससे बार-बार यह कहता रहता था—

"सहयोगी, यह अभी हमारे बस की बात नही है।'

या फिर यह—

"हम इस प्रक्रिया को नही रोक सकते।"

अथवा यह—

"वोलोद्या क्या बेकार अपने को परेशान कर रहे हैं, हम तो अभी जुकाम का इलाज करने में भी असमर्थ हैं।"

पोलूनिन, जो बेहद समझदार व्यक्ति थे, यह पूछे जाने पर कि मरीज़ के लिये क्या दवाई लिखी जाये, कभी-कभी जवाब देते—

"कुछ भी नहीं। बीमारी अपने आप ही ठीक हो जायगी।"

पोलूनिन ने उस पोलिश नारी के सिलसिले में ऐसा जवाब दिया था, जो नील नयना और गौरवदना थी तथा पोलूनिन की क्लीनिक में वोलोद्या जिसकी देखभाल कर रहा था।

'बीमारी अपने आप ही ठीक हो जायगी।"

"पर कैसे?' वोलोद्या ने हैरान होकर पूछा।

ऐसे ही!'

' खुद-ब खुद?"

"इसे अच्छी सतुलित खुराक आराम, नीद और आपके साथ जब तब कुछ गपशप करनी चाहिये। आप समझदार, पर कुछ अधिक ही गम्भीर नौजवान हैं। कुछ समय बीतने पर यह बीमारी ठीक हो जायेगी। आप कुछ आपत्ति करना चाहते हैं?"

आपत्ति करने को कुछ नही था।

खुद प्रोफेसर झोवत्याक

कुछ अजीब बातो की ओर वोलोद्या का ध्यान गया, जिससे उसे परेशानी हुई। "इलाज' के सिलसिले मे जितनी अधिक दौड धूप की जाती जितनी अधिक विविधतापूर्ण चिकित्सा होती जितनी अधिक बार दवाई पिलाई जाती, रोगी उतना ही अधिक आभार मानता। दूसरी ओर, अगर रोगी को कम दवाई दी जाती, प्रयोगशाला सम्बधी तरह-तरह के परीक्षण लगातार न किये जाते, तो रोगी यह शिकायत करते कि उनका बहुत "कम इलाज ' किया जा रहा है, कि "उन्हे कोई लाभ नही हो रहा, कि उनकी उपेक्षा की जा रही है '। वोलोद्या का इस बात की ओर भी ध्यान गया कि मेहरबान" किस्म के डाक्टर ही, वे कुशल ईमानदार और प्रतिभाशाली हो या न हो, सबसे अधिक लोकप्रिय थे। रोगियो को यह भी पसद था कि उनका

डाक्टर "प्रोफेसर जैसा" प्रतीत हो, उसकी कटी-छटी बढ़िया दाढ़ी हो और वह उंगलियों में अंगूठियां पहने हो। जब अपने धंधे में शान-बान का महत्त्व समझनेवाला कोई डाक्टर ठाठ से कमरे में प्रवेश करता तो रोगियों पर बहुत प्रभाव पड़ता।

"आह, कैसे प्रभावशाली आदमी हैं!" वालोद्या ने एक बार एक बूढ़ी बीमार औरत को झोवत्याक की प्रशंसा करते हुए सुना। वह खासा मूर्ख और अत्यन्त आत्मविश्वासी आदमी पर लोकप्रिय डाक्टर और सिर से पैर तक प्रोफेसर था। "वे औरों जैसे नहीं हैं! इन्हें मैं असली प्रोफेसर मानती हूं!"

मधुर मुस्कान, बालक से प्यार भरी छेड़छाड़, कोई छोटा-मोटा मज़ाक, झोवत्याक ऐसे सभी उपायों का उपयोग करता और अपनी लोकप्रियता बनाये रखने के लिये कोई कोर-कसर न उठा रखता। उसे देखकर रोगी ऐसे ही खिल उठते जैसे सूरज को देखते ही सूरजमुखी के फूल। दूसरी ओर, धीर-गम्भीर, चुपचाप और उदासमुख सर्जन पोस्तनिकोव को, जिसके पास कोई भी उपाधि नहीं थी, अक्सर वही लोग निन्दा-बुराई करते जिन्हें वह ऐसी मुसीबत से निजात दिलाता था, जहां प्रोफेसर झोवत्याक नज़दीक फटकने की हिम्मत भी नहीं करता था। जब जोखिम का मामला होता, तो वह पोस्तनिकोव को ही आगे करना बेहतर समझता। बहुत इने-गिने और ऐसे रोगियों के सिलसिले में, जिनके बचने की कोई उम्मीद न होती, जब पोस्तनिकोव कोई "भूल" करता, तो प्रोफेसर झोवत्याक इत्र लगी चांदवाले अपने सुन्दर सिर को भर्त्सना में देर तक हिलाते हुए मीठी-कोमल आवाज़ में उसकी आलोचना करता।

"आह, सहयोगी, आपने यह बेसमझी का काम किया!" वह कहता। "जो आपरेशन करने के लायक नहीं था, आपको उसका आपरेशन करने की क्या सूझी थी? हमारे आंकड़े खराब करने की क्या ज़रूरत थी? वह अपने सगे-सम्बन्धियों के बीच बड़े चैन से घर पर ही चल बसता, पर नहीं, आपको तो अवश्य ही मेरे अच्छे रिकार्ड पर पानी फेरना था। आपको इससे क्या लाभ हुआ? नहीं, मेरे दोस्त, आप फिर कभी ऐसा मत कीजिये, मेरा नाम नहीं बिगाड़िये। मेरी प्रतिष्ठा का तो ख्याल रखिये। एक बार फिर ऐसी ही जोखिम उठायेंगे

तो लोग खुद मेरे ही बारे मे बात करने लगेंगे, कहेगे कि प्राफ्सर झोवत्याक ही लापरवाह है। मैं अपने नगर या प्रदेश म काई ऐरा गरा तो हू नही और आपके कारण मैं अपनी इज्जत को धूल म नही मिलाना चाहता।"

गानिचेव या पोलूनिन से भिन्न, झोवत्याक अपना परिचय दत हुए हमेशा अपनी उपाधि पर जोर देता हुआ कहता—

"प्रोफेसर झोवत्याक।"

वह कभी-कभार और भद्दे ढग से आपरेशन करता, पर उसका खूब दिखावा करता और काम करते हुए जाने मान वाक्य दोहराता रहता, जिनके बार मे पोलूनिन ने एक बार गुस्से म आकर कहा था कि वह "उद्धरणो को उद्धत करता रहता है"। अगर पोस्तनिकाव उसकी बगल मे न हाता, तो झावत्याक काई छाटा-सा आपरेशन भी न करता। वह तो अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी के समान प्रतीत हाता। काई भी यह दख सकता था कि पोस्तनिकोव घबराहट से उसे देख रहा है, कि हर किसी को, यहा तक कि खुद झावत्याक को भी शम आ रही है। आखिर वोलोद्या ने एक बार उसे भद्दे-से आपरेशन के बाद अजीब से अदाज़ म यह कहते सुना—

"बुढापा बुरी बला है कभी वह भी जमाना था"

"कौन-सा जमाना था?" पास्तनिकोव ने रुखाई स पूछा।

कभी-कभी पोस्तनिकोव अपनी हल्की नीली और कठोर आखा को अपने सचालक के असीरियाई दाढीवाले चमकते दमकते चेहरे पर दर तक गडाये रहता। उस समय काई भी यह नही कह सकता था कि वह क्या सोच रहा है। धारा प्रवाह अपनी बात कहता और खुद अपनी ही आवाज़ मे रस विभोर होता हुआ झोवत्याक अचानक चुप हो जाता, उसके चेहरे पर घबराहट और परेशानी अकित हो जाती, शब्द अधूरे ही रह जाते और वह झटपट बाहर चला जाता।

झोवत्याक को पोस्तनिकोव फटी आखो नही भाता था, पर उसके बिना उसका काम नही चलता था। पोस्तनिकोव ही अस्पताल की सारी जिम्मेदारी सम्भालता था, वह विद्यार्थियो को अभ्यास कराता और कठिन ऑपरेशन करता। ऐसा भी सुनने म आया था कि वही अपने सचालक यानी झोवत्याक के लेख लिखता था। झोवत्याक बेहद व्यस्त

व्यक्ति था। वह सभी जगह परामश देता था (जाहिर है कि जहा मामला पेचीदा होता, वह गुपचुप पोस्तनिकोव को साथ ले जाता), अपने अधिकारियो के साथ वह शिकार करने जाता, बैठका और सभाओ म गम्भीर तथा कामकाजी ढग मे हिस्सा लेता जब उमे अपना कोई अहित होता दिखाई न देता, तो कभी कभी चुभती हुई बात भी कह देता, डाक्टरा के नगरीय और प्रादेशिक मम्मेलना का उदघाटन भी करता, उसे यह भी मालूम था कि किसी सभा-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कितनी दर तक तालिया बजानी चाहिय और अपन सभी भाषणा को इस तरह आरम्भ करता—

"प्यारे साथियो! सबसे पहले तो मैं सेचेनोव डाक्टरी सस्थान क वज्ञानिको की ओर से आपको नमस्कार करता हू!" (इतना कहकर वह तालिया बजाने लगता और फिर अपनी लम्बी तथा तग नाटबुक का पष्ठ उलटता)। "मै आकडो से शुरू करता हू। १६११ मे हमारे सारे प्रदेश मे केवल १२२ पलग थे "

"जरा गौर से सुनिये!" पोलनिन कहते। "अब आप कोई आश्चयचकित करनेवाला समाचार सुनेंगे। यह तो ज़ाहिर ही है कि जब निकोलाई सत्तारूढ था, उस समय स्वास्थ्य रक्षा की ओर इतना ध्यान नही दिया जाता था, जितना सोवियतो के अन्तगत!'

पोलूनिन की बात हमेशा सही निकलती। झोवत्याक घिसी पिटी बाता को बार-बार दोहराता, प्रादेशिक वित्तीय विभाग के सचालक तक के छोटे माटे अधिकारियो की हल्की सी आलोचना करता जबकि अध्यक्षमण्डल के अय सदस्य फुसफुसाकर बाते और विचारो का आदान-प्रदान करत रहत और श्रोतागण भी लगातार खुसुर पुसुर करते जाते। झोवत्याक किसी भी बात की परवाह किय बिना अस्पताल के पलगा के बारे मे अपना पाठ पढता जाता, वष भर म जितने पलगा का उपयाग होता, उनके औसत को साल के दिना से गुना करता, देश भर म उपलब्ध पलगो का विश्लेषण करता, अस्पताल के पलगा की किस्मो का बखान करता और अपन भाषण के समय को तीन बार बढवान के बाद आखिर सिर ऊचा किये हुए मच स नीचे उतरता।

"वह ऐसा क्या करता है?" वोलोद्या न पोलूनिन से एक बार पूछा।

"तारपीन का भी कुछ उपयोग तो होना ही है," पालूनिन ने पहेली की शक्ल म जवाब दिया।

"तारपीन यहा कहा से आ गया?"

"जानत हो कि कोरमा प्रुत्काव ने 'चिन्तन के फल' म क्या लिखा है–'जाश की जय होती है'। उसने ऐसी ही एक अन्य स्वत सिद्ध बात कही है–'हमेशा डीग मारो'।" पोलूनिन ने उदासी स मुस्कराकर दूसरी ओर मुह कर लिया।

झोवत्याक विद्यार्थिया की, और विशेषत ऐसे विद्यार्थियो की, पीठ ठोकता रहता, जिन्ह समझदार माना जाता था। वह येव्गेनी स्तेपानोव के साथ भी बहुत अच्छी तरह पेश आता, क्योकि वह सस्थान के समाचारपत्र का सम्पादक था। वह खुश्क पीच को भी खुश रखने की कोशिश करता, क्योकि किसी के भूक असन्तोप प्रकट करन पर भा झोवत्याक परेशान हो उठता। पर सबसे अधिक तो वह थपथपाता वोलोद्या की पीठ, क्योकि उसे बहुत ही योग्य विद्यार्थी माना जाता था और इसलिये भी कि वोलोद्या उसे शत्रुता की भावना से देखता था। झोवत्याक के बेहद स्नेह प्रदशन के बावजूद वोलोद्या को इस बात बातूनी प्रोफेसर को समझने मे देर न लगी और गमसुम तथा धीर गम्भीर पास्तनिकोव के प्रति उसे जितने अधिक प्यार की अनुभूति होती, झोवत्याक के प्रति उतनी ही अधिक घृणा की। पर मुमकिन है कि वोलोद्या ने झोवत्याक को बहुत अच्छी तरह से न समझा हो। शायद स्वाभाविक तौर पर हर चीज के प्रति सजग होने के कारण वोलोद्या का ध्यान मजाक की हद तक जानेवाली उस अतिशयोक्तिपूण नम्रता की ओर गया था, जो पोलूनिन सर्जरी क्लिनिक के सचालक के प्रति प्रकट करते थे।

वृद्ध झोवत्याक यह नही समझ पाया कि पोलूनिन ऐसी नम्रता उन लोगा के प्रति ही व्यक्त करते थे, जिन्ह बेहद घृणा की दृष्टि म दखते थे। पर वोलोद्या तो गानिचेव और पालूनिन को बहुत अच्छी तरह समझता था। उसने इस बात की ओर ध्यान दिया कि झोवत्याक की बात सुनते हुए वे कसे एक-दूसरे की ओर देखत हैं। एक बार बगीचे मे अपनी मनपसद बेंच पर बठे हुए व जा बात कर रहे थे,

वह भी उसके कानो मे पड गई और वोलोद्या न उसकी तरफ विशेष ध्यान दिया।

"हम उसे उचित तौर पर ही उपक्षा की दृष्टि से देखते है," गानिचेव ने ऊब भर अदाज मे कहा। "उपेक्षा ऐसी घणा को कहते हैं, जो शान्ति से अनुभव की जाती है।"

"क्या वट्टत जल्द ही हम शान्ति की अवस्था मे नही पहुच गये है?" पोलूनिन ने झल्लाकर पूछा। "क्या हम समाज के इस लोकप्रिय तिक्डमवाज के प्रति ऐसा जरूरत से ज्यादा ही बेसरोकारी का रवैया नही अपना रहे है?"

"ओह, हटाइये भी " गानिचेव न लापरवाही स जवाब दिया। "हम लाग ईमानदारी से अपना काम कर रहे हैं, आप और क्या चाहते है? आप जानते ही है कि उससे उलझने म कितना अधिक समय नष्ट हो जायेगा।"

वोलोद्या उनके निकटवाली बेच पर बठा था। यह साचते हुए कि कही वे ऐसा न समझ ले कि वह चुपके-चुपके उनकी बाते सुन रहा है, वह खास दिया। पालूनिन ने लापरवाही से उसकी ओर देखा और ऐसी बात कही, जो वोलोद्या के मानस पटल पर बहुत समय के लिये अकित होकर रह गई।

"हमारी सबसे बडी मुसीवत है उदासीनता। मैं कम उदासीन हू और आप अधिक। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि वह बेहद कमीना है और हमें निदयता से उस पर बडी चोट करनी चाहिये। किन्तु हम क्या करते है? बस हस देते है।"

वोलाद्या न निष्कप निकाला—"उदासीनता। यह उदामीनता ही है। पोलूनिन की बात सही है। क्या उम्र अधिक होने के कारण ही लोग ऐसे थक जाते है या किसी दूसरे कारणवश? पर झोवत्याक तो हसता चहकता रहता है। वह तो शायद डक मारना भी जानता है।"

इसी दिन से वोलाद्या के लिए गानिचेव का प्रकाश मद और पोस्तनिकोव का प्रखर होन लगा। इस ढग के नियमनिष्ठ, कठोर और ऊपर को मुडी हुई पकी मूछावाले व्यक्ति का ध्यान भी वोलोद्या की ओर गया। पोस्तनिकोव उसे केवल उपस्थित ही न रहने देता, बल्कि अपने काम मे सहायता करने को भी कहता, निरतर यह काम

सिखाता, जिसे इतने बढिया ढग से करता था कि वोलोद्या का बहद ईर्ष्या होती।

पोस्तनिकोव के बारे म वोलोद्या की प्रशसा की उसके सहपाठियो पर विभिन्न प्रतिक्रिया हुई। "वह असली आदमी है," पीच न कहा। "पर उसके पास कैंडीडेट की उपाधि भी क्या नही है?" यूस्या याल्किना ने कहा। येव्गेनी स्तेपानोव ने धीर धीरे कहा—"वालोद्या, तुम तो हमेशा किसी न किसी पर लट्टू होते रहते हो! उसमे काई खास बात नही है पर यह मानना पडेगा कि वह असली तौर पर काम करनेवाला एक अच्छा डाक्टर है। किन्तु यूस्या की बात बिल्कुल सही है। *यह बडी अजीब सी बात है कि हमारे देश मे प्रगति की जो* सम्भावनाए है, उन्ह देखते हुए उसके पास कैंडीडेट की उपाधि भी नही है। बहुत मुमकिन है कि उसकी जीवनी मे कुछ 'सफेद' धब्बे हैं?" स्वेत्लाना ने यह कहा कि उसे श्रोवत्याक इसलिये पसद है कि वह खुशमिजाज है, उसमे घमड नही है, कि वह विनम्र है। श्रोगुर्त्सोव ने *पोस्तनिकोव की हिमायत की, साशा* पोलेश्चूक ने *स्वेत्लाना* को किसी कारण वेपेदे की लुटिया की सजा दी। मीशा शेरवुड ने चुप रहने मे ही अपनी भलाई समझी। वह अब अपनी जवान का लगाम दिय रहता था। इसके अलावा पोस्तनिकोव तो नही, श्रोवत्याक ही उन्ह परीक्षा के अक देता था।

पोस्तनिकोव

यह बात उस दिन से आरम्भ हुई, जब पोस्तनिकोव पोलूनिन के विभाग म परामश देने आया, सफेद रोगन किय हुए स्टूल पर बठा और भूमापक मरीज दोब्रोदोमोव की जाच करने लगा। पाच मरीजोवाले वाड मे एकदम खामाशी छायी हुई थी। पोलूनिन ने उन्ह पहल से ही यह कह दिया था कि वे बिल्कुल कोई शोर न हाने दे। पोस्तनिकोव उगलियो से रोगी के शरीर का जाच रहा था। उसे औजारो मे यकीन नही था। *अपनी भावशून्य आखा का सिकोडकर कभी वह जोर से और* जल्दी जल्दी उगलिया चलाता और कभी बहुत ही धीरे धीरे। इसी तरह काई आध घटा बीत गया। नीरस और एक ही ढग की थपथप से

ऊब-सी अनुभव हाने लगी थी और वोलोद्या न झल्लाकर यह सोचा— "वह दिखावा कर रहा है, रोब जमा रहा है!"

पोस्तनिकोव अचानक सीधा होकर बैठा, उसने नस के हाथ से आयोडीनवाला शीशे का वतन लिया और दोव्रोदोमोव की नीली त्वचा पर एक समकोण बना दिया।

"यहा पीपदार फोडा है। इसे मेरे सजरी के वाड मे भेज दीजिये।"

पोस्तनिकोव उठा, उसने सावधानी से मरीज को ढक दिया और अपना सिर ताने हुए वाड से बाहर चला गया।

"देखा आपने?" पोलूनिन ने प्रशसा करते हुए वोलोद्या से कहा।

"हा, देखा," वोलोद्या ने यत्रवत जवाब दिया।

"क्या देखा?"

"कमाल होते देखा!"

अगले मगल को दोव्रोदोमोव का आपरेशन किया गया और पोस्तनिकोव का राग निदान बिल्कुल सही निकला।

पालूनिन ने वोलोद्या को सलाह दी—

"अब पोस्तनिकोव से यह सीखिये कि ऐसे ऑपरेशन के बाद रागी की कैसे देखभाल की जाती है। १६वी शताब्दी मे अम्ब्रुआज पारे कहा करता था—'मैंने ऑपरेशन कर दिया, अब भगवान उस घाव को ठीक करे'। आप भगवान से शिक्षा लीजिये। पोस्तनिकाव बहुत गहराई मे जाता है, महज तजरबे नही करता। वह तो बहुत ही सोच समझकर कदम उठानेवाला सजन है। उससे शिक्षा लेने का अथ यह है कि आप हर तरह की परिस्थितियो मे काम करना सीख जायेंगे और यह बहुत लाभदायक रहेगा। कौन जानता है युद्ध ही छिड जाये! हर जगह पर तो एक्स रे की मशीन का होना तो सम्भव नही। मैं आपको चेतावनी भी दे देना चाहता हू अगर पोस्तनिकाव कुछ बुरी तरह से पेश आये, तो आप इसकी परवाह नही कीजियेगा। वह निपुणता प्रिय व्यक्ति है और उसे यह कतई पसद नही कि कोई उसके रास्ते मे बाधा बने। बेकार की जिज्ञासा उसे फूटी आखो नही सुहाती। जो कुछ भी सम्भव हो, उसमे सीख लीजिये। मैं तो यह कहूगा कि जितना भी हो सके, उसे निचोड लीजिये और इसके लिये आप हमेशा उसके आभारी रहगे '

वोलोद्या ने अपने सहपाठियों के सामने पावलूनिन के शब्द दोहराये।

"आह नहीं, मेरे दोस्त मैं अपने को ऐसी परिस्थितियों में काम करने को तैयार नहीं करना चाहता, जहां एक्स-रे की मशीन भी न हो," पत्योनी ने चिल्लाकर कहा। "वास्तव में मैं तो ऐसी परिस्थितियों की कल्पना ही नहीं कर सकता। कुल मिलाकर, तुम्हारे पावलूनिन का दृष्टिकोण बड़ा अजीब-सा, कुछ बहुत ही ..."

"फिर वही बात?" पीच ने बिगड़ते हुए कहा।

'हां फिर!' पत्योनी ने चुनौती के स्वर में जवाब दिया। "हां, फिर! अब तक गानिचेव और पावलूनिन थे और अब पास्तनिकोव की और वृद्धि हो गई है। वे हमारे लोग नहीं हैं, समझे! हमारे नाग नहीं हैं! मैं तो ऐसा ही समझता हूं!"

लगभग दो सप्ताह बाद पोलूनिन ने वालोद्या से पूछा—

'कहिये, निचोड़ रहे हैं न?'

'हां, निचोड़ रहा हूं।'

"आसान है या मुश्किल?'

"काफी मुश्किल।"

"इसीलिये इतने दुबले हो गये हैं।"

"पर मैं तो अभी भी इतना कम जानता हूं," वोलोद्या ने असन्तोष प्रकट किया। "बहुत ही कम जानता हूं!"

पोलूनिन ने अपनी बरसाती के ऊपर तक बटन बंद किये, वोलोद्या की ओर अपना बड़ा-सा और गर्म हाथ बढ़ाकर कहा—

"अच्छा, मैं चल दिया। यह कोई बात नहीं कि आप बहुत कम जानते हैं। आपका दोस्त स्तेपानोव तो बहुत कुछ जानता है और उसका सारा ज्ञान साधारण है।"

वोलोद्या ने गहरी सांस ली और थका-हारा-सा मेपल वृक्षों की वीथिका पर चलते हुए सर्जरी विभाग की कम ऊंची इमारत की ओर चला गया। वहां, प्रयोगशाला में एक तिरंगा दोगला कुत्ता—शारिक—पिंजरे में बंद था। वोलोद्या उस पर तजरबे करता था।

दरवाजा फटाक से बंद हुआ, वोलोद्या ने बत्ती जलाई और कुत्ते को आवाज़ दी। शारिक ने अपने पिंजरे में से हल्की सी भूंक के साथ जवाब दिया और धीरे से पूंछ हिलाई। "मैं तो इसे केवल यातना

ही देता हू और यह है कि मेरा स्वागत करता हुआ पूछ हिलाता है।" वोलोद्या ने गुस्से से सोचा। जब उसे किसी पर दया आती, तो वह अवश्य ही चल्ला उठता।

प्रयोगशाला की खामोशी में उसे पत्तागोभी के डठल चबाते हुए खरगोशों की आवाज सुनाई दे रही थी, सफेद चूहे शीशे के मरतबानो म भाग दौड रहे थे और जिस कुत्ते पर मीशा शेरवुड तजरबे कर रहा था, उसने गहरी सास ली। पोस्तनिकोव बगलवाले कमरे मे काम कर रहा था। वोलोद्या को उसके "हा तो, हा तो" शब्द सुनाई दे रहे थे। पोस्तनिकोव यहा कम से कम दो घटे बिताता था, तजरबे करता था, सोचता था और फिर तजरबे करता था। "मेरे सचालन मे काम करनवाले अस्पताल म ' वोलोद्या को झोवत्याक के शब्द सुनाई दिये।

शारिक घसिटता हुआ पिजरे के दरवाजे तक पहुच गया। वह अपने घावो को चाटता जाता था और दद से कापकाप उठता था।

"अरे उल्लू, बाहर आ न!" वोलोद्या फुसफुसाया। "मैं तेरे लिये कटलेट लाया हू और कुछ चीनी भी। ले, शारिक, यह ले!"

खुद वोलोद्या को भी बहुत भूख लगी थी। सच तो यह है कि वह कटलेट, बल्कि यह कहना चाहिये कटलेट सैंडविच अपने लिये लाया था। पर चूकि शारिक ने रोटी खाने से इनकार कर दिया और वह ही दोनो मे से अधिक कमजोर था, इसलिये वोलाद्या ने उसे कटलेट द दिया और खुद पाव रोटी खाने लगा।

"ओह, यह भी पसद नही," वोलोद्या ने कहा। "तो अब कटलेट भी जनाब का पसद नही आता!"

शारिक ने उदासीनता से कटलेट को सूघा, मुह मोडकर दूर हट गया और सामनेवाले पजो पर सिर रखकर अपनी भीगी हुई और शोकग्रस्त आखें मूद ली। वोलोद्या ने जरा-सा कटलेट तोडा, उसे उगलियो से मथा और कुत्ते के मुह मे डाल दिया। इसी समय अपने रबड के दस्ताने उतारता हुआ पोस्तनिकोव अदर आया।

मानकिन बीमार पड गया है, उसे टानसिलाइटिस है," उसने कहा। (मानकिन अस्पताल का पुराना नौकर था, जो उन जानवरो को खिलाता पिलाता था, जिन पर तजरबे किये जाते थे)। "जानवरो

12

को खिलाया पिलाया नही गया। मुझे और आल्ला का आज इस भानमती के कुनवे का खिलाने पिलाने म काफी सिरदर्दी करनी पडी "

सुदर आला ने पास्तनिकोव के कधे की आट स वोलोद्या का आख म इशारा किया। पोस्तनिकोव ने आखिर झटके के साथ अपने वाये हाथ का दस्ताना उतारा, उसे मेज पर फेंका और चूहावाले शीश के वतन पर नाखून रगडते हुए वोला–

"वोलोद्या, मैं तो आपको यही सलाह देता हू कि शारिक का घर ले जाइये। आपने उसकी जो चीरफाड की है, उसके वाद आप उसे यहा रखकर स्वस्थ नही कर सकेंगे। घर पर शायद आप फिर से उसकी ताकत लौटा सके। खैर, यह आपका निजी मामला है। शेरवुड न तो यह जवाब दिया था कि उसके मा वाप को कुत्ते पसद नही है।"

वालोद्या उस शाम का शारिक को घर ले आया और उसने वार्या का टेलीफोन किया।

"स्तेपानोवा," उसने पास्तनिकोव जैसी रूखी आवाज मे कहा, "तुम फौरन यहा आ जाओ, यह वहुत जरूरी है।"

"पर मुझे तो अपना काम " वाया ने कहना शुरू किया, किन्तु वालोद्या ने उसकी बात बीच मे ही काटते हुए कहा–

'तुम्हारा काम तुम खुद जानो, पर यहा जरूर और फौरन चली आओ।'

बूआ अग्लाया घर पर नही थी। वोलोद्या ने अपनी "माद" म एक पुरानी रजाई पर शारिक को विठा दिया। कुत्ता सिर से पैर तक कापता, अपने घावो को चाटता और लगभग इसानो जैसी आवाजें निकालता रहा। वोलोद्या ने थोडा सा दूध गम किया और उसम कुछ चीनी और एक अडा मिलाया। शारिक ने दूध सूघा और मुह फेर लिया।

"'ऐसी स्थिति मे डाक्टर को कब्र खादनेवाले के हाथ म मामला सौंप देना चाहिये,'' वोलोद्या को किसी पुरानी किताब म पढा हुआ यह वाक्य याद हो आया। उसने घृणा से 'शरीर रचना विज्ञान के पाठ' चित्र की ओर देखा। दे ला दूसरो को प्रकाश, जबकि कुत्ते का भी इलाज नही कर सकता! सो भी तब, जब यह स्पष्ट है कि उसे क्या तकलीफ है।

वह अभी शारिक पर झुका हुआ उबले हुए ठडे आलू खा रहा था कि वार्या आ गई।

"कुत्ता!" वह खुशी से चिल्ला उठी। "तुम मेरे लिये कुत्ता खरीद लाये!"

"चिल्लाओ नही!"

"क्या यह बीमार है? तुम इसका इलाज कर रहे हो? ओह, वोलोद्या, मेरे लिये इसे भला चगा कर दो!" वार्या फिर जोश स चिल्लाई। "यह बढिया नसल का है न?"

वह वोलोद्या की बगल मे बैठ गई। 1366

"यह मुझे काटेगा तो नही?"

"मैंने इसकी अतडिया का बहुत बडा हिस्सा काट डाला," वोलोद्या ने उदासी से कहा। "इसके अलावा मुझे कुछ और भी करना पडा। फिर भी वह मुझे अपना दोस्त मानता है और मेरे हाथ चाटता है। शायद केवल यही एक ऐसा जीवित प्राणी है, जो मुझे डाक्टर समझता है।"

"और मैं? क्या मैं तुम्हे डाक्टर नही समझती?"

"पर खैर, मुझे शारिक को ठीक करना है और तुम इस काम मे मेरी मदद करोगी। समझ गइ?"

"हा।"

"तो, इसकी देखभाल करो। मैं तो रात भर अस्पताल मे काम करुगा। अगर कुछ गडबड होन लगे, तो सजरी विभाग मे मुझे टेलीफोन कर देना। टेलीफोन नम्बर लिख लो "

वार्या ने आज्ञा का पालन करते हुए टेलीफोन नम्बर लिख लिया। वालोद्या ने दाढी बनायी, स्नान किया और वार्या द्वारा तवे पर तैयार किये गये अजीब से भोजन के बाद, जिसे उसने "कल्पना" की सज्ञा दी, वह वार्या को नमस्कार कहे बिना ही चला गया। वास्तव म वह मिलन और जुदा होन के समय नमस्कार कहना, हालचाल पूछना, दाढी बनाना और बाल कटवाना तो हमेशा ही भूल जाता था। वह हमेशा ही वह भूल जाता था, जिसे वाया "इन्सान की तरह बर्ताव करना" और येव्गेनी "सावजनिक सफाई के नियमो का पालन करना" कहता था।

दरवाजा फटाक से बंद हो गया। वार्या ने अपनी जेब में कभी की पड़ी हुई मीठी गोली निकाली, उसे नल के पानी से धोया और कुत्ते के मुंह में ठोंस दिया। शारिक ने उसे दातों से चबाया और पूंछ हिलाई। तब वार्या ने दाढ़ी मूछोंवाले रोगी के मुंह के करीब फर्श पर चीनीदान की सारी चीनी उलट दी। शारिक ने चीनी चाटी और कुछ ही क्षण बाद फर्श पर चीनी का एक कण भी बाकी नहीं बचा।

"बहुत अच्छा, बहुत प्यारा कुत्ता है तू! प्यारा, प्यारा, राजदुलारा है तू!" वार्या उसी अजीब और बेहूदा ढंग से गुनगुना रही थी, जैसा कि लोग अपने पालतू जानवर के साथ अकेले रह जाने पर करते हैं। "मेरे प्यारे कुत्ते, अब तू दूध पियेगा, मेरी बात मानेगा, अच्छा मुन्ना बनेगा शारिक! तेरी बढ़िया नई अन्तड़ियां बन जायेंगी। यह ले, मेरे प्यारे कुत्ते, यह ले! अब मैं तुझे शारिक नहीं कहूंगी अब तेरा नाम एंस होगा। समझा? मेरे समझदार, रोबीले और सुंदर एंस!"

वोलोद्या मरहम पट्टी के कक्ष में से एक ट्रालो को बाहर निकाल रहा था, जब रात की ड्यूटी करनेवाली नर्स आल्ला ने उसे टेलीफोन पर बुलाया। रात के दस बज चुके थे और प्राफेसर झोवत्याक की क्लीनिक के रोगी सोने की तैयारी कर रहे थे। इसलिये वोलोद्या ने फुसफुसाकर ही बातचीत की।

"वह खाने लगा है!" वार्या ने चिल्लाकर कहा। "वह खाने लगा है! उसने थोड़ा सा दूध भी पिया है!"

"धन्यवाद," वोलोद्या ने जवाब दिया।

"अब वह शारिक नहीं रहा, एंस हो गया है। मैं उसके नाम के हिज्जे करूं? मैं उसे बाहर ले जाऊं? या शायद वह पुरानी पतीली ही ठीक रहेगी, जो मुझे रसोईघर में से मिल गई है"

'बहुत, बहुत धन्यवाद," वोलोद्या ने कहा और रिसीवर रख दिया।

'वोलोद्या, क्या तुम यह ट्राली यहीं छोड़ दोगे?' अपनी सुंदर आंखों को मटकाते हुए आल्ला ने पूछा। उस मोटी मोटी बरौनियों और रसीले होंठोंवाला यह प्रचण्ड स्वभाव का विद्यार्थी बहुत अच्छा लगता था। "क्या मैं तुम्हें दिखा दूं कि ट्रालियां कहां खड़ी की जाती हैं?"

आल्ला तो वोलोद्या को प्यार ही करने लगी थी, पर इसके बावजूद वह उससे यह अनुरोध करते हुए न झिझकती कि वोलोद्या एक दो घंटे तक उसकी ड्यूटी पूरी कर दे, ताकि वह जरा झपकी ले ले। वह उन लोगों में से थी, जो यह मानते हैं कि तुम चाहे कितना ही जोर क्यों न लगाओ, दुनिया भर के काम तो कभी पूरे नहीं होंगे। वह तो साफ तौर पर यह कहती थी—"अपनी सेहत अपने जिस्म के लिए कहीं ज्यादा जरूरी है।" वोलोद्या इसके जैसी सभी लडकियों को "यूस्या योल्किना की ही टोल के पंछी मानता था। उसे इस बात की हैरानी होती थी कि पोस्तनिकोव को यह एहसास क्यों नहीं होता था। बेशक नपे-तुले ढंग से ही सही, पर वह उसकी प्रशंसा भी करता था, जबकि वह ढोंग कपट की जीती जागती तस्वीर थी।

दो, तीन, चार घंटे बीत गये, पर आल्ला अभी भी सो रही थी। रोगियों के संकेत मिलने पर वोलोद्या उनके पास गया। एक को उसने मार्फिया की सूई लगाई, दूसरे रोगी की उस टांग को आरामदेह स्थिति में टिकाया, जिसका आपरेशन किया गया था, और कुछ देर तक तीसरे रोगी के पास बैठा रहा, क्योंकि रात के समय उसका दिल बहुत डरा सहमा हुआ था। सुबह के ४ बजे ड्यूटी करनेवाली लम्बी और तीखी नाकवाली सर्जन डाक्टर लूश्निकोवा ने पोस्तनिकोव के घर पर टेलीफोन किया और उससे उस फौरी ऑपरेशन के बारे में कुछ परामर्श लिया, जो वह करनेवाली थी। उसने पोस्तनिकोव को टेलीफोन किया था, झावत्याव को नहीं।

वोलोद्या टेलीफोन के इतना निकट खड़ा था कि उसे पोस्तनिकोव द्वारा आम तौर पर कहे जानेवाले ये शब्द "शुभकामना करता हूं!" सुनाई दिये।

आराम करने के बाद ताजादम नजर आनेवाली आल्ला ने फिर से आंखें मटकाई और फुसफुसाकर कहा—

"नींद से बड़ा प्यार है मुझे!"

वोलोद्या ने मुंह फेर लिया।

जब ऑपरेशन चल रहा था, तो पोस्तनिकोव आया। उसकी चुभनेवाली मूंछों के सिरे उभरे हुए थे, उसकी हल्की नीली आंखें बर्फ की तह की भांति मंद और शान्त थीं। वह हमेशा इसी तरह आता

था और जब तक उसकी सलाह, हिदायत या मदद बिल्कुल ज़रूरी न हो जाती, कभी दखल नहीं देता था। अगर सब कुछ ठीक-ठाक होता, तो अपना सिर अकड़ाये और जवानों की भांति सधे कदम रखता हुआ चुपचाप वहां से चला जाता।

उस सुबह को वहां से जाते हुए उसने वालोद्या से कहा—

"कल इतवार है। अगर कोई खास दिलचस्प कार्यक्रम न हो, तो लगभग आठ बजे मेरे घर आ जाना। पर नौ बजे तक तो ज़रूर ही आ जाना!"

"धन्यवाद," वोलोद्या तो ऐसे हक्का-बक्का गया था कि उससे और कुछ कहते ही नहीं बना।

"ज़रूर आना," पोस्तनिकोव ने सिर हिलाकर कहा।

"उसने तुम्हें अपने घर आने को कहा है?" पोस्तनिकोव के जाते ही आल्ला ने पूछा। "अपने फ़्लैट पर?"

"हां।"

"ओह, तक़दीर के सिकन्दर हो!"

हमारी राहें अलग-अलग हैं

वोलोद्या सुबह के छः बजे लौटा और चुपचाप घर में दाखिल हुआ। शारिक लड़खड़ाता हुआ उसकी ओर आया। वार्या कपड़े पहने और हथेली पर चेहरा टिकाये हुए वोलोद्या के बिस्तर पर सो रही थी। मेज़ का लैम्प ढका हुआ था, ताकि फ़र्श पर उस जगह रोशनी न पड़े, जहां शारिक के लेटने की सम्भावना थी। स्वस्थ होते हुए भावी एस के बिस्तर के नज़दीक ही गुलाबी गत्ते से बहुत सुन्दर ढंग से ढकी हुई पुरानी पनीली रखी थी।

"वालोद्या!" बूआ अग्लाया ने धीरे से आवाज़ दी।

वोलोद्या जुर्राबें पहने और इस बात की कोशिश करते हुए कि शोर न हो, बूआ के कमरे में गया। बूआ अग्लाया गर्दन तक अपने को कम्बल से ढंके हुए बिस्तर पर बैठी थी। अपनी तनिक तिरछी और प्यार भरी नज़र से उसने वोलोद्या की ओर देखा।

"थककर चूर हो गये हो न?"

"लगभग।"

वालोद्या ने खुमुर-फुमुर करते हुए पोस्तनिकाव के निमन्त्रण की चर्चा की। घडी भर को उम लगा कि वह भी कुछ कहना चाहती है, पर उसे पूछने का ध्यान न रहा क्योंकि विद्यार्थी जीवन सम्बन्धी और भी ढेरो समाचार उसे अपनी बुआ को सुनाने थे। जब उसकी बात खत्म हुई, तो नीद की बारी आ गई। जैसे ही उसका सिर तकिये का छूता था, उस पर नीद हावी हो जाती थी। नम-नर्म और गुदगुदे बिस्तर म धसते हुए उस बुआ की धीमी धीमी आवाज सुनाई देती रही। पर उसी क्षण वह गहरी नीद सो गया।

"तो शारिक, देखते हो यह हाल है," मावी एस के कान के पीछेवाले सख्त बालो को थपथपाते हुए बुआ अग्लाया ने कहा। "कोई भी तो मेरी परवाह नही करता।"

शारिक ने नाक मे मू मू की और बडी सावधानी म अपने को तनिक खुजलाया। बहुत ध्यान रखता था वह अपना।

"मैं उसकी हर बात म दिलचस्पी लेती हू," कुत्ते का कान सहलाते हुए उसने धीरे से कहा। "ऐसा क्या होता है? अब तुम बेकार कू-कू नही करो, दद थोडे ही होता है। बहुत ही कमजोर दिल के हो तुम।"

वार्या नाश्ते के लिये ठहर गई, यद्यपि उसके दादा मफोदी ने चीख चीखकर टेलीफोन पर यह कहा—

"कोई लडकी किसी पराये घर मे सोये और वही खाये पिये, यह बडी बेहूदा बात है! भगवान की दया से हम भूखे नगे नही है। हमारा अपना घर-बार है और खान पीन की भी कुछ कमी नही है!" बुआ अग्लाया प्रश्नसूचक दृष्टि से वालोद्या की ओर देखती रही—वह पिछली रात की उसकी खबर के बारे म पूछता है या नही? पर नही, उसने नही पूछा। वार्या भूतपूर्व शारिक को, जो अब कुछ सजीव हो उठा था, अपनी ओर पजा बढाना सिखा रही थी। कुत्ते ने उदास मन से जम्हाई ली और मुह फेर लिया।

"तुम्हारे ख्याल म एस ठीक हो जायगा?" वार्या ने वोलोद्या से पूछा।

"हू," वोलोद्या ने जवाब दिया।

वूग्रा ग्रग्लाया ग्रचानक रो पडी। वह ग्राम ग्रौरतो की भाति नही ग्रपने ही ढग से रोई। वह तो हस भी रही थी, पर ग्रासुग्रो की झडी लगी हुई थी।

"यह क्या हुग्रा? क्या बात है?" वालोद्या न कुछ भी न समझते हुए हैरान होकर पूछा। पर ग्रब उससे यह पूछने म कोई तुक नही थी।

उसन उगलियो से ग्रपने मोटे मोटे ग्रासुग्रो को पोछ डाला ग्रौर चुप रही। वार्या न उसे पानी ला दिया। ग्रग्लाया खिडकी के पास गई, उसे चौपट खोल दिया ग्रौर बाहर की ग्रोर मुह करके खडी हो गई। उसके कधे हिलते रह। फिर ग्रचानक ग्रपने को सम्भालते हुए बोली—

"बच्चा, मेरी ग्रोर ध्यान न दो। पिछले कुछ समय मे मैं बहुत थक गई हू। जानते हो कि कभी कभी ऐसा भी होता है—ग्रादमी चलता जाता है, चलता जाता है ग्रौर ग्रचानक बुरी तरह थकान ग्रनुभव करने लगता है। ग्रब मेरे लिय ग्रागे चलना बहुत ही बोझिल हो गया है। नही जानती, निभा सकूगी या नही?"

"क्या निभा सकेंगी या नही?" वार्या न धीरे से पूछा।

"सभी कुछ," ग्रग्लाया ने सोचते हुए जवाब दिया।

ग्रग्लाया ने बरसाती पहनी ग्रौर बाहर चली गई।

वार्या ने ग्रपन को ग्रच्छी लडकी जाहिर करते हुए प्लेटें साफ करनी शुरू कर दी ग्रौर वोलोद्या ग्रखबार पढता रहा। ग्रचानक वोलोद्या को यह स्पष्ट हो गया कि पिछली रात वूग्रा उसे क्या बताना चाहती थी। ग्रखबार म कामेन्का जिले के ग्रध्यापको के सम्मेलन के बारे मे एक टिप्पणी थी। प्रादेशिक जन शिक्षा विभाग की ग्रध्यक्षा ग्रग्लाया उस्तिमेन्को इस सम्मेलन म भाषण देनेवाला मे से एक थी।

"तुम समझी, वार्या?" वोलोद्या ने पूछा। "ग्रोह, मैं बिल्कुल उल्लू हू। जाहिर है कि इस नये काम मे शुरू-शुरू म कठिनाई ग्रनुभव हो रही है। कल जब मैं लौटा, तो ग्राह, कैसी हिमाकत हुई मुझसे "

वार्या न पेशबन्द खोला, प्लेटे पोछने का तौलिया मेज पर फेंका ग्रौर बैठ गई।

"कुछ कहो न?" वोलोद्या ने ग्रनुरोध किया।

"क्या कहू?"

"बहुत बडी भूल तो नही हुई है न मुझसे "

'पर हो ही क्या सकता है," वार्या ने आह भरी। "तुम हो ही ऐसे! तुम्हारे लिये मुख्य चीज यहा नही, वहा है।"

वहा, यहा? किस मुख्य चीज की बात कर रही हो, तुम?'

"बुरा नही मानना!" वार्या ने उदासी से अनुरोध किया। "शायद यह अच्छी चीज है, लेकिन दूसरा पर बहुत भारी गुजरती है, वालोद्या। शायद सस्थान मे तुम स्वार्थी नही हो, पर यहा–भयानकता की हद तक स्वार्थी हो।"

इस बात से हैरानी होती थी कि यह लडकी इतनी समझदार है। उसका तीर बिल्कुल निशाने पर बैठा था। पर अगले ही क्षण उसने ऐसी बेहूदा बात की कि बयान से बाहर।

"पिछले रविवार को एक बजारन ने मुझे मेरी किस्मत बताई। मैं सच कहती हू तुम्हे यकीन नही आता, मैं कसम खाती हू। बहुत ही भयानक बूढी-खूसट थी वह यह लम्बी-सी नाक और तन को चीरती हुई बडी-बडी आखें। उसने मुझे बताया कि खैर, उसने तुम्हारे और मेरे बारे म बताया। उसने कहा कि तुम्ह मेरी जरूरत नही है। हमारी राह अलग अलग है "

वोलोद्या ने कुछ देर बाद ही जवाब दिया। वह उसकी ओर पीठ करके खडा था, खुली खिडकी म से एश के लाल फलो के गुच्छो को एकटक देखता हुआ पतझर की ठडी हवा मे काप रहा था।

"अच्छा, वार्या मान लिया कि मैं जगली हू पर सच कहता हू कि इतना अधिक बुरा नही हू,' उसने दुखी होते हुए कहा। "मैं सवेदनशील हो जाऊगा और और अन्य मीठे-मीठे शब्दो के अनुरूप हो जाऊगा '

"तुम ऐसा कर ही नही सकते।'

'और अगर कर दिखाऊ तो?'"

'नही कर सकते!' वालोद्या की आखो म झाकते हुए वार्या ने दोहराया। 'तब तुम तुम नही रहोगे। तुम कुछ और ही बन जाओगे। मैं यह चाहती हू कि तुम ही दूसरे माग पर न जाओ!'

"और तुम?' वोलोद्या ने पूछा।

"मैं?"

"तुम भी दूसरी राह चुन सकती हो। तुम्हारी उम्र सिरफिरी बजारन ने तो तुम्हें बता ही दिया है कि हमारी राह अलग अलग है।"

वोलोद्या वार्या के पास गया और उसकी कलाई थाम ली। यद्यपि वह उसे प्यार करता था, तथापि शब्दों में इसे कभी व्यक्त नहीं कर पाया था। उसे ज्यादा झेंप तो यह सोचकर होती थी कि मान लो वह उससे कहे कि "मैं तुम्हें प्यार करता हूं" और वह जवाब दे—"तो क्या हुआ?"। वह निश्चय ही ऐसा जवाब दे सकती है। वैसे भी तो वह जानती है कि मैं उसे प्यार करता हूं।

"ऐ लाल बालोंवाली, तुम समझती हो न?"

"क्या?" उसने सरलता से पूछा।

वोलोद्या ने उसकी कलाइयां दबा दीं। बाल खींचने और कलाई मरोड़ने की स्कूली आदतों को उसने अभी तक नहीं छोड़ा था। पर अब इनमें पहले का सा रस नहीं रहा था। अब ऐसी आंख मिचौनी का जमाना बीत चुका था। वार्या के प्रति दया और कोमलता की भावना इन छोकरोंवाली हरकतों से कहीं अधिक प्रबल थी।

"तो तुम कुछ भी नहीं समझतीं?"

"कुछ भी नहीं," वार्या ने अपना मुंह छिपाते हुए उत्तर दिया।

"तो, सम्भल जाओ!" वोलोद्या ने रुखाई से कहा और भद्दे ढंग से वार्या को बांहों में कसते हुए उसे खिड़की के दासे के साथ सटा दिया।

ठंडी हवा उसके गालों पर थपेड़े लगाती हुई एश वृक्ष की शाखाओं को बहुत जोर से झुला रही थी। किन्तु वोलोद्या का इस बात की ओर ध्यान नहीं गया। उसे तो यह भी पता न चला कि वार्या ने अपने हाथ छुड़ाकर उसे हथेलियों से धकेल दिया। उसे तो तभी होश आया, जब वार्या ने ऐन मौके पर उसके मुंह और अपने गुलाबी होंठों के बीच हथेली रख दी।

"कैसी रही!" वार्या बोली।

"बहुत बड़ी मूर्खता है तुम्हारी!" अभी तक हांफते हुए वोलोद्या ने गुस्से से जवाब दिया।

"तुम ढंग से अपने प्यार की मुझसे चर्चा करो," वार्या ने अपने बाल ठीक करते हुए मुस्कराये बिना, बहुत गम्भीरता से कहा। "समझे?

तुम्हारे पास कीटाणुओं, पास्तर और काख के लिये समय है, पर वार्या के लिये नहीं? तुम चिन्ता न करो मैं तुम्हारी खिल्ली नहीं उड़ाऊंगी।"

क्या मैं विवाह का प्रस्ताव करते हुए तुम्हें अपना दिल और हाथ पेश करूं?'

"दिल—वह तो हो, पर हाथ के बिना मेरा काम चल जायेगा।"

"इसका मतलब है कि तुम मुझसे शादी नहीं करोगी?"

"यह मैं खुद तय करूंगी।"

"पर मैं तो यही समझता था कि यह तय ही है।"

"वह कब? वार्या ने हैरान होकर पूछा।

"यह तो बड़ी सीधी सी बात है—हम दोनों शादी कर लेंगे।"

तुम्हारे फुरसत के समय में, ठीक है न, प्यारे वालोद्या?"

वह जल्दी से आंखें झपकाने लगा और उसने कोई उत्तर नहीं दिया। उसका दिल अभी भी जोर से धड़क रहा था। वार्या अपनी कोहनियां ऊपर उठाकर वयस्क नारियों की भांति अपना ऊंचा जूड़ा ठीक करने लगी।

"मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूं, वार्या!" वोलोद्या ने कहा।

"साथी के नाते?" उसने चालाकी से पूछा।

"साथी के नाते भी! वोलोद्या ने कुछ परेशान होते हुए जवाब दिया।

"फुरसत के वक्त?

"आखिर तुम चाहती क्या हो? हाथी दांत की मीनार या कुछ और?"

'मीनार भी बुरी नहीं रहेगी,' वार्या ने नम्रता से सहमति प्रकट की। "किन्तु किसी झील के तट पर लट्ठों की झोंपड़ी और भी अधिक अच्छी रहेगी। वहां हम दोनों ही होंगे और बाद में कुछ नन्हे-नन्हे सफेद मेमने। हम नये नामवाले शारिक को भी अपने साथ ले जायेंगे," वार्या ने आंखों में चमक लाते हुए कहा।

"तुम भावुक होने हुए बहुत डरते हो वोलोद्या। बहुत ही। तुम तो मौत से भी अधिक इससे डरते हो। पर यह बहुत दुख की बात है! जब तुम मेरे बाल खींचते थे या हाथ मरोड़ते थे, तो उसमें भी कुछ रोमांस होता था, पर अब तुम, हमारे यव्गेनी के शब्दों में बड़े 'नपे-तुले' आदमी हो गये हो! तुम मुझसे शादी कर लोगे और बस!

ग्रोह, वोलोद्या, वोलोद्या! कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं तुमसे उम्र मे कही ग्रधिक बडी हू!

"मेरी समझ म कुछ नही ग्रा रहा—क्या मैं इतना बुरा हू?"

"ग्रोह, तुम बुरे नही, बल्कि यह कि ग्रच्छे हो! पर ग्रपने फुरसत के समय मे।"

वोलोद्या की ग्रोर देखे बिना ही वह मेज पर से रोटी के कण साफ करती रही। वालोद्या ने एक बार फिर यह ग्रनुभव किया कि वह हकीकत का कितनी ग्रच्छी तरह भाप लेती है ग्रौर कितने सही ढग से सोचती-समझती है। कितनी ग्रद्भुत चीज है यह किशोरावस्था! वह ग्रभी छोकरी ही तो थी पर फिर भी मानव के भद्दे ग्रौर हास्यास्पद पहलू को पहचान सकती थी, एक शब्द के तीर से तन वेध सकती थी ग्रौर दुखती हुई रग पर चोट करने मे समर्थ थी।

वार्या ने इस दिन उसकी खासी खबर ली।

वह तो केवल कधे झटकता ग्रौर नाक-भौंह ही सिकाडता रहा।

पर कुछ देर बाद वार्या न उसकी प्रशसा की।

"तुम ग्रपना काम कुछ बुरा नही करोगे।"

"बस इतना ही? 'काम कुछ बुरा नही करूगा'?" वालोद्या ने दुखी होते हुए कहा। "जहा तक तुम्हारा सम्बन्ध है, तुम मेरी बात गाठ बाध लो, तुम कभी ग्रपना काम ढग से नही कर पाग्रोगी।"

"इस पाप भरी दुनिया मे सभी तो प्रतिभासम्पन्न नही होते!"

"यह कमीनी बात कही है तुमन।"

"मेरे मुह पर मेरी साधारणता को दे मारना, क्या यह कमीनापन नही है?"

"ग्रब बस करो, नाक मे दम ग्रा गया है," वोलोद्या ने बिगडते हुए कहा।

"तुम एक ग्रौर बात भी जानते हो ग्रपने बारे मे?" वार्या ने ऐसे पूछा, मानो उसने उसकी बात ही न सुनी हो। "जानते हो? तुम बडे निदयी हो! ग्रोह, बहुत ही बेरहम हो। बडी यातना देते हो। मैं ढग से ग्रपना मतलब स्पष्ट नही कर सकती, पर तुम या तो घृणा करते हो या पूजा।"

"तुम्हारी ता मैं पूजा करता हू," वोलोद्या खीझते हुए बडबडाया, "खास तौर पर जब तुम लम्बे लम्बे भाषण नही देती हो।"

शारिक रसोईघर मे आ गया, उसके पजे फर्श पर बज रहे थे। उसने वोलोद्या के पैरो के पास कुछ चक्कर काटे और फिर लेट गया। वार्या ने किसी कविता की दो पक्तिया सदा की भाति गलत ढग से पढी

मैं अगीठी गम करू औ' जाम भरू
अच्छा हो यदि कुत्ता भी कोई ले लू

वह गुस्से मे थी और उसके गाल दहक रहे थे।

'तुम जानते हो कि तुम्हे मेरी किस लिये जरूरत है? जानते हो?' वार्या ने कुछ देर बाद कहा। "वोलोद्या प्यारे, तुम्हे मेरी इसलिये जरूरत है कि मैं तुम्हारी बकवास को तब ही नही सुनती हू जब मुझे दिलचस्पी होती है, बल्कि तब, जब तुम उसे उगलना चाहते हो, सुनाना चाहते हो। मैं अपना और तुम्हारा महत्व भी समझती हू। तुम जो कुछ कहते हो वह दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण होता है। पर मेरी बात तुम्हारे लिये न तो कोई महत्त्व रखती है और न दिलचस्पी। मेरी हर बात का मूर्खतापूर्ण होना लाजिमी होता है। क्या तुम इस बात से इनकार कर सकते हो? अगर जानना ही चाहते हो तो सुनो कि पिछली रात मैंने किसी किताब मे बहुत ही सही शब्द पढे थे–'उनकी दोस्ती मे पतझर आ गई थी ' ये शब्द हम दोनो पर सोलह आने सही घटते है।"

तुम तो अभी बिल्कुल बच्ची ही हो,' वोलोद्या ने दया का भाव दिखाते हुए कहा।

वोलोद्या की यह बात उसे बुरी तरह चुभ गयी। वह गुस्से मे आकर चली गई, उसने तो दरवाजा भी फटाक से बन्द किया। वोलोद्या अपने उदासी भरे विचारो और बीमार कुत्ते के साथ रह गया। खुद अपने साथ न्याय करते हुए उसने अपनी लापरवाही, कठोरता, गुस्ताखी, अभिशप्त स्वार्थपरता और कुछ अपनाया ये साथ नीचता से पेश आने के लिये अपनी कडी आलोचना की। उसने वार्या की तुलना मे कही अधिक कटु शब्दो मे अपनी लानत मलामत की। उसने मगम खाई कि

फिर कभी ऐसा जगलीपन नही दिखायगा। पर क्या यह उसका दोप था कि जब वह अपने को भला-बुरा कह रहा था, उसी समय उसके विचार चुपके-चुपके, मानो फुसफुसाते हुए, उसके दिमाग मे चक्कर काटने लगे? ऐसे विचार, जो उसे बीमारियो के वर्गीकरण और मानवीय शरीर मे रासायनिक तत्त्वो की गडबडी के बारे म बहुत अर्से से परेशान करते रहे थे। तब एक चोर की भाति चुपके-छिप, अपनी हरकत से लजाते हुए उसने किताबो की आलमारी से रासायनिक का एक खण्ड निकाला, ताकि उसमे से एक, केवल एक दिलचस्प पैरा पढ ले। केवल एक ही पैरा, उस विचार को जाचने के लिये जो उसके दिमाग मे था

इसके बाद उसके लिये दूसरी किताब को देखना जरूरी हो गया। जाहिर है कि उसे पता भी नहा चला कि बूआ अग्लाया कब दरवाजा खोलकर अन्दर आई और उसने उसकी "माद" मे आकर पूछा—

"भोलेराम, खाना खाया जाये?"

"हु म म," पुस्तक के पन्ने उलटते हुए उसने कहा।

"वार्या को गये काफी देर हो गयी?"

"किसे?"

पोस्तनिकोव के घर जाते हुए ही उसे इस बात का ख्याल आया कि वह फिर बूआ अग्लाया से उसकी परेशानियो के बारे मे पूछना भूल गया है।

मैंने पी

वोलोद्या ने जैसी कल्पना की थी, स्थिति उससे भिन्न निकली। उसने तो यह सोचा था कि पोस्तनिकोव अपने व्यक्तिगत जीवन मे भी एक सन्यासी का सा कठोर जीवन बिताता होगा, मामूली-सी चारपाईवाले साधारण-से कमरे म रहता होगा, जिसमे एक मेज और कुछ स्टूल रखे होगे और चारो ओर ढेरो ढेर किताबें होगी। "जाहिर है कि वह मुझसे चाय पीने को कहेगा, पर मैं इनकार कर दूगा," वह रास्ते मे सोचता गया।

दरवाजा पोलुनिन ने खोला। वे पेशबन्द बाधे थे, बहुत ही साधारण पेशबन्द, जैसा कि वार्या खाना पकाते समय बाधे रहती थी। गानिचेव

पेशवन्द की जगह तौलिया बाधे थे। वहा वोलोद्या के लिये एक अपरिचित आदमी भी था और वह भी पेशबन्द की जगह प्लेटें पाछन का तौलिया बाधे था। वह मोटा सा और सावला था, उसका कलफ लगा कालर खब अकडा हुआ तथा उसका नाक-नक्शा कालिमक जाति के लागा जैसा था। इन तीना के हाथ और गानिचेव का चेहरा भी आटे स सना हुआ था। "यह इ ह क्या हुआ है?" घडी भर का वोलाद्या को कुछ परशानी भी हुई, पर अगले ही क्षण वह रसोईघर की उस बडी सी मेज के पास जा बैठा, जहा 'पेल्मेनिया' (मास के समोस) बनायी जा रही थी। पोस्तनिकोव गुधा हुआ आटा बेल रहा था और उसने सिर हिलाकर वोलोद्या का स्वागत किया। पोलूनिन ने कहा—"वोलोद्या निकोलाई यव्गेयेविच से तो शायद आप परिचित नही हैं?" सावले व्यक्ति ने तन चीरती पैनी नजर से वोलोद्या की ओर दखा और कहा—

"मिलकर बहुत खुशी हुई। नमस्ते। मैं बागोस्लोव्स्की हू।"

वोलोद्या को नाम परिचित सा लगा। हा, उसे अब याद आ गया था। उसने पोलूनिन और पोस्तनिकोव के मुह से अक्सर यह नाम सुना था और नगर म भी उनकी चर्चा होती रहती थी, क्योकि बोगोस्लोव्स्की चोर्नी यार अस्पताल के मुख्य चिकित्सक और प्रधान सजन भी थे। घुटे हुए सिर और देहाती से लगनेवाले इस डाक्टर के बारे मे उसे बहुत सी दिलचस्प बाते सुनने को मिली थी। अब वोलोद्या इस डाक्टर को ध्यान से देख रहा था जि ह प्रशसा के मामले म बेहद कजूस पोलूनिन ने कभी 'प्रभु प्रदत्त प्रतिभावाला' व्यक्ति कहा था।

इसी बीच उ हान अपनी बातचीत के तार जोडते हुए उसे आगे बढाया।

'मैं केवल एक और बात, आखिरी बात कहना चाहता हू" पालनिन न कहा, "इसके बाद मैं तुम लोगो को ज्यादा परेशान नही करूगा, वरना तुम नाराज हो जाओगे। हा, तो चिकित्साशास्त्र के इतिहास मे एक ही ईमानदार आदमी है और वह है समय। सहमत हैं?"

"यह तो तुम कहा के कहा जा पहुचे!" बोगास्लोव्स्की न बहुत ही हल्की-सी मुस्कान लाते हुए कहा। "अब यह कहता है—एक आदमी। चिकित्साशास्त्र के इतिहास म केवल एक आदमी!''

"पर हम व्यक्तिगत ईमानदारी की नही, वस्तुगत ईमानदारी की बात कर रहे हैं।"

पोलूनिन न ग्राटा लगी प्लेट मे बढिया वनी हुई पेल्मेनिया बडी दक्षता से फकी ग्रौर कहा –

"तुम निकोलाई यव्गेयेविच जरा अतीत पर नजर डालो ग्रौर बताग्रो कि यह सही है या नही। सबसे पहले ईमानदार ग्रग्रगामियो ने गलत होते हुए भी अपनी ही बात का समर्थन किया ग्रौर सबसे अधिक ईमानदार लोगो ने भी गलती करते हुए उन सत्यो का विरोध किया, जो ग्राज सर्वस्वीकृत हैं। मैं जीवन भर सोचता रहा हू कि "

"वर्षो के बीतने से ग्रादमी बूढा होता है, समझदार नही," पास्तनिकोव ने कहा। "मै व्यक्तिगत अनुभव से यह जानता हू।"

पास्तनिकोव ने बेलन एक तरफ को रख दिया ग्रौर अपनी लम्बी-लम्बी उगलियो से पेल्मेनिया बनाने लगा। वोलोद्या तो इस मामले म बहुत ही असफल सिद्ध हो रहा था – बेला हुग्रा पतला ग्राटा टूट जाता, पर इस बात की ग्रोर किसी का ध्यान नही गया या कम से कम उन्होंने ऐसा जाहिर नही होने दिया।

पल्मेनियो के लिये पानी उबल गया। पोलूनिन ने कहा कि मैं मेज लगाता हू ग्रौर उन्होने वोलोद्या को भी खाने के कमरे मे चलने को कहा।

"पोस्तनिकोव बेमिसाल पेल्मेनिया बनाता है," प्लेटें लगाते हुए पोलूनिन ने कहा। "इन्हे कई तरीको से खाया जाता है, पर इस घर मे तो इन्हे उनके बिल्कुल असली रूप मे खाया जाता है, न कोई मिलावट, न कोई सजावट ग्रौर न कोई हेर फेर। वोद्का पीते हैं?"

"पीता हू," वोलोद्या ने जल्दी से झूठ बोल दिया।

"पी भी सकते हैं?"

"इसमे खास बात ही क्या है?"

"खैर, यह बात जाने दीजिये।"

छोटी अलमारी से छोटी-बडी तश्तरिया, जाम, ग्रौर छुरी-काटे निकालते हुए वोलोद्या ने सारे कमरे पर नजर डाल ली। कभी यह जरूर बहुत अच्छा कमरा रहा होगा, पर ग्रब हर चीज ऐसे लगती

थी जिसकी जैसे कोई सुध-सार ही न लेता हो, जैसे कि यहां कोई रहता ही न हो। ऐसा प्रतीत होता था, मानो मालिक को यहां आने पर कोई खुशी ही न होती हो, मानो वह अभी-अभी आया या अभी अभी जानेवाला हो। फर्श पर कालीन टेढ़ा-मेढ़ा बिछा हुआ था, फट अस्तर का पर्दा केवल एक ही खिड़की पर लगा हुआ था। मेजपोश को सूटकेस में से निकालना पड़ा। फर्श पर, अलमारियों और खिड़कियों के दासों पर किताबों के ढेर लगे हुए थे। मेज पर एक लैम्प रखा हुआ था, जो जलता नहीं था। लिखने की मेज पर एक बिल्ली फैलकर लेटी हुई थी। वह तथाकथित "घर-घर, द्वार-द्वार भटकने वाली बिल्ली थी। उसके स्वामी ने उसे पूरी छूट दे रखी थी और कमरे में इंसान की नहीं, बिल्ली की गंध बसी हुई थी।

"हम लोगों की पेल्मेनी की एक परम्परा बन गई है," पोलूनिन ने सिगरेट जलाते हुए कहा। "हम हर वर्ष पोस्तनिकोव के जन्म-दिवस पर पेल्मेनी दिन मनाते हैं। वह विधुर है, हम अपनी पत्नियों के बिना यहां आते हैं और सही अर्थ में छड़ों की दावत उड़ाते हैं। हम ओल्गा का हमेशा स्मरण करते हैं।"

"ओल्गा कौन है?"

"ओल्गा मिखाइलोव्ना उसकी स्वर्गगता पत्नी का नाम है। यह देखिये, उसका चित्र।"

वोलोद्या ने सिर ऊपर किया और मानो हंसती तथा जवानी की उमंग भरी आंखों से आंखें मिलायीं। ये आंखें थीं एक प्यारी फूले फूले और स्पष्टतः नम बालोंवाली एक नारी की। उसका केश-विन्यास कुछ अजीब-सा था, "क्रान्तिपूर्व के ढंग का", वोलोद्या ने सोचा। वह अपने हाथ में स्टेथॉस्कोप लिये थी।

"क्या वे भी डाक्टर थीं?"

"हां, और बहुत ही अच्छी डाक्टर।"

"उनकी मृत्यु कैसे हुई?"

"१९१८ में सैनिक अस्पताल में उसे छूत की बीमारी लग गयी थी," अपनी मोटी सिगरेट का ज़ोरदार कश लगाते हुए पोलूनिन ने उत्तर दिया। "वहीं उसकी मृत्यु हो गयी।"

"सच?" वोलोद्या ने कहा।

अचानक आल्ला के फाटो पर वोलोद्या की नजर पडी, उसी आल्ला के फोटो पर, जिसे "नीद से वडा प्यार था"। फोटो सुनहरे सिरोवाले चमडे के सुदर फ्रेम म लगा हुआ था। आल्ला की चुनौती देती हुई नजर मानो यह कह रही थी कि इस घर की असली स्वामिनी मैं हू, न कि वह नारी, जो १९१८ मे सैनिक अस्पताल म परलोक सिधारी।

"यह वताइये," वोलोद्या ने दीवार पर लगे चित्र और फिर चमडे के फ्रेम मे जडे फोटो की ओर देखते हुए कहा, "यह वताइये, क्या पोस्तनिकोव अपनी पत्नी को प्यार करता था?"

"वेहद," पोलूनिन ने शात भाव और दृढता से जवाब दिया। "वह अभी तक उसे नही भूला है और अब भी प्यार करता है।"

"तो यह आल्ला यहा किसलिये है?" वोलोद्या ने कडाई से पूछा। "मेरा मतलव, उसके फोटो से है।"

"तो उसकी भत्सना भी कर दी आपने?" पोलूनिन ने फीकी सी हसी हसते हुए कहा। "जरा भी देर न लगी आपको? बडे कठोर इन्सान वनते जा रहे है आप, वोलोद्या, वहुत ही कठोर। मेरी सलाह मानिये – लागा के प्रति जरा नर्मी से काम लिया कीजिये, विशेपत असली इसानो के मामले मे "

वोलोद्या न जवाव दना चाहा, पर उस इसका अवसर नही मिला।

इसी समय पास्तनिकाव ने ठोकर मारकर दरवाजा खोलते हुए अन्दर प्रवेश किया। वह वडे वतन म पल्मेनिया लाया था। पल्मेनिया पर हाथ साफ करने के पहले उन्हाने दीवार पर लगे छविचित्र का देखत हुए ठडी की हुई वादका के भरे हुए गिलास पिय। किमी ने भी कोई शब्द नही कहा। वास्तव म पोलूनिन के अतिरिक्त पास्तनिकाव की पत्नी का और कोई जानता भी नही था। पेल्मेनिया सचमुच ही वहुत जायेकदार थी, प्यारी गधवाली, हल्की-फुल्की और खूब गमागम। पोस्तनिकोव ने 'विशेप रूप से" हर किसी की प्लेट पर पिसी हुई काली मिच वुरक दी। वडा ही खुशमिज़ाज मेज़वान था वह। उसका कहना था कि खाना जव खुशी से खिलाया जाना है, तो अधिक लज़ीज लगता है। इसके वाद उन्होंने मिचवानी, वेरियावाली और अन्त मे गेहू से बनाई गई वाद्का के जाम पिये। गेहूवाली वाद्का को

पास्तनिकोव "सभी वाद्काम्रा का गवनर-जनरल" कहता था। वोलोद्या को तो पीते ही चढ गई, उसका चेहरा लाल हो गया, वह बार-बार हाथ झटकने लगा और उसने छुरी फश पर गिरा दी।

"वादका कम पीजिये, पेल्मेनिया ज्यादा खाइय," पालूनिन न उसे सलाह दी।

पोलूनिन किसी से जाम खनखनाये बिना ही पीते। उन्हाने अपनी कोहनी के करीब वोद्का से भरी सुराही रखी हुई थी। वे जाम म नही, बल्कि हरे रग के एक भारी-से गिलास मे अपने लिय वाद्का ढालते थे।

"यह आपकी सेहत का जाम है, प्राव यावाव्लेविच," वोलोद्या ने जाम उठाया।

"बेहतर यही है कि आप पेल्मेनियो से मेरी सेहत की कामना करे," पोलूनिन ने सुझाव दिया।

"मैं बच्चा नही हू!"

"बेशक, यह कहता ही कौन है!"

खाना हसी-खुशी और शोर शराब के वातावरण म खूब मजे से खाया गया।

वालोद्या का इस बात की शम महसूस होने लगी थी कि उसन पोलूनिन से आल्ला के फाटो की वह बेतुकी सी बात कही थी। वास्तव म अगर दखा जाये तो बहुत सी बात हा जाती हैं इस दुनिया म।

"मेरे अस्तबलो मे " बोगोस्लाव्स्की कह रह थे।

"अस्तबलो म? क्या आप अस्पताल मे काम नही करते?" वोलोद्या ने पूछा।

"अस्पताल की सहायता करने के लिए मैं एक छोटा सा फाम भी चलाता हू," बागोस्लोव्स्की ने रखाई से जवाब दिया।

"आह, लगता है कि मुझे चढ गई है! वोलाद्या ने परशान होते हुए सोचा और पेल्मनियो पर हाथ साफ करने लगा। "खरियत इसी म है कि मुह म ताला लगा लिया जाये!

घडी भर का वे तश्तरिया वालाद्या की आखो के सामने तरने लगी, जिन पर नील रग के कुलीन, मकान पवनचक्किया, नावे और

कुत्ते चित्रित थे। वोलोद्या ने अपने दांत ज़ोर से भींचे और चित्रित तश्तरियां न तैरना बन्द कर दिया। "असली चीज़ तो दृढ़ इच्छा-शक्ति है," उसने अपने आपसे कहा। तश्तरियां फिरसे तैरने लगी। "रुक भी जाओ, कम्बख्ता!"

ओह यह सब कुछ कितना बढ़िया था! कितनी दिलचस्प थी उनकी बात। काश कि वह ऐसी स्थिति मे होता कि इक्के दुक्के वाक्य नहीं, उनकी पूरी बातचीत सुन सकता!

"खर, हटाइये इस बात को! हर जाल में आखिर सूराख ही तो होते हैं" पोलूनिन ने अचानक कहा।

"बहुत खूब!" वोलाद्या ने फिर से अपना ध्यान उनकी ओर केन्द्रित किया। "कितनी सही है यह बात! हर जाल म सूराख होते है। वार्या का यह बात पसन्द आयेगी। पर वह तो मुझसे नाराज़ है।"

वोलाद्या ने उनकी बुद्धिमत्तापूण बाता मे दिलचस्पी लेने की पूरी कोशिश की। पर वे अब जाल की नहीं, सजरी की बात कर रह थे।

"स्पास* सही है," वोलाद्या के सामने बैठे हुए पोस्तनिकोव न ऊंची आवाज़ मे चिन्तन करते हुए कहा। "स्पास हर बात मे सही होता है "

"क्या पास्तनिकोव का अभिप्राय ईसा मसीह से है?" वोलोद्या ने नशे म आश्चयचकित हाते हुए सोचा और कुछ दर बाद ही उसे इस बात का एहसास हुआ कि प्राफेसर स्पासाकुकात्स्की की चर्चा चल रही है।

"सजन अक्सर अपने औज़ारा का ढग से इस्तेमाल करना नहीं जानते," पोस्तनिकाव ने कहा। "आज भी किसी बढ़ई, तरखान या दर्ज़ी को काम करते हुए देखकर मैं मुग्ध हो जाता हू। कितन कलात्मक ढग से वे अपनी छेनी, आरी और सूई का उपयाग करते हैं। उनकी हर गति विधि कितनी सधी और नपी-तुली होती है। किन्तु हम जस कि लडके ढीले-ढाले ढग से पत्थर फेंकने के लिए लडकियां का

---

*स्पास—रूसी मे ईसा का एक नाम।—स०

मजाक उडाते हैं, ठीक वैसे ही, लडकियो की तरह ही हम भी गैर ढाले ढग से अपने औजारो का उपयोग करते है। पर, खैर हटाओ! बढ़ई और दर्जी का वास्ता होता है लकडी या कपडे के टुकडे से और हमारा इन्सानी जिदगियो से "

"बिल्कुल ठीक है, सोलह आने सही है, मैं सहमत हू!" वोलोद्या ने चिल्लाकर कहा। इसी समय उसने ईर्ष्याभाव से सोचा—"क्या आल्ला से भी उसने यही बात कही होगी?"

मुझे बहुत खुशी है कि आप सहमत है!" पोल्तनिकोव ने सिर हिलाया। "निकोनाई येव्गेयेविच किशोर को कुछ पल्मेनिया और खाने को दीजिये।"

वोलोद्या ने पल्मेनिया से भरी हुई एक और प्लेट साफ कर डाली। 'किशोर!' वोलोद्या ने सोचा। "क्या मतलब हो सकता है इसका?"

प्रसगवश अगर मेरी याददाश्त धोखा नही देती, तो शायद प्रोफेसर स्पासोकुकोत्स्की ने यह कहा था—'हर्निया के आपरेशन के बाद सर्जन की उगली पर रक्त की एक बूद भी नही होनी चाहिये!' ठीक है न? शब्दो को तोल-तोलकर और यह जाहिर करते हुए कि वह नशे मे नही है वोलोद्या ने कहा।

"बिल्कुल ठीक है!' हसती हुई आखो से वोलोद्या की ओर देखते हुए योगोस्लाव्स्की ने पुष्टि की। "पर किसलिये आपने इसका यहा उल्लेख किया है?'

ऐसे ही पूछ लिया है " अपने होठो को जोर से हिलाते हुए वोलोद्या ने कहा। "ऐसे ही एक सवाल पूछ लिया है। पर पर, मैं माफी चाहता हू। मेरे ख्याल मे मैंने आपकी बातचीत मे खलल डाल दिया है। केवल दो शब्द और, नहीं, एक बहुत ही अत्यधिक महत्वपूर्ण बात और कहना चाहता हू—प्रोफेसर स्पासोकुकोत्स्की के अनुसधानकार्य सम्बन्धी दृष्टिकोण के बारे मे "

सभी चुप हो गये। खामोशी छा गयी और वातावरण तनावपूर्ण हो गया। वोलोद्या ने फिर से दात भीचे "आप लोग समझते हैं कि मैं नशे मे हू? अभी आप जान जायेंगे कि मैं नशे मे हू या नही!" उसने अपने आपसे कहा और अपनी बची-बचायी शक्ति समेटकर हर शब्द को ढग से तथा ऊची आवाज मे कहते हुए उसने पूछा—

"क्या यह सही है कि पोफेसर स्पासोकुकोत्स्की ने ही यह कहा था कि वैज्ञानिक पहलक़दमी ही किसी वैज्ञानिक कायकर्त्ता की योग्यताम्रो का मुख्य लक्षण होती है?"

"हा, सही है!" पोस्तनिकोव ने इस बार वोलाद्या को स्नेहपूण दृष्टि से ध्यान से देखते हुए जवाब दिया। "उन्होने वैज्ञानिक काय को निरन्तर 'गुना' करते जाने से भी मना किया है, अर्थात एक ही विषय पर हेर फेर के साथ शब्द नही लादते जाना चाहिये।"

"वहुत बढिया!" वोलोद्या ने फिर से ढीले होते हुए कहा।

भयानक क्षण गुजर चका था। वह इस परीक्षा म सफल हा गया था। अव वह सोफे पर वैठकर ऐसे आराम कर सकता है, मानो चिन्तन कर रहा हो।

"ओह, प्यारी बिल्ली!" उसने वडे रग मे आकर आवारा बिल्ली को आवाज़ दी! "नमस्ते, प्यारी बिल्ली!"

इसके वाद उसने आखें मूद ली। बिल्ली उसी क्षण उसकी गाद मे वैठकर म्याऊ म्याऊ करने लगी। खैर, वोलोद्या काफी देर तक चिन्तन म डूवा रहा। जव वह मेज़ पर लौटा, तो पल्मेनिया खत्म हो चुकी थी और सभी लोग बहुत गाढी और वेहद काली कॉफी पी रहे थे।

"काश कि यौवन मे ज्ञान और वुढापे म शक्ति होती," वोलोद्या ने पोस्तनिकोव के ये शब्द सुने।

"क्या वातचीत हा रही है?" वोलोद्या ने वैठी-सी आवाज ने वोगोस्लोव्स्की से पूछा।

"ता झपकी ले ली?"

"नही, मैं सोच रहा था "

" भोला भाला आदमी है। पर खान की मज पर ऐसे भले और भोले भाल लोगा को जव कसौटी पर परखा जाता है, तो व खरे नही उतरते,' पोलूनिन ने झल्लाकर कहा। "कुल मिलाकर," उन्होंने गानिचेव का सम्वोधित किया, "यह उसी सुखद सिद्धान्त का एक अग है कि दयालु लोग लगभग अनिवाय रूप स शरावी हाते हैं और शरावी लोगो का दयालु होना यकीनी है।'

वोलोद्या ने काफी का वडा-सा प्याला अपनी ओर खीच लिया तथा ब्राडी की वोतल की तरफ हाथ बढाया।

'वालोद्या अब बस कीजिये!" पोलूनिन ने आदेश दिया।
"आप यह समझते है कि मैं नशे म धुत्त हू?" वोलोद्या न चुनौती के स्वर म कहा। "मै एक और गिलास चढा जाऊगा और मेरा कुछ भी नही बिगडेगा।
"बस काफी है। चैन से बठिये! आप ता अपकी ल आये है।
'शायद आप यह चाहते है कि मैं यहा से चला जाऊ?"
जाने की जरूरत नही पर बडा को परेशान नही कीजिये।"
उन्होने फिर से झोवत्याक के बारे मे बहस शुरू कर दी। वोलोद्या की उपस्थिति मे वे शायद शिक्षा के सिद्धान्तो को ध्यान म रखते हुए उसका नाम नही लेते थे। गानिचेव झल्ला उठे। उन्होने कहा कि पोलूनिन से पार पाना मुमकिन नही और इसलिए पडोसिया म रग बिरगे फीतवाली गिटार माग लाया।
'इसे सुना पोलूनिन ने वोलोद्या स कहा, "लातीनी भाषा मे यह रूसी गीत है—'नदी के निकट, पुल के निकट'।"
गानिचेव गिटार की सगत म धीर धीर गाते रहे।
" प्रोप्टेर फ्लूमेन, प्रोप्टेर पाटेम
कुछ दर बाद पोलूनिन न कहा—
मैं उसकी जवानी सब कुछ, एक एक शब्द सुन चुका हू। उसके जैसे लोग शम-हया जसी कोई चीज़ नही जानते। यह तीन वर्षीय डाक्टरी स्कूल की पढाई खतम करनेवाले कम्पाउडर-डाक्टरा म से एक था। बहुत चालाक मनुष्य ही चलता पुर्जा है वह "
चलता पुर्जा ता यह जरूर है पर जरा दर स इस दुनिया म आया ' वागास्लाव्स्की न चुटकी लेते हुए कहा। "जरा देवकर आया है।
गानिचेव न तारा पर उगलिया फेरते हुए मानो साज को गगन म चिन्तनपूर्ण ढग स गाया—
हमेशा ऐसा का ही वक्त होता है, भाई, वक्त हमेशा ऐसा का ही होता है।
बेडा गर्क, आप लोग अब यह किस्सा सुनें!' पोलूनिन चिल्लाये।
'ऐसी मार्के की बात अक्सर सुनने को नहीं मिलती। युद्ध के दिना

म, जव वे वोलोचिस्क के नजदीक कही डेरा डाले हुए थे, तो छोटे कप्तान की बीवी, जिसका जन्म-कुलनाम जू स्टाकेलबेग ऊड वारडेक था, के बच्चा हुआ। मुझे यह नाम वहुत अच्छी तरह से याद है, क्योंकि हमारे खुशामदी और चाटुकार ने बडे दर्प और उत्साह से, जिसके कारण घृणा होने लगती है, 'जू' और 'ऊड' की चर्चा की थी। खैर, बच्चा हो गया, पर उसे कोई भी डाक्टर पसन्द नही आता था, क्योंकि वे उसके 'ऊड-जू' बच्चे की बढ़िया देखभाल नही करते थे। उस शैतान की नानी ने सभी अरदलियों की नाक मे दम कर दिया। छोटा कप्तान भी दिल को शात करने की दवाई पीने लगा। उस समय हमारे इस भलेमानस ने कहा कि मुझे बुलाया जाये। 'हुजूर मैं आन की आन मे सारा मामला ठीक ठाक कर दूगा,' उसने कहा। 'किसी तरह की कोई शिकायत नही रहेगी।' चुनाचे उसे बुलाया गया। उसने अपने एक डाक्टर मित्र से ट्यूनिक और कधे के पद चिह्न माग लिये। तो हमारा यह सेवक, प्रादेशिक डाक्टरी सेवा के अस्तबल का बडा घोडा किसी पशु चिकित्सक के उपकरण लिए हुए, जिनका घोडो के लिए इस्तमाल किया जाता है, वहा पहुचा। जाहिर है कि वह सैनिक इजीनियरो से भूमापन यन्त्र और तिपाई लाना भी नही भूला। श्रीमती जू स्टाकेलवेग ऊड वारडेक वडी आश्चर्यचकित और प्रभावित हुई। हमारे इस अनाडी और ढोंगी ने जब घोडो के लिए इस्तेमाल किये जानेवाले चिकित्सा उपकरणो से उसे और उसके बच्चे का जाचा परखा और भूमापन यन्त्र का भी उपयोग किया, तो श्रीमती जी का जीवन भर के लिए चिकित्सा विज्ञान मे आस्था हो गई। दो घटे बाद उसने अपना यह निदान कह सुनाया—'वैसे तो सब कुछ टीक-ठाक है, पर बच्चा जरा चिड़चिडा है। उसकी खास देखभाल होनी चाहिये, जो मोर्चे की परिस्थितियो मे सम्भव नही।' श्रीमती अपने मिया, अपने छोटे कप्तान को छोडकर चली गई, जो रेड क्रास की नर्स के साथ रग रेलिया मनाता था। हमारे इस पट्ठे को सौ रूबल श्रीमती और सौ रूबल श्रीमान से बख्शिश मे मिल गये। उसने उसी क्षण चिकित्सा-सस्थान मे दाखिल होने का निर्णय कर लिया, क्योंकि उसे यह स्पष्ट हो गया था कि दार्शनिक सेनेका के इस मत के बावजूद कि सितारो का मार्ग कष्टपूर्ण है, वास्तव मे इतना कटीला नही है। उसने इस

बात को सुनाया कि वह गरीब और मजदूर मा-बाप का बटा है। अब कोई पता तो लगा ले कि वह सचमुच दानत्स्क के खनिक परिवार से सम्बन्ध रखता है या जैसा कि कुछ दूसरे लोगों का कहना है, चानाव व्यापारी वग स। कोई मालूम तो करके बताये!"

हम मानम कर लगे ' बोगोस्लोव्स्की न दृढ़तापूर्वक कहा।

सच ? गानिचेव न हैरान होत हुए पूछा।

दर-सबर

'आह खत्म भी कीजिये अब इस किस्स का," पास्तनिकोव न ऊबत हुए कहा। "उसस भी बुरे लोग है इस दुनिया म। इसके अलावा वह शाश्वत है। अतीत म भी एस लाग थे और आज भी हैं।"

जब तक आप सभी लाग उसस डरत रहगे, वह शाश्वत है,' बोगोस्लोव्स्की न कडाई से और असहमति प्रकट करत हुए जवाब दिया। "पर अगर लोग उसकी जगह काम करना, लख लिखना और रोग निदान करना बन्द कर दें तो '

पोलूनिन न हाथ ऊपर उठाया।

बस बातचीत खत्म की जाय ' उन्हाने कहा। "अब घर चलना चाहिये वरना महाभारत हो जायगा।"

"आइये थाडा घूम लिया जाय। अभी स घर जाने की क्या जल्दी है!" सडक पर आने के बाद उन्हाने कहा।

बोगोस्लोव्स्की और गानिचेव ने तो रात काफी हो जाने के कारण इनकार कर दिया और जाहिर है कि वोलोद्या राजी हो गया। रात ठडी थी पतझर अपने आखिरी दिन गिन रही थी, जमीन पर बर्फ की पतली-सी परत जमी हुई थी और वह उनके पैरो के नीचे कडकडाकर टूटती थी। पोलूनिन ने अपने टोप को कानो पर खीच लिया और कोट का कालर ऊपर उठा लिया।

आठवा अध्याय

रात की बातचीत

"'वैज्ञानिक पहलकदमी ही किसी वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता की योग्यताओं का मुख्य लक्षण होती है,' आपने पोस्तनिकोव से यह जो सवाल पूछा था, वह याद है? याद है या उस समय नशे में धुत्त थे?" पोलूनिन ने अचानक पूछा।

"हां, याद है," वालोद्या बुरा मानते हुए बुदबुदाया।

"आप म्स्तिस्लाव अलेक्सान्द्रोविच नोवीत्स्की के बारे में जानते हैं?"

नोवीत्स्की के बारे में वोलोद्या कुछ भी नहीं जानता था।

"तो, मेरे साथ चलिये, मेरे घर पर,' पोलूनिन ने कड़ाई से आदेश दिया। "खासी ठंड है। गर्मागर्म चाय पियेंगे, क्या ख्याल है?'

उन्होंने बाजार का चौक लांघा, गिरजे को पीछे छोड़ा और नदी की ओर बढ़ गये। पोलूनिन घाट के करीब ही एक अलग थलग घर में रहते थे। उन्होंने दरवाज़ा खोला, वालोद्या को गर्म, अंधेरी ड्योढ़ी में जाने दिया और फिर स्वयं भीतर आकर बत्ती जलाई तथा अपने अध्ययन-कक्ष का दरवाज़ा खोला। वोलोद्या ने अपने अस्त-व्यस्त बालों को ठीक किया और किताबों की अलमारियों, कार्ड-सूचिका के पालिश किये हुए पीले डिब्बों और पाण्डुलिपियों से लदी हुई बड़ी मेज़ पर नज़र डाली। पोलूनिन के भारी कदमों की आवाज़ घर के भीतरी भागों से आ रही थी। उनकी आवाज़ पर कान लगाये हुए वोलोद्या ने धीरे-से पीले एरिक्समान टेलीफोन का हत्था घुमाकर रिसीवर उतारा।

'कृपया नम्बर बताइये," उसे ऑपरेटर की आवाज सुनाई दी।

छ सौ सतीस,' वोलोद्या ने जवाब दिया और वार्या की अलसायी-सी आवाज सुनकर झटपट कहा—"स्तेपानोवा, साना नही। मैं जल्द ही लौट आऊगा। हो सकता है कि बहुत जल्द ना नही। मुझे तुमसे कुछ बातचीत करनी है

पोलूनिन के परा की आहट निकट आ गई। किसी नारी ने प्यार भर और जम्हाई लते हुए बडे इत्मीनान के अन्दाज मे कहा—

'प्राव प्यार, चाय गायेवाले खाने म है और मिठाइया '

"मिठाइया मिठाइया," पालूनिन बडबडाय। "अभी बारह भी नही बजे और तुम सो गइ। कुछ बढिया बातचीत हो हो जाना।"

'बातचीत बस बातचीत," नारी ने मजाकिया ढग स उसकी नकल की। "बाईस सालो स तुम और तुम्हारी बढिया बातचीत ने मेरी नीद हराम कर रखी है "

पोलूनिन अपने अध्ययन कक्ष मे लौट आये और एक गहरी, पुरानी तथा चमडे मे मढी हुई आरामकुर्सी पर आराम स बैठ गये। सिर हिलाकर कार्ड-सूचिका की ओर सकेत करते हुए उन्होंने कहा—

' बहुत ही दिलचस्प शौक है यह। हमारे जमाने का बडा ही कारगर हथियार है जो लडाई शुरू होने के पहले ही उसका निर्णय कर सकता है। इन कार्डों को क्रम से व्यवस्थित करना बहुत ही महत्व की बात है। क्रम-व्यवस्था का मैंने स्वय आविष्कार किया है और मुझे उस पर बहुत गर्व भी है। इनमे दर्ज की गई घटनाए बहुत शिक्षाप्रद और बिल्कुल सच्ची है। हा तो आप नोवीस्की के बारे मे जानना चाहते है न? जब तक चाय तयार होती है, तब तक बहुत सक्षिप्त रूप स

उन्होंने कार्ड सूचिका का एक खाना बाहर को खींचा, जिस पर "सार्जेंट" की चिप्पी लगी हुई थी। उन्होंने उसम स कुछ कार्ड निकाले, जिन पर घनी लिखावट म कुछ लिखा हुआ था, और उन्हें पत्ते की भाति मेज पर फैला दिया।

' तो क्या नोवीस्की सार्जेंट था?" वोलोद्या न पूछा।

"कतई नही पालूनिन न चटखारा भरते हुए कहा। "इस खान पर लिखे हुए सार्जेंट शब्द का सम्बन्ध है लयव प्रिवाग्दोव का

रचना से 'मैं सार्जेंट को वाल्तेयर का स्थान दे सकता हू'। आपने स्कूल मे यह रचना पढी थी न? हा तो, नोवीस्की "

पोलूनिन ने कुर्सी से टेक लगा ली, आखें ज़रा मूद ली और कार्डों का तनिक हिलाते-डुलाते, पर देखे बिना ही नावीस्की की चर्चा करने लगे।

"१८७७ मे घातक ट्यूमरा का स्वस्थ शरीर मे स्थानान्तरण के कई तजरबे करने के बाद नोवीस्की ने सारी दुनिया के लिए महत्व रखनेवाला एक शोध प्रबन्ध लिखा। इसका शीर्षक था—'घातक ट्यूमरा के स्थानान्तरण की समस्या (प्रयोगीय अनुसधान)'। इस शोध प्रबन्ध ने अर्बुदा रसौलियो के प्रयोगीय विज्ञान के विकास को प्रोत्साहन दिया। कैंसर पर पहला असली हमला किया गया।

"समझे, वोलोद्या?'

"जी, समझा।"

"अब आप कल्पना कीजिये कि इसी वैज्ञानिक को, जो शायद बहुत ही बडा वैज्ञानिक और सही अर्थ मे पथ प्रदर्शक बनता, लेफ्टीनेंट-जनरल काउट लारिस मेलिकोव की कमान मे दूसरी दोन कज्ज़ाक रेजिमेंट मे भेज दिया गया और वह फिर कभी विज्ञान की ओर नही लौट सका।"

"पर ऐसा क्यो किया गया?" पोलूनिन की आखो को गुस्से से धधकते हुए देख वोलोद्या ने दृढता से पूछा।

"इसलिए!" पोलूनिन ने चिल्लाकर कहा। "इसलिए कि डाक्टर नोवीस्की के लिए कम्बख्त नियमो के अनुसार फौजी सेवा करना जरूरी था। सर्जरी की अकादमी मे शिक्षा पाने की सुविधा का क्या वह गरीब पैसे की शक्ल मे बदला चुका सकता था? जाहिर है कि नही। तो बस, जाये और अपने जार तथा देश की सेवा करे। आवेदनपत्र भेजे गये, पत्र व्यवहार हुआ, समाज के भले लोगो ने नोवीन्स्की के लिए बडा सघर्ष किया, पर उसे भेज ही दिया गया। जनरल ने हुक्म दिया—'जाओ, जार की सेवा करो' और इस तरह रूस का एक महान सपूत छीन लिया गया और अर्बुदा रसौलियो का विज्ञान अनेक वर्षों तक जहा का तहा ही रह गया। फौजी सेवा खत्म होने पर उसे रोज़ी तो कमानी थी, परिवार का पेट पालने के लिए कोई धधा तो करना था, इसलिए अपने तजरबे कैसे जारी रख सकता था वह?"

पोलूनिन चायदानी और एक डिब्बे म कुछ मिठाइया लाय और उन्होने अपने और वालोद्या के लिए चाय डाली। बुझी हुई सिगरेट को मुह के एक और फिर दूसरे कोन मे दाता तले दबाते और कनखियों से एक अय काड को देखते हुए उन्हाने पढा–

"'सट पीटसबग मे जिले का पशु-मजन नियुक्त कर दिया गया। उसका काम था घोडो समेत नगर म वध या पालन के लिए लाय और नगर से बाहर ले जाये जानवाल जानवरा की जाच करना।' बस, सक्षिप्त मे इतनी ही कहानी है उसकी।'

'वह मर गया?" वोलोद्या ने दबी-सी आवाज म पूछा।

और क्या!" पानूनिन ने दुख और खीझ से चल्लाकर जवाब दिया। "निश्चय ही। और अब पूरी तरह भुलाया जा चुका है उसे। १९१० तक तो पत्राव उसका उल्लेख करता रहा, पर किसी एक विदेशी न्यूमैयन की लिखी हुई जा किताब अभी निकली है, उसम हमारे नावीस्की का कही कोई जिक्र नही। फिर से हानाऊ और मोरो नाम के विदेशिया की ही चचा की गई है। पर खर, असली बात यह नही है वह कुछ अधिक ही गम्भीर है। बात यह है कि किसी 'सार्जेंट' की कलम की एक घसीट ने वह चीज जहा की तहा रह गई जो विज्ञान के क्षेत्र म एक महान युग का शुभारम्भ कर सकती थी, उसने एक ऐसे व्यक्ति के विचारो का गला घोट दिया, जो सम्भवत एक महान वैज्ञानिक हो सकता था।"

पालूनिन ने काड खाने मे वापिस रखकर उसे बन्द कर दिया। व उठे और उन्होंने कमर मे चुपचाप दो चक्कर लगाय और उदासी भरे लहजे म कहा–

"यह 'सावधान, सम्मानित जनगना!' शीषकवाले लेख के लिए बढिया विषय भी रहेगा।"

"आपका वागोस्लाव्स्की जचे?" पालूनिन न अचानक पूछा और वालोद्या के उत्तर की प्रतीक्षा किय बिना ही कहते गये–

बहुत ही अदभुत आदमी है वह। उदासी या गुस्से के क्षणा म उसका ध्यान आने पर दिल को जरा राहत-सी मिलती है। वागोस्लाव्स्की जैसे लाग ही दुनिया म शान्ति करगे, उसम वास्तविक कानून और व्यवस्था कायम करगे और हर चीज को उसका उचित स्थान देंगे।

आपका देर-सवेर उससे वास्ता पडेगा, इसलिय इस वात को सुनिये, यह खासा दिलचस्प किस्सा है।"

वोलोद्या ने एक गिलास चाय पी ली, हर चीज अब साफ तौर पर उसकी समझ मे आ रही थी और पोलूनिन की भारी तथा सुस्थिर हुई आवाज सुनकर उस खुशी हो रही थी। वे अपने मनपसन्द विषय की चर्चा कर रहे थे, एक असली इसान की कहानी सुनान जा रह थे और अब प्रशसा न उसके क्रोध की जगह ले ली थी।

" वोगोस्लोव्स्की तब बहुत ही जवान डाक्टर थे, जब वे अपनी पत्नी नारी रोगविज्ञा क्सेनिया निकालायेव्ना और छोटी-सी बच्ची साशा के साथ चार्नी यार में पहले-पहल आये। चार्नी यार के अस्पताल का बडा डाक्टर कोई सुतूगिन था। वह 'यमदूत सभा' का सदस्य और लुटेरा था, जिसने कभी वाइत्सेखोव्स्की जमीदार परिवार और चोर्नी यार के व्यापारी वग की वडी वफादारी से सेवा की थी। शैताना के उस गुट ने कभी उसे एक प्राथनापत्र देकर पेत्रोग्राद मे दूमा के पास भी भेजा था। जाहिर है कि उसने वोगोस्लोव्स्की का शत्रुतापूण स्वागत किया। 'आह, तो आप वोल्शेविक है? तो, साथी वाल्शेविक, हम आपको हमारे चोर्नी यार की मेहमाननेवाजी का ज़रा मजा चखायेंगे।' सुतूगिन वाहरी तौर पर अग्रेज़ा जैसा लगता था। वह सिगार पीता, गेटिस पहनता, घुडसवारी करता और वर्फीली नदी मे तैरता। अस्पताल म जुए रेगती ठड और वदबू रहती और पाखाना की हालत वडी खराव थी। मुझे वहा जाच करने के लिए भेजा गया और उस समय भी यह स्पष्ट था कि सुतूगिन सोवियत सत्ता विरोधी गुट्ट का प्रत्यक्ष विध्वसक है। यह वीमारो की न ता देखभाल और न ही कोई ऑपरेशन करता। जरूरत होने पर नगर स सजन वुलवा लेता, पर ऑपरेशन के वाद अपने किसी भी डाक्टर को रोगी के नज़दीक न फटकन देता। 'हमने तो ऑपरेशन किया नहीं, फिर हमारी कैसी जिम्मेदारी,' वह कहता। उसका एक अन्य मनपसन्द सिद्धान्त यह था-'जितना वुरा, उतना ही अच्छा'।

"वोगोस्लोव्स्की से मुलाकात होते ही सुतूगिन ने पूछा कि क्या आप कामेन्स्की गिरजे के वडे पादरी येव्गेनी वोगास्लाव्स्की के बेटे नही हैं। वोगास्लाव्स्की ने हामी भरी। 'ता क्या आप इस नास्तिकता

के जमाने म अपनी जान बचाने के लिए ही कम्युनिस्ट बने हैं?' सुर्तागिन ने पूछा। 'नही, इसलिए नही,' बोगोम्लोव्स्की ने जवाब दिया। 'इसलिए कि आप जैसे बदमाश अस्पताल के पास भी न फटक पाये।

तो इस तरह आग भड़कने लगी।

बोगोस्लोव्स्की काम करते जबकि अंग्रेज जैसा साहब उनके खिलाफ शिकायत लिखता। किसको उसने शिकायती चिट्ठिया नही भेजी! गुबेर्निया कमिटी को उयेज्द कमिटी को फौजी कमिसारियत का और फौजी कमिसार को भी। बोगोस्लाव्स्की जितना ही बढ़िया काम करते, उनके विरुद्ध उतने ही अधिक परेशान करनेवाले आयोग नियुक्त किये जाते उतनी ही अधिक शिकायत होती और जाच पड़ताल की जाती।

'शिकायत बेनाम न होती कि उन्हे चुपचाप आग की नजर कर दिया जाता। उनके नीचे भेजनेवाला के हस्ताक्षर होते और इनमे शामिल रहते चोर्नी यार के समाज के सभी भूतपूर्व बढ़िया लोग, सुर्तागिन के सभी यार दोस्त।

'बोगोम्लाव्स्की भी परेशान रहने लगे। यह तो सभी जानते हैं कि किसी पर लगाये जानेवाले आरोप और उनसे सम्बन्धित पूछ-ताछ ढग से काम करने म बाधा डालती है। दिन भर वे बड़ा श्रम करते और रात को मीठी नीद सोने के बजाय जागते हुए कटुतापूर्ण विचारों म खोये उलझे रहते।

'एक दिन रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की उयेज्द कमिटी का सेक्रेटरी कोमारेन्स अस्पताल मे आया। मैं उसे जानता था। कभी वह उत्ता नदी का बेड़ा निदेशक था सुन्दर लाल बालोवाला, बाका, दिलेर जवान जो बढ़िया गीत पर जान देता था। रू० क० पा० की गुबेर्निया कमिटी की कार्यकर्त्री एक जवान औरत भी उसके साथ आई। उसका नाम अग्लाया पत्रोव्ना उस्तिमेन्को था। वह शायद बोलोद्या उस्तिमेन्को की कोई रिश्तेदार थी?"

नही, नही बोलोद्या ने गम्भीरता से झूठ बोल दिया। शहर म बूआ को बहुत-से लोग जानते थे और बोलोद्या अपने को प्रमुख नारी का रिश्तेदार जाहिर नही करना चाहता था।

"आप जानते-बूझते झूठ बोल रहे हैं। पर खैर, अपना जी खुश कर लीजिय," पोलूनिन ने कहा और फिर से अपनी बात आगे बढान लगे।

"कोमारेत्स ने अस्पताल के सभी कर्मचारियो को इकट्ठा करके यह सुझाव पेश किया कि वे सस्था की वत्तमान आवश्यकताओ और भावी योजनाओ पर विचार-विनिमय करे। इस अस्पताल की इमारत की अजीबोगरीब बनावट के कारण स्थानीय लाग इसे 'हवाई जहाज़' कहते थे। चलने फिरने लायक मरीज भी इस सभा मे शामिल हुए। विचार विनिमय के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि वोगोस्लाव्स्की ने बहुत-सा अच्छा काम किया था। गुबेनिया कमिटी स आनेवाली नारी खडी हुई और उसन विभिन्न हस्ताक्षरावाली मास्को, सरकारी वकील के कार्यालय, मिलीशिया, मज़दूर और किसान निरीक्षण सस्था राजकीय राजनीतिक विभाग और सैनिक कमिसारियत के दफ्तर म डाक्टर सुतूगिन द्वारा भेजी गई शिकायत समस्वर मे पढकर सुनाई। उसन जाचकर्त्ताओ के निणय भी पढे। अस्पताल के कमचारियो और मरीजो के चेहरो के रग उड गये, सभी भयभीत हो गये, वे वोगोस्लोव्स्की को भली भाति पहचानने समझन और प्यार करन लगे थे। सुतूगिन की कमीनी हरकतो से उन्हे बडी ठेस लगी। सुतूगिन के होठो पर अस्पष्ट, भयावह तथा कायर की सी मुस्कान दिखाई देती रही।

"'हा तो, सुतूगिन, क्या ख्याल है आपका? यह सब किस्सा क्या है?' कोमारेत्स ने पूछा।

"सुतूगिन की छुट्टी कर दी गई। कोमारेत्स और अग्लाया पेत्रोव्ना ने वोगोस्लाव्स्की की प्रशसा करते हुए बहुत से अच्छे शब्द कहे और यह सलाह दी कि वे इस कडुवाहट और गन्दगी को भूलकर हल्के मन से अपना काम करते रहे। रवाना होन के पहल उन्होन फिर से अस्पताल का चक्कर लगाया। इमारत की मरम्मत हो गई थी, ताप-व्यवस्था ठीक-ठाक थी, पर उपकरण बहुत कम थे। चादरो, कम्बलो और पलगो की भी कमी थी। मरीजो की सख्या बढती जा रही थी। इस वर्ष 'हवाई जहाज़' मे २०० से अधिक आपरेशन किये गये थे। यह अभूतपूर्व सख्या थी।

"'हम बहुत कुछ सोचना विचारना होगा, पर हम मदद करने का वादा करते है,' कोमारेत्स ने कहा।

14*

"कोमारेत्स तो सोच विचार ही करता रहा, इसी बीच वागा स्लोव्स्की सीवीर्तसी के शीशे के कारखान मे गये और वहा उन्होंने एक सभा की। मजदूरा न एकमत होकर अस्पताल के लिए नया साज सामान खरीदने के हेतु एक दिन की मजदूरी दने का निणय किया। राज़ा लुक्ज़म्बुग नामक आरा मिल, इटा के भट्ठे और क्राति के सनिका नामक भाप मिल के मजदूरो न भी ऐसा ही किया। इस तरह मजदूर वग ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह अपने अस्पताल और बोगोस्लोव्स्की जैसे डाक्टर का समथन करन की जरूरत के महत्त्व को बहुत अच्छी तरह समझता है।

"बोगोस्लोव्स्की ने ७,४४७ रूबल ६ कापक जमा किय और उन्हे लिनन के टुकडे म लपेट लिया। उनकी पत्नी ने वह टुकडा मोटे और मजबूत धागे से बोगोस्लोव्स्की की वास्कट के साथ सी दिया और वे मास्को की ओर रवाना हो गये। इसी बीच सुतूगिन ने गुबेनिया कमिटी के नाम बोगोस्लोव्स्की के विरुद्ध कलकपूण शिकायत लिख भजी। शिकायत मजदूरो के एक दल की ओर से की गई थी, जिसन यह माग की थी कि नीमहकीम और ढोगी बोगोस्लोव्स्की स उनका रक्षा की जाये जो उनसे पसे ठगता है। हस्ताक्षर साफ पढे जा सकते थे। अस्पताल के एकाउटेट सीदीलेन ने बहुत ही सफाई स जीत जागते आरावश अर्युखाव और ऐसे ही जिजली मिस्त्री के हस्ताक्षरा की नकल की थी। ट्रनर के रजिस्टर मे ऐसे अन्य हस्ताक्षर भी मिल गय, जिनकी बढिया नकल की जा सकती थी। सुतूगिन की पत्नी न मिल मजदूरा और अन्य कई लागा के बढिया जाली हस्ताक्षर बड अच्छे ढग से उतार लिय थे। बडी चालाकी से तयार की गयी इस शिकायत की जब तक बार-बार जाच-पडताल होती और गन्दगी को पूरी तरह साफ किया जा सकता, तब तक के लिए गुबेनिया कमिटी न मास्को के अधिकारियो को तार भेजकर यह प्राथना की कि बोगोस्लोव्स्की कोई भी चीज न खरीदन पायें और जमा की हुई सारी रकम उयेज्द कमिटी को भेज दे। बोगोस्लोव्स्की ने अभी तक कुछ भी नहीं खरीदा था, इसलिए उन्होंने डाक द्वारा सारी रकम उयेज्द कमिटी के कोमारेत्स के नाम भज दी। इसके बाद उन्होंने अस्पताल की जरूरत की सभी चीजें भी कोमारेत्स के नाम ही वी० पी० पी० द्वारा

भिजवा दी। घर लौटते हुए वोगोस्लोव्स्की को गाडी मे केवल पके हुए खीरे और डबलरोटी ही नसीब हो सकी।

"अस्पताल के लिए भेजा गया साज़-सामान कुछ समय बाद पहुच गया। कोमारेत्स इस समय तक सुतूगिन की नई मक्कारी की तह मे पहुच चुका था। उसने चीज़ो की रकम चुका दी। आखिर सुतूगिन को गिरफ्तार कर लिया गया और अस्पताल का रग-ढग ही वदल गया। लोग अपने पुराने हानिया को ठीक कराने, वुरे ढग से जोडी गयी हड्डियो को फिर से जुडवाने और साम्राज्यवादी युद्ध के समय से तन म धुसे हुए छर्रो के टुकडो को निकलवाने के लिए यहा आते। औरत भयानक, जानलेवा, तडपानेवाले और अन्य सभी तरह के दर्दो और रहस्यपूर्ण रागो का इलाज कराने आती। 'हवाई जहाज' मे काम करना अब वडे सम्मान की वात समझी जाती और वोगास्लोव्स्की की वाछें खिली रहती। लोगा के चेहरा पर अपने अजीव अन्दाज़ मे नजर जमाकर और चटखारा भरकर वे कहते—

"'अगर आप सावियत राज्य व्यवस्था मे निहित सभी सम्भावनाओ का उपयोग करें, तो बहुत कुछ कर सकते हैं।'

"विश्वसनीय और भले ढग का अत्युखोव उन तीन व्यक्तियो का मुखिया था, जिन्होने अस्पताल की मदद करने का वीडा उठाया था। सीवीर्त्सी के शीशा वनाने के कारखाने का व्यापार प्रवन्धक, जो इन तीन व्यक्तिया मे मे एक था, अस्पताल को रद्द किया हुआ शीशा ला देता और तीसरा, खोलाद्वेविच, मिल से भूसी लाता।

"अव वोगोस्लोव्स्की ने अपने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का एक और पहलू स्पष्ट किया। उन्होने वढिया किसान होने की अपनी कुशाग्रता प्रकट की। उनमे अच्छी व्यावहारिक समझ-वूझ है, वे 'हमारे दैनिक भोजन' का महत्त्व समझते हैं, खेती से अनजान नही हैं और धरती तथा उसके वरदाना से वहुत प्यार करते है। उन्होंने पशु-पालन, सूअरा का खिलाने पिलाने, सब्जी-तरकारियो के वागीचे तथा गमले उगाने की पत्र-पत्रिकाए डाक द्वारा मगवानी शुरू की। वागास्लोव्स्की और मैनेजर प्लेमन्चक ने अस्पताल के एक हिस्से मे लाड्री कायम कर दी और घोर्नी यार के लोगा के कपडे धान के लिए लेने लगे। छोटे-से नगर के लोग शुरू म तो इस लाड्री स वहुत हैरान हुए, पर फिर

उन्होंने आज़माइश करने की ठानी। वैसे उन्हें आशा यही थी कि उनके कपड़ा या क्लोराइड पानी में पूरी तरह सत्यानास हो जायगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। 'स्नोव्हाइट' (बर्फ़-से सफ़ेद) जैसे प्यारे नामवाली लाड़ो से जो नफ़ा हुआ, उससे बोगोस्लोव्स्की ने अस्पताल के लिए पहली गाय खरीदी और उस भी 'स्नोव्हाइट' का नाम दिया। तो इस तरह यह सिलसिला शुरू हो गया। तीन सालों में अस्पताल के पास बहुत सी गायें हो गई, रोगियों को उनकी ज़रूरत का दूध, क्रीम और पनीर मिलने लगा और अस्पताल के कर्मचारियों को भी 'निजी उपयोग' के लिए ऐसी चीज़ें खरीदने की अनुमति दे दी गई। नाटे मोटे प्लेमेन्चुक ने पड़ोस के गुबेर्निया के राजकीय फ़ार्म से कुछ सूअर खरीद लिये। इस तरह सूअर पालन फ़ार्म का श्रीगणेश हुआ। कुछ समय बाद वे सप्ताह में एक सूअर जिबह करने लगे। बोगोस्लाव्स्की अपना सारा फालतू समय फ़ार्म के प्रबन्ध में, खेतों, डेयरी और अस्तबलों में काम करते हुए बिताते। गर्मियों में उनके चेहरे की खाल उतर जाती और उनकी कमीज़ पसीने से तर-ब-तर होती। वे चिकित्सा सम्बन्धी पत्र पत्रिकाएं, बछड़ो-बछड़ियों, घास सुखाने और मुर्गी पालन के बारे में लेख पढ़ते।

''अगर पनीर की डेयरी बना दी जाये, तो मज़ा ही आ जाय!'' प्लेमेन्चुक बड़े उत्साह से कहता। 'यह कोई खास मुश्किल काम नहीं और मैं इससे परिचित भी हूं। खूब नफ़ा होगा इससे। कुछ अर्से बाद हम एक नया और बढ़िया शवगृह बना सकेंगे।'

''आपकी बहुत ही व्यापारिक प्रवृत्ति है, प्लेमेन्चुक। मुझे यह पसन्द नहीं।' बोगोस्लोव्स्की उसके इस सुझाव को रद्द कर देते।

"कुछ ही समय बाद प्लेमेन्चुक काफ़ी बड़ी हेरा-फेरी करता हुआ पकड़ा गया। उसके वकील ने, जो किसी दूसरे नगर से आया था, खूब ज़ोर शोर से उसकी वकालत की और अपनी अभिव्यक्तिहीन आंखें बोगोस्लोव्स्की पर टिकाये हुए यह संकेत किया कि मेरा मुवक्किल तो केवल अपने बड़े डाक्टर का हुक्म बजाने का अपराधी है। जज ने वकील को अनेक बार रोका-टोका, पर फिर भी बोगोस्लोव्स्की को लगा कि उनके मुंह पर कीचड़ पोत दिया गया है और उन्हें शर्म महसूस हुई। प्लेमेन्चुक ने अपनी आखिरी सफ़ाई पेश करते समय आंसू

वहाकर कहा (उसे रोने की आदत थी) कि अगर अस्पताल मे उस तरह का 'वातावरण' न होता, तो वह बिल्कुल दूध धोया रहता।

"अदालत ने उसे केवल तीन साल की सजा दी, पर अभियोक्ता ने इसका विरोध करके उसे पाच साल तक बढवा दिया।

"यह तो खैर ठीक ही हुआ, पर फाम पर गन्दगी उछाली जाने लगी। प्लेमेचूक की हेरा फेरी ने उस प्रशसनीय और बहुत जरूरी उद्यम पर एक स्थायी धब्बा छोड दिया। प्लेमचूक की बीवी उयेज्द के वित्त विभाग मे टाइपिस्ट थी। उसन खूब जार शोर से सभी तरह की अफवाह और झूठी बात फैलानी शुरू की। बोगोस्लाव्स्की उन्ह रोकन मे असमथ थे। ठडे-ठडे और मजेदार दूध की चुस्किया लेत हुए रोगी अक्सर यह कहते सुने जाते कि इधर हमे भी किसी चीज़ के लिए इनकार नही किया जाता और उधर अस्पताल के अधिकारीगण के घुरान के लिए भी बहुत कुछ बच जाता है। इसका मतलब है कि खूब हाथ रगते हैं वे लोग! इस सिलसिले मे कुछ-कुछ भूले बिसरे प्लेमेचूक का अवश्य ही जिक्र किया जाता। कोई उसे गद्दी से उतारा हुआ बडा सजन कहता, तो कोई छोटे सजन की बीवी और कोई बडी नस। उयेज्द की कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष न, जो नर्मदिल और दयालु व्यक्ति था, एक बार बोगोस्लोव्स्की से कहा—

"'मेरे दोस्त, क्या अब तो गडबड घुटाले को दूर नही कर दना चाहिए? लोग तरह-तरह की बाते कर रहे हैं।'

"'गडबड घुटाला तो कभी का दूर किया जा चुका है,' बोगोस्लाव्स्की न थकी-सी आवाज मे जवाब दिया। 'लोगो की जबान कौन बन्द कर सकता है?'

"हिसाब किताब की जाच करनेवाला के आयोग अस्पताल म आ धमके। ऐनकवाले निरीक्षको ने रजिस्टरो की खादाबीनी की, अपन विचार लिखे और अपन पेशे की दो मानी 'हुम' की। उन्होने यह माग की कि हमे व आदेश दिखाये जायें, जिनके अनुसार अस्पताल अपने अधीन फाम स्थापित कर सकता है। उन्होने जन-कमिसार, जनतन्त्र और गुबेर्निया की प्रशासकीय सस्थाओ के लिखित अनुमति-पत्र दिखान के लिए कहा। उन्होने यह भी कहा कि रोगियो द्वारा इस्तेमाल किये जानेवाले दूध की कीमत मनमाने ढग स तय की गई है और चार

दिन तक और काम करने के बाद उसे बढ़ाकर २६ कोपेक कर दिया।

"'आप तो सर्जन हैं न,' जाच पड़ताल के लिए आनेवाले पावर आयोग के मुख्य जाचकर्त्ता ने कहा। वह रपज की भांति छिद्रोंवाली नाक और लम्बे होठवाला व्यक्ति था। 'आप सर्जन होते हुए इस कोयलो की दलाली मे क्या अपने हाथ काले करना चाहते हैं? सब कुछ मई दिवस नामक राजकीय फार्म के हवाले कर दीजिये। हम इस हस्तांतरण की व्यवस्था करा देंगे और किस्सा खत्म हो जायेगा। मैंने डाक्टर हासे के बारे मे एक किताब पढी थी। वह मधुमक्खियों के छत्तों, गोशालाओं, सूअर पालन और मुर्गीखानों के झंझट मे पड़े बिना ही अपना महान काम करता था '

"बोगोस्लोव्स्की ने अपना थका हुआ सिर ऊपर उठाया और रुखाई से, बिना लाग लपेट के तथा धाराप्रवाह वह खरी-खोटी सुनाई कि सभ्य और सुसस्कृत हिसाब किताब जाचकर्त्ता तो भौचक्का-सा रह गया। बोगोस्लोव्स्की की जबान पर गालियां चढी हुई है और कभी कभी वे उनकी लगाम ढीली छोड देते हैं। जाचकर्त्ता का होठ और भी नीचे लटक गया और उसकी मोटी, स्पंजी नाक सुर्ख हो गई।

"'मैं अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा हू,' जाचकर्त्ता ने कहा।

"'मैं भी वही कर रहा हू,' बोगोस्लोव्स्की ने जवाब दिया। 'पिछले कुछ समय से भाड मे जायें आप सभी लोग, सभी इस हकीकत को भूल जाते हैं कि फार्म के अलावा एक अस्पताल का जिम्मेदारी भी मेरे कधो पर है। मैं उस अस्पताल का बड़ा डाक्टर ही नही बल्कि मुख्य सर्जन भी हू और इसके क्या मानी है यह बाई भी ध्यान मे '

"उस वसत म बोगोस्लोव्स्की के सब्र का प्याला छलक गया। उनकी पत्नी ने बूढे मर्त्युखाव के नेतत्व म सहायको की तिकड़ी को चुपचाप इकट्ठा किया। उन्होंने एक पत्र तैयार किया और उस पर उन लोगो से हस्ताक्षर करवाये, जिनका बोगोस्लोव्स्की न इलाज या आपरेशन किया था। बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने स्वयं अखबार पत्राव्दा उम्निमको के नाम यह पत्र भेजा, क्योंकि वह नगर, गुबर्निया, गोर्की और सारे यार म काफी जानी-मानी हुई थी। उन्हें आशा थी कि यह स्वय आयगी, पर उसकी जगह नाटा मोटा और मोटे मोटे

शीशोवाला चश्मा चढाये हुए 'उचा मजदूर' समाचारपत्र का एक सवाददाता आ पहुचा। बोगोस्लोव्स्की ने खीझ मे उसे भी एक अन्य जाचकर्त्ता समझ लिया और उसके साथ रुखाई से पेश किया। पर गुबेनिया समाचारपत्र के विभागीय सचालक श्तूब ने बुरा नही माना। उसने किसानो के होस्टल मे डेरा डाला और चुपचाप तथा ठडे दिल से अपना काम शुरू किया। रोगियो के हस्ताक्षरोवाले ममस्पर्शी पत्र का भी उसके मन पर उसी भाति कोई प्रभाव नही हुआ, जिस भाति डाक्टर के विरुद्ध लिखे गये ढेर सारे पत्रो का। वह सचाई जानना चाहता था। दूरी से धीरे धीरे केन्द्र बिन्दु की ओर बढने के अपने निजी ढग के प्रति वफादार रहते हुए उसने बोगोस्लोव्स्की को तनिक भी परेशान किये बिना देहात के इस डाक्टर की दिना, महीनो और बरसा की जिन्दगी के बारे मे तथ्य जमा कर लिये। बोगोस्लोव्स्की का काम शानदार, मानवीय, साहसपूण और सच्ची पार्टी भावना के अनुरूप था। उसने यह भी मालूम कर लिया कि जब बोगोस्लोव्स्की ने अपने पिता से भिन्न रास्ता अपनाया, तो भगवान के उस कठोर सेवक ने कामेस्की गिरजाघर के मच से अपने इकलौते बेटे को अभिशाप दिया। उसने यह भी मालूम कर लिया कि स्नातक हाने के बाद बोगास्लाव्स्की को डाक्टरी सस्थान मे ही काम करने की भी सम्भावना प्राप्त थी, पर उन्होने जान-बूझकर किसी दूरस्थ गाव म काम करन का निणय किया था। अन्य महत्त्वपूण तफसीलो के अलावा उसने यह पता चलाया कि बोगोस्लोव्स्की के परिवार न फाम से 'दूध, शहद, अडे, पनीर या सूअर का मास,' कभी कुछ भी नहीं लिया था। गहराई मे जानेवाले श्तूब ने रोगियो के बारे मे भी सभी कुछ जानन की कोशिश की, जो सारे गुबेनिया, यहा तक कि दूर दराज के नगरा से भी इस अस्पताल मे आते थे। एक पगु लडका अस्त्राखान से यहा लाया गया था, एक बुजुग भूमापक कालूगा से आया था। सजरी की नस मारीया निकोलायव्ना, काले बालोवाला उत्साही बाल चिकित्सक डाक्टर स्मुश्केविच, अदली चाचा पेत्या, उप प्रधान बुजुग डाक्टर विनाग्रादोव, कपडा-लत्ता की इचाज और मैनेजर स्काबीश्निकाव ने श्तूब को बहुत दिलचस्प बात बताइ।

"समझदार, फुर्तीली और सलोनी तथा बहुत ही सुदर डाक्टर अलेक्सान्द्रा पत्राविच न श्तूब से उस खनिज-जल के चश्म की भी

चर्चा की, जो फव्वारा कुआ खोदते समय खोजा गया था। मुतूगिन इस चश्मे के बारे में जानता था। गुर्वेनिया के पुरालेखागार में एक पुराने ढंग का पत्र विद्यमान था, जिसमें उसने इस पानी को इस आधार पर निजी सम्पत्ति बताया था कि वोइत्सेखोव्स्की ने मुझे यह उपहार के रूप में दिया था। उसने लिखा था कि मैंने खुद ही उस खोज था और 'चेर्नोयास्काया' की संज्ञा दी थी। डाक्टर पन्नोविन्न की कहानी सुनने के बाद ही श्तूव ने ये तफसीलें मालूम कीं। उसने श्तूव को यह भी बताया था कि वोगोस्लाव्स्की इस पानी का विश्लेषण कराने के लिए उसे मास्को ले गये थे। इसके बाद उन्होंने किसी नीरस रूख आदमी के साथ देर तक बातचीत की और उसे इस बात के लिए राजी करने की कोशिश की कि वह अस्पताल के करीब ही खनिज जल की छोटी सी फैक्टरी लगाने की अनुमति दे दे। पर उस बूढ़े ने जवाब दिया कि खनिज-जल के फव्वारे एक बीमारी बनते जा रहे हैं और जिसे देखो, वही उन्हें खोज लेता है। उसकी समझ में नहीं आया था कि कौन उनका सारा पानी पियेगा। फिर उसने कहा कि बोतलों के कारण भी कुछ परेशानी है। अपने स्वभाव के मुताबिक वोगोस्लाव्स्की ने सम्भवत उसे कुछ भला-बुरा कहा होगा और इस तरह इस मुलाकात का अन्त हो गया होगा। वे गुस्से में उबलते हुए वापिस आये। उन्होंने अपनी तिकड़ी को जमा किया और स्वास्थ्यप्रद जल को पाइपों द्वारा वार्डों, मरहम-पट्टी के कक्ष, चलते फिरते रोगियों के लिए भोजनालय और रसोईघर में पहुंचाने का सस्ता तरीका निकाल लिया। स्वावोश्निकोव सब्जियों के बगीचे में खनिज जल पहुंचाने के लिए नगर से धातु की कुछ पतली-पतली पाइपें ले आया। जमीन ने झटपट अपना ऋण चुका दिया सब्जियां लगभग दुगुनी पैदा होने लगीं। तब वोगोस्लाव्स्की ने कुछ कांचघर बनवाये और रोगियों को मौसम के बहुत पहले ही हरे प्याज, अजमोदा, सायबीन और दूसरी चीजें मिलने लगीं। उन्हें तो हरे खीरे भी उस समय मिल जाते, जब कोई और में कोई उन्हें देखने तक की कल्पना भी नहीं कर पाता था।

"उस समय तो श्तूव खूब ही हंसा जब बूढ़े अर्त्युखोव ने, जो वोगोस्लोव्स्की की पूजा करता था, यह बताया कि वोगोस्लोव्स्की ने 'कमीन शैतान' स्थानीय पादरी येफीमी के कैसे छक्के छुड़ाये थे।

"बात यह थी कि सेंट पीटर और पाल का गिरजाघर पिछली शताब्दी में अनाज के व्यापारियों जुबोव भाइयों ने बनवाया था। यह गिरजा एक विराट पार्क में खड़ा है। उसका दूरस्थ सिरा धीरे धीरे अधिक जाने माने नागरिकों का कब्रिस्तान बना दिया गया था। नगर के लोग तो अब भी इस पार्क में जाते थे, पर कब्रिस्तान में किसी को दफनाया नहीं जाता था। वह उपेक्षित हो गया था और सलीका-सा सजा हुआ इसका पक्के लोहे का शानदार जंगला बिल्कुल बेकार हो गया था। 'हवाई जहाज' के गिर्द तो जंगला था ही नहीं। बागोस्लोव्स्की डंडों की बाड़ नहीं लगवाना चाहते थे और इससे अधिक के लिए पैसे ही नहीं होते थे, जो अस्पताल के सभी प्लाट मैदानों, बगीचों, अहाते और बाहरी इमारतों को घेरे में ले सकती। इस बाड़ की बेहद ज़रूरत महसूस होती थी बाग में टहलते हुए रोगियों के सगे-सम्बन्धी उन्हें खुमियां, खीरा और पत्तागोभी का अचार दे जाते और कभी-कभी तो छिपाकर वोद्का का अद्धा भी। उन्हें किसी तरह भी रोका नहीं जा सकता था।

"बागोस्लाव्स्की ने मामले पर सोच विचार किया, अपना काला सूट पहना, जो मास्को के दौरों के लिए खास तौर पर बनवाया था, और स्थानीय पादरी यफीमी से मिलने गये। वे हर रोज़ उस कमीने और मानवद्वेषी पादरी के पास जा पहुंचते और आखिर गिरजे के दस सदस्यों की सभा बुलवाने में सफल हो गये। अर्त्युखोव के नेतृत्व में तिकड़ी भी बोगोस्लोव्स्की के साथ उस सभा में गई। वहां बागोस्लोव्स्की ने इंजील, नये टेस्टामेन्ट, भजनावली और अन्य धार्मिक पुस्तकों की गहरी जानकारी का परिचय दिया। वहां बहस शुरू हो गई। शुरू में तो धीरे धीरे बातचीत हुई, फिर गर्मी आई और आखिर गाली-गलौज के साथ खत्म हुई। पादरियों के कथनों के शानदार चुनाव के आधार पर बागोस्लोव्स्की ने निर्विवाद रूप से इस सदस्यों की समिति के सम्मुख यह सिद्ध कर दिया कि गिरजा को खजाने की तुलना में किसी पीड़ित की सहायता करना ईसाई धर्म के कहीं अधिक अनुरूप है। पादरी येफीमी ने गला फाड़फाड़कर अपना पक्ष पोषण किया, पर कुछ देर तक टुनमुन रहने के बाद दस की समिति में मतभेद हो गया और आखिर दस में से आठ ने बोगोस्लोव्स्की का समर्थन किया।

अस्पताल के ठेलो मे सेट पीटर और पाल गिरजे का जगला 'हवाई जहाज' मे पहुच गया और सही-सलामत वहा पर लगा दिया गया। कुछ ही समय बाद वोगोस्लोव्स्की ने उस कमीने बूढे पादरी के हर्निया का बहुत ही सफल ऑपरेशन किया। गिरजाघर से लाये गये जगले से घिरे अस्पताल के बगीचे मे चहलकदमी करता, खनिज जल की चुस्किया लेना और खीरो, प्याज़ो, पत्तागोभी और अन्य 'नेमतो' की बढिया फसल पर आश्चर्यचकित होता हुआ वह द्रवित होकर पतली, खरखरी आवाज मे भजन गुनगुनाता और सन्तोष की सास लेता। आखिर उसने वोगोस्लोव्स्की के सामने कुछ समय पहले दिखाई गई अपनी गुस्ताखी और 'गन्दे शब्दो' के उपयोग के लिए अफसोस जाहिर किया।

"श्तूब कोई एक महीने तक चोर्नी यार मे रहा। जाने के पहले उसने व्यक्तिगत रेकाडफाइल से वोगोस्लोव्स्की का फोटो चुराकर उसकी कापी तैयार की। उसके जाने के एक सप्ताह बाद 'उचा मजदूर' मे उसी फोटो के साथ एक लेख छपा। उस लेख को पढ़ते हुए वोगोस्लोव्स्की की पत्नी की आख छलछला आई और उसने अपनी बेटी से कहा–

"'प्यारी साशा, तो तुम्हारे पिता ही सही थे। उन्हे मुसीबत का सामना करना पडता है, पर वे हमेशा सही होते हैं। मुझे आशा है कि तुम भी ऐसी ही बनोगी।'

"साशा भी रोई। उसे अपने पिता से बहुत प्यार था और जब वे हिसाब किताब के निरीक्षक उनका अपमान करने आये थे, तो वह मन ही मन पीडा सहन करती रही थी। पिता जब मा से अपनी परेशानियो की चर्चा करते थे, तो वह छिप छिपकर उनकी बात सुनती थी। अब इन सभी चीज़ो का अन्त हो चुका था। श्तूब वास्तव मे है कौन? उसे सारी बाते कैसे मालूम हुईं? उसने जो कुछ लिखा, वह सब ठीक क्या है? क्या इस दुनिया मे ऐसे अद्भुत लोग भी हैं!

"वोगोस्लाव्स्की उस दिन देर से घर आये। वे कुछ बदले-बदले से लगते थे, कुछ झेंपते और मजाकिया-सा। उनकी बीवी क्सेनिया निको लायेव्ना ने उस दिन बिलबेरियो की कचौरिया पकाईं और शाम को उनके घर मेहमान आये–डाक्टर विनाग्रादोव, डा० अलेक्सान्द्र पेत्रोविच, डा० स्मुश्केविच जो घर की बनी हुई सेवा की थाडी लाया,

अस्पताल का अरदली बूढा चाचा पेत्या, सर्जरी की नस मारीया निकोलायेव्ना, जो घर की बनी कुछ मीठी तेज शराब लाई। अत्युखोव भी आया। उन्होंने 'गाऊदआमुस इगीतूर', 'मैं ऊची-ऊची रई म से गुजरा', 'आखें काली काली' और 'गगाचिली', जिसे 'किसी अनजाने शिकारी ने मजाक म घायल किया और फडफडाकर सरकडा मे मरने के लिए छोड दिया,' गीत गाये। इसी समय लाल बालावाला कोमारेत्स घोडे पर आया, उसने वोगोस्लोव्स्की को गले लगाया, चूमा और 'दूसरो की ओर से बधाइया दी' तथा तारो भरी गम रात मे गायब हो गया।

"'जब प्रेस बढिया ढग से अपना कत्तव्य पालन करता है,' काले बालावाला दुबला-पतला डाक्टर स्मुश्केविच कह रहा था, 'जब प्रेस जिम्मेदारी निभाता है और अपने उद्देश्य को समझता है, जब प्रेस '

"'सुनिये, आइये नाचे,' क्सेनिया निकोलायेव्ना ने अनुरोध किया। 'सच कहती हू कि मैं और मेरा पति तो खूब बढिया नाचते हैं। माजूरका, पोल्का, वाल्ज़ और त्राकोव्याक '

"विनोग्रादोव न अपनी कमीज के बटन खोल दिये थे और बालावाली छाती पर हाथ फेरते हुए वह अलेक्सान्द्रा वसील्यव्ना को समझा रहा था—

"'मेरे ख्याल मे तो हमारी बातचीत का यह निष्कष हो सकता है—वही ऑपरेशन करो या रोगी को केवल ऐसा ऑपरेशन कराने का परामश दो, जिसके लिए ऐसी ही परिस्थितियो मे तुम खुद अपने अथवा सबसे प्रिय व्यक्ति के लिए राज़ी हो जाते।'

"'यह कौन-सी नई बात कह दी है आपने!' अलेक्सान्द्रा वसीरयेव्ना न चिल्लाकर कहा। 'अग्रेज डाक्टर सिडनम ने अठारहवी शताब्दी मे ही यह तो कह दिया था '

"उसके गाल तमतमाये हुए थे और वह नाचना चाहती थी। पर नाचती तो किसके साथ! स्मुश्केविच अभी तक प्रेस का ही राग अलापता जा रहा था।

"ज़ाहिर है कि मैं भी उस दावत मे शामिल था, मज़े उडाता रहा था," पोलूनिन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा। "वैसे मैं तो परामश के लिये आया था और सयोगवश मुझे दावत मे शामिल होना पड गया। पर इस तरह बोगोस्लोव्स्की और आपकी रिश्तेदार

अग्लाया पेत्रोव्ना की विजय का साक्षी बना। एक अच्छे उद्देश्य का ढग से पूरा किया गया था।"

"तो यह सब कुछ भी आपने काड मे दज किया हुआ है?" वोलोद्या ने पूछा।

'नही। इस पीले डिब्बे मे तो केवल वही हैं, जो दूसरी दुनिया म पहुच चुके है केवल वही हैं। जो जिन्दा है, उन्हें आप अपने कार्डो मे दर्ज कीजियेगा। जब डाक्टर बन जायेंगे, तो बोगास्लाव्स्की जैसे लोगो को अपना आदश बनाइयेगा।"

फ्लैट के अन्दर कही घडी ने एक बजाया। वालोद्या उठा। पालूनिन उसे दरवाज़े तक छोडने गये और विदा होते समय बोले–

'सोचना अच्छी चीज है। इससे मदद मिलती है। पर बहुत अधिक नही। असली चीज़ तो आदमी के अमली काम ही होते हैं।"

वोलोद्या जब वार्या के घर पहुचा, तो काफी देर हो चुकी थी। आखिर उसे अपना जी तो हल्का करना था।

"तो मुझे सब कुछ सुनाना चाहते हो?" टागो को अपने नीचे मोडकर बैठते हुए वार्या ने पूछा।

"हा, सुनाना चाहता हू। तुम नाराज़ तो नही होगी?"

वह नाराज नही हुई। क्या वह उससे नाराज हो भी सकती थी?

'तुम बहुत अच्छी हो और मैं निरा उल्लू हू!" वोलोद्या ने कहा। "पर लाल बालोवाली, असली चीज तो आदमी के अमली काम ही होते है!"

फिर उसने झटपटे ढग से यह और जोड दिया–

"यह मेरे शब्द नही, पालूनिन के शब्द है "

"खैर, सुनाओ सारी बात!" वार्या ने कहा। "मगर सिलसिलेवार, मुझे बीच-बीच मे से बात सुनना पसन्द नही। हा, तो तुम पोस्तनिकोव के घर गये। तुमने अन्दर प्रवेश किया "

'हा, मैंने प्रवेश किया और पेत्मनिया बनाने लगा "

वोलोद्या "हवाई जहाज" में

व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए जाने से एक दिन पहले वोलोद्या की अचानक पालूनिन से पार्क मे मुलाकात हो गई। सफेद मच पर

वैंडवाले वैंड वजा रहे थे। लाइलैक के फूल खिल चुके थे वुजुग नागरिक रेशमी सूट पहने चहलकदमी कर रहे थे और गहर, काले आकाश म सितारो की धीमी धीमी, गम लौ टिमटिमा रही थी। वार्या का हाय भी गम था।

"हेलो, वोलोद्या!" पालूनिन ने आवाज दी।

वोलोद्या ने जोर से वार्या की कोहनी दवाई और इस तरह उस चेतावनी दी कि कोई असाधारण और महत्त्वपूण वात होनेवाली है। वार्या फौरन समझ गई कि लम्वे चौडे डील-डौलवाला यह व्यक्ति वोलोद्या के किस्से-कहानियो का नायक प्रोफेसर पोलूनिन ही है।

"अपने को वहुत ही समझदार दिखाना वालोद्या ने वार्या से कहा और नीरस ढग से पालूनिन को सम्वोधित करते हुए कहा—"नमस्ते, प्राव याकोव्लेविच!'

वोलोद्या पोलूनिन और पोस्तनिकोव के जितना अधिक निकट हुआ, उसे वे जितने हो अधिक महान प्रतीत हुए, उनके चरित्रो मे जितने ही अधिक अच्छे लक्षण उसे दिखाई दिये, वह उतना ही अधिक औपचारिक होता चला गया। वह यह नही चाहता था कि वे मीशा शेरवुड की भाति उसे खुशामदी समझे या फिर इससे भी वुरा यह कि उस 'दास्ती वढाकर लाभ उठानेवाला" मानें।

"तो जा रह है?"

"हा।"

"सुना है कि आप वोगोस्लाव्स्की के पास चोर्नी यार जा रहे हैं?" (पालूनिन ने पक्के तौर पर जानते हुए कि वह वहा जा रहा है, यह पूछा।)

"हा, यह सही है।"

"मुझे खुशी है। डाक्टरी के विद्यार्थी की वात ता एक तरफ रही, खासा अनुभवी डाक्टर भी वागोस्लोव्स्की से वहुत कुछ सीख सकता है। खैर, आप तो उनसे परिचित हैं न?"

पेल्मेनी पार्टी का ध्यान करके वोलोद्या जरा झेंप गया। उसे याद आया कि वह वहा कितनी जल्दी नशे मे धुत्त हा गया था।

'आप अपनी मित्र से मेरा परिचय क्यो नही कराते?" पोलूनिन ने विपय वदलत हुए कहा।

वार्या ने अपना चौडा और सदा गम रहनेवाला हाथ पालनिन की ओर बढाते हुए कहा—"वार्या।" उस लम्बे-तडगे व्यक्ति का देखने के लिए उसे अपनी गदन अकडानी पडी।

"आइये, जरा बैठकर दम ले," पोलूनिन ने सुझाव दिया। "आज बडी उमस है गर्मी से पिड ही नही छटता।"

पोलूनिन की चौडी छाती मे मुश्किल से मास आ-जा रही थी। उनके चेहरे पर तनाव और थकान थी। अपनी सिगरेट जलाकर बडे मजे से उसका एक लम्बा कश खींचकर उन्होन सामान्य ढग से कहा—

"सयोगवश मैं आज सुबह ही आपके कॅरियर और वागोस्लाव्स्की के बारे मे सोच रहा था। वैसे यह सही है कि एक बार हम उन पर काफी अच्छी तरह स विचार कर चुके हैं। वोलाद्या, मैं चाहता हूँ कि बोगास्लोव्स्की से प्रशिक्षण पाते हुए आप इस तरह की छोटी मोटी बातो की ओर खास ध्यान दे, जैसे कि किसी सर्जन की योग्यता इस बात से स्पष्ट होती है कि वैसे वह बिना ऑपरेशन के रोगी का इलाज कर सकता है न कि उसके द्वारा किय जानेवाले ऑपरेशनो स।"

"बहुत खूब!" वार्या ने दाद दी।

"मैं भी ऐसा ही समझता हू," पोलूनिन ने सहमति प्रकट की। "ऑपरेशन करना तो एक तरह से सीखी हुई तकनीक का उपयोग करना है, जबकि इसमे इनकार करने के लिए ऊची मानसिक योग्यता, कठोरतम आत्मालोचना और अचूक निरीक्षण की जरूरत होती है।'

"मेरी समझ मे कुछ नही आया," अपने माथे पर बल डालते हुए वार्या ने कहा।

"चुप रहो!" वोलोद्या ने धीरे-से कहा।

"बोगास्लोव्स्की के साथ काम करते हुए आपको एक और चीज की तरफ ध्यान देना चाहिए। वह यह कि रोगी की चिकित्सा के मामले मे डाक्टर का व्यक्तित्व क्या भूमिका अदा करता है,' पोलूनिन ने गम्भीरतापूर्वक अपनी बात जारी रखी। "बात यह है कि कुछ लोग डाक्टर पर तभी विश्वास करते हैं, जब वह प्रोफेसर हो। फिर भी कोई व्यक्ति ढग का डाक्टर बने बिना आसानी से प्रोफसर बन सकता है "

"वोलोद्या, क्या इनका अभिप्राय झोवत्याक से है? वह, जो अपनी चाद पर ड्रम लगाता है?" वार्या ने पूछा।

पोलूनिन तनिक मुस्कराये। वोलोद्या ने वार्या का कोहनी मारी कि वह योंही टाग न अडाये।

"हा, किसी तरह का डाक्टर बन बिना। एक बात और," पोलूनिन कहते गये, "मेरे बारे म आप चाहे कैसी भी राय क्या न बनायें, पर मुझे इस बात म कोई गुनाह दिखाई नही देता कि कभी-कभी मैं स्टेथॉस्कोप और थर्मामीटर, अपने अनुभव, कुशाग्रबुद्धि निरीक्षण और तक शक्ति पर भरोसा करनेवाले और सबसे बढकर यह कि सच्चे मानव होनेवाले देहाती डाक्टर को अधिक महत्व देता हू। हा, हा, एक्स रे, प्रयोगशाला—यह सब कुछ ठीक है अपनी जगह पर उचित है, मगर तकनीक के मुकाबले मे मनुष्य पर ज्यादा विश्वास करने को मन होता है। आपका और मेरा काम मानवीय काम है, आपको यह याद रखना चाहिये। इसी चीज को ध्यान म रखते हुए काम के प्रति वोगोस्लाव्स्की के रवैये और तरीका का अध्ययन कीजिये। वे बहुत ही ऊचे विचारावाले, दृढ सकल्प तथा सघर्ष मे तपे हुए डाक्टर हैं। वे विज्ञान और यत्रो पर भरोसा करते हैं, किन्तु डाक्टर के व्यक्तित्व, हमारे साधारण और बहुत ही अदभुत डाक्टरा पर अधिक भरोसा करते है। जाहिर है कि सबसे अच्छे डाक्टर वही होते हैं, जिनमे ये तीन गुण एकसाथ पाये जाते हैं—ज्ञान, यन्त्रा का उपयोग करने की क्षमता और व्यक्तित्व। जब तक यहा रह अपने व्यक्तित्व का जितना अधिक निर्माण कर सके, करे, अधिक से अधिक उस असली गव का सचय कीजिये, जिसने एकबार मौत के किनारे पहुचे हुए रोगी के पास बैठे जमन डाक्टर श्वेनिनगेर को यह कहने का बल दिया था—'मेरे तरकश म अभी और भी तीर बाकी है!' मैं तो ऐसा ही मानता हू कि उस जमन डाक्टर ने इस आत्मविश्वास, इस मानसिक बल ने ही रोगी की जान बचाई, न कि किसी दवाई न।'

"मैं सहमत हू, आपसे बिल्कुल सहमत हू," वार्या ने कहा।

"मैं यह सुनकर खुश हू," पोलूनिन ने विनम्र ढग से सिर झुका दिया। 'क्या आप भी डाक्टरी की विद्यार्थिनी है?'

"मैं? नही, मैं तो कला क्षेत्र म काम करती हू। मेरा मतलब यह है कि मैं अभी तो कालेज म पढ रही हू, पर '
'घर पर कला सीखती हैं?"
"नही, स्टडिग्रा म।"
"सच? मूर्तिकला? या शायद चित्रकला?"
'नही, रगमच की कला।"
"मतलब यह कि अभिनेत्री बनने जा रही हैं?"
हा। एस्फीर ग्रिगार्येव्ना मेश्चेर्याकोवा हमारी शिक्षिका हैं।'
'पर क्या उसका नाम एस्फीर है? उसका नाम तो यव्गेनीया है और कुलनाम तो दोहरा है—मेश्चेयाकावा प्रूस्काया।'
वार्या न सिर हिलाकर हामी भरी। अपनी शिक्षिका के प्रति श्रद्धा होने के बावजूद वार्या का हमेशा इस बात से थोडी शर्म आती थी कि उसका नाम और कुलनाम दोनो ही दोहरे थे।
"पुराने कलाकारो के बारे मे यह अजीब-सी चीज है, नौजवान ऐसा नही करते,' पोलूनिन ने कहा। "पुराने कलाकारो के तो अवश्य हा दोहरे नाम होते थे और सो भी गजवाले। एक बार मेरे एक वार्ड मे बूढा अभिनेता ओरकी गोलदो और एक भूतपूर्व चोर, तोहे की तिजोरियाँ तोडने के फन का उस्ताद इकट्ठे रहे। चोर अभिनेता गोलदो को चिढाता रहता—'मेरे छ नाम हैं—फ्लूरिन-बारोविकोव-जुडर प्रेतकोव्स्की इवानोव-वासिलस। मैंने इनके बल पर खूब मौज उडाई है' पर खैर मेश्चेर्याकोवा भला आपको क्या सिखा सकती है?'
"सिखा क्या नही सकती, उसका शिल्प तो बहुत बढिया है।' वार्या ने कहा।
'पर वह अभिनेत्री तो बहुत ही घटिया है। आप मुझे क्षमा कीजिये मैं एक अनाडी आदमी की तरह बात कर रहा हू, पर मेरे ख्याल मे तो केवल प्रतिभाशाली लोगो से ही अभिनय की कला सीखी जा सकती है। दूसरो को शिक्षा देनेवाले डाक्टर के पास शिल्प के अलावा कुछ प्रतिभा भी अवश्य होनी चाहिए।"
'मेश्चेर्याकोवा की प्रतिभा बहुत बारीक और अपने ढग की है। इस सिलसिले म आपका मत सही नही है,' वार्या ने कहा। "रही शिल्प की बात तो खुद स्तानि ने उसकी प्रशसा की है।'

"आह ग्लामा ने?" अपने विशिष्ट ढग से हसते हुए पोलूनिन ने हैरानी जाहिर की। "अगर ग्लामा ने प्रशसा की है, तो जाहिर है कि मुझे बहस करने का कोई अधिकार नही है। पर क्या सचमुच ग्लामा ने उसकी प्रशसा की है? और फिर क्या प्रशसा ही सब कुछ होती है? मिसाल के तौर पर, वोलोद्या के अध्यापक गानिचेव को ले लीजिये। उसकी अक्सर बहुत कडी यहा तक कि अपमानजनक आलोचना की गई है, पर फिर भी गानिचेव तो गानिचेव ही है। हा तो "

वोलोद्या को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा–"मैं फिर से यह कहना चाहता हू कि आप अन्य किसी के साथ नही, बल्कि बोगोस्लोव्स्की के साथ काम करने जा रहे हैं, मुझे इस बात की बहुत खुशी है। उसे मेरी ओर से नमस्ते कहना और शुभकामनाए देना। आपका जहाज कब जायगा?"

"रात के तीन बजे।"

"तो फिर सितम्बर म मुलाकात होगी। बडे अफसोस की बात है कि आप बोगोस्लोव्स्की के साथ अधिक समय तक काम नही कर सकते। मैंने एकबार कही पढा था कि किसी प्रोफेसर को पढाने की इजाजत देने के पहले उससे यह पूछना चाहिए–श्रद्धेय विद्वान महोदय, एक देहाती डाक्टर के रूप म आपने एक वर्ष तक भी अभ्यास किया या नही?"

वे हसे और वोलोद्या से हाथ मिलाया।

"तो आपसे पहली सितम्बर को मुलाकात होगी। नमस्ते, हमारी भावी अभिनेत्री। 'मेरी प्यारी अभिनेत्रिनी'–चेखोव ने अपनी पत्नी को ऐसे ही सम्बोधित किया था न? सयोगवश, चेखोव सचमुच बहुत ही शानदार डाक्टर था और बहुत ऊचे अर्थ म 'देहाती डाक्टर'।"

वोलोद्या और वार्या चलने के लिए उठे।

चोर्नी यार मे वार्या का पत्र पहुचने पर ही वोलोद्या को मालूम हुआ कि पोलूनिन का उसी रात को, उसी बेंच पर देहात हो गया था, जिस पर वे तीनो बैठे रहे थे। उनका दिल बडा गडबड था, पर उन्होने कभी ढग से उसका इलाज नही करवाया था। उनकी मृत्यु अचानक ही हुई और जलती हुई अधूरी सिगरेट उनकी उगलिया

15

ये बीच रह गयी। शायद यह वही सिगरेट थी, जो उन्होंने बड रस म उस समय जलाई थी, जब वे उनके पास बैठे थे, शायद वह लातप्रय वाल्ज की धुन बजा रहा था, शायद वालाद्या और वार्या बहुत दूर नही गय थे और निल क दोर का शुम हाते अनुभव कर उन्होने उन्हें पुकारा भी था। हर चीज़ मुमकिन है। किसी को भी सही तौर पर मालूम नही था कि यह कैसे हुआ, किसी का भी कभी यह मालम नही हा सकेगा।

केवल वार्या ही वोलाद्या को विदा करन आई। बूआ अग्लाया कामकाज के सिलसिले मे दूसरे नगर म व्यस्त थी। वोलोद्या का सामान यह था—घुटना तक के मजबूत जूते, तिरपाल की बरसाती, पिरोगोव की रचनाओ के दो खण्ड और रस्सी से बधी हुई कुछ किताबें। एक पाटली म वार्या के ज्यादा के जोर देने पर खरीदी गयी हेरिंग मछलिया भी थी। वाया के दादा ने कहा था कि चोर्नी यार म हेरिंग मछलिया बहुत मुश्किल से मिलती हैं। इन चीज़ा के अलावा कुछ अडरवीयर फर मारकर भरा जानेवाला तकिया और डाक के कुछ लिफाफे भी थे, जिन पर वार्या न अपन हाथ से अपना पता लिख दिया था। उसने वार्या का एक छाटा-सा फोटो और गृहयुद्ध के दौरान खीचा गया अपने पिता का एक फोटो भी अपने साथ ले लिया। इसम उसके पिता बिल्कुल जवान दिख रहे थे बेहद सीधे सरल, बडे अन्दाज म अपने हवाई जहाज 'सोपविच" के पास खडे हुए मुस्करा और मानो यह कह रहे थे—'देखो तो लोगो, मैं कैसा हृष्ट-पुष्ट, कितना जवान और भला हू।'

पीच जा चुका था और ओगुर्त्सोव भी। वार्या काप रही थी—रात ठडी थी और वह इस अवसर के लिए विशेष रूप से बनवाया गया अपना सफेद, आस्तीनहीन फ्राक पहने थी। वह चाहती थी कि वालोद्या उसे इसी रूप मे याद रखे—बहुत खास, बहुत असाधारण लडकी के रूप मे। मगर वोलोद्या का तो नये फ्राक की ओर ध्यान भी नही गया। वह तो अगले दिन से सम्बधित विचारा मे कुछ इस तरह खोया हुआ था।

"ऐ नयी जोडी एक तरफ हा जाओ एक भारी बोरा उठाये हुए जहाजी न चिल्लाकर कहा।

जहाज के नीचेवाले भाग से इजन की घरघर सुनाई दे रही थी। जहाज पर चढने का फलक हिल-डुल रहा था और उसका पहलू घाट के साथ टकरा रहा था।

"मुझे बाहो मे कस लो, ठड लग रही है," वार्या ने कहा।

"लो, यह और भावुकतापूर्ण लाड प्यार," वोलोद्या ने जवाब दिया।

वार्या उसकी बाह के नीचे से खिसककर उसके कोट से सट गई। वे अब तक कभी इतने निकट नही हुए थे। वोलोद्या ने सुखद आश्चर्य से वार्या की सुखी और शरारत भरी आखो मे झाका। उसके बालो म प्यारी प्यारी, सीली-नम ताजगी थी उसका दिल वोलोद्या के दिल के निकट धडक रहा था और वह उसका हाथ अपने हाथ मे लिये हुए था। वोलोद्या ने अपनी घनी बरौनिया झुका ली, अपने गाल को उसके फूले फूले बालो के साथ सटाया और खरखरी आवाज़ मे कहा—

"लाल बालोवाली! मैं तुम्हे प्यार करता हू।"

"यह तुम कह रहे हो," अचानक मीठे आसू बहाते हुए उसने कहा। "तुम्हे तो पाव्लोव और सेचेनोव, मानव ने किसलिए जन्म लिया तथा हर्ज़ेन, आदि के सिवा और किसी चीज मे दिलचस्पी ही नही थी। वे अभी तीसरा भापू बजा देंगे, मुझे चूमो "

वोलोद्या ने आसुओ से तर उसका बद मुह चूमा।

"ऐसे नही," उसने कहा। "ऐसे तो मुर्दे को चूमा जाता है। उमग के साथ चूमो "

वोलोद्या ने खीचकर अपने दातो से उसके ओठो को खोला और वार्या अपने जवान और मजबूत शरीर को उसके साथ चिपकाये रही। उनके ऊपर, कही निकट ही जहाज का भापू गूज उठा।

"खैर, कुछ खास बात तो नही,' उसकी मजबूत बाहो से छूटते हुए उसने कहा। "मैंने किसी किताब मे पढा था कि चुम्बन कमाल के होते हैं।"

"उल्लू" वोलोद्या ने दुखी होते हुए कहा।

जहाज पर जाने का तख्ता वोलोद्या के पैरो के नीचे से खिसकने लगा था। वह कूदकर जहाज पर पहुच गया और "उचा वीर" कहलानेवाला जहाज धीरे धीरे आगे बढने लगा। वह रात भर डेक पर

बैठा हुआ बुदबुदाता रहा—"लाल बालोंवाली, मैं तुम्हें प्यार करता हूं, प्यार करता हूं, प्यार करता हूं।" उसे उस समय के लिए अफसोस होने लगा, जो वे इकट्ठे बिता सकते थे, पर जो उन्होंने अलग-अलग या दूसरों के साथ बिताया था। उसे वार्या को शिकार बनाते हुए किये गये अपने बेवकूफी भरे मजाक याद आये, ताने-बोलियां और बहुत व्यंग्यपूर्ण अन्दाज का ध्यान आया। उसे याद आयीं वार्या की आंखें, जो हर समय उसका स्वागत करती थीं, दिन और रात को किसी भी समय मिलने की उसकी तत्परता, उसकी प्यारी विनोदप्रियता का स्मरण हुआ। उसे याद आया कि किस तरह वह बड़े सब्र से घंटों तक वे बातें सुनती रहती थी, जिनमें उसकी दिलचस्पी थी, पर वार्या की नहीं हो सकती थी। "मेरी प्यारी, बहुत प्यारी, बहुत ही प्यारी लाल बालोंवाली वार्या!" डेक पर इधर-उधर टहलते और सोये हुए मुसाफिरों से ठोकर खाते और उनकी लानत-मलामत पर कान न देते हुए वह लगातार यही दोहराता रहा। "प्यारी मैं मूर्ख हूं, जंगली हूं, कमीना हूं।

सुबह होते होते उसे नींद ने धर दबाया। आंख खुलने पर उसने कुछ रोटी और उबले हुए सासेज खाये और डेक पर पीने के पानी के टैंक से कुछ घूंट नीम गर्म पानी पिया। वह वार्या के बारे में ही सोचते रहना चाहता था, पर उसे इसका अवसर नहीं मिला। जहाज के पैडल छपछपा रहे थे, भाप गूंज रहा था और वह धीरे-धीरे जोनों घाट के घाट की ओर बढ़ता जाता था।

'हलो, वोलोद्या! मुझे नहीं पहचानते?' पतझर की तुलना में भी अधिक सवलाये हुए वागोस्लाव्स्की ने वोलोद्या को पुकारकर कहा।

वागोस्लोव्स्की की बहुत बार धुली हुई सूती कमीज का गला खुला हुआ था, वे अपने गाढ़े के पतलून को घुटने तक के बूटों में ठूंसे थे और उनके हाथ में चाबुक था। यह कमीज और टोपी, जिसे वे गुद्दी पर पहने थे, उन्हें उस काले सूट तथा टाइट कालर से अधिक जंचती थी, जो वे उस रात को पोस्तनिकोव के घर पहने हुए थे।

आप कहां जा रहे हैं? यह सोचते हुए कि बागोस्लाव्स्की जहाज पर चढ़ने के तख्ते की ओर बढ़ेंगे, वोलोद्या उन्हें गुजरने का रास्ता देने के लिए एक ओर को हट गया।

"नही तो! आपको लिवाने आया हू।"

लोग अपने सूटकेस, थैले और टोकरिया उठाये हुए उनसे टकराते थे। उनमे से अनेक बोगोस्लोव्स्की को जानते थे और उनका अभिवादन करते थे। वोलोद्या उन्ह देखता हुआ हैरान हो रहा था। यह तो अनसुनी बात थी कि कोई बडा डाक्टर किसी विद्यार्थी का लिवान आये। अगर वह सस्थान म लौटकर अपन साथियो का यह बताय, ता वे विश्वास नही करेगे।

"मुझे भी अपनी पहली नौकरी के सिलसिले मे जाने का तजरबा हुआ था। अतर केवल इतना है कि मैं डाक्टरी की पढाई खत्म कर चुका था," बागोस्लोव्स्की ने माना वोलोद्या के विचारा का पढ़ते हुए कहा। "मेरे लिए स्टेशन पर घोडा-गाडी नही आयी थी और एक बूढा, जो भूतपूव समाजवादी त्रातिकारी, लेकिन अच्छा डाक्टर था मरे साथ बडी रखाई से पेश आया था। अपनी मजिल पर पहुचन म मुझे अडतालीस घण्टे लगे थे। बहुत अर्से तक मेरे मन म कटुता बनी रही थी "

मजबूत और चितकबरा घाडा बग्घी को घाट से नगर की ओर ऊपर को खीच ले चला। बागास्लोव्स्की स्प्रिंग की आरामदेह सीट पर वोलाद्या की बगल मे बैठे हुए बडी कुशलता से लगामा को सम्भाले थे ग्रार दायें-बायें लोगो से दुआ-सलाम कर रह थे।

"नमस्ते, मारीया व्लादीमिरोव्ना। क्या हालचाल है अकिनफिच! मेरे बेटे प्यातर, तुम कस हा! येलिजावेता निकानाराव्ना, नमस्त!"

पतली सी सिगरेट को जीभ स मुह के एक सिरे से दूसरे सिर पर करते हुए वे अपनी देहाती बोली मे बता रहे थे—

"हमन उचित खच पर आपके रहन सहन और खान पीने की व्यवस्था कर दी है। मकान मालिकिन एक लातवियायी बुढिया डौन है। उसे बागबानी मे कमाल हासिल है। मैंने उससे बहुत कुछ सीखा है। दूध आपको अस्पताल के फाम से मिला करेगा। जिन्दगी की दहलीज पर खडे हुए आपके जस शहरी आदमी को ज्यादा स ज्यादा दूध पीना चाहिए। हम बिना नफे के २६ कोपेक लीटर के हिसाब से दूध बेचते है। क्या हालचाल है आन्ना सेम्योनोव्ना! सहयोगी, यह सेट पीटर और पाल का गिरजा है। हम बाद म इसकी चचा करेगे।

आपको यहा काम करना होगा, इसलिए अपनी खुराक का ध्यान रखियेगा। सस्ता बोल्शेविक नमस्ते। सहयोगी, आप भवन मर प्रयान होगे। मैं इस व्यक्ति म प्रबन्ध का स्तुति-गायक, उसका सच्चा प्रशसक हू। जनवादी केन्द्रीयतावाद एक महान चीज है "

सुर सिवन्त घोडे के पुट्ठे पसीने से काले हो गये थे। बोगोस्लोव्स्की ने बडी निपुणता स एक सामन्ती का चाबुक स मार गिराया और उस पर की पगला की चर्चा करने लगे। कालाश्या एनत्व बोगोस्लोव्स्की के हाथो का देख रहा था। कहीं मेरी आखें मुझे धोखा तो नही दे रही? क्या यहा ऐसे सजन भी होते हैं? बात बडी चतुराई स और धाराप्रवाह करते हैं। बिना नफे के दूध की चचा करते हुए उनकी आवाज म खास किस्म की चमक आ गई थी और वे रासों को ऐसे सम्भालते हैं मानो खानदानी साईस हो। मगर उनके हाथ, ओह कैसे गजब के हाथ हैं! बडे-बडे, चौडे-चौडे, मजबूत और पीली चित्तियोवाले। हे भगवान ऐसे हाथो से क्या करना सम्भव नही! इस अदभुत सजन ने शायद फिर से कालाश्या के विचारो या नजरो को भाप लिया—

"मेरे प्यारे सहयोगी, मैं तो जन्म स ही वयहत्था हू," वे बोले। "अगर किसी जन्मजात दोष का सदुपयोग किया जाय, तो बहुत फलद परिणाम होते ह। मेरे बायें हाथ ने कोल्चाक से मोर्चा लेने और सर्जरी म भी मेरी मदद की है। बडे अफसोस की बात है कि इस क्षेत्र मे मै अपना अनुभव और किसी को नही दे सकता। अगर आपका कोई वयहत्था विद्यार्थी मित्र हो, तो उसे अवश्य ही मेरे पास भेज दीजियेगा। मैं उसे शानदार सर्जन बना दूगा।

उनकी बग्घी खेतो के बीच से जा रही थी। गम, नीले आकाश मे भरद्वाज पक्षी अपनी ऊची तान उडा रहे थे। बोगोस्लोव्स्की की कमीज भीगी हुई थी। हवा म घोडे के पसीने, सडक की धूल, चमडे और तारकोल की प्यारी सी गध बसी हुई थी।

'अब यहा से आप हमारा 'हवाई जहाज' देख सकते है," बोगोस्लोव्स्की ने धूप के कारण आख सिकोडते और कोचवान के पुरातन जाने माने ढग से चाबुक के दस्ते से सकेत करते हुए कहा। 'बाडत्सेखाव्स्की परिवार के लोगो का पहले देहात मे रहने का यही

स्थान था। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान उन शानदार रूसी देशभक्तो को यही बात सबसे अधिक अच्छी लगी कि वे आस्ट्रिया के जगी कैदी बनाये गये अफसरो के लिए एक अस्पताल बनवा दें। एक आस्टियाई वास्तुशिल्पी, एक नवाब ने, उनके लिए ऐसा हिमाकत भरा डिजाइन तैयार किया।"

वोलोद्या आखें फाडकर नीचे घाटी म दख रहा था। हवाई जहाज़ की शक्लवाली इमारत के पख, ढाचा दुम और बाकी सब कुछ भी था। बच और लाइम के ऊचे-ऊचे वक्षा के बीच फैली हुई यह इमारत बडी बेहूदा और अटपटी सी दिख रही थी। अचानक उसे पोलूनिन के घर पर आधी रात के समय बोगोस्लोव्स्की के बारे म हुई बातचीत ऐसे स्पष्ट रूप से याद हो आई मानो यह पिछली रात ही हुई हो।

"आप पीते है?" बोगोस्लोव्स्की ने अचानक पूछा।

"आपका मतलब?' वोलाद्या ने शम से लाल-सुख होते हुए कहा।

"मेरा मतलब वोदका से है। जब हमारी पहली मुलाकात हुई थी, तो आप नशे मे धुत्त हा गये थे और आपने मुझ पर बहुत ही बुरा प्रभाव डाला था।"

"जिन्दगी मे केवल एक बार ही ऐसा हुआ था, वालोद्या ने मरी सी आवाज़ मे जवाब दिया। "मैंने अपनी क्षमता को अधिक समझा होगा या काफी खाया नही होगा।'

"हम मनोविज्ञान के फेर मे नही पडेगे," बोगास्लाव्स्की ने उसे टोकते हुए कहा। "हमारे फाम पर नजर डाल लीजिये। यहा से आप उसे पूरी तरह देख सकते हैं। हमे उम उल्लू नवाब की कल्पना की उडान का कोई सिर पैर बनाने के लिए काफी मेहनत करनी पडी।"

खडी ढाल पर नीचे जाते हुए घाडे को कडे आदेश देते और रासो का बडी चतुराई से सम्भालते हुए बागोस्लाव्स्की न चाबुक के दस्ते से इमारत के भागो की ओर सकेत किया—वह अस्पताल है, यह रही सहायक इमारते, फाम, डेयरी, बगीचा और गाव

उनकी बग्घी बालको के एक दल के पास से गुज़री, जो शोर गुल मचाते हुए एक पिल्ले के साथ दिलचस्प खेल खेल रहे थे। दापहर का अलस भरा समय था। यहा बहुत ही कम लोग आ-जा रहे थे, लकिन सभी बागोस्लोव्स्की का अभिवादन करते थे। बागोस्लाव्स्की न

टीन की छतवाले एक साफ-सुथरे और सफेद घर के पास बग्घी रोकी, घोड़े का साज़ ढीला किया, सुखद चू चर करता हुआ फाटक खोला और बगीचे के सिरे पर काम करती हुई नारी से कहा—

'बेटा एर्नेस्ताव्ना, इनकी अच्छी देखभाल करना। व्लादीमिर आपका पैतक नाम क्या है?"

"बस वोलोद्या ही काफी रहेगा।"

"नही, नही, हर कोई आपका पूरा नाम से ही बुलायेगा,' वोगोस्लोव्स्की ने कड़ाई से यहा तक कि बिगड़ते हुए कहा। "अगर हमारी सर्जरी की नर्स मारीया निकोलायेव्ना आपका केवल वालोद्या कहकर बुलायें तो आप उसे सही कर दीजियेगा। समझ गये?"

'हां।

"तो आप व्लादीमिर '

'अफानास्यविच उस्तिमको "

'तो आपका पूरा नाम है व्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमको। बहुत खूब। आइये अब चलकर देखें कि आपके लिये वहा क्या कुछ है।'

कुछ सहमी हुई बढ़ी मालकिन उन्हे वालोद्या के कमरे में ले गई। वहा ताजा धुले फर्श और ताज़ा पकायी गई रोटियों की गंध थी और नीची खिड़कियां के बाहर बहुत बड़े-बड़े गुलाबी सुन्दर फूल हवा में लहरा रहे थे। मालकिन फौरन ही खूब चमकता, जोर से सन्-सू करता और टहा मज़ा समावार ले आई। इसके बाद वह जीरेवाली कुछ पाव रोटियां और पारदर्शी रकाबी में वन्य ही बढ़िया मुरब्बा लाई।

कमरा पसन्द है?' बोगोस्लोव्स्की ने पूछा।

'बहुत ही' वालोद्या ने जवाब दिया।

आप बेटा एर्नेस्ताव्ना को एक महीने का किराया पहले दे दीजियेगा, बोगोस्लोव्स्की पहले की भांति ही कड़ाई से कहते गये। 'दूध के लिए भी कुछ पैसे दे दीजियेगा। वह दूध ला दिया करेगी। मैं इस बात की गारन्टी करता हूं कि यहा खटमल या और किसी तरह के कीड़े मकोड़े नहीं हैं। अब आइये बटकर चाय पियें। मुझे बराबर महसूस हो रहा है। आज सुबह मैंने आपरेशन किया और सिर्फ रात भी नहीं सो पाया। इस बार मुझे अस्पताल में बुलाया गया।'

वोगोस्लोव्स्की वैठ गये, उन्होने बहुत ही साफ और बडे से रूमाल से गदन और मुह पोछा और अपने लिए तेज तथा वोलोद्या के लिए हल्की चाय बनायी। उनके सवलाये हुए चेहरे पर चिन्तन का भाव था और इस समय वह बहुत ही प्यारा लग रहा था—एक रूसी किसान का चेहरा, गालो की उभरी हुई हड्डिया और उभरा हुआ माथा। मानसिक और शारीरिक दृष्टि स वहुत ही स्वस्थ आदमी का चेहरा था वह।

वोलोद्या भी चुप था, नीरवता, ठडी हवा, चाय और वागोस्लोव्स्की की सगत का मजा लेता हुआ। उसन सगव यह सोचा—"यह अदभुत आदमी मेरे पास यहा वैठे हैं जान की जल्दी म नही हैं। इसका यह मतलव है कि उन्ह मेरी सगत अच्छी लगती है।

गालियो की बौछार

चाय का दूसरा प्याला खत्म करने और रूमाल से और अच्छी तरह अपने चेहरे का पोछने के बाद वोगोस्लोव्स्की न वोलाद्या की ओर देखे बिना ही रुखाई से कहना शुरू किया—

"व्लादीमिर अफानास्येविच, एक बात के वारे म मैं आपको चेतावनी दे देना चाहता हू। आप खासे सुदर-सलोने और जवान है। अगर प्यार हो जाये या ऊचे आदर्शो और उससे सवधित भावनाओ का सवाल हो, जिनके फलस्वरूप समय आने पर हम सभी शादी के रजिस्ट्री-वाले दफ्तर मे, या जा कुछ भी इसे कहते हैं, जा पहुचते है, ता यह आपका व्यक्तिगत मामला होगा। पर, प्यार सहयागी, अगर आप मेरे अस्पताल की नर्सो से आख मिचौनी शुरू कर देंगे तो '

इतना कहकर वागोस्लाव्स्की न अप्रत्याशित ही अपने रुखाई भर, वल्कि नीरस स्वर मे ऐसी रसीली चटकीली और अभिव्यक्तिपूण गालिया की बौछार की कि वोलाद्या ने नजर घुमाकर इधर उधर देखा कि वढी मकान मालिकिन तो कही आसपास नही है।

'यह मैं वर्दाश्त नही करुगा, वोगास्लोव्स्की न फिर से अपने सभ्य ढग को अपनाते हुए वात जारी रखी। ' अगर ऐसी कोई चीज मेरी नजर मे आई और वह आयेगी जरूर, तो निश्चय समझिये कि

मैं आपको फौरन निकाल बाहर करूगा और घाट तक पहुचाने के लिए सवारी तक नही दूगा। इसी अर्थ मे हमारा अस्पताल 'बोगाम्लोव्स्की का मठ' कहलाने लगा है। तो आपको पर्याप्त चेतावनी मिल गई है?"

"हा।"

"मुझे इसलिए आपको चेतावनी देनी पडी कि यहा ऐसी घटना घट चुकी है। हा तो आइये अब काम-काज की बात करें।'

बाद के परिपक्व वर्षो म व्लादीमिर अफानास्येविच उत्तिमको का जो स्वभाव से दब्बू या डरपोक नही था, जब इन दो घटो की बातचीत का ध्यान आता, तो ठडे पसीने आ जाते। चाय का पाचवा प्याला खत्म करने और वोलोद्या की चालाकी भरी पैनी और लहूलुहान दृष्टि से देखते हुए बोगाम्लोव्स्की उस पर बिल्कुल अप्रत्याशित ही सवालो की बौछार करने लगे। वे हर दृष्टि से उसके ज्ञान की जाच करते उस पर हावी हो जाते, उसके उत्तरो के बारे में खुद उसी म सन्देह पैदा करते, जरा हसकर अपने सवालो को दोहराते, यहा तक कि वोलोद्या उनके कम्बख्त "मान लो कि हम इन लक्षणो म यह और जोड दे" के अतहीन प्रश्न प्रवाह मे बह गया। दूसरे घटे के समाप्त होने तक बेचारे वोलोद्या का रग पीला पड गया और उसे ऐसी अनुभूति हुई, जैसी कि ऊचाई पर जोडाई का काम करनेवाले व्यक्ति को पहली बार होती है या पहली हवाई यात्रा के समय हुआ करती है।

"थक गये?"

"मुझे उबकाई-सी महसूस हो रही है," वोलोद्या ने स्वीकार किया।

"आप बातचीत करते हुए मुरब्बे से भरा हुआ प्याला हडप गये हैं। यह उसी का नतीजा है। कम से कम आध सेर तो होगा ही। कुछ चाय पी लीजिये, आपकी तबीयत हल्की हो जायेगी।"

'मुरब्बे का नतीजा है!' वोलोद्या ने बिगडते हुए मन ही मन सोचा। "तो वे मुरब्बे का जिम्मेदार ठहरा रहे है। अपने को भ भलमन्सी जाहिर करना चाहते हैं। आदमी नही, पूरे शैतान हैं!'

वोलोद्या का इस बयहत्थे और गालो की ऊची हड्डियोवाले से म, चाय पीते समय उनके चटखारो मे और जिस तरह वे मुर्गे

भांति कनखियों से देखते थे, कुछ शैतानी झलक मिली। फिर भी वोलोद्या यह जानता था कि मैंने यह मोर्चा मार लिया है। पर बोगो स्लोव्स्की के साथ उसका पहला युद्ध तो केवल वाक युद्ध था। अभी काम की बाजी मारना बाकी था। उसने यह सोचते हुए कि चोर्नी यार अस्पताल के बड़े डाक्टर, साथी बोगोस्लोव्स्की के रूप में उसे कैसी आजमाइशों का सामना करना पड़ेगा, सिर हिलाया।

इसी बीच बोगोस्लोव्स्की खिड़की के दासे पर बैठे हुए मकान मालकिन से बातें करने में व्यस्त थे। वे उससे पूछ रहे थे कि वह जवान डाक्टर को दोपहर के खाने के समय क्या खिलानेवाली थी। वे उसे यह समझा रहे थे कि वह डाक्टर व्लादीमिर अफानास्येविच को बहुत ही अच्छे, बहुत ही योग्य, यद्यपि अभी जवान डाक्टर को अधिक से अधिक दूध पिलाये ताकि बहुत ज्यादा पढ़ने के कारण खराब हुआ उसका स्वास्थ्य सुधर जाये।

"डाक्टर! वे मुझे डाक्टर कह रहे हैं!" वोलोद्या ने सोचा। "मैं तो अभी डाक्टर बना भी नहीं और वे मुझे डाक्टर कहते हैं!"

एक बार फिर उसे गर्व की अनुभूति हुई, पर बहुत देर के लिए नहीं, क्षण भर को ही।

"तो कल मिलेंगे," बोगोस्लोव्स्की ने दो मानी ढंग से कहा, "आप आठ बजे मेरे पास पहुंच जाइये और बाकी तब देखा जायेगा।"

क्या मतलब है उनका "बाकी तब देखा जायेगा?"

"मेरी चिंता करने के लिये धन्यवाद," वोलोद्या ने रुखाई से जवाब दिया। उसने भी कुछ कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं, आसानी से जाल में फंसनेवाला नहीं था वह भी। "आप मुझे बेकार का आदमी समझते हैं, पर खैर हम देखेंगे। यह तो अभी हमें देखना है," चरमराते फर्श पर चहलकदमी करते हुए वोलोद्या ने अपने आपसे कहा।

उसके मन में कुछ अजीब-सी मिली जुली भावनाएं आ रही थीं— बोगोस्लोव्स्की के लिए प्रशंसा और खीझ की भावनाएं। पर प्रशंसा की भावना कहीं अधिक प्रबल थी।

"आध सेर मुरब्बा मैंने कहां से खा लिया! उसमें था ही चम्मच भर," वोलोद्या को यह याद करके फिर गुस्सा आया। उसे दोपहर के खाने की भूख महसूस होने लगी थी, उबकाई की अनुभूति जाती

क्या है। मैं तुम्हे यह भी वताना चाहता हूं कि भविष्य म जब कोई जवान डाक्टर मेरे पास काम करने आयेगा, तो मैं भी "[illegible]"

वोलाद्या ने इस पर कुछ विचार किया और "जवान डाक्टर" काटकर "विद्यार्थी" लिखा दिया।

"जब चौथे दर्जे का विद्यार्थी मेरे साथ काम करने आयगा, तो मैं उसका उसी तरह स्वागत करूंगा, जसे मेरा स्वागत किया गया।'

उस सारी शाम को वह न जाने क्या कुछ वकवास लिखता रहा। वाद म उसे वहुत समय तक यह सोचकर हैरानी होती रही कि वार्या उसकी भावनाओ, विचारो, धमकियो, अभिमान और भय के गडवड झाले का सिर पैर समझ गई थी। रात के खाने के पहले डाक्टर उस्तिमेको जल्दी से उचा नदी की सहायक नदी याचा पर जा पहुचा, खिली हुई चादनी मे उसने अपने तन की वढिया सफाई की, कुछ देर तैरा, वाहर निकलकर कपडे पहने, घास म किसी छोटे और अजीव से जानवर के पीछे दौडा और फिर गम्भीर वना हुआ घर आ गया। उसका विस्तर लगा हुआ था, घर म कही कोई झीगुर झीझी कर रहा था। उसने सारी स्थिति पर विचार करना चाहा, वार्या के शब्दो म "अपने सामने हर चीज का लेखा-जोखा तैयार करना' चाहा, किन्तु तकिये पर सिर रखते ही वह गहरी नीद सो गया और सुबह के छ वजे तक मुर्दे की भाति सोया रहा।

वोगोस्लाव्स्की ने वोलाद्या को अपने साथ ले जाकर अस्पताल म काम करनेवाले सभी लोगो से परिचित कराया। वे अभिव्यक्तिहीन ढग से कहते—

"ये डाक्टरी का अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी व्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमेको है।"

वोलोद्या अटपटे ढग से सिर झुकाता, वुरी तरह झपता शर्माता और दालान म अलमारियो के पीछे छिपने की कोशिश करता। अस्पताल का चक्कर दो घटे तक चलता रहा। इसके वाद वोगोस्लाव्स्की ने दूसरे डाक्टरो से वातचीत की। वातचीत तो वोलोद्या के पल्ले विल्कुल न पडी, पर एक वात वह फौरन समझ गया कि वोगोस्लोव्स्की के साथ वहुत सम्भलकर काम करना होगा। काले वालोवाली, सुदर डाक्टर

रही थी, और अब अगले दिन का ख्याल करके उसे जरा-सा डर भी अनुभव होता था। पर वह सुखद डर था। "कोई बात नही, देखा जायगा, उसने सोचा। "साथी वोगोस्लाव्स्की, तुम सर्जन ही तो पैदा हुए नहीं थे। कभी तुम भी डर ही जाते थे।"

दूध का शोरबा, खट्टी क्रीम के साथ छेने की पुडिंग, अलग से खट्टी क्रीम और शहद के साथ भरपेट छेना खाने के बाद डाक्टर उस्तिमेन्को बगीचे में गया, दिखावा करने के लिए न० इ० पिरागोव का पहला खण्ड अपने करीब रख लिया, दातों से पेंसिल काटी और वार्या को प्रेम-पत्र लिखने बैठ गया। एक छोटा और सुनहरे बालोंवाला बालक सीटी बजाता और भागता हुआ बगीचे में से गुजरा।

"शोर नही करो, सीजर, डाक्टर काम कर रहे है," मकान मालकिन ने उसे डाट बतायी।

सीज़र अभी बहुत छोटा था और इसलिए नग धडग भागा फिरता था। उसने सहमी सहमी नज़र से वोलोद्या की ओर देखा और बगान की झाडियों मे जा छिपा। वहा से उसके हिलने डुलने और सू सू करने की आवाज़ आती रही। वोलोद्या लिखता जा रहा था। उसने कभी यह नहीं जाना था कि वह वार्या को इतना अधिक और इतने लम्बे अर्से से प्यार करता है। उसे अपनी इस जोश की स्थिति में हर चीज़ बहुत बडी, बहुत असाधारण और वास्तव मे बहुत अधिक शानदार प्रतीत हो रही थी। यह बगीचा, वह मेज जिस पर बैठा हुआ वह लिख रहा था, मकान मालकिन की बेटी या पोती—लम्बी, मज़बूत, चौडे कधोंवाली लाटवियाई लडकी, प्यारा प्यारा झुटपुटा, अगले दिन डाक्टर के कमरे में जाने का ख्याल यह सभी कुछ अदभुत था, असाधारण था उसे पहले कभी ऐसी अनुभूति नही हुई थी।

"हम लाल घुडसवार है," वोलोद्या गुनगुनाने लगा और उसकी पेंसिल कागज़ पर भागती चली जा रही थी।

हा तो लाल बालोंवाली बहुत मुमकिन है कि कल वे मुझे निकाल बाहर करेंगे, यह संगदिल पर मै नहीं जाऊंगा,' वोलोद्या लिखता गया और उसे इस बात का ध्यान ही न रहा कि इससे पहलेवाले पर में उसने केवल प्रेम की चर्चा की थी। 'मुझे उनके साथ काम करना और यह पता लगाना ही है कि इस आदमी का शक्ति स्रोत

क्या है। मैं तुम्हे यह भी बताना चाहता हूं कि भविष्य में जब कोई जवान डाक्टर मेरे पास काम करने आयेगा, तो मैं भी [illegible]"

वोलोद्या ने इस पर कुछ विचार किया और "जवान डाक्टर" काटकर "विद्यार्थी" लिखा दिया।

"जब चौथे दर्जे का विद्यार्थी मेरे साथ काम करने आयेगा, तो मैं उसका उसी तरह स्वागत करूंगा, जैसे मेरा स्वागत किया गया।"

उस सारी शाम को वह न जाने क्या कुछ बकवास लिखता रहा। बाद में उसे बहुत समय तक यह सोचकर हैरानी होती रही कि वोर्या उसकी भावनाओं, विचारों, धर्मक्रियाओं, अभिमान और भय के गडबड झाल को किस-पैर समझ गई थी। रात के खाने के पहले डाक्टर उस्तिमेन्को जल्दी से उंचा नदी की सहायक नदी याब्ना पर जा पहुंचा, खिली हुई चांदनी में उसने अपने तन की बढ़िया सफाई की, कुछ देर तैरा, बाहर निकलकर कपडे पहने, घास में किसी छोटे और अजीब से जानवर के पीछे दौडा और फिर गम्भीर बना हुआ घर आ गया। उसका बिस्तर लगा हुआ था, घर में कहीं कोई झींगुर झीं झीं कर रहा था। उसने सारी स्थिति पर विचार करना चाहा, बाबा के शब्दों में "अपने सामने हर चीज का लेखा-जोखा तैयार करना" चाहा किन्तु तकिये पर सिर रखते ही वह गहरी नींद सो गया और सुबह के छः बजे तक मुर्दे की भांति सोया रहा।

बोगोस्लोव्स्की ने वोलोद्या को अपने साथ ले जाकर अस्पताल में काम करनेवाले सभी लोगों से परिचित कराया। वे अभिव्यक्तिहीन ढंग से कहते—

"ये डाक्टरी का अभ्यास करनेवाले विद्यार्थी ब्लादीमिर अफानास्येविच उस्तिमेन्को है।"

वोलोद्या अटपटे ढंग से सिर झुकाता, बुरी तरह झेंपता शर्माता और दालान में अलमारियों के पीछे छिपने की कोशिश करता। अस्पताल का चक्कर दो घंटे तक चलता रहा। इसके बाद बोगोस्लोव्स्की ने दूसरे डाक्टरों से बातचीत की। बातचीत तो वोलोद्या के पल्ले बिल्कुल न पडी, पर एक बात वह फौरन समझ गया कि बोगोस्लोव्स्की के साथ बहुत सम्भलकर काम करना होगा। काले बालोंवाली, सुंदर डाक्टर

ने आसू बहाए और वादे किये, पर इससे भी बोगोस्लोव्स्की का [illegible]
नहीं पसीजा।

"मैं आपको निकालने का फैसला कर चुका हू," बोगोस्लोव[illegible]
ने साफ-साफ और कड़ाई से कहा। "इसके अलावा, मैं प्रमाणपत्र
आपको बहुत बुरा दूगा। आप कही भी मेरे खिलाफ शिकायत [illegible]
सकती हैं। चोर्नी यार अस्पताल का बड़ा डाक्टर, विख्यात सर्जन[illegible]
पादरी का बेटा कुनरु या और जो कुछ भी चाहे मेरे खिलाफ लि[illegible]
सकती है मैं किसी भी चीज से डरनेवाला नहीं हू। यह बात [illegible]
अपनी शिकायत में जोड़ दीजियेगा। अब इस सिलसिले में और बा[illegible]
नहीं की जायेगी। व्लादीमिर अफानास्यविच, आप यहा ही हैं?"

"जी मैं यहा ही हू," वोलोद्या ने दबी सी आवाज में जवा[illegible]
दिया।

"आपरेशन के कमरे में चलिये। आप मेरी सहायता करें।"

बोगोस्लोव्स्की किसी से बातचीत करने के लिए दालान में ठह[illegible]
गये और वोलोद्या अकेला ही अन्दर पहुचा। उसने अपने हाथ धो[illegible]
शुरू कर दिये थे कि उसे हाथ धोने के स्टैंड के क़रीब साइकिल [illegible]
गद्दी जैसी एक सीट दिखाई दी। घुटने से उसे अपनी ओर करके वो[illegible]
लोद्या उस पर बैठ गया।

"आहो!" किसी ने पीछे से कहा। यह सर्जरीवाली नर्स मारीया
निकोलायेव्ना थी, दुबली-पतली सी नारी, शहीद के से चेहरेवाली।

वोलोद्या ने "ओहो" की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और अधिक
इतमीनान से बैठकर सीटी बजाते हुए नियमानुसार अपने हाथ धोता
रहा।

"सीटी भी बजायी जा रही है!" बोगोस्लोव्स्की ने कमरे में
प्रवेश करते हुए कहा। "अभी आपकी बैठकर हाथ धोने की उम्र नहीं
हुई, भलेमानस।'

अब वोलोद्या "आहो' में निहित व्यग्य का मतलब समझा। वह
झटपट उठकर खड़ा हुआ पर बोगोस्लोव्स्की ने कहा—

'जब शुरू ही कर लिया है, तो धो डालिये अपने हाथ।

हाथ धोने के दूसरे स्टैंड का हैंडल दबाते हुए बोगोस्लोव्स्की लाल
लाल रोयोवाले अपने बड़े-बड़े हाथ धोने लगे। उन्होंने यह काम बड़ी

शान से किया। वोलोद्या ने कनखियों से उनकी ओर देखा। बोगोस्लाव्स्की त्योरी चढ़ाये हुए विचारमग्न थे।

वे दोनों दोपहर के दो बजे तक आपरेशन के कमरे में काम करते रहे। वोलोद्या को अपने घुटने जवाब देते से हुए प्रतीत हुए उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था और उसकी कमीज पसीने से सराबोर होकर पीठ के साथ चिपकी हुई थी। बोगोस्लाव्स्की तो ऐसे ताजादम थे, माना उन्होंने अपना दिन का काम शुरू ही किया हो। हाथ धोते हुए वे धीरे धीरे गुनगुना रहे थे—

चमको, चमको, मेरे तारे
मेरे तारे, मेरे प्यारे
है मन का अनुराग तुम्हीं-से
और न होगा, कभी किसी से

वोलोद्या के काम के बारे में कोई राय ज़ाहिर नहीं की गई। वन-देव से मिलते जुलते यह सज्जन शायद भूल गये थे कि वोलोद्या भी वहां उपस्थित है।

बोगोस्लाव्स्की ने बड़े ढंग से तौलिया टांग दिया और अचानक वोलोद्या को सम्बोधित करते हुए बोले—

"जानते हैं कि वह कौन था, जिसका आज हमने आपरेशन किया है?"

"आपका अभिप्राय गेस्ट्रोइंटेस्टिनल अनास्टोमोसिस (आमाशयान्त्रीय सम्मिलन) से है?"

"नहीं, छिद्रणवाले रोगी से है। इस रोगी का नाम सीदोलेव है।

"वह हमारे यहां एकाउटेंट होता था। यह वही आदमी है, जिसने मुनूगिन को मेरे खिलाफ़ झूठी सामग्री जुटाने में मदद दी थी। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर कुल चौदह रिपोर्टें भेजी थीं। आखिर इस बूढ़े की जारेच्ये में तब्दीली कर दी गई थी, पर क़िस्मत उसे फिर यहां ले आई। सीदोलेव की पत्नी को इस बात का यकीन है कि मैं आपरेशन

की मेज पर उसका काम तमाम कर दूगा। उसन आज सुवह सभी के सामन औपचारिक रूप स इसकी घोपणा भी कर दी थी। ईमान की वात यह है कि उसे वेहोश करने के पहल तो मुझे वहुत वरा लग रहा था। वूढा मुझे एकटक देख रहा था और उसकी नजर यह कह रही थी कि वह सचमुच ही ऐसा मानता है कि मेरा प्रतिशोध लन का समय आ गया है। हे भगवान, है न यह भयानक चीज!"

वोगोस्लाव्स्की सिहरे और उनके चेहरे पर गहर दुख की भावना झलक उठी।

"पर उसन आपके खिलाफ यह सव कुछ लिखा क्यो?" वालोद्या ने धीरे स पूछा।

वह अकेला ही थोडे था? दूसरा की तुलना मे तो वह बच्चा, विल्कुल फरिश्ता ही है। उन दिनो यहा क्या कुछ नही हुआ।'

इन दोनो न डयोढी लाघी दालान म मे गुजरे और जस कि वालोद्या को लगा वास्तुशिल्पी फान स्ताउवे की इमारत के पिछल भाग म पहुचे। गोल खिडकियो के वाहर वच वक्ष धीरे धीरे सरसरा रह थे। वागोस्लोव्स्की को देखकर डयटीवाली नस उठकर खडी हो गई। बोगास्लोव्स्की ने ज़रा सिर हिलाकर यह अभिवादन स्वीकार किया। वोलाद्या ने भी वडी शान से एसा ही किया, पर वह नही जानता था कि कुछ ही देर वाद उसे लज्जित होना पडेगा।

वोगास्लाव्स्की रोगी की वगल म सफेद पालिश किये हुए स्टूल पर वैठ गये। उन्हान मरीज का हडीला पीला और निर्जीव सा भारी हाथ अपने हाथ म लकर उसकी नब्ज़ देखी। उसक राग की रिपाट रोगी के विस्तर के करीववाली मज़ पर रखी थी। अगर वोलोद्या न कनखिया स भी उस पर एक निगाह डाल ली होती तो स्थिति विल्कुल दूसरा ही रूप ल लती, किन्तु उसकी जन्मजात भलमनसाहत न उस ऐसा नही करन दिया।

'यगारोव!' वागास्लाव्स्की न रागी का सम्वोधित किया।

"इम ता हाश ही नही है" नस न कहा। "वहुत वुरी हालत म लाया गया था इम यहा।'

'इसकी अच्छी तरह जाच कीजिय वागास्लाव्स्की न वालाद्या का आदेश दिया। "जाच करक अपन निष्कप निकालिय।'

नस ने उस चीज़ की जाच करन म वोलोद्या की मदद की, जिसे उसन कावनकल समझा था। उसे तो यह वेहद साफ प्रतीत हुआ था। "क्या वोगोस्लोव्स्की का मुझे एसी साधारण चीज भी दिखानी चाहिए?"

"तो क्या ख्याल है?" वोगोस्लाव्स्की ने कुछ दर वाद पूछा।

"आपरशन करना हागा, वालाद्या ने जवाव दिया।

"पूरा यकीन है इस वात का? यह ध्यान म रखिये कि येगोराव नमद के जूते बनानवाल कारखान म काम करता है।"

ओह, उसने नमद के जूतावाली वात की आर क्या कान नही दिया? पर जवान लोग तो गम मिज़ाज और सवदनशील होते हैं। "नमदे के जूतो का रागी से क्या सम्वध हो सकता है?' वालोद्या के दिमाग म यह विचार कौधा। आप मुझे बेवकूफ नही वना पायगे, डाक्टर वागोस्लाव्स्की, हरगिज नही।'

"ऑपरेशन विल्कुल जरूरी है,' वालोद्या न दढतापूवक कहा। "खुद ही सूजन पर नज़र डाल लीजिय। वीमार की आम हालत भी काफी खराव है। गदन पर वडा जमाव है। इस तरह के कावनकल स मस्तिष्कावरण प्रदाह हो सकता है "

वोगोस्लाव्स्की की तातार जमी आखें अधिकाधिक गुस्स स वालोद्या को दख रही थी।

"तो, आपरेशन कस करगे? उसने पूछा।

'मैं स्वस्थ शिराओ तक धुसी आस के आकार की काट वनाऊगा, वचा के सिरा का मुक्त कर दगा, मृत शिराओ का निकाल दूगा, [illegible]जन का चीरकर सूराख को अच्छी तरह साफ करूगा "

अचानक नस न गहरी, ठडी सास ली।

"और आप पीप के कीटाणु-सम्वधी विश्लपण की आवश्यक्ता [illegible]ही समझते?" वागास्लाव्स्की न चुभती हुई शान्त आवाज़ म पूछा। क्या? ऐसा न करन स तो वहुत भयकर भूल हो सक्ती है।

रोगी धीरे-से कराहा और छटपटान लगा।

उसके रोग की पूरी रिपोट पढिय डाक्टर उस्तिमन्को," वोगा[illegible]लाव्स्की ने किसी तरह के व्यग्य के विना, केवल डाक्टर शब्द पर [illegible]र दते हुए कहा।

वोगोस्लोव्स्की न किसी काम स नस का वहा स भज दिया। वोलाद्या का माना घनी धुध क पार से वोगोस्लाव्स्की की आवाज आती प्रतीत हुई। किन्तु वह समझ गया कि वागोस्लाव्स्की उस पर दया कर रहे है।

साइवेरियाई फोडा

रोग की रिपोट म वालाद्या ने पढा "पूस्तुला मालिग्ना–साइवेरियाई फोडा'। उसके माथे पर पसीने की वूद झलक उठी। उसने इस वात की ओर ध्यान दिया कि राजगोन्य गाव म नमदे के जूता का वकशाप है, इन शब्दा के नीचे लाल पेंसिल से रेखा खीची गइ थी।

"तो क्या ख्याल है?" वोगोस्लाव्स्की ने फिर से पूछा।

वोलाद्या को वोगोस्लोव्स्की की ग्रार देखन की हिम्मत न हुई। पर जब उसन देखा ही, तो वोगोस्लोव्स्की के चेहरे पर उसे विजयोल्लास की नही, वल्कि उदासी और निराशा की झलक मिली।

"आपको अधिक सजगता स काम करना चाहिए, मेर प्यारे नौजवान," वोलाद्या को माना कही दूर स यह सुनाई दिया। "आप जानते ही है कि अधिक सजग रहने के लिए भी शक्ति का व्यय करना पडता है। हम उस डयोढी म से यहा आये हैं, जिसके दरवाजे पर लिखा हुआ है–'छूत के रोगिया का विभाग'। हमने दो दालान पार किये और फिर ऐसे दरवाजे के सामने पहुचे, जिस पर लिखा हुआ है–'छूत के रोगियो के विभा ा का प्रवेश-द्वार'। इसके अलावा मैंने इस बात की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट किया था कि येगोरोव नमदे के जूते बनाने का काम करता है। इसका मतलब यह था कि उसे ऐसे ऊन से वास्ता पडता है, जिसम रोग के कीटाणु हो सकते है फिर भी आपने यह कहा कि ऑपरेशन करना जरूरी है। नश्तर के मामले म बहुत जल्दी करत ह आप! ऑपरेशन तो निश्चय ही गलत उपचार है!"

"अब तो मैं भी यह समझ गया " वोलोद्या ने कहा।

'बिल्कुल ही गलत उपचार है," बोगोस्लोव्स्की न ऐसी इस्पाती आवाज म कहा जिसकी गूज इस वात की द्योतक थी कि इस वात को काटा नही जा सकता। "चीरफाड, घाव की जाच, यह सभी

कुछ निश्चित रूप से ग़लत होगा " वोगोस्लाव्स्की ने वोलोद्या को उंगली दिखाते हुए अन्तिम शब्दों पर ज़ोर दिया। सूजन को चीरने से क्या होता है?"

"कीटाणुओं का संक्रमण," वोलोद्या ने राहत की सांस लेते हुए कहा। इससे कीटाणु रक्त में चले जाते हैं और रक्त बुरी तरह विषाक्त हो जाता है।"

वोगोस्लोव्स्की मुस्कराये।

"ठीक है! क्या इलाज करना चाहिये?"

वोलोद्या ने कहा कि सीरम का टीका और शिराभ्यन्तर इंजेक्शन लगाया जाय। वोगोस्लोव्स्की अपने विचारों में डूबे हुए और उदास से खड़े थे।

नर्स लौट आई। इसी समय इस बात की ओर वोलोद्या का ध्यान गया कि इस विभाग में आने का दरवाज़ा अलग था और बाहर जाने का अलग। वोलोद्या और वोगोस्लाव्स्की ने बड़ी सावधानी से अपने हाथ धोये, सफ़ेद गाउनों को ड्योढ़ी में छोड़ा और बगीचे में बाहर आ गये।

"मैं आपको एक अप्रिय कार्य सौंपने जा रहा हूं," थकान को व्यक्त करनेवाली गहरी सांस लेते और बैठते हुए वोगोस्लाव्स्की ने कहा। 'आज शनिवार है। कल राज़गोये में रविवारीय मेला होनेवाला है। इस इलाके को अवश्य ही ख़तरनाक घोषित करना और ज़रूरी कदम उठाने चाहिये। पशुओं के इन्स्पेक्टरों की मदद से नमदे के जूतों के उस गड़बड़ कारख़ाने को अवश्य ही छूत रोग मुक्त करना चाहिये। छूत की जड़ को ख़त्म करना ज़रूरी है, व्लादीमिर अफ़ानास्येविच। बात यह है कि यगोरोव वहां से आनेवाला तीसरा रोगी है। इसके पहले दो ऐसे रोगी आ चुके हैं, जिनकी जान नहीं बचाई जा सकी। उनमें से एक को अन्तड़ियों में छूत लगी थी और दूसरे के फेफड़ों में। हमारी महामारी विशेषज्ञा जा चुकी है (वोलोद्या को उस सुबह की घटना का ध्यान आया)। मुझे उसे निकालना ही पड़ा। वह बिल्कुल निकम्मी, कमज़ोर, बुज़दिल और झगड़ालू औरत थी। मैं खुद नहीं जा सकता। मुझे कल कई ऑपरेशन करने हैं। वैसे भी मैं इस समय अस्पताल से नहीं जा सकता। आपका काम यह होगा कि उस जगह लोगों के आने-जाने की मनाही कर दें, मेले को बन्द कर दें, वहां विस्तृत जांच-

पडताल कर और राजगार्य गाव के लोगो को साइवेरियाइ पोड़े से मुक्ति दिलाये। आइये, मैं जरूरी कागजात और उन लोगो की सूची तैयार कर दू, जो आपकी सहायता कर सकते हैं। कुछ और भी बताना-समझाना होगा।"

बोगोस्लाव्स्की जब तक कागजात तैयार करते रहे, वोलोद्या ने बगल ही मे विद्यमान पुस्तकालय म जल्दी जल्दी किताबो को उलट पलटकर देखना शुरू किया। जहा तक रोक थाम-सम्बन्धी उपचार का ताल्लुक था वह सभी कुछ जानता था। उसने प्रसकोली पराक्षा को एक बार फिर मे पढ लिया और अब अपने का पूरी तरह तयार अनभव किया।

वालाद्या न अहाते म मूछोवाले एक परिचारक को बग्घी म रबड की नलीवाल कुछ टब घास फूस से ढकी हुई कुछ बडी बोतल, और न जाने क्या दो कुल्हाडे और लाह का एक डाड भी रखते हुए देखा।

"आप पूरी तरह इस आदमी पर भरोसा कर सकते है," बोगोस्लाव्स्की न खिडकी स बाहर झाकते हुए कहा। "मै कई वर्षो म उसके साथ काम कर रहा हू और उस पर विश्वास करता हू। वह आपका जो भी सलाह दे आप वही कीजिये। मुझे एक और बात की भी आपका चेतावनी देनी है। वहा गाशकाव नाम का एक अधिकारी काम करता है, बहुत ही निकम्मा बडा ही जहरीला, घृणित और चार किस्म का आदमी है वह। मैं अभी पूरी तरह तो सब कुछ नहा समझता हू, पर वह कोइ गडबड अवश्य करनेवाला है"

एक घटे बाद भूखा थका-हरा खीझा हुआ, पर गव की अनुभूति के साथ वालोद्या बग्घी म सवार हुआ। उसम वही चितकबरा घाडा जुता हुआ था जो उसे चोर्नी यार लाया था। दिन बडा उमस भरा और उदास उदास था मानो आधी-तूफान के आन की पूवसूचना दे रहा था। गेहुआ मूछा और बूढे सैनिक जस चेहरेवाल परिचारक चाचा पत्या न गम्भीरतापूवक लगाम सम्भाली और दरवान से कहा-"ए, फामाकिन, खोलो फाटक।"

घाडा मधी हुई दुलकी चाल स चल दिया। वालाद्या न मरसराहट क साथ अखबार खोला। विद्रोही फिर म विल्याम्रा की ओर बढ रहे थे। फासिस्टा की हवाई सना भयानक अत्याचार कर रही है

शहरी आबादी को वडे पमान पर नष्ट किया जा रहा है " उसने पढा। "'जक्र' हवाई जहाजा न वास्की लागा के पवित्र नगर गुएर्नीका को भी नष्ट कर दिया है और अब विल्बाम्रो का एक अय और वडा गुएर्नीका वनान जा रह है।"

वालाद्या न दात पीसे।

"पिता जी, आप कहा है? आप जिदा भी है? सम्भवत आपको वहा वडी कठिनाइया का सामना करना पड रहा हागा? एक लडाई से दूसरी लडाई, एक उडान के बाद दूसरी उडान? आप उन लोगा म से नही है, जो ऐसे कठिन समय म जब दुनिया म इतनी गडवड हो, कॉफे म आराम स वटे रह।"

चाचा पेत्या वडा वातूनी था। गाव से वाहर आत ही उसन वोलना-वतलाना शुरू कर दिया। वह खुशवूवाली घास की अपनी हाथ की वनी हुई सिगरट जलाने के लिए कुछ क्षण का जब-तव ही खामाश हाता।

"हमार सजन कोई माधारण व्यक्ति नही ह," चाचा पत्या ने यह ऐस कहा, माना वालाद्या कोई आपत्ति करनेवाला हो। "हम छाटे चिक्त्सा-कमचारी, जा उनके साथ काम कर चुके है, उनका सवस अधिक आदर करते हैं और हमशा उनका साथ दत है। हम उन्ह किमी तरह की हानि नही हान दगे। तुम जवान डाक्टर हो, आज यहा हा कल कही और होगे। वहुत-से देखे है तुम्हार जसे हमन। जरूरत हाने पर हम खुलकर अपनी वात भी कह दते हे। पर वे, व ता हमारे अपन है। चिकित्सा विज्ञान अभी सभी कुछ तो नही कर सकता किन्तु जो कुछ कर सकता है, उसे हमारे सजन वहुत अच्छी तरह म जानते है। तुम जवान डाक्टर हा और अक्सर मुझे तुम्हारे जसा का जहाज पर वापिस पहुचाना होता है "

"मरी जवानी का इस वातचीत स क्या सम्वध ह?" वालोद्या खीझ उठा। 'रही जहाज पर लौटन की वात, तो में ता डाक्टर नही, अभी विद्यार्थी ही हू, अभी ता मुझे सस्थान की पढाई खत्म करनी है।"

'खैर, यह तुम्हारा अपना मामला है, हम दखल नही देना चाहते,' चाचा पत्या उसी समस्वर म कहता गया। "किन्तु हम यह

जरूर देखते है कि नौजवान यहा कुछ समय के लिए पिढाई देते हैं हमारे सजन से कुछ सीखते हैं और फिर धन्यवाद तक दिये बिना ही ना दो ग्यारह हो जाते हैं। हम छोटे चिकित्सा-कमचारी सभी कुछ देखते भालते है। जाहिर है कि हम कुछ कहते नही, हमसे पूछा भी नही जाता पर हम आख मूदन के लिए तो कोई मजबूर नही कर सकता। जब पार्टी के सदस्यो की बैठक होती है, तो वहा हम अपनी बात कहते है। तुम पार्टी-सदस्य हो?"

'नही अभी तो युवा कम्युनिस्ट लीग मे हूं।"

"मतलब यह कि गैरपार्टी हो। तो हम पार्टी की गुप्त बातो की चर्चा नही करेंगे। पर पार्टी के सदस्यो की बैठको मे हम जो कुछ कहते है सो तो कहते ही है। किसी को इससे कोई सरोकार नही।'

वालोद्या ने ऊबते हुए आह भरी। रास्ता काफी लम्बा था और चाचा पत्या सास लिये बिना बोलता चला जा रहा था। दिन बहुत गम और उमस भरा था। खड्ड के पार हल्की-हल्की धुध के बीच से देहाती घरो की धुधली सी रेखाए दिखाई दे रही थी, पश्चिम से धीमी धीमी गडगडाहट सुनाई देने लगी थी और आकाश मे आधी उमडने लगी थी।

"यही राजगोये है?"

"हा,' अपनी गेहुआ मूछो को थपथपाते हुए चाचा पेत्या ने जवाब दिया। "वह मात्वेय कभी परेशान करेगा।"

"वह कौन है?"

"वही, उस उद्यम का सचालक गोशकोव। मना तो कल होगा पर मैं शत लगाकर कह सकता हू कि वह तो आज सुबह से ही पिये होगा।"

सचमुच ऐसा ही था भी। गोशकोव पिये हुए था। उसने उसे अपने घर के सामने बैठा और एक दोगले कुत्ते को कुछ करतब सिखाते हुए पाया। उसकी आखे नशे से भारी थी।

पास ही चौक मे एक हिडोला खडा किया जा रहा था। वहा से हथौडा की टनटनाहट सुनाई दे रही थी। अस्त-व्यस्त बालो और मोटी गदनवाला एक व्यक्ति उस स्टाल के सामने खडा हुआ ऊची

ग्रावाज मे हिदायत दे रहा था, जिस पर 'शराव, खान ग्रौर पान' का थोड टागा जा रहा था। एक सुगठित मिलिशियावाला सूरजमुखी के वीज वेचनवाली एक वुढिया को कुछ व्याख्यान दे रहा था।

एक जवान ग्रौरत, जो स्पष्टत गभवती थी, घर से वाहर ग्रायी ग्रौर उसने गाशकोव को क्रीम निकले दूध का भरा हुग्रा प्याला दिया। गोशकोव ने लम्वी उगलिया से उसमे स एक मक्खी निकाली, फक मारी, एक घूट दूध पिया ग्रौर फिर वोलोद्या को ध्यान से देखते हुए कहा –

"मुझसे कोई काम है?"

"हा, मगर ग्राप ही गोशकोव ई," वोलाद्या ने उसी घणा के साथ कहा, जो वह पियक्कडा के प्रति हमेशा ग्रनुभव करता था।

"कारखान से ग्राये है?"

"नही। ग्रापके उद्यम म साइवेरियाई फोडे की तीन घटनाए हा चुकी है। मैं इसी सिलसिले मे यहा ग्राया हू।"

"तो फिर वही चक्कर," गाशकोव ने ऊव भरी ग्राह भरते हुए कहा। "ग्रभी एक मुसीवत से पिड छुड़ाया था कि दूसरी ग्रा धमकी। तोविक, काट लो इसे।"

कुत्ते ने वालोद्या के जूतो का सूघा ग्रौर जमीन पर लेट गया।

"कल मेला नही हागा," वोलोद्या ने साफ-साफ ग्रौर दढतापूवक कहा। गाव के गिद गारद खडी करनी हागी। हम इसी समय ग्रापके उद्यम, यानी कच्चे माल को छत मुक्त करना शुरू करगे। उसके वाद "

"यह सव नही होगा," गाशकोव न कहा।

"क्या मतलव?"

"मतलव साफ है। नही होगा ग्रौर वस। हमने छूत के स्रोत, यानी वकशापो को जला डालने का भी फसला कर लिया है। हमन मौके पर मिट्टी का तेल, छीलन ग्रौर पानी के टव भी भेज दिय है। ऐ, वाविचेव!" उसन ग्रचानक सुगठित मिलिशियावाले को ग्रावाज़ दी।

वाविचेव ग्रपन जूतो स धीमी ग्रावाज़ पैदा करता हुग्रा धीर धीरे ग्राया।

"हम वकशॉपें जला रहे हैं, न?"

"हां,' वाविचेव ने अपनी तरल आंखों से वोलोद्या की ओर देखते हुए जवाब दिया।

"और य हम मेला लगाने की मनाही कर रहे हैं।"

मिलिशियावाला अपने सुंदर, सफ़ेद दांत दिखाता हुआ हंसा।

"छूत का तो मूलनाश करना चाहिये," वह बोला। "अगर बीमार पशुओं के पंजर जलाये जाते हैं, तो निश्चय ही कीटाणुग्रस्त ऊन और तैयार माल को भी जलाना चाहिये। हम यहां बिल्कुल ही अनाड़ी नहीं हैं, काफ़ी कुछ जानते हैं " उसने वोलोद्या को आंख मारी और शब्दों पर ज़ोर देते हुए कहा—

'हमने मशविरा कर लिया है "

"किसके साथ?'

'हम जानते हैं कि किसके साथ हम मशविरा करना चाहिये।"

'सुनो वाविचेव, तिकड़मबाज़ी नहीं करो। मैं तुम्हें जानता हूं और तुम मुझे " चाचा पेत्या ने अचानक आगे आते हुए कहा।

उन्होंने आंखें चार कीं और लगा कि वाविचेव कांप गया।

"किससे मशविरा किया है तुमने?"

मैंने नहीं, संचालक ने मशविरा किया है " वाविचेव ने सिर से गोशकोव की ओर इशारा करते हुए कहा।

वह एक दो क़दम पीछे हट गया।

"ज़रा रुक जाओ,' चाचा पेत्या ने कहा। "आपने सारे माल की सूची तैयार कर ली है? लेखा-परीक्षक की रिपोर्ट कहां है?"

वोलोद्या, बालक की तरह मुंह बाये गोशकोव को एकटक देख रहा था। अब सचाई उसके सामने आने लगी थी। गोशकोव ने होंठों पर ज़बान फेरी, उठने को हुआ और फिर बैठ गया।

'ऐ मूछोंवाले शैतान, तुम्हारा दिमाग़ तो ठीक है?" गोशकोव ने चिल्लाकर चाचा पेत्या से कहा। "मैं वहां लोगों को भीतर जाने ही कैसे दे सकता हूं, जबकि वहां कम्बख़्त तुम्हारे कीटाणु हर जगह कूदते फिर रहे हैं? मान लो कि वे लेखा परीक्षक को काट लें, तो कौन दोषी होगा? गोशकोव ही न? या फिर अगर तुम अंदर जाओ और बीमार पड़ जाओ तो कौन ज़िम्मेदार होगा? मैं ही तो? आह,

नही। मैं किसी को अन्दर नही जाने देता हू। साथी वाविचेव की उपस्थिति मे उस जगह को बन्द करके उस पर बोर्ड की मुहर लगा दी गई है। वहा तो मक्खी भी नही जा सकती।"

वाविचेव कुछ कदम और पीछे हटा, चौक की ओर लौट चला। चाचा पेत्या उसे शान्त, लगभग खाली सी नजर स जाते हुए देखता रहा।

"खैर, हम तो छोटे आदमी है, हम इसका निणय नही कर सकत," उसने वोलोद्या की ओर आख मारते हुए बडे महत्त्वपूण अन्दाज मे कहा। "मैं यहा छाया में तुम्हारे साथ बठकर जरा अपनी टागो को आराम दूगा। इसी बीच ब्लादीमिर अफानास्येविच जाकर इस बात की हिदायत ले आयेगा कि जलाने का काम कस किया जाय। यह साधारण ढग से नही, वज्ञानिक ढग से किया जाना चाहिये। महज जलाना ही नही, पूरी तरह से 'नोर्मालिस' छूत-मुक्त करना जरूरी है।'

चाचा पेत्या की वैज्ञानिक शब्दावली न पिय हुए गोशकोव का बिल्कुल दम निकाल दिया। अपने लाल मुह स वह कोई मजाकिया गीत गाने लगा।

"इस मामले म जुम और पसे की हेरी फेरी की गन्ध आती है," चाचा पेत्या ने फुसफुसाकर वोलोद्या से कहा। "चिकित्सा-काय के क्षेत्र म आन पर ऐसी चीजो से वास्ता पडता है। मैं तो घिसा हुआ सिक्का ह और इस बदमाश को 'नोर्मालिस' शब्द से ठण्डा कर दिया।"

सचालक के नये और बढिया बन मकान के पीछे, झाऊ के झुरमुट के ऊपर बादल की गरज सुनाई दी। असह्य उमस हो गई। मनहूस-सी, बरखाहीन और धूल भरी आधी आकाश म छाती जा रही थी।

"बग्घी लो और जितनी भी तेजी से मुमकिन हो, पुरानी बडी सडक पर पुल क पार सनिक शिविर तक भगा ले जाओ," चाचा पेत्या ने फुसफुसाकर वोलोद्या स कहा। "जब तुम्हे अपनी दायी ओर तम्बू और घोडा क अस्तबल नजर आये, तो रुक जाना। सनिक डाक्टर साथी कुदीमोव स मिलकर अपने साथ कुछ फौजी घुडसवार ले आओ। वरना वे खाली गोदामो को जला देंगे और फिर साइबेरियाई फोडे का ढूढते फिरना। हजारो रूबल का तैयार माल भी बट्टे-खाते डाल दिया जायगा। उनस कहना कि अभियोजक या जाच अफसर को बुलवा भेजें। कुछ मिलिशियावालो को भी साथ ल आना। दुश्मन का दम घुटक

करन के लिए हमारे चोर्नी यार मे भी कुछ घुड़सवार मिलिशियावान है।"

"सावधान रहियगा, कही वे आपकी मरम्मत न कर डाल," वोलाद्या ने फुसफुसाकर कहा।

चौक मे हिंडोले का घुमाकर देखा गया। गाशकोव गला फाड़ फाड़कर गा रहा था।

युवती फिर घर से बाहर आई और इस बार वोदका की बोतल और एक तश्तरी मे कुछ मूलिया और नमकीन हेरिंग मछली लाई।

"ऐ डाक्टर की दुम, इधर आओ," गोशकोव ने चाचा पेत्या को आवाज़ दी। "आओ, 'नोमालिस' छूत मुक्ति कर। बिजली की कड़क हो, हमारा जाम हो और फिर हम यह अनुमान लगायेंगे कि हमारी इच्छा पूरी होगी या नहीं।"

चाचा पेत्या बैठ गया उसने अपनी शानदार मूछो को थपथपाया और मज़बान से वोदका का गिलास ले लिया। वोलोद्या ने चाचा पेत्या पर एक और नज़र डाली झटपटे ढंग से लगाम सम्भाली और प्यार से भूरे घोड़े को कहा—

'चल भई क्या तुम्हारा नाम है! चल दे!"

बग्घी चौक मे से खड़खड़ाती हुई चल दी।

"मात्वेय वाविचेव कहा है?" चाचा पेत्या ने गाशकोव से पूछा।

अपनी ड्यूटी बजा रहा है।

यह ड्यूटी को भी खूब रही!" गाशकोव से जाम खनखनाते हुए चाचा पेत्या ने कहा। "आखे मूंद रहना, बस यही तो है उसकी ड्यूटी।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?

चाचा पेत्या को गमागम बातचीत और जोखिम की परिस्थितियो मे प्यार था। अब उसे ऐसे लगा मानो यह भूल रहा हो।

'क्या मतलब है? मतलब यह है, नागरिक गाशकोव कि चार यह नहा होता जो चोरी करता है बल्कि जो उसे चोरी को मौका देता है।

फिर से पुल के नज़दीक आकाश मे गाज गड़ गर्जी बिजली कड़की। ग्रामोफोन उछल पड़ा और उसकी आवाज़ बन्द हो गई।

वोलाद्या चितकवरे घोडे को ग्रटपटे ढग से हाक रहा था। घोडा कुछ देर तक तो धीरे धीरे चलता रहता ग्रौर फिर सरपट दौडन लगा। वोलोद्या लगभग पीछे की ग्रोर गिर पडा, उसन लगामा का हाथो के गिद लपट लिया ग्रौर इस वात की काशिश करते हुए कि उसकी ग्रावाज विजली की कडक के वीच से सुनाई दे जाये, ज़ोर से चिल्लाया – "धीरे, धीरे, ऐ सिरफिरे घाडे!"

काश कि मुझे घाडे का नाम मालूम होता, वह वहुत चाह रहा था। वसे घोडो को वुलाया किन नामो स जाता है?

वाद की सभी चीजें उलझी-उलझायी ग्रनुभूतिया का ताना-वाना वन गयी। वालाद्या की कुदीमोव से मुलाकात हुई, जा दापहर के खान के वाद झपकी लेकर उठा था ग्रौर उसकी ग्राखें ग्रभी भी ग्रलसायी-ग्रलसायी थी, विजली की लगातार ग्रौर ज़ोरदार कडक, "घोडा पर सवार हो जाग्रो!" ग्रादेश, सडक पर धूल का मोटा, पीला वादल, तज़ दुलकी चाल से घोडा को दौडाते हुए घुडसवार, एम्वूलेस, हूक जैसी नाक ग्रौर वहुत कसकर दाढी वनाने के कारण नीले गालवाला दल-कमाडर, कुदीमोव, जो काल घोडे पर सवार था, ग्रौर फिर से चाचा पेत्या स साक्षात्कार, जो पिये हुए, किन्तु सही-सलामत था। इसके वाद फिर से विजली कौधी, पर कडकी नही ग्रौर पानी नही वरसा, घुडसवार मिलिशियावाल, नमदे के जूतो के मुहरवन्द उद्यम के पास मिट्टी के तेल के डिब्बे, ऊन छाटनेवाले ग्रौर ग्रन्य मजदूरा की गुस्से से चीखती चिल्लाती भीड, लोहे का डाड जिससे मिलिशियावाला मुहर लगा ताला तोड रहा था ग्रौर गाशकोव की धमकिया – "ग्रापको जवाव दना होगा! जवाव देना होगा! कीटाणुशोधन!" फिर से कुदीमोव सामने ग्राया, हसत हुए चेहरे पर उसकी ग्राखे वटन जसी हो गई थी। वह कह रहा था – "उस्तिमन्को, देख लीजिये विल्कुल खाली गोदाम पडा है। वदमाश, सभी कुछ चुरा ले गये है, सभी कुछ। ग्रोह, यहा कुछ ऊन पडा है, पर वह दस किलोग्राम से ग्रधिक नही हे। तैयार माल कहा है? नमदे के जूते कहा है? कागज़ात के मुताविक चार हज़ार से ज्यादा जोडे होने चाहिये। ठीक है न, साथी ग्रभियोजक?"

नमदे के जता का एक जाडा भी कही नही मिला। गोशकोव ग्रौर वाविचेव को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया। ग्रभियोजक एक

जाचकर्ता को भी अपने साथ लाया था। वह बग़ल में लम्बी पिस्तौल लटकाये हुए एक रहस्यपूर्ण व्यक्ति था। उसकी नाक बतख की चोंच जैसी थी। वालोद्या को लगा कि उसकी नज़र सीधी दिल में उतर जाती है। पद चिह्न और सुराग ढूँढ़नेवाले दूसरे निशाना के बारे में उसकी बात सुनकर वालोद्या को उन दिनों का स्मरण हो आया, जब वह कानान डायल की कहानियाँ पढ़ता हुआ उन्हीं में खो जाया करता था।

घुप अंधेरा छाया हुआ था, हर कोई हाथ में लालटेन लिये था। सभी कुछ बहुत रहस्यमय और बचपन के दिनों की भाँति डरावना लग रहा था।

वालोद्या ने अभियोजक को सम्बोधित किया, जो छोटा सलेटी कोट और चमड़े की टोपी पहने हुए जवान आदमी था।

'हमें फौरन यह मालूम करना चाहिये कि ऊन और जूते कहाँ गये,' वोलोद्या ने कहा। 'साइबेरियाई फोड़े के जीवाणु बहुत ही जानदार होते हैं। दस मिनट तक उबालने पर ही उनका नाश किया जा सकता है। १२० सेंटीग्रेड की खुश्क गर्मी तो केवल एक या दो घंटे के बाद ही उनका काम तमाम कर पाती है।"

'पर यह कुत्ते का पिल्ला तो इस समय नशे में धुत्त है। इस वक्त तो उससे कुछ भी उगलवाना मुमकिन नहीं," अभियोजक ने जवाब दिया। "आप स्वयं ही देख सकते हैं कि वह बिल्कुल नशे में चूर है।'

लोग इस बात की कोशिश कर रहे थे कि संचालक पर खुला मुकदमा चलाया जाये। वह जसी आवाजवाला बाबिचेव औरतों की भाँति रो रहा था, खूबसूरत रूमाल से आँखें पोंछ रहा था। चाचा पेत्या घुड़सवारों से गपशप कर रहा था, उन्हें समझा रहा था कि साइबेरियाई फोड़ा इनसानों के लिए भी जानवरों की भाँति ही खतरनाक है।

उसी रात को काफी देर से गाशकोव का नशा दूर हुआ। यह एहसास होने पर कि उसे गिरफ्तार किया जा चुका है, उसने उतावली में शब्दों को गड़बड़ाते हुए झटपट सभी कुछ स्वीकार कर लिया। ज़ारचेन्स्क के दो व्यापारी दो रात पहले सारे माल को ट्रका

मे लादकर ले गये थे। रुपया सही-सलामत था। साथी अभियोजक उस सोवियत कोश के लिय ले सकता था। नाटो की गड्डिया कीला के नीचे दूध दुहने की पुरानी बालटी म छिपाकर रखी हुई थी। अभियोजक एक मेज पर बैठ गया, उसने चेहरे स पसीना पाछा और रुपये गिनन लगा। नोट बक से लाय गय बिल्कुल नये थे, और उनके रैपर तक भी नही उतारे गये थे। वह नोटा के बडला को अपनी टापी म रखता जाता था। गिनती करते हुए उसम गलती हो गई और वह फिर से गिनन लगा। वाविचेव न कमरे के कोने से पुकारकर कहा –

"मेरे घर पर २,२०० रुबल और हैं। मुझे इस मामले म आख मूद लेन के लिए यह रकम दी गई है। साथी अभियोजक, कृपया यह चीज दज कर ले कि मैं तो स्वय इसे स्वीकार कर रहा हू।"

यह सभी कुछ बहुत दिलचस्प था। कुदीमोव कुछ घटा की नीद लेन के लिए चला गया और मेले पर राक लगानेवाले सन्तरिया को तैनात करने का काम वोलोद्या का सौप दिया गया। वालाद्या ने बारी बारी से सभी सनिका का नम्रतापूवक यह स्पष्ट किया कि किसी भी किसान का मल मे न आने दिया जाये, कि इस जगह पर राक लगा दी गई है, कि यह कोई मजाक की बात नही है। सनिक जीना पर हो ऊघ रहे थे, वालाद्या के पुरजार भाषण कुछ अधिक लम्बे और भारी भरकम शब्दो मे उलझे-उलझाय थे, पर उस इसका एहसास नही था। उस व शब्द, जो उसने साइबेरियाई फाडे के बारे म एक दिन पहल हा किसी पुस्तिका म पढे थे कि –'रोग को अधिक महत्त्व नही देना चाहिय" याद नही रह थे। वालाद्या को लगा कि वह प्लग के विरुद्ध जूझ रहा है।

पौ फटने पर दो मिलिशियावाले अपराधिया और रुपया का चोरों यार ले चले। अभियाजक और जाचकर्ता चाचा पत्या की बग्घी म सवार हो गय। छ घुडसवार रक्षाथ साथ हो लिए। जाचकर्ता का वालोद्या अच्छा श्राता लगा और इसलिय उसने उस उन भयानक अपराधा की पूव बड़ा चढाकर कहानिया सुनाई, जिनका खाज निकालन का वह दावा करता था। वह बडा ममन था, हसी-मजाक पसन्द करता था और जहा भी मुमकिन हाता, मजा लता। धनी करोनिया

के बीच बोलोद्या की चमकीली आखें जिज्ञासा से चमक रही थी। ऐसे व्यक्ति को कहानिया सुनाने मे भी आनन्द मिलता है, विशेषत उस समय जबकि आखे नीद से बन्द हुई जा रही हो। अभियाजक खर्राटे ले रहा था, चाचा पेत्या सिगरेट के कश लगा और आह भर रहा था। जारचेन्स्क मे और अधिक मिलिशियावालो के आने की आशा थी।

"मुझे यकीन नही कि हगामा नही होगा," जाचकर्त्ता ने कहा।

"आपका मतलब है कि गोली चलेगी?" बोलोद्या ने सतर्कता से पूछा।

ऊन और नमदे के जूतो का केवल अगले दिन ही पता चला और सो भी जारेचेन्स्क मे नही, ग्लीनीश्ची के एक खेतघर मे। बोलोद्या और चाचा पेत्या को ४८ घटो तक और भी उनीदे रहना पडा। जारेचेन्स्क के पशु चिकित्सक से उनका झगडा हुआ, अस्पताल का टब खो गया और केवल मगल की शाम को ही क्लोरीन की गध से सरा बोर वे चोरों यार लौटे। बोलोद्या ने नदी मे स्नान किया, धुले हुए दूसरे कपडे पहने, अपने धूल-धूसरित, उलझे उलझाये बाल सवारे और बोगोस्लोव्स्की को ऐसे सारा किस्सा सुनाने गया मानो कोई गढ जीत कर आया हो।

"यह बताइये कि राजगाये के गोदामो और वर्कशापो का आपने क्या किया?" ध्यान से सारा किस्सा सुनने के बाद बोगोस्लोव्स्की ने पूछा। "उन्हे ऐसे ही छोड आये? उन्हे कीटाणु-मुक्त भी नही किया?"

बोलोद्या से कुछ भी कहते न बना। उन खाली कोठरियो का तो उसे ध्यान ही नही रहा था। मामले की खोज इतनी दिलचस्प थी, बिजली ऐसे कौधती रही थी घुडसवार ऐसे भयानक ढग से खर्राटे लेते रहे थे अभियाजक ने ऐसे मार्मिक ढग से अपने अनुभव सुनाये थे और चुराये जूतो तथा ऊन का पता लगाना इतना जरूरी था कि

आप तो सचमुच ही एक गैरजिम्मेदार छोकरे हैं। मुझे इस बात मे कोई हैरानी नही हुई कि आप ऐसा करना भूल गये। मैं आप पर बहुत भरोसा भी नही कर रहा था। पर सबसे भयानक चीज तो यह है कि हमारे सबसे अधिक अनुभवी परिचारक स्योमाच्किन ने एक

मूख की सी हरकत की है," वागोस्लोव्स्की ने कडाई से कहा और चाचा पत्या को फौरन जगाने का आदेश दिया।

"यह सब मेरा ही अपराध है," वोलोद्या न कहना शुरू किया, पर वोगोस्लोव्स्की ने रुखाई से उसे टोकते हुए कहा—"चुप रहिये।"

काई चालीस मिनट वाद वे फिर से राजगोय की ओर चल दिये। आकाश मे सितारे झिलमिला रह थे, रात गम और नीरव थी। चाचा पत्या लम्वी-लम्वी और जोरदार जम्हाइया लेता रहा, जवान मुश्की घोडी सधी चाल से दौडती रही और वग्घी के स्प्रिग धीर धीरे चरमरात रहे। वोलोद्या इस डर से चुप्पी साधे रहा कि अगर वह वातचीत शुरू करेगा, तो चाचा पेत्या ऐसी डाट पिलायेगा कि तवियत साफ हो जायगी। पर ऐसा कुछ नही था। चाचा पेत्या तो जरा भी गुस्से म नही था।

"मैंने आपसे कहा था न कि हमारे सजन जैसा दूसरा आदमी इस दुनिया म मिलना मुश्किल है। हर चीज की गहराई म पहुचते हैं वे। वडे ही सख्त आदमी है, पर उनकी डाट के वाद आदमी फिर से गलती नही करता। अपराधी तो मैं भी हू। उस चार के साथ मैं कुछ अधिक ही पी गया और मुझे अपन उद्देश्य का ध्यान ही नही रहा।"

उसने फिर से जम्हाई ली और सोचते हुए कहा—

"तो हमारा सोवियत स्वास्थ्य रक्षा विभाग इस तरह से जारशाही के अवशेषो के विरुद्ध जूझ रहा है। हमारे सजन इस मामले म सालह आने सही है।"

नौवां अध्याय

"मेरे सहयोगी"

इस वार भी किसी तरह की कोई प्रशसा नही हुई। किसी ने वोलोद्या का नाम तक नही लिया। वह पालिश की हुई पीली अलमारी के पीछे अपनी हर दिन की जगह पर वठा हुआ था, सूरज हमशा की भाति उसके चेहरे पर अपनी किरणें विखरा रहा था और अब ऐसा लगा कि तीन दिन पहले जो कुछ हुआ था—दौड धूप, ढढ-तलाश, घुडसवार सनिक, अदभुत जाचकर्त्ता नशे म धुत्त गोशकाव और बिजली की कौंध, ये सव बहुत ही मामूली और ऐसी वात थी कि किसी को उनकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नही महसूस हो रही थी। जाहिर है कि वोलोद्या को यह वहुत अखरा, पर वह कर ही क्या सकता था? खडा हो जाये और उन्ह वताये कि यह काम कितना कठिन और भयानक भी था? उनसे कहे कि मैं और चाचा पेत्या भले आदमी है? पर नही वह ऐसा नही कर सकता था। किन्तु वहुत जल्द ही वह अस्पताल की दुनिया, कामकाजी और नपी-तुली दुनिया की लय-ताल का अभ्यस्त हो गया और राजगोन्ये म घटी घटनाओ के वारे म भूल गया।

उस सुवह वोगोस्लोव्स्की ने वालोद्या स कहा कि वह वाड न० ५ के रोमान चुखनीन को आपरशन के लिये तैयार करे। उस हट्टे-कट्टे जवान को वाकी रोगी रोम्का कहते थ। आपरशन क नाम स उसका दम खुश्क होता था जान निकलती थी और इस डर को वह खुद अपने से और अस्पताल क लोगो से छिपाता था। उसन परिचारको, नर्सों रागियो और वहुत ही शरीफ डाक्टर नीना सर्गेयेव्ना को, जिसक

माथे पर केश-कुण्डल लहराते रहते थे, परेशान कर रखा था। सबसे भयानक बात तो यह थी कि राम्का, जिसने चिकित्सा सम्बधी कुछ लोकप्रिय किताबें पढ रखी थी, खुले तौर पर यह दावा करता कि चोर्नी यार के सभी डाक्टर बुद्धू, छोटे नगर के अनजान चिकित्सक हैं और "आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियों" के मामले में बहुत पिछडे हुए हैं। पसीने से तर, थलथल चेहरा लिये और खीझा खीझा-सा वह दालाना में इधर-उधर घूमता रहता हर जगह सूघा-साघी करता और फिर तथ्यों को तोड़-मरोडकर बडे चटखारे लेता हुआ रोगियो को सुनाता।

"पिछली रात उन्होने यहा से एक रोगी को चुपचाप शवघर में पहुचा दिया। गलत रोग निदान किया था। इन सभी पर मुकदमा चलाया जाना चाहिये इन पर जरा भी दया नही करनी चाहिये। ये डाक्टर नही, बदमाशो का एक टोला है। उन्होने एक जवान लडकी की भी जान ले ली। गलती से उसके दिल में कुछ हवा घुस गई। वार्ड न० ३ में आक्सीजन का सिलडर लाया गया है। भला क्यो? क्योकि इनकी मेहरबानी से वहा भी एक व्यक्ति अपनी आखिरी सासें गिन रहा है।"

वह कहता कि पूराक बहुत खराब है, जवान सोन्या नर्स के बारे में गन्दी से गन्दी कहानिया सुनाता और अपने साथी रोगियो को यह यकीन दिलाता कि यहा से केवल उनकी लाश ही बाहर जायेगी।

"आपके यहा लीज़ाट थेरापी का बिल्कुल इस्तेमाल नही किया जाता। मेरा मतलब यह है कि जब पेशाब से, इस शब्द का उपयोग करने के लिये क्षमाप्रार्थी हू, इलाज किया जाता है," उसने एक बार बोलोद्या से कहा, जिसे यह सुनकर बडा आश्चर्य हुआ। "खैर, साथी नर्स, परिचारक या आप जो भी हो, मेरे हीमोग्लोबीन और एरिथ्रोसाइट सामान्य से बहुत कम है। इसके लिये फौरन कुछ न कुछ करना चाहिये और इसके बजाय आप लोग ऑपरेशन करना चाहते है।"

"आप चिकित्सा क्षेत्र से कोई सम्बध रखते है क्या?"

"मैं एक साधारण सोवियत बुद्धिजीवी हू," राम्का ने चुटकी लेते हुए कहा। "हम anamnesis के बारे में और कुछ अन्य बात भी जानते हैं।"

उसने गुस्ताखी भरी और नफरत की नजर से वोलोद्या की ओर देखा। अन्य रोगी मानो समर्थन करते हुए मुस्करा रहे थे। जांघ की हड्डी के बुरी तरह टूटने के कारण एक परेशानहाल बुजुर्ग ने तड़पते और कराहते हुए कहा—

इस कुत्ते के पिल्ले को आप यहां से निकाल बाहर क्यों नहीं करते? वह तो मुसीबत बन गया है। हमारे सब्र का प्याला छलकता जा रहा है। कहीं ऐसा न हो कि हम क़ानून को अपने हाथ में लेकर इसका वही हाल कर डालें, जो घुड़चोरों का किया जाता है। यह कुछ अच्छी बात नहीं होगी।"

"क्या कमाल का वातावरण है," रोम्का ने आह भरकर कहा। "काश कि स्वास्थ्य विभाग का जन कमिसार यह दृश्य देख पाता! दिल बाग बाग हो जाता उसका।' फिर उसने फुसफुसाते हुए कहा— "यह ध्यान में रखिये कि कम से कम २५ प्रतिशत रोगी बहानेबाज हैं। अब बात यह है कि मेरी भोजन नलिका में कुछ गड़बड़ी है और इसलिए मैं आपरेशन कराने को राजी नहीं हो सकता। बस, बात खत्म।

वोलोद्या ने एक नर्स को भेजा कि वह बोगोस्लोव्स्की को बुला लाये। नर्स जब तक बोगोस्लोव्स्की को ढूंढकर लायी, रोम्का वोलोद्या का मज़ाक उड़ाता रहा उसकी जवानी, घनी बरौनियों और कैंप की खिल्ली उड़ाता रहा। वोलोद्या ने ऐसे ज़ाहिर किया कि वह कुछ भी परवाह नहीं करता, किन्तु यह वास्तविक यातना थी।

'सुनिये, चुग्रनोव, रोम्का की चारपाई के नज़दीक स्टूल पर बैठते हुए बोगोस्लोव्स्की ने कहा। आप अपनी ही इच्छा से हमारे अस्पताल में आये थे और आपने यह इच्छा प्रकट की थी कि हम आपका चेहरा संवार दें जिसे किसी गुप्त, किन्तु वीरतापूर्ण काम में क्षति पहुंची है। अब राज भी कोई राज नहीं रहा। मैंने सब कुछ मालूम कर लिया है। धार्मिक पर्व के अवसर पर नशे में आम तौर पर होनेवाली हाथापाई का ही यह नतीजा है।"

बोगोस्लोव्स्की ने जान बूझकर ऊंची आवाज में अपनी बात कही ताकि सभी रोगी सुन सकें।

"आपका उस हाथापाई मे हिस्सा लेना और भी ज्यादा अफसोस की बात है, क्योकि आप खासे पढे-लिखे आदमी है, एकाउटेंट है। आप टाई और टाप पहनते है और उन लोगो से नफरत करते है, जो इनके बिना ही काम चला लेते हैं। आप चोरी चुपके इस लडाई-झगडे म शामिल हुए और यद्यपि मैं मुक्केबाज़ी का बिल्कुल समथक नही हू, पर मेरे विचारानुसार इस किस्से मे तो बिल्कुल याय ही हुआ। आपका कान घायल हो गया तथा अपनी शक्ल-सूरत सुधारने के बारे म आपकी इच्छा को भली भाति समझा जा सकता है। जहा तक अस्पताल म आपके व्यवहार का सम्बध है, तो वह बहुत ही निद्य रहा है। हम आज ऑपरेशन नही करेंगे पर शुक्रवार को या तो आप आपरेशन के लिये राज़ी हो जायेंगे, वरना उसी दिन आपकी यहा से छुट्टी कर दी जायेगी। अगर आप फिर कोई मुसीबत पैदा करगे, तो हम आज ही आपको यहा से भेज देंगे। आइय चले, व्लादीमिर अफ़ानास्येविच।"

"व्लादीमिर अफानास्यविच, हमारा काम कठिन और कृतज्ञताहीन है," बरामदे म आ जाने पर वोगोस्लोव्स्की ने कहा। "जब मैं अपना श्रम जीवन शुरू ही करनेवाला था, तो यह मानता था कि चकि हम डाक्टर लोग अपनी पूरी ताक्त और क्षमता स, पूरी ईमानदारी से काम करत है, इसलिये लोगा को भी हमसे मधुर शब्द कहने चाहिये, कृतज्ञतापूण हाथ मिलाना चाहिये और इसी तरह की अय भावनाए व्यक्त करनी चाहिये, जो जीवन को सुखद बनाती ह। पर ऐसा कुछ नही है। सीदीलव, जो मरे खिलाफ तरह-तरह की साज़िशे किया करता था और जिसे हमने खासी बुरी हालत स निजात दिलाई, अब आपरेशन के समय के अपने भय को भूल गया है। याद है न कि वह यही समझता था कि मैं उसके टुकडे टुकडे कर डालूगा। अब वह मुझसे इस बात के लिए नाराज़ है कि मने 'जरूरत स ज्यादा नश्तर चलाया है'। उसकी बीवी आज सुबह ही मुझ पर इस बात के लिए बिगड रही थी कि 'मैं अपने पुरान सहयागी का अधिक ध्यान स आपरशन कर सकता था'। हम यह सभी कुछ सुनना पडता है, क्योंकि हम मिलिशियावाला को अपनी रक्षा क लिए नही बुला सकते। ठीक ह न? अब चौथ वाड म एक नारी है आज़ा ल्यादोवा, खासी सभ्य-

सुसस्कृत है वह। उसका पति भी खास बडे ओहदे पर है। मैं डीग नहीं हाकना चाहता पर हमने उसे बहुत ही बडी मुसीबत से बचाया है। जाहिर है कि अब उसे दद तो होता है। जानते हैं कि अब वह क्या कहती है? वह मुझे और हमारी बहुत ही विनम्र डाक्टर नीना सेर्गेयव्ना को कसाई सगदिल और क्रूर तक कहती है। आयाओ-नर्सो पर ख्याल फेरती है। उसका पति ढग का आदमी है, सदगृहस्थ और प्यार करनेवाला व्यक्ति। वह हम भेडिये की सी खूनी नजर से देखता है। केवल देखता ही नही, बल्कि कटु शब्द भी कहता है और वे भी हमे सुनने पडते है। यह तो फिर भी खैरियत ही है। अभी कुछ ही दिन पहले ममता की मारी एक मा हमारे बहुत ही सज्जन विनो ग्रादोव पर डडा लेकर झपटी। मै आपको इसलिये यह सभी कुछ बता रहा हू कि आप कुछ ही समय बाद अपना करियर शुरू करनेवाले हैं। आपको रोगियो के द्रवित सम्बन्धियो से कृतज्ञता के आसुओ और हाथ मिलाये जाने की या बालको की कृतज्ञतापूर्ण छोटी-छोटी उगलियो द्वारा चुने गये जगली फूलो के गुलदस्ते पाने की आशा नही करनी चाहिए। विशेषत उस समय, जब आपके किये धरे कुछ न बने। तब बुरी से बुरी चीज के लिए भी आपको तयार रहना चाहिए। अदालत में पेश होने का सन्देश मिलने पर भी माथे पर शिकन नही पडनी चाहिए। प्यार करनेवाले रिश्तेदार का दिल बहुत प्रतिशोधपूर्ण होता है। अपने सीमित ज्ञान मे एडी चोटी का पसीना एक करने पर भी आपको अपराधी माना जायगा, शायद पक्का अपराधी नही, फिर भी 'सन्देह' तो किया ही जायगा। जाहिर है कि इससे दिल पर बहुत भारी गुजरती है। शायद यह बताने की तो जरूरत नही है कि कुछ अपवाद भी होते है—धन्यवाद के कुछ व्यक्तिगत पत्र आते हैं कभी कभी अखबारो मे भी कुछ लिखा जाता है। यह बहुत अच्छा लगता है, मम को छू लेता है और कभी-कभी आखो मे आसू भी आ जाते है। पर सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि अक्सर हमे वहा धन्यवाद दिया जाता है, जहा हम धन्यवाद के पात्र नही होते। यह तो महज किस्मत साथ दे देती है या कुदरत मदद करती है। आभार माननेवाला हमारा रोगी तो डाक्टर नही और जो हम मालूम होता है, उसे उसका आभास भी नही होता। मेरे अच्छे मित्र और आपके अध्यापक पालनिन

अक्सर गाधी के शब्द उद्धृत किया करते थे और मुझे वे बिल्कुल सही प्रतीत होते हैं। वे शब्द हैं – मैं केवल एक ही उत्पीड़क को जानता हू और वह है मेरी आत्मा की धीमी सी आवाज़।"

बोगोस्लोव्स्की ने आह भरी, भारी गिलास मे कुछ सोडा डालकर पिया और मानो फिर से वोलोद्या के मन की वात भापते हुए कहा –

"सयोगवश मैं यह भी कह देना चाहता हू कि ऐसी कल्पना करना कि आत्मा, प्रतिष्ठा और भलमनसाहत जसे शब्दा से हम डाक्टरा का कोई वास्ता नही, वहुत ग़लत होगा। ये हमारे लिये, विशेषत हमारे लिय ही हैं। कारण कि पूजी की दुनिया म सजन इसलिये ऑपरेशन नही करते कि ऐसा करना ज़रूरी होता है, वल्कि इसलिये कि रोगी धनी है और अगर उसे ढग से निचोडा जाये, तो काफी पाउड, फ्राक या अमरीकी डालर हाथ लग जायेंगे। उनकी पेटेंट दवाइयो का विज्ञापन भी तो पसे देकर खरीदे गये वज्ञानिका के नामा के साथ किया जाता है। उन्ही के द्वारा विज्ञापन होता है। दूसरी ओर, हम लोग प्रतिष्टा, आत्मा और भलमनसाहत की दुनिया म काम करते है। जिस प्रकार हम अपनी विचारधारा के शत्रुओ के विरुद्ध सघप करते हैं, उसी भाति हम उनके विरुद्ध भी सघप करना चाहिये जो अपनी 'आत्मा की धीमी सी आवाज़' को दवाते है। कारण कि मिसाल के तौर पर झावत्याक, जिसे हम आगे केवल 'प्रोफेसर' ही कहेगे "

इतना कहकर वोगास्लोव्स्की ने वोलोद्या की ओर देखा और यह ध्यान आने पर कि आखिर वह वालाद्या का अध्यापक है, वे सकपकाकर रुक गये, झेंपे, उन्हाने चटखारा भरा और वोले —

'आइये, चलकर ऑपरेशन करे, मरे सहयोगी। आज हम दोना का दिन काफी व्यस्त रहेगा।'

"मरे सहयोगी!", "हम दोना का दिन," ये वोगास्लाव्स्की के शब्द थ। मजवूत काठी, चौडे कधावाले, सवलाये हुए और इस अद्भुत व्यक्ति के शब्द ये ये। वोगोस्लाव्स्की जव तक ऑपरेशन करते रहे, वालोद्या रोगी को वेहोश रखने की सूई लगाता, उसके तन म रक्त पहुचाता या क्षारीय घोल की सूई लगाता और नब्ज़ गिनता रहता। "हम दाना" य शब्द लगातार उसके काना म गूजते रहते। य शब्द किसी तरह की वनावट के विना खरखरी आवाज़ और देहाती अन्दाज़

म कहे गय थे। यह इस यान की मान्यता थी कि वह उनम स एक है। यद्यपि वह वोगोस्लोव्स्की का मुख्य सहायक नही था, फिर भी सहायक तो था ही। वह उन कटु सत्यो को जानने का अधिकारी है, जो उचित रूप से ही हर किसी को नही बताये जाते थे

प्रवेश-कक्ष की घडी ने उस समय दिन का एक बजाया जब वोगोस्लाव्स्की ने चिमटी स पकडकर सिगरेट सुलगाई। वालोद्या अपने हाथ साफ करता हुआ यह अनुभव कर रहा था कि उसकी बिल्कुल जान निकल गई है। वह पसीने से बिल्कुल तर था और ईथर की गध, जिसका वह अभ्यस्त नही हो पा रहा था, उसके गले मे अटकी हुई थी।

"टागा के रिसनवाले नासूर तो सचमुच ही निरी मुसीबत हैं," बुजुर्ग डाक्टर विनाग्रादोव मानो अपने आपसे ही कह रहा था। "मुझे याद है कि हमारे यहा एक ऐसा रोगी "

दरवाजा थोडा-सा खुला और पूर्ति प्रबन्धक रूकावीश्निकोव ने अन्दर झाका। वह बडा हृष्ट पुष्ट खुशमिजाज और शान्त स्वभाव का व्यक्ति था।

'मैं आपको यह बताने आया हू कि घास काटने की मशीन को जोड दिया गया है और अभी वाख्रामेयेव तथा अन्तोश्का उसे चलाकर देखनेवाले हैं, यानी उसकी आजमाइश करनेवाले है। वह रही मशीन है न बहुत सुन्दर!'

अस्पताल की बाड के दूसरी ओर घास काटने की बढिया रोगन की हुई मशीन धीरे धीरे हिलती डुलती हुई दिखाई दे रही थी। वालोद्या पर इसका कोई प्रभाव नही पडा, किन्तु वोगोस्लाव्स्की ने गुस्से से कहा—

'मुझे हैरानी हो रही है कि तुमने अन्तोश्का को क्यो उसे चलाने दिया। वह हमेशा चीजे तोडता फाडता रहता है। उससे जाकर कहो कि वह मशीन को हाथ तक न लगाये।"

वालोद्या ने वोगोस्लोव्स्की के व्यक्तित्व का एक अजीब पहलू भी देखा। वे खुद जाकर घास काटने की मशीन की आजमाइश करने के लिए बेकरार थे किन्तु ऐसा कर नही सकते थे। कारण कि उन्हे आपरेशन हाल मे जाकर उस दिन का सबसे लम्बा और जटिल आपरेशन करना था। "नाम्या तूदा" राजकीय फार्म के बुजुर्ग सईस,

वोविशेव के पेट मे घोडे ने लात मार दी थी। वाविशेव को उसी दिन अस्पताल म लाया गया था। वोगोस्लोव्स्की उसे व्यक्तिगत रूप से जानते और पस द करते थे। वे अडोस-पडोस के ऐसे ही मेहनती और मन लगाकर काम करनेवाले लोगा को इसी तरह पस द करते थे।

"मुझे लगता है कि उसकी तिल्ली फट गई है, व्लादीमिर अफानास्येविच। देखिये न उसका रग अधिकाधिक जद होता जा रहा है, रक्त-चाप कम हो रहा है, त्वचा ठडा होती जा रही है। फिर उसे लगातार उबकाई भी तो आ रही हे। ओह खर, तो आइये आरम्भ कर," उन्हाने दद भरी आवाज म कहा। यह वडी अजीव सी वात प्रतीत हो सकती है, किन्तु इतने वर्षो तक डाक्टरी करने के वाद भी उनम करणा की भावना पहले के समान ही वलवती थी।

जोरदार और वडे सु दर झटके के साथ बोगास्लाव्स्की ने पेट चीरा और समस्वर मे वालाद्या को समझाया कि तिल्ली कसे फटी है। मारीया निकालायेव्ना जल्दी जल्दी एक के वाद एक औजार देती जा रही थी। इस्तेमाल करने के बाद मेज पर फेंकी जानेवाली कची, चिमटी, शिकजे या नश्तर की टनटनाहट और रोगी की कठिनाई से आ जा रही सास से ही निस्तब्धता भग हो रही थी।

"नब्ज"? वागास्लोव्स्की जव-तव पूछते।

वोलोद्या चोर्नी यार के अस्पताल म व्यवहार के प्रचलित ढग के अनुसार धीमी आवाज म इसका उत्तर देता। भारी भरकम डाक्टर विनाग्रादोव हाफ रहा था। प्रवेश कक्ष की घडी न दो, फिर ढाई वजाये। ३ वजकर ३२ मिनट पर बाविशेव को आपरेशन हाल से भेजा गया। वोगोस्लोव्स्की स्टूल पर वैठ गये और मिनट भर की गहरी खामोशी के बाद वोले-

"हमने वूढे की जान वचा ली है न?'

अचानक उन्ह घास काटने की मशीन सीधी लोहे के जगले की ओर वढती दिखाई दी। "फिर अन्तोश्का अकेला ही उस चला रहा है? आह, कम्वख्त, उसका सत्यानास कर डालगे। मैं दूसरी मशीन वहा से लाउगा।"

वोगोस्लोव्स्की तेजी से वाहर गय और गुस्से से अपना चोगा और नकाव उतारकर रास्ते म ही फेकत गय। उन्हाने फाटक का सपाट

खोल डाला और अपनी बाहों को हास्यास्पद ढंग से हिलाते डुलाते और मुंह को बहुत चौड़ा खोलकर निडर, सुनहरी बरौनियों और सन जैसे झबरीले बालोंवाले अन्तोश्का को डांटने-डपटने लगे। आपरेशन हाल की खिड़की से वालोद्या ने बोगास्लोव्स्की का घास काटने की अपनी कीमती मशीन पर कूदकर चढ़ते देखा। अन्तोश्का उनके साथ साथ भागने लगा जबकि लम्बी-लम्बी टांगोंवाला परिचारक वाख्रामयेव, जो अचानक ही कहीं से प्रकट हो गया था, ढालों पर अपने हाथ रखने और जल्दी जल्दी मशीन बनाने लगा था।

हे भगवान कैसे कमाल के आदमी हैं!" वोलोद्या की बगल में खिड़की के पास खड़ी हुई नीना सर्गेयेव्ना ने कहा। "अभी अभी तो उनका दम निकला जा रहा था। आपने ध्यान दिया, उस्तिमेंको?

'वे तो जनूनी हैं जनूनी! भगवान मुझे क्षमा करना," मारीया निकोलायेव्ना ने प्यार से कहा। सच तो यह है कि वाख्रामयेव के साथ वे आधी रात तक मशीन के पुर्जे जोड़ते रहे थे।"

कोई बीस मिनट बाद, जब वालोद्या अस्पताल से बाहर निकला, तो उसने बोगोस्लोव्स्की का केवल कमीज पहने हुए वाख्रामयेव को डांटते सुना—

'मैंने कहा नहीं था कि रोलर कसने की जरूरत है? और तुमने क्या किया?'

बोगोस्लोव्स्की के उस्तरे से मुड़े हुए सिर पर सर्जन की सफेद टोपी अभी भी रखी हुई थी, पर वह एक कान की ओर खिसक गई थी। इससे वे बड़े अजीब और फक्कड़-से प्रतीत हो रहे थे। बगीचे में टहलते और खिड़कियों से झांकते हुए उनके रोगियों को बोगास्लोव्स्की का लम्बे-तड़गे मिस्त्री को धमकाना और गुस्से से, किन्तु किसी प्रकार की दुर्भावना के बिना यह पूछना बड़ा दिलचस्प लगा—

'अब हम एक अय चक्का कहां से लायें? कहां से लायें? शायद अन्तोश्का को चीरकर बना लें?

हां, हां अगर मेरा दोष है, तो बना लीजिये मुझे चीरकर" अन्तोश्का ने आंसू बहाते हुए कहा। आपने खुद ही तो रोलर को

दूसरी जगह पर जोड दिया और अब मुझ पर बरस रहे है। अन्तोश्का ही हमेशा हर चीज के लिये दोषी होता है। बडा बदकिस्मत आदमी हू मैं, शायद मुझे अपने को सूली लगा लेनी चाहिये।"

"मैं लगा दूगा तुम्ह सूली।" बोगोस्लोव्स्की ने गुस्से स कहा।

दो मजबूत घाडो ने मशीन को मरम्मतखाने मे पहुचा दिया। बोगोस्लोव्स्की ने अपना पुराना, उल्टाया हुआ कोट पहना और "हवाई जहाज" के बायें भाग म अपने छोटे-से दफ्तर म चल गये, जहा उन्ह कागजात पर हस्ताक्षर करने थे। बोलोद्या उस कमरे की खिडकी से बोगोस्लोव्स्की को देख रहा था, जहा बोविशेव को आपरेशन के बाद लाया गया था। उसने देखा कि बोगोस्लोव्स्की ने माली से कुछ बातचीत की, दिल के रोगी पाउश्किन को तजनी से धमकाया, जो घर के बने हुए सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश लगा रहा था और इसके बाद वे इमारत म घुसकर गायब हो गये।

नमस्कार, प्यारी जिन्दगी!

बाड के दरवाजे के करीब बोविशेव की बेटी – सुदर और घबरायी हुई नारी – धीरे धीरे सिसक रही थी। मासी क्लाशा उसे इस तरह तसल्ली दे रही थी –

"तुम जी छोटा न करो, बेटी! बडे करामाती हाथ है हमारे डाक्टर के, जिन्दगी देनेवाल। बेशक है तो व नास्तिक, पर क्या बराबरी करेगा कोई पादरी उनकी। पादरी तो धूप दीप ही जलाता है, मगर व सच्ची सेवा करत है। इसलिये, बेटी, मरी बात पर ध्यान दो, अपना जी छोटा न करो।"

"पादरी की तरह धूप दीप ही जलाना नही, मगर सच्ची सवा करनी चाहिये," बोलाद्या ने बहुत खुश होते हुए अपन लिये शब्दो को दृढतापूर्वक दोहराया। "कितनी सही बात कही है उसने – मौसी क्लाशा न, बहुत ही सही बात कही है!"

दरवाजे के बाहर खामोशी छा गयी, निकालाई यव्गेन्येविच भीतर आय। बोलोद्या उठकर खडा हो गया। "बठिय!" निकोलाई येव्गेन्येविच

न कहा और स्वय दूसर स्टूल पर बैठ गय। व अपनी तनिक तिरछी नजर म वारिणेव क पील चेहर का बहुत दर तक, बहुत ध्यान स, टकटकी बाधकर और शान्त भाव स दखत रह।

'बडा ही समझदार आदमी है यह," उन्होंने धीरे-से कहा, अपन ही ढग का बडा हसोड, सिर से पैर तक रूसी इनसान है। मरे मधुरतम क्षण इसक साथ बीत हैं। बस आपको यह जान लना चाहिए कि हमार प्रदश म अनक बढिया आदमी हैं। अभी कुछ ही दिन हुए कि शहर म अपन एक सहपाठी स मरी भेंट हो गयी। अब वह भी डाक्टर और प्राफसर है बेशक उसने आम विषयो पर चिकित्सा सम्बन्धी अनक लख भी लिखे है, फिर बडे नाम और इज्जतवाला आदमी है दखन भालन म भी खूब जचता है। तो उसन मुझसे पूछा, निकालाई सम्भवत ऊबत और चुपचाप बीयर पीते होगे?' है न हैरानी की बात कि सावियत सत्ता की स्थापना हुए इतन बरस हो चुके है कितन मार्के मारे जा चुक हैं कितनी कल्पनाओ को यथार्थ म बदला जा चुका है, फिर भी सही दिमाग रखनेवाला एक प्रोफसर कभी पढी गयी चेखाव की कहानी 'वार्ड न० छ' के आधार पर आपके और मेर बारे म यही सोचता है कि हम अवश्य ही ऊबते और बीयर पीते है। खैर, शाम को मैं अपन सहपाठी के घर गया, मुझे उस दावत म शामिल होने का सौभाग्य प्रदान किया गया, जिसकी मेरे सहपाठी न व्यवस्था की थी। जानते है वहा जाकर मैंने क्या देखा? व्हिस्ट का मजा लिया जा रहा है।'

'व्हिस्ट का?' बात वोलोद्या की समझ म नही आई।

'हा ताश का एक ऐसा खेल है खासा दिमाग लडाना पडता है उसमे। बडे जोश के साथ और बहुत मन लगाकर व लोग खेल रहे थे पूरी तरह इसी मे डूबे हुए थे। सारी शाम मे किसी ने एक भी शब्द नही कहा, एक भी ऐसा समझदारी का विचार प्रकट नही किया। मैंने मन ही मन सोचा–आह कम्बख्त बडा गधा हू मैं भी, किसलिये म यहा आया? यह आदमी डाक्टर है प्रोफेसर है, इसने कई किताबें लिखी है। लोग ठीक ही कहते है–'उसकी ख्याति के लिये तो सभी कुछ है केवल खुद ही हमारे लिए नही है। तो वह प्रोफेसर ही क्या बना? नही मैंने सोचा ऐसा नही हो सकता, मैं ही गलती कर रहा

हू, बहुत जल्दी कर रहा हूं निष्कर्ष निकालने की। चुनाचे मैंने अपने सहपाठी के साथ शल्य अन्त स्रावशास्त्र की चर्चा शुरू कर दी। ज़रा गौर फरमाइयगा कि उसन मानो मरे प्रति दया भाव दिखाते हुए इस तरह मेरा कधा थपथपाया और बोला—'भई, इस वक्त तो हम जरा अपना दिल वहला रहे है न। अगर चाहा, तो कल हमारी क्लीनिक म आ जाना और वहा मेरे सहायक से बातचीत कर लेना।' ज़ाहिर है कि मैं किसी क्लीनिक क्लीनिक मे नही गया।"

निकोलाई यव्गेन्येविच खुशमिजाजी स जरा हस दिय, बरामद म उन्हाने बाविशेव की बेटी से कुछ दर बातचीत की और फिर पालीक्लीनिक के मरीजो का देखन चले गये।

वालोद्या ने बोगोस्लाव्स्की की बीवी क्सनिया निकोलायेव्ना के साथ नाइट ड्यूटी की और कठिनतम प्रसव म उसका हाथ बटाया। छरहरी, सुघड, डाक्टरी टोपी के नीचे चोटिया का ऊचा जूडा वनाये, गाला पर हल्की लाली और प्यार भरी कठोर नजर—ऐसी थी क्सेनिया निकालायव्ना। वह एकदम जवान थी और दखन म बिल्कुल लडकी-सी लगती थी। वह अपना काम करती हुई वोलाद्या का सभा कुछ इस ढग स समझाती जाती थी माना वह काई अनुभवी डाक्टर न होकर उसकी सहपाठिनी, उसकी साथी हा और वालाद्या की तुलना म कुछ अधिक जानकारी रखती हा।

जच्चा फटी-फटी और यातना भरी आवाज म चिल्ला रही थी। प्रसूति-कक्ष म गर्मी थी। क्सेनिया निकालायव्ना उस सलाह द रही थी—

"जोर लगाइय, मेरी प्यारी, बच्चा जनन के लिय जोर लगाइये। यह बहुत कठिन काम है, पर बाद म अपन परिश्रम का फल पाकर—बेटी या बेटे का मुह दखकर तुम्हारा मन खिल उठेगा "

क्सेनिया निकालायेव्ना का मरीजा स बातचीत करन का ढग निकोलाई येव्गेन्येविच से बहुत मिलता-जुलता था और वालाद्या भी यह ढग सीखना चाहता था।

"आपके तो बेटा होगा "

"मैं बेटी चाहती हूं," भावी मा ने रोते हुए कहा। "लडके तो सभी शैतान होते है। अभी हाल ही म हमारे पडोस के मात्का ने हमारी गाय पर कमान स तीर चला दिया था "

वह फिर से चिल्लाने लगी। क्सेनिया निकोलायेव्ना उसके उपर झुककर उसे प्यार से तसल्ली और दिलासा देने लगी। वोलोद्या को जच्चा पर बहुत दया आ रही थी, उसके माथे पर परेशानी स बल पड गये और फिर खुद भी थोडा ज़ोर लगाने लगा। यह बडा अटपटा बात रही। बूढी दाई ने इस ओर ध्यान दिया और मजाक करते हुए बोली –

"तो आप भी ज़ोर लगाने लगे, व्लादीमिर अफानास्येविच? यह बडी दिलचस्प बात है कि अभ्यास के लिये आनेवाले सभी विद्यार्थी मदद करने का खुद ही ज़ोर लगाने लगते है। बडे ही अजाब है आप नौजवान लोग!"

पौ फटनेवाली थी, जब दाई ने बालक को टागो स पकडकर उठाया, अपने बडे लाल हाथ से उसका चूतड थपथपाया और उसकी चीख सुनकर यह घोषणा की –

"शैतान ने ही जन्म लिया है। कमान से ही नहीं, वह तो गुलेल स भी निशाने लगायेगा।"

वोलोद्या ने टाके लगाने मे क्सेनिया निकोलायेव्ना की मदद की। मोमजामा, चादर और तश्त – सभी खून से लथपथ थे। जच्चा निश्चल लेटी हुई थी, उसके गाल और माथा बुरी तरह पीले होते जा रहे थे। वोलोद्या ने नब्ज देखी – हाथ पसीने मे चिपचिपा हुआ पडा था।

"आइये, इसे खून देना शुरू करे!" क्सेनिया निकोलायेव्ना ने कहा। "शीशी को ज़रा ऊचा कीजिये। इस तरह "

उन्होने पाच सौ क्यूबिक सेंटीमीटर खून दिया। सुबह होने पर नमक क्षारीय घोल का इजेक्शन देने का सामान लायी। हाश-बाख्ता-सा वोलोद्या क्सेनिया निकोलायेव्ना के आदेश पूरे करता जाता था। 'मौत,' उसने सोचा, "मौत! हम और क्या कर सकते है? हम सभी डाक्टरो को क्यो नही बुलवा भेजते, बोगोस्लोव्स्की को क्यो नही बुलवाते?"

शीशे की खनक सुनायी दी। दुबली-पतली क्सेनिया निकोलायेव्ना इत्मीनान से आदेश देती जा रही थी—क्या अभी भी बात इनकी समझ में नही आ रही?

किन्तु वह स्वय ही नही समझ रहा था। जब पूरी तरह उजाला हो गया, तो वोलोद्या ने देखा कि जच्चा के गालो पर सुर्खी आ गयी है। नारी की खुली हुई आखो मे अभी तक धुध-सी छाई थी, वह कुछ भी समझ नही पा रही थी, पर यह मृत्यु नही थी, अन्त नही था, बल्कि जीवन था, आरम्भ था

दिन पूरी तरह निकल आया था और बरामदे से दूर कही नन्हे मुन्ने जोरो से चीख चिल्ला रहे थे। लिपटे लिपटाये बच्चो को दाइया दूध पिलाने के लिये उनकी माताओ के पास ले जा रही थी। जल्दी यह मा भी दूध से भरे काले चूचुक को अपने पहले बेटे के मुह मे दे देगी। वह भूल जायेगी कि बेटी पाना चाहती थी, बेटे को प्यार से सहलायेगी, सादा-सरल शब्दो मे लोरी गायेगी और दूसरो को यह बतायेगी कि मेरा बेटा कितना अधिक समझदार है आज रात को वोलोद्या के सामने दो करिश्मे हुए—पुरानी प्रसाविकी के सभी नियमो के अनुसार जो नारी न तो बच्चे को जन्म दे सकती थी और न जिन्दा रह सकती थी, उसने बच्चे को जन्म दिया था और जिन्दा थी। इसी प्रकार जो बच्चा जिन्दा पैदा नही हो सकता था, वह जिन्दा था। ये करिश्मे लोगो ने ही किये थे, बहुत-से लोगो ने, ऐसे लोगो ने, जो सम्भवत ह्विस्ट नही खेलते थे, दावत नही उडाते थे, ऊची-ऊची उपाधिया पाने मे इसलिये एडी चोटी का पसीना नही बहाते थे कि खूब बढिया पकवान खा सकें, आरामदेह बिस्तरो पर सो सके और जनता की भारी मुसीबत की घडियो मे मौज मना सके

सेचेनोव, गुबारेव, फ्योदोरोव, कादियान, धाकानाव, लन्दन, बोगामोलेत्स, स्पासाकुकात्स्की—वोलोद्या बडी कठिनाई से उनके चित्रो को याद कर पाया। "इतना कम क्यो जानते है हम इनके बारे मे?" वोलोद्या ने झल्लाते और दुखी होते हुए सोचा। आखिर आज की सारी रात वे यहा उपस्थित रहे, उन्होने इस मोर्चे मे हिस्सा लिया, उन्होने मौत पर, खुद मौत पर अपनी जीत का झडा गाडा, मगर उनके बारे मे पाठ्यपुस्तको मे केवल कुछ नीरस पक्तिया लिखी हुई

है। 'मृत्यु विजेता', ऐसा शीर्षक होना चाहिये उनसे और उनके समान लोगों से सम्बन्धित अध्याय का।

आप वहां खड़े खड़े यह अपने आपसे क्या बातें कर रहे हैं?" क्सेनिया निकोलायेव्ना ने पूछा। "बस, अपने आपसे ही बात करते रहते है। जाइये, जाकर सो रहिये।

"अच्छा तो नमस्कार!"

"नमस्कार' किसी कारणवश उसने मुस्कराकर कहा।

क्सेनिया निकोलायव्ना हाथ धो रही थी और नर्स तौलिया लिये खड़ी थी। वोलोद्या जहां का तहां ही खड़ा रहा।

वह उसे जा ही नहीं सकता था। बहुत ही लम्बी रही थी पिछली रात उन घंटों के दौरान वह बहुत कुछ समझ गया था, उसका हृदय अत्यधिक कृतज्ञता की भावना से भरपूर था।

"बहुत ही बुरा केस था क्या? प्रसूति-कक्ष की ओर सकेत करते हुए उसने पूछा।

'जटिल था।"

"बहुत जटिल?"

क्सेनिया निकोलायव्ना तनिक मुस्करा दी—

"सम्भवत, हां।'

'और अब?"

'आप स्वयं ही देख रहे है '

उसे तो कभी का यहां से चले जाना चाहिये था। किसलिये वह यहीं खड़ा था। उसे तो "नमस्कार" भी कहा जा चुका है। आह, यह वृद्ध, यहां से जाता क्या नहीं

"यदि मैं आपके किसी काम आ सकूं, तो कृपया मुझे अवश्य बुलवा भेजियेगा,' अपने आपसे झेंपते हुए वोलोद्या ने उदासी से अनुरोध किया।

क्सेनिया निकोलायेव्ना ने सिर हिलाकर हामी भरी। वोलोद्या का मन हो रहा था कि उसका हाथ चूम ले, कमजोर-सा प्रतीत होनेवाला, उभरी हुई नीली नसोंवाला, दुबला-पतला-सा, मगर बहुत ही शानदार हाथ। जाहिर है कि उसे ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई। लम्बी बांहों और पुराने तथा टूटे हुए जूते पहने लम्बी टांगोंवाला वोलोद्या दरवाजे

की तरफ पीछे हटा और बाहर चला गया। वह बरामदे मे रुका और जहा का तहा ठिठककर रह गया—अस्पताल के बगीचे म पक्षी चहचहा रहे थे, ओसकण सूख चुके थे, मगर फूल रात की भाति ही खूब महक रहे थ। एक बडा-सा, मोटा और खुशमिजाज भवरा वालोद्या के गाल से आ टकराया और फिर अपने जरूरी तथा भारी काम करने के लिये आगे उड गया।

"जिन्दगी!" वोलोद्या ने अनुभव किया कि उसका गला रुधा जा रहा है। "प्यारी, मुश्किल, मगर असली जिन्दगी! नमस्कार है तुम्हे! देखती हो न, मैं तुम्हारी मदद करता हू, जिन्दगी! अभी तो मैं बहुत कम ही कुछ कर सकता हू, अभी तो म तुम्हारे छोटे मोटे आदेश ही पूरे करता हू, मगर मै भी, अवश्य ही म भी इनके जैसा बनगा। और तुम, तुम प्यारी जिन्दगी, मेरी इज्जत करोगी!"

कुछ देर बाद वह वोविशेव को भी देखने गया। बूढे ने पीले चेहरेवाले जवान डाक्टर को हैरानी से देखा और दर्द की शिकायत की। वालोद्या ने नब्ज देखी और गहरी सास ली। दर्द—ओह, कितना हास्यास्पद है यह शब्द! अरे, इतना ही क्या कम है कि मेरे प्यारे बुजुर्ग वोविशेव, तुम जिन्दा हो। तुम जिन्दा हो और सम्भवत अभी बहुत समय तक जिदा रहोगे। और अस्पताल मे तो लगभग तुम्हारी लाश ही लायी गयी थी।

मगर वोविशेव यह कुछ भी नही समझता था। इसमे हैरानी की भी कोई बात नही थी—उसे तो यह मालूम नही था कि यहा के डाक्टर उसे मौत के मुह से निकाल लाये थे। अब उसे दर्द महसूस हो रहा था और वह चिल्ला रहा था। तुम्हे खुश होना चाहिए कि तुम जिन्दा हो, उसे यह बात समझाना भी हास्यास्पद होता।

वोलोद्या दोपहर होने तक सोया रहा। बूढी मालिकिन के घर म सभी पजो के बल चलते थे।

"सी!" बूढी डौन फुसफुसाती। "सी, सैतानो! डाक्टर सो रहा है। जब मैं बेलना लेकर तुम सभी की हड्डिया तोडूगी, तो डाक्टर तुम्हारा इलाज नही करेगा। सी! सीजर, अपनी सीटी फेंक दे!"

"सीटी," वालोद्या को नींद म ख्याल आया। "सीजर सीटी बजा रहा है। तो यह बात है!"

सुख किसे कहते हैं?

वोलोद्या ढेर सारा नाश्ता खा रहा था कि वढी मालकिन ने उसे वार्या का खत लाकर दिया। वह खाते-खाते ही उसे पढने लगा, पनीर की मीठी टिकिया उसके गले में फस गयी और उसने उसे थूक दिया। पालनिन चल बसे थे। चल बसे, यह भला कैसे हो सकता है? कैसे? जरूर कोई गलती हुई है शायद इसी नाम का कोई दूसरा आदमी होगा। अभी जाकर इस बात की जाच करता हू।

वालोद्या नाश्ते को वही छोड और सडल पहनकर (जिनके फीते कसना भूल गया था और जो रास्ते में निकल निकल जाते थे) अस्पताल की ओर दौडा। दफ्तर में "उचा मजदूर" अखबार मेज पर पडा था। उसमें सचेनोव डाक्टरी सस्थान की ओर से प्रोफेसर, डाक्टर पोलूनिन के असमय निधन पर शोक और दिवगत के परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट की गयी थी। काले हाशिये में पोलूनिन का जीवन-सार और चित्र छपा हुआ था जो पोलूनिन से बहुत कम मिलता जुलता था।

हे भगवान ये नीरस ऊब भरी और मोटी मोटी पक्तिया पोलूनिन के व्यक्तित्व के कितनी अधिक अनुरूप नही थी! जीवन-सार ने उन्हे कैसा दफ्तरी कर्मचारी सा बना दिया था। अपने बारे में यह आडम्बर पूर्ण, बेरग और बेहूदा बकवास पढकर पोलूनिन क्या कहते! फिर 'सवेदनशीलता' स्नेहशीलता और 'अविस्मरणीय व्यक्तित्व' जैसे नारी सुलभ शब्दो का प्रयोग करने की क्या आवश्यकता थी। पोलूनिन खुद यही कहा करते थे—'मुझे नारी-सुलभ भावुकता से बचाइये और अपने आलोचको से मैं स्वय ही निपट लूगा'

नही रहे' वालोद्या ने बोगोस्लोव्स्की से भेट होने पर कापते हुए होठो से कहा। 'पोलूनिन नही रहे'

"मुझे मालूम है बोगोस्लोव्स्की ने उत्तर दिया। 'आज के अखबार में पढ चुका हू।

बोगोस्लोव्स्की ने अपने बडे से हाथ की मुट्ठी बाधते और दुख तथा खीझ से परेशान होते हुए कहा—

"हिमाकत, सरासर हिमाक्त! उसे यह जुरत ही कैसे हुई, उसे यह हक ही किसने दिया था कि वह ऐसे जान-बूझकर और खुल्लमखुल्ला अपनी सेहत के प्रति लापरवाही वरते, उस पर थूके! मैंने उससे कहा – 'दोस्त, अब यह वेवकूफी भरा खेल खत्म करो, तुम अपना यह क्या हाल कर रहे हो? लगातार सिगरेट पीना, सकील भोजन, समोस-कचौडिया, रात-रात भर मेज़ पर बैठे काम करते रहना, काफी, वोद्का, चाय ' आप तो यह नही जानते कि वह अपनी छुट्टिया कैसे विताता था। जहाज़ द्वारा 'वडे जलवाह' तक उचा नदी म जाता, वहा नाव खरीदकर अकेला ही चल देता। ज़रा कल्पना कीजिय तो? अकेला ही! एक वार मैन तट स उसे नाव म जाते देखा। यकीन मानियेगा, मेरे रोगटे खडे हो गय। इसके वाद अलाव, मछली का शोरवा, तम्वाकू, निरन्तर चिन्तन, निरन्तर अन्वेषण, दिमाग़ी तनाव, खुद अपने प्रति निदयता, अपने से अत्यधिक माग, स्थायी गतिशीलता, घडी भर का भी मानसिक चैन नही। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि आदमी को और क्या चाहिय? डाक्टर, प्रोफेसर, राजधानी म काम करने के लिये वुलाया गया, मगर उसन मज़ाक उडाते हुए कहा – 'कहा का प्रोफसर हू मैं, मैं कौआ हू, प्रोफेसर नही! मरे भाई, हर आदमी के मूल्य की कसौटी है – उसका अहकार निकालकर वास्तविक सृजन-काय। वडा आया मैं प्रोफेसर कही का! विज्ञान के इतिहास म क्या ऐसे लोगो के कम नाम है, जिन्ह उनके जीवन काल मे अधकचरा माना गया और जो कभी प्रोफेसर नही वन सके, किन्तु उनकी मौत के वाद सकडो प्रोफेसर उन्ही के विचारो का, सो भी भद्दे ढग से, प्रचार करके मौज उडाते हैं! तुम मुझे प्रोफेसर कहते हो!'"

वोगोस्लाव्स्की चुप हो गय और फिर विचारो म डूवे-खोय-स कहन लगे –

'छ वरस पहले हमन उसकी स्वणजयन्ती मनान का इरादा बनाया। हे भगवान, कैसा हगामा मचाया था उसन! वस, मामला जहा का तहा ही ठप्प हो गया। 'यह वडी घटिया वात है,' वह वाला, 'कि आदमी आरामकुर्सी म बठ जाय और अपने वारे म अन्त्येष्टि भाषण सुने। लाग मरी रचनाओ का उल्लेख करगे, जिनम से तीन-चौथाई निरी वकवास हैं। तव आप चाहेगे कि मैं अपन

सम्मानित स्थान से उठ और अपनी गलतियों के बारे म भाषण दूँ! मैं गलतियों से तंग हो क्या सकता था, जब पूरा चिकित्साशास्त्र ही मानवीय गलतियों का इतिहास है?' अब ऐसा आदमी के सामने किसी की क्या पेश चल सकती है! इतना ही नहीं, मुझे कालीन पर बिठा दिया और लगा पूछने—'जिन्दगी चाहते हो या मौत?' और अब "

दोनों कुछ देर चुप रहे। बोगोस्लाव्स्की यातनापूर्ण ढंग से कराहे और फिर बोले—

"उसकी मौत बहुत बड़ी कभी न पूरी होनेवाली क्षति है। वह तो हर चीज म ही निश्छल निष्कपट था। केवल मित्रों के साथ ही नहीं, खुद अपने साथ भी। बहुत बड़ा व्यक्तित्व था उसका, उसकी हर चीज मे बड़प्पन था महानता थी, जब कभी मैंने उससे यह बकवास की कि तुम्ह अपनी सेहत की तरफ ध्यान देना चाहिये, तो उसने हमेशा यही जवाब दिया—'काल्या, मुझे यह ज्यादा दिलचस्प लगता है'। और अब—आन की आन म दुनिया से चला गया। बस वह ऐसी ही मौत का सपना देखा करता था। बस, घड़ी-पल म ही खेल खत्म हो जाये—न दवाइयाँ पीनी पड़े और न डाक्टरों को ही इकट्ठा करना पड़े '

बोगोस्लाव्स्की की ठोडी कांपी और वे पतली-सी आवाज म कह उठे—

"शायद उसकी बात सही थी? शायद उसी की तरह जीना ज्यादा दिलचस्प है? उसके लिये शायद यही अधिक उचित था? कुछ ऐसे भी लोग होते है जो सम्भल-सम्भलकर जी नहीं सकते, जो ऐसा चाहते ही नहीं जिनके लिये ऐसे जीना सम्भव ही नहीं "

उन्होंने अपनी सस्ती-सी पतली सिगरेट जलाई, खूब जोर से कश लगाया और एक मुट्ठी को दूसरी से टकराते हुए पूछा—

'इनसान किसलिये जीता है?"

वालोद्या ने उदासी भरी हैरानी के साथ बोगोस्लोव्स्की की ओर देखा और सोचा—'ये बुजुर्ग (वालोद्या को अपनी उम्र के हिसाब से बोगोस्लाव्स्की बुजुर्ग ही लगते थे) यह डाक्टर, जो अपने जीवन म अब तक इतना कुछ कर चुके है और कर रहे है, क्या वे भी अपने से यह प्रश्न पूछते है? '

"किसलिये?" वोगोस्लोव्स्की ने मुस्कराकर पूछा। "क्या आपने कभी इस प्रश्न पर विचार नहीं किया?"

"किया है।"

"सम्भवतः रूसी लेखक कोरोलेन्को ने ही यह कहा था कि मनुष्य का सुख-सौभाग्य के लिये जन्म होता है," वोगोस्लोव्स्की कहते गये, "उसी भांति सुख-सौभाग्य के लिये जैसे पक्षी का जन्म उड़ने के लिये होता है। सुन्दर, किन्तु अस्पष्ट शब्द है। इसी सुख-सौभाग्य का भिन्न-भिन्न अर्थ लगाया जाता है और लगाया जायगा। मिसाल के तौर पर, पोलूनिन और मास्को में सुख-चैन का जीवन बितानेवाले मेरे उस सहपाठी को ही ले लीजिये, जिसकी सम्भवतः मैं आपसे चर्चा कर चुका हूं। इन दोनों में से वास्तविक सुख की अनुभूति किसे हुई है? हमेशा और हर चीज़ में जोखिम उठानेवाले पोलूनिन को या ताश खेलनेवाले उस प्रोफ़ेसर को? प्रचलित धारणाओं से इन्कार और उन्हें खण्ड-खण्ड करनेवाले पोलूनिन को अथवा खुद अपने सिवा और किसी के भी काम न आनेवाले शोध-प्रबन्ध के लेखक उस प्रोफ़ेसर को? कहां है असली सुख—ताश की बाज़ियों में या उस नाव में, जिसे पोलूनिन चलाता था और जो पानी की तेज़ धाराओं के थपेड़े सहती थी? पोलूनिन की जोखिम भरी प्रस्थापनाओं में या उन घिसे-पिटे सूत्रों को दोहराने में, जिनसे न किसी का कोई लाभ होता है, न कोई हानि। पोलूनिन की भांति दुखद विवशता की अनुभूति और उसके विरुद्ध विद्रोह करने के प्रयास में या इस विवशता के सामने सिर झुका देने में, सो भी ऐसे कि अपने दिमाग़ को ज़रा भी फ़ालतू तकलीफ़ न देनी पड़े? लोगों में कहा जाता है और ठीक ही कहा जाता है—'ज़िन्दा, मगर मुर्दे से भी गया-बीता।' क्या यह लोकोक्ति सही नहीं है? मज़बूत दिलवाले तो प्राचीन रोम के ज़माने में भी यह कहा करते थे कि ज़िन्दा रहने के लिये ही ज़िन्दगी का उद्देश्य खो देने से बढ़कर कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता। इसका क्या अर्थ है? सम्भवतः सागर-किनारे गर्म बालू पर लेटकर लहरों का गान सुनते हुए भी सच्ची और गहरी मानसिक ख़ुशी अनुभव की जा सकती है? पर पूंछ ऊपर उठाकर हरे-भरे चरागाह में कुलांचे भरनेवाला बछड़ा भी क्या ऐसी ही ख़ुशी अनुभव नहीं करता? किन्तु दोनों ही स्थितियों में यह केवल ज़िन्दा

रहने की खुशी है और अधिकतर लोग इसी को वास्तविक सुख मानते हैं। तो सवाल पैदा होता है कि लोग प्रकृति के स्वामी कैसे हैं? अनेक सदियों से नारी और पुरुष के प्रेम की कबूतर-कबूतरी के प्रेम से तुलना की जाती है—गुटुर-गूं करता हुआ, चूमता हुआ कबूतरों का जोड़ा तथा इसी प्रकार की बकवास को ऊंची कवित्वपूर्ण शैली में बयान किया जाता है। किन्तु मैं कबूतर के रूप में अपनी कल्पना नहीं करना चाहता। मैं इसकी चर्चा नहीं करूंगा कि मेरी उम्र के आदमी के लिये यह हास्यास्पद है बल्कि सर्वथा मूर्खतापूर्ण भी है। पालनिन के ढंग के आदमी कबूतरों के सुख को बर्दाश्त ही नहीं कर सकते। अगर तुम इन्सान हो तो तुम्हारे लिये सागर तट का शारीरिक सुख, कबूतर का चैन पर्याप्त नहीं हो सकता (फिर यह भी ध्यान में रखिये कि सभी कबूतर भिखमंगे और टुकड़खोर होते हैं और न जाने किस कारणवश लोगों के लिये यह मर्मस्पर्शी होता है)—असली इन्सान के लिये यह सब कुछ काफी नहीं, वह निरन्तर आगे बढ़ना, संघर्ष करना चाहता है अनजाने ज्ञान-क्षेत्रों में प्रवेश करना चाहता है, यह अनुभव करना चाहता है कि तुम केवल अपने और अपने परिवार के लिये ही उपयोगी नहीं हो (समाज की दृष्टि से यह काफी नहीं), बल्कि यह कि तुम साझे लक्ष्य में अपना योग दे रहे हो, साझे निर्माण में भाग ले रहे हो "

"मतलब यह कि संघर्ष में ही सुख है?"

"संघर्ष में?" वोगोस्लोव्स्की ने घड़ी भर सोचा। "हां मेरे ख्याल में ऐसा ही है। अगर हमारा अभिप्राय सही अर्थ में 'मानव' शब्द से है अगर हम उपभोक्ता मानव की नहीं बल्कि प्रेरक मानव की चर्चा कर रहे हैं तो जाहिर है कि संघर्ष ही सुख है पर खैर, आइये चलें आपरेशन करने का समय हो गया '

सारी शाम वोलोद्या पोलीक्लीनिक और रोगियों को दाखिल करने के विभाग में काम करता रहा। वह चाहे जो कुछ भी करता था, एक विचार उसके दिल दिमाग में लगातार चक्कर काटता रहा—"पालनिन नहीं रहे! नहीं रहे और अब कभी नहीं होंगे! अब कभी वे अपनी जोरदार भारी आवाज में ठहाका नहीं लगायेंगे, लम्बे-लम्बे और दृढ़ क़दम रखते कभी व्याख्यान-कक्ष में नहीं आयेंगे, अपने बड़े

ग्रौर चित्तियोवाले माथ पर कभी गुस्से से वल नही डालेगे। पालूनिन नही रहे।"

"एक ग्रौर भी कमाल की बात है," रागिया को दाखिल करने के विभाग म झाकते हुए वोगोस्लोव्स्की ने कहा। "पोलूनिन जस लोगो के वारे म एक ग्रौर भी कमाल की वात यह है कि उ‍ह नाम की भख नही हाती। उ‍ह किसी चीज़ का ग्रफसोस नही होता, कही पर भी ग्रपने नाम की मुहर या ठप्पा नही लगाते। कोई नया रोग लक्षण देखत ही वे गला फाडकर चिल्लाने नही लगते—'देखिये, यह पालूनिन का लक्षण है।' वे ऐसी चीज़ो की रत्ती भर परवाह नही करते, उदार होते है ग्रौर उनक पास ग्रपना वहुत कुछ होता है। किन्तु ऐसे लागा क वाद विज्ञान के क्षेत्र म ग्रवश्य कोई वडा परिवतन हो जाता है, सो भी एकवारगी ग्रौर झटके के साथ। यह वहुत दिलचम्प वात है न, व्लादीमिर ग्रफानास्येविच?"

केवल रात का ही वोलोद्या न वार्या का पत्न ग्रन्त तक पढा ग्रौर उसे ग्रपनी वार्या के वारे मे ग्रनक बार ग्राश्चय हुग्रा। वह हमेशा ग्रौर हर चीज़ कितनी ग्रच्छी तरह समझती है। पोलूनिन के मातमी जुलूस के वारे म एक भी फालतू शब्द ग्रौर किसी तरह की ग्रनावश्यक वात उसन नही लिखी थी, किसी तरह की भावुकता से काम नही लिया था। उसने "वोलाद्या की ग्रोर स" शव पर गुलदस्ता रखा था। "इसके सिवा मैं ग्रौर कर ही क्या सकती थी?" वार्या न पूछा था। "ज़ाहिर है कि तुम्हारे गुलदस्ते पर मैन तुम्हार नाम का फीता नही बाधा या ग्रौर जव उसे शव पर रखा, तो यह फुसफुसा दिया—'यह ग्रापके शिष्य वोलोद्या उस्तिमेन्का की ग्रार स है।' ज़ाहिर है कि मैंने वहुत ही धीरे स य शब्द कहे ग्रौर किसी न भी नही सुन।"

वोलाद्या का काम हर दिन वढता गया। उसकी सचेत ग्रौर फली फली जिज्ञासु ग्राखे, काम करन की तत्परता, डाक्टरा स प्रश्न करन के सिलसिल मे उसकी ग्रादरपूण निश्छलता, दिखाव के लिय नहा, वल्कि वास्तव म ही नम्रतापूवक उपयागी होन की इच्छा, ज्ञान प्राप्ति ग्रौर ज्ञान-सचय की तीव्र पिपासा जिसकी ग्रार सभी का ध्यान जाता था—इन सभी चीज़ा स वह मानवीय ग्रौर भावनात्मक धरातल पर

सभी के लिय अनिवाय हो गया। और तो और आपरेशन-कक्ष की वह कठोर नस भी अवसर वालोद्या को अपने पास बुलाती ताकि उसे उस चुस्ती फुर्ती की शिक्षा दे दे, जिससे वह अपना बहुत ही जटिल और उत्तरदायित्वपूण काय पूरा करती थी।

"यह देखिय, यह औज़ारा का एक सेट है," उन्हें समभाते हुए वह कहती, "इन्हें मैं कीटाणुमुक्तक घोल म डाल देती हू। अब इस बात की ओर ध्यान दीजिये कि जरा भी वक्त बरबाद किय बिना मैं अपन हाथ धोने लगती हू ताकि 'ऑपरेशन के समय औज़ार देने' को तैयार हो जाऊ। हर चीज को बहुत ध्यान स देखिय, कुछ भी नजर से न चूकने दीजिये। जल्दी वह समय आयेगा, जब आपको अपनी नर्सो को सधाना होगा। मुह नही बनाइये, मैं बिल्कुल ठीक कह रही हू—सधाना होगा। अब आगे देखिये। मैंने कीटाणुमुक्त किया हुआ लबादा पहना और इसी बीच छोटी नस ने कीटाणुमुक्तक घोल से औज़ार निकालकर बाहर रख दिये और मैंने उन्हें तौलिये स ढक दिया। सेट को औज़ारावाली मेज़ के बायी ओर रखा गया है। हर चीज को बहुत ध्यान से देखिये, समय की बचत करना सीखिये, आपके सामने बहुत ही उच्च कोटि की नस खडी है, ऐसी नस, जो बोगोस्लोव्स्की जसे सजन के साथ काम करन के बिल्कुल उपयुक्त है"

वोलोद्या मुर्दो की चीर फाड के समय तो अवश्य ही उपस्थित रहता। नोना सेर्गेयेव्ना के साथ वह ओपोल्ये और वोल्शोये ग्रीदनेवो गाव म बीमारो को देखने गया। उसन उग्र अपेंडिसाइटिस, गुर्दे के दद, छोटी माता और एथेरामा रोग का सही निदान किया। दो रोगिया का उसने खुद ही इलाज किया और इसके लिये डाक्टर विनोग्रादोव न वार्डो का चक्कर लगाते समय उसकी प्रशसा की और बोगोस्लोव्स्की ने "हुम" कहा। राम्का चुखनीन के कान के पास उसने खुद मस्सा काटा बेशक बागोस्लोव्स्की की देख-रेख म। इसका नतीजा यह हुआ कि पाच नम्बर के वाड म चिकित्साशास्त्र का "विशेपज्ञ" अब वालाद्या को लल्ला चप्पा करन लगा। वोलाद्या न कई छोटे मोटे आपरेशन भी किय। बागास्लाव्स्की के कडाई स मना कर दन के बावजूद अस्पताल के सभी लाग उस "हमारा वोलाद्या", 'प्यारा वालाद्या' या 'डाक्टर वालाद्या" कहत। इसी मान पर भी वालाद्या घार-गम्भीर

रहता, भूले भटके ही मुस्कराता और रुखाई से वातचीत करता। कभी-कभी विल्कुल अप्रत्याशित ही कह उठता—

"मै आपसे अनुरोध करता हू "

"अनुरोध करता हू", ऐसा न कहकर उसे तो कडाई से आदेश देने चाहिये थे। जिस आदमी को वह आदेश देता था, उसकी ओर मुडकर देखना भी गलत होता था। किन्तु वोलोद्या ऐसा करता और कष्ट दने के लिए क्षमा मागता।

कभी कभी अटपटी वाते भी हुई। एक औरत की स्तन-सूजन का वोलाद्या ने इलाज किया। एक दिन अस्पताल के दरवाज़े के पास साफ-सुथरी और नयी टोकरी वोलोद्या की ओर वढाते हुए वह वाली—

"प्यारे वोलाद्या, मैं यह ताज़ा शहद तुम्हार लिये लाई हू। खूव मज़े से खाना। वहुत अच्छा इलाज किया है तुमने मेरा, धन्यवाद, वेटा। इस टोकरी मे कुछ हरे खीरे, टमाटर और मीठे शलजम भी है।"

"किसके लिये?" टोकरी को हाथ म लिये और वात न समयते हुए वालोद्या ने पूछा।

'तुम्हारे लिये, तुम्हारे लिये, व्लादीमिर अफानास्यविच तुम्ह धन्यवाद देने के लिये लाई हू।'

"आप क्या पागल हो गयी हैं, अन्तोनोवा?" गुस्से से लाल-पीला हाते हुए वोलोद्या ने पूछा।

औरत ने हाथ झटक्कर वात खत्म की और पोलीक्लीनिक के पास खडी हुई अपनी घोडागाडी की तरफ तेज़ी से वढ गयी। वालाद्या कुछ दर तक जहा का तहा खडा रहा और फिर अपने टूटे जूता को धपधपाता हुआ अन्तोनावा के पीछे-पीछे भागा।

"आपकी यह हिम्मत कैसे हुई?" घोडागाडी के पास भागता हुआ वह चिल्लाया। "म यह वरदाश्त नही करूगा, आप पर मुकदमा चलाउगा "

वाद म उसे अपनी इस मूखतापूण चीख चिल्लाहट और धमकिया पर अफसोस होता रहा और अन्तानावा का डरा-सहमा हुआ चेहरा याद करके शम आती रही। फिर एक घटना और हा गयी। घाट

पर अस्पताल के स्टोर की निगरानी करनेवाले टेढ़े मुह के मक्कार चौकीदार ने जिसका उपनाम 'बकरा दोहक' था, एक दिन बोलाग्रा से चोरी चोरी छः रूबल मांगे।

"क्या करोगे रूबलों का?" बोलाग्रा ने पूछा।

"आज कौन-सा दिन है?" 'बकरा दोहक' ने प्रत्युत्तर में पूछा।

"दिन – शुक्र।"

'किस सन्त का दिन है यह, मैं तुमसे पूछता हूं, हमारे प्यारे डाक्टर?'

बोलाग्रा को सन्त के बारे में कुछ मालूम नहीं था। बात करने की उसे फुरसत नहीं थी और इसलिये 'बकरा दोहक' को रूबल मिल गये। शाम को वह शैतान नशे में धुत्त दिखाई दिया। बोगोस्लोव्स्की ने मामले की बड़ी जांच-पड़ताल की और बोलाग्रा अपराधी ठहराया गया। 'बकरा दोहक' ने कसम खाकर कहा कि अपना नाम दिवस मनाने के लिये उसने डाक्टर उस्तिमेन्को से रूबल लिये थे। बोलाग्रा को डांट डपट सहनी पड़ी।

'तुम मुझे माफ कर दो," कुछ देर बाद 'बकरा दोहक' ने उससे कहा। 'बड़े डाक्टर छुरी लेकर गले पर सवार हो गये – नाम बताओ नाम बताओ। जैसा अन्दर से वैसा ही बाहर से – मैं इस ढंग का आदमी हूं। बड़े डाक्टर को खुश करने के लिये तुम्हारा नाम ले लिया '

बोगोस्लोव्स्की पालीक्लीनिक में, वार्डों का चक्कर लगाते और मरहम-पट्टी के कक्ष में भी बोलाग्रा को कुछ न कुछ शिक्षा देते रहते –

"जर्मन सर्जन बीर ने अपने ज़माने में बड़े रूखे ढंग से, किन्तु बिल्कुल सही कहा था – 'अक्सर आपरेशन करने से डाक्टर मन्दबुद्धि हो जाते हैं।' शुरू में यह सोचना चाहिये कि इस आदमी का इलाज कैसे किया जाये न कि यह कि कौन सा आपरेशन करना ठीक होगा। सर्वथा अनिवार्य होने पर ही आपरेशन करना चाहिये।'

फिर एक दिन बोगोस्लोव्स्की ने कहा –

"सुनिये तो, आप रोगियों से यह सलाह मशविरा क्या करते रहते हैं? यह समझ लीजिये कि बीमार आदमी कमज़ोर, परेशान और दर्द-तकलीफ से थका हुआ होता है। उसे निर्देशित करने की ज़रूरत

होती है और आप मानो हाउस आफ लाड्स का वातावरण बना बैठते है।"

बोगोस्लोव्स्की ने एक दिन देखा कि गर्मी और उमस से बुरी तरह परेशान वोलोद्या पोलीक्लीनिक म कुर्सी पर पसरा हुआ है। बोगोस्लोव्स्की आपे स बाहर हो गय –

"बीमार हो गये क्या ?"

"हा, गर्मी भी तो बेहद है

"गर्मी ?" बोगोस्लोव्स्की ने झल्लाकर कहा और उनका सावला चेहरा गुस्से से लाल हो उठा। "अगर इतन ही परेशान हो गये हैं, तो घर जाइये। डाक्टर को उबला हुआ मास नही, बल्कि उत्साही और मजबूत आदमी होना चाहिये जिसका आदेश मानकर रोगी का खुशी हो। आपको नैतिक रूप स शक्ति पुज दास्तान, किस्से-कहानिया का देव होना चाहिये, ढीली ढाली जेली नही। रोगी का अपन अच्छे डाक्टर के लिय ही स्वस्थ हाने की कोशिश करनी चाहिय। आपको केवल अपने नश्तर और दूसरे इलाजो से ही नही, बल्कि अपन व्यक्तित्व के प्रभाव से भी काम लेना चाहिये। घर जाइये और ढग का आदमी बनकर आइय।"

"मैं काई दास्तानी करिश्मा नही बन सकता!" वोलाद्या न उदास हाते हुए उत्तर दिया। "म तो उस्तिमे-को हू।"

"जाकर उचा नदी म नहाइये और वापिस आ जाइये! समझ गये ?"

"समझ गया!" वोलोद्या बिल्कुल नाराज हा गया।

अगले दिन बागोस्लाव्स्की ने पूछा –

"आपने कभी बाइबल पढी है ?"

"नही!" मुह फुलाये हुए वोलाद्या ने उत्तर दिया।

"मैं तो चूकि पादरी का बेटा हू, इसलिय जाहिर है कि मैंने उस पढा है। वहा आपके बारे म लिखा हुआ है।"

"मेरे बारे म ?" वोलाद्या न हैरान हाते हुए पूछा।

"सन्त लूकावाले भाग म कहा गया है – 'अगर सभी लाग आपकी प्रशसा करते है, तो यह आपका दुर्भाग्य है।' समझ गये ? यह भी याद रखिय कि मेरे लिये आपके पास खडे रहकर देखन की तुलना म आपरेशन करना कही अधिक आसान है। मरी टीका टिप्पणिया स

पर अस्पताल के स्टोर की निगरानी करनेवाले टेढे मुह के मक्कार चौकीदार ने, जिसका उपनाम 'वकरा दोहक' था, एक दिन वोलोद्या से चोरी चोरी छ रूवल मागे।

"क्या कराेगे रूवलो का?" वोलोद्या ने पूछा।

"आज कौन सा दिन है?" 'वकरा दोहक' न प्रत्युत्तर म पूछा।

"दिन – शुक्र।"

"किस सन्त का दिन है यह, मे तुमसे पूछता हू, हमारे प्यारे डाक्टर?"

वोलोद्या को सत के वारे मे कुछ मालम नही था, बात करने की उसे फुरसत नही थी और इसलिये 'वकरा दोहक' को रूवल मिल गये। शाम को वह शैतान नशे मे धुत्त दिखाई दिया। वोगोस्लोव्स्की न मामले की कडी जाच पडताल की और वोलोद्या अपराधी ठहराया गया। 'वकरा दोहक' ने कसम खाकर कहा कि अपना नाम दिवस मनाने के लिये उसने डाक्टर उस्तिमेन्को से रूवल लिय थे। वोलोद्या को डाट डपट सहनी पडी।

'तुम मुझे माफ कर दो," कुछ देर बाद 'वकरा दोहक' न उससे कहा। "वडे डाक्टर छुरी लकर गले पर सवार हो गये – नाम वताओ, नाम वताओ। जसा अन्दर से वैसा ही वाहर स – मैं इस ढग का आदमी हू। वडे डाक्टर का खुश करने के लिय तुम्हारा नाम ले दिया "

वागास्लोव्स्की पालीक्लीनिक म, वार्डो का चक्कर लगाते और मरहम-पट्टी के कक्ष म भी वालाद्या का कुछ न कुछ शिक्षा दते रहते –

'जमन सजन वीर न अपन जमान म वडे रूख ढग स, किन्तु विल्कुल सही कहा था – 'अक्सर आपरेशन करन स डाक्टर मन्दबुद्धि हो जात है। शुरू म यह साचना चाहिए कि इस आदमी का इलाज कसे किया जाय न कि यह कि कौन-सा ऑपरेशन करना ठीक हागा। सयथा अनिवाय हान पर ही आपरशन करना चाहिय।

फिर एक दिन वागास्लाव्स्की न कहा –

सुनिय ता, आप रागिया स यह सलाह-मशविरा क्या करत रहत है? यह समझ लीजिय कि वीमार आदमी कमजार, परशान और दद-तकलीफ स पस्त हुआ हाता है। उस निर्देशित करन की जरूरत

होती है और आप मानो हाउस आफ लार्ड्स का वातावरण बना बठते है।"

वोगास्लोव्स्की ने एक दिन दखा कि गर्मी और उमस स बुरी तरह परेशान वोलाद्या पोलीक्लीनिक मे कुर्सी पर पसरा हुआ है। वोगास्लोव्स्की आप से बाहर हो गय–

"बीमार हो गये क्या?"

"हा, गर्मी भी ता बेहद है "

"गर्मी?" वोगोस्लाव्स्की ने झल्लाकर कहा और उनका सावला चेहरा गुस्से स लाल हो उठा। "अगर इतन ही परेशान हा गये हे, तो घर जाइय। डाक्टर को उबला हुआ मास नही, बल्कि उत्साही और मजबूत आदमी होना चाहिय, जिसका आदेश मानकर रोगी का खुशी हो। आपको नैतिक रूप से शक्ति पुज, दास्तान, किस्से-कहानिया का दव होना चाहिय, ढीली-ढाली जेली नही। रागी को अपने अच्छे डाक्टर के लिय ही स्वस्थ हाने की कोशिश करनी चाहिय। आपको केवल अपन नश्तर और दूसरे इलाजो से ही नही बल्कि अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से भी काम लेना चाहिय। घर जाइये और ढग का आदमी बनकर आइये।"

"मैं काई दास्तानी करिश्मा नही बन सकता!" वोलाद्या न उदास हाते हुए उत्तर दिया। "मैं तो उस्तिमेको हू।"

"जाकर उचा नदी मे नहाइये और वापिस आ जाइय! समझ गय?"

"समझ गया!" वालोद्या बिल्कुल नाराज हा गया।

अगले दिन वोगोस्लोव्स्की ने पूछा–

"आपने कभी बाइबल पढी है?"

"नही!" मुह फुलाये हुए वोलोद्या न उत्तर दिया।

"मै ता चूकि पादरी का बेटा हू, इसलिय जाहिर है कि मैने उस पढा है। वहा आपके बारे म लिखा हुआ है।"

"मेरे बार म?" वोलोद्या न हैरान होत हुए पूछा।

"सन्त लूकावाले भाग म कहा गया है–'अगर सभी लाग आपकी प्रशसा करते है, तो यह आपका दुर्भाग्य है।' समझ गये? यह भी याद रखिये कि मेरे लिये आपके पास खडे रहकर देखने की तुलना म आपरेशन करना कही अधिक आसान है। मेरी टीका टिप्पणियो से

भी मत विगडिये, क्याकि ऐसा न करना कही अधिक आसान और सरल काम है। इसलिय अब आपका अपनी कलवाला इव घोषणा पर शम आनी चाहिय कि आप दास्तानी करिश्मा नहीं, उस्तिम को है। मै चाहता हू कि आप कभी दास्तानी करिश्मा ही वने।"

वोगोस्लोव्स्की चले गये। वोलोद्या ने ताजादम करनवाले खनिज जल के दो गिलास पिय और सोचने लगा—"यह मैंने क्या गडबड घुटाला कर डाला है! हद ही हो गयी! वार्या से इसकी चर्चा नही की जा सकती। पर, हा, दास्तानवाली बात बतायी जा सकती है!"

राता को वालोद्या अक्सर विनोग्रादाव के साथ ड्यूटी पर रहता। वूढा डाक्टर बारह बजे के करीब डयूटी रूम म सोफे पर अपना बिस्तर लगाता, फव्वारा स्नान करता और इत्मीनान से हाय-वाय करता हुआ लेट जाता। वालोद्या ही वार्डों का चक्कर लगाता, यह देखता कि डयूटीवाली नर्सें और परिचारिकाए सो ता नही गयी, कि बीमार आधी रात के समय बरामदे मे शतरज तो नही खेलते, कि वे बात करके दूसरो की नीद तो हराम नही करते। रात को वह विनाग्रादाव को दो-तीन बार तो अवश्य ही जगाता—

"साव्वे को खास रहा है।"

"क्या?" विनोग्रादोव ने झुझलाकर पूछा।

"तीसरे वाड का साव्वे को खास रहा है। उसका हाल ही म आपरेशन हुआ है मुझे डर है कि कही "

विनोग्रादोव न जम्हाइया लेते और हाय-वाय करते हुए चुपचाप कपडे पहन और तीसरे वाड म गया। साव्वे को अब तक खासना वद कर चुका था। विनोग्रादाव वरामदे म निश्चल खडा हो गया, उसने भयानक-सी सूरत बना ली और कान लगाकर कुछ सुनने लगा।

"क्या बात है?" वालोद्या ने चक्कर मे पडते हुए पूछा।

"मैं सुनने की काशिश कर रहा हू।"

"क्या कास्तान्तीन इवानाविच?'

"काई छीका ता नही!'

वालाद्या के हाठा पर फीकी और दयनीय सी हसी आ गयी।

"अगर कोई छीके, तो आप मुझे जगा दीजियेगा," विनोग्रादोव ने अपने कमरे में लौटते हुए कहा। "तब मैं आकर उसकी नाक साफ कर दूगा! ऐसा करना तो बहुत जरूरी है न?"

"ही-ही!" वोलोद्या बनावटी ढग से हसा और इस बेवकूफी भरी हसी के लिय स्वय ही अपनी भत्सना की। पर वह अपनी आत्मा की आवाज का क्या करता!

रात की चौथी ड्यूटी पर विनोग्रादोव न वोलोद्या को उस जगाने से मना कर दिया। प्राढा, बडी सी नाकवाली और गुमसुम नस आगेलीना मादेस्ताव्ना की सहमति होने पर ही वह उसे जगा सकता था।

"मैं ठहरा बूढा आदमी, मेरे लिय सोना तो सबसे महत्त्वपूण चीज है," विनोग्रादोव न कहा। "क्षमा कीजियगा, पर मैंन पिछली रात गिनती की कि ग्यारह बार तो आपने मुझे बेकार ही जगाया था।"

"पर, अगर " वोलोद्या ने कहना शुरू किया।

"भाड म जाइये आप! " विनोग्रादोव ने प्यार से झिडकते हुए कहा। "मैं शीघ्र ही साठ का हो जाऊगा। आप इसका अथ समझते हैं न?"

वह मन ही मन कुछ बुडबुडाता और मुस्कराता हुआ मजे से सोने की तयारी करने लगा—ऐसा था वह घाघ और समझदार बूढा भालू। लेट जाने क बाद उसने मजे स लम्बी जम्हाई ली और बोला—

"मैं जानता हू कि इस समय आप क्या सोच रहे है, सम्भवत मरी भत्सना कर रह है। नौजवान, मै आपको ऐसा न करन की सलाह देता हू। हम पुरान-बूढे डाक्टर बुर लोग नही है, मूलत ईमानदार और ढग के आदमी है तथा बहुत कुछ दख अनुभव कर चुके है। बहुत कुछ "

वोलोद्या चुपचाप सुनता रहा।

"जारशाही के जमाने म, जिसका सौभाग्य स आपको अनुभव नही हुआ हम सभी को बहुत कठिन दिनो का सामना करना पडा, खासकर नये विचारो और भावोवाले युवाजन को। जाहिर है कि अपनी बग्घियोवाले और पैसे के फेर मे पडे हुए फशनदार डाक्टरो की मैं इनम गिनती नही करता। मेरे प्यारे दोस्त, मैं क्रान्ति होने के पहले दस वष तक देहाती डाक्टर का काम कर चुका था और मुझे आटे-

दाल का भाव मालूम हो चुका था। सम्भवत आप मुझे देखकर सोचते होंगे कि कास्तान्तीन इवानोविच स्वार्थी है, अपनी चिन्ता करता है, अपने स्वास्थ्य को बनाये रखना चाहता है। हां, अब जब बुढ़ापा दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है, तो अपनी चिन्ता करने में भी क्या बुराई है। कुछ दिन और सांस लेना चाहता हूं, और जीना चाहता हूं—वैसे ही, जैसे अब जी रहा हूं—मेरी इज़्ज़त की जाती है, मेरी राय को महत्त्व दिया जाता है और अपने इलाके में मैं कोई गया-बीता आदमी नहीं हूं। वैसे अगर देखा जाये, तो मैं इसके योग्य हूं। काफ़ी मेहनत कर चुका हूं और सभी यह जानते हैं कि मैं हराम की रोटी नहीं खाता हूं। मेरे प्यारे नौजवान, पहले ज़माने में हमारी नौकरी काफ़ी खतरनाक होती थी। सड़सठ प्रतिशत देहाती डाक्टर छूत की बीमारियों से मरते थे। सड़सठ प्रतिशत! हैं न बढ़िया आंकड़े? हम यह सब कुछ जानते हुए कि हमारे साथ क्या बीतेगी गांवों और बीरानों में जाते और अपनी ज़रा भी परवाह किये बिना काम करते। फिर बीरान भी ऐसे होते थे कि अब तो कहीं नज़र ही नहीं आयेंगे, अब तो उनका अस्तित्व ही नहीं रहा। और काम की स्थितियां? प्रोफ़ेसर सिकोरस्की ने हिसाब लगाया है कि दस प्रतिशत से अधिक देहाती डाक्टर आत्महत्या करते हैं। तो नतीजा क्या निकलता है? एक सौ में से सड़सठ डाक्टर रोगियों की छूत लगने से मरते थे और दस आत्महत्या कर लेते थे। तो जनाब, यह थी तस्वीर रूसी जीवन की। बहुत ही नम्र शब्दों में यदि व्यक्त किया जाये, तो हम इसे ऊबानेवाली तस्वीर कह सकते हैं। तो मेरे प्यारे नौजवान, मैं बहुत थक गया हूं और सम्भव होने पर मौज लेना चाहता हूं। मुझे कड़ी कसौटी पर नहीं परखिये!

'मैं परख ही नहीं रहा हूं।

'आप झूठ बोलते हैं, परख रहे हैं! पर नौजवान तो ऐसा करते ही हैं—सभी को परखना, सभी की भर्त्सना करना। किन्तु हम उस तरह के बूढ़े नहीं हैं। हमने अपना जीवन इस तरह बिताया है कि आपके सामने किसी तरह की कोई खास सफ़ाई देने की ज़रूरत नहीं समझते। समझे, हुज़ूर? तो अब आप इत्मीनान से तशरीफ़ ले जा सकते हैं।'

वोलोद्या धीरे धीरे कमरे से वाहर निकला और चक्करदार सीढ़िया चढकर "हवाई जहाज़" की सपाट छत पर बन सौर-चिकित्सागह म वेंच पर जा बठा। बहुत दूर, असीम दूरी पर, विल्कुल काले आकाश म सितारे प्यारा और हृदय को स्पदित करनेवाला प्रकाश फैला रहे थे। हो सकता है कि स्पन म पिता जी, नगर म वार्या, कही किसी गाव के होटल म टिकी हुई वूस्रा अग्लाया, गानिचेव और पीच तथा अपने जहाज़ के मच स रोदिप्रान मेफादियेविच भी इन सितारो को दख रहे हो

घुटने को कसकर वाहो से थामे और सितारो पर नज़र टिकाये हुए वह गर्मी की इस शान्त रात म देर तक ऐसे ही अकेला वैठा रहा। उसका दिल चन स और सधी गति से धडक रहा था, मस्तिष्क विल्कुल साफ था, विचार सुलझे हुए, गम्भीर और सुखद थे। "लोग–सचमुच ही वहुत कमाल के है," वोलोद्या न सोचा। "इससे क्या फक पडता है कि यव्गेनी स्तेपानाव गधा है। दादिक और वालन्तीना आद्रेयेव्ना की तरफ ध्यान दन की ज़रूरत नही। ये थोडे ही लाग है। लोग–दूसरे ही हैं। लाग है–वोविशेव और विनोग्रादोव, बोगोस्लोव्स्की और उनकी पत्नी, चाचा पेत्या और साहसी अेदिया, पिता जी और वार्या, गानिचेव और दिवगत पालूनिन। अपने को दूसरा के लिय अनिवाय और आवश्यक, ऐसा वनाना चाहिय कि लोगो का, भल लोगा का आपके विना काम ही न चल सके। वाकी सब तो वेकार की बात है!"

यही, ऊपर ही उसे फाटक की घटी सुनाई दी–कोई रागी लाया गया था। सम्भवत फौरी आपरेशन करना होगा। ड्यूटी रूम की बत्ती जल गई–इसका मतलब था कि नस आगेलीना मोदेस्तोव्ना ने विनोग्रादोव को जगा दिया था। इसी समय आपरेशन हाल की वडी वर्गाकार खिडकिया जगमगा उठी।

"बडा मुश्किल केस है!" विनोग्रादोव ने हाथ धोते हुए कहा।

रोगी के बचने की विल्कुल कोई आशा न होते हुए भी विनोग्रादोव ने उसकी जान बचाने का सघप शुरू कर दिया। इन दो घण्टो के दौरान उन्होन क्या कुछ नही किया! विनोग्रादोव का लवादा पसीने से तर हो गया, नस आगेलीना मोदेस्तोव्ना ने दो बार औज़ारो को

कीटाणुमुक्त किया। नकाब के नीचे वालाद्या भी पसीने से भीगा हुआ था। पर इनकी सारी कोशिश बेकार गयी। उन्होंने केवल कुछ देर के लिये उसे मृत्यु सीमा पर रोके रखा, किन्तु मौत विजयी हो गयी। ऊंचे माथे शक्तिशाली, किंतु धीरे धीरे सफेद पड़ते हुए धड़, कसकर भिंचे हुए होठों और मजबूत हाथोंवाला यह सुंदर आदमी आपरेशन की मेज पर ही चल बसा।

"खत्म हो गया?" विनोग्रादोव ने पूछा।

"हां," वोलोद्या ने जवाब दिया और मृत का ठण्डा होता हुआ हाथ उसके धड़ के करीब मेज पर ऐसे रख दिया, मानो वह कोई वस्तु हो।

विनोग्रादोव ने झटके के साथ मुंह से नकाब उतारी।

"बेड़ा गर्क! भला हो ही क्या सकता था" अभी भी हांफते हुए विनोग्रादोव ने कहा। "चार गोलियां मार दी और सो भी पेट भाग में। ओह, क्या जानदार आदमी था।"

उसने निश्चल चेहरे पर अफसोस भरी नजर डाली। साश्या ने दिल मजबूत करने की दवाई की कुछ बूंदें गिलास में डालकर डाक्टर को दी। विनोग्रादोव ने उन्हें ऐसे गले से नीचे उतार लिया, मानो वह वोदका पी रहा हो, कुछ हाय वाय की और झुंझलाकर बोला–

"यह हो क्या रहा है? हृष्ट-पुष्ट जवान आदमी पर गोली चला देना, यह भी कोई बात है? वह अभी पचास साल तक और जी सकता था"

"यह सब हुआ कैसे?" ड्यूटी रूम में लौटने पर वोलोद्या ने पूछा।

"वह अपने पति को प्यार नहीं करती थी, उसे इस व्यक्ति से प्रेम था," विनोग्रादोव ने बताया। "किन्तु पति अपनी पत्नी से प्यार करता था और उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी की हत्या कर डाली"

विनोग्रादोव ने गहरी सांस ली और खिड़की पूरी तरह खोल दी। वोलोद्या को किसी की दबी घुटी आह-कराह सुनाई दी।

"यह वही है," विनोग्रादोव ने कहा। "व्लादीमिर अफानास्यविच, जाइये, जाकर उसकी मदद कीजिये। उसका बुरा हाल है।"

वोलोद्या बेंच के करीब गया। नर्सें आगेलीना मोदेस्ताव्ना और सोन्या भी अपने तौर पर उसे तसल्ली द रही थी।

"हे भगवान, हे भगवान!" वालोद्या को धीमी और दिल को चीरती हुई आवाज़ सुनाई दी। "हे भगवान हे मेरे भगवान, ऐसा क्या? नही, ऐसा क्यो? मुझे जाने दीजिये, अभी उसके पास जाने दीजिये "

"जान दीजिये!" वोलोद्या ने कहा।

वह खुद उसे उस कमरे तक ले गया, जहा मृत का शव था। कमरे की दहलीज़ पर वह घुटनो के वल हा गयी और हाथ फैलाये, रेंगती और यह बुदबुदाती हुई उसकी तरफ, अपने प्रिय व्यक्ति की तरफ वढी—

"मुझे माफ कर दो, माफ कर दो, माफ कर दो "

फिर उसने धीरे-से, फुसफुसाकर आवाज़ दी—

"ईगोर!"

और भी अधिक धीरे-से पुकारा—

"ईगोर!"

जब उसने वोलोद्या की तरफ देखा तो उसका चेहरा काप रहा था।

"कुछ नही किया जा सकता? क्या कुछ भी नही किया जा सकता?"

वालाद्या ने कोई उत्तर नही दिया। मृत का चेहरा अब बिल्कुल सफेद पड चुका था। उसके सुनहरे बालो के साथ खिलवाड करती हुई रात की हवा ही उसके जीवित होने का भ्रम पैदा कर रही थी।

"कमीनो, तुमने उसे यहा चीर डाला!" नारी बोली। 'मैं तो उसे यहा ज़िन्दा लाई थी। कुत्तो, तुमने उसे मार डाला! अरे सूअर के बच्चे, अरे छोकरे, क्या तुम उस पर अपना अभ्यास कर रहे थे? यही न? एक असहाय आदमी पर अभ्यास कर रहे थे? बोलो नो!"

"आपको शर्म नही आती!' वोलाद्या ने कहा। "आप कसे एसी बात "

आगेलीना मोदेस्तोव्ना, सोन्या और परिचारक नफेदोव वालोद्या के सामने आकर खडे हो गये। वरना वह नारी तो सम्भवत उसका मुह नोच डालती।

"जाइये, जाइये यहा से व्लादीमिर अफानास्येविच," नर्स साल्या ने कहा। "इससे बात करने मे कोई तुक नही।"

वालोद्या बहुत भारी मन के साथ, बेहद परेशान और दुखी होता हुआ वहा से चला गया। उसने ड्यूटी रूम का दरवाजा खोला, विनो ग्रादोव की सम गति से चलती सास की आवाज सुनी और अस्पताल के बगीचे की ओर चल दिया। उस औरत की चीख चिल्लाहट वहा भी सुनाई दे रही थी–

"हत्यारे! बुरा हो तुम हत्यारो का! यह सब तुम्हारी ही करतूत है, तुम सभी की, तुम सभी की।"

वालोद्या को सपने मे भी उसकी सूरत दिखाई दी–विकृत, घृणापूर्ण होठो पर झाग। डाक्टरो के प्रति इतनी घृणा क्यो? क्या वे मुरदे को बचा सकते थे? क्या वे करिश्मा कर सकते थे?

वोलोद्या को अगले दिन वहा से रवाना होना था। बोगोस्लोव्स्की ने कालेज के नाम पत्र लिखा, लिफाफे पर लाख की मुहर लगायी और अभ्यासकर्त्ता को घाट पर छोडने चल दिये। वातावरण मे नमी थी, पानी बरस रहा था और मटियाले धूसर बादल पीटर और पाल के गिरजे पर झुके हुए थे। वालोद्या के यहा आने के दिन की भाति आज भी बोगोस्लोव्स्की रास्ते भर दुआ-सलाम और बाते करते हुए अपनी समझदार तातारी आखो को सिकोडते रहे–

"आप इस घटना को दिल से मत लगाइये। हाल ही मे मैने 'इज्वेस्तिया' अखबार मे पढा था कि रीबिन्स्क मे किसी डाक्टर निकोनस्की को केवल भला-बुरा ही नही कहा गया, बल्कि मारा पीटा भी गया। इवानोवो-वोज्नेसेन्स्क मे फ्रेम्रोक्तीस्ताव नाम के एक आदमी ने डाक्टर वीखमान पर शोरे का तेजाब डाल दिया। डाक्टर तरस्रीसोवा तो मरते मरते बची। नमस्ते सेर्गेई सम्पोनोविच। कालूगा मे तीन अफीमचियो ने अस्पताल मे हगामे किये। नमस्ते, नमस्ते, अलक्सेई पेत्रोविच। मगर यह बात ध्यान मे रखिये, व्लादीमिर अफानास्येविच कि अब हमारे यहा क्रान्ति पूर्व की तुलना मे ऐसी घटनाए बहुत कम होती है। आठ गुना कम है। समझे? कुछ साल और बीतेगे, तो ये सभी चीजे भूली बिसरी बात हो जायेगी एक भयानक और घिनौने सपने की भाति गायब हो जायेगी।"

वोगोस्लोव्स्की ने वोलोद्या से हाथ मिलाया और कुछ झुके हुए, पुरानी वरसाती और पुराने ढंग की टोपी पहने हुए लौट चले। किन्तु अचानक मुडे, कुछ देर चुप रहे और फिर मुर्गे की सी तिरछी नजर से वोलोद्या की ओर देखकर पूछा—

"सुनिये तो व्लादीमिर अफानास्येविच, बहुत मुमकिन है कि मै यहा से कही बहुत ही दूर चला जाऊ। ऐसा न तो आज और न कल ही होगा। चलियेगा मेरे साथ?"

"और चोर्नी यार के इस अस्पताल का क्या होगा?"

"यह इसी तरह चलता रहेगा," वोगोस्लोव्स्की ने हसकर उत्तर दिया। "आपसे ईमान की बात कहता हू कि यहा अब और कुछ करने की गुजाइश नही रही। किन्तु मुझे टक्कर लेना, दीवार को तोड-फोडकर नये सिरे से निर्माण करना अच्छा लगता है। तो, चलियेगा?"

"चलूगा!" वोलोद्या ने निर्णायक ढग से, दृढता, कृतज्ञता और प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया। "बस मैं आपसे माफी चाहता हू और आपको धन्यवाद देता हू।"

"पर अभी किसी को इसकी कानो कान खबर नही होनी चाहिये!" वोगोस्लोव्स्की ने कहा। "पर काम दिलचस्प होगा, ओह, बहुत ही दिलचस्प! कसम भगवान की, खासी मुसीबत उठानी होगी हम।"

इतना कहकर वे बग्घी की ओर चले गये। एक जवान की भाति जिस फुर्ती, उत्साह और कुशलता से उन्होने लगामे हाथ मे ली, भूरे घोडे को चाबुक लगाया और पीछे मुडकर देखे बिना हमेशा की भाति अपने विचारो मे डूबे-खोये से अस्पताल की ओर बढ गये, यह सब कुछ वोलोद्या को बहुत अच्छा लगा।

"नमस्ते, मेरे प्रिय व्यक्ति!" कभी की आखो से ओझल हो गयी बग्घी की दिशा मे उदास नजर से देखते हुए वोलोद्या ने सोचा। "नमस्ते, भले व्यक्ति! आप सभी को सभी कुछ के लिये धन्यवाद देता हू! अन्तिम शब्दो के लिये भी धन्यवाद। अगर उन्होने मुझे कठिन काम मे साथ देने के लिये कहा है, तो इसका यही अर्थ है कि मैं बिल्कुल गया-बीता नही हू। किसी भी व्यक्ति के लिये दूसरो के मुह से यह सुनना बहुत महत्त्व रखता है कि वह निरा कूडा-करकट नही

दसवां अध्याय

दोदिक और उसकी पत्नी

केवल डेढ़ महीना गुज़रा था और इसी अर्से में वोलोद्या बहुत बदल गया था। लम्बे-तडंगे, चौडे चकले कंधों और गालों पर काला की काली खूंटियोवाले, नंगे सिर तथा सिलवटदार बरसाती और सख्त चमड़े के बूट पहने हुए वोलोद्या के सामने आने पर वार्या "आह, वोलोद्या!" कहकर एकबारगी चिल्लायी ही नहीं।

कुछ क्षण बाद बहुत हैरान और खुश होते हुए वह बोली, "ओह, वोलोद्या!"

रिमझिम अब भी चल रही थी, ठंडी पतझर समय से पहले ही शुरू हो गयी थी। वार्या के चेहरे पर पानी की बूंदें दिखाई दे रही थीं, वोलोद्या की घनी बरौनियां, उसकी बरसाती और बाल—सभी भीगे हुए थे। हे भगवान कितना बड़ा हो गया है यह वोलोद्या!

"बेड़ा गर्क, किताबें भीग गयीं," वोलोद्या ने कहा।

"नमस्ते, वोलोद्या!" किताबों का बंडल एक तरफ हटाते हुए वार्या ने कहा। यह बंडल उसके और वोलोद्या के बीच दीवार बना हुआ था। वह उसके कंधे पकड़कर उसे अपनी ओर नहीं खींच सकती थी, चूम नहीं सकती थी। पर उसका हर काम करने का अपना ही ढंग होता था और उसने वोलोद्या को चूम लिया।

"तुमसे तो अस्पताल की बू आती है!" वार्या ने कहा। "तुम्हारे पत्रों के आधार पर तो यह समझा जा सकता है कि अब तुम पूरे डाक्टर हो गये हो, ठीक है न? इस भाव छिपाते हुए मुस्करायी नहीं, जवाब दो।"

"क्या जवाब दू?" वोलोद्या बोला। "मैं नीम-हकीम हू, बस। कम से कम तुम्हे तो मैं अपने से इलाज कराने की सलाह नही दूगा।"

"पर, येव्गेनी तो मानो खुदा बनकर लौटा है!"

वे घाट की ढाल पर चढे। रिमझिम जारी थी, रास्ते के साथ-साथ गदले पानी की धाराए बह रही थी। वार्या लगातार बोलती जा रही थी, वोलोद्या ने उसकी ओर देखा और हैरान होते हुए सोचा—"पहले तो यह इतनी बातूनी नही थी। कही, कोई बात तो नही हो गयी?"

"वहा से बहुत दिनो से पत्र नही आया?" वोलोद्या ने पूछा।

"वहा से? नही!" वार्या ने जवाब दिया। "बिल्कुल नही आया, अर्से से नही आया। तुमने कल का अखबार पढा न? कैसे उन्होने एब्रा को जबरदस्ती पार किया—यह कमाल का ब्रिगेड है। थेल्मान का तोपखाना "

"तुम यह चपर चपर क्या करती जा रही हो?" वोलोद्या ने पूछा।

वह दूसरी ओर मुह किये हुए चल रही थी। वोलोद्या ने कसकर उसका कधा पकडा और उसे अपनी ओर घुमाया। निश्चय ही वह रो रही थी।

"वे घायल हो गये है क्या?" वोलोद्या ने पूछा।

"नही तो," वार्या ने दृढतापूर्वक जवाब दिया। "तुम्हारे पापा घायल नही हुए और मेरे पापा जिंदा है।"

वोलोद्या ने इस अजीब-से वाक्य की ओर कोई ध्यान नही दिया।

"तो फिर रोने की कौन-सी बात है!" वोलोद्या ने कहा। "मेरी गरहाजिरी मे तुम कुछ हाथ से निकल गई हो, बस यही मामला है "

"हा, जरा दिल कमजोर हो गया है," वार्या ने उत्तर दिया।

"दिल कमजोर हो गया है, इस कल की छोकरी का! सुनकर हसी आती है "

फिलहाल वे दोनो वार्या के घर चल दिये। बूआ अग्लाया केवल अगले दिन ही तिशीन्स्की क्षेत्र से लौटनेवाली थी। येव्गेनी मजे से सोफे पर लेटा हुआ था, वह भी अभ्यास करके लौटा था। किन्तु उसका मूड बहुत खराब था।

"भारी मुसीबत मे फस गया हू," वार्या के बाहर जाने पर उसने कहा। "कोई ऐसा आदमी भी नही कि जिससे सलाह ले ली जाय। निरी हिमाकत की बात है। यह सही है कि वैसे वह साथी और नारी के रूप म मुझे पसन्द है, मगर शादी ऐसी चीज है कि जिसमे सोच समझकर कदम उठाना चाहिये। उधर उसके पापा डीन हैं, उनके ज़रा ज़बान हिलाते ही अपनी लुटिया डूब जायगी "

वोलोद्या नाक भौह सिकोडकर उसकी बात सुनता रहा।

"ऐसे मामलो म मै कभी सलाह नही देता," थोडा रुककर उसने जवाब दिया। "वैसे खैर, तुम हो कमीने।"

'और तुम देवता हो। थोडा सब्र करो, मेरा यह रानी बहन जब तुम्हारे जैसे देवता को छोड किसी और के साथ मौज मनायेगी, तब तुम्हारे होश ठिकाने आयेगे। कुदरत तो अपना रग दिखायेगी ही।"

वोलोद्या ने गुस्से म आना चाहा, मगर ऐसा न कर सका। "यह तो वही बात है कि एक लडकी काले बालोवाली हो और दूसरी सुनहरे बालोवाली ' उसने सोचा। "काले बालोवाली को तो उसके काले बालो के लिये दोषी नही ठहराया जा सकता। यही हाल येव्गेनी का है। उसकी निलज्ज और भद्दी स्वार्थ भावना, उसके कमीनेपन और जीवन के प्रति उसके उस गलत दृष्टिकोण का क्या किया जा सकता है, जिसे उसने सदा के लिये अपना लिया है।

छोटी सी गोल मेज़ पर लेक्चरर के रूप म येव्गेनी की कारवाइयो के प्रशसा पत्र इस तरह रखे हुए थे कि सभी की उन पर नज़र पडे। वोलोद्या ने इन भिन्न आकार के मुहरवाले प्रमाण पत्रो को उल्टा-पलटा। उनमे से कुछ कापी म से फाडे गये पृष्ठो पर लिखे गये थे, कुछ लिखे हुए फार्मों के उल्टी तरफ़ और कुछ नोटबुक म से निकाले गये कागज़ो पर। उनम येव्गेनी के व्याख्यानो की बडी तारीफ की गयी थी। उसने केसर की रोक थाम व्यक्तिगत सफाई, अरुणवर्म और बच्चो के व्यायाम, आदि अनेक विषयो पर व्याख्यान दिये थे।

"साथी लेक्चरर द्वारा व्यक्त किये गये आशावादी दृष्टिकोण " वोलोद्या ने एक सम्मति म पढा।

तो हर दिन एक व्याख्यान हुआ?" वोलोद्या ने पूछा।

"अजी, एक ही क्या, कभी-कभी दो भी हुए। सोवियत लोग तो ज्ञान विज्ञान के प्यासे हैं। बिल्कुल थक गया हू, मेरे प्यारे, बिल्कुल कुत्ते की तरह।"

"अस्पताल मे तुम क्या करते थे?"

"ओहो!" यव्गेनी ने बात को स्पष्ट न करते हुए उत्तर दिया। "इसके अलावा तुम यह भी ध्यान म रखना कि मैंने अस्पताल के छोटे कमचारियो को व्याख्यान दिये, वार्डों म बीमारो से बात की और अन्य सावजनिक कत्तव्य पूरे किय "

"यानी तुम लोगो के मनोरजन का सामान जुटाते रहे!"

यह हैरानी की ही बात थी कि येव्गेनी कैसे गुस्से को टाल सकता था और कटु बात को सुना अनसुना कर देता था।

"साहबजादे हो, साहबजादे," उसने केवल इतना ही कहा, "तुम नही जानते, मेरे प्यारे, कि जिन्दगी क्या चीज है।"

वार्या की देख-रेख मे मोटा-तगडा हो गया शारिक अपन पैरा की प्यारी आहट करता हुआ अहाते की ओर से भागा आया। उसके बालो म ताजगी और आखो मे चमक आ गयी थी।

"एन्स!" वार्या ने कहा। "इधर आओ! मरके दिखाओ एन्स!"

भूतपूव शारिक 'मर गया', इसके बाद वार्या का स्लीपर लाया, फिर वह भौका। "अभी बिल्कुल बच्ची ही तो है।" वोलोद्या ने एक बुजुग की भाति कृपा भाव से वार्या की ओर देखते हुए सोचा।

"ओह, मेर दिल की राहत!" वार्या ने शारिक से कहा। "अभी खा जाती हू तुझे!" और सचमुच ही उसन शारिक का कान काटा।

"घर नही, यह तो पागलखाना है!" येव्गेनी ने शिकायत की।

कमर म इधर-उधर टहलते और अपने स्लीपर बजात हुए वह प्रोफेसर ज्ञावत्याक की तारीफ करता रहा। उसन उसे "दयालु बुजुग", "प्यारा बुजुग", "ज्ञानसम्पन्न वृद्ध" और "हमारा बुजुग" कहा। उसकी बातचीत के अन्दाज से यह नतीजा भी निकला कि प्रोफेसर ज्ञावत्याक के प्रति विद्यार्थिया के बुरे रवैये के लिये भी वोलोद्या ही जिम्मेदार है। उसने यह भी कहा कि उसकी उम्र, उसके अतीत और लोगा के प्रति उस बुजुग के नेक और चिन्ताशील हृदय का सम्मान किया जाना चाहिये।

'तुम्हारी उसके साथ कब से घनिष्ठता हो गयी?" वालोद्या ने पूछा।

"हम एक दाम्न के देहाती बंगले में इकट्ठे रहे," यव्गेनी ने उत्तर दिया। "हम मछलियां मारने के लिये एक साथ जाते रहे और, कुलमिलाकर हमारी अच्छी पटी।"

"जारी रखो, जारी रखो अपनी दोस्ती!" वालोद्या ने व्यंग्यपूर्वक हंसकर कहा। "तुम एक ही डाल के पंछी हो।"

"यह बेतुकी बात है!'

"बेतुकी क्या है? देख लेना कि अब वह तुम्हें आसमान पर चढ़ाना शुरू करेगा। ईरा के पिता के लिये ऐसा करना उचित नहीं और थावत्याक को सहारे की जरूरत है। इसके अलावा तुम लोग मीशा शेरवुड को भी अपने साथ खींच लोगे। वह तुम्हारे जैसा नहीं है समझदार है "

यव्गेनी ने खरगोश की भांति हास्यास्पद ढंग से अपनी नाक हिलाई डुलाई और लुभावनी निश्छलता से इस बात के साथ अपनी सहमति प्रकट करते हुए कहा—"तो इसमें बुराई ही क्या है? यह तो बढ़िया ख्याल है। शेरवुड लायक यहां तक कि प्रतिभाशाली लड़का है और झोवन्याक उस पर भरोसा कर सकता है "

दादा मेफोदी बाज़ार से आये और कीमतों तथा इस बात की लम्बी चौड़ी कहानी सुनाने लगे कि बेशक जान दे दो, पर बछड़े की कलेजी कहीं नहीं मिलेगी। गाजरों के जगह जगह ढेर लगे हुए हैं, पर किसे उनकी जरूरत है?

'हम कोई खरगोश हैं क्या? दादा मेफोदी ने बिगड़कर कहा। "अँला भरा पड़ा है उनसे मगर कलेजी कहीं दिखाई भी नहीं दी।"

'प्यारे दादा," यव्गेनी ने कहा। "क्रान्ति से पहले आप किसान थे और तब क्या अक्सर मांस खाते थे? शायद क्रिसमस या ईस्टर के दिन ही न?"

दादा चकरा गये।

"ठीक है न, ठीक है न," येव्गेनी ने उपदेशक की भांति कहा। "ज़ाहिर है कि हमारे यहां त्रुटियां हैं, विशेषत व्यापार के क्षेत्र में,

किन्तु सभी चीज़ा पर कीचड उछाला जाये यह नही चलेगा। इन बाज़ारी बाता म घटियापन, टुटपुजियापन की बू है।"

"पर मैं तो तुम्हारे लिये ही कलेजी ढूढ रहा था, अपने लिये तो नही," मेफोदी ने कहा। *"मेरी बला स। पर वार्या तो हमेशा* बहुत मज़े से कलेजी खाती है।"

"दादा को परेशान मत करा," वार्या न कहा। "उनके पीछे क्या पडे हो?"

और उसने वोलोद्या से शिकायत की–

"कल घर आया है और तभी से सब का अक्ल सिखा रहा है।"

वार्या वोलोद्या की बगल म बैठ गयी, उसका हाथ अपने हाथ म ले लिया और उसकी आखा म झाका।

"बात यह है," वह बोली, "कि आज मा के दादिक का जन्मदिन है। है तो यह बडी अटपटी सी बात, पर यदि हम नही जायेंगे, तो वे बुरा मानेंगे। उन्हाने बहुत पहले से ही हम सूचना द *दी थी। तुम्ह हमारे साथ चलना होगा।"*

"हा, हा, चलो," येव्गेनी न खुशमिज़ाजी से समथन किया। "आओ एकसाथ ही यह यातना सह। खाना पीना तो वहा जैसा हमेशा होता है, वैसा ही घटिया आज भी हागा और ज़ाहिर है कि ऊब भी बेहद महसूस होगी। फिर भी मा तो मा ठहरी। हाथ मुह धोकर कपडे बदला और बस, चले। हम ता जवान लाग है, जिन्दगी के फूल है, इसलिये हम अपनी उपस्थिति से उनके सडे समाज की रौनक बढानी चाहिय "

"तुम्हारा सूटकेस गुसलखाने के करीब बरामदे मे रखा है," वार्या ने कहा।

येव्गेनी ने वोलोद्या के गुसलखाने म जाने के बाद दरवाज़ा कसकर बद कर दिया।

"तुम उससे कुछ नही कहोगी?"

"नही, मैं कह ही नही सकती।"

"तो शायद मैं ऐसा करू?"

'तुम टाग नही अडाओ। पापा के सिवा और कोई भी यह नही कह सकता।"

"पर यदि तुम लगातार आंसू बहाती जाओगी, तो "
'यह तुम्हारी समझ के बाहर की चीज़ है।"
येव्गेनी न कधे झटक दिये।
"पर ख़ैर, उस ज्यादा से ज्यादा वक्त तक यहा रखना चाहिये," यव्गेनी ने सलाह दी। "लागो के बीच दिल हमेशा हल्का रहता है। जहा तक इस तथ्य का सम्बध है कि फासिस्टवाद के विरुद्ध लडते हुए जान दी जाय और सो भी वोलोद्या के पिता के समान वीरतापूर्ण ढग से "
"चुप रहो!"
वोलोद्या न सूटकेस मे से बुढिया डौने द्वारा धोय और रफू किए हुए नीचे पहनन के कपडे, लाख की मुहरोवाला पैकेट, जुर्राबें और टाई, जिसे अभ्यास काल मे पहनने का उसे अवसर ही नहीं मिला था, तथा इतनी बदरग कमीज़ निकाली, जिसे देखकर लौंडीवाले कहते- ऐसी कमीजें जहन्नुम मे जायें। उसने रस्सी स बधी हुई किताबो क पैकेट को उदास नजरो से देखा। चोर्नी यार म उसे एक भी शब्द पढने का मौका नही मिला था।
येव्गेनी बरामदे म आया, उसने पकेट देखा और सीटी बजाने लगा-
"आहो! मै कल्पना कर सकता हू कि इसमे क्या कुछ लिखा होगा। आओ, सावधानी से इसे खोल ले। बाद म कह देना कि मुहरे अपन आप टूट गयी थी। आओ पढ ले, मजा रहेगा!"
"जहा का तहा रख दो " वोलोद्या ने जोर देकर कहा।
"अस्पताल की काफी बू तुम अपन साथ ले आये हो," येव्गेनी ने कहा। "और कोई दूसरी छोटी मोटी चीज़ भी वहा से नही लाये। ख़ैर, मैं तो स्थानीय स्टोर से एक सूट का बढिया कपडा भी मार लाया हू। इसके लिये मैंने एक जुगत लडाई-'शादी मे सफाई' विषय पर खूब मिच मसाला लगाकर एक नि शुल्क भाषण दे दिया। बस, बात बन गयी। हम पाचव वष के विद्यार्थी है, हम ढग से रहना सहना चाहिए "
वालोद्या अपने को वश म करते हुए चुप रहा। उसन येव्गेनी स बहस न करन का पक्का इरादा कर लिया था। यह तो दीवार स सिर मारन के समान ही था

वोलोद्या ने गुसलखाने मे हजामत वनाई और देर तक फव्वारा स्नान का मजा लेता रहा। नहाने का प्यार उसने अपने पिता से विरासत मे पाया था। उसके पिता ने ही उसे स्पज से सावुन का झाग वनाने और फिर फव्वारे की "पतली" तथा इसके वाद "मोटी" धार का उपयोग करने, "मोटे तौर पर" तथा फिर "अन्तिम रूप" मे तन को साफ करने की शिक्षा दी थी। वालो की सफाई की जाच करने के लिये उनमे से तार गुजारना और यह देखना चाहिये कि उनमे से आवाज पैदा होती है या नही। कभी तो वे दोना एकसाथ स्नानघर म जाया करते थे। वहा वे देर तक नहाते थे, भाप-कक्ष की घुटन और गर्मी मे कठिनाई से सास लेते थे, क्वास पीते थे और नहान के इस सारे ऋम को फिर से दोहराते थे। पिता ने तो सम्भवत स्पन मे भी कोई स्नानघर खोज लिया होगा—सगमरमर का वना हुआ, परी-स्तम्भा और छत पर गुलावी फरिश्ता के चित्रोवाला।

"क्या तुम अभी और देर तक नहाओगे?" येव्गेनी ने पूछा।

वार्या ने वोलोद्या की टाई वाधी—ऐसे काम उसे बिल्कुल करने नही आते थे—और व्रश से वाल जमाये। येव्गेनी ने अपने को इत्र स तर किया। वोलोद्या ने वार्या को वरसाती पहनायी।

"हम घर पर खाना नही खायेंगे।" येव्गेनी ने चिल्लाकर कहा।

"मैं आसू नही वहाऊगा," दादा ने रसोईघर से जवाव दिया, जहा वे "ओगोन्योक" पत्रिका के पन्ने उलट-पलट रहे थे। उन्ह चित्र दखना वहुत पसन्द था। "देखेंगे, वहा तुम क्या खाओगे। उनकी वावर्चिन पान्का मुझे वाजार मे मिली थी। कह रही थी कि पैसे तो गिने गिनाये दिये है, मगर पूरी रजिमेन्ट का खाना वनाने का कहा है।"

ईरा और वोलोद्या से अपरिचित कुछ रगी-चुनी महिलाए वालन्तीना आद्रेयेव्ना के ठण्डे और नम वरामदे मे पहले से ही मौजूद थी। ईरा मेजपोश पर वलूत और मेंपल के पीले पत्ते रख रही थी। प्रत्यक तश्तरी और प्रत्येक जाम के नीचे ऐसा "जिन्दा" नेप्किन होना चाहिय था।

"अरे, देहाती डाक्टर आ गया," वालेन्तीना आन्द्रेयव्ना न कहा और चूमने के लिये अपना हाथ वोलोद्या की तरफ वढाया। किन्तु वोलाद्या ने उसे चूमा नही, केवल तपाक स हाथ मिलाया।

"वहा वहा कैसा हालचाल रहा? बस, बीमारो का इलाज ही करते रहे?'

'हा, इलाज ही करता रहा," वोलोद्या ने मरी सी आवाज मे जवाब दिया।

दोदिक घर पर नही था, मोटरसाइकलो की प्रतियोगिता का सचालन कर रहा था। आगन मे जजीर से बधा हुआ उसका शिकारी कुत्ता भौक रहा था। वालन्तीना आन्द्रेयेव्ना की सहेली ल्युसी मिखाइलोव्ना अपनी भौहो को बेहद ऊपर चढाकर कह रही थी-

आह मेरी प्यारी मुझसे बहस नही करो। समय से पहले नमूदार होनेवाली झुरिया हमारी अपने प्रति की जानेवाली लापरवाही का नतीजा होती हैं। मिसाल के तौर पर, हसी को ले लीजिये। देखिये तो, मैं कैसे हसती हू। मैं मुह को गोल कर लेती हू और 'हू हू हू' की आवाज निकालती हू," ल्युसी मिखाइलोव्ना ने हसकर दिखाया। "हसने की क्रिया हो गयी, मगर मास-पेशिया कमजोर नही हुइ '

वोलोद्या आखे फाड-फाडकर ल्युसी मिखाइलोव्ना की तरफ देख रहा था। वार्या ने उसकी बगल मे हल्के से कोहनी मारी। येव्गेनी बरामदे मे इधर उधर आता-जाता हुआ सिगरेट पी रहा था और खीचता हुआ धीरे-धीरे ईरा से उलझ रहा था। छोटा मोटा और बहुआ मोकावेयेव्स्की सदा की भाति रगी चुनी महिलाओ को चुटकुले सुना रहा था और खुद ही पहले से हस देता था।

एक और दम्पति भी आये, जिन्हे वोलोद्या नही जानता था। पति का चेहरा बबर जैसा था। पत्नी अपनी रेशमी पोशाक को इतने जोर से सरसराती थी कि ऐसा प्रतीत होता था मानो वह लगातार झल्लाकर कुछ फुसफुसा रही हो।

'ये कौन है?" वोलोद्या ने जानना चाहा।

"शहर का प्रमुख दर्जिन है" वार्या ने बताया। 'पुराने ढग से उसे 'मदाम लीस' कहते हैं। साथ मे उसका पति है, जिसे वह पार्टियो-दावतो मे अपने साथ ले जाता है।"

'विज्ञान यह प्रमाणित कर चुका है ' पीली त्वचा और झुरियोवाली ल्युसी मिखाइलोव्ना ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा "कि वक्त से पहले नमूदार होनेवाली झुरिया सोते समय सिर के बेहरवाले भाग

के गलत स्थिति मे रहने का भी नतीजा होती है। अगर हम सोते समय भी अपना ध्यान रखें, तो वक्त से पहले नमूदार होनेवाली झुरिया स बच सकते हैं।"

उसने देखा कि वोलोद्या उसे टकटकी बाधकर देख रहा है। वह 'मुह को गोल' करके मुस्करा दी–

"ठीक है न, नौजवान डाक्टर?"

"मालूम नही, हमने यह विषय पढा नही," वोलोद्या ने गुस्ताखी से जवाब दिया। "वैसे यह तो बताइय कि सोते समय आदमी अपना ध्यान कैसे रख सकता है?"

"हू-हू-हू!" ल्युसी मिखाइलोव्ना ज़ोर स हस दी। "ऐसा करना तो बिल्कुल मुमकिन है। वैसे साथियो, मुझे यह कहना होगा कि हम खुद मालिश करने की तरफ, दूसरे शब्दो मे, उस तरीके की तरफ बहुत कम ध्यान देते हैं, जिससे त्वचा की सिकुडना, झुरिया और उसकी थलथलाहट को थपथपाकर दूर किया जा सकता है।"

"मुझे तो अभी मतली हो जायगी," वार्या ने फुसफुसाकर वोलोद्या से कहा। "इस थपथपाहट की वह कस भयानक ढग से चर्चा कर रही है "

मगर ल्युसी मिखाइलोव्ना को अब कौन चुप करा सकता था।

"खुद मालिश करना–मेरा सबस अधिक मनपसन्द विषय, मेरा आदि अन्त, मेरा नवीनतम प्यार है," वह कहती गई। "हा तो, दायें हाथ से दायी तरफ की ओर बायें हाथ से बायी तरफ की सिकुडना को थपथपाइये। आखो के नीचे की थलथलाहट को उगलियो के सिरो स थपथपाना चाहिये। जहा तक जबडे के नीचे की झुरियो और लटकी हुई त्वचा का सम्बध है, तो उन्हे दूर करने के लिये उगलियो की उल्टी तरफ से थपथपाना चाहिये "

बावर्चिन शीशे के बहुत ही सुदर बडे प्याला मे ढेर सारी सलाद लाई–आलुओ, गाजरो, चुकदरो, हरे पत्तो और प्याजो की सलाद। नाटे, वेहया माकावेयेन्को ने सलाद को सूघते हुए वेशर्मी स कहा–

"नवदम्पतियो के यहा सदा सब्जिया ही होती हैं। हरा चारा! लाभदायक भी, सस्ता भी और अपनी पसन्द के मुताबिक़ भी। मगर मैंने तो पहले से ही कह दिया था कि मुझे मास पसद है!"

ादिग मोटर मे घर आया और उसने भीतर की ओर कुत्ते का निशानवाला ग्रामोफोन चालू किया।

गध उगलिया स आती लागान की
करुणा दुख की छाया, आघा म सानी
नही जरूरत कोई भी अब तुमको होती

यह रिकाड बज उठा।

"सुनिये तो," येव्गेनी ने धीरे-से दोदिक को कहा। "यह तो वडी भद्दी बात है कि आप हमारे यहा से ग्रामोफोन उठा लाये। मैं अभ्यास के लिये गया हुआ था और आप दादा के सिर पर जा सवार हुए।

"अब चैन भी लेने दो, सगदिल आदमी!" दोदिक ने कहा।

दोदिक खूब वढिया दाढी वनाये, पाउडर लगाये और मुह म मीधी अग्रेजी पाइप दवाये हुए था और उसकी ठोडी पर गुल पड रहा था। वह इतना साफ-सुथरा और लक दक था कि दिमाग म वरवस उसके अन्तर्राष्ट्रीय चोर होने का ख्याल आता था।

उन्होने वोद्का, मदिरा, पोटवाइन, वीयर और लिकर पी। वालेन्तीना आद्रेयेव्ना न उगलियो के सिरो से कनपटिया को दवाते हुए येव्गेनी से कहा—

"क्या विज्ञान मामूली सिरदद को भी दूर नही कर सकता? तीन दिन से यातना सह रही हू। तीन दिन से!"

बैरिस्टर की वीवी, श्रीमती गोगालवा भी हमेशा सिरदद की शिकायत किया करती थी और कनपटिया का दबाती रहती थी।

"मा, वोद्का पियो,' यव्गेनी ने कहा। "रक्त वाहिनिया खुल जायेगी और सिर का दद भाग निकलेगा।"

"सच?" वालेन्तीना आद्रयव्ना न आखे गोल करते हुए पूछा।

उसने वोद्का, बीयर और मदिरा भी पी।

"अजी नही, नही, यह आप क्या कह रहे है," मज के दूसर सिर पर ल्युसी मिखाइलाव्ना कह रही थी। खुश्क और चिपकी त्वचा की देखभाल अलग अलग ढग से की जानी चाहिये। यह जानना तो

पहली वात है। यह तो ऐसा ही फूहडपन है जसे कि मुहासे निकल ग्रान पर नीमो ग्रौर प्रलपा का उपयोग किया जाये।"

"वोलोद्या, ग्राखें फाड फाडकर देखना व द करो!" वार्या ने धीरे-से ग्रनुरोध किया। "तुम सुनो ही नही। किसी चीज की ग्रोर ध्यान ही मत दो।"

"मैं ध्यान दे ही नही रहा हू," वोलोद्या ने जवाव दिया।

"नही, ध्यान दे रहे हो!" वार्या न चिल्लाकर कहा। "वेहतर यही है कि कुछ वोदका ग्रौर पी लो!"

"यह वडी वेतुकी वात है," वोतला ग्रौर गुलदस्ता से घिरा ग्रौर मेज के वीचावीच वैठा हुग्रा दोदिक कह रहा था। "विल्कुल वेतुकी वात है। मोटरसाइकिल की दौड मे भाग लेनेवाला वरसात के मौसम म नियम का पालन किये विना रह ही नही सकता "

"हुर्रा!" वेहया माकावेयेको चिल्ला उठा। "लगता है कि मुझे सलाद मे मास का छोटा टुकडा मिल गया है। ग्ररे हा, मदाम लीस के खूव मजे है। उसके लिये ता ग्रलग से खास चीजे ग्रा रही ह। चूजे की सलाद परोसी गयी है। मेहमाननवाज नवदम्पति जिदावाद!"

मदाम लीस ने मजाक म माकावेयेको के हाथ पर हल्की चपत लगायी ग्रौर ववरमुह श्रीमान लीस ने चिपचिपी लिकर से ग्रपना गिलास भर लिया।

"मदाम लीस, क्या यह सच है कि वोलेरो का फैंशन फिर से चालू हो गया है?" ईरा ने पूछा।

"विटिया, मैं ऐसी वात सिफ ग्रपनी दुकान पर ही करती हू।"

"वहुत खूव, वहुत खूव!" वालेन्तीना ग्राद्रेयेव्ना न ताली वजाकर कहा। "दुकान की वात दुकान पर ही हानी चाहिये। इस वक्त हम पी पिला रहे हैं। ग्राज हमारा पव है! पारिवारिक पव!"

वालेन्तीना ग्राद्रेयेव्ना वहुत खुश थी। शराव उसे चढ गयी थी ग्रौर उस ग्रपनी पार्टी वरिस्टर गोगालेव की पार्टी जैसी ही प्रतीत हो रही थी। भल लोग पास म वैठे हुए खा पी रह थे। काई भी जहाजा, तापा, फौजी चाला ग्रौर उडान के घण्टा की चर्चा नही कर रहा था, काई भी फटी-सी ग्रावाज म वुद्योन्नी के रिसाले के वार म गीत नही गा रहा था।

वाद म वार्वचिन सभी के लिय मास वा शारवा और एक-एक क्चौडी लायी। इसके वाद उसन हर मटरा के साथ कटलेट परास और इसके वाद वहुत वडे-वडे, वेहद श्रीमवाल, अटपटे ढग स सजाय गय केक लाकर मेज पर रखे।

"यह माकावेयन्का लाया है," वार्या ने फुसफुसाकर वालाद्या स कहा। "वही तो केक-पेस्ट्रिया के विभाग का मुखिया है। मा का कहना है कि जल्दी ही उस जेल की हवा खानी हागी – वहुत ज्यादा चारी करता है वह।"

खाना अभी खत्म नही हुआ था कि वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना की तवियत खराब हा गयी। येव्गेनी और ईरा गायव हो गय। वार्या और वोलोद्या वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना का उसके सोनवाल कमरे म ल गये, जहा गमलो म नागफनी के पौधे रखे थे और दीवार पर नागफनी का चित्र लटका हुआ था।

दोदिक ने पत्नी को जाते देखा, एडी पर पाइप मारकर उसकी राख गिरायी और माकावेयेको से वोला –

"जिसने व्याह किया, वह दीन-दुनिया से गया। पारिवारिक जीवन के यही मज़े हैं। कही जा भी तो नही सकता, क्योकि वह शोर मचाने लगेगी कि मैं वीमार हू और यह मौज मनाता फिरता है "

'आओ पिये!" माकावेयेको ने सुझाव दिया।

"आओ!" दोदिक राजी हो गया।

ल्युसी मिखाइलोव्ना और एक अन्य प्रौढा, जिसका नाम वेवा था, इनके साथ वैठ गयी। वेवा के वाल कटे और सुनहरे रग स रगे और मेमने के वालो की तरह घुघराले वनाये हुए थे। उसके गुलाबी कध उघाडे थे।

"हा, ता वुढिया," वेहया माकावयेको न कहा। "हम त्वचा की पिलपिलाहट से मोर्चा लेगे न? मैंने सुना है कि पचास वप की उम्र के बाद रई के आटे का लेप वहुत लाभदायक रहता है। लप किया और वस वात वन गयी!"

"आप जेटलमेन नही है!' वेवा न चिल्लाकर कहा। "दयालु होना चाहिये "

"मैं जेंटलमेन हाने का दावा भी नही करता हू," माकावेयेको न सूचना दी। "मेरी प्यारी, मैं व्यापार के क्षेत्र मे काम करता हू और वहा जगल के कानून का वालवाला है।"

उसने वेवा के उघाडे कधे को हल्के-से काटा।

"हुम-हुम। डर गयी न?"

दादिक न ग्रामाफोन पर रेकाड चढाया और वेवा की जवान वहन कूका का नाचन के लिये आमन्त्रित किया। माकावेयन्का ने वेवा का नाच की सगिनी वनाया। वेहद रस भीगी, यहा तक कि चिकनी-चुपडी वाता मे गीत गूज रहा था—

वडे स्नहे से थके सूय न
जव सागर को विदा कहा,
उसी घडी, यह माना तुमने
प्रेम हमारा नही रहा।

वालाद्या दोदिक के कमरे म वैठा था और खीझता हुआ उसकी किताबें उलट-पलट रहा था। वगलवाले कमरे म वालेन्तीना आद्रेयेव्ना अपने पलग पर फैली हुई थी और वार्या का हाथ थाम हुए अपना दुखडा रा रही थी—

"वेटी, तुम तो कल्पना भी नही कर सकती कि उसके साथ निवाह करना कितना मुश्किल है। वह यह माग करता है कि मेरी अपनी दिलचस्पिया होनी चाहिये और उसन मुझ पर उन्ह माना लाद ही दिया। वह तो वडा हठी है—तुमन देखा न कि उसकी नीचेवाला जवडा कितना लम्वा है। उसने मुझे कढाई और सिलाई के कास म दाखिल हाने को मजवूर कर दिया। सवाल मेरी दिलचस्पियो का ही नही, पसे का है। वह तो धुन का पक्का है—वह चाहता है कि मैं हमेशा सभी तरह की सुख-सुविधाओं से घिरी रहू, वह मेरी जिन्दगी का वेहद रगीन वनाना चाहता है। वह मुझस कहता है, 'मेरी नन्ही', उसे मुझे 'मेरी नन्ही', 'मरी रोशनी' या 'वेवी' कहना पसन्द है। वह कहता है—'तुम्हारी पसन्द वहुत वढिया है, तुम शहर की सबसे वढिया दर्जिन वन सकती हो। इस अथ म नही कि म खुद सिलाई करूगी, नही, वल्कि यह कि मैं हिदायत दिया करूगी मिसाल के

तौर पर, हमारे लूज़-फिट फ्राका को ले लो—कैस भयानक हाते है वे। लाइन तो होती ही नही। जाघा का माप लेना तो जानत ही नही। और वगला के नीचे की चुनट कैसी बुरी होती है। मैं और बबा मदाम लीस की शागिर्दी कर रही है "

"वार्या!" वगल के कमरे स वोलोद्या की उदासी भरी आवाज सुनाई दी।

"अभी आती हू!" वार्या ने जवाव दिया।

"वोलोद्या ही हे न?" वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने पूछा।

वार्या ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"कुछ अजीव किस्म का आदमी है यह," वालेन्तीना आन्द्रेयेव्ना ने वहा। "वुत बना-सा वैठा रहता है, जरा भी आकपण नही है उसमे। पुरुप म आकषण ही तो सव कुछ होता है। आजकल मैं दोस्तोयेव्स्की पढ रही हू। प्रिस मीश्किन वुढ्ढा है, मगर कितना आकपण है उसमे "

"मा, जो कुछ समझती नही हो, उसकी चर्चा मत करो," वार्या न दुख भरे लहजे म अनुराध किया।

"क्या मतलव तुम्हारा?"

"म तुमसे प्राथना करती हू कि तुम मीश्किन की चर्चा नही करा।"

"लडकी, तुम मेरे साथ गुस्ताखी कर रही हो, अपनी मा के साथ गुस्ताखी से पेश आ रही हा "

"तुम मीश्किन की चर्चा नही करो, यह जुरत नहा करो!" वार्या न चिल्लाकर कहा। और झटपट कमरे स वाहर चली गयी।

"वार्या!" उस पीछे से सुनाई दिया। "यह पाजीपन है, वार्या!"

"आम्मा चल!" वार्या न फुसफुसाकर वालाद्या स वहा।

मदाम लीस का पति नशे म चूर हाकर अपन ववर चेहर क नाव याता स ढके हुए वडे-वडे पजे रखकर सा रहा था। मदाम लास दादिक के साथ नाच रही थी। रस भोगी आवाज म थके-थकाये सूरज का गीत अव भी चल रहा था। दादिक का सफेद कुत्ता, जा अभी तक ऐस जावन का अभ्यस्त नहा हुआ था, अपनी जजीर तुडान की कोशिश करता था और गीत की लय के साथ-साथ भौंकता था। मज

के सिरे पर बैठा हुआ माकावेयेन्को वेवा की बहन कूका को सम्बोधित कर भाषण दे रहा था—

"ज़िन्दगी का सार इसी मे है कि उससे अधिकतम लाभ उठाया जाये, अपनी इच्छाओ को एक मिनट, एक सेकण्ड के लिये भी न टाला जाये। जैसा कि ओदेस्सा मे कहते है, आप सभी इस बात पर कान दें! मैं भौतिकवादी हू और मृत्यु के बाद स्वर्ग सुख म विश्वास नही रखता। ऐ नौजवान! इधर आओ!" वोलोद्या का देखकर उसने पुकारा। "जल्दी से इधर आओ! भागकर आओ! मैं देख रहा हू कि तुम मेरे साथ सहमत नही हो। प्यारी कूका, वह मेरे साथ सहमत नही है न? तो क्या हुआ? मैं ज़िन्दगी से वह कुछ हासिल करता हू, जो चाहता हू, क्योकि मैं औरो की तरह आदर्शवादी नही हू "

"आओ चल, वोलोद्या!" वार्या ने कहा।

"तुम मुझे यहा लायी ही क्या थी?" वोलोद्या न पूछा।

पिता जी नही रहे!

पानी अब भी बरस रहा था।

वे दोनो एक-दूसरे का हाथ थामे हुए सिनेमा देखने गये। फिल्म शुरू होने के पहले स्पेन-सम्बन्धी घटनाचित्र दिखाया गया। थेलमान की बटालियन के सैनिक "कर्मान्योला" गीत गा रहे थे, विद्रोहिया के टैंक हारम की ओर बढ रहे थे, ए० ए० तोपें तडातड गोले बरसा रही थी और स्वयसेवक सेगाविया पुल के क्षेत्र म आते दिखाई दे रहे थे। बडे-बडे काले "जुकर" सुन्दर मद्रिड पर ढेरो बम गिरा रहे थे।

"आखिर अब तो रोना बन्द करो!" वोलोद्या ने झल्लाकर कहा।

"मैं नही कर सकती, नही कर सकती, नही कर सकती!" वार्या ने सिसकते हुए जवाब दिया।

उन्होंने फिल्म अन्त तक नही देखी। उसम शुरू म ही सब कुछ बहुत सीधा-सपाट और प्यारा-प्यारा था। सगीत भी "थर्ब-थर्राय सूरज" की याद ताजा करता था और मुख्य नायक भी दोदिक स मिलता-जुलता था—उसके भी मुह म पाइप थी और ठोडी पर गुल। हा, उसका नाम दोदिक नही था और उसे साथी निर्माण-सचालक कहकर सम्बोधित किया जाता था।

"अचानक ही सब कुछ बहुत मुश्किल हो गया है!" वार्या ने शिकायत की।

"वह क्या?" वालाद्या को हैरानी हुई।

वार्या ने जोर से उसका हाथ दबाया।

घर पहुंचने पर उन्होंने घने शेडवाले छोटे-से लैम्प की मद्धिम रोशनी में येव्गेनी और ईरा को सोफे पर बैठे पाया। वे किसी कारणवश खिन्न दिखाई दे रहे थे।

"तुम लोग हमें बधाई दे सकते हो," येव्गेनी ने व्यंग्यपूर्वक कहा (इराईदा की उपस्थिति में अब वह हमेशा व्यंग्यपूर्वक ही बात करता था), "हम बधाई स्वीकार करने को तैयार हैं।"

"किस बात की?" वार्या ने पूछा।

"इस बात की कि हमने अपने सम्बन्धों को कानूनी शादी की शक्ल देने का फैसला कर लिया है।"

"हां," अपनी जंजीरों और भूषणों को छनछनाते हुए ईरा ने पुष्टि की। "नौकरशाहों की भाषा में अनुकूल निर्णय किया गया है।"

वह बुझे-से ढंग से हंस दी।

"इससे पहले कि देर हो जाये," कमरे में टहलते हुए येव्गेनी ने कहा, "हम तुम्हारे लिये भी ऐसी ही कामना करते हैं। ऐसे ज्यादा अच्छा रहता है।"

"क्या कहना चाहते हो, तुम?" बात समझ में न आने पर वार्या ने पूछा।

"मैं यह कहना चाहता हूं, मेरी प्यारी बहन, कि शादी के मामले में मैं पसन्द की आजादी का समर्थक हूं, न कि सामाजिक मजबूरी का। हम मजबूरी की अवस्था तक पहुंच गये हैं।"

"गधा," वार्या ने कहा, "उल्लू, जानवर, कमीना, घटिया!"

"गालियां मत दो," येव्गेनी ने अनुरोध किया। "तुम्हारे लिये लानत मलामत करना बहुत आसान है, मगर तुम यह अनुमान नहीं लगा सकती कि मेरी और ईरा के दिल की क्या हालत है? यही ज्यादा अच्छा रहेगा कि मां का हाल चाल सुनाओ। क्या यह सच है कि वह महान दर्जिन बनने जा रही है?"

वार्या का उत्तर सुनकर उसने कहा—

"वैसे तो अच्छे दर्जी काफी पैसे कमाते हैं। हम उसके साथ नही रहते, इसलिये अगर टैक्स इन्सपेक्टर उसे रंगे हाथो भी आ पकडे, तो भी हमारी बला से! मगर जाती तौर पर मैं तो इस मामले मे दो चार पैसो पर हाथ मार ही लूगा।"

"हे भगवान!" वार्या कह उठी। "जिन्दगी मे कभी इतना साफ और शीशे की तरह चमकता हुआ नीच नही देखा।"

"मैं नीच किसलिये हू?" येव्गेनी ने सच्ची हैरानी जाहिर करते हुए पूछा। "क्या मैं बच्चे खाता हू? सभी के साथ मेरे बहुत अच्छे सम्बन्ध है, कोई मेरा शत्रु नहीं है, पर अपने बारे मे तो मुझे सोचना चाहिये न? या तेरा वालोद्या मेरी चिन्ता करेगा? या शायद तुम अपने शादीशुदा भाई की आर्थिक सहायता करोगी? या फिर पिता ही कोई मोटी रक़म दे देंगे? चलो मान लो कि मेरी होनेवाली बीवी के बाप, साथी डीन, कुछ रक़म दे देंगे। मगर वह भी बहुत नही होगी। मेरा वजीफ़ा, ईरा का वजीफा—यह सही है। मगर बच्चा? धाय, पलग, पोतडे और ढेरो दूसरी चीजे? फिर यह भी मत भूलो कि सिर्फ एक बरस ही तो यह समस्या नही है। हम दोनो यहा बैठकर यही सारा हिसाब किताब जोड रहे है। सस्थान की पढाई खत्म होते ही मुझे क्या मिलेगा? यानी नकद रूबलो की शक्ल मे?"

येव्गेनी ने कोट उतारकर कुर्सी की टेक के साथ टाग दिया, हिसाब किताबवाला काग़ज अपने नजदीक खिसकाकर यह प्रश्न किया—

"तो शुरू मे हमारे पास क्या होगा?"

"मैं जाता हू, वार्या!" वालोद्या ने उठते हुए कहा।

"जाओ!" वार्या ने थकी हुई आवाज मे जवाब दिया।

ओह, कितना यातनापूर्ण, उलझन भरा और लम्बा रहा था आज का दिन! और अब, इस सारी परेशानी के बाद उसने वालोद्या की आखो मे भर्त्सना की झलक देखी, वह अपराधी ही मानी गयी। यह वालोद्या, यह निर्दयी कभी वार्या की सहायता नही करता था। वह तो घृणा भाव दिखाते और मानो यह कहते हुए अपनी जान छुडा लेता था— मुझे परेशान न करो, मुझे कुछ नहीं लेना-देना तुम्हारे इन झझटो से, मेरा कोई सरोकार नही है तुम्हारी इस बकवास से।"

वार्या की तरफ देखे विना ही वालोद्या ने अपनी वरसाती पहनी और सूटकेस तथा किताबा का वडल उठा लिया। वडी हैरानी की वात है कि वह मुडकर देखे विना कैसे रह गया। वात यह है कि एक वार उसे देख लेने को तो उसका भी मन हुआ हागा, उसने भी महसूस किया हागा कि इस समय वाया कितनी दुखी है, एकाकीपन अनुभव कर रही है। फिर भी वह सिर तक झुकाय विना दरवाजा वद करके चला गया। हमेशा वह अपन तक ही सीमित रहा है, यह आदमा। जाहिर है कि अब बहुत दिनो तक वह यहा अपनी सूरत नही दिखायेगा

पौ फटने पर अग्लाया घर आ गयी—ऊचे बूट और पेटीवाला तिरपाल की वरसाती पहने तथा रूमाल वाधे हुए। वोलाद्या को लगा कि वार्या की भाति वह भी कुछ जानती है और उससे छिपाती है। इन डेढ महीनो मे बूआ कमजार हो गयी थी, उसके अभी तक अरण हाठा के सिरा पर मानो कटु सिकुडने उभर आयी थी, आखा म दुख की झलक थी और उसे एक नयी आदत हो गयी थी—मेज पर चीजा को लगातार इधर उधर रखती रहती थी। कभी वह दियासलाई की डिबिया उठाकर दूसरी जगह रख देती, ता कभी चमचा, तो कभी नमकदानी और कभी उठकर दीवार पर फोटो ठीक करने लगती। मगर उसका रूप और भी निखर आया था। हैरानी की बात थी कि मद उसके रूप पर लटटू नही थे।

"आप कितनी वेचैन रहती है, बूआ!" वोलोद्या न कहा। "घडी भर को भी टिककर नही वठती। शायद इसीलिय कि आप वडी अफसर है।"

"हटाओ भी!' उसने अन्यमनस्कता से जवाव दिया।

"और पहले से कही अधिक निखर गयी है। बहुत ही सुदर हैं आप!"

"किस जरूरत है मरी इस सुदरता की? फजूल की वात करने क वजाय मुझे वागास्लाव्स्की, अस्पताल और अय सभी चीजा के वारे मे वताओ। ऑपरेशन किय?"

वालाद्या न जल्दी-जल्दी सभी कुछ सुनाना शुरू किया, मगर वीच म ही रुक गया—बूआ सुन नही रही थी।

"क्या वात है? वालाद्या न पूछा।

"कोई बात नही, तुम कहते जाओ। मैं जरा थक गयी हू।"

"आदमी पागल हो सकता है," वालोद्या ने झल्लाकर कहा। "वार्या कहती है कि उसका दिल कमजोर हा गया है, आप थक गयी हैं, आप सभी कुछ अजीब-से हो गय हैं "

मगर बूआ ने यह भी नही सुना। वोलोद्या की उपस्थिति म ही वह अपने विचारो म डूबी हुई थी मानो वालोद्या कमरे मे ही न हो। उसके मूक हाठ हिल-डुल रहे थे। अब सारी बात उसकी समझ म आ गयी, मगर दर तक पूछने की हिम्मत न हुई—इतनी भयानक बात थी वह। आखिर फक चेहरे के साथ उसन पूछा—

"पिता जी नही रह?"

अग्लाया ने चुपचाप सिर हिला दिया।

"मार डाल गय?" वोलाद्या न चिल्लाकर पूछा।

"हा, वे नही रहे!" बूआ ने समस्वर म धीरे से कहा। "मैड्रिड के ऊपर हवाई लडाई म उनके हवाई जहाज म आग लग गयी।"

"और वे मर गये—पिता जी?"

"हा, वोलोद्या, तुम्हारे पिता जी नही रहे।"

"वे जल गये?"

"मालूम नही, वालोद्या, मगर अफानासी चल बसे और उन्ह दफ्ना दिया गया।"

"यह बिल्कुल सही है? बिल्कुल?" मज पर से बूआ की ओर झुकते हुए वोलोद्या ने फुसफुसाकर पूछा। "यह बिल्कुल सच है?"

बूआ के मौन हाठा ने उत्तर दिया "हा"। उसके गाला पर अश्रुधारा वही चली आ रही थी, उसन उस रोका भी नही। वालोद्या बुत बना खडा था। आज ही उसने पिता की कल्पना की थी कि वे कैसे परी-स्तम्भो और पखावाले फरिश्ता के चित्रा से सुसज्जित गुसलखाना ढूढ रहे होगे। किंतु उस समय पिता मौत की गाद म सो रहे थे। स्पन के बारे म वह खबरे भी उस वक्त पढ़ रहा था, जब पिता जी की सास पूरी हो चुकी थी।

"उन्ह कहा दफनाया गया? वही, स्पेन मे?"

"उनकी स्वतन्त्रता के लिय उन्हाने जान दी। उन्हान उस दफना दिया," अग्लाया न धीरे-से उत्तर दिया। "समझते हो न कि वे "

वह अपनी तापिश के बावजूद और कुछ न कह सका। वह वक्ष पर डाली हुई ऊनी शाल के छोर को काटता और लगातार सिर झटकती रही कि रुलाई रुक जाय, मगर आंसू उसके गालों पर बहते ही रहे। फिर उसे सांस लेने में तकलीफ होने लगी। तब वालोद्या ने झटपट स्पिरिट का लैम्प जलाया, पिचकारी उबाली और अग्लाया को कपूर की सुई लगायी।

"अब तुम्हें भी " अग्लाया ने कुछ कहना चाहा, मगर बात पूरी न कर सकी। उसने कहना चाहा कि वालोद्या को भी अफ़ानासी पत्रोविच के समान बनना चाहिये, किन्तु स्वयं ही समझ गयी कि वालोद्या से कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है, कि वह वयस्क है और खुद ही सब कुछ समझता है। उसने केवल "प्यारे वालोद्या" कहा और उसकी छाती पर अपना गाल रख दिया।

इन कठिन क्षणों में वालोद्या अपनी बूआ से कहीं अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। उसने बूआ के काले बालों को सहलाया, चुप रहा और उजली होती हुई खिड़की की ओर देखता रहा। इस नम, धुंधली और भयानक सुबह को उनके बीच और कोई बातचीत नहीं हुई। फालतू शब्दों से एक-दूसरे को यातना देने में तुक ही क्या थी।

"तुम जा रहे हो?" जब पिछली रात को लगाया गया घड़ी का अलार्म बजा और वोलोद्या जाने की तयारी करने लगा तो बूआ ने पूछा।

"हां, कालेज जा रहा हूं।" बूआ की तरफ मुड़े बिना ही वोलोद्या ने जवाब दिया।

शायद दुनिया में बूआ ही एक ऐसा व्यक्ति थी, जिसे यह स्पष्ट करने की जरूरत नहीं थी कि वह कालेज क्या जा रहा है। वह तो खुद ही सब कुछ समझती थी। वह समझती थी कि आज से वालोद्या की ज़िन्दगी पहले जैसी नहीं रहेगी, दूसरी ही हो जायेगी। बाहरी तौर पर उसमें कोई तब्दीली नहीं होगी, मगर वास्तव में, गहराई में, वह बिल्कुल दूसरी ही हो जायगी। उसे अपने पिता की भांति ध्येय को आगे बढ़ाना होगा। इन दिनों में अग्लाया ने अनेक बार अपने आपसे फुसफुसाकर कहा—'उसे अपने पिता की भांति ध्येय को आगे

बढाना होगा।' खार्कोव के उक्रइनी गाडीवान का बेटा, हवाबाज़ अफानासी उस्तिमेको स्पेनी लोगो की स्वतन्त्रता के लिये इस तरह अपनी जान नही होम सकते थे कि उनका काम अधूरा ही रह जाये। वह अब रो नही रही थी, वह वोलोद्या का तैयार होते देख रही थी। शायद, खुद उसे भी जाना चाहिये। वे दोनो एकसाथ ही घर से बाहर निकले। वे दोनो उस साझे दुख का बोझ अपने दिल पर लिये हुए थे, जिसकी अभी चर्चा करना भी सम्भव नही था।

"मेरे पिता का देहान्त हो गया!" किसी के पूछने पर वोलोद्या को केवल यही उत्तर देना चाहिये।

देहान्त हो गया। बस, देहान्त हो गया! लोग बीमार होकर मरते ही तो है। कभी कोई व्यक्ति था, फिर उसने चारपाई पकडी और चल बसा, *सगे-सम्बंधियो तथा यार दोस्तो न उसकी याद म आसू* बहाये।

कठोर और सन्तापक

"कहो, बूढे बाबा, कैसे चल रही है जवान जिन्दगी?" कालज के बरामदे म येव्गेनी ने वोलोद्या से पूछा और सहानुभूति से उसकी तरफ देखा।

वोलोद्या न कोई उत्तर नही दिया। वह येव्गेनी के गोल मटोल, सौजन्यपूर्ण और लाल गुलाबी चेहरे का ध्यान से देखता रहा, मानो इस व्यक्ति को समझने की कोशिश कर रहा हो। पिछले दिन यह जानते हुए भी कि वोलोद्या के पिता वीरगति को प्राप्त हो गये हैं, येव्गेनी उस रकम का हिसाब किताब जोड रहा था, जो नवदम्पत्ति को उपलब्ध होगी।

"ऐसे घूर क्या रहे हो?" येव्गेनी ने पूछा।

पीच न बहुत स्नेह से वोलोद्या से हाथ मिलाया। सम्भवत येव्गेनी ने सभी सहपाठियो को वोलोद्या के पिता की मृत्यु के बारे म बता दिया था। कारण कि प्रत्येक एक विशेष ढग से वोलोद्या की ओर देखता था। हर किसी न वोलोद्या का तसल्ली देनेवाले कुछ न कुछ खास शब्द कहने की कोशिश की। हा, केवल पीच ने ऐसा नही किया।

वह अभ्यास की चर्चा करता रहा। उसने बताया कि मैं खुशकिस्मत रहा। मैंने एक छोटे-से, मगर सुव्यवस्थित अस्पताल में अभ्यास किया। इतना ही नहीं, उसने तो कुछ हँसानेवाली बात भी सुनायी और वालाद्या मुस्करा दिया। वालाद्या का न तो चेहरा ही जर्द था, न वह खोया खोया था, न मातमी सूरत ही बनाये था, जैसा कि वीरगति को प्राप्त हुए पिता के बेटे का होना चाहिए था। सहपाठिनी आल्ला शेशनेवा ने अपनी सहेलियों से इसी बात की चर्चा भी की।

"वैसे वह कोई खास भावुक किस्म का व्यक्ति नहीं है," न्यूस्या ने राय जाहिर की। यह वही लड़की थी, जिसे गानिचेव ने कभी यह सलाह दी थी कि तुम डाक्टरी की पढ़ाई छोड़कर शार्टहैंड सीखने लगो। "उसमें एक खास किस्म की कठोरता है"

'अपने आपको खुदा समझता है," रंगे चुने होंठों को टेढ़ा-मेढ़ा करते हुए स्वेत्लाना सामोखिना ने कहा। "अभी तो आगे देखना कि कितने अधिक आंसू बहाने पड़ेंगे हमें इसकी वजह से।"

ये तीनों सहेलियाँ इस बात की कल्पना तक भी नहीं कर सकती थीं कि स्वेत्लाना ने कितनी अधिक समझदारी की बात कह दी थी, वह कितनी गहराई में जा पहुंची थी, जो उसकी छोटी सी अक्ल के बिल्कुल अनुरूप नहीं थी।

मीशा शेरवुड ने निष्कर्ष निकाला—

"वह कठोर और सन्तापक है। मैं कटूक्ति के लिए माफी चाहता हूँ वह 'महा बोर' है। भगवान न करे कि कहीं मुझे उसके अधीन काम करना पड़े। भगवान बचाये!"

वालोद्या अब आलसी और कामचोर विद्यार्थियों का मज़ाक नहीं उड़ाता था फ़ैशन की पुतली स्वेत्लाना को चिढ़ाता भी नहीं था और यव्गेनी की नीचतापूर्ण हरकतों की ओर से आंख भी नहीं मूंदता था। परीक्षा में असफल होनेवाले विद्यार्थी अपनी असफलता के चाहे कुछ भी कारण क्यों न बतायें, वालोद्या को उन पर तनिक भी दया नहीं आती थी।

"इन्हें कान पकड़कर बाहर निकाल दिया जाये!" कालेज की युवा कम्युनिस्ट लीग की सभाओं में वह कहता। "निकाल दिया जाना चाहिए ताकि वे डाक्टरी की उस उपाधि को कलंक न लगा सकें, जो

उह मिलनेवाली है। किसी भी तरह की ढील करने, किसी भी तरह की नसीहत-उपदेश, किसी भी तरह का सहारा देने की जरूरत नही। जाम्रो, जहन्नुम म! बहुत लाड कर चुके हम इन मा के लाडलो और वाप की लाडलियो का! यही, जिन्हे हम इतनी मेहनत से अपने साथ खीच रहे है, वाद मे उस फौज का रूप ले लेते हैं, जो गावो मे जाकर काम करना नही चाहते। यही है वे लोग, जो अर्जिया और अपने बुरे स्वास्थ्य के प्रमाणपत्र लेकर उप-जन कमिसार के दफ्तर मे पहुच जाते है, यही असली काम करने के बजाय नकली अनुसधान सस्थानो मे बैठ-बठकर अपने पतलून फाडा करते है ''

दुवला पतला, लडका की तरह अस्त व्यस्त वालावाला और तनी हुई भौहो के नीचे गुस्से स धधक्ती आखे लिये हुए वालाद्या इस्टीटयूट के सभा भवन के मच पर खडा हाकर ऐसे भापण देता। उसे कोई मुहताड जवाव देता ता कसे! इस व्यक्ति पर अव सारा इन्स्टीटयूट गव करता था, भावी सितारे के रूप म उसकी चर्चा की जाती थी, कोई उस यह नही कह सकता था—"मिया, तुम अपनी फिक्र करा।" परशानियो से भरी इस पतझड म उसका दुवला पतला चेहरा और भी अधिक कमज़ोर हो गया था, उतर गया था। उसकी नजर और भी अधिक कठोर तथा पैनी हो गयी थी और जव कभी वह दूसरो की टीका टिप्पणी करते हुए व्यग्य पूवक हसता, ता उनमे पहले स कही अधिक जहर हाता। वह शव-परीक्षा कक्ष म गानिचेव के साथ पहले से कही अधिक समय विताता जो कुछ अव तक नही जाना-समझा था, उसे जानने-समझने की कोशिश करता और इस तरह पूरी तरह तैयार होकर रणक्षेत्र म उतरना चाहता था।

"वोलोद्या, विद्यार्थी आपको खास ता पसन्द नही करते," एक दिन गानिचेव ने उससे कहा।

वोलोद्या सिल्ली पर अपनी छुरी तेज कर रहा था। उसन घडी भर साचन के वाद उत्तर दिया।

"बेशक है तो यह बहुत दुख की वात, मगर लोग आम तौर पर 'वेपेन्दी के लोटो' का ही प्यार करते है। मगर मेरे ख्याल म य 'वेपन्दी के लोटे' खास हानिकारक कीडे हैं। शुरू म व वोद्का

पीकर गाते है—'प्यार न करने का मतलब है यौवन की बर
और बाद मे पीने और गाने की सम्भावना पाने के लिए अपनी
की आवाज को कुचलना और कमीनी हरकते करना शुरू करते हैं
आखिर मे इनसानी जिस्म मे केसर बनकर रह जाते हैं "

"बडे तेज़-तरार हो गये है आप," गानिचेव ने कहा। '
क्रोधी भी बहुत अधिक।"

"मैं क्रोधी होता जा रहा हू और आप दयालु," बालाय
लाश की जाघ का पट्ठा काटते हुए जवाब दिया। "बस मैं यह सम
हू कि हमारा देश आज जिन कठिनाइयो म से गुज़र रहा है,
दयालु बहुत सहायक नही हो सकते। मसलन आपने ये-गेनी को, जि
आप घृणा करते है, सन्तोपजनक अक दे दिये। भला क्यो? योवत
ने ऐसा चाहा होगा या फिर डीन ने? चलिये, आप दयालु हैं,
इससे तो केवल आप ही को लाभ होता है। किन्तु आपकी इस दया
की वजह से कुछ लोग इन्स्टीट्यूट, विज्ञान और न्याय का म
समझते हैं। मगर आप डीन और झोवत्याक से अपने सम्बन्ध
गाडना नही चाहते। मैं बच्चा नही हू, सब कुछ समझता हू

"सुनिये, आपको क्या इतना भी ख्याल नही आता कि मैं प्राप
प्रोफेसर हू?" गानिचेव ने झुझलाकर पूछा। और मन म सोचा
"सिरफिरा छाकरा, कम्बख्त सच्ची बात कहत हुए ज़रा नही डरत
क्या नही डरता?"

दर तक दोना चुपचाप काम करते रहे। गानिचव परेशान
बोलाया माथे पर बल डाले था। आखिर गानिचेव स न रहा ग
और बाले—

'आप यही खडे हुए यव्गेनी की आलाचना कर रहे है, मग
मुझे यकीन है कि उसने मुह पर ऐसा कुछ नही कहत। आपक ख्या
म यह अच्छे दास्त का काम है?' गानिचेव न बालाया क भुक सिर
उसन बडे-बडे, चुस्त और कुशल हा चुक हाथा की ओर दखा।

"आपकी यह बात ता सही नही है, बालाया न कुछ दर सोचकर
जवाब दिया। "अभी कुछ दर पहल खुद आपन ही कहा था कि आ
सहपाठी मुझे प्याग ता पसन्द नही करत। अभी तक हमार दिला न
यह समानी चीज पर किय हुए है कि हम मानो अपन लिए नही,

किसी दूसरे के लिए पढ़ते है। मेरा मतलब है इधर-उधर से नकल करना और इसी तरह की दूसरी हरकता स काम लेना। आप दास्ती की वात करते है। जाहिर है कि मैं उन्ह अच्छा नहा लगता। कारण कि अगर यब्गेनी जसा व्यक्ति मुझे अपन जैसा समझता, ता मैं क्या होता? तब तो मैं गल म फासी का फदा डालकर मर जाना वेहतर समझता। मैं हमेशा खुलकर उसका विराध करता हू, वह यह अच्छी तरह जानता है और इसीलिए मुझस खार खाता है। मेरे ख्याल मे तो आदमी को ऐसे ही जीना चाहिए, वरना शैतान जान कि वह पतन के किस गढे म जा गिरगा। रही मुझे पसद न करन की बात, तो सभी ता ऐसा नही करते। मिसाल के तौर पर आेगुर्त्सोव और पीच का ले लीजिए—व मरे मित्र है "

वालोद्या के अदाज म कुछ-कुछ उदासी थी और इसलिए गानिचेव ने वातचीत का विषय वदल दिया।

"इन्स्टीटयूट की पढाई खत्म होने पर मरे सहायक के रूप म काम करना पसद करगे?" उन्हाने पूछा और जिस ढग से वोलोद्या ने उनकी ओर दखा, उसस उन्ह यह समझ म आ गया कि उत्तर क्या होगा।

"किसलिए?"

"'किसलिए?' इससे आपका मतलब?" गानिचेव हतप्रभ से हो गये। "मरी चेयर "

"नही, मैं यहा नही रहूगा। आपकी चेयर लेकर ऐस ही जीना नही चाहता, डाक्टर बनना चाहता हू। जसे कि दिवगत पोलूनिन, पास्तनिकोव, विनाग्रादोव, वागोस्लोव्स्की ने अपना जीवन शुरू किया था, वसे ही मैं करना चाहता हू "

गानिचेव को यह वुरा लगा। उन्ह मानसिक पीडा भी हुई। उन्हाने चाहा कि वोलाद्या की उनके वारे म अच्छी राय हो। इसीलिए उन्हाने कहा—

"सभी ने तो अपना जीवन ऐसे शुरू नही किया था। मिसाल के तौर पर, मैने विल्कुल दूसरी ही तरह अपनी जिन्दगी शुरू की थी। अगर मन हो, तो आइये, यहा स वाहर चले, मैं आपको सब कुछ सुना सकता हू।"

वोलोद्या ने लाश को चादर से ढक दिया। गानिचेव ने अपने औज़ार उठाकर रख दिये, अगडाई और जम्हाई ली।

"मैंने अजीब ही ढग से ज़िन्दगी शुरू की," गानिचेव ने कहा। "आप कल्पना कर सकते है कि साहित्य और भाषा विभाग के चौथे वर्ष में मैंने पढाई छोड दी थी "

वे बाहर बगीचे में आकर बेंच पर बैठ गये। गानिचेव ने अपनी मोटी उगलियों से सिगरेट मली और जलायी।

वोलोद्या किसी तरह भी इस बात की कल्पना नही कर सकता था कि गानिचेव कभी साहित्य और भाषा विभाग के विद्यार्थी थे, कविताएं और लयबद्ध गद्य लिखते थे, फिर चित्रकला और मूर्तिकला के विद्यालय मे दाखिल हुए और इसके बाद सगीत-महाविद्यालय में शिक्षा पाते रहे।

"आपने डाक्टरी की पढाई कब शुरू की?" वोलोद्या ने पूछा।

"उनतीस साल की उम्र मे, मेरे अज़ीज़," गानिचेव ने जवाब दिया। "सभी कुछ छोड दिया था मैंने—मूर्तिकला, स्वरबद्ध पद रचना और हवाई किस्म की ऊल-जलूल कविताएं लिखना। इतना ही नहीं, अपनी उस दिल की रानी से भी नाता तोड लिया था, जो मुझे अत्यधिक प्रतिभाशाली व्यक्ति मानती थी। यह सब हुआ आग बुझानेवाले एक व्यक्ति ओरेस्त लेओनार्डोविच स्त्रिपयूक की बदौलत। जैसा कि आप बहुत अच्छी तरह जानते है, गृहयुद्ध के दिनो मे मेरे प्यारे कीयेव पर स्कोरोपादस्कियो, पेत्लूरो, सफेद गार्डों और जर्मनो, आदि ने हमले किये। सभी विजेताओ ने अनिवार्य रूप से नगर पर तोपो से गोले बरसाये, जी भरकर गोले बरसाये और हमारे शानदार नगर को आग लगायी। मुझे यह तो अवश्य ही बताना चाहिए कि उन दिनो मैं आग बुझानेवाले एक छोटे-से स्टेशन के नजदीक रहता था। मैं अक्सर बडी दिलचस्पी से आग बुझानेवाले के दल को, जिसमे सिर्फ बूढे ही थे, मरियल घोडोवाली चू चर करती हुई पुरानी गाडियो मे भयानक और लपलपाती आग से जूझने के लिए जाते देखता। गालावारी होती या न होती, मेरे ये बूढे वीर, स्त्रिपयूक के नेतृत्व मे—जो गालियां देने और वोद्का पीने के मामले मे भयानक आदमी था—अपने तांबे के टोपो की बहार दिखाते और घोडे दौडाते हुए जाते। शहर

म जहन्नुम का नजारा हाता, दुनिया का ग्रन्त होते लगता मगर वे किसी के ग्रादेश के विना ही, क्याकि उस समय नगर म किसी का भी शासन नही था, घाडे दौडाते हुए वढते जाते। मेरे मन मे भारी जिनासा जगी। स्त्रिपन्यूक न वात साफ करते हुए कहा – 'वहुत मुमकिन है कि वहा काई वच्चा लपटा म घुलसा जा रहा हो ग्रौर मूख लाग उसे वचाने म ग्रसमथ हा या फिर किसी लुज पुज को ग्राग स वाहर निकालने की उन्ह ग्रक्ल न ग्रायी हो। वेशक, इससे कोई वहुत वडा लाभ नही होता, फिर भी कुछ लाभ तो है, महज वक्तकटी ता नही।'"

गानिचेव की ग्रावाज ग्रजीव ढग से कापा, वोलाद्या को तो ऐसा भी लगा, मानो प्रोफेसर ने सिसकी ली हो।

"वाद म एक जलते हुए शहतीर ने मरे स्त्रिप यूक की जान ल ली," गानिचेव ने धीरे से कहा। 'कटु स्मृतिवाल पुराने रूसी वुद्धिजीविया म कुछ पेशा के लागा का मजाक उडाने की एक वहुत वुरी ग्रादत थी। ग्राग वुझानवाले का ग्रनिवाय रूप से वावचिन के साथ जोडा जाता था। ग्रपनी जवानी म मेरा वूढा स्त्रिप यूव भी वावचिना के चक्कर म रहा था, डान जुग्रान जैसा खासा रोमानी हीरा रहा था। पर उसके सीने म कैसा इनसानी दिल धधकता होगा कि मरे जसे पूरी तरह वयस्क हो चुके ग्रौर मा-वाप (वे काफी ग्रमीर थे ग्रौर किसी चीज से इनकार नही करते थे) के लाड प्यार स विगडे हुए व्यक्ति ने ग्रपनी जिन्दगी एकदम नये सिरे से शुरू की। कारण कि मैंने लाभ पहुचाने ग्रौर वक्तकटी करने के सम्वध म उदाहरण द्वारा सिद्ध की गयी सचाई को जीवन भर के लिए याद कर लिया।"

"यही तो वात है!" कोई गुप्त सकेत करते हुए वोलाद्या न उदासी से कहा।

"क्या वात है?" गानिचेव ने झल्लाकर पूछा।

"लाभ पहुचाने ग्रौर वक्तकटी करन के वार म। जाहिर है कि ग्रापने उसे हमशा के लिए याद नही किया "

"सुनिये, वोलाद्या," ग्रपने गुस्स पर कावू पाते हुए गानिचेव न कहा। "ग्राप हर वक्त मुझ पर टीका टिप्पणी क्या करते रहते है? मैं ग्रापको पसन्द करता हू, इसी वात का फायदा उठाते हुए ग्राप

मुझसे ऐसी मागे करते है, जिन्हे ग्रमली शक्ल देना बिल्कुल असंभव नही। कुल मिलाकर येव्गेनी को अपने विषय की सन्तापजनक जानकारी थी "

"मैं किसी पर भी टीका टिप्पणी नही कर रहा हू," वालोद्या ने दुखी आवाज मे उन्हे टोका। "बात यह है कि मैं तो हर वक्त सोचता रहता हू, सोचता रहता हू और इस नतीजे पर पहुचा हू कि जीना तो चाहिए वोगोस्लाव्स्की की तरह और सभी बातो मे तो नही, मगर बहुत सी बातो मे उसी ढग से जीना चाहिए जैसे पाल्निन जीते थे। ढुलमुल रहने का मतलब है—न घर के न घाट के। कृपया आप मुझसे नाराज न हो, खुद मुझ भी कम परेशानी का सामना नही करना पडता, पर आपने यह क्या कहा कि येव्गेनी को विषय की सन्तापजनक जानकारी है? यदि आपके लिए 'सन्तापजनक' काफी है, तो अपने विज्ञान, अपने विषय के बारे मे खुद आपका क्या ख्याल है?"

"जानना चाहते है?" एकदम आप से बाहर होते हुए गानिचेव ने चिल्लाकर कहा। "मैं आपसे बेहद तग आ गया हू। मैं किसी छोकरे से अक्ल का पाठ पढने को तैयार नही हू। नमस्ते!"

मैं तुमसे तग आ गयी हू

गानिचेव बेच से उठे और चले गये। वोलोद्या वार्या की खोज मे चल दिया ताकि उससे खुद अपनी शिकायत कर सके। वार्या के साथ अब उसकी बहुत कम मुलाकात होती थी। वालोद्या के मानसिक तनाव के जीवन, उसकी कठोर आवाज, कला शिक्षा और मदाम एस्फीर येव्दाकीया मेफ्चेयकिावा प्रुस्काया के बारे मे उसके मजाक-व्यग्य के कारण वार्या उससे कुछ-कुछ कतराती थी। जीवन भर तो वार्या अपने को इस बात के लिए अपराधी नही अनुभव कर सकती थी कि वोलोद्या के पिता वीरगति को प्राप्त हो गये थे। वार्या को लगता कि वोलोद्या उसको इसलिए भर्त्सना करता है कि वह अभी तक जिन्दा है, हसती और खुश होती है, नाटको का रिहर्सल करती है, उचा नदी मे नहाती और स्केटिंग करती है।

आखिर वह मुझसे क्या चाहता है?

उसकी पहले की तरह प्यारी ग्राखो की कडी नजर मुझस किस चीज़ की माग करती है?

ग्राखिर काम ही इनसान की इज्ज़त का मापदण्ड क्यो हो?

वार्या इस समय घर पर थी, मगर रिहसल के लिए जान को तैयार हो रही थी।

"क्या हालचाल है?" येव्गेनी न पूछा।

"ग्रभी ग्रभी गानिचेव से तुम्हारी चर्चा हो रही थी," वोलोद्या न जवाव दिया। "मैंने वहुत देर तक उन्ह इस वात का यकीन दिलान की काशिश की कि शरीर विकृति विज्ञान म तुम्ह सन्तोपजनक ग्रक देना गलत था।"

"बिल्कुल गलत था!" येव्गेनी न सहमति प्रकट की। "मेन तो उसे शानदार ग्रक पाने के लिए रट रखा था।

"शरीर विकृति विज्ञान तुम्ह नही ग्राता," वोलोद्या न ग्रापत्ति की। "झोवत्याक या किसी दूसर के प्रभाव मे न ग्राकर तुम्ह तो फेल कर दना चाहिए था।"

"तुम्हारा दिमाग चल निकला है क्या?" यव्गेनी न पूछा।

सडक पर वार्या ने वोलाद्या स कहा कि तुम वहुत ही ग्रसह्य व्यक्ति–ग्रपने को भस्म तक कर लेनवाला कट्टरपथी वनते जा रह हो, कि येव्गेनी का कहना सही है कि गानिचेव के साथ तुम्हारी वात–यह एक दोस्त का काम नही है।

वोलोद्या न वुरा नही माना, सिफ हैरान हुग्रा ग्रौर निदयता से उत्तर दिया–

"यह तुम क्या कह रही हा, वार्या? ग्रपन से माग करना–यह क्या काई वुरी वात है? वेकार ही तुम मुझे कट्टरपथी, सो भी ग्रपने को जला देनेवाला वता रही हो।"

"ता सतापक हा।"

"यह केवल यव्गेनी का मत है।"

"केवल यव्गेनी का ही नही!"

"तव तो ग्रौर भी वुरी वात है," वालाद्या ने कहा। "तुम सभी एक ही ढग स चीजा का देखते हा। याद है न कि उस दिन जमदिन की पार्टी म माटे माकावेयन्का न जीवन के उद्देश्य के वार

म कैसा भापण दिया था? यह तुम सभी का साझा दृष्टिकोण है। आशा करनी चाहिए कि कुछ समय बाद तुम्हारा, यव्गनी, चारवाज़ारा करनेवाले दादिव और उनकी उस सहेली का, जो खुद मालिश करने के फन की माहिर है एक ममस्पर्शी दल बन जायगा। तुम सब एक ही गिराह के हो।"

"क्या? वार्या चिल्ला उठी। "तुम्हारा दिमाग तो ठीक है।'

'हा, ठीक है।' वोलोद्या ने बड़ाई से जवाब दिया। जीवन म मामूली बहुत ही छोटे छोटे समझौता से घटियापन की शुरूआत होती है। ऐसी 'तुच्छताओ' से, जैसा कि तुम बचपन म कहा करती था। उसके बाद ऊपर या नीचे जानेवाली सीढ़ी की ओर, जो भी उपयुक्त लगे बढ़ा जा सकता है—तुम, यव्गेनी गानिचेव, तुम्हारी मा, दोदिक "

जो कुछ भी अब उसके मुह म आ रहा था, वालोद्या सोचे-समझे बिना कहता जा रहा था। वह अब सयम खो चुका था। बात यह है कि वह तो वार्या से मदद लेने, सहारा पाने के लिए आया था, मगर वह उसके विपक्षियो उसके दुश्मनो का साथ दे रही थी।

"मैं तुमसे तग आ गयी हू" वार्या ने आखिर कहा। "माफ़ करना, बेहद तग आ गयी हू। तुम्हारे अक्खड़पन से भी तग आ गयी हू। इसके अलावा उपदेशका से भी ऊब गयी हू। हाई स्कूल की पढ़ाई मैं खत्म कर चुकी हू और इतना जानती हू कि वोल्गा नदी कास्पियन सागर म गिरती है। और वोलोद्या तुम तो कुछ ज्यादा ही निमल, बेदाग हो। सो तुम अपने रास्ते जाओ अपने को जलाओ, दूसरा को रोशनी दो और मैं अपनी पगडडी पर चलती जाऊगी। भगवान भला करे तुम्हारा!

खुद अपने और वोलोद्या के लिए दुखी होते हुए वार्या ने नाक से सू सू की—सम्भवत उसकी बात वोलोद्या की समझ म नही आयी थी। वार्या खुद भी अपनी भावनाओ की तह तक नही पहुच पायी थी। मगर इतना साफ था कि उसके दिल को ठेस लगी थी और इसलिए वालोद्या को उससे माफी मागनी चाहिए थी, मगर वह बुद्धू सा चुपचाप खड़ा हुआ सिर्फ अपनी घनी बरौनियाँ को झपकाता जा रहा था। इस तरह स केवल वही चुप्पी साध सकता था फिर वह

मुडा और एक बार भी घूमकर देखे बिना पुस्तकालय की ओर चल दिया।

"खर, देखना तो!" वार्या न दृढतापूवक सोचा, "खुद ही आओगे रगते हुए!"

बर्फीली हवा उसके चेहरे को परेशान किये दे रही थी, मगर वह खडी इन्तजार करती रही—क्या वह नही लौटेगा? आखिर यह सब किस्सा क्या है? वह उसे प्यार भी करता है या नही? या वह अपने उस पागलपन के खत को भूल गया है, जो उसने चोर्नी यार के अस्पताल से उस लिखा था? वह अजनबी की तरह मेरी तरफ देखता रहता है, कुछ भी तो नही पूछता और जब मैं उसके घर जाती हू, तो पीच के साथ पढता होता है, या घर पर ही नही मिलता या फिर हाथो म किताब लिये सोया दिखाई दता है। आखिर यह सब कुछ है क्या?

"अगर वह घूमकर देखेगा, तो हम सौभाग्यशाली होगे," काई आशा न हाते हुए वार्या ने कामना की। "और अगर नही देखेगा तो?"

वोलोद्या ने घूमकर नही देखा।

वह ऊची गोरनाया सडक पर पुस्तकालय की ओर बढता जा रहा था। तेज हवा उसके खस्ताहाल, पुराने कोट का उडा रही थी, उसके कनटापे का एक सिरा फडफडा रहा था।

उसका सबसे नजदीकी, सबसे प्यारा व्यक्ति, बुद्धू और लम्बी-लम्बी बाहावाला यह इनसान, किन्ही समझौता की बात का लेकर उससे दूर चला जा रहा था। कौन-से, कसे समझौते?

उसे पुकारू?

भागकर उसके पीछे जाऊ?

जैसे भी हा, उसे रोककर वह चीज स्पष्ट करनी चाहिए, जो बहुत-से लोग नही समझते—जब प्यार हो चुका हो, तो छोटी छाटी बाता को लेकर झगडना नही चाहिए, रूठना और नाराज नही हाना चाहिए। छाटे छोटे मनमुटावा स ही लाग एक-दूसरे को खा दते है, बाद म यही छोटी छोटी बात बतगड बन जाती हैं और तब इनसान के किय धरे कुछ नही होता।

उसे अभी इसी घड़ी रोकना, सुधारना चाहिए!'
मगर वह ऐसा नहीं कर पाया।
उसने बहुत ही धीरे से कहा—
'वार्या! तुम जरा भी सुन्दर नहीं रहीं!'
मगर वार्या ने यह नहीं सुना।

तब वह सकुचाई हुई और गर्व से तनकर अपनी जासूसा की नई भूमिका का अभ्यास करने के लिए स्पेस्किन नामक कला निकेतन की ओर चल दी। पिछले कुछ समय से उसे दुष्ट और हाथ न आनेवाली विदेशी जासूसा की ही भूमिका दी जा रही थी। वार्या ने जब यह एलान किया और शिकायत की कि उससे यह भूमिका अदा नहीं हो सकती, तो मस्चेर्याकोवा-प्रूस्काया ने लम्बी-लम्बी उंगलियां चटकाते हुए अपनी सदा ही थकी हुई नाटकीय आवाज में कहा—

'आह, मेरी प्यारी क्या आप इतना भी नहीं समझतीं कि प्रतिभा का विकास करने के लिए सबसे जरूरी चीज है—अभ्यास। हां अभ्यास, अभ्यास, और अभ्यास।'

'अभ्यास तो अभ्यास सही!' वार्या ने उदास भाव से सोचा, वह खिल्ता कुंज को व्यक्त करनेवाले पर्दे के पीछे से सामने आयी और बोलने लगी—

"हां, तो साथी प्लातोनोव, नहीं, श्रीमान प्लातोनोव, अगर आप मेरा भंडाफोड़ करेंगे तो अपनी जिन्दगी का खात्मा समझ लें! अगर आप टर्बाइन को उड़ा देते हैं, तो मालामाल हो जायेंगे, मोनमार्त के नाइट क्लब और मोंटेकारलो के शानदार जुआघरों में मौज उड़ायेंगे, आल्प्स पहाड़ों में छुट्टी बितायेंगे, रंग रलियां मनायेंगे

'वार्या इन आंसुओं का क्या मतलब है?" मेश्चेर्याकोवा प्रूस्काया ने पूछा।

'कोई मतलब नहीं है!' वार्या ने जवाब दिया। "वैसे ही कोई मतलब नहीं है, जैसे आपके दूसरे कुलनाम—प्रूस्काया—का कोई मतलब नहीं है। फिर प्रूस्काया (प्रशियन) ही क्यों? बेल्जियन, फ्रेंच या अमेरिकन क्यों नहीं? प्रूस्काया ही क्या? यह लीजिये अपना पाट, मैं जा रही हूं। जहन्नुम में जाये यह!'

वार्या क्लब के छोटे और नीचे मच से कूदी, गव से सिर अकडाये और धीरे-धीरे कदम बढाती हुई दरवाजे की ओर चल दी। मेश्चेर्याकोवा-प्रूस्काया कुछ क्षण बाद सम्भली और फेरीवाली की तरह चिल्ला उठी –

"निकल जाओ! बदतमीज! म तुम्हारा नाम काटे दे रही हू! अब कभी यहा नही आना!"

"आप ऐसे चिल्ला क्यो रही है?" बारीस गूबिन न पूछा। "यह क्या कोई पूजीवादी प्राइवेट कम्पनी है? यह सयुक्त विद्यार्थी नाटक मण्डली है और हम यहा किसी को भी ऐसे

गूबिन भी वार्या के पीछे पीछे बाहर चला गया।

"काई चिन्ता न करो, अब वह डाट-फटकार के अपने इन तौर-तरीका से काम लेना ब द कर देगी,' उसने वार्या से कहा। "भगवान की दया से अब हम बच्चे नही है। बस, काफी हा चुका।"

वाया चुप रही।

"तुम्हारे साथ कोई बुरी बात हो गयी है क्या?" बोरीस ने पूछा।

वार्या ने कोई जवाब नही दिया। बोरीस कुछ दर चुप रहा, फिर उसन विदा ली, मगर अपनी गली की तरफ नही मुडा। वह किसी आशा के बिना ही बहुत अर्से से, उसी दिन से वार्या को प्यार करता था, जब वालोद्या न रेलवे लाइन पर पडे चरवाहे छोकर की टाग पर रक्तबध बाधा था। मगर वह सदा ही यह समझता था कि वालोद्या का व्यक्तित्व उससे अधिक प्रभावशाली है। इसीलिये वह कभी उनके मामले मे दखल नही देता था। किन्तु आज उसकी हिम्मत बहुत बढ गयी और उसन पूछा –

"क्या वोलाद्या के साथ तुम्हारा झगडा हा गया है?"

"तुम्हारा इससे क्या मतलब है?" वार्या न जवाब दिया। "नमस्त कह चुके हो, अब जाओ लगडाते हुए अपने घर। मुझे अग रक्षक की जरूरत नही है।'

बडी चुभती हुई बात कह देती थी कभी-कभी यह वाया। "लगडाते हुए जाओ घर!" भला लगडाते हुए क्या?

ग्यारहवा अध्याय

बिगुल बजता है

रसोईघर मे शाम का खाना खाया जा रहा था। रादिम्रान मेफोदियेविच के घर आने के सम्मान म मज़ पर झालरवाला गुलाबी मेज़पोश बिछाया गया था। नेप्किन भी थे, कलफ से ऐसे अकडे हुए कि टीन के टुकडे से लगते थे। नेप्किनो की ही चर्चा चल पडी। दादा ने दुख से गहरी सास लेकर कहा—"कलफ लगाने के काम म तो मैं निपुण हो ही नही पाता। कारण कि एक तरह के कलफ से व अकड जाते है और दूसरी किस्म के कलफ से नम रह जाते हैं।'

"हटाइये भी पिता जी," रादिम्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "क्या करना है हम कलफ लगे नेप्किनो का?"

"जो दूसरे करते है, वही हम," अपनी टेढी उगली को ऊपर उठाते हुए दादा ने जवाब दिया। "तुम्हारी भूतपूव पत्नी नेप्किना के साथ खाने की मेज़ पर बैठती है, तो तुम उससे किस बात म कम हो। वरना वह लगेगी ज़बान से चपर चपर करने—मरे भूतपूव बदकिस्मत पति की कोई भी चिन्ता नही करता। किसलिए हमे यह सब सुनने की ज़रूरत है?'

दादा न आज सुबह ही कुछ वाद्का ढाल ली थी और अब "इसी खमीर का कुछ-कुछ और उठात" जात थ। वार्या के शब्दा म व साल म एक-दो बार ही ऐसे "ऐश करते थे"। व बेटे द्वारा लनिनग्राद स खरीदकर लाया गया नया तीन 'पीसवाला' सूट पहने थ। व मज पर काफी झुककर और गदन का आगे की तरफ बढाय हुए खा पी रहे थ ताकि कोई चीज़ मुह म न जाकर सूट पर न गिर जाय।

"मौज हो रही है?" यव्गेनी ने रसाईघर म भ्राकर पूछा।

"जी वहला रहे है," रोदिम्रोन मेफोदियेविच न जवाव दिया। "इराईदा को वुला लो कुछ देर हमारे साथ वठो।"

"यह मुमकिन नही है, पापा। हम किसी ऐसी जगह निमन्त्रित है जहा देर से पहुचना ठीक नही।

येव्गेनी वहुत सावधानी से, नज़र वचाकर पिता को गौर स देख रहा था। रादिम्रोन मेफादियेविच खाली जाम का उगलियो के वीच घुमा रह थे। वे भ्राज काफी पी चुके थे, मगर एकदम सजीदा थे, सिफ रह रहकर गहरी सास लेते थे, साच म डूव जाते थे भ्रौर कभी-कभी किसी फौजी माच सगीत की सीटी वजा रहे थे। जहाज़ियो की धारीदार पोशाक मे उन्ह वठे देखना भ्रजीव सा लगता था। कम से कम घर लौटने की इस पहली शाम को तो वे चमकते हुए दो पदकावाली वर्दी पहनकर वठ सकते थे। मगर व वैठे हुए जाम घुमा रहे थे।

"मा का क्या हाल है?" पिता ने भ्रचानक ही पूछा।

"काफी भ्रच्छा ही कहना चाहिए," येव्गेनी ने जवाव दिया। "भ्रव वह नगर की एक प्रमुख दर्जिन है। दोदिक ने तो उसे थियेटर मे नौकरी दिला दी है, उसन पाशाको के इतिहास का भ्रध्ययन किया है भ्रौर वहा तरह-तरह के राजाम्रो-महाराजाम्रो – लूइयो भ्रौर फर्दीनादा – को पाशाके पहनाती है।"

"काई निजी सस्था हुई न?"

यव्गेनी न कुर्सी पर फैलते हुए जरा जम्हाई ली।

"निजी क्या? मैं ता भ्रभी भ्रापका वता चुका हू कि वह थियेटर म काम करती है भ्रौर सभी वहा उसकी वडी इज्ज़त करते है। दोदिक कोई वुद्धू नही है! निजी सस्था होने का मतलव है कि फौरन टैक्स-इन्स्पक्टर, भ्रौर दूसरी कई तरह की झपटे खडी हो जायेगी "

"तो वात समझ म भ्रा गयी,' रोदिम्रोन मेफोदियेविच न सिर हिलाकर हामी भरी। जव काई चीज़ उनकी समझ मे विल्कुल नही भ्राती थी, तव व हमेशा ऐसे ही कहते थ कि वात समझ मे भ्रा गयी भ्रौर सिर हिलाकर हामी भरते थ। "भ्रार तुम क्या तीर मार रह हा?"

येव्गेनी न शब्दा का लटका-लटकाकर वालत हुए कहा कि मैं लगभग डाक्टर बन चुका हू कि इराईन्ा क साथ शादी करत मय किसी तरह की काई शिकायत नहीं कुल मिलाकर जिन्दगी ढग स चल रही है कि इराईन्ा क पिता ने लगभग यह गारटी दे दी है कि मुझे इन्स्टीटयूट म ही जगह मिल जायगी।

'ता क्या तुम वैज्ञानिक बन गय हो?" रोदिग्रान मफादियविच ने पूछा।

वैनानिक बना या नही यह ता मैं नही कह सकता, मगर हम विद्यार्थिया का एक विनान मण्डल अवश्य है और हमन कुछ विपयो पर शोध काय किया है। हमारा एक शोध लख ता इन्स्टीटयूट की पत्रिका म भी छपा था।

यह हमारा' क्या बला है?

हमारे मण्डल के सदस्य।"

ग्राप कितने लोग है?

'सोलह।

"मतलब यह हुग्रा कि समूह—वात समझ म ग्रा गयी। पहल अगर त्सीगेर, किसल्योव या मदेलेयेव ग्रकेला होता था, ता तुम सोल हो। वोलोद्या ने भी तुम्हारा साथ दिया?'

येव्गेनी ने ग्रपनी ग्राखो म झलकनेवाला गुस्सा छिपान का पलक झुकी ली। यह ऊवा देनेवाला निदयी मुझसे क्या चाहता है? हाथ धोकर पीछे क्या पड गया है? इस व्यग्यपूण लहजे का क्या मतलव है? मान लिया कि वह स्पेन से लौटा है वहा उसने दुश्मन स मार्चा लिया है साथी दोस्तो को कब्र मे सुलाकर ग्राया है, मगर यह इसकी नौकरी है इसका काम है कत्तव्य है। ग्रगर मुझे भेजा जाता, तो म भी चला गया होता। काई भी विद्यार्थी ऐसा ही करता। क्या व सावियत लोग नही है?

'मतलव यह कि सब ठीक ठाक है?" रोदिग्रान मफोदियविच न येव्गेनी से पूछा।

"बिल्कुल ठीक ठाक है।" येव्गेनी न कुछ चुनौती क स ग्रदाज म जवाव दिया।

' ग्रगर ऐसा है ता ग्रच्छी बात है '

"मैं भी ऐसा ही समझता हू। मैं अपने काम का रास्ता भी चुन चुका हू। प्रशासन के क्षेत्र म काम करूगा। निकोलाई इवानाविच पिरोगाव का कहना था कि मार्चे पर डाक्टर सवप्रथम तो प्रशासक हाता है। पापा, इस क्षेत्र म अभी वहुत कुछ करना वाकी है।"

"तुम्हारा मतलव, प्रशासन के क्षेत्र म?" रोदिग्रान मफोदियेविच न जानना चाहा। "शायद इसी क्षेत्र म ता हमारे यहा कुछ कमी नही है। सचालक तो वहुत ह, मगर काम करनेवाले "

यव्गेनी ने तश्तरी म से पनीर का टुकडा उठाकर मुह मे डाला, उस चवाया और गहरी सास छोडकर कहा —

"यह मामला इतना सीधा-सादा नही है "

खुशकिस्मती से इसी वक्त टेलीफोन की घटी वज उठी और येव्गेनी के लिये यहा से खिसक जाने का बहाना वन गया। दादा और रोदिग्रान मेफोदियेविच ही खाने की मज पर वठे रह गये। वरामदे म येव्गेनी ने इराईदा से कहा—

"यह कामरेड तो मुझे पागल किये दे रहा है। वह अपने तीसरे दशक का ही राग अलापता जा रहा है और हम अव दूसरे जमाने म जी रहे है। दूसरे जमाने के दूसरे ही गान। कुल मिलाकर '

उसने हाथ झटककर वात अधूरी हो छाड दी।

"फिर भी वे वहुत थके थके से नजर आ रहे है,' इराईदा ने निश्वास छोडा। "मेरे पापा और प्राफेसर गेन्नादी तारासोविच को वुलाकर इन्ह दिखाना चाहिए। हे भगवान, इस कुत्ते की वजह से तो मेरे नाक म दम आ रहा है," शारिक का रसोईघर से निकलते देखकर वह झल्ला उठी। "अजीव मज़ाक है—घर म वच्चा है और यही हर वक्त यह आवारा कुत्ता भी वना रहता है "

"खर, तुम अब कपडे पहनकर तैयार हो जाओ, नही तो दर हो जायगी," येव्गेनी ने उसकी वात काटकर कहा। "और वाल ढग स वना लेना। य विखरे हुए वाल तुम्हारे चेहर पर ज़रा भी नही जचते। हा, गहन भी जरा कम पहनना, लोगा का ध्यान अपनी तरफ खीचन म क्या तुक है। हम ता साधारण सोवियत विद्यार्थी ठहरे। तुम्हारी यह अजीव सी आदत हा गयी है कि जव कभी हम किसी पार्टी मे जाये, तो वहा लाग दीदे फाड फाडकर तुम्ह देखे।'

'ग्राह, यह चख-चख व द करो!" इराईदा ने दुखी होकर कहा।

रसाईघर म दरवाज़े के फटाक से वन्द होन की ग्रावाज़ सुनाइ दी। शिष्ट ग्राया पाउलीना गूगोव्ना, जिसे इसलिए नौकर रख लिया गया था, कि उसका कुलनाम फोन गेत्स था, स्तेपानोव के नन्हे पात के लिए जमन भापा म लोरी गा रही थी। गूगाव्ना का वडा सारा स दूक वरामदे म रखा था ग्रौर इस वुढिया ने मानो सारे घर को यह धमकी सी दे रखी थी कि वह ग्रपनी सारी ग्रदभुत दौलत, जिसका केवल एक हिस्सा ही ताला लगाकर व द किये हुए सन्दूक म सुरक्षित था यूरा को विरासत के रूप म दे जायेगी।

"वापू, तुम्हारी इसके साथ कैसी निभ रही है?" रोदिग्रोन मफादियविच ने ग्रपने लिए केक का टुकडा काटते हुए पूछा।

'कसी निभेगी? जैसी निभनी चाहिए," दादा मेफोदी ने जवाब दिया। "यह मुये फोन्का उल्लू ग्रौर वूढा खूसट कहती है ग्रौर मैं भी उसे चुडल या कुछ ऐसा ही कह देता हू, जसा कि कभी गावा मे कहा जाता था

"पूरी तरह वैसे ही?

"कसर छाडने की ज़रूरत ही क्या है?"

'मतलव यह कि ऊवने की नौवत नही ग्राती?"

वूढे ने कुछ देर सोचकर सविस्तार उत्तर दिया--

"ऊव महसूस करन का सवाल ही क्या पदा होता है? वार्या को खिलाना पिलाना घर को याडना वुहारना, खाना पकाना, वाज़ार से सौदा सुलफ लाना ग्रौर इधन की चिन्ता करना, यह सव तो मुये करना ही पडता था। गूगाव्ना ता सिफ वात ही करती है, काम तो नही करती। जेया ग्रौर ईरा भूखे घर ग्राते है तो उन्ह गम शारवा किसस मिलता है? दादा स ही न! ता एक एक जाम ग्रौर हा जाये?'

"हा, हा जाय।

रादिग्रान मफादियविच ने ठडी वादका जामा म डाली। दादा न वडे प्यार स ग्रपना जाम उठाया खुरदरे हाथ म कुछ क्षण तक उस थाम रखा ग्रार ग्रचानक वडी मधुर ग्रावाज़ म पूछा--

"यह कम्वख्त इतनी मज़ेदार क्या है? वताग्रा तो मफान्यिविच?'

दादा अव अपने वेटे को पैतक नाम स सम्वाधित करते थे, क्याकि उन्ह ऐसा ही उचित प्रतीत होता था। दादा की आखा म अव खुशी की चमक थी, उन्हाने काफी पी ली थी, पेट भरकर खा लिया था और अव मगन होकर उस मेज़ के करीव वठे थे, जा उन्हाने अपने वेटे रोदिग्रान मेफोदियेविच के घर आने की खुशी म तरह-तरह की चीजा से सजाई थी। मेज पर अग्लाया के गुर के मुताबिक पकाये गय केक थे, भुना हुआ मास था और तव पर तले तथा सू सू करते हुए सासज थे। अचार के खीरे भी वढिया थे और अचारी लाल गाभी भी दूसरी चीज़ा के वीच वडी शाभा दे रही थी। हर चीज़ "वढिया और ढग की थी", जैसा कि कुछ जाम चढान के वाद दादा कहा करत थे।

"तो तुम सम्मानित होकर लौटे हा," मूछ दाढी का पाछते हुए दादा ने कहा। "सरकार की तरफ से तमगे और पदक पाकर, ऊचे पुरस्कार पाकर। वधाई है तुम्ह। लेकिन प्यारे वेटे, तुम गये कहा थे?"

"जहा गया था, वहा अव मै नही हू, वापू।"

"मरे दिल को ठेस लगा रहे हा, मेफादियेविच। मैं बात को पचाना जानता हू।"

"वह तो है ही, मगर उसकी एक कापी फौरन वाज़ार म पहुच जाती है। हमारा सारा मुहल्ला तुम्हारे राज़ जानता है।"

दादा ज़रा परेशान से होकर यह ज़ाहिर करते हुए झटपट ओवन की तरफ चले, मानो वहा पोलिश भाजन "विगोस" कुछ अधिक पक गया हो। दस्तेवाली चपटी कडाही को बाहर निकालकर वोले—

"मफादियविच, सुनो, हमे किसी वक्त हिसाव किताव देख लेना चाहिए। घर के खच के लिए भेजे गये तुम्हार पैसो म से काफी रकम वच रही है। कव लागे उसे?"

रोदिग्रान मफोदियविच ने जवाव दिया कि व कभी यह रकम नही लेगे और वेध्यान स होकर अपन सामने की दीवार को ताकते हुए केक के छाटे छोटे टुकडे तोडकर खाने लगे।

'कभी न लेने से क्या मतलव तुम्हारा?" दादा ने वुरा मानत हुए कहा। वे बहुत समय और वडे जतन से पसे जोडते रह थे। इसके लिए व वाज़ार म मोल-तोल करते, सस्ता ईंधन ढूढते, खुद

चादर और तौलिये धोते और अगर वार्या को फुरसत न होती, तो फर्श तक खुद धोते। और अब बेटे ने कह दिया था कि वह कभी पैसे नहीं लेगा। "नहीं, मफोदियेविच," दादा बिगड़कर बोले, "यह सब नहीं चलेगा। मैं तुम्हारे घर के लिये भेजे जानेवाले खर्च पर बोझ नहीं हूं। मैं तुम्हारे लिये अपनी पूरी कोशिश करता हूं, हर दिन वार्या से हिसाब लिखवाता हूं और तुम कहते हो—कभी नहीं लूंगा यह रकम।"

"तो इसी हिसाब किताब के झंझट के लिये मैं तुम्हें यह सज़ा देता हूं कि तुम इस बची हुई रकम से अपने लिये जाड़े का ओवरकोट खरीद लो," रोदिओन मेफोदियेविच ने कड़ाई से कहा। "कल हम दुकान पर चलेंगे और तुम्हारे लिये फर लगा कोट तथा फर की टोपी खरीद लेंगे।"

दादा ने कुछ देर सोचकर जवाब दिया—

"ऐसा नहीं किया जा सकता। गूगोव्ना जलन से मर जायेगी।"

"मर जायेगी, तो दफना देंगे।"

"नहीं ऐसा नहीं किया जा सकता!" दादा ने दोहराया। "अगर ऐसी ही बात है, तो वार्या के लिये फर का कोट खरीद लेना बेहतर होगा। मैंने यहीं, नज़दीक ही फर के कोट बिकते देखे हैं।"

"तुम्हारी इस रकम के बिना ही वार्या के लिये फर का कोट खरीद लिया जायेगा और तुम्हें जाड़े का ओवरकोट तो खरीदना ही होगा।"

"मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। हां, वार्या को जरूर फर का नया कोट खरीद देना चाहिए। लड़की अपने पूरे जोबन पर है, शादी-ब्याह के लायक है। उस मौके के लिये कम्बल, तकिये और कुछ ऐसी ही दूसरी चीज़ें भी खरीद लेनी चाहिये"

रोदिओन मेफोदियेविच के माथे पर बल पड़ गये, वार्या की शादी का विचार उन्हें कभी भी अच्छा नहीं लगता था।

"अच्छा, हटाओ इस बात को," उन्होंने कहा। "यही बेहतर होगा कि अफानासी की याद में एक एक जाम पी लिया जाय।"

दरवाज़े पर किसी ने लम्बी घण्टी बजायी। गूगोव्ना करीब होते हुए भी दरवाज़ा खोलने नहीं गयी। रोदिओन मेफोदियेविच ने दरवाज़ा

ग्रोला ग्रौर वोलाद्या का सामने पाकर वही, दहलीज के वाहर ही उसे गले लगाया। वोलोद्या के पीछे ग्रग्लाया ग्रौर वार्या खडी थी।

"पापा, मैं इसे प्रयोगशाला से खीच लाई हू," वार्या ने कहा। "तुम हैरान न होना कि इससे ऐसी ग्रजीव सी गध ग्रा रही है "

रोदिग्रान मेफादियेविच ग्रौर ग्रग्लाया ने भी एक दूसर का चूमा। दादा ने फुर्ती स मेज पर साफ तश्तरिया ग्रौर जाम रख दिये तथा सुराहिया म ग्रदरक ग्रौर कारट की कोपला स सुगधित ग्रौर लाल मिचवाली वोदका भर दी।

"ता वैठो तुम लोग," रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। "ग्रफानासी की याद म जाम पी ले ग्रौर इसके वाद मैं तुम्ह सब कुछ वताऊगा।'

रोदिग्रोन मेफादियेविच ने ग्रपने गुदे हुए तथा काहनी तक नगे हाथ म जाम लिया ग्रौर उसे थाम हुए धीमे धीम कहने लगे —

"हम एक कम्युनिस्ट, उक्रइनी, व्लादीमिर, तुम्हारे पिता, ग्रग्लाया, तुम्हारे भाई ग्रौर मेरे सवस प्यारे दोस्त ग्रफानासी पेत्रोविच उस्तिमेन्को की याद म यह जाम पीते है, जो स्पेनी जनता की ग्राजादी के लिए सघप करता हुग्रा वहादुरी से शहीद हुग्रा। यही कामना हैं कि मड्रिड की धरती म उसे चैन मिले "

दादा ने ग्रपने ऊपर सलीव वनायी ग्रौर सभी ने चुपचाप ग्रपने जाम पी लिये। खान की इच्छा न होने पर भी वोलोद्या ने केक का टुकडा मुह म डाल लिया। गूगान्ना फिर स लोरी गाने लगी। रोदिग्रोन मफोदियेविच ने सिगरेट जला ली ग्रौर उनकी नजर वाझिल तथा कठार हो गयी।

"सक्षेप म यह," वे वताने लगे। "सात 'जुकर' हवाई जहाज 'वी' की शक्ल म उडत हुए मैड्रिड की तरफ वढ रहे थे। यह मैने ग्रपनी ग्राखा से दखा था। वाकी जा हुग्रा, वह मैंने नही देखा, लागा से सुना है। 'जुकर' तीन इजनोवाल भारी हवाई जहाज थ ग्रौर जमन, फासिस्ट हवावाज उ ह उडा रहे थ। ग्रफानासी ने ग्रकेले ही उनसे टक्कर लेनी शुरू कर दी। जब तक कि दस्त के वाकी हवाई जहाज ग्रासमान म उडे, जिनम शायद कुछ गडबड हो गयी थी, उस ग्रकेले को शायद वहुत मुश्किल का सामना करना पडा हागा। इस वार

'जुक्रा' न मैड्रिड पर बम नहीं गिराये। अफानासी न दो हवाई जहाजों का निशाना बनाया और दोनो ही तबाह हो गये। इसके बाद "

रान्दिओन मेफादियेविच ने लम्बा कश खीचा और धीमी, मगर साफ आवाज मे कहा—

'इसके बाद उसके हवाई जहाज का आग लग गयी। उसने आग बुझानी चाही और इसी कोशिश म खुद जल गया। हमारा अफानासी पत्रोविच मड्रिड के ऊपर ही जल गया। वहा, मड्रिड म ही उसे दफनाया गया। कह नहीं सकता कि कितने हजार लोग थे वहा। माताए अपने बच्चो को गोद मे लिये हुए थी, हवाबाज, टैकची और पैदल सैनिक उसके मातमी जुलूस म शामिल थे। सभी इस बात का महत्त्व समझते थे कि वे रूसी है। ताबूत को हमारे यहा की तरह नही बल्कि खुला और सीधा खडा करके ले जाया गया। एसा लगता था माना अफानासी सभी स्पेनिया के साथ चला जा रहा हो। आग ने उसके चेहरे को नहीं झुलसा था, सिर्फ बाल ही जले थे नाग 'इटरनेशनल गा रह थ। कुछ स्पनी गान और 'वार्शाव्यान्का' भी गाया गया तथा कब्रिस्तान म तीन बार गालिया चलाकर सलामी दी गयी। उसकी कब्र पर सफेद पत्थर रखा गया है "

वालाद्या टकटकी बाधकर रादिओन मफादियेविच को ताक रहा था। अग्लाया धीरे धीरे सुबक रही थी। उगलियो से आसू पोछती हुई वार्या न खिडकी की ओर मुह कर लिया था। दादा मफोदी माथे पर बल डाले हुए उदासी से यह सारी घटना सुन रहे थे।

"मेरे पास फोटो थे,' रादिओन मफोदियेविच ने अपना बात जारी रखी, "मगर उन्हे नष्ट करना पडा। कुछ टिप्पणिया भी थी और ब्लादीमिर, तुम्हारे नाम लिखा हुआ तुम्हारे पिता का खत भी था, जो उसने इसलिये लिख दिया था कि अगर कुछ भला-बुरा हो जाय, तो लेकिन कुछ भी तो बाकी नही बचा जो कुछ मुझे याद है, वह बता देता हू। अपने आखिरी दिनो म अफानासी अक्सर स्पेनी लोगो से यह कहा करता था—'थक गये, तो अपने को झकझोरो, कमजोर हो गये, तो अपनी ताकत बटोरो, भूल गये, तो याद करो—क्रान्ति तो समाप्त नही हुई।' इसके अलावा वहा हम लार्ड बायरन की रचनाए पढ़ा करते थ। बायरन वहा इस कारण और भी अधिक

अच्छे लगते थे कि उन्होंने यूनान के लिए बहुत कुछ किया था। अफानासी हसते हुए, मानो मजाक म, लेकिन जो मजाक नही होता था, अक्सर कुछ पक्तिया दोहराया करता था। उनमें से थोडी सी मुझे याद रह गयी है—

जाग रहे है जब मुर्दे भी—क्या मैं सो सकता?
तानाशाहो से जग लडता—पीछे हो सकता?
फसल पकी, क्या उसे काटने म मै देर करू?
कटक विस्तर म मैं कैसे निद्रामग्न रहू!
कानो म आवाज बिगुल की अब हर दिन आय
दिल भी दोहराय

वह ऐसा कुछ ही कहा करता और मुझसे पूछता—'रोदिग्रान, बिगुल बजता है न?' मैं उसे जवाब देता—'बजता है! खास तौर पर तुम्हारे मजेदार भोजनो की बदौलत। कभी जतून के हरे फल है, तो कभी उसी के काले रस म ही बनी समुद्रफेनी या फिर कोई अन्य स्पेनी जायकेदार चीज।' बस, इतना ही। मेरे पास बताने को और कुछ नही है।"

रोदिग्रान मफादियेविच जोरो से सिगरेट के कश खीचने लगे और देर तक खामोश रहे। अपने मेहमानो को बिल्कुल भूलकर ऐसे खामोश रहना उनके लिए कोई नयी बात नही थी। शायद ख्यालो मे खो गये थे, उन्हे वहा छोडी गयी कब्रे और वे जिन्दा लोग याद हो आये थे, जो अभी तक कटीले तारो के पीछे फासीसी बन्दी शिविरो में यातनाए सह रहे थे। शायद गहरे काले फ्राक पहने उन औरतो का ध्यान आ गया था, जो मरे बच्चो को छाती से चिपकाये हुए कार्दोवा प्रान्त के छोटे से रामब्ला गाव के धूल भरे चौक म पडी थी। अपने दिवगत दोस्त अफानासी के साथ रोदिग्रोन मेफादियेविच ने फासिस्ट विरोधी लोगो की इन बीवियो को देखा था, जिनकी पत्थर मार मारकर जाने ली गयी थी। उस समय एक दूसरे की आखो मे झाकते हुए वे दोनो समझ गये थे कि मस्ती से नाचती गाती दुनिया के आकाश पर कोई नई, अब तक अनदेखी अनजानी क्रूरता के बादल घिर रहे है। अभी तक कोई निश्चित रूप न धारण करनेवाली, अस्पष्ट और घने कुहासे

की ओट म छिपी छिपायी इस क्रूर शक्ति का फौरन और पूरे जोर मे विरोध करना जरूरी है, अन्यथा अपने छिछोरपन के कारण वर्तमान म ही जीने वर्तमान के ही गीत गाने अपने राष्ट्रपतियों और मन्त्रियो के बारे म चुटकुले तथा मजाकिया किस्से पढने तथा रोटी और मनो रजन के लिए सघर्ष करनेवाली यह दुनिया जल्द ही, बहुत जल्द ही धुआ उडते हुए खण्डहरो के अम्बारो म बदल जायगी, जिनके ऊपर स्वास्तिक के चिह्न वाले वडे-वडे बममार हवाई जहाज विजयी गडगडाहट के साथ उडान भरते दिखाई देंगे।

'तो शुरू हो गया!" उस समय रोदिओन मेफोदियेविच ने कहा था।

'पूरे जोर शोर स!" अफानासी ने जवाब दिया था।

'एक घटना और हुई थी, अपनी पैनी और कठोर दृष्टि से वालोद्या को ताकते हुए रोदिओन मेफोदियेविच कहते गये। "तुम्हारे पिता के साथ हम रामब्ला गाव म से गुजर रहे थे। वहा सभी फासिस्ट विरोधियो की बीवियो को बच्चो के साथ, यहा तक कि गाव के बच्चो के साथ धूल भरे चौक म बाहर लाकर दिन दहाडे पत्थर फेंक फेंककर मार डाला गया था। ये औरते एक दूसरी की कमर म बाहे डाले हुए सटकर खडी हो गयी और उन पर बडे-बडे पत्थर फेंके गये

"क्या इसके बाद भी चुप रहा जा सकता था?' रोदिओन मेफोदियेविच ने पूछा। "यहा तक कि मै और अफानासी भी, जो कोई बडे जिम्मेदार और राजकीय नेता नही है, इतना समझ गये कि यह मुसीबत टलनेवाली नही है कि यह पूरे जोर शोर स बढी आ रही है। और, जैसा कि वे मानते है, यह मुसीबत करवट यह ले रही है कि दो दुनियाए दो सामाजिक व्यवस्थाए साथ-साथ नही रहेगी। केवल वही एक सामाजिक व्यवस्था रहेगी, जो उनके विजेता उनके सामने लाकर रख देंगे। वहा उन्होने इस चीज को परखा कि यह पुरानी दुनिया हमारे विरुद्ध मिलकर एक होती है या नही? अगर एक नही होती, तो हम तैयारी करके अपना काम शुरू कर देंगे। कारण कि अगर वहा दुनिया विरोध करने के लिए एक नही हुई तो कही और कभी भी एक नही हो सकेगी। उसे, हिटलर को तो यही चाहिए

कि कोई भी, कही भी किसी के साथ एका न कर पाये। तब वह एक-एक पर हाथ साफ करना शुरू करेगा। बात तुम्हारी समझ मे आई?"

"आ गयी!" वोलोद्या ने जवाब दिया।

"वोद्का पी लो," रोदिओन मेफोदियेविच ने सलाह दी। "घर पर मेरा आज यह पहला दिन बडा अजीब-सा रहा है—वोदका ही पीता जा रहा हू। सचमुच बडी हैरानी की बात है कि इतना लम्बा अर्सा गुज़र गया और मैं एक बार भी ढग से नही सो पाया।"

रोदिओन मेफोदियेविच ने चिन्तित दृष्टि से अपने इर्द गिर्द देखा और सभी ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि यह मज़बूत, समुद्री हवाओ से पूरी तरह सलौना बनाया गया आदमी, जो हमेशा शान्त रहता था, जो जीवन की सभी परिस्थितियो मे मुस्कराया करता था यह गठीला बदन और सफाचट चेहरेवाला स्तेपानोव, जो गृहयुद्ध के दिनो की अटपटी कविता को याद करते हुए अपने को मज़ाक मे "बाल्टिक की कीर्ति" कहना पसन्द करता था, बहुत बुरी तरह से थक गया है।

"तुम्हे, ठण्ड तो नही लग गयी, पापा?" वार्या ने धीरे से पूछा।

रोदिओन मेफोदियेविच ने एक हाथ से उसे अपने साथ चिपकाते हुए दुखी आवाज़ मे कहा—

"स्वस्थ, बिल्कुल स्वस्थ हू, बिटिया। सिर्फ कुछ थक गया हू और मेरे दिमाग मे विचार भी कुछ चिन्ताजनक आते है। मिसाल के लिये, हमे अब भी ऐसा लगता है कि फासिज़्म हमारे करीब से वैसे ही निकल जायेगा जैसे बरखा के बादल। मगर वह हमारे करीब से निकल नही सकता। मैं बहुत पहले से, स्पेन जाने के पहले से ही सब कुछ बहुत ध्यान से देख रहा हू, सोच विचार कर रहा हू। अब इसी बात को लो कि जर्मन हवाबाज़, कोई गूगा एकेनर किस लिए अपने 'डी० आर० – ३ फ्रीड्रिख्सगाफेन' मे सयुक्त राज्य अमरीका पहुचा? अमरीकियो पर नैतिक दबाव डालने, यह बताने के लिए ही कि देखो, हम कितने ताक़तवर होते जा रहे है। जर्मन जहाज़ 'ब्रेमेन' ने अपने बन्दरगाह मे नही, न्यूयार्क के बन्दरगाह मे नीला फीता क्या जीता? दहशत पैदा करने के लिए ही तो! उनके हवाबाज़, उनके मुक्केबाज़,

22—1549

उनकी फिल्म – सभी जमन ताक्त, जमन विजय, जमन श्रष्ठता और जमन घूस का गाना गात है। और यूराप तथा अमरीका के बूढ़ लोग अपने नाचा म मस्त है थेलमान के जेल म हाने का क्या मतलब है? 'हज़ार साला साम्राज्य' – क्या अथ है उसका? जमन प्रतिनिधिमण्डल जेनवा स चला गया – किस लिए? अब लन्दन म अग्रेज जमन सहयोग सघ' की स्थापना की गयी है, अग्रेजा म हिटलर के विचारा का प्रचार किया जाता है, लाड माऊटटम्पल को, जो वर्तानवी रसायन उद्याग का जाना माना आदमी है, इसका अध्यक्ष बना दिया गया है। चेम्बरलन मिट्टी का माधव है। वह या तो बिका हुआ है या एकदम काठ का उल्लू है। इसलिए मैं ता यही समझता हू कि हमारी पथ्वी हमारे सिवा और किसी पर भरासा नही कर सकती।"

इसका मतलब है कि जग होगी?" वार्या ने पूछा।

"वडी महत्त्वपूण घटनाए घटनेवाली है," अग्लाया की ओर मुह करत हुए रोदिग्रोन मफादियेविच ने कहा, "हमारा कायभार यह है कि हमारी जनता खास तौर पर हमारे युवाजन किसी भी क्षण मोर्चे पर भेजे जाने के लिए तैयार रहने चाहिए। अग्लाया पेत्रोव्ना, तुम शिक्षा विभाग म काम करती हो तुम मरी सलाहा को ध्यान म रखा। अगर हम अपने युवाजन को विचारो की दष्टि से तयार नही करत, तो हमारे फौजी दफ्तर इस काम को सिरे नही चढा सकगे। हमारे यहा अभी भी इस मामले मे गम्भीरता की कमी है, लापरवाही दिखायी जाती है मगर मैं जो अब यह सब आखो से दख आया हू और अनुभव कर चुका हू, कह सकता हू कि काफी मुश्किल काम आनेवाला है हमारे सामन। शायद हम इस बात के लिए जाम पीना चाहिये कि जो मने देखा है और जो सौभाग्य से तुम लागा ने नही दखा हम अन्त म उस पर विजय पा लगे?

'यह किस पर विजय पाने की बात हो रही है?' दादा ने पलक झपकाते हुए पूछा।

"दुश्मन पर!' रादिग्रान ने मुस्कराये बिना उत्तर दिया।

"अगर ऐसी बात है तो मैं भी सब के साथ हू,' दादा ने कहा, जो वार्या की उपस्थिति म पीते हुए हमेशा घबराहट अनुभव करते थे। फिर अग्लाया को सबाधित करते हुए बोल– तुम चाय म

सूखी रसभरिया मिलाती हो न? यह समझदारी की वात है। खच भी कम होता है और गध भी विल्कुल घास फूस जैसी आती है।"

"चाय से तो घास फूस की गध नही आनी चाहिए," रोदिओन मफादियेविच न कहा। "रही कम खच की वात, तो तुम फूस ही उवाल लो और किस्सा खत्म।"

"फूस उवाल लो, फूस उवाल लो," दादा ने वेटे की नकल उतारते हुए कहा, "मेरे राजा को सभी जानते हैं, सभी जानते है। मैं भी सव कुछ जानता-समझता हू। तुम मफोदियेविच, स्पेन गये थे, स्पन। ऐसा एक देश है स्पेन। रेडियो पर हमेशा उसकी चर्चा होती रहती है। उसके वारे म तो कविता भी है। वार्या उसे अक्सर गुनगुनाती रहती है–'स्पेन मे है ग्रेनादा'   ठीक है न?"

और विजयी की भाति सभी ओर नजर दौडाकर दादा अचानक बेसुरी और औरतो जैसी पतली आवाज म गाने लगे–

काश, कि मैंने जाना होता
काश, समझ मैं इतना पाती,
तो मैं युवती शादी करके
आसू ऐसे नही वहाती

दादा ऐसा समझत थे कि लोग अगर मेज पर वैठे खा पी रहे है, तो मेजवान को रगीनी वनाये रखनी चाहिए और खुद ही सवस पहले गाना शुरू करना चाहिए। किन्तु शिप्ट गूगोव्ना ने इसी क्षण अपनी हडीली मुट्ठी से दीवार थपथपाई और इसलिए गाना अधूरा ही छोडना पडा।

"इनका यूरा तो बहुत ही चिडचिडा वच्चा है," वार्या ने कहा। "प्रोफेसर पेर्सीयानिनोव इसकी डाक्टरी देखभाल करता है। उसकी समझ मे ही नही आता कि किस कारण यह वच्चा इतना चिडचिडा है।"

"क्या कहने है ऐसे प्रोफेसरा के!" दादा वोले। "घर आते ही यूरा का चूतड चूमने लगता है। आह, कसे अच्छे हो तुम, ओह, कितने प्यारे वच्चे हो तुम! और इसके लिए उसे पचास रूवल दिये

जाते है। इतने पसो के लिये तो मैं कुछ और भी खुशी से करने को तैयार हो जाऊ "

"नही दादा, ऐसी बात नही है," वार्या न आपत्ति की। "प्राफेसर पर्सीयानिनोव तो अपने काम की बडी हस्ती है। तुम्हार इस्टीटयूट म भी पढाता है, ठीक है न वोलोद्या?"

'पढाता था मगर अब नही," वालोद्या ने जवाब दिया। "हस्ती वस्ती ता वह कुछ नही था, मगर माताए उसे इसलिए पसन्द करती है कि वह सभी को यही कहता है, मानो उमका बच्चा दुनिया म बेमिसाल है।"

'मतलब यह है कि बडे ऊच गुणावाला है?" रादिमोन मेफोदिय विच ने पूछा।

वार्या ने उदासी से कहा—"इतना बडा हाते हुए भी वह हमेशा हसता और मजाक करता रहता है।"

वालाद्या ने ता जसे यह सुना ही नही, इतना डूब गया था वह अपने ख्यालो मे। इस लम्बी और बोझिल शाम को वह माना अचानक कही खा जाता था और फिर वहका बहका-सा पूछा बठता था—

"आपन मुझसे कुछ कहा है क्या?"

रोदिग्रोन मेफोदियेविच उन्हे छाडने गये। दादा और वार्या बतन साफ करने के लिए घर पर ही रह गय। रोदियोन मफादियेविच ने वटो और फिर वोलोद्या की तरफ देखा, मगर कहा कुछ नही। जब वे बाहर निकल, ता सीढियो मे उन्हें बोरीस गूबिन मिला। सुदर, हृष्ट-पुष्ट नौजवान, बढिया ओवरकाट पहने, जिसके बटन खुल थे, और वह सिर पर टोप ओढे था।

"नमस्ते, वार्या घर पर ही है?' न जाने क्या, वोरीस ने वालोद्या से ही पूछा।

'घर पर ही है," वालोद्या न उदासीनता से जवाब दिया। वार्या के पिता ने फिर बहुत ध्यान से वोलोद्या की तरफ दखा।

'यह लडका कौन है?" रादिग्रान मफादियेविच न पूछा।

"यह, गूबिन बारीस। आपने उसे पहचाना नही? हमारे शहर म आजकल इसका बडा नाम है। कविताए रचता है, अखबार में समीक्षा छपती है और अगर इसके साथ सडक पर चल, तो अक्सर सुनन का

मिलता है–'यह है गूविन।' अच्छा लडका है और योग्य भी। वार्या इसकी वहुत तारीफ करती है, ज़ोर देकर कहती है कि यह बडा खुशमिज़ाज आदमी है और कुछ दूसरे लोगो की तरह सन्तापक नही है।"

"तो समझना चाहिए कि यह सन्तापक तुम हो?"

"शायद ऐसी ही है!" वोलोद्या ने मरी सी आवाज मे उत्तर दिया।

और जेवा म हाथ खासकर उदास तथा विचारो मे डूबा हुआ वह आगे आगे चल दिया। अग्लाया और रोदिग्रोन मेफोदियविच धीरे धीरे कुछ वाते करते हुए उसके पीछे पीछे चले आ रहे थे।

कुछ परिवर्त्तन

इस शाम के वाद रोदिग्रान मेफोदियविच लगभग हर दिन वोलोद्या के पास आने लगे। शुरू म वोलोद्या ने ऐसा ही साचा, मगर वाद म दुखद आश्चय के साथ यह समझ गया कि रोदिग्रोन मेफादियेविच उसके पास नही वल्कि उसकी वूग्रा अग्लाया के पास आते है। वार्या के पापा वोलोद्या की वूग्रा को ही देर तक वहुत कुछ बताते सुनाते रहते और वह अपना सुदर चेहरा हथेलियो पर टिकाय तथा कपडे के कढे हुए शेडवाले टेवल लैम्प पर नज़र जमाये सुनती रहती। आस्तीना पर सुनहरी पट्टियोवाली जहाजिया की वर्दी पहने, गहरी लालिमा तक सवलाये चेहरे पकी कनपटिया और घनी, काली भौहोवाले रोदिग्रोन मेफोदियेविच वूग्रा के कमरे म एक सिरे से दूसरे सिरे तक चहलकदमी करते हुए कुछ वताते रहते, हसते रहते और वूग्रा से कुछ भी न पूछते। वोलोद्या तो जानता था कि वूग्रा को कुछ भी वताना-सुनाना कितना आसान और सुखद होता है। एक दिन उसने वूग्रा को अपने लिय नही, वल्कि किसी दूसरे व्यक्ति के लिये पहली बार गाते सुना। सम्भवत उन्हे यह पता नही चला था कि कसे दवे पाव वह भीतर आया था। वालोद्या हाथो म तौलिया लिये गुसलखाने मे वैठकर सुनता रहा। अग्लाया धीमी आवाज म, किन्तु ऐसी सरलता

ग्रौर निश्छलता से गा रही थी मानो किसी के सामने ग्रपना दिल निकालकर रख रही हो। वह ऐसे गा रही थी, जैसे केवल रूसी नारिया ही गा सकती है—

> कहो रात क्या तुम ऐसी गुस्से म ग्रायी?
> नही एक भी तारा ग्रपने सग म लाया!
> किसके सग मैं ग्रपनी सूनी सेज सजाऊ?
> किसके सग पतझर के सूने दिवस विताऊ
> नही पिता है ग्रौर नही है मेरी माता
> प्यारे, दिल के राजा से ही मेरा नाता
> लकिन वह भी नही प्यार से साथ निभाता

वूग्रा का गीत खत्म होते ही वोलोद्या ने फौरन जार से नल खाल दिया ग्रौर पानी शार करता हुग्रा टव म गिरने लगा। किन्तु वह गुसलखाने का दरवाजा वन्द नही कर पाया। ग्रग्लाया नया ग्रौर सुदर फ्राक पहने वाहर ग्राई। उसकी ग्राखो म खुशी की चमक थी। उसने पूछा—

"काफी दर हो गयी क्या तुम्ह ग्राये हुए?'

'जव ग्रापने गाना शुरू किया था, तभी ग्राया था। ग्रापका गाना सुना है! उसने उदासी से जवाव दिया।

"मेरे वारे म वुरा नही सोचो!' वूग्रा ने ग्रनुरोध किया। "वुरा नही सोचो मेरे वच्चे

वोलोद्या हैरान हाता हुग्रा उसकी ग्रोर देख रहा था। ग्राज जसी ग्रग्लाया को उसन पहल कभी नही देखा था। वूग्रा के वारे म उसने लोगा को यह कहते सुना था कि वह सुदर है खुद उसने भी यह महसूस किया था, किन्तु वह इतनी सुदर ग्राकषक ग्रौर प्यारी है, इसकी तो उसन कल्पना तक नही की थी।

छल-छल की ग्रावाज करता हुग्रा पानी नीली झलकवाले टव का भरता जा रहा था। उभरी हुई कण्ठास्थि तथा वढी हुई दाढ़ीवाला दुवला-पतला वालाद्या जाघिया पहन खडा था ग्रौर ग्रग्लाया ग्रपने गम हाथ स उसकी कोहनी थाम हुए प्यार भरी ग्रौर मुश्किल स सुनाई दनेवाली फुसफुसाहट म जल्दी-जल्दी उसस कह रही थी—

"मैं तो बहुत अर्से से, बहुत पहले से, बहुत ही अधिक समय से उसे प्यार करती हू। मगर तब मेरे और उसके लिए भी कुछ करना मुश्किल था। मगर अब मैं खुश हू, बहुत खुश हू, मेरे बच्चे! जरा सोचो, तुम खुद ही इस बात पर विचार करो कि ग्रीशा तो सन् इक्कीस म मारा गया था, तुम भी देर-सवेर मुझे छोडकर चले जाओगे, वह भी अब एकाकी है, तो भला किसलिये हम—वह और मैं—एक दूसरे को खो दें? तुम्हारी आखें कह रही है कि तुम मेरी भत्सना करते हो लेकिन किस कारण?'

"मैं भत्सना नही कर रहा हू," बूआ की चमकती आखो म झाकते हुए वोलोद्या ने जवाब दिया। "मैं तो ऐसे ही. आप सभी लोग मुझे छोडते जा रहे है वार्या भी आप भी और पीच भी। मुझे छोडकर नही जाइये, बूआ," उसने अनुरोध किया। "मैं अकेला कैसे रहूगा? उदासी महसूस होने लगती है।"

आन की आन म पानी टब से नीचे छलक गया और टाइला के फश पर वोलोद्या का पाव फिसल गया। इसी वक्त रोदिओन मेफोदियेविच कमरे से बाहर आये और शिकायती आवाज म बोले—

"सभी ने मुझे त्याग दिया, रोने को मन होता है।"

'देखते हो न," अग्लाया ने रोदिओन मेफोदियेविच की ओर सकेत करते हुए कहा। "मैं अब क्या करू?'

खाने की मेज पर वोलोद्या ने मामले की जाच-पडताल की और रोदिओन मेफोदियेविच तथा अग्लाया ने किसी तरह की आनाकानी के बिना यहा तक कि खुशी से सब कुछ स्वीकार कर लिया।

"मतलब यह कि पत्र-व्यवहार चलता था?" वोलोद्या न पूछा।

"जरूर चलता था,' बूआ न जवाब दिया। "यह तुम रोटी पर मक्खन नही, पनीर लगा रहे हो। मक्खनदानी स मक्खन ले लो।"

"जब आप लेनिनग्राद गयी थी, तब भी आप लाग मिले थे?"

'हा, मिले थे," रोदिओन मेफोदियेविच ने कहा। 'हैर्मिटेज गय थ, रूसी सग्रहालय म भी, और सट इसाआक गिरजे क घटाघर के बुज तक भी चढे थे।"

"इस उम्र म!"

"बेहया न हो ता!' बूआ न कहा।

'इनके स्पेन जाने के बारे मे भी आपको मालूम था?"

"स्पेन के बारे मे मालूम नहीं था, मगर ऐसा अनुमान जरूर था," रोदिग्रोन के प्याले मे चाय डालते हुए अग्लाया ने कहा। "रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने मुझसे यह छिपाकर कोई बहुत समझदारी का काम नहीं किया।"

"मैं नहीं चाहता था कि तुम बेकार चिन्ता करो।"

"तो अब क्या होगा?' वोलोद्या ने पूछा। "व्यक्तिगत रूप से मैं तो इस बात के खिलाफ हूं कि आप लोग यहां से चले जायें।"

"वार्या और तुम्हारे बीच क्या गड़बड़ है?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने पूछा।

'कोई गड़बड़ नहीं' वोलोद्या बोला। "शायद यह ठीक है कि मेरे साथ निबाह करना ज़रा मुश्किल काम है। मुझे जीवन में जो कुछ तुच्छ और मूर्खतापूर्ण लगता है, मैं उसके बारे में वैसा ही कह देता हूं। और इसलिये तानाशाह माना जाता हूं। वार्या तो मुझे तानाशाह कहती भी है। इसके अलावा वह उम्र मे मुझसे छोटी भी है और दूसरी बातों मे भी मुझसे भिन्न है। मैं उसकी आलोचना नहीं करता हूं रोदिग्रोन मेफोदियेविच मैं तो सिर्फ उसके ढंग से जीवन को स्वीकार नहीं कर सकता।"

झूठ बोलते हो, तुम उसकी आलोचना करते हो!' रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने कहा। 'वैसे तुम बेकार ही उसकी आलोचना करते हो। खो दोगे और फिर ऐसी नहीं पा सकोगे। मैं तुम्हारा रिश्ता करवाने के लिए नहीं, बल्कि मालूम नहीं, कैसे वह क्योंकि तुम्हारी इज्जत करता हूं इसीलिये कहता हूं कि इन्सान से मांग तो करो मगर इन्सान की तरह।"

"मैं हर किसी से वैसा ही इन्सान बनने की अपेक्षा करता हूं जैसे मेरे दिवंगत पिता थे," अचानक पीला पड़ते हुए वोलोद्या ने कहा। 'सबसे पहले तो खुद अपने से ही वैसा बनने की मांग करता हूं। सभी से ऐसी उम्मीद रखता हूं। मेरे लिए दूसरा ढंग हो ही नहीं सकता।'

रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने अग्लाया और फिर वोलोद्या की तरफ देखा।

"दिमाग तो नही चल निकला है तुम्हारा ?"

"नही," वोलोद्या ने जवाब दिया। "बिल्कुल ठिकाने पर है मेरा दिमाग। फिर भी ऐसा मानता हू," अचानक अपनी आवाज़ सुनकर उसे ऐसा लगा कि वह बिल्कुल दिवगत प्रोव याकोव्लेविच पोलूनिन के ढग से बोल रहा है, "फिर भी अपने को यह मानने का अधिकार देता हू कि मानव के जीवन का सार इसी बात म निहित ह कि वह अपने से अधिकतम की माग करे, उसी तरह से, जैसे मेरे पापा न उस समय खुद से ऐसी ही माग की, जब उन्हान सात 'जुकरो' के मुकाबले म अकेले उडान भरी। यह तो सच है न कि उन्होंने अपनी बलि दने के लिये तो ऐसा नही किया था ? उन्हान केवल अपना कत्तव्य पूरा किया हो, ऐसी बात भी नही है। उस वक्त उन क्षणा म उन्हाने विश्वक्रान्ति के भाग्य की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली थी।'

"तुम इतने उत्तेजित न हाओ!" बूआ ने कहा। "एकदम ज़द हो गये हो।"

"मैं उत्तेजित नही हू। मैं तो सिफ हमेशा यही सोचता हू कि अगर सभी मेरे पापा जैसे होते, तो शायद अब तक जगें खत्म हो गयी हाती, हम केसर का वैसे ही इलाज करते होत, जैस जुकाम या कलेजे म जलन का और तपेदिक का नाम तक भूल जाते। बात यह है कि अधिकतर लाग तो अपनी भलाई की ही बात सोचते है और यह नही समझ पाते कि समाज की भलाई से ही व्यक्ति की भलाई हाती है, सो भी इतने शानदार पमाने पर कि व्यक्ति कभी उसकी कल्पना तक नही कर सकता "

वोलोद्या एक ही सास मे प्याले म बची चाय पी गया और अपनी घनी बरौनिया का झपकाते हुए उसने अनुराध किया—

"मैं माफी चाहता हू। मगर कभी-कभी बडी मुश्किल सामन आ जाती है। आज इस्टीट्यूट मे एक घनचक्कर न मुझे गद्दार और यह कहा कि मुझम साथी की भावना बिल्कुल नही है। वह इसलिए कि मैंन गानिचेव से यह कहन से इन्कार कर दिया कि इस व्यक्ति को दुबारा परीक्षा ले ली जाये। बडी मुश्किल का सामना था और इन्कार इसलिय किया कि अच्छी तरह स जानता हू कि यह आदमी हर हालत म यही शहर म रहेगा, इतना ही नहीं, हुक्म भी चलायगा, मगर जान

उसके पास बिल्कुल थोडा है, दिमाग मे भूसा भरा है और विचारों म कूपमडकता है।"

"यह तुम येव्गेनी का जिक्र कर रहे हो न?" रोदिग्रोन मफोन्यिेविच न पूछा।

"मैं सोने जा रहा हू!" प्रश्न का उत्तर दिये बिना वोलोद्या न कहा। "थक जाता हू।'

अपन कमरे के दरवाजे को अच्छी तरह से बद करके उसने हास्टल मे पीच को टेलीफोन किया। वह चुनलाया हुआ टेलीफान पर आया।

'कहो शादीशुदा होने म बहुत मजा है न?" वोलोद्या न पूछा।

"भाड म जाओ!' पीच न जवाब दिया।

"नयी नयी शादी की मस्ती म होते हुए भी यह बात ध्यान म रख लो कि अगर कल भी तुम पढने नही आओगे, तो हमारे बीच हमेशा के लिये सब कुछ खत्म हो जायगा। ओगत्सोव मुझे इशारा भी कर चुका है कि वह तुम्हारी जगह लेना चाहता है।"

"तुम जैसा चाहो कर सकते हो।"

'कल आओगे?"

"आऊगा" पीच ने कहा और थोडा रुककर इतना और जोड दिया, 'यह सही है कि तुम हो बडे टेढे आदमी, वोलोद्या!"

"मैं सहमत हू!" वोलोद्या ने प्रफुल्लता से उत्तर दिया।

और इसी वक्त रोदिग्रोन मेफोदियेविच हाथ म सिगरट लेकर अग्लाया के कमरे म चहलकदमी करते हुए यह कह रहे थे कि यो तो वोलोद्या की बात सही है, लेकिन सार की दृष्टि से नही, अभिव्यक्ति के रूप की दृष्टि से वह कुछ बौखलाया हुआ है।"

"ऐसे लोग कभी-कभी अपने सिर मे गोली भी मार लेते हैं!" अग्लाया ने उदासी से कहा।

"ऐसे कभी यह नही करते!" रोदिग्रोन मेफ़ोदियेविच न इतमीनान स जवाब दिया।

रोदिग्रोन मेफोदियेविच के जाने के बाद अग्लाया ने नया फ्राक उतार दिया गम कपडे पहन वोलोद्या को चैन से सास लेते सुना और सडक पर आ गयी। बस अभी भी चल रही थी, वह स्टेशन पर जानेवाली बस म सवार हो गयी और अपने विचारो म डूबी-खोयी हुई स्टेशन के निकटवाले चौक म पहुच गयी।

उन दिना यहा कतार मे वग्घिया खडी रहा करती थी। उनस पुरान चमडे और तारकोल की गध आया करती थी। वहा, छाटे स वागीचे के पीछे, जिसकी जगह अब गोल पाक था, रेलवे स्टेशन के निकटवाला वाज़ार होता था। वहा भुना हुआ मेदा, मछली, घर के वने सासेज, अचारी खीरे और पीली, घर की वनी शराव विका करती थी। यह रहा चौक, यह रहा नगर के भूतपूव मेयर वयाज़ेव का पत्थर का वना हुआ मकान और यह रहा उप-भवन, चवूतरे और शटरावाला लकडी का छोटा सा घर, जिसके फाटक पर भोज वक्ष खडा है। कितना वडा और सुदर हो गया है यह भोज वक्ष, कितनी खुशी की वात है कि यह सुरक्षित रहा है और देर से आनेवाले तथा ठण्डे वसन्त के वावजूद उसकी कोपले निकलने लगी ह!

अग्लाया ने सहसा अनुभव किया कि उसकी आखे आसुआ से तर हो गयी है वहा, उस भोज वक्ष, चवूतरेवाले घर के करीव ही इलाके (गुवेनिया) के असाधारण आयाग (चेका) के अध्यक्ष काद्रात्येव, ग्रीशा कोद्रात्येव ने कुछ दिनो के लिए मास्को जाते समय उससे यह कहा था कि जब वह लौटेगा, तो वेशक अग्लाया चाहे या न चाह, "गुपचुप शादी" होगी। तव उसन यही अजीव से शब्द "गुपचुप शादी' कह ये और मानो मन मारकर यह स्पष्ट किया था—

"मतलव यह है कि तुम पूरी तरह से मेरे यहा आ जाओगी। रही लोगो का इकट्ठा करने की वात—तो मारो इसे गोली। वे पी पिलाकर "शराव कड़्वी है, दुल्हा दुल्हन चूमकर मीठी करे" चिल्लान लगेगे। तुम मेरी वीवी हो—किसी और को इसस क्या मतलव है? तुम आ जाओगी न?"

अग्लाया न सिर झुकाकर हामी भरी थी।

"तुम पूरी तरह से आ जाओगी!" उसन इन शब्दो को दोहराया। "आ जाओगी और हम नया जीवन शुरू करेगे। लेकिन वह नयी, कम्युनिस्ट नैतिकता पर आधारित हागा। अतीत के भयानक पूर्वाग्रहा के लिय उसम कोई जगह नही होगी। प्यार ही शादी है और प्यार के विना शादी का कोई अथ नही। वह तो सिफ ढोग है, वुर्जुआ लोगा का पाखण्ड है। यह तो 'कोठो' जसी वात है।"

"कोठे—कसे कोठे?" युवती अग्लाया ने पूछा था।

"यह मैं तुम्हे बाद म, मास्को से लौटन पर समझाऊगा," इलाक़े के असाधारण आयोग के अध्यक्ष कोद्रात्येव ने कडाई से उत्तर दिया। "अब आगे सुनो। अगर मुझसे प्यार न रहे, तो डरना घबराना नही। किसी दूसरे साथी के साथ नयी जिदगी शुरू कर लेना। ज़ाहिर है कि मेरे लिये तो यह कोई खुशी की बात नही होगी। लेकिन हमारा नया समाज प्यार म असमानता बर्दाश्त नही करेगा। शादी के मामल म दया तरस को भी वह सहन नही करेगा। मैं भी ऐसा मानता हू और राजनीतिक ज्ञान-परिषद के व्याख्यानदाता साथी खोलोदोलिन ने भी ऐसा ही कहा था। तुमने उसका भाषण नही सुना?"

"नही," अग्लाया ने अपराधी की तरह उत्तर दिया। 'उस दिन हम मशीनगन से चादमारी करना सीख रही थी।"

"लौटने पर मै तुम्हारे सैन्य सचालक की भी जरा अक्ल ठिकाने करूगा। हमेशा वह राजनीतिक ज्ञान-परिषद के काम म बाधा डालता रहता है। अब आगे सुनो "

वे देर तक भोज वृक्ष के पास खडे रहे। वह चमडे की जाकट अपनी बाह पर डाले और बगल म पीला पिस्तौल-केस लटकाये था और अग्लाया जाली का फ्राक पहने थी। यह उसका सबसे बढिया, सबसे अच्छा और सुन्दरतम फ्राक था। उसन खुद ही जाली को गहरे नीले रग म रगा उसे कलफ लगाया और उसके लिये सफेद कॉलर भी लिया था। और ऐसा प्यारा बन गया था यह फ्राक कि वह उसे पहनकर लोगो म जाती हुई लजाती थी। शायद यही शहर भर मे सबसे अच्छा फ्राक था। और कोद्रात्येव हैरानी तथा खुशी से अग्लाया को देखता हुआ सिर हिला रहा था और कह रहा था— 'भई वाह, भई वाह! किस कपडे का है यह फ्राक?"

गाडी छूट गयी। ग्रीशा कोद्रात्येव के लौटन के दिन अग्लाया उचा नदी क सुखद पानी मे देर तक नहाती, तैरती और सोचती रही—बस खत्म हो गयी तेरी जवानी की मस्ती, अग्लाया, खत्म हो गयी मौज बहार। अब तू आखिरी सास तक बीवी बनी रहेगी। बेशक एरो-गरी औरत नही बल्कि नागरिक, फिर भी शादीशुदा औरत ही

आधी अधड मान क पहल उस उमस भरी शाम को अग्लाया न अपनी पोटली बटोरी और यहा चबूतरेवाले इस घर म कोद्रात्येव क

पास आ गयी। ग्रीशा अपनी सैनिक वर्दी पहने और पेटी कसे हुए कमरे के बीचोबीच खडा उसका इन्तजार कर रहा था। कमरे को ख़ूब अच्छी तरह स भाडा-बुहारा गया था। दीवार पर काल मावस का चित्र टगा था और उनकी दष्टि कही दूर जमी हुई थी। तग सी चारपाई के निकट रखी छोटी-सी तिपाई पर किताबा का ढेर लगा था और छाटी सी मेज पर मामवत्ती फडफडा रही थी। कोद्रात्येव की आखे फैली फैली-सी थी और अपने पूरे सक्षिप्त वैवाहिक जीवन म वह अग्लाया को एक अजूबे की तरह ही देखता रहा। अपने मृत पति को वह देख नही पाई, क्याकि उस वक्त खुद टाइफस से बिस्तर म पडी थी और वह इसी रूप मे सदा के लिए उसकी आखा के सामने रह गया—शान्त और महमा-सा उसके सामने खडा, उसे एकटक देखता हुआ। ऊपर, आसमान मे उमड रहे तूफान की हल्की गडगडाहट सुनाई दे रही थी, मगर वह पूरे जोर शार से टूट नही पा रहा था।

"अब हमारे आगे के जीवन के बारे मे मरी बात सुनो," ग्रीशा ने अपना चेहरा जरा दूसरी ओर करते हुए कहना शुरू किया, ताकि अग्लाया के बच्चे जैसे मासूम चेहरे की तरफ उसका ध्यान न जाये। "बहुत ही कठार काम से मेरा सम्बध है और मेरे पास सभी तरह के लोग इस इरादे से आते है कि किसी तरह हमारी इस्पाती कानून-व्यवस्था को भग कर सके। अगाशा, कभी और किसी से भी कुछ नही लेना, किसी भी तरह का तोहफा या उपहार स्वीकार नही करना। इनके बारे मे भूल जाओ! इसी तरह यह भी ध्यान मे रखना कि हमारे पास जरूरी कामा के लिए दो घोडावाली फिटन है। घाडे कुछ बुरे नही है, उन्हे अच्छी तरह खिलाते पिलाते है, ताकि सुदर लगे। अपनी व्यक्तिगत जरूरता के लिए हम फिटन का कभी इस्तेमाल नही करते। वह हमारे जरूरी कामो के लिए ही है। अगर तुम्हे कभी इस फिटन मे देख लूगा, तो चाहे वह कोई भी जगह क्या न हो, वही तुम्हारी बेइज्जती कर दूगा।"

और इसके बाद पूछा—"तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है?"

"गुपचुप शादी" की उस शाम का उन्हाने अग्लाया द्वारा अपने साथ लाई गयी सूखी डबल रोटी खायी और दूध पिया। और कोई छ महीने बाद फिटन साथी कोन्द्रात्येव को लेने आई और चेका के कई लाग

भूतपूर्व नवाब ताड्डे का, जिसने बहुत सी हत्याएं की थी, बलात्कार किये थे और डाके डाले थे, पकडने गये। ग्रीशा कान्द्रात्येव वहां से लौटकर नही आया। ताड्डे के सहायक ने अन्तिम मुठभेड़ में हथगोला फेंककर चेका के अध्यक्ष और खुद को भी मौत के मुंह में पहुंचा दिया।

टाइफस के बाद अग्लाया ने अपने को विधवा पाया। पति की याद में उसे ग्रीशा का नाम खुदी हुई पिस्तौल भेंट की गयी और पढने के लिए मास्को भेज दिया गया। फाटक के पास भोज वृक्षवाले इस घर से अग्लाया तभी अद्भुत मास्को चली गयी थी और फिर कभी यहां नही आई थी।

"क्या करना चाहिए मुझे?" भोज वृक्ष के तने के साथ कंधे से सहारा लेते हुए उसने पूछा। "बताओ तो?"

उसकी आंखों के सामने ग्रीशा और रोदिओन मेफोदियेविच के चेहरे गड्डमड्ड हो रहे थे। अतीत का वह संक्षिप्त सुखद समय वर्तमान के साथ गड्डमड्ड हो रहा था। क्या वह कोन्द्रात्येव के सामने अपराधी है? किसे पूछे? किससे पूछे? कौन जवाब देगा?"

रेलवे स्टेशन के सार्वजनिक टेलीफोन से उसने रोदिओन मेफोदियेविच को टेलीफोन किया। वे तो जैसे टेलीफोन की घण्टी बजने का इन्तजार ही कर रहे थे। फौरन रिसीवर उठाकर खरखरी सी आवाज में बोले—

"स्तेपानोव सुन रहा है।"

"जब भी चाहो, हम चल सकते है," अग्लाया ने धीमी आवाज में कहा। "मैं तो शनिवार से भी छुट्टी ले सकती हूं।"

"ठीक है!" रोदिओन मेफोदियेविच ने धीरे धीरे और गम्भीरता से उत्तर दिया। "सारी तैयारी कर ली जायेगी।"

रिसीवर रखकर वे खाने के कमरे में लौट गये, जहां झल्लायी-सी बैठी वार्या पढ रही थी। रोदिओन मेफोदियेविच ने सिगरेट जला ली और कमरे के एक सिरे से दूसरे तक चहलकदमी करते हुए वार्या को यह सूचना दी—

'मैं यहां से जा रहा हूं, वार्या।'

"हुं, हुं,' वार्या ने उत्तर दिया।

"अकेला नही जा रहा हूं।'

"अग्लाया पेत्रोव्ना के साथ?" भूगभशास्त्र की पाठ्यपुस्तक से नजर ऊपर उठाये विना ही उसने पूछा।

"हा, उसके साथ ही।"

वार्या ने किताव एक ओर रख दी उठी पिता के विल्कुल करीव आ गयी, उनके गले म वाह डाल दी और तीन वार जोर से उनका गाल चूम लिया। और शनिवार को वार्या, वालाद्या, यव्गेनी और इराईदा तथा वोरीस गूविन—य सभी अग्लाया तथा रोदिओन मेफोदियविच को साची नगर जान के लिए स्टेशन पर छोडने गय। उस रात का वसन्त के आरम्भ का आभास हा रहा था, वह गम, नम और अधेरी थी। सफेद चाकलेटी रग के वढिया केविन की खिडकी खुली थी, उसके करीव क्लफ लगे नप्किन से ढकी छाटी सी मेज पर एक शीशे के गिलास म चटक पीले रग के छुई मुई के फूल नजर आ रहे थे और उनके निकट ही शेम्पेन की एक वोतल रखी हुई थी।

"अगर आदमी सफर करे, तो ऐसी ही वढिया गाडी म," लालच भरी जिज्ञासा से भीतर झाकते हुए यव्गेनी न कहा। "देखो ता, साथियो, कितन अच्छे ढग और आरामदेह तरीके से यहा हर चीज की व्यवस्था की गयी है। नही, नही, वुजुआ लाग जिन्दगी के मजे लूटना जानते थे।"

आस्तीनो पर सुनहरी पट्टियावाला वढिया सिला हुआ गहरे नीले रग का सूट और मुलायम चमडे का एक पतला दस्ताना पहने रोदिओन मेफादियेविच प्लेटफाम पर खडे थे और अपनी उम्र से कही कम के नजर आ रहे थे। अग्लाया कालीना, गिलाफो, कासे और विल्लौरवाले छोटे से केविन की खिडकी से वाहर झाकती हुई वालोद्या से कह रही थी—

"गम भाजन हर दिन और हर हालत मे खाना सुना तुमने? इसमे आलस नही करना। इतना समझ ला कि तुम्हारे लिये यह एकदम जरूरी है। तुम दुवले-पतले हा, कम खाते हो, थके हुए और चिडचिडे हो, आर फिर इन्स्टीट्यूट का आखिरी इम्तहान सिर पर है। इसके अलावा न सिफ खुद ही पढते हा, हमशा किसी और को भी पढाते रहते हो। तुम्ह शारवा जरूर खाना चाहिए, सुनते हो न? हमारी पडोसिन स्लेप्नेवा तुम्हारे लिये सभी कुछ खरीदकर लायेगी और खाना, आदि वनायगी। लेकिन तुम भोजन करना मत भूलना और सिफ डवलरोटी से ही काम नही चलाना। सुन रह हो न?'

"वार्या, तुम इसका ध्यान रखना!" रादिग्रान मेफादियेविच ने फुसफुसाकर कहा।

"व्लादीमिर, तुम मरे यहा हर रोज खाना खान ग्रा जाया करो!" गूबिन ने प्रस्ताव किया। "घर के रख रखाव म तो मेरी मा का काई जवाब ही नही।"

"खाना तो वह हमारे यहा भी खा सकता है!" येव्गेनी ने बडी उदारता दिखाते हुए कहा। "बस, ग्रपन हिस्से का खच दे दिया करता ग्रार मामला खत्म "

वार्या ग्रपन होठा को काटती हुई खामोश रही। वोलोद्या की जिन्दगी मे उसका तीसरा या शायद पाचवा स्थान था। उसके लिए सबसे महत्त्वपूण था विज्ञान, फिर सस्थान, फिर भाव, विचार, पुस्तके ग्रौर ग्रय चीजे भी। इन सब के बाद, पूरी तरह फुरसत होन पर ही उसकी बारी ग्राती थी। फुरसत के वक्त भी तब, जब उसके करन के लिए ग्रौर कुछ न हो या जब उसके विचारो को सुननवाला ग्रौर कोई न हा।

बोरीस गूबिन ने वार्या का हाथ ग्रपने हाथ म ले लिया ग्रौर वार्या ने भी हाथ पीछे नही खीचा—देखें, वालोद्या देखें। मगर उसन यह भी नही देखा। वह तो फिर से ग्रपने ख्यालो की दुनिया म खोया हुग्रा था, मानो प्लेटफाम पर ग्रकेला ही खडा हो। किस चाज के बार म सोच रहा होगा वह इस वक्त? किसी ग्रतडी के बारे मे?

"हम ग्रभी भी फिल्म दखने जा सकेगे!" बोरीस ने फुसफुसाकर कहा।

"ठीक है!' वार्या ने सिर झुकाकर हामी भरी।

"तो ग्रब हम तुम लोगो से विदा लते है," रोदिग्रान मेफोदियेविच ने कुछ तनावपूण स्वर म कहा। "मैं तो काले सागर से ही ग्रपन बाल्टिक बेडे की तरफ चला जाऊगा।"

"ग्रच्छी बात है!" वार्या न उत्तर दिया।

लम्बे सफर की गाडी धीरे धीरे ग्रपनी लम्बी मजिल की ग्रार चल दी। वालाद्या किसी की भी प्रतीक्षा किय बिना प्लटफाम स चौक का तरफ़ चल दिया।

'मैं सिनमा देखन नही जाऊगी!" वार्या बाली।

"तो कहा चलोगी?" वोरीस ने वार्या की इच्छा की चिन्ता करते हुए पूछा।

"कही भी नही जाऊगी। मैं थक गयी हू।"

"तो तुम्हारे यहा चलकर चाय पियें?"

"चाय भी हम नही पियेंगे। कह तो दिया कि थक गयी हू।"

ग्रौर इसी वक्त येव्गेनी ग्रपनी वीवी इराईदा से कह रहा था—

"ग्रगर निजी ग्रौर सावजनिक हितो का ढग से ताल-मेल विठा लिया जाये, ग्रगर ग्रादमी सिफ ग्रादर्शों का ही पुतला न वने, मूखता न दिखाये, बेकार चीची ग्रौर हाय-तोवा न करे ग्रौर हर मामले की नज़ाकत को समझ सके, तो वढिया कारे, रेलगाडी के वढिया डिब्वे, ताड के वृक्ष ग्रौर सागर की सुखद लहरें वैसे ही हर दिन की चीज़े वन सकती हैं, जैसे हर सुवह को नाश्ते का दलिया। क्या, ठीक है न, मरी जान? ग्रौर हा, क्या तुम्ह ऐसा नही लगता कि तुम ग्रपनी कुछ रगीनी खोती जा रही हो? ठीक मौके पर ग्रादमी मुस्करा भी ता सकता है, ज़रूरत होने पर कुछ चुहलवाज़ी भी दिखा सकता है ग्रौर ढग के कपडे भी पहन सकता है। मेरी मा के यहा चली जाग्रो, उसकी कुछ लल्लो चप्पा कर लेना ग्रौर वह खुशी से तुम्हारे गर्मी के ग्रोवरकोट से लम्बी जाकेट वना देगी। ग्राजकल तो उसी का फैशन है।"

"मेरे सिर म दद हो रहा है," इराईदा ने कहा।

"तुम्हे ता हमेशा कही न कही दद होता रहता है, मेरी प्यारी," येव्गेनी ने घृणित, किन्तु धीमी ग्रौर माना कुछ प्यार भरी ग्रावाज मे जवाव दिया। "वैसे तो तुम विल्कुल स्वस्थ हो, खाती पीती भी ढग से हो, कुल मिलाकर पूरी तरह ठीक ठाक हो। बस, ग्रादमी को ज़रा ग्रपने ग्रापको ढीला-ढाला नही होने देना चाहिए।"

इसी वीच लम्वे सफरवाली गाडी एक स्टेशन लाघ चुकी थी। गाडी क गलियारे म खडे हुए रादिग्रोन मेफोदियेविच ने ग्रपनी जहाज़िया की टोपी उतारी ग्रौर सफेद रूमाल से ग्रच्छी तरह माथा पोछा। लेकिन म बडी फुर्ती से बिस्तर लगाती हुई कडक्टर लडकी ने पूछा—

"शायद यह महिला ग्रपनी जगह वदलना पसन्द करेगी? बगल के डिब्वे मे भी एक मदाम ग्रकेली जा रही है।"

"नही, यह महिला ग्रपने पति के साथ यही रहगी," रोदिग्रान

मेफोदियेविच ने मुस्कराये बिना दृढ़ता से कहा। "और बग़ल के डिब्बे वाली मदाम अकेली ही सफर करेगी। इसके अलावा, महिला और मानव में बड़ा फर्क होता है। आप सहमत हैं न, साथी कंडक्टर?"

कंडक्टर लड़की ने रोदिम्रोन मेफ़ादियेविच के चेहरे को ध्यान से देखा, उनकी आंखों में मज़ाक की झलक अनुभव की, वक्ष पर लगे तमगे और आस्तीनों की सुनहरी पट्टियों की तरफ उसका ध्यान गया और वह झेंप-सी गयी।

"अगर कुछ चाय मिल जाये, तो अच्छा रहे, हमारे डिब्बे की मालिकिन।"

अग्लाया केबिन के कोने में घर की भांति हथेलियों पर मुंह टिकाये कुर्सी पर बैठी थी। उसका चेहरा ज़र्द था और वह मुस्करा रही थी। खिड़की में से आरम्भ हो रहे वसन्त की गंध, खेतों की गर्म और नम हवा तथा इंजन का कड़ुवा धुआं अन्दर आ रहा था। छुई-मुई के पीले फूल मेज़ पर हिल डुल रहे थे।

"कोई सैंडविच, कचौड़ियां, नशीले और गैरनशीले पेय खरीदना चाहता है क्या?" किसी ने काम-काजी ढंग से गाड़ी के गलियारे में ऊंची आवाज़ लगायी।

"तो ऐसा मामला है," रोदिम्रोन मेफ़ादियेविच ने सोफ़े के सिरे पर बैठते और अग्लाया की काली तथा अनबूझ आंखों में आदर, प्यार और गहन दृष्टि से झांकते हुए कहा।

"कैसा मामला है?" अग्लाया ने जानना चाहा।

रोदिम्रोन मेफ़ोदियेविच खामोश रहे।

"तो ऐसा मामला है, यों मामला है," अग्लाया ने उन्हें चिढ़ाते हुए कहा। "अपने आपसे तो शर्माना छोड़ो। शब्दों से नहीं डरो। 'प्रेम' शब्द भी है इस दुनिया में। तुम मुझे प्यार करते हो, मैं तो यह समझती हूं। हम अब जवान लोगों जैसे तो हैं नहीं, शब्दों का मूल्य समझते हैं। कहो मुझसे कि तुम मुझे प्यार करते हो।"

"कि तुम मुझे प्यार करते हो," मन्त्रमुग्ध में रोदिम्रोन मेफ़ोदियेविच ने अपनी खरखरी-सी आवाज़ में अग्लाया के शब्दों को दोहरा दिया।

"यह कहो – मैं तुम्हें प्यार करता हूं।"

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं, अग्लाशा," रोदिम्रोन मेफ़ादियेविच ने कहा। "मैं तो इस अब तक समझ ही नहीं पाया था। यहां तक कि

स्पेन म भी जब कभी अफानासी से मेरी मुलाकात होती, तो मैं तुम्हारा ही जिक्र करने लगता। वह कुछ कुछ अनुमान लगाता। एक दिन बोला— 'उसस शादी कर लो, रोदिग्रोन। किसी दूसरी औरत से तो अब तुम शादी करन से रहे।'"

"तो क्या तुमने मुझसे शादी की है?" अग्लाया ने मजाकिया ढग से पूछा।

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"क्या तुमने मुझसे यह कहा था कि मुझे अपनी बीवी बना रहे हो?"

"नही कहा क्या?"

'रादिग्रोन, तुमने मुझसे जो कुछ कहा था, मैं तुम्हारे शब्दो को ज्यो का त्यो दोहराये देती हू। तुमने कहा था—'अग्लाया, मै सोची जा रहा हू, आओ साथ चले, क्या ख्याल है?' इसके बाद इतना और जोड दिया था—'तो ऐसे रहेगा मामला।' तो मेरे प्यारे, बीवी होने की बात तो कडक्टर स होनेवाली तुम्हारी बातचीत स मुझे अभी मालूम हुई है।'

अग्लाया फुर्ती से उठी, रादिग्रोन मेफोदियेविच के करीब जा बैठी, उनकी कोहनी के नीचे उसने अपना हाथ रख दिया और उनके कधे से अपना चेहरा सटाते हुए शिकायती अन्दाज मे बोली—

"शब्दो के मामलो मे तुम बडे ढीले हो।"

"यह तुम ठीक कहती हो।" उन्होंने पुष्टि की। "लेकिन तुम बुरा नही मानना, अगाशा। जिन लोगो को शब्दो के मामल म कमाल हासिल है, मैं ऐसे लोगो से डरता तो नही हू, मगर उनके साथ मुझे कुछ परेशानी जरूर महसूस होती है। मेरे दोस्त अफानासी म सबसे बडी खूबी क्या थी—वह चुप रहना जानता था। चुप रह पाना—यह बडी बात है, क्योकि आदमी फालतू शब्दो को मुह से नही निकलने देता। तुम भी चुप रहना जानती हो।"

"तो क्या हम दोनो ऐसे चुप रहकर ही सारी जिन्दगी बिता देगे?"

"नही," रोदिग्रोन मफोदियेविच न दृढता, शान्त भाव और प्यार से कहा। "हम अपना सारा जीवन बहुत अच्छी तरह से बितायेंगे। तुम खुद ही देख लोगी।"

अग्लाया ने उनकी कोहनी को और अधिक ज़ोर से थाम लिया।
"क्या सोच रही हो?" रोदिग्रोन मेफोदियेविच ने अचानक पूछा।
"मैं बहुत सुखी हू," अग्लाया ने नम्रता से उत्तर दिया। "बस कुछ थोडी सी घबराहट महसूस होती है—तुम तो अपन समुद्री बड़े पर चले जाग्रोगे "

"और तुम भी क्रोस्तादृत या ओरानीयेनबाउम मे आ जाग्रोगी।"
"नही, म वहा नही आऊगी," अग्लाया ने उत्तर दिया। "मेरी यहा जरूरत है। मुझे वहा नयी नौकरी ढूढनी पडेगी। यह बात नही बनेगी, रोदिग्रोन। मगर मैं यहा तुम्हारा हमेशा, हमेशा इन्तज़ार करूगी। तुम जानते हो कि अगर कोई तुम्हारा हमेशा इतज़ार करता हो, तो इस चीज़ का क्या मतलब होता है?"
"नही, मैं नही जानता।"
"यही तो तुम नही जानते! अब जान जाग्रोगे।"
अग्लाया सोच मे डूब गयी। रोदिग्रान मेफोदियविच न पूछा—
"क्या साच रही हो?"
"वोलाद्या का ध्यान आ रहा है," अग्लाया पेत्रोव्ना न कहा। "जाने वह अकेला वहा किस हाल म होगा?"

अद्भुत लोग हैं आप!

मगर वोलोद्या अकेला नही था। शोकग्रस्त और दुखी पीच तथा ओगुर्त्सोव उसके पास बैठे थे। एक घण्टा पहले शहर की प्राथमिक डाक्टरी सहायता सेवा के अन्तगत काम करनेवाला डाक्टर अन्तोन रोमानो विच मिकेशिन इन दोनो की आखो के सामने चल बसा था। यह वही डाक्टर था, जिसके साथ वोलोद्या पार साल की गर्मियो म एम्बुलेंस बग्घी म जाया करता था। मिकेशिन को जब अस्पताल म लाया गया, तो पीच और ओगुर्त्सोव ड्यूटी पर थे। उस वक्त तक डाक्टर मिकेशिन होश म था, उसने इन दोनो विद्यार्थियो को पहचान लिया, उनसे कुछ मज़ाक भी किया, मगर बाद म उसकी हालत बिगडने लगी, वह बकना महसूस करने लगा, उसकी चेतना गडबडाने लगी और शाम होते न होते यह प्यारा डाक्टर इस दुनिया स चल बसा।

"अखबार मे इस बात की घोषणा छपवानी चाहिए," वालाद्या ने कहा। "उसे सारा शहर जानता था कितने लोगों की उसने मदद की थी! ठीक है न, पीच?"

किन्तु अखबार मे यह घोषणा छपवाना कुछ आसान काम नही साबित हुआ। एक तो यह कि काफी देर हो चुकी थी और जिस कमरे मे ऐसी घोषणाए ली जाती थी, वह बन्द हो चुका था। दूसरे "उचा मजदूर" अखबार के सक्रेटरी ने, जो पेटीवाला लम्बा कुरता पहने था, हाथ मे बडी-सी कैंची लिये था और न जाने क्यो, बहुत खुश था, विद्यार्थियो से यह कहा कि प्रादेशिक समाचारपत्र उसी तरह सभी मौतो की सूचना नही दे सकता, जसे कि इस धरती पर जन्म लेनेवाले नागरिको के बारे मे खबर देकर अपने पाठको को खुशी प्रदान करने मे असमर्थ है।

"आप कम से कम मजाक तो न करे!" पीच ने बिगडते हुए कहा। "हम यहा हसने हसाने नही आये है।"

"मैं तो जन्म से ही आशावादी हू!" सेक्रेटरी ने कहा। "इसके अलावा यह भी जानता हू कि हम सभी को एक दिन मरना है। इसलिए मेरे प्यारे साथियो, कुछ भी तो मदद नही कर सकता मैं तुम्हारी।"

चुनाचे इन तीनो को सम्पादक के आने की राह देखनी पडी। इस बीच सक्रेटरी कभी एक, तो कभी दूसरे टेलीफोन पर बात करता रहा, कमरे से बाहर जाता और भीतर आता रहा अखबार का एक पन्ना, जिसकी स्याही भी नही सूखी थी, पढता रहा, चाय पीता और सैंडविच खाता रहा और ये तीनो कडे सोफे पर चुपचाप बठे रहे। आखिर काफी देर बाद सम्पादक आया। यह वही व्यक्ति था, वालोद्या हर दिन अखबार पर जिसका यह नाम—"म० स० कूशेलेव" देखता था।

"तो, कहिये क्या बात है," म० स० कूशेलेव ने तीनो विद्यार्थियो के अपनी बडी सी मेज के सामने खडे हो जाने पर पूछा।

इनकी बात सुनकर उसने अस्त-व्यस्त बालोवाला अपना सिर हिलाते हुए कहा

"साथियो, मैं कुछ भी मदद नही कर सकता तुम्हारी। मुझे बहुत दुख है, मगर मिकेशिन को मै नही जानता।"

"मिकेशिन ने अगर हज़ारों नहीं, तो सैंकड़ों जानें जरूर बचाई है,' वोलोद्या गरज उठा। "मिकेशिन का सारा शहर जानता है और यह बहुत बुरी बात है कि आप, अखबार के सम्पादक, उसे नहीं जानते हैं। पर, खैर, यह आपका अपना मामला है। हम तो घोषणा छपवानी है।"

"घोषणा नहीं छपेगी!" म० स० कूशेलेव ने जवाब दिया और अखबार का उसी तरह का पन्ना पढ़ने में खो गया, जैसा कि सक्रेटरी कुछ देर पहले तक पढ़ता रहा था। "और साथियो, आपसे यह अनुरोध करता हूं कि मुझे अपने काम में ध्यान लगाने दें—अखबार में सरकारी सामग्री छप रही है।"

इन तीनों को अपने टीन पावेल सेर्गेयेविच, इसके बाद क्लीनिक में पोस्तनिकोव और गानिचेव तथा दूसरे प्रोफ़ेसरों के घर जाना पड़ा। आखिर वे झोवत्याक के फ्लैट पर पहुंचे। प्रोफ़ेसर झोवत्याक खाने के बड़े से कमरे में बैठा हुआ जर्मन सिल्वर की प्लेट में से जायकेदार सुगंध देनेवाली कोई चीज़ खा रहा था, खनिज जल पी रहा था और "चीनी मिट्टी की चीज़" नामक कोई विदेशी पत्रिका पढ़ रहा था। वोलोद्या का धूल से ढकी कुछ छोटी छोटी मूर्तियों, तिड़के हुए एक जग, टेढ़ी तश्तरी और मग की तरफ़ ध्यान गया, जिन्हें शायद कुछ ही देर पहले बंडल में से निकालकर मेज़ पर रखा गया था।

'आह, हमारी जगह लेनेवाली पीढ़ी!" झोवत्याक ने खुशी ज़ाहिर करते हुए कहा। "बहुत खुश हूं, बहुत खुश हूं मैं, स्वागत करता हूं नौजवान साथियो, नमस्ते, नमस्ते मेरे प्यारो, तशरीफ़ रखो।"

चमकते हुए ढक्कन से अपना खाना ढक्कर प्रोफ़ेसर ने छल्ले में से नैप्किन निकाला, होंठ पोंछे और अपनी सन्तुष्ट तथा खुशी भरी ऊंची आवाज़ में कहने लगा—

"कभी-कभार ही नसीब होनेवाली फ़ुरसत की घड़ियों में आ पकड़ा तुम लोगों ने मुझे। जैसे कि और सभी लोग, वैसे ही मैं, तुम लोगों का प्रोफ़ेसर भी, कुछ अनुरक्तियों का शिकार हूं। आज का दिन बड़ा अच्छा रहा मेरे लिए, कुछ ढंग की चीज़ें नज़र आ गयीं और मैं इन्हें अपनी मांद में घसीट लाया। चीनी मिट्टी की बनी हुई पुरानी चीज़ें जमा करता हूं मैं।"

"कैसे जमा करते है?" ऐसे मामला मे वहुत थोडी समझ रखनेवाले पीच ने पूछा।

"बिल्कुल साधारण ढग से, सहयोगी। मै सीधा-सादा सग्रहकर्त्ता हू। कुछ ऐसे लोग है, जो डाक-टिकट, दियासलाइया की डिब्बिया, चित्र, कासे की चीजे और रुपये-पैसे जमा करते है "

"यानी वही, जो धन जोडते है?" पीच इस बार भी नही समझा।

"नही, मेरे प्यारे दोस्त, यह अनुरक्ति वडी मासूम है, ऊची भावना और ऊचे प्यार की द्योतक है। वे रुपया नही, तरह-तरह के सिक्के और नाट, आदि जमा करते है। मैं तो आकृति की सुदरता, कला, लालित्य और पुराने कारीगरो की सरलता के लिए ही चीनी मिट्टी की चीजे जमा करता हू। मिसाल के लिए, इस छोटी मूर्त्ति को लिया जा सकता है "

थावत्याक न अपनी मोटी उगलियो म छोटी-सी मूर्त्ति को उठा लिया। उस पर धूल पडी हुई थी और काफी अर्से से उस धोया नही गया था। उसने फूक मारकर धूल हटा दी, खुशी भरी आखो से उसे देखा और कहा—

"मसेन कारखाना, अठारहवी शताब्दी के मध्य म। देख रह हो न तुम लाग? छोटे छोटे दो कामदेव शमादान उठाय हुए है। एक का हाथ कुछ-कुछ टूटा हुआ है, मगर इससे कोई फक्र नही पडता, सच, कोई फक नही पडता। लेकिन मुद्राए ता कैसी है? कितनी सादगी है इनमे? देख रहे हो न तुम लोग, कितनी सादगी है इनमे?"

"हा, सादगी देख रहा हू।" ओगुर्त्सोव ने घुटी सी आवाज म कहा।

"और यह छोटी-सी इत्रदानी। यह ता सम्राट के चीनी मिट्टी के कारखाने मे बनी हुई है। इस पर य फूल कितने सुदर है। अनूठी चीज है "

प्रोफेसर तो अपनी हाल ही मे प्राप्त की गयी चीजा को शायद और भी वहुत देर तक दिखाता रहता, अगर पीच ने अपनी जेव म से शोक-पत्र निकालकर उसके सामन न रख दिया होता। प्रोफेसर का फौरन मूड विगड गया, वह अपन होठ चबाने और कुछ उलझन-सी प्रकट करने लगा।

"इतन शब्दाडम्बर की क्या जरूरत है? मामूली सूचना देना ही क्या काफी न होगा? मिकेशिन, मिकेशिन " उसने याद करते हुए

यह नाम दोहराया, किन्तु सम्भवत याद नही आया और पूछा—"किस जगह हस्ताक्षर करा के लिए कहते हो मुझे? सब के बाद क्या? रोडरा के भी नीचे?"

"आप सबसे ऊपर कर सकते हैं अपने हस्ताक्षर!" पीच ने रुखाई से उत्तर दिया। यहा, पावल सेर्गेयेविच से पहले आपके हस्ताक्षर के लिए काफी जगह है। सिर्फ छोटे छोटे अक्षरो मे लिख दीजिये। छापेखाने के लिए तो इससे कोई फर्क नही पडेगा, सभी नाम एक जसे टाइप में छाप जायेंगे।"

यह सही है!" झोवत्याक ने सहमति प्रकट की और अपना नाम सबसे ऊपर लिख दिया। अपनी प्रोफेसर की उपाधि लिखना भी वह नही भूला।

प्रोफेसर झोवत्याक जब तक शोक पत्र को पढता और हस्ताक्षर करता रहा, पीच, वोलोद्या और आगुर्त्सोव ने खाने के इस कमरे मे अपनी नज़र दौडा ली। यहा कासे और बिल्लौर की चीजें थी शीशावाली छोटी बडी अलमारिया थी और उनमे प्रोफेसर की "निर्मल आसक्ति की चीजें—तश्तरिया बढिया डिनर सेट, चरवाहे और पुराने ज़माने के नीली चीनी मिट्टी के फूलदान, रकाबिया, सुनहरे नील और गुलाबी छोटे-बडे प्याले तथा दूसरी बहुत-सी वस्तुए रखी थी। अलमारियो के बीच पुराने कमखाब से ढका आरामकुर्सिया और साफे रखे थे और दीवारो पर सुनहरे चौखटो मे जड तल रगो के चित्र टगे हुए थे। ये चित्र थे मोटी मोटी नगी औरते, लाल चेहरोवाले मठवासियो और नीले आकाश मे पख फैलाकर उडते हुए फरिश्तो के

"हा, तो प्रोफेसर ने कहा, "यहा मैंने 'अपूर्णीय' शब्द काट दिया है। केवल 'क्षति' अधिक प्रभावपूर्ण रहेगा।"

पीच ने कोई आपत्ति नही की। मगर बाहर आने पर उसने अपना खोप निकालते हुए कहा

'क्या कहने है इसकी अनुरक्ति के, हजारो का कूडा-कबाडा जमा कर लिया है। मुझे याद आ रहा है कि कैसे एक दुष्ट कुलक को सम्पत्तिहीन किया गया था। सोलह गउए थी उसके पास। उसकी बीबी मुझे यह यकीन दिलाने की कोशिश करती रही कि उसका पति तो 'गउओ का भक्त है।' बडा डाक्टर बना फिरता है!"

ग्रागुर्त्सोव इस वात से सहमत नही हुग्रा।

"तुम्हारी वात ठीक नही है, पीच। हा, वह उस काम को नही कर रहा है, जो उसे करना चाहिए। मैन मास्को म एक ऐसी दुकान दखी थी—ग्रद्भुत कला-वस्तुग्रा की दुकान कहते है शायद उसे? इस ग्रादमी को वहा जाकर काम करना चाहिए—यह होगा उसका ग्रसली काम, मनपसन्द काम।"

"राज्य की भलाई के लिए?" पीच ने पूछा। "तुम ग्रभी विल्कुल भोले वच्चे हो, समझे! इस तरह के लोगो की ग्रनुरक्ति तो मुग्यत पैसे की ग्रपनी भूख की पूर्त्ति के लिए होती है। मेरी इस वात को तुम सच मान लो। वुरे दिना के लिए पैसा जोड रहा है, क्याकि उसके दिल मे हर वक्त डर वना रहता है। जिस जगह के लायक नही है, उस पर ग्रधिकार जमाये वैठा है। इसीलिए उसे चैन नही है।"

महत्त्वपूण लोगा के हस्ताक्षरोवाला शोक-पत्न सम्पादक म० स० कूशेलेव ने प्रकाशित कर दिया।

वह सुहानी, गर्मी के दिना जैसी सुवह थी, जव ग्रन्तोन रोमानोविच मिकेशिन को दफनाया गया। सिफ तीस चालीस ग्रादमी ही जमा हुए ग्रौर कव्रिस्तान तक तो काई दस ही गय। मीशा शेरवुड, स्वेल्लाना, ग्राल्ला शेशनेवा ग्रौर न्यूस्या तो जनाजे के रवाना होने तक ही रुके, येव्गेनी ग्राधे रास्ते तक साथ गया ग्रौर फिर ट्राम मे वैठकर वापस शहर चला गया। हल्की-हल्की, प्यारी-प्यारी हवा चल रही थी, पुरानी, सफेद शव-गाडी के पहिये चूचू चीची कर रहे थे, उसके घाडे भी वूढे, लगभग लगडे थे। प्राथमिक डाक्टरी सहायता सेवा का दढियल कोचवान स्तीमश्चिकोव वोलोद्या के साथ-साथ चलता हुग्रा खीझ भरी ग्रावाज म उसे वता रहा था—

"ग्रव मैं घोडा-गाडी परिवहन मे काम करता हू। हमारी प्राथमिक डाक्टरी सहायता के लिए ग्रव पूरी तरह मोटरे ही इस्तेमाल की जान लगी है। इसमे कोई शक नही कि वे वहुत तेजी से जाती है, मगर घस फस भी वुरी तरह जाती है। मैं तो यही मानता हू कि ग्रगर हमारा डाक्टर वग्घी म ही जाता होता, तो ग्रभी वहुत दिना तक जीता रहता। मगर माटरगाडी—उसके ग्रन्दर ता हवा जहरीली हाती है ग्रौर इसलिए साथी मिकेशिन को ग्राखिरी घडी ग्रा गयी "

वोलोद्या इस कोचवान की वाते नही सुन रहा था। वह मिकेशिन की विधवा हो गयी पत्नी की तरफ देख रहा था। छोटे छोटे पटा और पकते वालोवाली यह दुबली-पतली नारी रोये धोये विना, तनकर, यहा तक कि कठोर मुद्रा मे चली जा रही थी। मगर कुछ ही देर पहले खोदी गयी कब्र के पास पहुचकर वह अचानक अपनी दृढता खो वठी, उसकी टागे जवाव दे गयी और आह-कराह के विना वह चुपचाप गीली मिट्टी पर मुह के वल जा गिरी। विद्यार्थी उसकी तरफ लपक, मगर पोस्तनिकोव ने कडाई से उन्हे रोकते हुए कहा—

"उसके पास नही जाओ। उसे अपना मन हल्का कर लेने दो।"

ओगुर्त्सोव मुह फेरकर गहरी सासे ले रहा था, कब्र खोदनेवाले अपनी ककश आवाजो म एक दूसरे को कुछ कहते हुए कुदाले और रस्सिया इकट्ठी कर रहे थे, जाने को तैयार हो रहे थे। उनमे से किसी एक ने कहा—

"साथी नागरिक, कुछ पैसे और दीजिये, हमारे यहा की मिट्टी वडी सख्त है "

फिर से खामाशी छा गयी। केवल ऊचे भोज वृक्ष की नई निकली पत्तिया के वीच कोई गानवाली चिडिया अपनी ऊची और खुशी भरी तान अलापती जा रही थी।

"तो मैं तुम्हारे लिए शुभकामना करता हुआ विदा लता हू," कोचवान स्नोमस्चिकोव ने कहा। "जसा कि कहा जाता है, काम क वक्त काम और आराम के वक्त आराम होना चाहिए। अपन डाक्टर की याद म एक जाम पीकर काम पर चल दूगा।"

कुछ दर वाद जव मिकेशिन की विधवा वग्घी म वठकर घर जाने का राजी हो गयी, तो पोस्तनिकाव, वालाद्या, पीच और ओगुर्त्सोव न क़ब्रिस्तान का चक्कर लगाया। प्राव याकाव्लविच पोलूनिन की क़ब्र पर अव ग्रेनाइट की भारी शिला लगी हुई थी और पैरा की ओर पतला, ऊचा किनार खडा था। क़रीव ही एक वॅच भी थी, जिस पर इन दिना वुरी तरह थके-हार और परशान य तीना विद्यार्थी वठ गय। पोस्तनिकाव अपनी पत्नी की क़ब्र की ओर चल गय।

"व प्रोफ़ेसर थ, यह नहीं लिखा है," शिला की ओर स दखकर पीच न कहा। "वालाद्या, याद है न कि इस वात पर व वस हुए थ कि जमनी म गुप्त चिकित्सा परामशदाता का पद भी है।"

"याद है," वोलोद्या ने जवाव दिया। "उनके वारे मे मुझे सव कुछ याद है। मुझे याद है कि न जाने क्या वे अचानक एक वार झल्ला उठे थे और उन्होने कहा था कि कोई प्राफेसर हाकर भी निकम्मा डाक्टर रह सकता है।"

पोस्तनिकोव काफी देर वाद लौटे, वडे दुखी-से और गुम-सुम। उन्हाने रूमाल से माथा और मूछे पाछी और वोलोद्या के पास वैठ गये।

"ऐसा क्या हुआ, इवान दिमीत्रियेविच, ऐसा क्या हुआ?" वोलोद्या ने पूछा। "क्या लोग नही आये कफन दफन के वक्त? आखिर हम ता यह जानते है कि मिकेशिन कितना अच्छा डाक्टर था और कितने नेक काम किय है उसने।"

पोस्तनिकोव खामाश रहे, उन्होन उगलिया से सिगरट लपटी, उसे वहरुवा के होल्डर मे लगाया और वोलोद्या के प्रश्न का सोचत हुए धीरे धीरे यह जवाव दिया

"प्राथमिक डाक्टरी सहायता की वग्घी जिसके घर पर जाती है, उस घर के लाग कभी भी डाक्टर के नाम आदि म काई दिलचस्पी नही लेत। हा, अगर उसके खिलाफ शिकायत करनी हो, तव वात दूसरी है। ऐस लोग भी हमारी इस धरती पर ह। लकिन अगर सव कुछ ठीक-ठाक है, काई ऊच-नीच नही होती, ता भला किसलिए काई उस आदमी का नाम जानना चाहेगा, जिसने काई सूई लगा दी, या दवाई की कुछ वूदे पिला दी या काई छाटी मोटी चीर-फाड भी कर दी। मगर चगीज खा को सभी जानते है, गिलाटीन का वनानिक आधार तयार करनवाले डाक्टर गिलोटीन को भी सभी जानते ह और इसी तरह डा० अन्तुआ लूई से भी सभी परिचित हैं, जिसन मौत की सजा पानवाले लोगा का सिर कलम करने का सवसे वेहतर तरीका खाजने क लिए लाशो पर तजरवे किये। दुनिया के सवसे वडे ठग टैलीराड का भी लोग जानते है, फुशे और रस्पूतिन स भी परिचित ह, राथशील्डा, जारा, जार-कुमारा, भडकावा दनेवाले अजेफ म भी दिलचस्पी लेते हैं, मगर मिकेशिन क्या महत्त्व है उसका था एक ऐसा चश्माधारी और अव नही रहा।"

पास्तनिकाव न निकट हाकर और वडाइ से वालाद्या की माथा म झाकत हुए इतना और जोड दिया—

"तो एसा है दुनिया का ढग, उस्तिमेन्का।"

"नही, ऐसा नही है," पीच ने अचानक कटुता स कहा। "मै आपके साथ सहमत नही हू, इवान दिमीत्रियेविच। वेशक ऐसा था, मगर ऐसा होना नही चाहिए! क्या इसी के लिए हमने सत्ता की वाग डोर अपने हाथो म ली है, क्या इसी के लिए सर्वहारा के अधिनायकत्व सम्बन्धी अद्भुत शब्द विद्यमान है, क्या इसी के लिए हम, वोल्शेविको ने प्रेस को अपने अधिकार म ले रखा है कि इसी तरह का ज़हर लोगा की चेतना को विषाक्त करता रहे? नही, इसके लिए नही। आप मानें या न मानें, मगर म आपको वचन दता हू कि वह वक्त आयेगा, बहुत जल्द आयेगा, वह तो आ भी रहा है, आ आ गया है, जब मिकेशिन जसे लोगा को हमारा सारा राष्ट्र पूजेगा। सब लोग अभी यह नही समझते, मगर समझ जायेंगे, हम उन्ह समझने के लिए विवश करेंगे। इसलिए आप दुखी न हो "

पीच ने जसे अचानक अपनी वात कहनी शुरू की थी, वस ही अचानक खत्म भी कर दी और कुछ झेपते हुए खासने लगा। ग्रोगुर्त्सोव और वोलोद्या खामोश रहे। और पोस्तनिकोव ने अपने स्वभाव क विपरीत असाधारण रूप से खुशी भरी आवाज म कहा—

"आह, वोल्शेविक-वोल्शेविक अद्भुत लोग है आप! जो कुछ महत्त्वपूर्ण है, उसे अवश्य हकीकत वनाकर रहगे!"

"वनाकर रहगे नही, इस वक्त ही बना रहे है," पीच ने कुछ चिढते हुए जवाव दिया। "थोडा नही, वहुत कुछ उपलब्ध किया गया है। और जो कुछ हमारे सामने है, भविष्य म हम जो कुछ करनेवाले है, उसकी ता किसी न कल्पना भी नही की होगी।"

"काफी टेढी खीर है यह!" पोस्तनिकोव न कहा।

"मगर फिर भी हम शिकवा शिकायत नही करते है। हा, हमारा काम आसान हो जाता, अगर बुद्धिजीवी खुद ऐसे प्रोफेसरो, मिसाल के तौर पर गेन्नादी तारासोविच को अपने बीच से निकाल बाहर करते। तव हमारा काम कही आसान हो जाता।"

पीच न अपने घुटनो तक के पुराने धुराने जूतो को कुछ ऊपर की ओर खीचा, कनखियो स इवान दिमीत्रियेविच की ओर देखा और पूछा—

"बुरा तो नही मान गये आप? मैंने तो सद्भावना से ऐसा कहा है।"

बारहवा अध्याय

शपथ

इस्टीटयूट का दीक्षात समारोह बडे अजीब ढग से, कटुतापूण अजीब ढग से समाप्त हुआ। रेक्टर को शायद बडे अधिकारियो ने बुला भेजा या फिर अध्यक्षमण्डल मे बैठे-बैठे उन्ह ऊब अनुभव होन लगी और इसलिये वे डीन को अध्यक्षता सौपकर चले गये। इसी वक्त गेन्नादी तारासोविच ओवत्याक ने बोलन की अनुमति ले ली। वह देर तक और भारी भरकम शब्दो का उपयोग करते हुए बोलता रहा। उसने फिर स अपने मनपसन्द १६११ की वतमान काल से तुलना की, फिर स इन्स्टीटयूट के उन भूतपूव छात्रो का उल्लेख किया, जो अच्छे वज्ञानिक कायकर्त्ता *बन गये थे*, इसके *अध्यापको के नाम लिये, मगर पोलूनिन* का नाम लेना भूल गया। हॉल म से आवाजें आई।

"प्राव याकोव्लेविच का नाम क्या नही लिया गया?"

"पोलूनिन का नाम लीजिय।"

"पोलूनिन को श्रद्धाजली अपित करनी चाहिए!"

"मैंने तो इस समय जिन्दा अध्यापको के ही नाम लिये है," ग्रोवत्याक न कहा। "जहा तक प्रोफेसर पोलूनिन का सम्बन्ध है, तो मैं सहष यह सुझाव देता हू कि हम उनकी याद म कुछ क्षण मौन खडे रह।"

"सहष" शब्द दो मानी थी, इसलिये हाल म खुसर-फुसर सुनाई दी। ओवत्याक ऐसे अवसर के अनुरूप मुख मुद्रा बनकर कुछ क्षण तक भाषण मच के पास मौन खडा रहा। इसके बाद अपनी आवाज को पर्याप्त शोकपूण बनाते हुए उसन कहा—

"कृपया बैठ जाइये।"

सभी बैठ गये। पावल्याक कोई दसेक मिनट और बोलता रहा और इसके बाद तालियों की हल्की सी आवाज़ के बीच चला गया। इराईदा के पापा, यानी डीन कुछ मिनमिनाये और बोले कि दीक्षान्त-समारोह को समाप्त करना चाहिए। रेक्टर अभी तक नहीं लौटे थे। वे समझदार आदमी थे और निश्चय ही उनकी उपस्थिति में ऐसा कुछ न हो पाता। डीन न तो बड़ी उतावली में डिपलोमे सौंप, नामों का गड़बड़ाते और कुछ मज़ाक-वज़ाक करते हुए, यद्यपि हम यह जानते हैं कि जीवन में कुछ ऐसे क्षण होते हैं, जब मज़ाक बिल्कुल अटपटे लगते हैं। ये मज़ाक तो यव्गेनी को भी अखर रहे थे। वैसे इराईदा के पापा के साथ उसे अपना भी कुछ हिसाब चुकाना था।

"हमारी यह समारोही सभा समाप्त होती है," पावेल सर्गेयेविच ने तुतलाते हुए घोषणा की। "अब आप जीवन-क्षेत्र में जायें, नौजवान लोगो।"

"हुम, यह भी अच्छी रही," आगुत्सोंव ने अपनी गुद्दी खुजलाते हुए कहा। "पीटर प्रथम ने यह ठीक ही कहा था—नौकरी बजाओ, तो नहीं तुतलाओ, अगर तुतलाओ, तो नौकरी नहीं बजाओ। मतलब यह कि सब समाप्त?"

"समाप्त क्या?" उस्तिमेन्को ने झल्लाकर कहा। "यह तो अभी प्रारम्भ ही है!"

सभा-भवन खाली हो गया। झाड़ने-बुहारनेवाली मौसी मोमा बेंचों को ज़ोर से इधर-उधर हटाते हुए फ़र्श धोने लगी। पीच खिड़की के पास पर बैठा हुआ एक फटी-पुरानी कापी के पन्ने उलट रहा था।

"मिल गयी," उसने कहा, "चूँकि हमारे साथ बेहूदा सलूक किया गया है, इसलिये हम खुद ही यह शपथ ले लेते हैं।"

ल्यूस्या तो फ़ौरन डर गयी। वह बड़ी सावधान किस्म की लड़की थी और अस्पष्ट शब्दों, उग्र वाक्यों और अप्रत्याशित गति विधियों से बहुत घबराती थी।

"और लो!" भौंहे ऊपर चढ़ाते हुए उसने हैरानी प्रकट की। "यह शपथ क्या बला है?"

पीच ने कुछ सोचा, गहरी सांस ली और पूछा—

"तुम्ह तो शपथ लेते हुए भी डर लगता है, यूस्या? तुम क्या समझती हो कि हम मेसन* है?"

यूस्या ने अपने का इस मामले से दूर रखने के लिय हाथ झटका और हॉल से वाहर चल दी। उसके सडलो की एडिया वजी, वढिया इत्र की सुगध हाल मे फल गयी और यूस्या इस वात के लिय मन ही मन अपनी तारीफ करती हुई गायव हो गयी कि सदा की भाति इस वार भी उसने समझदारी से काम लिया है।

"वहुत पहले मैंने इसे अपनी कापी मे लिखा था," पीच न कहा। "अगर हमारे इस्टीटयूट के करता धरताओ ने अक्लमदी का सवूत नही दिया, तो हम खुद ही यह कर ले। वैसे तो यह शपथ पुरानी हा गयी है, मगर फिर भी इसम कुछ तो है ही।"

खिडकी के दासे से नीचे कदकर वह कमाडर जसी कडी आवाज म वोला—

"मेर पीछे-पीछे इस दोहराइयेगा। आदरणीय सहयागियो, यह हम डाक्टरा की पुरानी शपथ है। सुनने म आता है कि स्वय हिप्पाक्रेट्स ने इसका अनुमोदन किया था। तो मेरे पीछे-पीछे दोहराइयेगा।"

और पीच शपथ का पढने लगा—

"'विज्ञान द्वारा मुझे दिये गये डाक्टर के अधिकार को वडी कृतज्ञता के साथ स्वीकार करत और इस उपाधि से सम्वधित सभी कत्तव्यो के महत्व को अच्छी तरह समझते हुए "

" अच्छी तरह समझत हुए!'' छ के छ नौजवान डाक्टरा न ऊची और कापती आवाज म ये शब्द दाहराये।

"' म यह वचन दता हू कि अपन सारे जीवन म उस व्यवसाय को किसी तरह भी कलकित नही करूगा, जिसे मैं अब ग्रहण कर रहा हू '"

पीच का, वूढे पीच का, जो इस कक्षा का सवसे कठार व्यक्ति था, अचानक गला भर आया, उसकी चीख-सी निकल गयी, उसन आसू पाछा और कागज ओगुर्त्सोव को द दिया। इसी वक्त मौसी सीमा,

---

*मसन—१८वी शताब्दी के एक धार्मिक-दार्शनिक समाज के अनुयायी।

जिसकी विद्यार्थियो के प्रति घणा को सारा इस्टीटयूट जानता था, झाड़ू स उनके परो को दूर हटाती हुई विगड रही थी–

"भागा यहा से, कितनी बार कहना हागा तुमसे "

"हिश!" पीच बहुत गुस्से से चिल्लाया।

मगर अब सभी का मूड विगड गया था और हिप्पार्केटस की शपथ पढने को किसी का भी मन नही हो रहा था।

"बस, खत्म!" पीच ने कहा। "इस बात को यही समाप्त मानेगे। जब बडा हो जाऊगा, तो इन मब को हमारी इस प्रभावपूर्ण और ममस्पश विदाई सभा की याद दिलाउगा। आज अगर पालूनिन जिन्दा होत, तो इनकी अक्ल ठिकाने करत।"

"मयाकोव्स्की की तरह?" ओगुर्त्सोव ने पूछा।

"इतना ही नही, पैरा पर झाड़ू भी मारे जाते है," पीच ने दद भरी आवाज मे कहा। "म कुत्ते की दुम नही, डिप्लोमा प्राप्त डाक्टर हू। कहो तो दिखाऊ?"

सीढियो मे जाकर सभी को यह घटना मजाक-सी प्रतीत होन लगी।

पाक मे वोलाद्या अकेला ही गया। वह भी इसलिये नही कि क्लीनिक की इमारत का विदा कह–वह जरा भी भावुक नही था–बल्कि इसलिय कि कुछ देर वहा बठकर राहत की सास ले। बहुत थक जा गया था वह इन दिना म। कितु जस ही वह मपल कुज की तरफ मुडा, गानिचेव सामने वठे दिखायी दिये। पास से निकल जाना सम्भव नही था और बात करन को बिल्कुल मन नही हा रहा था। खास तौर पर इसलिये कि वालोद्या वहुत अच्छी तरह जानता था कि प्राफेसर स किस विषय पर वातचीत हागी।

"डिप्लोमा मिल गया?"

"मिल गया।"

"समाराह वढिया रहा?'

"परीक्षया जसा " वोलोद्या न उदासी स उत्तर दिया।

'हमारे इन्स्टीट्यूट म ऐसा करना ता खूब जानते हैं।' गानिचव न सहमति प्रकट की। 'नौजवना की जिन्दगी क सवस अच्छ दिन उनकी आत्मा म थूकना उन्ह खूब आता है। इस वात म उन्ह कमाल हासिल

"मगर आप?" वालोद्या ने अचानक गुस्ताखी से पूछा।

"मै, मै क्या?"

"आप वहा क्या नही आये? आपसे डरते है, आपकी इज्जत करते हैं। आपकी उपस्थिति म किसी की आत्मा म भी थूका न जाता। आप यहा वेच पर क्या वैठे है?"

"सुनिये, उस्तिमन्को!" गानिचेव ने विगडते हुए कहा। "आप जा कह रहे है, उस समझते हैं? मै बूढा आदमी हू, थक गया हू, वहा दम घुटता है "

"अपने रुग्न हृदय के वावजूद पोलूनिन अवश्य ही वहा हात," वोलोद्या ने गुस्ताखी से गानिचेव की वात काटते हुए कहा। "रही वुढापे और थकान की वात, ता मुझे यह सुनना अच्छा नही लगा, फ्योदोर व्लादीमिरोविच। आपका पालूनिन के ये शब्द याद हागे कि विज्ञान, प्रगति, सभ्यता और डाक्टरी के पेशे की सबस वडी दुश्मन है मुर्दादिली। और अव आप, पोलूनिन के मित्र इसी मुर्दादिली का प्रचार करत हैं। आह, क्या कह काई "

वालाद्या न हाथ झटक दिया।

"खर, हटाइये," अपने को अपराधी महसूस करत हुए, पर झल्लाई आवाज म गानिचेव ने कहा। "नौजवान निर्दयी लाग हाते है।"

"आपको दया चाहिय? क्या वहुत जल्दी ही आप यह नही चाह रहे हैं?"

अव इन दोनो की नजरे मिली।

"आपका आग वुझानेवाला वूढा स्त्रिपन्यूक, जिसके वार म आपन मुझे इतन ममस्पर्शी ढग स वताया था, शायद कभी दया की माग न करता। मगर मैं यह चर्चा नही करना चाहता," वालाद्या न दुख और पीडा से कहा, "यकीन कीजिये, वुरा नही मानिय, मैं इतनी ही वात कहना चाहता था कि क्या इतने अधिक लाग मीन-मख निकालत हैं, वुडवुडाते हैं, मगर जिसकी भात्सना करत हैं, जिस पर झल्लात है, उसके विरुद्ध सघष करन के वजाय खुद वेचा पर क्या वठे रहते हैं? मुझे यह समझाइय।"

अपनी पीडायुक्त आखो का उसन गानिचेव की आखा पर जमा दिया। प्राफेसर इस नजर को ताव न ला सके और उन्हाने मह फेर लिया।

'खर आप ठीक कहते हैं," गानिचेव ने नर्मी स कहा। "आपकी सभी बात ठीक नही है, मगर कुछ ठीक है। वसे मैने आपको अपने बार मे आपकी राय जानने के लिये नही रोका था। मं इस बात का जवाब पाना चाहता हू कि आप मेरे विभाग म काम करन के लिये रुक रहे हे या नही।'

"स्पष्ट है कि नही।"

"बहुत खूब! लेकिन अगर पोलूनिन ज़िन्दा होते, तो उनके पास ता रुक जाते न?

"उनके पास भी न रुकता," वोलोद्या ने कुछ साचकर जवाब दिया। "शायद पाच साला के बाद उनके पास लौट आता "

"बडी मेहरबानी की होती?

"हा, की होती।"

"मगर रुकना चाहत क्यो नही?"

"इसलिये कि आपने और उन्होने हमे दूसरी ही शिक्षा दी है।"

'हम!" गानिचेव ने ऊची आवाज़ मे यह शब्द दोहराया। "यह सामान्य रूप से कहा गया था, व्यक्तिगत रूप से आपके लिये नही।'

'सेर्गेई इवानाविच स्पासोकुकोत्स्की अपने समय म देहाती इलाक के डाक्टर थ ' गुस्से स शब्दो को ताडते हुए वोलोद्या न कहना शुरू किया। "खुद आपन ही हमसे उनकी चर्चा की थी। खुद आपने ही यह बताया था कि जब वे देहाती इलाके के डाक्टर थे, उस समय उनके द्वारा किये गये वज्ञानिक प्रयासो की गहरी जडो से आज तक फूल पौधे निकल रहे है। आप ही न स्पासोकुकोत्स्की की वज्ञानिक रुचियो, समस्या की गहराई तक पहुचने की उनकी क्षमता पर रोशनी डाली थी। ओह, क्या मै आपको आपके ही शब्द याद दिलाऊ "

'विज्ञान,' गानिचेव बुझी-सी आवाज़ म बालन लगे, किन्तु वोलोद्या उनकी बात नही सुन रहा था। वह समझता था कि गानिचेव उसकी भलाई चाहते हैं, मगर साथ ही अपने लिये एक शोध विद्यार्थी भी चाहते हैं। लेकिन वह, उस्तिमेन्को, किसी का भी चेला नही बनना चाहता था, वह तो अपने काम म जुटना चाहता था।

गानिचेव की बातो को सुने बिना वह उनके खत्म होने की प्रतीक्षा करता रहा, नीरवता का आनन्द लेता, इस बात की राहत अनुभव करता

रहा कि अब उसे कही जान की जल्दी नही, धूप के गम, सुखद और सुगंधित धब्बा का लुत्फ उठाता और उस हास्यास्पद गजे तथा लडाके नर गौरैया को देखकर खुश होता रहा, जो बगल से फुदकता हुआ गौरैयो के दल की ओर बढ रहा था।

"यह सब इसलिये कि बाद म आपसे शोध प्रबन्ध का विषय पूछू?" गानिचेव की बात पूरी होने पर वोलोद्या ने पूछा।

"आप तो विषय नही पूछेगे न? खुद ही ढूढ लगे!"

"मैं किसलिये विषय ढूढूगा, पयोदार व्लादीमिराविच, अगर अपने भीतर से मुझे इसकी प्रेरणा अनुभव नही होती। स्पासाकुकोत्स्की न ककाल को लम्बा करने के लिये स्केटो के पेच और पियाना के तारो की सलाइया लेकर खुद अपने हाथो से शिकजा बनाया था। मुझे मालूम नही कि यह वैज्ञानिक काय है या नही, किन्तु उन्होन कोई उपाधि पाने के लिये नही, बल्कि ध्यय की पूर्ति की प्रबल आवश्यकता क लिय ऐसा किया था। या फिर अमोनिया स उनका हाथ धोना अथवा पेट को कसन के लिये नालीवाला शिकजा इस्तमाल करना या रक्त क्षेपण—सभी एक ध्येय की पूर्ति के साधन थे। उनके सचालन म जो कुछ भी किया जाता था, वह क्लीनिक के जीवन की जरूरत को ध्यान म रखकर किया जाता था और क्लीनिक हमशा उनकी जवानी उनके इलाकाई अस्पताल से सम्बधित रही। क्या मरी बात सही नही है? या फिर पिरोगाव को ले लीजिये। सभी जानत है कि व जस-कस लिखे गये शोध प्रबधो और कूपमडूकी विद्वाना स बहुत चिढत थे। मगर उसक उलट रूदनेव ऐसी चीजो का स्वागत करते थे। व्यक्तिगत रूप से मैं पिरोगाव का पक्षधर हू। नकली विद्वान बनान म क्या तुक है। यह महगा काम हे, इससे विनान की हानि होती है और ध्यय का क्षति पहुचती है। व्यक्तिगत रूप स मैं ता ऐसा ही साचता और मानता हू।"

"कौन है आप ऐसे, व्यक्तिगत रूप से सोचने या न साचन, मानन या न माननेवाले," गानिचेव पूरी तरह से भडक और यल्ला उठे। "आखिर क्या हैं आप मुझे बताइये ता?"

"डिप्लामा प्राप्त डाक्टर।"

"यह विनम्रता नही है, उस्तिमेन्का।"

"अपने पेशे के लिये विनम्रता को भला मैं क्या अच्छी चीज मानू? मैं किसी अलग थलग और दूर-दराज के गाव में काम करने जाऊगा और वहा मेरी इस विनम्रता का यह नतीजा होगा कि हर रोगी के लिये हवाई डाक्टरी सहायता के ज़रिये किसी दूसरे डाक्टर को मशविरे के लिये बुलवाऊगा। यही होगा न?'

गानिचेव ने अगडाई और जम्हाई ली, गहरी सास छोडी–

'हे भगवान!'

'मैंने आपको थका दिया न?" वालोद्या ने सहानुभूति से पूछा।

'मैं थका तो नही, मगर यह सब असाधारण रूप से अटपटी बात हो रही है। आखिर आप तो गुणवान व्यक्ति हैं।"

"यह तो मैं जानता हू, वालोद्या ने चहककर कहा। "मुझे इस बात का तनिक भी सन्देह नही है, नही तो मैं कभी का इन्स्टीट्यूट छोड देता। वह इसलिये कि आपने और पोलूनिन और पोस्तनिकोव ने हमे हमेशा यही शिक्षा दी है कि डाक्टर के पास केवल ज्ञान ही नहीं, उसे गुणवान भी होना चाहिये। और मै डाक्टर बनना चाहता हू।"

'खैर जाइये यहा से" गानिचेव ने कहा। "मैं फिर भी आप पर युवा कम्युनिस्ट लीग के ज़रिये दबाव डलवाऊगा।"

और उन्होने सचमुच ऐसा दबाव डलवाया भी।

ज़ातीरूखी गाव में!

कई दिनो तक डटकर सघर्ष करने के बाद ही वोलोद्या को ज़ातीरूखी गाव मे अपनी नियुक्ति करवाने मे सफलता मिली। यह गाव रेलवे स्टेशन से दो सौ किलोमीटर दूर था।

"लट्ठो के बेडे पर नदी भी पार करनी होगी!" गानिचेव ने मजा लेते हुए कहा।

'तो क्या हुआ, कर लूगा पार!' वोलोद्या ने उत्तर दिया।

कुल मिलाकर वोलोद्या को इस बात मे खुशी हुई कि उसके कारण इन्स्टीट्यूट मे इतना हगामा हो रहा है। पीच ने भी दूर-दराज के देहाती अस्पताल मे अपनी नियुक्ति करवा ली। ओगुर्त्सोव कामेन्का मे चला गया। लेकिन अभी बहुत से नये डाक्टर अधिकारियो के आगे-पीछे

घूम रहे थे, सिफारिशी चिट्ठिया लेकर मास्को के चक्कर काट रहे थे ताकि उन्हे दूर के किसी गाव मे नही, बल्कि नजदीक के किसी शहर म ही जगह मिल जाये।

प्रादेशिक मानचित्र म वालोद्या का अपना ज्ञातीरूखी गाव नही मिला। एक हफ्ते बाद उसे वहा के लिय रवाना होना था। बूग्रा अग्लाया को वोलोद्या के भविष्य की कहानी सुनकर कोई ख़ुशी नही हुई।

"तो जाओगे?" बूग्रा ने पूछा।

"हा, जाऊगा।"

"मगर वहा तो अस्पताल भी नही है?"

"दवाखाना है। अस्पताल बना लूगा।"

"ख़ुद बनाओगे?"

"ख़ुद।"

"तुम्हे बनाना सिखाया गया है?"

"क्या आपको, जो कभी धोबिन थी, राज्य-सचालन सिखाया गया था?"

"मैं राज्य-सचालन तो नही करती।"

"तो मुझे भी ख़ुद अस्पताल का निमाण नही करना होगा। निर्माण काय का सचालन करूगा, ज़रूरी हिदायत दूगा।"

अग्लाया ने गहरी सास ली। वालोद्या कठोर दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था—उससे बहस करना बेकार था।

"और लोग ऐसी बात करते है कि अब हमारे युवाजन पहले जसे नही है!" अग्लाया ने मन ही मन सोचा और फिर एक बार गहरी सास लेकर वालोद्या के लिय चमडे तथा नमदे के घुटनो तक के जूते, भेड की खाल का कोट और फर की टोपी खरीदने चली गयी। और वोलोद्या मानो होश म आते हुए घबराकर चौक उठा—"और वार्या? अब क्या किया जाय? इसका मतलब तो यह हुआ कि उसके बिना ही सब कुछ करना होगा? सो भी इस वक्त, जबकि हर क्षण मुझे उसकी सलाह लेने की ज़रूरत है, जबकि जिन्दगी शुरू ही हो रही है? क्या किया जाये?" बहुत बेचैन होते और कुछ न समझ पाते हुए उसने यह सोचा और उसके लिय घर म बैठे रहना मुश्किल हो गया। वह भागता हुआ स्तेपानोव परिवार के यहा पहुचा।

"सलाम करता हूं हुजूर को," दरवाजा खोलते हुए यव्गेनी ने कहा। "तशरीफ लाइये, जनाब प्रोफेसर साहब। कुछ बड़ी ही प्यारी खबर है "

चूंकि गर्मी थी, इसलिये येव्गेनी निक्कर पहने था, जो उसकी मां ने खास कपड़े से उसके लिए सी थी। जैसा इसे "शार्ट्स" कहता था, वैसे ही जैसे अपनी बरसाती को "मार्टल" की संज्ञा देता था। दांतों को जाल में साधे था और अब वह पाइप पीता था, जो उसे दादिक ने भेंट की थी। दादिक के साथ कई जोरदार झड़पों के बाद कुछ व्यंग्यात्मक होते हुए भी अब उसके खासे दोस्ताना सम्बन्ध कायम हो गये थे।

वार्या भी घर पर ही थी। सोफे पर लेटी हुई कविताएं पढ़ रही थी। मुखावरण पर स्वर्ण अक्षरों में "काव्य संग्रह" लिखा हुआ था। दादा मेफोदी क्वास का शोरवा पका रहे थे।

"ठीक खाने के वक्त आये हो," दादा ने कहा। "क्वास का शोरवा तैयार हो रहा है, बेटे "

"तुम किसलिये नाराज-सी दिख रही हो?" वालोद्या ने वार्या से पूछा।

"और तुम क्या उम्मीद कर रहे थे?" उसने गुस्से में जवाब दिया और कमरे से बाहर चली गयी।

"तो ऐसा माजरा है, मेरे जिगरी दोस्त!" यव्गेनी ने अपनी आंखें झपझपाते हुए कहा। "अगर मेरी इराईदा देहाती बंगले और बच्चे की खातिर मुझे अकेला न छोड़ जाती, तो मैं तो शायद पागल हो जाता।"

यव्गेनी ने रहस्य भरी दृष्टि से वालोद्या की ओर देखा।

"तो क्या खबर है तुम्हारे पास?" वालोद्या ने उदासीनता से पूछा।

"मेरी ही नहीं वह तो तुम्हारी भी खबर है, जनाब डाक्टर साहब।"

येव्गेनी का पूरा व्यक्तित्व मानो यह कह रहा था कि वह अपने से बहुत खुश है, अपनी शार्ट्स से, अपनी छोटी छोटी, मजबूत टांगों, अपनी कुछ-कुछ चर्बी चढ़ी फिर भी जो मांसपेशियां थीं, उनसे, आत्म भावना, स्वास्थ्य अपने निकट भविष्य और उस शोरवे की कल्पना से भी खुश है, जो वह कुछ देर बाद खानेवाला था।

"तो हुजूर, ज़ातीरुखी नही जा रहे है।"

"क्से नही जा रहा हू?"

"वस, नही जा रहे हो, व्लादीमिर अफ़ानास्येविच। हमारे नगर के स्वास्थ्य विभाग ने दा विशेषज्ञा की, यानी तुम्हारी और मेरी माग की है। तुम शहर के प्रथम अस्पताल म सहायक चिकित्सक होगे और चूकि मैं स्वास्थ्य रक्षा सवधी डाक्टर हू, इसलिय नगर के स्वास्थ्य विभाग म काम करूगा। क्यो, है न वढिया खवर?"

वोलोद्या मुह लटकाये खामोश रहा।

दरवाजा धीमी सी चू चर के साथ खुला और वार्या दूसरे, साफ सुथरे सफेद फ्राक मे सामन दिखाई दी।

"उसके ऊचे मस्तक पर था भाव न काई झलका," येव्गेनी ने लेर्मोन्तोव की "दानव" कविता की यह पक्ति दोहरायी। "साथी भावी सहायक-डाक्टर, तुम्ह तो जैसे इस खवर से अफसोस हो रहा है? या तुम यह मानते हो कि स्पेन की आजादी के लिय वीरतापूवक अपनी जान देनेवाले व्यक्ति के वेटे को ज़ातीरुखी जाना चाहिय, जवकि यूस्या, स्वेत्लाना, आल्ला और चतुर मीशा की शहरा म नियुक्ति हानी चाहिये?"

वोलोद्या सिर झुकाये वठा था, येव्गेनी की तरफ देख भी नही रहा था। येव्गेनी वहुत जोश म आ गया था, वहुत शोर मचान, यहा तक कि चिल्लाने लगा था।

"वार्या के सामने इस विपय की चर्चा करना मुझे अच्छा नही लग रहा,' येव्गेनी न कहा। "वैसे तो इस तरह की चर्चा चलाना शिष्ट भी नही है, लकिन तुम्हारे जसा के साथ ऐसा करना पडता है। जरा सोचा तो इसे तुम्हारी सरलता ही माना जाय या इससे भी कोई वुरी चीज, लेकिन सोचो तो कि ज़ातीरुखी म ता कोई क्लव तक नही है। ठीक कह रहा हू न?"

"ठीक है!" वोलाद्या ने हामी भरी।

"और जाहिर है कि वहा न तो कोई सस्कृति भवन है और न कोई नाटक या कला-मण्डली। वहा कुछ भी तो ऐसा है या तुम्हारे दवाखाने के सिवा ऐसी कोई भी उम्मीद न की जाय?"

'उसन तो शायद जानने की कोशिश ही नही की होगी!" वार्या ने चिल्लाकर कहा। "इस महान आदमी को ऐसी चीज़ो की तफसील म जाने की जरूरत ही क्या है?"

"जरा देखो तो इसे, कैसी सूरत बन गयी है इसकी!" वार्या के कधे पर हाथ रखकर येव्गेनी ने कहा। "गौर से देखो! तुम्हारे पत्थर दिल पर किसी चीज़ का कोई असर नही होता। तुम्हारी बला से, किसी पर कुछ भी बीते। तुम तो अपने मे, अपनी 'भीतरी दुनिया' मे मस्त हो जैसा कि वार्या बडे उत्साह से तुम्हारी सफाई पेश करने के लिये कहती है। लेकिन तुम मेरी आखो मे धूल नही झोक सकते। अगर इस धरती पर तुम्हारे लिये कोई लक्ष्य है और उस लक्ष्य के लिये तुम्हारे दिल मे लगन है, तो वार्या के सामने भी कोई लक्ष्य है और उस लक्ष्य के प्रति उसके दिल मे भी लगन है। स्वार्थी होना अच्छी बात है, लेकिन तभी तक, जब तक कि वह स्वार्थ दूसरो की लाशो को न रौंदने लगे। और जहा तक मेरी समझ काम करती है, तुम ऐसे भोले भाले भी नही हो। हमारे सभी सहपाठियो मे शायद तुम्ही सबसे ज्यादा समझदार हो, सिर्फ दिखाने के लिये बुद्धू बने रहते हो। और उसूलो का गाना गाते हुए तुम्हारा ज़ातीरूखी गाव जाना वास्तव मे पद लोलुपता का पहला कदम है। हा, हा, मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हू, तुम मुझे आखे न दिखाओ, यह 'देहाती डाक्टर' के बहुत ऊची जगह पर पहुचने के रास्ते की पहली मजिल है। तुम शहर मे अपने को परिस्थितियो के अनुकूल ढालने के बजाय सबसे नीची सीढी से शुरू करना चाहते हो। तुम वहा कोई दो एक साल काम करोगे और फिर कुछ बनकर वहा से आओगे और बडे-बडे कदम बढाते ऊचे चढते चल जाओगे। लेकिन वार्या वह तो तबाह हो जायगी तुम्हारे साथ उस वीराने मे उसे

"बस करो!" वार्या ने अनुरोध किया।

'उसकी प्रतिभा नष्ट हो जायेगी!" येव्गेनी ने भावुक होकर कहा। 'इसके लिये कौन जिम्मेदार होगा? कौन होगा जिम्मेदार? कोई और? क्या तुम इतना भी नही समझ सकते कि अपने स्वार्थ, ढग से सोची-समझी अपनी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति के लिये तुम कितना बडा अपराध कर रहे हो? क्या तुम "

"बस काफी बाल चुके" वोलोद्या ने उठते, टेढी और बनावटी-सी मुस्कान लाते तथा वार्या की बडे गौर से देखते हुए कहा। 'मैं तो बहुत पहले से ही यह समझ चुका था कि तुम सब एक जैसे हो—तुम्हारा

वालेन्तीना म्रा द्रेयेव्ना, तुम्हारा दोदिक ग्रौर तुम तथा यव्गेनी। कमीना, येव्गेनी, इसलिये ग्रौर भी ज्यादा कमीना है कि वह सभी लोगो मे ग्रपने जसे कमीन का ही छिपा हुग्रा देखता है। ग्राज तुमने मुझे 'पद-लोलुप' कहा है, मैं इसे तुम्हारी ग्रात्मा की धिक्कार पर ही छोड देता हू, मगर तुम, वार्या, तुम क्या चुप रही?"

रुग्रासे वालक की तरह उसके होट काप उठे, मगर उसने क्षण भर म ग्रपने को सम्भाल लिया ग्रौर धीमे, ग्रप्रत्याशित रूप स शान्त स्वर म वोला—

"मैं तुम्ह यह वताता हू कि तुम क्या चुप रही। तुमने ग्रपने भाई की वात इसलिय नही काटी कि ग्रपने दिल की गहराई म तुम भी ऐसा ही समझती हो। ग्रौर ग्रगर तुम भी ऐसा ही समझती हो ता क्या जरूरत है तुम्ह मेरी? मुझ कमीने की, पद-लोलुपता के ग्राधार पर ग्रपने सारे जीवन की योजनाए वनानेवाले मुझ जैसे मौकापरस्त ग्रौर कमीने से क्या लेना-देना है तुम्ह? मेरे साथ नीचतापूर्ण जीवन विताना चाहती हो? कमीने की यातनाग्रो मे हिस्सा वटाना चाहती हो? लेकिन, वार्या, मैं वैसा नही हू। ग्रौर यह भी नही हो सकता कि तुम इसे न समझो। तुम तो समझती हो, लेकिन वात यह है कि येव्गेनी तुम पर हावी है, तुम्हारी मा तुम पर हावी है। मै देख रहा हू कि इस वक्त तुम मुझ पर भरोसा कर रही हो, मुझे समझ रही हो, लेकिन कुछ देर वाद, जव ये लोग तुम्ह ग्रपने दृष्टिकोण से समझायेंगे, तो सतही तौर पर वह भी तुम्ह सच ही प्रतीत होगा। लेकिन वह मेरे वारे म या मेरे जसे दूसरे लोगो के वारे मे नही, वल्कि येव्गेनी के वारे मे सचाई होगी। पर तुम सव तो यही समझते हो कि दुनिया यव्गेनी जसे लोगो से भरी पडी है? ऐसा नही है। ग्रौर तुम ये ग्रासू नही वहाग्रो वार्या। ग्रव तो उनका कोई मतलव ही नही रहा। मैं तुम्हारे दिल को विल्कुल ठेस नही लगाना चाहता, मै तो सिर्फ वही कुछ कह रहा हू, जो सोचता हू। जाहिर है कि हमारी यह वातचीत ग्राखिरी है ग्रौर इसलिये तुम दोनो को इतना जान तो लेना चाहिये कि मैं क्या सोचता हू। वैसे शायद ऐसा करने की जरूरत भी नही है। सम्भवत कोई जरूरत नही है। कुल मिलाकर, ग्रपनी चर्चा करना, ग्रपनी सफाई देना, ग्रपने हक म सवूत पेश करना, यह सव वहुत घटिया काम है।

हा, एक बात साफ है, मै दोहराता हू, वार्या, इतना साफ है कि अगर तुम इसके साथ सहमत हो और चुप रहो, तो "

"मै उसके साथ सहमत नही थी," वार्या बोली। "मैं तो सिर्फ इतना ही "

"और मेरे लिये सिर्फ इतना ही—बहुत काफी है!" वालोद्या ने जवाब दिया। "भूगर्भशास्त्र की पढाई तुमने छोड दी है, नाममात्र को विद्यार्थिनी रह गयी हो। मतलब यह कि अपने जीवन को नीचे की ओर ले जा रही हो और उन मूर्खो की बात सुनती हो, जो यह खुसुर फुसुर करते रहते है, मानो तुममे प्रतिभा है। मगर, वार्या, प्रतिभा तुमम नही है, हा, बन्दर जैसी नकल करने की कुछ क्षमता अवश्य है। मगर यह तो घरेलू दावतो मे मनोरजन के लिये ठीक है, किसी काम, श्रम या कर्तव्य के लिये नही "

"मेरी समझ म नही आता कि तुम यह सब बकवास क्या सुन रही हो?" दोदिक द्वारा भेट की हुई पाइप से कश खीचते हुए येव्गेनी ने पूछा। "आखिर यह सब तो अपमानजनक है।"

"यह सब बहुत कटु है," वोलोद्या ने वार्या के निकट जाकर लगभग फुसफुसाते हुए कहा। "यह सब कुछ बहुत कटु है और मेरे जीवन म शायद आज से अधिक बुरा और कोई दिन नही आया था। लेकिन हो ही क्या सकता है। नमस्ते!"

"नमस्ते!' वालोद्या की तरफ नजर उठाते हुए वार्या ने कहा। किन्तु वालोद्या न जान-बूझकर वार्या स नजर नही मिलाई, क्योकि उसके लिये वार्या की अभी बच्चो जैसी शिथिल आखो म यह दुख देख पाना कठिन था।

दादा ने रसोईघर स झाकते हुए कहा कि वे क्वास का शोरबा पान के लिय मेज पर आ जायें।

ता गुडबाई!' येव्गेनी बाहर जाते हुए वालोद्या के पीछे चिल्लाया।

"जगली जानवर!" वार्या न अपन भाई को धीमे-से कहा।

वालोद्या जब ट्राम पर चढ रहा था, तो वार्या भी वहा पहुच गयी। उसकी आवाज सुनकर तो वालोद्या को मानो कोई हैरानी भी नही हुई। ट्राम जोडा और मोड पर बुरी तरह झटके देती तथा झकझोरती थी। वार्या के छोटे-से कान के ऊपर से, जिसमे वह झुमका पहन थी,

दूसरी तरफ देखते हुए वोलोद्या कह रहा था – "मास्को या किसी दूसरे बडे शहर मे जाओगी, हो सकता है कि वहा किसी उच्च थियेटर विद्यालय मे तुम्हे दाखिला भी मिल जाय, फुटलाइटें जल उठेंगी, तुम्हे फूल भेंट किये जायेंगे, बस, इसके सिवा वहा और क्या होता है? बाकी सभी लोगों को इस बात की खुशी होगी कि मैं जो कुछ कहता था, वह गलत था। लेकिन अगर ऐसा ही है, तो फिर तुम्हे ज्ञातोस्खी गाव से मतलब ही क्या है? असली और सबसे बडी बात तो यह है कि जिन्दगी के प्रति हमारे रवये अलग अलग है। बेशक कभी ऐसा वक्त था, जब तुम मुझे समझती थी, लेकिन वास्तव मे तो तुम मुझे नही समझती थी, रत्ती भर भी नही समझती थी। वह तो जैसे समझने के बारे मे बच्चो का सा खेल था। ठीक है, न?

"वालोद्या!" वार्या ने कहा।

"अलविदा, वार्या!" वालोद्या ने जवाब दिया। "अलविदा! अगर फुरसत हो, तो खत लिखना। मैं जवाब दे दूगा। और अब कुछ हासिल नही होगा इन बातो की चर्चा करके "

वालोद्या चलती ट्राम से नीचे कूद गया, कुछ कदम ट्राम के साथ साथ भागता रहा और फिर फौरन दूसरी ओर मुड गया। ऐसा ही आदमी था वह, तब भी मुह मोडकर चला जाता था, जब गलती पर होता था।

"शायद मेरी जैसी हालत मे होने पर आदमी को नशे मे धुत्त हो जाना चाहिये!" बीयर की बोतल और मग का विज्ञापन देखकर वोलोद्या ने सोचा। "या फिर सिगरेट पीना शुरू कर देना चाहिये!" किन्तु धीरे धीरे कसकते दर्द से दबा हुआ वालोद्या इसी क्षण ऐसे विचारो के बारे मे भूल गया।

विदा, वार्या!

कुछ दिनो तक वोलोद्या कही बाहर नही गया, अपने कमरे मे पडा सोचता रहा, रातो को सो नही पाया। वार्या को टेलीफोन करने के लिये उसने दो बार नम्बर मिलाया, मगर फिर अपना इरादा बदल लिया। एक गर्म दोपहरी मे डाकिया एक रजिस्टरी लेकर आया, जिस

पर वहुत सी मुहर लगी थी। रजिस्टरी जन कमिसारियत ने मास्को से भेजी थी। वोलोद्या को रसीद पर पेंसिल से नहीं, स्याही स दो वार हस्ताक्षर करने पडे।

लिफाफे मे एक वडा कागज था, जिसम लिखा था कि व्लादामिर अफानास्येविच उस्तिमेन्को को काय नियुक्ति के लिय फौरन मास्को म स्वास्थ्य रक्षा की जन-कमिसारियत के कायालय मे साथी उसोलत्सेव क पास पहुचना चाहिये। वडे कागज के साथ वोगास्लाव्स्की का छोटा-सा नोट भी था। वागोस्लोव्स्की ने लिखा था कि "जसा हमने तय किया था", उसी के मुताविक मैं साथी उसोलत्सेव से उस जिम्मदारी क, महत्त्वपूण और दिलचस्प काम को पूरा करने के लिय आपकी सिफारिश कर रहा हू, जिसके वारे मे हमन "चोर्नी यार के घाट पर चर्चा की थी।" यह नोट इसी साल की ६ मई का लिखा हुआ था।

शाम होने को थी, जब पोस्तनिकोव और गानिचेव एकसाथ वोलोद्या के पास आये। अग्लाया पेत्रोव्ना वोलोद्या की चीजे सूटकेस म रख रही थी, वोलोद्या अपनी किताबे छाट रहा था।

"कहा की तैयारी हो रही है?' चालाकी से आखे सिकोडते हुए गानिचेव ने पूछा।

"यह रजिस्टरी आई है" जन कमिसारियत का लिफाफा दिखाते हुए वोलोद्या ने जवाव दिया। "क्या मामला है, कुछ समझ म नहीं आ रहा।"

"मामला वडा सीधा-सादा है,' पोस्तनिकोव न कहा। "विदेश।'

"कैसा विदेश?" अग्लाया ने हाथ नचाते हुए सवाल किया। "अभी वह अनुभवहीन छोकरा ही तो है और "

'अनुभवहीन छोकरा तो जरूर है, मगर वडा समझदार है वह। मूछो पर हाथ फेरते हुए पोस्तनिकोव ने कहा। "और उस पर भरोसा किया जा सकता है। इसीलिय तो तीन आदमियो न इसकी सिफारिश की है। वोगोस्लाव्स्की न, जो वहा काम कर रहे हैं, प्रोफेसर गानिचेव ने, जो उसे शरीर विकृति विज्ञानी वनाना चाहते थे, और मैंने, जो आपके भतीजे के रूप म समय के साथ एक अच्छा शल्य चिकित्सक वनने की सम्भावना देख रहा है। यह खत भेजनेवाला उसोलत्सेव अभी हमारा

विद्यार्थी था ग्रौर इसलिये जब-तब हम लोगो से सलाह ले लेता है। ग्राशा करता हू कि ग्रब सारी बात समझ म ग्रा गयी होगी ? '

"लेकिन कौनसा विदेश है यह ? '

"पेरिस तो होने से रहा," गानिचेव न उत्तर दिया। "मरे ख्याल म एशिया का ही कोई देश होगा, सो भी कठिन। मजूर है वहा जाना ?"

विदा लेने से पहले इन लोगा न शेम्पन पी। वालाद्या उदास भी था ग्रौर कुछ खोया-खोया भी। पास्तनिकोव मौन साधे रहा ग्रौर गानिचेव न वालोद्या स हाथ मिलाते हुए कहा – "ग्रापको ग्रपनी शुभकामनाए देता हू। वहा पहुचकर खत लिखिये ग्रौर सच कहता हू, मेरे ग्रजीज, बहुत ग्रफसोस है मुझे दिली ग्रफसोस है कि ग्राप मेरे विभाग म काम करने के लिये राजी नही हुए।"

वालाद्या के साथ-साथ ग्रग्लाया भी गाडी के डिब्बे म दाखिल हुई।

"रास्ते मे खूब ग्रच्छी तरह स सो लेना, बूग्रा ने ग्रनुरोध किया। 'देखो तो, कसी सूरत निकल ग्राई है, ग्रादमी नही, किसी देव प्रतिमा के तपस्वी जसे लगते हो।"

वालोद्या चौबीस घण्टा स ग्रधिक समय तक सोता रहा। इसके बाद उसने बूग्रा द्वारा दिये गये सभी सडविच, मीठा बन ग्रौर पूरे उबले हुए चार ग्रडे एक बार ही खा लिये ग्रौर फिर से सो गया। इस तरह उसने नीद की कमी को पूरा किया, किसी भी तरह के सपनो ने उसकी नीद म खलल नही डाला ग्रौर पूरी तरह स जाग उठने पर उसने कोई खुशी भी महसूस नही की। कुछ बहुत ही प्यारा, बहुत ही मूल्यवान ग्रौर ग्रत्यधिक महत्त्वपूर्ण सपना के लिये उसके जीवन से ग्रलग हो गया था।

मास्को के स्टेशन पर उसने दाढी बनवायी, बाल कटवाये, जूतो पर पालिश करवायी ग्रौर, शायद कोई जरूरत ग्रा पडे, यह सोचकर सिगरटो का एक पैकेट भी खरीद लिया ग्रौर साथी उसोलत्सेव से मिलने चल दिया। उसे फौरन भीतर बुला लिया गया। गानिचेव का यह भूतपूर्व विद्यार्थी कोई पतीस साल का हृष्ट-पुष्ट, सनिक जैसे मामूली ग्रौर रूखे चेहरेवाला ग्रादमी था। उसने मशीन से ग्रपना सिर घुटा रखा था ग्रौर गाढे कपडे की खुरदरी-सी कमीज पहने था।

"हम आपको विदेश, 'न' जनतन्त्र म भेजने की सोच रहे हैं," उसोलत्सेव ने नजरो से वालाद्या की थाह लते हुए जल्दी-जल्दी और रखाई से कहा। "हम आशा है कि आप पर जा विश्वास किया गया है, आप अपने को उसके योग्य सिद्ध करेंगे और इस बात के लिय अपना पूरा ज़ोर लगायेंगे कि बाद म वहा के लाग आपकी अच्छे शब्दो मे चर्चा कर। आपकी, और ज़ाहिर है उस देश की, जहा आपने शिक्षा पायी और जिसने आपको एक अच्छा नागरिक बनाया "

उसालत्सेव औपचारिक भाषा म बोल रहा था, किन्तु उसके स्वर मे औपचारिकता नही थी, और आखो म अप्रत्याशित ही खुशी की चमक आ गयी।

"आपके पास सिगरेट है?" उसने अचानक पूछा।

वोलोद्या का याद था कि उसने सिगरेटो का पकेट खरीदा था, मगर जवाब यह दिया कि वह सिगरेट नही पीता है। उसे यह विचार आने पर कटुता-सी अनुभव हुई कि मानो सचालक महोदय की कृपादृष्टि पाने के लिये ही उसन सिगरेट खरीदी हा।

'आम तार पर हमारी विदेश की जो धारणा हाती है, वसा वह बिल्कुल नही है," उसोलत्सेव ने अपनी बात जारी रखी। "काक्टेल के हाल वहा आपको नही मिलेंगे, सिनेमाघर भी शायद ही वहा हा, जबकि झाड फूक से इलाज करनेवाले ढोगी हकीमो आर सभी तरह के अतर्राष्ट्रीय कूडे करकट की वहा कोई कमी नही है। जिन्दगी बहुत कठिन होगी और काम करना भी आसान नही होगा। सहायक चिकित्सा कमचारी वहा आपको तब तक नसीब नही होगे, जब तक यह नही साबित कर देंगे कि आप झाड फूक करनेवाला से बेहतर इलाज करते है और जब तक स्थानीय लोग आप ही से काम सीखकर आपकी सहायता करने की इच्छा अनभव नही करेंगे।"

उसोलत्सेव नज़र टिकाकर वोलाद्या की ओर देखता हुआ प्रतीक्षा करता रहा।

"फैसला कर लिया?"

"कर लिया।"

"क्या फैसला किया?

"मै जाऊगा।"

"डर तो नही जायेंगे? मा-बाप को चिट्ठिया ता नही लिखन लगेंगे कि मुझे यहा से निजात दिलवाइये? सोच लीजिय, आपने तो अभी जवानी मे कदम ही रखा है।"

"मेरे मा-बाप नही है," वोलोद्या ने रुखाई से जवाब दिया। "रही मेरे जवान होन की बात, तो मैं डाक्टर हू और बाकी कोई चीज़ कुछ भी महत्त्व नही रखती।"

"तो ठीक है, अर्ज़ी दे दीजिये!" उसोलत्सव ने कहा। "तीन साल का करार होगा।"

सभी तरह की औपचारिकताए पूरी होने म काफी वक्त लगा। किन्तु वोलोद्या को इस कठिन यात्रा की तयारी करने के लिये इससे भी कही ज्यादा वक्त और शक्ति लगानी पडी। जब शल्य चिकित्सा का सारा साज़-सामान, दवाइया, किताबे और कपडे लत्ते खरीद लिये गय, तो कुल मिलाकर इतनी अधिक चीजे जमा हो गयी कि नवनिमित और सुविधाजनक "मोस्क्वा" होटल के छोटे से कमरे म वालोद्या के लिये आसानी से आने जाने की भी जगह बाकी नही रही।

बूआ अग्लाया अपने भतीजे को विदेश विदा करने के लिय आयी। नोश्तादत से रोदिओन मेफादियेविच भी मानो सयोगवश ही अचानक आ पहुचे। अब व प्रथम श्रेणी के कप्तान बन गये थे, खुशी भरे अन्दाज़ म उन्होने यह शिकायत की कि चौबीसो घण्टे व्यस्त रहत है और वोलाद्या से यह अनुरोध किया कि वह अपनी हठीली बूआ को अतीव सुदर लेनिनग्राद नगर जाने के लिये राज़ी कर ले और अगर वह द्वीप पर रहते हुए डरती है, तो राम्बोव–ओरानियेनबाऊम आ जाये। अग्लाया हसती रही और वोलोद्या ने देखा कि कैसे वह चोरी छिपे अपने पति की पके बालावाली कनपटी को चूम रही है। रोदिओन मेफादियेविच वालाद्या के लिये एक रेडियो और फालतू बटरियो का सेट भी उपहार स्वरूप लाये थे, ताकि वह बिजली न होने पर भी रेडियो कायक्रम सुन सके।

"वहा तुम्ह इसकी बडी ज़रूरत महसूस होगी," वोलोद्या का रडियो के उपयोग की विधि बताते हुए रोदिओन मेफादियेविच न कहा, "वहा, सभी चीज़ो से दूर होन पर यह तुम्हारे बहुत काम आयगा, मेरे अज़ीज़ "

वोलोद्या कुछ कुछ उदासी अनुभव कर रहा था और उसे अपने पर कुछ दया भी आ रही थी। किन्तु यह उदासी और दया उत्तरदायित्व की उस विशेष तथा महती भावना के नीचे मानो दब सी गयी, जो उसे यह सोचने पर अनुभव हुई कि कैसे वह विदेश में जाकर काम करेगा। उस विदेश में, जिसका रूप अस्पष्ट और अनिश्चित था और जहां सम्भवतः कठिनाइयों की कुछ कमी नहीं होगी। यह ख्याल आने पर कि वहां वह एकाकी होगा, उसे बेहद परेशानी महसूस हुई, किन्तु उसने ऐसे ख्यालों को जबदस्ती अपने से दूर भगा दिया। आखिर वोगास्लोव्स्की तो उस पर भरोसा करते हैं, फिर वह खुद अपने पर क्या न भरोसा करे?

"आप लोग जायें, जाकर मास्को में घूमें फिरें। मेरे साथ यहां बैठे बैठे क्यों ऊब रहे हैं?" वोलोद्या ने बड़े-बूढ़ों के अन्दाज़ में कहा।

किन्तु रोदिओन मेफोदियेविच और वूआ कहीं नहीं गये। खनिज जल की बोतल पीने के बाद रोदिओन मेफोदियेविच ने सुनहरी पट्टियोंवाली अपनी जहाज़ियों की कमीज़ उतार दी। सिर्फ बनियाइन रह जाने पर उनकी मांस-पेशियां दिखाई देने लगी थीं और हाथ-बांहों पर नीले रंग से गुदे हुए सांपों, शेरों, टूटी जंजीरों और नारों के कारण उन्हें बड़ी झेंप सी महसूस हो रही थी। उन्होंने कामकाजी ढंग से वोलोद्या के सारे सामान को गौर से देखा और अद्भुत चुस्ती फुर्ती से सब चीज़ों को छांट छांटकर अलग कर दिया। इसके बाद वे सरकारी और निजी चीज़ों को अलग अलग पैक करने लगे। जैसे ही कोई सूटकेस, पेटी या गठरी तैयार हो जाती, वूआ उस पर टाट लपेटकर उसे सी देती। काम करते हुए ये दोनों यानी पति-पत्नी हास्यास्पद ढंग से एक गाना भी गाते जा रहे थे, जो वोलोद्या ने पहले कभी नहीं सुना था। इस गाने से यह स्पष्ट हो रहा था कि उन दोनों की अपनी, एक ऐसी खास ज़िन्दगी भी है, जिससे वोलोद्या अनजान था।

रोदिओन मेफोदियेविच ने पतली आवाज़ और द्रुत लय में ये पंक्तियां गायीं –

> कहीं गांव के बाहर ही
> बात अजब-सी एक हुई
> वन में जंगल में सहसा
> बिगुल ज़ोर से गूंज उठा

वूम्रा सिर पीछे को करके शरारती ढग से आखो को चमकाते हुए यह टेक गाने लगी—

तूतू-तूतू-तूतू-तू
तुम-तुम, तुम-तुम, तू-तू तू!

वूम्रा जान-बूझकर भारी आवाज म गा रही थी और उसके गाने म वडा प्यारा प्रश्नात्मक अन्दाज था। दूसरी ओर रोदिओन मेफोदियेविच उसी तरह से ऊची आवाज मे गा रहे थे, जैसे दादा मेफोदी "ऐश करने" के वाद गाते थे—

हल्ला यह हुस्सार कर
और गाव की ओर वढे,
सव सुदर, मूछावाले
आगे थे विगुलावाले

और वूम्रा न अपने तेज, छोटे-छोटे और सफेद दाता से मजवूत धागे का काटकर फिर से यह टेक दोहरायी—

तूतू-तूतू-तूतू-तू
तुम-तुम, तम-तुम, तू-तू-तू!

रोदिओन मेफोदियेविच न अगला पद गाया—

अफसर ठहरे सभी घरा म
सैनिक, फौजी ता वाडा म,
फूस कोठरी, जहा अधेरा
वही बिगुल वाला का डेरा

और वोलोद्या न मुस्कराते हुए यह टेक सुनी—

तूतू-तूतू-तूतू-तू
तुम-तुम, तुम-तुम, तू-तू-तू!

"बढिया है न?" रोदिग्रोन मेफ़ादियेविच न पूछा।

"यह गाना कहा सीखा ग्राप दोना न?" वालोद्या ने हैरान होते हुए पूछा।

"वहा, वोलोद्या, जहा आज़ादी का नज़ारा है, धन दौलत की बढती धारा है, उसका उचित बटवारा है," अग्लाया ने शम से लाल हाते हुए उत्तर दिया। "खुद ही सीखा है "

खाना खाने के लिये ये तीना बडे ग्रौर नय रेस्तरा म गये, जिनम ग्राधी मेजे खाली पडी थी। लागो के बहुत कम होने पर भी वरा देर तक ग्राडर लेन नही ग्राया। रादिग्रोन मेफोदियविच इस बात पर भुनभुनाने ग्रौर गम होने लगे। वडे वेरे न, जिसके चेहरे पर बेहयाई ग्रौर गुस्ताखी ग्रकित थी ग्रौर जिसके कलफ लगे कॉलर के ऊपर दुहरी तिहरी ठोडी नजर ग्रा रही थी, यह बताया कि "न० १" (एसा कहते हुए उसने ग्रपनी मोटी तजनी को मोडा) इस वक्त यहा बहुत वडी सख्या मे विदेशी ग्राये हुए हैं ग्रौर बावर्ची लोग इतनी ग्रधिक मात्रा मे खाना तयार नही कर पाते है ग्रौर "न० २" (ऐसा कहते हुए उसने वसी ही मोटी ग्रपनी ग्रनामिका को मोडा) यहा सबस पहले विदेशिया को ही खिलाया पिलाया जाता है। इतना कहकर उसने टवीड का कोट पहने हुए एक मोटे-ताज़े श्रीमान की पीठ की ग्रोर सिर झुकाकर सकेत किया।

"तो ग्राप यहा यह नोटिस क्यो नही लगा देते कि सोवियत नागरिको को यहा 'दूसरा दर्जा' दिया जाता है? हा, 'दूसरा दर्जा'।"

किन्तु अग्लाया ने उनके सचलाये हाथ पर ग्रपनी हथेली रख दी। रोदिग्रोन मेफोदियविच ने ग्रपनी ग्राखे झपझपाया ग्रौर फौरन खिल उठे।

"मानसिक दासता क्या होती है, कभी तुमन इस बात पर विचार किया है?" उन्हाने ग्रपनी पत्नी से पूछा ग्रौर वे दोनो मानो वोलोद्या को भूल भालकर एक-दूसरे की वाता म खो गये। ग्रौर वोलोद्या शोरवा खाता हुग्रा वाया के बारे म सोच रहा था, इस ख्याल म डूवा हुग्रा था कि वे दाना भी इसी तरह यहा बैठे हो सकते थे, तरह-तरह के मसला पर बात कर सकते थे ग्रौर फिर एक साथ ही उस कठिन,

दिलचस्प और रहस्यपूण काम को करने के लिय जाते, जो उसकी राह देख रहा है।

उदास और ऊघते से वादक लोग मच पर आये। उन्होने अपनी कुसिया इधर उधर हिलायी-डुलायी और उनके मुखिया ने सचालक के ढग से खूब जार से, ऊची आवाज करते हुए अपनी नाक सुडकी।

"ब्राडी की एक और बातल लाइये।" ट्वीड का कोट पहने विदेशी ने आदेश दिया।

"शायद इतनी ही बात है, रोदिओन," वोलोद्या को मानो कही दूर से वूआ के ये शब्द सुनाई दिये। "वैसे प्रसगवश कह दू कि जब तुम गुस्से मे होते हो, तो इन्साफ करना तो बिल्कुल भूल ही जाते हो।"

वोलोद्या न कटलेट खत्म करके जम्हाई ली और बोला —

"मैं भी यहा बैठा हू। आप दाना अलग अलग शहरो से मुझे विदा करन आये है और इतनी जल्दी इसके बारे मे बिल्कुल भूल भी गये। यह अच्छी बात नही है।"

गाडी छूटने तक रोदिओन मेफोदियेविच और अग्लाया स्टेशन पर खडे रहे। वूआ सफेद बरसाती पहन थी और कधा पर सफेद रेशमी रूमाल डाले थी। उसके काले बाला मे एक सुदर कघा चमक रहा था — उसे कभी-कभी बजारो का सा यह शृगार करना अच्छा लगता था। रोदिओन मेफोदियेविच बिल्कुल तनकर खडे रहे और जब गाडी चली, ता उन्होने परेड के वक्त की भाति अपनी टोपी के छज्जे के साथ हथेली सटाते हुए मानो सलामी दी। वोलोद्या को अपनी वूआ काफी देर तक दिखाई देती रही। वह विदा करनेवालो की भीड को चीरती और अपना हाथ ऊपर उठाये हुए गाडी के पीछे पीछे प्लेटफाम पर भागती जा रही थी। बिजली की बत्तियो की तेज रोशनी मे अग्लाया का ऊपर को उठा, सवलाया हुआ और गाल की कुछ-कुछ उभरी हड्डियावाला चेहरा तथा आसुओ से तर आख चमक रही थी

बाद म वूआ लोगो की भीड म खो गयी, डिब्बे के गलियारे म हवा का तेज धाका आया और पर्दे फडफडा उठे। मास्का की बत्तिया पीछे भागती जा रही थी, मास्को, वह नगर पीछे छूटता जा रहा था, जिसने वोलाद्या, व्लादीमिर अफानास्येविच, डाक्टर व० अ० उस्तिमेन्को का विदेश म काम करने के लिये भेजा था।

वोलोद्या विदेश में।

छ दिन के सफर मे वोलोद्या ने कडे वालावाली अपनी दाढी वढा ली। सम्भवत उसने जान-बूझकर ही ऐसा किया था, क्योंकि उसके पास उस्तरा ना था और इसके अलावा उसके साथ ही सफर करनेवाले एक बूढे फौजी ने भी, जिसके सिर पर गजी चाद का घेरा-सा था, कई वार वोलोद्या को अपना उस्तरा देना चाहा। वोलोद्या दाढी बढाकर सीमा पर अधिक कुछ उम्र का नजर आना चाहता था।

किन्तु डाक्टर उस्तिमेन्को की शक्ल-सूरत की तरफ सरहद पर किसी ने कोई ध्यान नही दिया। सीमा-सैनिको ने उसके कागज-पत्र जाचे और चुगीवालो ने गठरिया और सूटकेस। काली, ठडी रात थी, तेज हवा चल रही थी। कही नजदीक ही कोई पहाडी नदी दहाड रही थी, शोर मचा रही थी। वोलोद्या मोटे शीशे के वडे गिलास से चाय पीता हुआ इन्तजार कर रहा था। गाडी अभी भी मेद्वेजातनाय स्टेशन के प्लेटफार्म पर खडी थी, उसकी सुखद गर्माहटवाली खिडकियो से तेज रोशनी छन रही थी। वहुत ही समझदार, मुरझाये चेहरेवाला छोटा-सा ऐनकधारी एक जापानी और लाल वालोवाले लम्बे-तडगे अग्रेज, जिनके साथ एक सुदर, सुघड और वहुत ही रगी चुनी महिला था, रेस्तरा के हॉल मे इधर-उधर आ-जा रहे थे।

दो घटिया वजी, तीसरी घटी वजी और इसके वाद वडे कडक्टर ने लम्बी सीटी वजायी। जमीन को कपाती हुई भारी गाडी वरफ चूडीवाली इस रात के अधेरे मे उस महराब की तरफ चल दी, जो दोनो राज्यो को अलग करती था। वोलोद्या ने चाय खत्म की और उसके लिये अन्तिम सोवियत पैसे दे दिये। कुछ देर वाद चार व्यक्ति आये, उन्होने झुककर वोलोद्या को नमस्कार किया और एक ट्रक मे उसका सामान लादने लगे। ये लोग रूसी नही वोलते थे, ये "चिन्ना" थे। आखिर जब सारा सामान लद गया, ऊपर तिरपाल डालकर उसे रस्सियो से कस दिया गया, तो मामा-साना के लेफ्टीनेट ने वोलोद्या से हाथ मिलाया और रियाजान नगर के उच्चारण के साथ रूसी मे बोला—

"नमस्ते डाक्टर, आपके लिये मगल कामना करता हू।"

"ग्रापको सेहत देता हू।" वालोद्या न वस ही उत्तर दिया, जस कि रादिग्रोन मेफोदियेविच कभी-कभी कहा करत थे। ट्रक धीरे धीरे चल दी ग्रौर कोई पन्द्रह मिनट बाद रुक गयी। मिट्टी के तेल की लालटेनें लिये, वडे छज्जेवाली टापिया ग्रौर मामजामे की वरसातिया पहने इन दूसरी ग्रोर के सीमा-सनिका ने दर तक वोलोद्या के कागज पत्र दखे ग्रौर चुगीवाला ने गठरिया को टटोला तथा सब चीजा को खोल-खोलकर देखा। वोलोद्या वैठा हुग्रा झपकी लता रहा। पहाडी नदी तो सिर के ऊपर ही दहाडती-सी प्रतीत हो रही थी। इसके पहल कि सीमा ग्रफ्सर न दो उगलिया जोडकर वोलोद्या को सलामी दी, जा हमार फौजिया की सलामी से विल्कुल भिन्न थी, ग्रपन विरले सिगरेट पीने के कारण पीले हा चुके दात निपोरते हुए सोवियत डाक्टर को जिज्ञासापूवक ध्यान से देखा ग्रौर दो वार लालटेन हिलायी, काफी समय वीत गया। ड्राइवर न सामन की वत्तिया जला दी ग्रौर तव भारी ग्रवरोध दण्ड चू चर करता हुग्रा नम हवा म धीरे धीर ऊपर उठा। ट्रक ग्रपने सभी पुराने ग्रजरा पजरा को जार से खडखडाती ग्रौर मानो मन मारकर ग्रदृश्य तथा नम ग्रधेरे मे पहाड पर चढने लगी। सुबह को ठड महसूस होती ग्रौर शाम का गर्मी-सी। वोलोद्या के सहयात्री ट्रक की वाडी मे सोते, समझ म न ग्रानेवाला काई खेल खेलते ग्रौर पडावा पर भेड का ग्रध पका मास दातो से काट काटकर खाते। सफर के दूसरे दिन वोलोद्या का टेढे मेढे रास्त के ऊपर हवाई जहाज जैसा एक वडा उकाव ग्रासमान म तरता सा दिखाई दिया। इसके बाद किसी सूख गयी नदी का पेटा लाघते समय ट्रक गाढे कीचड मे फस गयी ग्रौर फिर स वच्चे रास्त पर वढ चली। इस मौक़े पर वाकी सव लोगा के साथ वोलोद्या ने भी फमी हुई ट्रक को ग्रागे धकेला, तख्ते विछाये, फावडे स कीचड को हटाया ग्रौर चपटे रेडिएटर का पीछे धकियाया। ग्रौर ग्रपने साथ जानेवाला की तरह "हे हे—हो। हीया हो।" चिल्लाना भी सीख गया।

मुह ग्रधेरे ये लोग खानावदोशो के एक वडे शिविर के पास से गुजरे। खेमा म से धुग्रा निकल रहा था, ग्रगारा-सी दहकती ग्राखो, घने ग्रयाला ग्रौर हवा म लहराती पूछोवाले घोडे देर तक ट्रक के ग्रागे ग्रागे दौडते रहे। ऐस ही दूसरे शिविर मे वालोद्या ने वेहद नमकीन,

मगर वहुत ही जायकेदार शारवा खाया, जिसम भेड की चर्वी के टुकड़े तैर रहे थे। तीसरे शिविर म उसन चाय पी। गाला की चौडी हड्डियावाले लाग वहुत ध्यान से वोलोद्या को दखत थे और कुछ ने उसके मजबूत, रूसी चमडे के वन वूटा को छूकर उनकी तारीफ की। वालोद्या न तो किसी को देखकर मुस्कराया, न किसी के सामने उसने सिर भुकाया, न वच्चो के सिरो को सहलाया थपथपाया और न वे शब्द ही वाले, जो अब तक सीख गया था। लोगो की चापलूसी करना उस सबमे घटिया काम लगता था। वह वास्तव म जैसा था, वसा ही, यहा तक कि कुछ कुछ कठोर भी वना हुआ था। वह वहुत ध्यान से सब कुछ सुनता था, हर चीज़ को वहुत गौर स देखता था, यह याद करने की कोशिश करता था कि स्थानीय लोग कैसे खाते-पीते है, सलाम-दुआ करते है, धयवाद दते है। वोलाद्या उन तत्वा को ढूढ रहा था, जिनके लिये इस देश और इसके लोगा का आदर किया जा सकता था, वह उनका मिजाज जानना चाहता था, उनके खास और मुख्य लक्षणा को खाज रहा था। फिलहाल ता ऐसे लक्षणो को ढूढ पाना और समझना कठिन ही नही, असम्भव था, फिर भी एक बात उसे स्पष्ट हो चुकी थी कि धम प्रचारका-वुद्धिजीवियो की उह "बडे वच्चे" बतानेवाली वात विल्कुल वकवास है। इन मितभाषी, मेहमाननेवाज़ और कठोर लोगो के साथ वरावरी के नाते शान्त, गम्भीर और आदरयुक्त व्यवहार करना आवश्यक है।

यात्रा का तीसरा दिन समाप्त होनवाला था, जब एक खेमे के करीब नमदे पर आराम करते हुए वोलोद्या ने जादू टोने करनवाले शमान देखे। वे नज़दीक ही खडे थे और आपस मे बाते करते हुए रूसी डाक्टर को बहुत ध्यान से देख रहे थे। स्तेपी की सध्याकालीन हवा के कारण पेटी से लटकती हुई उनकी जादू टाने करने की चीज़— कठफाडा की खाले, सूखी जडे, भालू और सुनहरे उकावा के पज— हिल-डुल रही थी। एक वूढे शमान की गदी चिपचिपी खजरी की कोई छोटी सी घण्टी लगातार बडी मधुर टनटनाहट पैदा कर रही थी।

"ये मेरे दुश्मन है," वोलोद्या ने सोचा। "मुझे इनसे टक्कर लनी होगी।"

"पि रा मी-दान!" औरो की तुलना म कम उम्र के एक शमान न अचानक कहा और वालोद्या को सिर झुकाया।

"क्या?" वोलोद्या समय नही पाया। स्तेपी की हवा और इन खानावदोशा के वीच यह शब्द कुछ अजीव सा था।

"पि रा-मी दोन!" शमान न यही शब्द दाहराया और पीडा क कारण व्यथित-सा मुह वनाते हुए कनपटी पर हथेली रखकर कहा – "पिरामीदान!"

वोलोद्या ने सिर झुकाकर यह जाहिर किया कि वह उसकी वात समझ गया है और ट्रक की ओर चला गया। टीन के वक्स म स दवा की गालियावाला डिब्बा निकालने के पहले वालोद्या को काफी झझट करना पडा। उसने दवाई डालने का एक लिफाफा भी निकाल लिया। किसी आवारा कुत्ते की दिल को परेशान करनेवाली हूक को सुनते हुए वालोद्या ने हवा के थपेडा म खडे होकर लिफाफे पर लातीनी मे Pyramidoni 0 3 लिखा। शमान ने वहुत झुककर धन्यवाद दिया, फौरन दो गोलिया मुह म डाल ली और फिर ड्राइवर को वहुत देर तक कुछ स्पष्ट करता रहा। कुछ ठहरकर ड्राइवर ने वालाद्या को शमान की वात समझायी। उसने सलाह दी थी कि वालाद्या को नमदे पर नही वैठना चाहिये, क्योकि उस पर तो छोटा शमान वैठता है और वडा, वुजुग शमान तो सिफ घोडी की सफेद खाल पर ही वैठता है। सफेद खाल पर वैठनेवाला उसकी तुलना मे कही अधिक कमाता है, जो अपने को नमदे के स्तर तक नीचे ले आता है। इस तरह शमान ने वोलोद्या के प्रति पिरामीदान दने के लिय आभार प्रकट किया।

इन लोगा ने बिज़रला खा नदी के करीव स्तेपी मे रात बितायी। सुबह का वालोद्या को भेडो का वहुत वडा रेवड, चरवाहा के अलावा का धुआ और दूरी पर धुध म लिपटी ऊची पवतमाला की धुधली-सी रूप रखा दिखाई दी।

कुछ देर वाद इनकी ट्रक तिडके हुए चपटे पत्थरा के अद्भुत रास्त पर वढ चली। सडक के करीव पत्थर का भूरा, वडे वडे कानो, ओठहीन मुह और धसी हुई तिरछी आखोवाला छोटा सा एकाकी वौना माना ऊघ रहा था।

"चगेज खा!" ड्राइवर ने वोलाद्या का वतलाया।

ग्रौर इशारा से उसने समझाया कि यह सडक भी चगेज खा के लोगा ने बनायी थी, मगर ग्रभी नहा, बहुत पहले, बहुत-बहुत पहले।

बोलाद्या न सिर झुकाया कि वह समझ गया है। ग्रचानक उन पाम्निकोव ग्रौर उनके ये शब्द याद हो ग्राये कि मानवजाति सदिया तक चगेज खा ग्रौर उसके जसा को याद रखती है!

सामन पवतमाला की ऊची, खडी ग्रौर शक्तिशाली शाखाए नज़र ग्रान लगा थी। हिम मडित चोटिया के ऊपर धुग्रारे बादल मडरा रहे थे। वोलोद्या को मालूम था कि ग्राज व पवतमाला को लाघकर राजधानी मे पहुच जायगे।

तेरहवा अध्याय

खारा का रास्ता

वोलोद्या ने एक होटल के वडी-सी खिडकी, छत के पखे और अलग गुसलखानवाले कमरे म रात वितायी। सुवह ग्राख खुलन पर वह देर तक यह न समझ पाया कि कहा है, किस शहर म है और किसलिय यहा है।

जन-स्वास्थ्य विभाग म एक दुवले-पतले कमचारी न, जो सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाये था और जिसके शीशो के पीछे छोटे छोटे मनको जसी वडी सावधान, समझदार और अरुचिकर ग्राखे चमक रही थी, वोलाद्या का अपने कमरे म स्वागत किया। कमचारी धारा प्रवाह वोलता था और कोट के ऊपर चोगा डाले हुए मोटा-सा ग्रादमी, जो दुभापिया था, छोटे छोटे और सक्षिप्त वाक्यो म अनुवाद करता था—

"विभाग के श्रीमान प्रतिनिधि को अफसोस है। रुसी डाक्टर को मुश्किल रास्ता तय करना होगा और मुश्किल काम भी। वहुत मुश्किल। वहुत ही मुश्किल। वहुत, वहुत, वहुत मुश्किल। असीम दुख है हमे। चार सौ किलोमीटर घोडे पर जाना हागा या स्लेज पर जान के लिये नदी जमने तक इन्तजार करना होगा। सो भी वहुत सख्त पाले म। वहुत वुरा। गमिया म घोडे पर ताइगा और शिकारियो का दर्रा लाघकर।"

कमचारी ने सिर झुकाया और उसकी मोटे मोटे जोडावाली पतली पतली उगलियो म सफेद माला के मनके जल्दी-जल्दी घूमन लगे।

"वसन्त और पतझर मे यात्रा असम्भव है," दुभापिये ने कहा। "नदियो म वाढ और दलदल अगम्य। ठीक है, न? शिकारी दर्रे

नही जा सकता, खारा बहुत दूर है, ठीक है, न? खारा म कभी कोई डाक्टर नही था। रूसी डाक्टर को बहुत काम करता होगा "

कमचारी ने फिर से धारा प्रवाह् बालना शुरू किया, फिर म उसके बेजान से हाठ हिलन लगे, मगर दुभापिया जरा भी अनुवाद नहा कर पाया। इसी वक्त किसी जोरदार हाथ न दरवाजे को चौपट खाल दिया और चौडा-सा स्वेटर और दलदली जूते पहने हुए कोई तीस साल का आदमी भीतर आया। समय से पहले झुरिया के जालवाल उसके गम्भीर चेहरे पर कठोरता का भाव था।

फश पर सिगरेट झाडकर तथा कमचारी और दुभापिये के खुशामदी ढग से नतमस्तक होन की तरफ जरा भी ध्यान न देते हुए वह बठ गया और धीमी, सुखद तथा खरखरी सी आवाज म बाला-

"नमस्ते, साथी। शायद ये लोग आपको डरा रहे है, ठीक है, न? मगर आप डरे नही, साथी। मैंने महान मास्को म शिक्षा पायी है। मैं जानता हू, साथी, आपके लिये यह डर की बात नही है "

वह स्पष्ट प्रसन्नता के साथ "साथी" शब्द का उपयोग करता था और बोलोद्या की कोहनी को धीरे से बार-बार छू लेता था।

"जटिल है, कठिन है, मगर भयानक नही है। वसे यह सम्भव है कि कुछ भयानक भी हो, लेकिन आपके लिये नही, जिन्हाने ऐसी क्रान्ति की है।'

दुभापिया खासा। स्वटर पहने हुए आदमी अचानक चिल्ला उठा-

"कृपया आप यहा से जा सकते है, मुझे आपकी जरूरत नहा है और विभाग का श्रीमान इन्स्पेक्टर यहा ऐसे ही बैठा रह सकता है। आपके लौटने की जरूरत नही है।"

दुभापिये ने सिर झुकाया, छाती पर हाथ रखे, मगर वहा से गया नही। दुबला-पतला-सा कमचारी खडा रहा। चौडी, पूरी तरह खुली खिडकी में से रश्मि पुज भीतर आ रहा था और सडक पर ऊटा के परो की धीमी आहट, ऊट हाकनेवाला की तीखी, कण्ठय चीख चिल्लाहट तथा घटिया की प्यारी टनटनाहट सुनाई दे रही थी। स्वेटर पहने व्यक्ति अपनी घनी भौहा का सिकोडे और अपने सामने सूय के गम रश्मि-पुञ्जा को देखते हुए कह रहा था-

"पहले यहा, हमारी राजधानी म सारे देश के लिये एक डाक्टर था। बाद म, साथी, हमने विदेशी सैन्यदल से एक माध्यमिक शिक्षा प्राप्त चिकित्सक की सेवाए हासिल कर ली। बडा ही बदमाश, चालबाज़ और निश्चय ही कोई जासूस था वह कमीना। वह घोडा पर सवार बदूकधारी अपने नौकरा और अगरक्षका के साथ जाता और सेवला तथा गिलहरियो की खालो के बदले मे सभी बीमारियो की दवाइया बेचता। चेचक के टीके की कीमत सेवल की एक खाल थी। उसके लोग, जो कुछ भी मुमकिन होता, छीन और लूट लेते और इसे वे फीस कहते। मास्को म शिक्षा पाते हुए मैंने शमाना और लामो की चिकित्सा के बारे म तो सुना, लेकिन, साथी, ऐसी चिकित्सा की रूसवाला को जानकारी नही थी। पर हमारे लाग जानते थे। यह मोरिसन अफीम भी ले आया और माफिया भी और उसके लोग चिल्ला चिल्लाकर सब को सूचना देते कि महान डाक्टर सुहाने सपना की दवाई बेचता है। एक सुहाने सपने की कीमत सेवल की तीन खाल थी। हा, सच कहता हू, साथी, और अगर कोई दो सुहाने सपने चाहता था, तो उसे सेवल की पाच खाल देनी पडती थी। मोरिसन किसी भी शमान, किसी खतरनाक स खतरनाक लामा से भी ज्यादा खतरनाक था। मोरिसन कहता था कि वह सेहत देता है, मगर वास्तव म हमारे लोगा के लिये मौत था। हा, ऐसी बात है, साथी। यह उसकी करनी का ही नतीजा है कि अब हमारे लोग इलाज तो शमानो और लामो से करवाते है और सुहाने सपना के लिये रूसी डाक्टरो के पास आते है। किन्तु रूसी साथी सुहाने सपन नही बेचते, यह अच्छी बात है। ठीक है, न? वे न तो सेवला की खाल लेते हैं और न गिलहरियो की, कुछ भी तो नही लेते। हमारा परम शक्तिशाली पडोसी निस्स्वाथ है, सिफ वही एक निस्स्वाथ है, उसके लोग भी निस्स्वाथ है आर वे हम भी निस्स्वाथ होना सिखाते हैं, साथी। आपका हर आदमी, जा यहा है, वह हमे हमारे भविष्य-निर्माण की शिक्षा देता है। ऐसा ही है न? हमारा महान पडोसी पिछडेपन, अज्ञानता और रोगो के विरुद्ध सघष म हमारी मदद करता है, साथी। और हम "

स्वटर पहने हुए इस व्यक्ति ने दूसरी सिगरेट जला ली, चुप हो गया, मानो यह भूल गया हो कि किस बात की चर्चा कर रहा था।

इसके बाद वह इस हद तक गुस्से में आ गया कि उसकी पीली त्वचा पर लाल धब्बे उभर आये—

"मगर हम तो ख़ुद ही अपने लिये मुश्किल पैदा किये हुए हैं। हम यहां अलग-अलग किस्म के लोग हैं, साथी। मेरे ख्याल में यह तो फ़ौरन ही नज़र आ जाता है। अभी हम सभी उधर नहीं देखते, जिधर हमें देखना चाहिये। कुछ, जिन्हें यह लाभप्रद था, उधर देखते हैं, जिधर वह विदेशी सौदागर का कमीना गया है। हां, ऐसा ही है। किन्तु, साथी, जितना अधिक हमारे लोग आपके कार्यों और भलाई को महसूस करते हैं, उतना ही अधिक वे नज़र गड़ाकर आपके देश की तरफ़ देखते हैं। यह तो बहुत कम ही मैंने तुम्हें बताया है, साथी, लेकिन आप इसे ठीक तरह समझ गये, समझ गये न?"

"हां समझ गया!" उस्तिमका ने जवाब दिया।

"इतना और जान लीजिये—लामा और शमानों का मामला बहुत आसान नहीं है, लेकिन इतना मुश्किल भी नहीं कि उसमें पार न पाया जा सके, साथी। शायद तुम्हें इसमें बहुत वक्त लगेगा, लेकिन ऐसा करना ही होगा। हो सकता है कि कभी-कभार ख़तरा भी सामने आये। मगर, साथी, तुम्हें डरना नहीं चाहिये। अगर तुम डर गये, तो लामा और शमान तथा ऐसे ही दूसरे लोग बहुत ख़ुश होंगे। हां, हां, साथी, और तुम यह भी समझ गये?"

"समझ गया!" उस्तिमन्को ने दृढ़ता से जवाब दिया और पूछा— "डाक्टर बोगोस्लोव्स्की से मैं कहां मिल सकता हूं?"

"डाक्टर बोगोस्लाव्स्की?" स्वैटर पहने हुए इस व्यक्ति ने ये शब्द दोहराये और इस बातचीत के दौरान पहली बार बड़ी ख़ुशी से खुलकर मुस्कराया। "डाक्टर बोगोस्लोव्स्की से हमारा सारा देश, हमारे सभी लोग, हमारे सभी खेमे परिचित हैं। किंतु उनका यहां, हमारे विभाग में आना नहीं होता। वे तो सिर्फ़ काम करते हैं, हमेशा घोड़े पर जाते और काम करते रहते हैं। वे सभी डाक्टरों के पास जाते हैं, सभी की मदद करते हैं, बेहद मदद करते हैं। हम तुम्हारे यहां भी आयेंगे, बहुत जल्दी तो नहीं, मगर आयेंगे। ठीक है, न?"

"आइयेगा!" वोलोद्या ने कहा। "अब एक आख़िरी बात और पूछना चाहता हूं—दवाइयां किसको सौंपूं?"

"दवाइया विभाग का एक कमचारी ले लेगा," स्वैटर पहने आदमी न उठते हुए जवाब दिया। "अगर कोई ज़रूरत महसूस हो, तो मुझे यहा खत लिख दीजियेगा। मेरा नाम टाड जीन है। जो भी ज़रूरत हो, सब कुछ रूसी म लिख दीजिये। टाड-जीन याद कर लिया न?"

टोड-जीन न अपना मज़बूत, पतला, गम और बहुत ही खुरदरा हाथ उस्तिमेन्को की तरफ बढाया। विभाग के इन्स्पेक्टर ने ज़रूरत से कही ज्यादा नीचे तीन बार अपना सिर झुकाया। दुभाषिय ने पीछे हटकर बोलोद्या के बाहर जान के लिये दरवाज़ा खाल दिया।

रात का काफी दर गये तक बोलोद्या न दवाइया सापी और तडके ही उसे जगा दिया गया। होटल के आगन मे बालोद्या के गाइड एक-दूसरे से गाली गलौज करते हुए छोटे छाटे, मज़बूत, लद्दू घाडो पर सामान लाद रहे थे। एक ऊट, जिसके रोये गिरने लगे थे, लार बहा रहा था, मुडे सिरावाले गन्दे मन्दे कुछ लाग पासा खेल रहे थे, एक नाटे से बूढे ने फुसफुसाकर बोलाद्या से सोने के पिड खरीदने का प्रस्ताव किया—यह सब कुछ तो सचमुच सपन जैसा था

कारवा जब चलने को तयार हा गया, तो अचानक टोड जीन वहा आ गया। वह चमडे की घिसी हुई जाकेट पहने था और बगल मे पिस्तौल लटक रही थी। उसे देखकर गाइड आदरपूवक मौन हो गय। ठडा सूरज निकला ही था, हवा पारदर्शी थी और वातावरण की ऐसी खामाशी मे टाड-जीन ने थोडे स शब्दा मे गाइडा से कुछ कहा और बीच-बीच मे कई बार बोलोद्या की ओर सिर से सकेत किया। उसके एसा करने पर गाइडा न भी हर बार बोलोद्या की तरफ देखा।

"तो अब अलविदा, साथी!" टोड-जीन ने बोलोद्या के घाडे पर सवार हो जाने के बाद कहा।

बालोद्या की तरफ आखे ऊची करते हुए उसन उसे ऐसी चमकती, कडी और प्यारी नज़र से देखा मानो चश्मे के सुखद जल का स्पश हो गया हो। कारवा धीरे धीरे टोड-जीन के पास स आगे बढने लगा और बोलोद्या को न जाने क्यो, पहली मई की फौजी परेड की याद हो आयी।

छ दिना म इन लोगा ने चार सौ किलोमीटरो का फासला तय किया। दूसरे दिन बोलाद्या न काठी पर टेढे बैठकर यात्रा की और

तीसरे दिन पट के बल लेटकर। ' भयानक नही, साथी, किन्तु दर्दनाक जरूर है," उसे टाड-जीन का स्वर याद हो आया। गाइड बिसा दुभाषिया के बिना हँसते रहे, बालोया को कुछ सलाह देते रहे, जो उसकी समझ में नही आयी और आवश्यकता से अधिक पड़ाव करते रहे। सबसे ज्यादा तो कम्बख्त मच्छर परेशान किये दे रहे थे। मच्छरदानी से मुह सिर ढक लेने से बालोया का घुटन महसूस होती थी, अलाव के पास वह उस तरफ नही बैठ पाता था, जिधर नम शाखाओं से धुआं निकलता था और जो मच्छरों से उसे बचा सकता था। इसलिये मच्छरों के काटने से उसका चेहरा बुरी तरह सूज गया था। अधपका मास खाते हुए उसका जी खराब होता था, इसलिये वह रह रहकर अपनी बोतल से पानी पीता जाता था और मन ही मन कोसता था।

दर्रा लाघते हुए एक घोड़ा फिसलकर खड्ड मे जा गिरा और तब यह ध्यान आने पर उस्तिमेंको स्तम्भित रह गया कि औज़ारो को उबालने का बर्तन भी घोड़े के साथ ही जाता रहा। अमोनिया की कुछ बोतलें और तह हो जानेवाली ऑपरेशन की सुविधाजनक मेज से भी वह वचित हो गया था।

महान डाक्टर

छठे दिन की शाम को बोलोया को खारा के खेमे और घर नज़र आये और वह बस्ती दिखाई दी, जहा उसे अपना चिकित्सालय और अस्पताल बनाना था। सहसा अनबूझ-सी भीरुता ने उसे आ दबोचा। वह यहा यह जिम्मेदारी निभा पायेगा? पहला डाक्टर! अस्पष्ट और चिन्ताजनक भावनाओं के साथ वह जल भरे, भारी-बोझिल बादलों के नीचे दूर दूर तक छितरे हुए छोटे छोटे घरो को देख रहा था, बड़े बड़े दातोवाले खुजली के मारे कुत्तो की खरखरी भूक सुन रहा था और खारा के निवासियो को देख रहा था। खारावासी भी आदरपूर्ण आश्चर्य से इस लम्बे कारवा और रूसी डाक्टर को देख रहे थे, जिसके आगमन की घोड़े पर सवार गाइड ऊंची आवाज मे घोषणा कर रहे थे।

"अपने सामने आप लोग देख रहे है कमाल के चिकित्सक को, अद्भुत डाक्टर को!" अलग अलग, थकी हुई, किन्तु खुशी भरी आवाज म गाइड चिल्ला रहे थे। "लोगो, खुशी मनाओ!'

"खुश होओ और देखो इसे!"

"दखो तो, कितनी उपयोगी दवाए लाया है वह! ये दवाए वह बीमारो को देगा, सब म बाटेगा, किसी की अवहलना नही करेगा!'

"सभी बीमार महान डाक्टर के पास जायें!'

"लगडे-लूल भी!"

"बहरे भी!"

"अधे-काने भी!"

"कोई भी ता ऐसा रोग नही है, महान डाक्टर जिसका इलाज न कर सकता हो!"

हे भगवान, काश, वोलोद्या उस्तिमेको, जो बडी मुश्किल से ऊची काठी पर बैठा था, यह जान सकता कि गाइड क्या चिल्ला रहे थे। काश वह जान सकता! मगर कैसे जान सकता था वह इस चीज को? वोलाद्या तो यह नही समझता था कि इन जवान लोगा ने, जिनके साथ वह छ दिन राता तक खाता पीता रहा था, सोता रहा था, जिनके साथ उसने श्रम किया था और मौन रहा था, उसके मानसिक बल को जान लिया है, उसकी सरलता और साहसी हृदय का ऊचा मूल्याकन कर लिया है। इसी तरह उसे यह भी मालूम नही था कि टोड जीन ने गाइडा को यह आदेश दिया था कि वे खारा मे वालाद्या के आगमन की खूब अच्छी तरह से घोपणा करे। टोड-जीन ऐसा आदमी था, जिसके आदेश का पूरे जोर शोर से पालन होता था। अगर एलान करना ही या, ता डके की चोट किया जाये! और किसी जाने माने लामा की तुलना मे वोलोद्या के सम्बध म गाइडो की घोपणा कुछ उन्नीस नही थी।

झुटपुटा हो रहा था, पानी बरस रहा था

जिज्ञासापूर्ण लोगो की भारी भीड से घिरा हुआ यह कारवा चौक तक पहुच गया।

चौक म जाकर य लोग रुक गये। वोलोद्या का घोडा बडे गाइड की घोडी के कधे का प्यार से काटने लगा। लोगा की निश्चल और

मूक भीड ठडी वारिश म खडी थी। चकराये स लोग वालोद्या, उसका पंडवाली जाकेट, वूटा, पीठ पर लटकती वदूक, काठी, लगामा और घोडे को परखती नजरो से ध्यानपूवक देख रहे थे

"शुभ आगमन," अपने वडे और मजवूत कधे से भीड का चीरत तथा आखो मे खुशी की चमक लाते हुए एक दढियल, घुघराल वालोवाले वजारे जैसे आदमी ने कहा। वह लम्वा फ्राक कोट पहन था और प्रासद्ध नाटक्कार ग्रोस्त्रोव्स्की के किसी नाटक के पात्र जसा लगता था। "मरे पीछे पीछे आग्रो डाक्टर, नमक रोटी खाने का अनुरोध करता हू, प्यारे मेहमान का इन्तजार कर रहे है हम। शक शुवहा की नजरो से मुझे नही देखा, मार्कलोव कुलनाम है मेरा, पुराने ईसाई धम को माननवाले है हम। आप लोगा की वजह से नही, जार की वजह स–जहन्नुम नसीव हो उसे–यहा भाग आये थे।"

वोलोद्या ने अपने घोडे की गम वगल म एड लगाई और कारवा आगे चल दिया। सुदर, सुघड और स्वप्निल आखोवाली लडकी न सचमुच ही नमक रोटी से उस्तिमको का स्वागत किया, झुककर प्रणाम करन के वाद उसने तौलिये पर रखी गोल रोटी और नमकदानवाली तश्तरी वोलाद्या की तरफ वढा दी। यह न समझते हुए कि क्या कर, वोलाद्या अपनी घनी वरौनियो को झपकाता और वुद्धू की तरह मुस्कराता हुआ वोला–

"आप यह क्या कर रही हैं! सचमुच किसलिये! क्या जरूरत है इसकी!"

किन्तु मार्कलोव ने पीछे से जोर देते हुए कहा–

"ले लीजिये, इससे कसे इन्कार कर सकते हं। ले लीजिये और मरी वेटी को चूमिये!"

वालाद्या न पलागेया मार्कलावा के सुघड कपाल को चूमा, गृह स्वामी से कहा कि 'वेकार आपने यह कष्ट किया" और अपन गाइडा का ढूढत हुए पीछे मुडकर दखा। वे अपन घोडा पर सवार थे, थके हारे होन के वावजूद मुस्करा रहे थे।

"साथी मार्कलाव, मैं अकला नही हू, दोस्ता के साथ हू "

"कोई वात नही, सव को खिला पिला देंगे, खान की कमी नही पडेगी," यगोर फामोच मार्कलाव न जवाव दिया। "लेकिन, मरे भाई,

बुरा नही मानना, ये लोग विधर्मी है, असभ्य है, इसलिये उन्हे घर म नही जाने दूगा।"

वालाद्या की पैंडदार जाकेट उतरवाने की दौड-धूप, बहुत बडे, पक्के और समृद्ध घर की ड्योढ़ी म प्रणामा और इस घबराहट के कारण कि छ दिना की घोडे की सवारी के बाद उसे "ढग से बठना ' हागा, वालोद्या मार्कलोव के "विधर्मी" शब्द का भाव न समझ पाया। किन्तु किसी तरह टेढ़ा-तिरछा होकर उस मेज़ के करीब कुर्सी पर बैठने के बाद, जहा तरह-तरह के अाचार मुरब्बे, तली और उबली हुई जायकेदार चीज़ें, कचौरिया तथा मिठाइया, भाति भाति की वोद्का और ब्राडिया रखी था, और जब उसने गले को जलाती हुई "व्हाइट होस ' व्हिस्की का एक जाम पी लिया, तो यह देखकर हैरान-सा रह गया कि मेज़ पर अपनी मोटी सी बीबी के साथ मार्कलोव, उसकी बेटी और सहमा-सा कोई मुशी, बस, यही लोग बठे है। उस्तिमेन्का की नजर म इस प्रश्न को भापकर येगोर फोमीच न उदारता दिखाते हुए कहा —

"उन्हे भी खिला रहे हैं, अवहेलना नही कर रहे हैं, सब कुछ समझते है। और तुम मा देखो ता, भगवान न कैसा अच्छा पडोसी भेजा है हमारे लिये, गाइडो के लिये भी इसके दिल म दर्द है, बेशक ये लाग स्थानीय हैं "

मेज पर तरह-तरह के पदार्थों के बीच पीटसबग का बना हुआ एक बढ़िया लम्प (वोलोद्या न चादी के स्टैंड पर "पीटसबग निर्मित" पढ़ लिया था) खूब तेज रोशनी छिटका रहा था। भोजन बेहद घी चर्बी वाला था, फिर भी सब चीजो मे और अधिक घी-मक्खन, तली हुई चर्बी, सूअर की भुनी हुई चर्बी के खस्ता टुकडे और खट्टी क्रीम डाली जा रही थी। खिडकिया पर रेशमी या जरी के (वोलोद्या को यह मालूम नही था) पर्दे लटक रहे थे। दीवारा और दीवारा पर लगे क़ालीना पर परिजना के फोटो चिपके हुए थे। ठीक बीच म, सबसे बढ़िया, सबसे अधिक रग बिरगे क़ालीन पर वालोद्या का सुनहरे चौखटे म जडी "बोल्गा का दृश्य" तस्वीर की घर म ही बनाई गयी अनुकृति दिखाई दी। "जी रहे हैं, कोई शिकवा शिकायत नही करते हैं," खूब डटकर खाने के कारण पसीने से तर हुआ और मजबूत जबड़ा

से ज़ोरदार काम लेत, कभी कचौडी का टुकडा चखत, कभी तला मछला, तो कभी स्वादिष्ट पूडी पर हाथ साफ करते हुए मजबान वह रहा था-' बाप दादा ने भी कभी दुख दद का राना नही राया। रूस क लिय तो ज़रूर दिल टीसता है, पर यहा, इन जगलिया के बीच रहन की आदत पढ गयी है। हम इनके लिये माई-बाप हैं और य भी बच्चा की तरह हम मानत है, इज्जत करते हैं। याही शिकायत करना पाप हागा। यहा ही क्या, हम तो राजधानी म भी सभी जानत हैं, हम इनके बड उपकारी ह, बहुत लाभ हाता है इ‍ह हमसे, हमारी श्रेणी क लोगो, हमारी पूजी से। हम किसी तरह का दगा फरव किये बिना कर दत है, क्योकि छल-कपट से जीना पाप है "

वोलोद्या चुपचाप खा रहा था, बहुत गौर से सब कुछ देख रहा था। क्या इससे पहले उसने कभी सोचा भी था कि वास्तव म इस तरह क घर भी होत है—ऐसे बढिया पर्दा, कालीना, भापू के साथ पुरान ग्रामोफोन और दीवारो पर लटकी दादो परदादा की बदूकावाल ? यहीं लैस के मेजपोश से ढकी एक छोटी-सी मज पर उसने 'ज़ेस" कैमरे का नवीनतम माडल, बहुत शानदार और बिल्कुल नयी 'ज़ावेर' राइफल और सोफे के ऊपर दो ग्रोटोमेटिक राइफले भी दखी। इन राइफला के ऊपर बडे कीमती चौखटे म जडा एक बूढे का ग्रावक्ष चित्र टगा हुआ था। उसका कामुक चेहरा रस्पूतिन के फोटो से मिलता-जुलता था।

'तो आप काम क्या करते हैं?" आखिर उस्तिमेन्का ने पूछा।

"हम ? प्यारे मेहमान, हम व्यापार करते है, फरा का व्यापार। हमारा व्यापार घर, जिसका पहले 'मार्कलाव एण्ड स‍ज़' नाम था, दूर-दूर तक मशहूर है, यहा तक कि महासागर पार सयुक्त राज्य अमरीका मे भी। ग्रेट ब्रिटेन से व्यापार करत है और फर के जापानी व्यापारियो से भी। यही समझिये कि बहुत बडा कारोबार है हमारा। हाल ही म 'गूरिटसू ग्रादस' का माल खरीदनेवाला बडा कारिदा हमारे यहा आया था, यही रहा था, उसके साथ हम शिकार को गय, हमारे गुसलखान मे उसने भाप का गुसल किया और इसके बाद वह सेवला का काफी बडा थोक खरीदकर ले गया "

पलागेया टकटकी बाधकर वोलोद्या का देखती जा रही थी, उगलिया से अपनी पुराने ढग की शाल के छोरो को नोचती थी और कुछ भी ता

खा नही रही थी। वह तो ठण्डे फेनवाले क्वास के मग के किनारा पर दात लगाकर जब-तब एकाध चुस्की ले लेती।

खाने के बाद येगोर फोमीच ने छाटी सी प्राथना की, तौलिय से मुह पाछा, एक कील से टोपी उतारकर पहनी, लालटेन जलायी और वोलोद्या को साथ लकर वह जगह दिखाने चल दिया, जहा दवाखाना और अस्पताल बनेगा। उस्तिमेन्को इस अजीब से "विदेश" मे कुछ भी न जानत समझते हुए चुपचाप उसके पीछे हो लिया। मार्केलोव के अहान के नम अधेरे मे गाइड इन दोनो के करीब आ गये और य सभी छपछपाते कीचड म स गुजरते हुए कमजोर तख्ता क सायवान की ओर चल दिये। दिल पर छुरी सी चलाते हुए चू चर की आवाज क साथ फाटक खल और मोटे माटे चूह ची ची कर अधेरे कोने म भाग गय। मार्केलोव ने लालटेन ऊची करके कहा—

'यहा! इन जगलियो के लिय तो यह भी बहुत बढिया है। ये न ता चिन्ता के लायक है और न काम के। ठण्ड हाने पर यहा अगीठी रख लेना। मरे पास है लोहे की अगीठी, बेशक नई नहा है, मगर इनके लिये बेहतर की जरूरत नही। खुद हमारे यहा राशन कमरे म रहागे और खाना भी वही खाआगे। हमार भाजन पर—देख चुके हो न?—खूब माटे-ताजा हो जाओगे। वह तो रूसी खाना है, वैसा ता नही, जैसा कि यहा के य कगाल खाते है।"

गाइड जल्दी-जल्दी और विरोध करते हुए अचानक कुछ कहन लगे। उनम सबसे दुबले-पतले ने, जिसे वालोद्या मन ही मन यूरा कहता था, मार्केलोव की आस्तीन खीची, आगे बढकर बोलन और वालाद्या को कुछ ऐसा समझान की कोशिश करने लगा, जा सम्भवत सभी के लिए बहुत महत्त्वपूण था।

"दूर भाग रे, बन्दर," यगोर फामीच न मुस्कराते हुए हाथ झटका। किन्तु वोलाद्या न इस बात की ओर ध्यान दिया कि यगोर फामीच की मुस्कान म कुछ घबराहट-सी थी।

"क्या कहता है यह?" उस्तिमेन्को न पूछा।

"न जाने क्या बक-बक कर रहा है, कुछ समझ म नही आता," मार्केलोव ने फिर से हाथ झटक दिया।

"अस्पताल न? मेरे नौजवान श्रीमान, क्या मार्केलाव के बिना यहा ढग से कुछ हो सकता है? अगर तुम मेरी मिन्नत करत, ता मैं अपना व्यापार-केन्द्र भी तुम्हारे अस्पताल के लिये भेंट कर दता। एसा ही तबीयत का आदमी हू मैं तो। हो सकता है कि मैं बहुत दिना स ही कोई नेक काम करने की सोच रहा होऊ? हो सक्ता है कि तुम्ह मेरे परिवार के स्वास्थ्य की चिन्ता करने के लिय मेरे यहा से वतन भी मिलता "

"आप सुनना ही चाहते है?" वोलोद्या वोला, "ता श्रीमान मार्केलोव, आप मुझे मेरे हाल पर छोड दीजिये। मुझे न ता आपके नेक काम की जरूरत है और न आपके वेहूदा वेतन की। मेहरबानी करके तशरीफ ले जाइये। खाना खिलाने के लिय शुक्रिया। हा, यह बता दीजिये कि भोजन के लिये कितने पैसे दू?"

और वोलोद्या ने अपने गन्दे, मिट्टी के सूखे धब्बावाल पतलन की जेब म हाथ डालकर मास्को मे खरीदा हुआ अपना बटुआ निकाला।

"कितने पैसे देने हैं मुझे आपको?"

"अरे, तुम तो निरी आग हो, नौजवान," धीरे-स व्यग्यपूवक मुस्कराकर मार्केलोव ने कहा। 'बिल्कुल आग हो! जरा-सा कुछ कह दो और वस, भडक उठे। बेकार ही! लेकिन मुझे ऐसे लाग अच्छ लगते हैं। खुशी से जम जाओ, मेरे इस व्यापार-केन्द्र म। और हा सकता है कि कभी खुद मार्केलोव भी तुम्हारे पास इलाज करान आये। इन्तजार करना, उम्मीद रखना!"

उसन जोर से वोलोद्या का कधा थपथपाया, उगलिया स मूरा की चपटी नाक को खीचा, एक अन्य गाइड के चूतड पर घुटना मारा आर अच्छे मूड म मानो दास्त-सा बनकर यहा से चला गया

घर म सन्नाटा छा गया।

सन्नाटा और अधेरा।

वालाद्या न फिर से अपनी टाच जलायी, इधर-उधर नजर दौडायी, ध्यान स यह सुना कि बारिश कैस छत पर अपनी ढालकी बजा रही है और इशारा स गाइडा को यह समझाया कि वे सारा सामान व्यापार केन्द्र की इमारत म से लायें। दो दिन बाद, यारा के स्थानीय बड़े

खा नही रही थी। वह तो ठण्डे फेनवाले क्वास के मग के किनारो पर दात लगाकर जब-तब एकाध चुस्की ले लेती।

खाने के बाद येगोर फोमीच ने छोटी सी प्रार्थना की, तौलिये से मुह पोछा, एक कील से टोपी उतारकर पहनी, लालटेन जलायी और वोलोद्या को साथ लेकर वह जगह दिखाने चल दिया, जहा दवाखाना और अस्पताल बनेगा। उस्तिमेको इस अजीव से "विदेश" मे कुछ भी न जानते-समझते हुए चुपचाप उसके पीछे हो लिया। मार्केलोव के अहाते के नम अधेरे मे गाइड इन दोनो के करीब आ गये और ये सभी छपछपाते कीचड मे से गुजरते हुए कमजोर तख्तो के सायवान की ओर चल दिये। दिल पर छुरी सी चलाते हुए चू चर की आवाज के साथ फाटक खुले और मोटे मोटे चूहे ची-ची कर अधेरे कोने मे भाग गये। मार्केलोव ने लालटेन ऊची करके कहा—

"यहा! इन जगलियो के लिये तो यह भी बहुत बढिया है। ये न तो चिन्ता के लायक है और न काम के। ठण्ड होने पर यहा अगीठी रख लेना। मेरे पास है लोहे की अगीठी, बेशक नई नही है, मगर इनके लिये बेहतर की जरूरत नही। खुद हमारे यहा रोशन कमरे मे रहोगे और खाना भी वही खाओगे। हमारे भोजन पर—देख चुके हो न?—खूब मोटे-ताजा हो जाओगे। वह तो रूसी खाना है, वैसा तो नही, जैसा कि यहा के ये कगाल खाते हैं।"

गाइड जल्दी-जल्दी और विरोध करते हुए अचानक कुछ कहने लगे। उनमे सबसे दुबले पतले ने, जिसे वोलोद्या मन ही मन यूरा कहता था, मार्केलोव की आस्तीन खीची, आगे बढकर बोलने और वोलोद्या को कुछ ऐसा समझाने की कोशिश करने लगा, जो सम्भवत सभी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था।

"दूर भाग रे, बन्दर," येगोर फोमीच ने मुस्कराते हुए हाथ झटका। किन्तु वोलोद्या ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि येगोर फोमीच की मुस्कान मे कुछ घबराहट-सी थी।

"क्या कहता है यह?" उस्तिमेन्को ने पूछा।

"न जाने क्या बक-बक कर रहा है, कुछ समझ मे नही आता," मार्केलोव ने फिर से हाथ झटक दिया।

बडी-बडी जिप्सी आखो को भयानक बनाते हुए मार्केलोव जल्दी जल्दी बोलने लगा। "इन्ही का भाई-बधु था, वहा आ घुसा था, जहा उसे नहा आना चाहिये था, इतना घमण्ड हो गया था उसे कि यह इमारत बनवा डाली। अब वह कुत्ते की तरह अपना ही थूका चाट रहा है। छाल की झोपडी म दिन काट रहा है "

"तो अब किसका है यह व्यापार-केद्र?"

"अभी ता किसी का नही, लेकिन मेरा ही होगा!' मार्केलोव ने चुनौती भरी आवाज म कहा। "मेरी इस पर आख है और हम मार्केलोव परिवारवालो का ऐसा मिज़ाज है कि जिस चीज़ पर दिल आ गया, उसे हासिल करके छोडा। कौन जाने, मने इसके लिये शायद बयाना भी दे रखा हो!"

"लेकिन टोड-जीन ने तो अस्पताल के लिये यही इमारत तय की है?"

"अगर उसने रजिस्टरी करवा ली है, तो ले ले।"

"तो क्या किया जाये?"

"वही करो, जिसकी मैंने सलाह दी है, मेरे प्यारे महमान। सायबान को अस्पताल बना लो। मैन कह दिया है न कि मदद कर दूगा। मेरे प्यारे, अपना व्यापार-केद्र तो मै किसी तरह भी नही दे सकता। धयवाद है भगवान का कि हमारे यहा अभी तक तो निजी सम्पत्ति का उमूलन नही हुआ "

"नही, नही जानता," वोलोद्या ने भौह चढाते हुए कहा, "नही जानता, येगोर फोमीच। निजी सम्पत्ति के बारे मे कुछ नही जानता— इससे मुझे कोई मतलब भी नही है। मगर ऐसा समझता हू कि अगर आप बयाना दे चुके हैं, तो जन स्वास्थ्य विभाग आपको यह बयाना लौटा देगा। बस, इस बारे मे तो आप खुद ही, जिस आदमी से जरूरी समझे, उससे बात कर ले। मैं तो डाक्टर हू, सिफ डाक्टर और इसी रूप मे यहा आया हू। तो हम यहा अब अपना सामान उतार देते है और बाकी आप जसा ठीक समझे, वसा कर।"

"मतलब यह कि आते ही मरे खिलाफ हो गय?'

'मुझे आपकी नही, अस्पताल की जरूरत है।"

लेकिन अब सभी गाइड एक साथ, ऊचे-ऊचे और गुस्से म बालने लगे। वोलोद्या जिसे मन ही मन यूरा कहता था, उसन उसके पइदार कोट का छोर पकड लिया और कीचड के कारण रात के छपछपाते अधेरे मे सायवान से वाहर खीच ले चला। तेज हवा के झोके आ रहे थे, मूसलधार वारिश का शोर हो रहा था। मार्केलाव खूब जोर स गाइडा पर चिल्लाया, मगर वे खामोश नही हुए और वालाद्या को उनके मुह स टोड जीन का परिचित नाम वार-वार और अधिक दढता के साथ सुनाई दने लगा। शायद मामला कुछ ऐसा था कि गाइडा का टोड जीन से सम्बधित कोई ऐसी वात मालूम थी, जिस वालाद्या विल्कुल नही जानता था और जिसे किन्ही कारणा से मार्केलोव बताना नही चाहता था।

मार्केलोव की चेतावनिया पर अब कान दिये विना वालोद्या टार्च जलाकर यूरा के पीछे पीछे चुपचाप चलता जा रहा था। सारे के सारे गाइड एक दल-सा वनाकर इन दोनो के पास पहुच गये और येगोर फोमीच रास्ता न देख पाता और कीचड म छपछपाता हुआ उनके पीछे पीछे आ रहा था।

वोलोद्या अचानक सारी वात समझ गया – गाइड उसे एक ऐसी इमारत म ले आय थे, जो वास्तव म ही दवाखाने और एक छोटे-से अस्पताल के लिये विल्कुल उपयुक्त थी। अच्छी खिडकियावाला यह घर लम्बा और ढग से बना हुआ था, उसम सामने और पीछे की ओर भी दरवाजा था, रसोईघर और दो सायवान भी थे।

"टोड-जीन!" यूरा ने दृढता और विजयपूर्वक मार्केलोव तथा वोलोद्या की ओर देखते हुए कहा। "टोड-जीन!"

"वकवास कर रहे है ये तो, ब्लादीमिर अफानास्येविच! जगली लाग है ये, सचमुच वन्दर," अपनी सौम्यता बनाये रखते हुए मार्केलोव ने कहा। "भगवान की कसम, यह तो सुनना भी पाप है कि पूरे का पूरा व्यापार-केन्द्र अस्पताल बना दिया जाय और सो भी किसके लिये?"

'क्या यह व्यापार-केन्द्र है?" उस्तिमेन्का ने पूछा।

"हा, फर के एक व्यापारी का ही व्यापार-केन्द्र था, मैंने उसका कचूमर निकाल दिया," नम्रता को पूरी तरह तिलाजली देकर अपनी

बड़ी-बड़ी जिप्सी भाषा को भयानक बनाते हुए मार्केलोव जल्दी जल्दी बोलन लगा। "इन्ही का भाई-बन्धु था, वहा आ घुसा था, जहा उसे नही आना चाहिये था, इतना घमण्ड हो गया था उस कि यह इमारत बनवा डाली। अब वह कुत्ते की तरह अपना ही थूका चाट रहा है। छाल की झोपडी मे दिन काट रहा है "

"तो अब किसका है यह व्यापार-केन्द्र?'

"अभी ता किसी का नही, लेकिन मरा ही होगा!" मार्केलाव न चुनौती भरी आवाज म कहा। "मेरी इस पर आख है और हम मार्केलोव परिवारवाला का ऐसा मिजाज है कि जिस चीज पर दिल आ गया, उस हासिल करके छोडा। कौन जान, मैंने इसके लिय शायद बयाना भी दे रखा हो!"

"लकिन टोड जीन न तो अस्पताल के लिये यही इमारत तय की है?"

"अगर उसने रजिस्टरी करवा ली है, तो ले ले।"

"ता क्या किया जाये?"

"वही करा, जिसकी मैंने सलाह दी है, मेरे प्यारे मेहमान। सायवान का अस्पताल बना ला। मैंने कह दिया है न कि मदद कर दूगा। मेरे प्यारे, अपना व्यापार-केन्द्र ता म किसी तरह भी नही दे सकता। धयवाद है भगवान का कि हमारे यहा अभी तक तो निजी सम्पत्ति का उन्मूलन नही हुआ "

"नही, नही जानता," बोलोद्या न भौह चढाते हुए कहा, "नही जानता, येगार फोमीच। निजी सम्पत्ति के बारे म कुछ नही जानता–इसस मुझे कोई मतलब भी नही है। मगर ऐसा समझता हू कि अगर आप बयाना दे चुके हैं, तो जन स्वास्थ्य विभाग आपको यह बयाना लौटा देगा। बस, इस बारे मे ता आप खुद ही, जिस आदमी से जरूरी समझें, उससे बात कर ल। मैं तो डाक्टर हू, सिफ डाक्टर और इसी रूप म यहा आया हू। तो हम यहा अब अपना सामान उतार दते है और बाकी आप जसा ठीक समझे, वसा कर।"

'मतलब यह कि आते ही मेरे खिलाफ हो गये?'

"मुझे आपकी नही, अस्पताल की जरूरत है।"

"अस्पताल न? मेरे नौजवान श्रीमान, क्या मार्केलाव के बिना यहा ढग से कुछ हो सकता है? अगर तुम मेरी मिन्नत करते, तो मैं अपना व्यापार-केन्द्र भी तुम्हारे अस्पताल के लिये भेंट कर देता। ऐसी ही तबीयत का आदमी हू मै तो। हो सकता है कि मैं बहुत दिनो से ही कोई नेक काम करने की सोच रहा होऊ? हो सकता है कि तुम्हे मेरे परिवार के स्वास्थ्य की चिन्ता करने के लिये मेरे यहा से वेतन भी मिलता "

"आप सुनना ही चाहते है?" वोलोद्या बोला, "तो श्रीमान मार्केलोव, आप मुझे मेरे हाल पर छोड दीजिये। मुझे न तो आपके नेक काम की जरूरत है और न आपके बेहूदा वेतन की। मेहरबानी करके तशरीफ ले जाइये। खाना खिलाने के लिये शुक्रिया। हा, यह बता दीजिये कि भोजन के लिये कितने पैसे दू?"

और वोलोद्या ने अपने गन्दे, मिट्टी के सूखे धब्बोवाले पतलून की जेब म हाथ डालकर मास्को मे खरीदा हुआ अपना बटुआ निकाला।

"कितने पैसे देने है मुझे आपको?"

"अरे, तुम तो निरी आग हो, नौजवान," धीरे स व्यग्यपूर्वक मुस्कराकर मार्केलोव ने कहा। "बिल्कुल आग हो! जरा-सा कुछ कह दो और बस, भडक उठे। बेकार ही! लेकिन मुझे ऐसे लोग अच्छे लगते है। खुशी से जम जाओ, मेरे इस व्यापार-केन्द्र म। और हो सकता है कि कभी खुद मार्केलाव भी तुम्हारे पास इलाज कराने आये। इन्तजार करना, उम्मीद रखना!"

उसने ज़ोर से वोलोद्या का कधा थपथपाया, उगलियो से यूरा की चपटी नाक को खीचा, एक अन्य गाइड के चूतड पर घुटना मारा और अच्छे मूड म, मानो दोस्त-सा बनकर यहा से चला गया

घर म सन्नाटा छा गया।

सन्नाटा और अधेरा।

वोलोद्या ने फिर से अपनी टार्च जलायी इधर-उधर नजर दौडायी, ध्यान से यह सुना कि यारिंग कस छत पर अपनी ढोलकी बजा रहा है और इशारो से गाइडो को यह समझाया कि व सारा सामान व्यापार केन्द्र की इमारत म ले आयें। दो दिन बाद, घारा के स्थानीय बढई

ग्रौर तरखान तहखाने म मिट्टी जमा रह् ये, वक्त गुज़रने के कारण खस्ता हाल हुए काले फ़र्श के तख्ते वदलकर सफ़ेद तख्ते बिछा रहे ये, ग्रगीठीसाज़ ईंटो के पक्के ग्रलावघर वना रहा था तथा एक वूढा, लगडा कारीगर दरवाज़ो के ताला, कुडो ग्रौर ग्रगीठी को ठीक ठाक कर रहा था। सायवान मे लकडिया, वहुत सी लकडिया लायी जा रही थी, क्याकि यहा जाडा कठोर, पाले ग्रौर वर्फ़वाला होता है। वोलोद्या ड्योढी म वठा ग्रौर कपडो पर जहा-तहा रग रागन के धब्बे लगाये हुए टीन के टुकडे पर वच्चा की तरह वेढगेपन से इस इमारत म ग्रानवाले बीमार लोगो के चित्र बना रहा था। एक लाठी का सहारा लिये था, दूसरा टूटी वाह् को पट्टी मे लटकाये था ग्रार तीसरे रोगी को हिरन पर लादकर लाया जा रहा था। वोलोद्या ने ग्रपने को भी चित्रित किया। वह सफ़ेद लबादा पहने चवूतरे पर खडा था ग्रौर उसकी वाहें खिली हुई थी। मुस्कान को चित्रित करने के लिय उसके पास कोई चित्र नही था, जिसकी वह नकल कर सकता। इसलिय उसन ग्रपन मुह् को दूज के चाद की शक्ल मे सारे चेहरे पर फैला दिया था। वोलोद्या जव तक चित्रकारी करता रहा, किसी न भी काम नही किया। सभी देखते ग्रौर हैरान होत रह। फिर भी उसन यह वोड ग्रपन दवाखाने ग्रौर ग्रस्पताल के प्रवेश-द्वार पर नही लगाया।

कोई दो वार मार्कोलोव भी एक वडे-से झवरीले कुत्ते के साथ ग्रस्पताल की तरफ़ ग्राया। वह रुककर देखता रहता ग्रौर ग्रगर वालाद्या नज़र ग्रा जाता, तो टोपी उतारकर ग्रभिवादन करता ग्रौर सीटी वजाता हुग्रा ग्रागे चल देता।

सात नवम्वर तक वोलोद्या ने ग्रपने पहल ग्रसली दवाखाने ग्रौर ग्रस्पताल की मरम्मत ग्रौर उस ढग से व्यवस्थित करने का सारा काम खत्म कर दिया। यहा ग्रव ग्रापरेशन हाल भी था, उसके ग्रपने रहने का छोटा-सा कमरा भी, रसोईघर, स्टोर ग्रौर दूसरे सभी ग्रावश्यक कक्ष भी। ग्रव उसके पास दुभापिया भी था-एक वडा फुर्तीला ग्रौर सूझ-वूझ रखने तथा हर वक्त खुश रहनेवाला स्थानीय व्यक्ति मादी-माजी। वावर्चिन भी थी-वूढी ग्रौर वहुत ही डरपोक चीनी ग्रौरत, जो पुदा जान, कसे पिछली सदी मे ही यहा ग्रा गयी थी। दाजी वहुत

ही गम्भीरता से उसे "मदाम वावर्चिन" कहता था। दाज़ी ही मद-नर्स भी था।

सात नवम्बर की शाम का वालाद्या न अपने सारे "स्टाफ" का अच्छी तरह से गर्माये गये रसाईघर म एकत्रित किया, मस्का की शराब की एक वोतल खाली, मज पर सुन्दर ढग स खाना लगाने का आदेश दिया और गिलासा म शराब डाल दी। मास्का से लायी गयी दीवालघडी ऊची और वधी-वधायी लय म टिक टिक कर रही थी।

"अनक साल पहले मेरे देश के मजदूरा और किसाना ने इसी वक्त लेनिन के नेतृत्व मे हमेशा के लिये पूजीपतिया और जमीदारो की सत्ता खत्म की थी। आइये, ऐसा करनेवाली मेहनतकश जनता के नाम पर जाम पियें।"

दाज़ी ने अनुवाद किया और "मदाम वावर्चिन" अचानक खुशी के आसू वहाती हुई रो पडी।

"इसे क्या हुआ है?" वोलोद्या ने पूछा और वुढिया का झुरियावाला मुर्गी के पजे जैसा हाथ प्यार से अपने हाथ मे ले लिया। "मदाम वावर्चिन" और भी ज़ोर से रोन लगी।

"कौन जाने, वह किस वात के लिये रोता?" दाज़ी ने कहा। "उसे शायद कुछ याद आ गया? वह भी कभी जवान था, उसका पति होता, वच्चे होते? अव वह अकेला और अगर, डाक्टर वोलोद्या, तुम मेरी वात मानकर इसे नौकर न रख लेता, तो वह मर जाता न? वह मजदूरो और किसानो का राज चाहता।"

"तुम भी ऐसा चाहते हो?" वोलोद्या ने पूछा और फौरन इस ख्याल से सहम गया कि वह प्रचार और आदोलन काय कर रहा है।

वुढिया अव भी रोती जा रही थी। "यहा भयानक नही, मगर जटिल ज़रूर है," टोड जीन ने कहा था। तो यह मतलव है "जटिलता" का, अपने सामने मेज पर शराव का गिलास धीरधीरे घुमाते हुए वोलोद्या ने सोचा। पर खर, कोई परवाह नही! वह इन सबको यह दिखा देगा कि मजदूरा और किसानो के देश द्वारा भेजा हुआ आदमी कैसा होता है। वे यह देख पायेंगे। यहा के जनसाधारण–ताइगा के

साहसी और चुप रहनेवाले शिकारी, धूप म सवलाये चेहरावाले खाना-बदोश, पाल के मारे हाथावाले मछुए—ये सभी देख पायेंगे। तब इनकी समझ म आ जायेगा कि इन सभी मार्केलोवा की असलियत क्या है। अगर अभी तक वे यह नही समझे, तो अब समझ जायेंगे।

"शुभ रात्रि!" उस्तिमेन्को ने उठते हुए कहा।

सुबह दाज़ी उसके कमरे मे आया और उसन यह सूचना दी कि चबूतरे पर एक लामा वैठा है और इसलिये दिन भर वैठा रहेगा कि अस्पताल म कोई रोगी न आ पाये।

"यह तुम उसे भाडे पर ले आये हो?" वोलोद्या ने पूछा।

"मैं?" दाज़ी को हैरानी हुई।

दिन भर गीली वफ के वडे वडे रोयें गिरते रहे और लामा हिले-डुले विना अस्पताल के चबूतरे पर वठा रहा। दोपहर के खाने के वक्त दयामयी "मदाम वावचिन" ने उसे गम भोजन दे दिया। वालोद्या आग-बबूला हो उठा और उसने अपने "स्टाफ" को खूब डाटा। लामा अस्पताल का शोरवा खाते हुए मार्केलोव से वात कर रहा था। मार्केलोव भारी सोटे का सहारा लेकर कुछ दूर खडा था और अपनी मनहूस जिप्सी आखो से भूतपूव व्यापार केन्द्र की इमारत को घूर रहा था। अगर सोचा जाय, तो यह तो सचमुच ही वडी वेहूदा वात थी

जव अधेरा होन लगा, तो दाज़ी ने बहुत घवराते हुए आकर कहा कि लामा कुछ ढग की वात करने के लिये भीतर आना चाहता है, कि वह भला आदमी है और रोगी भी। वोलोद्या ने मन ही मन कोसा और लामा को उस कमरे मे आ जाने दिया, जो "रोगी-कक्ष" कहलाता था। दाज़ी ने लामा को वहुत झुक-भुककर प्रणाम किया, किन्तु लामा न इस पुरप नस की ओर कोई ध्यान न देकर उस्तिमेन्का के सामन सिर झुकाया। सफेद मोमजामे से ढकी छोटी-सी मेज पर मामवत्ती जल रही थी। विना रोग़न की हुई लकडी की छोटी छोटी अलमारिया म दवाइया रखी है—लामा ने यह अनुमान लगा लिया, वडी ललचायी नजरा से वन्द दरवाजा को देखा, गिलास मे रखी रुई को सूघा, उगली से लकडी के छोटे-छोटे चमचो को छुआ और वडी गहरी सास ली।

"तो क्या वात है?" वोलोद्या न पूछा।

दाज़ी ने अपने एक नगे पैर से दूसरे नगे पाव को खुजलाया, लामा से जल्दी-जल्दी कुछ पूछा और लामा न भी चिचियाती सी आवाज़ म जल्दी जल्दी जवाव दिया। लामा की वात वडी छोटी और सीधी-सादी थी। उसने कहा कि अगर वोलोद्या उसे यानी लामा को मासिक वेतन देने लगे, तो वह वीमारो का वोलोद्या के अस्पताल म आन से मना नही कहेगा। वस। वेतन थोडा सा होगा, मगर उस वक्त पर और निश्चित रूप से मिल जाना चाहिये। इतना ही नही, वह यानी लामा उस्तिमेको के पास ऐसे रोगियो को भी भेज दिया करेगा, जिन्हे वह खुद और दूसरे लामा रोगमुक्त नही कर पाते।

वोलोद्या मुह लटकाये यह सुन रहा था और उसे याद आ रहा था कि कसे वोगोस्लोव्स्की ने उसे देहातो मे काम करनेवाले डाक्टरो की आत्म हत्याओ के वारे मे बताया था। इसके वाद उसने सिर ऊपर किया और लामा के औरतो जस, एकदम वालो के बिना, वृद्ध से, वहुत ही गम्भीर चेहरे को गौर से देखा। दाज़ी ने कुछ शब्द और कहे, तो वोलोद्या को यह सब मजाक-सा प्रतीत होने लगा।

"इससे कहो कि यहा स चलता वन!" वोलोद्या वोला। उसने ज़ोर से पहले एक और फिर दूसरा दरवाज़ा वन्द किया। इसके वाद ही अपने छोटे से कमरे म जाकर, जिसम दीवार के निकट छोटी सी चारपाई थी, अगीठी दहक रही थी, खिडकी के करीव छोटी-सी मेज़ थी, वार्या, पिता जी और वूआ अग्लाया के फोटो थे, उसन भीतर से ताला बन्द कर लिया

ऐसे शुरू हुआ यह कठिन, वेहूदा और अटपटा जाडा।

महान डाक्टर परेशान हो उठा

रात को कडाके की ठण्ड हो गयी, तापमान शून्य से ३० डिग्री नीचे जा पहुचा। कमरो के कोनो म पाले की सफेदी चमक उठी, भूतपूर्व व्यापार-केन्द्र की कडिया चिटकने लगी और वाहर लगे हुए थर्मामीटर का पारा और भी नीचे उतरता जा रहा था।

मादी दाज़ी ने मन मारकर अस्पताल की सभी बडा-बडी अगीठिया गर्मा दी।

अगीठिया सात थी, उन्ह गर्माने म बहुत दर लगी और मादी दाज़ी थक गया। अधेरे कमरा म सफेद चादरा कम्बला और पलगपोशा स ढके खाली पलग उदास सी सफदी दिखा रह थ।

"और ता गम नही करनी चाहिय न? दाजा न पूछा।

"करनी चाहिये।'

"नही चाहिये!"

"तुम वस ही करागे जस मै तुम्ह आदश दूगा मादी दाजी उस्तिमन्को ने विगडकर कहा। वरना म तुम्ह निकाल बाहर करूगा। यह समझ ला कि मरे साथ ऐसा सब नही चलगा।

"कल रोगी आयेंगे न? दाज़ी न पूछा। 'बहुत म रागा' उनक लिये मैं सभी अगीठिया जलाऊगा न?

इन्सान को जुवान इसलिये दी गयी है कि वह अपन भाव छिपा सके!' वोलोद्या को किसी का यह वाक्य याद आ गया और वह अपन कमरे म चला गया।

अगले दिन तापमान शून्य स ३३ डिग्री नीच पहुच गया। एक भी रोगी नही आया।

"अगीठिया जलाऊ?"

'हा, जलाओ!

'सभी अगीठिया?

'हा, सभी अगीठिया!

"रोगी आयेगे?"

उस्तिमन्को ने काई जवाब नही दिया।

"मदाम वावचिन ने अपने चूल्हे पर तीन रागिया क लिय खाना पकाया। मगर तीन रोगी भी नही आय। सभी तरह स लस गम आरामदेह और साफ सुथरे अस्पताल म काई भी तो नही आया। वालोद्या सुवह के वक्त अपना डाक्टरी लवादा पहनकर रागी-कक्ष म एक कोने स दूसरे कोन तक आता जाता रहता। आखिर तो रागिया को आना चाहिये था!

मगर नही, वे नही आये!

वे अपने खमो, मिट्टी और छाल के झोपडा मे बीमार पडे रहत थे। वे वहा शमानो की चीख चिल्लाहट, खजडी की धप धप और छनक, सिरफिरे लामाओ की धीमी बुदबुदाहट तथा बीवी-बच्चा का रोना धोना सुनते हुए दम तोड देते थे। वे उन रोगो से मरत थे, जिनका वोलोद्या बडी आसानी से इलाज कर सकता था। मगर वालोद्या-स्वस्थ, जवान और हृष्ट-पुष्ट—यहा कमरे के एक कोने से दूसरे कोन तक भला योही किसलिये चक्कर लगाता रहता था?

मादी दाजी ने मजाक-सा उडाते हुए यह किस्सा सुनाया—

"कल सागान ऊल हमारे पास अस्पताल मे नही आया। मैं पूछता, हा, हा? 'रूसी डाक्टर को बुला लाता, तुम्हे अच्छा कर देता रूसी डाक्टर!' सागान-ऊल बोल नही सकता, उसकी जगह शमान सरमा जवाब देता—'तुम्हारे डाक्टर को मौत आ जाय।' सागान ऊल आज मर गया, मैं वहा गया, सरमा मुर्दे के पास बैठा था और दूध के अरक का प्याला उसके पास रखकर आदेश देता था—'तू मर गया! यह ले अपनी भेट और जा!' कैसे लोग है, कैसे बेवकूफ लोग है, कुछ भी नही समझते न?"

वोलोद्या माथे पर बल डालकर यह सब सुन रहा था—"न सिर्फ बुलाते ही नही, बल्कि अगर खुद जाऊ, तो भी अदर नही जाने देंगे! कौन यह सब कुछ करता है? किसलिये? आखिर लोग, लोग तो मर रहे है।"

और दाजी मजे लेता हुआ व्यग्यपूर्वक यह सुनाता जा रहा था—

"ताबूत लाये—एक लट्ठा। घोडे के बालो स बने मजबूत रस्से से मृत सागान ऊल को उसके साथ बाध दिया गया, मुर्दे को कभी छूटना नही चाहिये। खेमे का पिछला हिस्सा ऊपर उठाया और अदर जाने के दरवाजे स नही, नहा, नही, पीछे स बाहर खीच ले गये। मुर्दे को दरवाजा कभी नही मालूम होना चाहिय, वापस आ जायगा, तो बहुत बुरा होगा और उसे घोडे पर लादकर पहाड पर ले गय, सीधे नही, बल्कि ऐसे, ऐसे, ऐसे"

उसने हाथ के इशारा स यह बताया कि कैसे टेढ़े-मेढ़े रास्ते स मुर्दे को पहाड पर ले गय, कैसे उसे वहा फक दिया और वही

सावधानी से, ताकि पैरो के निशान साफ नजर न आये, वापस आ गये।

"सडक से नही, ऐस टेढे मेढे, घूमकर, हा!" दाजी न कहा। "सडक से सागान-ऊल वापस आ सकता है, बुरा होगा, ऐस हाता ह और डाक्टर वोलोद्या, तुम यहा बैठे हो। शायद तुम भी दापी हो, लामा से बुरे ढग से क्यो बोले, हा, क्या? अब जल्द ही हम सब को यहा से भगा देंगे—तुम्ह, मदाम वावचिन को और मुझे भी। मदाम वावचिन मर जायेगी, वह बूढी, तुम दूर चले जाओगे—मौज करोगे मगर मैं? यहा काम नही, वेतन नही होगा, कस जीऊगा मैं, हा, कस?"

दाजी तो अपने प्रति दया के कारण रो भी पडा।

सुबह को वालोद्या कसरत करता—शुरू म दस मिनट तक, मगर वाद म पद्रह मिनट तक कसरत करने लगा। नाश्ते से पहले वह पुराना स्वटर और दस्ताने पहनकर लकडी चीरने के लिये अहाते म निकलता। ठिठुरे हुए लट्ठे चिटकते तथा कटकर दूर जा गिरत। जब कोई राल-वाला ठूठ सामने आ जाता, तो वोलोद्या बहुत देर तक झुझलाता, गुस्से स लाल पीला होता हुआ उसमे छेनी घुसेडता, हाफता और कोसता हुआ तब तक कुल्हाडा चलाता रहता, जब तक कि उस चीर न डालता। इसके वाद वह नाश्ता करता और देर तक स्टूल पर बैठा रहता। बडी अगीठी मे लकडी के बडे-बडे टुकडे चिटकते हुए अच्छे लगते। दहकते, लाल अगारो को देखते हुए उस्तिमेको मन ही मन सभी तरह की परिस्थितिया मे, जैसा कि वोगास्लोव्स्की और पोस्तनिकाव ने सिखाया था, सजरी की अद्भुत शैली के और साहसपूण तजरवे करता। इस वक्त के दौरान उसने वहुत अधिक पढा था। सद्धान्तिक रूप से तो सम्भवत वह सब कुछ कर सकता था। मगर रोगी उसके पास नहा आत थे, अस्पताल खाली पडा था और इस निठल्लेपन, इस मानसिक काहिली, ख्याला और कल्पना म ही इलाज तथा आपरेशन करने स उसके लिये जीना दिन पर दिन डरावना होता जा रहा था।

"वह सजन नही, घुडसवारी के करतव करनवाला है!" वोलोद्या ने एकबार चीर-फाड के लिए वहुत ही उत्सुक डाक्टर के वारे मे पढा

था। ओह, काश उसके पास वह चिर प्रतीक्षित रोगी आ जाये, तो कितना सावधान रहेगा वह, कैसे सोच-समझकर और बडी समझदारी से इलाज करेगा उसका। अपना जीवन उसके हाथो मे सौपनेवाले व्यक्ति की तरफ वह कितना अधिक ध्यान देगा। करतब करनेवाला घुडसवार। नही, वह आपरेशन-कक्ष मे ऐसे करतब नही करेगा।

वोलोद्या को मानो और अधिक परेशान करने के लिये ही पास्तनिकोव, गानिचेव, पीच और ओगुर्त्सोव के भी खत उसे मिले।

पोस्तनिकोव ने बहुत समय पहले देहात मे अनुभव की गयी असाधारण घटनाओ की चर्चा की थी, पीच ने बहुत अधिक काम की डीग हाकी थी, *ओगुर्त्सोव ने अपनी क्षमताओ मे अत्यधिक सन्देह* प्रकट किया था और गानिचेव ने यह चेतावनी दी थी कि वह यानी वोलोद्या समय से पहले अपने अनुभव का सामान्यीकरण करना न शुरू करे। उन्होने लिखा था कि "आजकल यह चीज़ खतरनाक बीमारी हो गयी है। कुछ दुनिया को यह बताने के लिये अपनी रचनाए लिखते है कि उन्होने कोई आविष्कार कर डाला है, दूसरे—अपना सिक्का जमाने के लिये, तीसरे—मानवजाति को यह याद दिलाने के लिये फला नाम का आदमी फला नगर मे रहता है और चौथे—ऐसो की सख्या बहुत अधिक है—इसलिये कि उन्हे वैज्ञानिक होने का महत्त्व प्राप्त हो जाय।"

वोलोद्या ने बहुत सक्षिप्त, नीरस और रहस्यपूर्ण ढग से इन पत्रो के उत्तर दिये—वे जैसा भी चाहे, समझ ले।

क्रिसमस के मौके पर मार्कोलोव ने वोलोद्या को अपने यहा आमन्त्रित किया। मगर वोलोद्या नही गया और बहुत व्यस्त होने का मूर्खतापूर्ण बहाना कर दिया। तब मार्कोलोव खुद आया—घुघराले बालो मे तेल फुलेल लगाये, कलफ लगी कमीज़ पहने, इत्र की सुगन्ध छिटकाता, मज़े से चुटकिया लेता हुआ और मेहरबान-सा भी।

"ओह, मेरे सूरमा, बहुत ही ज्यादा काम-काज मे फसे हुए तुम तो," खाली कमरो मे नज़र दौडाते हुए उसने कहा। 'खूब इलाज करते हो तुम हमारे लोगो का, बडे मेहनती हो तुम तो। सभी कमरे गर्म है, सभी जगह बिस्तर लगे हुए हैं, रसोईघर से बढिया खाने की खुशबू आ रही है, मगर हमारे ये जगली तो आते ही नही। तुम उनके प्राने

की उम्मीद नही करा, डाक्टर, नही राह दखा, मरे प्यारे, नही राह दखो। तुम भोले भाले प्राणी हा, वे नही ग्रायेगे। उनकी अपनी दवा-दारू है, और वे उसी से खुश है।"

मार्केलाव तीसरे कमरे म ऐसे जा वैठा, मानो घर का मालिक हो उसने लम्बी टागें फैला ली और लगा अपना गुस्सा गिला जाहिर करन –

"तो देखते हो तुम, कहा हमारा पैसा जाता है, खून-पसीन से कमाया हुआ, वडी ईमानदारी का, वडी महनत से वचाया हुआ पसा। तुम जस निकम्मो पर। हम मेहनत करते है, तुद्रा, ताइगा म और भूली विसरी जगहा पर मारे-मारे फिरत है, व्यापार करत है, सभ्यता लात है, मगर हम क्या मिलता है? ठेगा? यहा के काहिला निठल्ला और ऐस ही दूसरे लोगो के लिये गम कमरे है। यह अच्छी वात नही है, नही, अच्छी वात नही है।"

मार्केलोव देर तक वैठा रहा, इसके वाद उसने वोलोद्या की किताबा के पन्न उलटे-पलटे और फिर उसके फूस भरे गद्दे मे घूसा खासकर वाला –

"वडा सख्त है यह तो! रोयावाला गद्दा भिजवा दू, डाक्टर?"

मादी दाजी दरवाजे के पास खडा खुशी से खिलखिला रहा था, हाथ मल रहा था, सिर झुका रहा था।

"तो तुम नही चलोगे?" मार्केलाव ने पूछा। "जैसा चाहा। म तो सच्चे दिल स ग्राया था, वाकी तुम जानो।"

अकेला रह जाने पर वोलोद्या वोगोस्लोव्स्की को खत लिखने वैठ गया। दात भीचकर और मग से ठडे पानी के वडे-वडे घूट पीत हुए वह रात के एक वजे तक खत लिखता रहा। यह गुस्से, दुख, चोट खाय स्वाभिमान और उलाहना से भरा खत था। वागोस्लोव्स्की न उसे किसलिये यहा वुलवाया? उसके प्रति सद्भावना रखने के कारण? उस किसी की सदभावना की जरूरत नही, वह खुद भी तो मानव है और सा भी ऐसा मानव, जो विना लाभ के जन द्रव्य का कमचारी रखने, कमरे गर्माने और खाना पकवाने के लिए हरगिज वरवाद नही होन देगा। हो सकता है कि इस तरह से वे दक्षिणपथी तत्त्व, वाइया और जमीदारा के वे रिश्तेदार हमारी खिल्ली उडा रहे हो, जो अभी तक

सरकार म घुसे वठे है ? या, यह भी हो सक्ता है कि उसकी यानी उस्तिमेको की इसलिय जरूरत है कि नौकरशाही अपनी कारगुजारी दिखा सके, यह वता सके कि खारा म दवाखाना और अस्पताल चाल है ? हा, प्रसगवश, वह हर महीने अपने तथाकथित "काम" की रिपाट भेजता है, मगर उसमे काई दिलचस्पी नही लेता, यकीनी तौर पर कोई भी उसकी तरफ ध्यान नही देता। थोडे म यह कि वह हराम की रोटी नही खाना चाहता, यहा निठल्ले वैठकर अपना सत्यानास करने का इरादा नही रखता। इसलिये वह माग करता है कि उस यहा स वुला लिया जाये। अगर उसन अपने खत म व्यवहार-कुशलता का परिचय देनेवाली भाषा का उपयोग नही किया, ता इसके लिय उसे क्षमा कर दिया जाये और वह अपनी निश्छलता का विश्वास दिलाता है

पत्र चार पृष्ठा का था, और वोलोद्या ने उसे दुवारा पढा भी नही। जो होना है, सो हो जाये। अव वह और अधिक यह सव वर्दाश्त नही कर सकता।

फरवरी म उसे अपने महरवान दोस्त येव्गेनी स्तेपानोव से नये साल का बधाई पत्र मिला। काड वडे खुशी के मूड, प्रफुल्लता और चुटकिया सी लेते हुए लिखा गया था तथा उसकी यह इच्छा जाहिर करता था कि वह दुनिया मे सभी के साथ प्यार-मुहब्बत बनाये रखना चाहता है। "तो तुम, देहाती डाक्टर, ऊचे आदर्शोवाले डाक्टर, तुम हम सब से ज्यादा तेज निकले," यव्गेनी ने लिखा था। "तुम्हारा जातीरूखी गाव विदेश म बदल गया। हा, बुरा नही मानना, लेकिन मुझम ईर्ष्या की भावना वोल रही है। कुछ भी क्या न कहो, मगर वहा सभी तरह की कारवा सराय, मुअज्जिन, पूर्वी मसाले, वुर्के आढे सुदरिया, यह तो मानोगे ही कि इन सव का अपना अनूठा आकपण है। मेरे ख्याल मे तो जसे ही झुटपुटा होता होगा, तुम फ्राक्कोट पहनकर किसी नाइट क्लव की तरफ चल देते हागे ? वडे धूत्त हा न ? '

उस्तिमेको इस खत का क्या जवाव दे सकता था ?

वसे यव्गेनी भूगोल की पढाई म कभी भी वहुत होशियार नही रहा था।

लेकिन वह यह नही सोचना चाहता था कि वार्या भी उसे "सबसे ज्यादा तेज" मानती है और यही समझती है कि वह फ्राककोट पहनकर "नाइट-क्लब" मे जाता है।

वालोद्या रेडियो बहुत कम सुनता था। बात बेशक बडी अजीब ही थी, किन्तु जब हज़ारो किलोमीटरो की दूरी से वह उदघोषक की शान्त आवाज मे "यह रेडियो मास्को है", सुनता था, तो उसे बडी परेशानी होती थी। उसे लगता था मानो वहा से कोई पूछ रहा हो—तुम यहा क्या कर रहे हो, प्यारे दोस्त? सभी तरह का आराम है न तुम्हे? गर्म और राशन घर है, बिना किसी परेशानी के रहते हो न? मगर हमने तुम्हे काम करने के लिये भेजा था और तुम क्या कर रहे हो? मुश्किलो का सामना करना पड रहा है तुम्हे? वस्तुगत कठिनाइयो का, साथी डाक्टर?

चौदहवा अध्याय

आपके मवेशी कैसे हैं?

वोलोद्या शामो को पढता रहता।

पढी हुई रचनाओ से गस्से मे आने के बजाय वह अक्सर चक्कर मे पड जाता। ऐसे आदमी के बारे म पढना उसे अजीब ही नहा लगा, वल्कि कुछ झेप-सी भी हुई जो वहुत देर तक, अनेकानेक पष्ठो के दौरान एल्प पहाडो के किसी स्वास्थ्यप्रद स्थान पर, शान्ति की हलचल वाले पेत्रोग्राद मे, दोन तट पर, कालेदिन की सेना म और फिर मास्को मे भी यह नही समझ पाता कि सोवियत सत्ता का वास्तविक रूप क्या है और वह उसके अनुकूल है या नही। यह व्यक्ति प्यार करता था, प्यार से विरक्त होता था, वारिश और अच्छे मौसम मे चिन्तन करता था (सभी ऋतुओ और गन्धो का विस्तृत और काफी सच्चा चित्रण था इस रचना मे वास्तव म ही बरखा-बूदी के मौसम मे घास फूस स वसी ही गन्ध आती है और वसन्त की थोडी देर की वारिश म सूरज भी ऐसे ही चमकता है), गोलिया चलाता था, मदान छोडकर भागता था, छिपता था, रेल के डिब्बा और जहाजो म सफर करता था और आखिर मे सभी सम्भव मधुर गधा को अनुभव करते, विभिन्न रगा की छटा म भेद करत और असाधारण प्राकृतिक दश्यो पर मुग्ध होत हुए सोवियत सत्ता को अगीकार कर लेता है, किन्तु कुछ सीमाओ के साथ।

"भई वाह!" उस मोटी पुस्तक को वन्द करत हुए वोलोद्या हैरान हुआ, जिसके अन्तिम पृष्ठ पर वहुत ही अथपूर्ण ढग से यह लिखा हुआ था कि अभी तो केवल 'दूसरा खण्ड" ही समाप्त हुआ है। इसके वाद वोलोद्या न जो किताब पढी, उसम सकेता म ही सब कुछ कहा

गया था। उसका नायक सावियत सत्ता के पक्ष म था, फिर भी लोगो म पूजीवाद के जन्मजात विभिन्न लक्षणो को ही ढूढता ग्रौर इगित करता रहता। वह बडे चटखारे लेकर, किन्तु विपाक्त ढग स इनकी चर्चा करता ग्रार स्वय पूरी तरह ग्रकमण्य रहता। वह तो तोलस्ताय के नायक प्यर वेजूखोव जसी वेमानी हरक्ते भी न करता, जा ग्रपन विशेष उद्देश्य स ही फ्रासीसिया के कब्जे म ग्राये मास्को म रह गया था। इसके विपरीत यह नायक केवल निरीक्षण तक ही ग्रपन को सीमित रखता ग्रार ग्रक्सर यह निष्कप निकालता कि इस जीवन म "सव कुछ इतना सीधा-सादा नही है।" ग्रौर वास्तव म ही यह सव इतना उलझा हुग्रा था कि वालाद्या कपडे की जिल्दवाली इस रचना को, जो उसने नौ रूवल वीस कापक देकर मास्का म खरीदी थी, विल्कुल ही नही समझ पा रहा था ग्रार उसने उसे भविष्य के लिये उठाकर रख दिया। तीसरी रचना, जिससे वालोद्या के सब्र का पैमाना छलक गया, के लेखक ने क्रान्ति के वाद के पेत्रोग्राद म एक लुटेरे के जीवन का वडा विशद ग्रौर विस्तृत चित्रण किया था। यह लुटेरा लोगो का लूटता ग्रौर लगातार तक वितक करता था तथा उसके इद-गिद के लोग भी तक वितक करते थे, सो भी देर-देर तक ग्रौर मूखतापूण। ग्रन्त म यह लुटेरा ग्रपन को सूली लगा लेता है लेकिन पूरी तरह नही। यहा पहुचकर वोलाद्या न उपन्यास पढना व द कर दिया ग्रार फिर से "ग्रापरेशना स सम्वधित भूल ग्रौर खतरे" नामक वही किताव पढने लगा, जो उसने वीच मे ही छोड दी थी।

वोलाद्या जिन दिना यह किताव पढ रहा था, उन्ही दिना वह घटना घटी, जिसने खारा म उसके जीवन का पूरी तरह वदल दिया। दीदे फाडे, जूते गिराता, फीतेवाला ग्रडरपट पहनता हुग्रा (वालाद्या ने यह नोट कर लिया कि ग्रडरपट सरकारी है, क्याकि उस पर निशान लगा था) मादी दाजी उसके कमरे म भागा ग्राया ग्रौर चिल्लाने के वजाय चीखती-सी ग्रावाज म वोला—

'रागी! दो! जल्दी करा, न?"

वालाद्या न स्टूल पीछे हटाया, दस तक गिनती की ताकि उत्तेजित होकर मूर्खा जसा व्यवहार न करे ग्रौर चोगा-टापी पहनकर वरामदे म चला गया। दरवाजे के पास वुरी तरह ठिठुर हुए दो ग्रजनवी चुपचाप

खडे थे। अपने फर कोटा के ऊपर वे फर की जाकेटें पहन थे, जिन पर वफ की कलम-सा लटक रही थी और उनके ऊचे फर-बूट भा बफ मे ढक हुए थे। दाज़ी के हाथा म कापते हुए छोटे-से लम्प की मद्धिम राशनी मे वालोद्या न रागिया से कहा कि व अपने काट, आदि उतारकर रोगी-कक्ष म आ जाये। उसके ऐसा कहन पर दवी घुटी-सी हसी सुनाई दी और इस दवी घुटी तथा खास ढग की हसी स वालोद्या का कुछ याद हा आया, मगर अगल क्षण वह उसे फिर भूल गया।

"इजाजत दीजिय!" वोलोद्या ने कहा।

"इजाज़त दन या न देने मे क्या फक पडता है," वालोद्या को चरचराती, देहाती ढग की ख़ुशी भरी आवाज़ फिर स सुनाई दी और वह फौरन निकोलाई यव्गे यविच वोगोस्लाव्स्की को पूरी तरह पहचान गया, जो धीरे धीरे अपने सिर से फर की टोपी और साथ ही वफ-ढके अपन कपडे भी उतार रह थे। "इजाज़त देने या न देने से क्या फक पडता है," उन्होने वालाद्या से हाथ मिलाते और थोडी दूरी मे ही उस बहुत ध्यान कडाई और प्यार स दखत हुए कहा। "आप इन्हे, साथी टाड जीन को तो पहचानिय! उनस तो आपकी इतनी पहले मुलाकात नहा हुई थी कि भूल जाय। हा वोद्का लाने का भी वह दीजिय, हम पिछली वफ के गढे म जा फसे थे। ओह यह वफ और पानी म स गुज़रना और शतान जान कि फिर स कहा जा फसना। आह, य रास्त के जानकार, ओह, य पथ प्रदशक"

वोगास्लाव्स्की लगातार वालत जा रह थे वालते जा रह थे और वोलोद्या का फौरन ऐसा प्रतीत हुआ माना वह चार्नी यार स कभी, कही गया ही नही और अभी सब कुछ बहुत बढिया हो जायगा कोई परशानी नही रहगा सब कुछ ठीक ठाक हा जायगा। वोगास्लाव्स्की ख़ाली कमरा का दखन भी लगे थ, सिर हिला रह थ, और म हाथा का मनकर गमा रहे थ और टाड-जीन की तरफ दखत हुए अफसास ज़ाहिर कर रह थ—

'सब ख़ाली ह, बिल्कुल ख़ाली पडे हैं एक भी ता रोगा नहा'

'मरुाम वार्वाचन' न ग्रासकर दखा, हाथ नचाये और बढ़िया भोजन बनान के लिय अपन छोटे-छोट परा स रसाईघर की तरफ़ भाग गयी। दाज़ी मूली फलालैन के ड्रेसिंग गाउन, गाफ़-मूर्प कपडे, माज

ग्रौर स्लीपर ले ग्राया था। वह बार-बार वोलाद्या को सिर मुका रहा था, क्योंकि टोड जीन ने डाक्टर वोलाद्या का ग्रभिवादन किया था जिससे वह समझ गया था कि ग्रस्पताल बन्द नहीं होगा कि उसकी, मादी नाजी की यहा से छुट्टी नहीं की जायगी ग्रौर पहले की तरह ही वेतन मिलता रहेगा।

"ग्रापके यहा वोदका तो है?" बोगास्लाव्स्की ने पूछा।

"स्पिरिट है!" वोलोद्या ने ग्रपराधी की भाति उत्तर दिया।

"यह ता ग्रौर भी ग्रच्छा है! खाना चीनी ग्रौरत बनाती है? बहुत खूब! हा, स्पिरिट तो कुछ मिलाये बिना ही पीनी चाहिये, ऊपर स पानी पीना चाहिये। क्या कहा, बहुत ज्यादा नशीली होती है? बेशक, बेशक, मगर ग्राप तो खुद भी बहुत ग्रच्छी तरह से जितनी भी चाहे पी सकते है ग्रौर कभी नशे म बहकते नहीं। पास्तनिकाव के यहा पल्मेनियावाली दावत ता याद है न?"

"याद है!" खुशी स ग्राखें झपकाते हुए वालोद्या न जवाब दिया। "सब कुछ याद है मुझे, निकोलाई येव्गेयेविच। तो ग्रापका मेरा पत्र मिल गया?"

"पत्र ग्रौर काम-काज की बात कल करेंगे। इस वक्त ता हम सिर्फ मेहमान है ग्रौर मा भी बुरी तरह भीगे, ठिठुर ग्रार थके हुए। हमारे लिये बिस्तर लगवा दीजिये ग्रार खुद भी ग्राराम कर लीजिये। कल सुबह से काम शुरू करेंगे।"

"मेरे खत की वजह से ग्राप मुझसे नाराज तो नहीं हुए?"

"जहा तक उसका मुझसे सम्बन्ध है—नाराज नहीं हुग्रा। लेकिन ग्रापसे सम्बन्ध रखनेवाली बाता के कारण जरूर नाराज हू। कुछ कुछ ग्रौरतो जसा खत है ग्रापका, प्यारे, कुछ कुछ बौखलाहट लिये हुए। खैर, कल करेंगे इसकी चर्चा"

"फिर भी ग्रौरतो जसा किस लिये है?"

बोगोस्लोव्स्की ने कुछ क्षण सोचा, चाय का गिलास ग्रपने नजदीक खींच लिया ग्रौर बाले—

"ग्रच्छी बात है, कुछ शब्द म ग्राज ही कह देता हू। मामला यह है, मेरे प्यारे नौजवान, कि हमारी पार्टी, हमारी बाल्शेविक पार्टी म क्रान्ति स पहले भी बहुत-से डाक्टर शामिल थे। ग्रापने कभी इस सवाल

पर गौर किया कि उन मश्किल सालो म य डाक्टर हमारी पार्टी म क्या आय? कभी सोचा? मैं, व्यक्तिगत रूप से मैं यह समझता हू कि क्रान्ति के बिना, राजकीय व्यवस्था के परिवतन, पूजीपतियो, जमीदारो और कुलको की सत्ता का अन्त किये बिना रूस म चिकित्सा श्रम की सारहीनता की अनुभूति हो उन्ह पार्टी म खीचकर लाई। हर चिन्तनशील डाक्टर को यह विश्वास हो गया था कि उसके व्यक्तिगत प्रयासो और ठीक उसी तरह सैकडो अन्य ईमानदार लोगो की कोशिशो का राजतन्त्रीय साम्राज्यवादी व्यवस्था के अन्तगत कोई नतीजा नही निकलता और निकल भी नही सकता था। हम सभी एक अर्से से यह बहुत अच्छी तरह समझ चुके है कि रोगो की रोक थाम, उनको पहले से ही जानने के काय मे ही चिकित्सा का भविष्य निहित है। लेकिन उस समय चेतावनी देनेवाली चिकित्सा-प्रणाली का अस्तित्व ही कैसे हो सकता था जब पिरोगोव जैसा प्रतिभाशाली सगठनकर्त्ता भी कुछ या लगभग कुछ भी नही कर पाया। तो इस तरह हम इस नतीजे पर पहुचते है कि असली चीज व्यवस्था है। आप पार्टी मे सम्बन्धित परिवार मजदूर किसानो के सोवियत राज्य से यहा आ गये, जहा परिस्थितिया बिल्कुल भिन्न है और यह समझिये कि चकरा गये। एकदम जवान होने के कारण उन प्रगतिशील चीजो की ओर आपका ध्यान नही गया जो यहा पनप भी रही है और फिर आत्माभिमान की वजह से आपने फौरन साथी टाउ-जीन को खत भी नही लिखा।"

'हा आपको मुझे फौरन खत लिख देना चाहिये था।" टाउ जीन ने कुछ रूखेपन से कहा। "मै बात समझ जाता और यहा चला आता।"

'और मुझे आपने तब पत्र लिखा, जब बिल्कुल आपे से बाहर हो गये," बोगोस्लोव्स्की ने अपनी बात जारी रखी। "सो भी सारी परिस्थिति, काय स्थल और सामाजिक व्यवस्था के बारे म सारी चेतना खोकर, यह भूलकर कि यहा डाक्टर नाम के व्यक्ति से लोग अपरिचित हैं।"

"कुछ तो परिचित है!" टाउ जीन ने कडाई से अपनी बात जोड दी। "वह डाक्टर, जो हमारे यहा सोवियत सघ से नही आया था, हा, वह तो "

"जा ग्रौर भी वुरा है। परिस्थिति विल्कुल सीधी सादी नही है, यहा तक कि जन स्वास्थ्य विभाग मे भी विभिन्न शक्तिया काम कर रही हैं। ग्रापने क्या सोचा था कि यहा ग्रा जायेंगे ग्रौर सव कुछ सोवियत सघ जसा होगा–कोई गडवड हुई, तो हलके के सेक्रेटरी या स्वास्थ्य रक्षा के इन्स्पेक्टर ग्रथवा इसस भी ऊपर प्रादेशिक ग्रधिकारिया के पास चले जायेंगे? मेरे प्यारे, यह समझना चाहिये कि ऐसे तरीके सिफ हमारे यहा ही हैं, जहा राज्य स्वास्थ्य रक्षा म मदद ही नही करता, वल्कि ग्रपने नागरिक के स्वास्थ्य ग्रौर जीवन के लिये खुद को उत्तरदायी भी मानता है। वह इसलिये कि हमारा राज्य महनतकशा का राज्य है, उनका नही, जो ग्रपने निजी हितो की पूति के लिये पजीवादी राज्य के नागरिको के श्रम का उपयोग करते है। पर खैर, चलिये ग्रव चलकर सो जायें। व्लादीमिर ग्रफानास्येविच, जाकर लेट जाइये, क्योकि कल से ग्रापकी ये छुट्टिया हमेशा के लिये खत्म हो रही है।"

वालोद्या ग्रपने कमरे म गया, पलग पर वैठकर उसने जूते उतार दिये। कुल मिलाकर, वोगोस्लाव्स्की न इस वक्त उसकी ग्रच्छी तरह स तबीयत साफ कर दी थी। पर क्या उसके साथ ज्यादती नही हुई थी?

"भला ग्रादमी है!" इसी वक्त टोड-जीन वोगोस्लाव्स्की से कह रहा था। "विल्कुल निमल, जैसे, क्या कहते है उस?"

"जस शीशा?"

"नही, उससे भी वढकर। वह होता न ऐसा "

"विल्लौर जसा "

'हा, विल्लौर जैसा। वहुत भारी गुजरी उस पर, ठीक है न साथी वागोस्लोव्स्की। मुझे पहले ही ग्रा जाना चाहिये था। फौरन "

"ग्रच्छा लडका है," वागोस्लोव्स्की ने सोचते हुए कहा। "लेकिन फिर भी लडका ही तो है। ग्रभी जिन्दगी की भट्टी म तपा नही। 'जीवन-सघप' किस कहते हैं, ग्रभी यह नही समझता। ग्राइये, हम उसका ग्रस्पताल देखें।"

मादी-दाजी लम्प लेकर ग्रागे ग्रागे हो लिया ग्रौर सव के पीछे-पीछे चल दी 'मदाम वावचिन"।

'लट्ठो के वीच की दरारो को मिट्टी स भर दिया है, समझदारी दिखायी है," वागोस्लोव्स्की ने कहा। "ऊन भरकर ऊपर स मिट्टी

या लप कर दिया है। दख रह है न, जरा भी ठण्ड भीतर नहा आती। पलग भी बहुत साच-समझकर कम स कम जगह म बिछाये गय हैं। ओह, बेचारा! पलग के निकट रखी गयी छाटी अलमारियां भी वसी ही है, जसी कि चोर्नी यार म मरे पास है, दराजवाली। बडा हाशियार है, उनकी बनावट याद कर ली और इनका खाका भी शायद खद इसी न बनाया होगा। और आइय, अब आपरेशन-कक्ष दख। अरे वाह, जरा गौर ता कीजिय, औजार उबालन का बतन न हान पर उसने यह कैसी बढिया चीज बना डाली है। दख रह है न? टीन की आम बालटियां और उनके ऊपर दोहरे ढक्कन। बडी समझदारी, बहुत ही समझदारी दिखायी है उसन, भाप के जरिय औजारा का कीटाणमुक्त करने का उपाय है यह। दखते है न कि भीतरी ढक्कन क सूराख बाहरी ढक्कन के सूराख से भिन्न है। बात पूरी तरह समझ म आ गयी। चूल्हे पर उबालकर औजारा को छ घण्टा तक ठण्डा हान दो। आप समझ गये न?"

"पूरी तरह से नही!" टोड-जीन ने उत्तर दिया।

"छ घण्टे की अवधि होती है " दाजी न बातचीत म हिस्सा लते हुए कहा। "छ घण्टे की अवधि वह होती है, जिसमे उन जीवाणुओ से, जा पहली बार उबाले जान पर नही मरत, फिर स कीटाणु पदा हो जाते ह। मैं ठीक कहता न?"

'यह बालोद्या ने आपको सिखाया है?" बागास्लाव्स्की न कडाई से पूछा।

"हा," दाजी सहम गया, हर दिन दो घण्टे तक सिखाते हैं। और इसके बाद, वह जल्दी जल्दी कहने लगा, 'इसक बाद पानी की कुल मात्रा का एक तिहाई भाग कार्बोनट डालकर आध घण्टे तक उबालो। ठीक है न? मगर एक भी रागी ता नहा आया " उसने मरीसी आवाज मे यह और जोड दिया। "आग बताऊ "

"नही, कोई जरूरत नही। शाबाश!' बोगोस्लोव्स्की ने उसकी तारीफ की।

"तो यही मतलब है कि सब कुछ ठीक हो रहा है? टाड-जीन ने जानना चाहा।

"म्राइये, सोने चले!" बोगोस्लोव्स्की ने बात खत्म कर दी।
वोलोद्या जब जागा, तो टोड-जीन वाहर जा भी चका था। वोगोस्लोव्स्की चौडे वरामदे मे छोटी सी मेज़ पर बैठे चाय पी रहे थे। मादी-दाढ़ी दीवार से पीठ सटाकर खडा था और मुग्ध भाव म वोगोस्लाव्स्की को ताक रहा था। वह सभी ऐस लागा का इमी तरह मुग्ध होकर दखता था, जिन्ह वडे अधिकारी मानता था।

"कल रात वहुत देर तक नीद नही ग्राई न?' वागास्लोव्स्की ने वोलाद्या से पूछा।

"हा, वहुत देर तक।"

"मुझसे नाराज हो गये?"

"नही, लेकिन "

"देखा न, आपने फौरन 'लेकिन' से ही वात शुरू की है। मगर इस चीज़ के लिये यकीनी तौर पर आपने कुछ भी ता नही किया कि आपके पास ढेरा-ढेर रोगी आये। मेरे सहयोगी यहा सावजनिक कायकर्त्ता, सघपकारी और सैनिक वनने की ज़रूरत है। यहा भगवान का ऐसा चहता वनकर काम नही चलेगा, जो पवन की किसी ऊची चाटी से नीचे दुनिया का तमाशा दखा करता है। उदाहरण के लिय मागूशा म शमानो और लामाम्रो की हर काशिश के वावजूद इतनी वडी सख्या मे रागी ग्राते है कि उनसे पार पाना मुश्किल है। वादान म हम अस्पताल की दूसरी इमारत वना रहे है। वहा मल्लिकाव फौरन अपने काम का, जसा कि हम अक्सर कहते हैं 'मानवीय 'मानवतापूण' ही नही, वल्कि अत्यधिक राजनीतिक महत्त्व भी समझ गया। व्लादीमिर अफानास्येविच, यहा हम सिफ नेकी का काम ही नही करना है, लागा को डाक्टर पर विश्वास करने के लिय भी विवश करना है, और यह वहुत वडा, वहुत महान काय है '

वागास्लोव्स्की खामाश हो गये, उन्हाने चाय का घूट पिया और सिगरेट जलाकर उसका कश खीचा।

'अपने समय म खुद को डाक्टर कहनवाले अन्तराष्ट्रीय नीचा ने इस दश म काफी कबाडा किया है। आपका यह मालूम है या नहा?"

"थोडा-सा।"

"सभी तरह के छोटे-बड़े व्यापारियों, दलालों और बदमाशों, इन लुटेरा उठाईगीरों ने अपनी तेज़ नाकों से यह गंध पा ली कि यहां के हिरन आर पशुपालक, मछुए और हलवाहे तथा दूसरे मेहनतकश चेचक विरोधी टीको के कारगर होने में विश्वास करते हैं। हो सकता है कि कभी महामारी ने लोगों का बुरी तरह मफाया किया हो या किसी दूसरे कारणवश जिसे अब निश्चित रूप से जानना सम्भव नहीं, उन्हें इन टीकों मे यकीन हो गया था। तो इन अन्तर्राष्ट्रीय बदमाशों ने इसी का फायदा उठाया। वे चेचक विरोधी वेक्सीन यहां ले आये और हर टीके के लिये 'उचित मूल्य' यानी सिर्फ एक भेड़ लेने लगे। टीके लगाते थे भाड़े के टट्टू या छोकरे और इस बात की कोई भी चिन्ता नहीं करता था कि वेक्सीन ताज़ी है या नहीं। यूरोप के बड़े शहरों से यहां तक पहुंचते हुए वह कैसी हो जाती है, इसकी तो आप खुद ही कल्पना कर सकते है। ज़ाहिर है कि इतनी बड़ी मांग होने पर उनकी यह बेकार वेक्सीन भी नाकाफी रही। इसलिये वे ग्लिसरीन मिलाकर या सिर्फ ग्लिसरीन के ही टीके लगाने लगे। ग्लिसरीन की एक-दो बोतलों और दिन भर के काम के लिये किसी मिस्टर, मिस्स या एस ही किसी बदमाश के पास भेड़ों का रेवड़, कोई तीन सौ भेड़ जमा हो जाती। और सबसे दिलचस्प बात तो यह है कि जिस पिचकारी से टीके लगाये जाते थे, उसे कभी भी, हां, कभी भी कीटाणुमुक्त नहीं किया जाता था। नतीजा यह हुआ कि चेचक के इन कपटपूर्ण टीकों की बदौलत इतने बड़े पैमाने पर आतशक (सिफिलिस) का रोग फैला दिया गया है कि उसके बीमारों की गिनती मुमकिन नहीं।"

"क्या यह सच है?' दुख से माथे पर बल डालते हुए बालोद्या ने पूछा।

"यही तो मुसीबत है कि यह सच है। बात यह है कि उन उपनिवेशवादी पशुओं के लिये तो उसका भगवान, वह भगवान क्योंकि हो, प्रोटेस्टेंट हो या बुद्ध—वही सब कुछ है और उस भगवान का असली रूप है—नक़द नारायण। उस उपनिवेशवादी के लिये यहां का निवासी काफिर, जंगली और आदिम है, और उसका इसीलिये जन्म हुआ है कि उपनिवेशवादी की तिजोरियां भरे। बकवास यह बड़ा मज़ेदार सा बात है, मगर, व्लादीमिर अफानास्येविच, हम आप अब जहां

तहा घूमनवाले 'नकद नारायण' के उन सूरमाओ के पापो का प्रायश्चित कर रहे है। हम यहा के निवासियो को अपने को ऐसे लोगो के रूप मे देखने के लिये विवश करना है, जैसे कि वास्तव मे हम है। स्पष्ट है कि हमारा आपका कार्यभार कठिन किन्तु सम्मानपूर्ण है। सोवियत व्यक्ति का मतलब है ईमानदार, सोवियत व्यक्ति का मतलब है उदार, चिन्तापूर्ण, न्यायपूर्ण और निस्स्वार्थ। हमारे श्रम के माध्यम से यह सब कुछ यहा के लोगो के लिये पर्यायवाची बनना चाहिये। समझे मेरी बात व्लादीमिर अफानास्येविच?"

वोलोद्या ने बोगोस्लोव्स्की को कभी इतने उत्तेजित और ऐसे अदभुत तथा वांछित ढंग से झल्लाये हुए नही देखा था। वोलोद्या चोर्नी यार के दिनो की तरह एक बार फिर बोगोस्लोव्स्की के प्रति, उनके आन्तरिक, आत्मिक, नैतिक सार-तत्त्व और इस चीज के प्रति ईर्ष्यालु हो उठा कि वे कितना विस्तृत और साथ ही अचूक चिंतन कर सकते है, कैसे वे अपने ध्येय के नाम पर, ध्येय के लिये, ध्येय को ही सब कुछ मानते हुए जीते है और सो भी रत्ती भर यह महसूस न करते हुए कि बलि का बकरा बने हुए है। इसके विपरीत वे बहुत खुशी से, हसते-हसते अपने को पूरी तरह अपने कार्य को ही समर्पित किये हुए हैं। इतने श्रेष्ठ सज्जन होते हुए भी लगभग कोई ऑपरेशन नही करते। भला क्यो? इसलिये कि कही अधिक महत्त्वपूर्ण, बहुत ही जरूरी काम मे व्यस्त है। इस काम की आवश्यकता, समाज के लिये इसका महत्त्व ही वे पुरस्कार है, जो कुछ समय के लिये उनकी प्यारी सर्जरी से नाता टूटने की क्षतिपूर्ति करते है।

इन दोनो ने अभी अपनी चाय खत्म नही की थी कि टोड जीन लौट आया। उसके चेहरे पर खुशी और आखो मे चालाकी सी झलक रही थी। अपना फर कोट उतारकर, जिस पर पाला जम गया था, वह इस तरह खिडकी के सामने बैठ गया कि सूरज की किरणे सीधी उसके चेहरे पर पड रही थी। चाय का प्याला हाथ मे लिये हुए वह सोच मे डूब गया।

"अब समझा।" वोलोद्या को अचानक इस चेतना मे आश्चर्य हुआ। "टोड-जीन की आखे तो उकाबी है, वह तो सूरज से नजर मिलाता है।"

"तो क्या समाचार है?" वागास्लोव्स्की ने पूछा।

"अभी चलते ह, अभी!" टोड जीन ने जवाब दिया। "मादी दाजी भी हमारे साथ चले।" वह व्यग्यपूवक मुस्कराया। "वहुतो को इस बात की आशका है कि यहा उन्ह उनकी 'आयु से वचित' कर दिया जायगा। ये लोग मात को यही कहते है। लामा लोग और शमान भी उनके कानो मे यही खुसुर फुसुर करते है, मगर हम यह सिद्ध करना है कि यहा न केवल उन्ह आयु से वचित नही किया जायेगा, वल्कि यह कि उन्ह स्वस्थ वनाया जायेगा। ठीक है न? और हमारे य साथी," उसने वोलोद्या की ओर देखा, "अपना काम शुरू करे "

सफेद ठण्डे और चमकते सूरज की तरफ देखते हुए टोड जीन फिर से सोच म डूब गया। इस सुवह को वोलोद्या ने न तो लकडिया चीरी, न कसरत की, न किताव पढी और न किसी रोगी के आने की राह देखते हुए अपने रोगी-कक्ष मे ही वठ रहा। इस ठण्डी सुवह को जव जार की हवा चल रही थी, वह विन बुलाये ही खारा की ओर चल दिया ताकि रोगियो को इलाज करवाने के लिये मजवूर कर सके। कचर कचर करती वर्फ पर उसके साथ थे—वागोस्लोव्स्की, टाड जीन और टाड जीन के तीन अन्य स्थानीय परिचित। ठडी, तन को चीरती हुई हवा वालोद्या के मुह पर थपेडे मार रही थी, उन खेमा मे शोर मचा रही थी जिनम वे गये और धीरे धीर सुलगते हुए अलावो का कडुवा तथा कालिख पोतनेवाला धुआ उनके धसे हुए कच्चे फर्शो पर फला रही थी। झोपडो और वर्फ के ढेरो मे दवे से छप्परा के नजदीक वाडा मे वकरे वकरिया और भेडे ठड से मिमिया रही थी। वालोद्या के दुश्मन—लामा और शमान—वर्फ के तूफान की ओट म कुछ दूरी पर, टोड-जीन की नजरा स वचे वठे थे। भूखे और गुस्सल कुत्ते चीख रह थे। झुटपुटा हो रहा था, जव मार्कोलाव की भेडिय जसी आखें किसी जगह उनके सामने चमक उठी। वह वडा-सा फर काट पहन और सोटा टेकता हुआ चला जा रहा था। उसने डाक्टरा और टाड-जीन का ढग से अभिवादन किया और ठण्ड लगन के कारण भारी हुई अपनी आवाज म चिल्लाकर पूछा—मरे यहा क्या नहा पधारत, कुछ सवा करन का मौका क्या नही दत? टाड-जीन यहा की प्रथा के अनुसार कुछ शिष्ट वातचीत करन के लिय रुक गया।

"आपके मवेशी कैसे है?" टोड जीन न पूछा। यहा इसी तरह से बातचीत शुरू की जाती थी।

"मेरे मवशी मजे मे है," मार्केलोव न जवाब दिया। "और आपके मवेशी भी ठीक ठाक है न?"

"मेरे मवशी भी ठीक ठाक है वस, ऐस ही," टोड जीन न कहा। "आप और आपका परिवार तो स्वस्थ है न?"

जब हालचाल पूछन की यह रस्म खत्म हो गयी, तो टोड जीन न अपनी उकावी आखा स मार्केलोव की भेडिये जैसी मनहूस आखा म झाकते हुए बहुत साफ-साफ कहा—

"अस्पताल वनाय जानेवाल व्यापार केन्द्र की इमारत आपको नही मिलेगी। क्षमा कीजिये, वह आपकी नही है, माफी चाहता हू, मगर आप चोर ह। हा, हा, आप उस चुराना चाहते थे। क्या यह ठीक नही है, हा, आपके पास उसकी रजिस्टरी ता है नही "

"हम टैक्स दते है, सभ्यता लात हैं," मार्केलाव ने चिल्लाना शुरू किया, मगर टोड-जीन न उसे टाकते हुए कहा—

"वस, सब कुछ ऐस ही होगा और आपका यह लिखित रूप म मिल जायेगा। अब मैं आपके ढार डगरा के लिय अच्छे जाडे और अच्छे चारे की कामना करता हू '

'और आपके भी," पीठ फेरते हुए मार्केलोव न कहा।

वालोद्या अपन को वश मे न रख सका और खी-खी कर उठा। टाड-जीन न उसकी ओर कडी नजर स दखा।

स्थानीय ढग स अभिवादन करके और सिर झुकाकर वे एक खेमे म दाखिल हुए। यहा धुआ आखा को बुरी तरह जला रहा था। यहा भी मवेशिया के स्वास्थ्य की चर्चा हुई और फिर घरवाला के स्वास्थ्य की। वसे तो यह पूछना वेमानी था, क्याकि घर का मालिक नजदीक ही खडा था और टाच की तज राशनी म इस नाटे, चौडे चकल कधावाले और सम्भवत वहुत ही ताकतवर आदमी के निचले हाठ और ठोडी पर आतशक का भयानक घाव साफ फता हुआ दिखाई दे रहा था।

'अलगिक आतशक है न?" टोड जीन ने पूछा।

"ऐसा ही लगता है!" वोगास्लाव्स्की न जवाब दिया।

टाङ-जीन न खेमे के मालिक से अपनी भाषा म वात करना शुरू किया। उसकी वीवी नमदे से ढके फर्श पर धीरे धीरे धमकने, हाथ मलने और रान लगी। टाङ जीन न इस विलाप की ज़रा भी परवाह नही की। घर का मालिक बहुत ध्यान से टोट जीन की तरफ देख रहा था उसकी वीवी रेगकर वोलोद्या के पास पहुच गयी, वोलोद्या का हाथ अपने चेहरे स लगाकर वह और भी ज़ार से रा पडी। टोट-जान रुके बिना अपनी वात कहता जा रहा था और जव-तव सिर से वोलाद्या तथा वोगास्लाव्स्की की तरफ इशारा कर देता था।

"साथी काल ज़ाल और उसकी वीवी अस्पताल म जायगे," टाङ जीन न वोलोद्या से कहा। "तुम इन्ह निरोग कर दोगे न?"

वालोद्या ने सिर झुकाकर हामी भरी। आतशक के इस रूप से वह परिचित था।

"कब तक?"

"जल्दी ही।'

'जल्दी ही कब तक?'

"अधिक से अधिक दो महीना मे।"

"घाव तो नही रहगे न?

नही रहगे। मगर बाद मे काफी अर्से तक इन्ह इलाज करवाना होगा।"

'अगर घाव नही रहगे तो वह तुम्हारा सवस वढिया विज्ञापन वन जायगा, साथी सच।"

टाङ जीन ने फिर घर के मालिक से वातचीत आरम्भ की। उसकी बीवी अब रो नही रही थी, सुन रही थी। दाशो धीरे धीरे अनवाद करके वोलोद्या का वता रहा था कि उसके मवेशिया की देखभाल कसे हागी, अब इस प्रश्न पर विचार हो रहा है। टाङ जीन न वादा किया कि वह पडोसियो से ऐसा करन को कह देगा।

इसके वाद वे जिस खेमे मे गये उसका मालिक भादी दाशो का जानता था। धसी आखो और पीडा सहने के कारण पीले पडे चेहरेवाले इस प्रौढ का नाम साइन-खेलेक था। वह वहुत अर्मे से हिलन डुलने म असमथ था और यहा के सवस महगे चिकित्सक लामा उ्या का इलाज करवात हुए माली तौर पर भी विल्कुल वरवाद हो गया था। शमाना

न भी उसका इलाज किया था, मगर चोरी छिपे ताकि गुस्सल लामा को पता न चले। साइन-बेलक के कथनानुसार उसका बहुत अच्छा इलाज हुआ था और लामा ज्या न तो खास तौर पर उसकी बहुत अच्छी चिकित्सा की थी। साइन-बेलक हर दिन भालू का पवित्रीकृत पित्तरस पीता था और चोटिया सहित उबले पानी म पट्टी भिगोकर ददवाली जगह पर रखता था। अगर बहुत ही बुद्धिमान ज्या की चिकित्सा-कला उपलब्ध न होती, तो वह कभी का अपनी "आयु से वचित" हो गया होता।

टाड-जीन ने अपनी तेज टाच जलायी वागोस्लोव्स्की रोगी की बगल म बठ गय और उनके दक्ष हाथो न फौरन वह जान लिया, जिसे लामा न "शतान का काम और "क्रोधपूण फेन का एकत्रित होना कहा था।

"वक्षण का हानिया है," वागास्लाव्स्की न अपने देहाती और काम-काजी ढग म कहा। "आपरेशन करना होगा।"

"यह मर तो नही जायगा?' टाड-जीन न पूछा।

"उम्मीद करता हू कि नही।'

साइन-बेलक का उसके घरवालो के विलाप रोदन क बीच स्ट्रेचर पर अस्पताल ल जाया गया। दाज़ी गुसल तैयार करन और साथ ही "मदाम वावचिन" को, जो यह दखकर डर सकती थी कि अस्पताल अब अस्पताल बन रहा था, पहल से ही होशियार कर दन के लिय आगे आगे भाग गया। वैसे तो खुद दाज़ी भी इस नय घटनाक्रम से कुछ भयभीत हो उठा था। अगीठिया गर्माना तो रोगियो का इलाज करने जसी चीज़ नही थी और अब तो "आपरेशन" शब्द भी सुनन को मिला था।

टाड-जीन जब किसी भी आदमी को साथी डाक्टर के पास जान का आदश देता था, तो उसकी दृष्टि एकदम अभेद्य होती थी। लकिन लोग उसकी बात मानत थे। वह कोई भी तक वितक, किसी तरह का हीला हवाला नही सुनता था, आखो म आखें डालकर और कडाई स बात करता था।

एक और खेमे म इन्ह काफी डरा-सहमा बूढा मिल गया। उस जरा भी सुनाई नही देता था। वोगास्लाव्स्की जानकारी के विश्वास क साथ मुस्कराय और बोले कि एक दो दिन म दादा अवाताइ का

वहरापन दूर कर देंगे। वोलोद्या मामले को फौरन समझ गया, मगर खामोश रहा। उसे मजा ग्रा रहा था, सचमुच वैसे ही मजा ग्रा रहा था, जैसे बचपन में। यह सच है कि इन लोगों ने—वागोरलाव्स्की, वालोद्या ग्रौर टोड-जीन ने भी ग्राज जो कुछ किया था, वह बहुत गम्भीर ग्रौर ठोस तो नहीं था, मगर नींव, बहुत बढ़िया नींव पड़ गयी थी ग्रौर सफलता का भरोसा किया जा सकता था। दादा ग्रबाताई ने ग्रपना फरकोट पहना ग्रौर खुद ही ग्रस्पताल चल दिया। टोड-जीन ने मुस्कराते हुए कहा कि ग्रबाताई की बहू उसे सबसे घटिया सामान से भी इलाज नहीं करवाने देती ग्रौर ग्राप लोग यह विश्वास दिला रहे हैं कि एक दो दिन बाद यह ठीक ठाक हो जायगा।

तो ऐसे काम करना चाहिये!

उस शाम को वालोद्या ने ग्रपने ग्रस्पताल के रोगियों को देखने के लिये पहली बार चक्कर लगाया। गुसल के बाद रोगी बिस्तरों में लेटे हुए थे नाराज़ से ग्रौर डरे सहमे हुए। "मदाम बावचिन" ने सभी के करीब मीठे साद्रित दूध से भरी रकाबियां रख दी थीं, मगर किसी ने उन्हें छुग्रा भी नहीं था। पता चला कि मक्कार लामा उग्रा ग्रस्पताल जाते हुए दादा ग्रबाताई से रास्ते में ही जा मिला ग्रौर चिल्लाकर उसके कान में कहा कि उसे पक्की तरह मालूम है कि ग्रस्पताल में ग्राज उन सभी को घातक "मगनू" ज़हर खिलाकर मार डाला जायेगा।

"मगर क्यों?" दादा ग्रबाताई ने हैरान होकर पूछा।

"क्योंकि उन्हें इन्सान के ताजा मांस की जरूरत है!" ग्राख झपकाये बिना ही लामा ने चिल्लाकर जवाब दिया। 'वे ग्रपने घावों पर इन्सान का ग्रच्छा मांस रखकर उन्हें ठीक करते हैं। इसके ग्रलावा वे इन्सान के मांस को सुखाते भी हैं।"

दादा ग्रबाताई तो ग्रपने खेमे को वापस भी चल दिया, मगर बदकिस्मती कहिये कि टोड-जीन ग्रौर डाक्टरों के सामने पड़ गया। ज़ाहिर है कि प्यार-मुहब्बत के नाते बूढ़े ने लामा से सुनी हुई 'बुद्धिमानी की बात" सभी रोगियों को बता दी थी ग्रौर ग्रब उन सभी का बुरा हाल था।

किन्तु, दूसरी तरफ़, रात के खाने के बाद सभी रोगियों को एक चमत्कार देखने को मिला। बूढ़ी, नन्ही और मोटी ओपाई को खारा में कौन नहीं जानता था! और भला यह भी किसको मालूम नहीं था कि वह अपनी "आयु से वंचित" होने ही वाली थी, क्योंकि ढंग से सांस नहीं ले पाती थी। उसका चेहरा नीला पड़ जाता था, वह उंगलियों से ज़मीन नोचती थी और उसकी आंखें बाहर निकली पड़ती थीं। लामा ऊस्या भी उससे कन्नी काटता था क्योंकि उसने बुढ़िया के चार घोड़े ले लिये थे और उसे ज़रा भी स्वस्थ नहीं कर पाया था। मगर अब उसकी फ़ौरन मदद की गयी थी। सूई लगाते ही वह भली चंगी हो गयी थी। बरामदे में वह बिल्कुल अपनी "आयु से वंचित" हो रही थी कि उसी वक्त जवान डाक्टर शीशे की एक नली-सी लिये, जिसके आगे सूई लगी हुई थी, उसके पास आया और भली ओपाई को इंजेक्शन लगाया। न जाने उस पर क्या बीतनेवाली है, यह सोचकर बुढ़िया चीखी-चिल्लायी तो, मगर उसके बाद मुस्कराने लगी। उसकी मुस्कान बढ़ती, अधिकाधिक फैलती ही चली गयी और आख़िर जी भरकर मुस्कराने तथा अच्छी तरह सांस लेने के बाद वह भाषण-सा देने लगी। न तो बोगोस्लोव्स्की और न बालोद्या के पल्ले ही कुछ पड़ा कि बूढ़ी ओपाई क्या कह रही है। मगर एक बात पूरी तरह साफ़ थी कि अब यहां इस अस्पताल में एक नया, बिल्कुल दूसरा जीवन शुरू हो जायेगा।

"फिर भी यह कुछ हद तक तो जादूगरी-सी लगती है," बोलोद्या ने बोगोस्लोव्स्की से कहा। "उसे श्वासनली का दमा है, उसे ऐड्रेनलिन की सूई लगा दी, मगर यह तो..."

"चुप रहिये," बोगोस्लोव्स्की बोले।

कुछ बहुत ही दिलचस्प-सी बात हो रही थी। लगातार कुछ बोलने के बाद बुढ़िया उठी और उसने दादा अबाताई की गाढ़े दूध से भरी हुई रकाबी उठा ली। उसका चेहरा अब गुस्से से तमतमा रहा था। पुरुष रोगियों के कमरे में सभी भयभीत से उसकी ओर देख रहे थे। कुछ क्षण बाद बुढ़िया ओपाई दूध की रकाबी चाट गयी और विजयी की भांति अपनी आंखों को चमकाती हुई अस्पताल से चली गयी। "मदाम बाबचिन" दादा अबाताई के लिये सान्द्रित दूध से किनारे तक भरी दूसरी रकाबी ले आई, क्योंकि वह तो उस वक्त बिल्कुल रुआंसा

ही हो गया था, जब टोड-जीन ने उस जहर और इसानी मासवाली अफवाह फलाने के लिये लज्जित किया था।

"कल हम कई छोटे छोटे चमत्कार करेगे," वागास्लोव्स्की ने इतमीनान से मुस्कराते हुए कहा। "और उसके कुछ समय बाद, प्यारे व्लादीमिर अफानास्यविच, आपका बिना चमत्कारा के काम करना होगा। मगर आपके पास काम की कमी नही होगी, इस बात का आपका पक्का यकीन दिलाता हू "

टोड जीन पाले से जमी और अधेरी खिडकी के पास बरामदे म खडा सिगरेट पी रहा था। वह अचानक वोगोस्लोव्स्की की ओर घूमा और कठोर तथा तनावपूण कण्ठय प्रधान स्वर मे बोला—

"मैं तुम्हे धन्यवाद देना चाहता हू, साथी, हा, उस खुशी के लिये धयवाद देता हू, जा तुमने दी है और इसके लिय कि तुम भी खुश हो। यह मै नही, हमारी जनता तुम्हे धन्यवाद दे रही है, बशक अभी वह यह सब नही समझती, मगर समय जायेगी। और तुम्हे भी धन्यवाद देता हू, साथी," उसने वोलोद्या को सबोधित करते हुए कहा। वालाद्या ने हैरानी तथा खुशी और प्यार से उमडते हुए हृदय से देखा कि उकाब की आखा म आसू छलछला आये है। "और तुम्हे इसलिय धन्यवाद देता हू कि तुम सब कुछ समझते हो और अभी बहुत कुछ करागे, तुम "

टोड जीन अपनी बात पूरी न कर पाया, मुडा और बरामदे के ऐन सिरे पर जा खडा हुआ। वोलोद्या और वोगोस्लोव्स्की देर तक मौन साधे बठे रहे।

"खैर, सब ठीक है," वागोस्लोव्स्की ने आखिर कहा। "बाकी सब कल सुबह देखेगे। अपने इस साचो पानसा* से कह देना कि कल सुबह के लिय औजारा को कीटाणुमुक्त कर ले। सुबह जल्दी ही आपरेशन शुरू कर देगे।'

'सबसे पहल कौन होगा?"

---

*महान स्पेनी लेखक मि० सेर्वान्टेस के प्रसिद्ध उपयास के मुख्य नयाक डान क्विक्ज़ोट का वफादार नौकर और यहा मजाक म मादी दाज़ी स अभिप्राय है।

"मेरे ख्याल में हानिया को ही सबसे पहले निपटा लिया जाये।"
"लेकिन अगर ऑपरेशन शुरू करने के पहले मैं दादा अवाताई के कान साफ कर डालू, तो कैसा रहेगा, निकोलाई येव्गेयविच? वह फौरन ही बेहतर सुनने लगेगा और इससे दूसरे रोगियों की कुछ और हिम्मत बढ जायगी।"
बोगोस्लाव्स्की तनिक मुस्कराये।
"ठीक है, ऐसा ही कीजिये।"
सुबह के सात बजे वोलोद्या ने दादा अवाताई को रोगी-कक्ष में बुलवा भेजा। बोगोस्लोव्स्की अभी सो रहे थे। रात भर औज़ारों को कीटाणुमुक्त करने के काम में लगे रहने के कारण धूमिल सा चेहरा लिये दाज़ी अब सफेद लबादा और टोपी पहने बडी शान से खडा था और डाक्टर जैसा-ही लग रहा था। छोटी-सी मेज़ पर स्पिरिट के छोटे छोटे लैम्पों के नीले शोले जल रहे थे। बूढे अवाताई की शुरू में तो वोलोद्या की ओर देखने की भी हिम्मत नही हुई—ऐसा ठाठ-बाठ था इस रूसी का। सफेद लबादा, सफेद टोपी और माथे पर गोल, चमकदार और बहुत ही सुदर दर्पण, जो शायद बूढे आवाताई के सम्मान में ही सिर पर बधा हुआ था। काश कि उसकी बहू इस वक्त उसे देखती! तब तो ज़रूर हो वह बूढे की इज्ज़त करने लगती।
"आपके मवेशियों का क्या हालचाल है?" अवाताई ने बडी शिष्टता से बातचीत शुरू की।
दाज़ी ने अनुवाद करते हुए उसे बताया कि रूसी डाक्टर के मवेशी बहुत मज़े में है। दादा अवाताई के मवेशियों का क्या हालचाल है?
अवाताई अब उलझन में पड गया। यह जवाब देना खतरनाक था कि उसके मवेशी भी ठीक ठाक है, क्योंकि रूसी डाक्टर भी कही चालाकी न कर रहा हो और शमान या लामा की तरह इलाज के लिये कुछ माग न ले। मगर देने के लिये उसके पास था ही क्या? खुलकर ऊची आवाज़ में यह कहना कि उसके पास कोई मवेशी नही है, बूढा अपने लिये अपमानजनक समझता था। इसलिये वह शिष्टता से तनिक खास भर दिया। मैं तो फसने से रहा! कोई भी तो अब इस बात की पुष्टि नही कर सकता कि दादा अवाताई के पास मवेशी है।

"तो अब शुरू करते हैं!" वालोद्या ने कहा।

दादा स्टूल पर बैठ गया और उसकी गर्दन के गिर्द तौलिया बाँध दिया गया। महान रूसी डाक्टर ने चिमटी लेकर बड़ी फुर्ती से चमत्कृत हुए पतीले में से चमत्कारी नली निकाली। कुछ ही क्षण बाद दादा अवाताई को अपने कान में कुछ गुनगुनी और ऐसी प्यारी, इतनी प्यारी अनुभूति हुई कि उसने तो आँखें भी मूँद लीं। इसके बाद दूसरे कान में भी कोई हल्की, गर्म-सी चीज पहुँची। स्पिरिट के लैम्प जलते जा रहे थे और वे तो मानो वह्नि-वेदी की अग्नि जैसे थे, हाँ, पर उससे कहीं अधिक सुंदर। इतना ही नहीं, प्रमुखतम सोवियत शमान अपने दर्पण को भी चमकाता जा रहा था और इस तरह शायद वह भूत-प्रेतों "अजा" और "काई विन-कू" को दादा से दूर भगा रहा था।

दादा अवाताई को सिर्फ एक ही बात का दुख हो रहा था कि रूसी डाक्टर उस पर बस जादू-टोना कर रहा था, यह देखनेवाला कोई नहीं था। कोई लामा, कोई भी शमान ऐसे नहीं कर सकता! अगर रूसी थोड़ा-सा उछले कूदे और खजड़ी भी बजाये, तब तो शायद दूसरे रोगी भी जागकर यहाँ आ जायें।

"खजड़ी बजाने का क्या हुआ?" दादा ने दाज़ी से पूछा।

"चुप रहो, दादा, चुप रहो," दाज़ी ने कड़ाई से जवाब दिया।

"ज्यादा नहीं, तो थोड़ी सी ही बजा दो," दादा ने रुआँसी आवाज़ में अनुरोध किया। "बिल्कुल थोड़ी-सी। मैं गिलहरी मारकर ला दूँगा।"

"डाक्टर के काम में खलल नहीं डालो, दादा।"

"सेबल ला दूँगा।"

"कह तो दिया, बोलो नहीं।"

दादा ने अचानक यह महसूस किया कि वह पहले से कहीं बेहतर सुनने लगा है। दाज़ी चिल्ला तो नहीं रहा था, बोल ही तो रहा था, धीरे धीरे बोल रहा था और दादा को उसके सभी शब्द सुनाई दे रहे थे।

"अरे," दादा ने बहुत खुश होते हुए कहा। "मुझे सुनाई देने लगा है! अरे!"

वोलोद्या ने बड़े ढंग और सावधानी से दूसरे कान में कुछ किया। जब उसने रूई निकाली, तो दादा और भी अधिक अच्छी तरह सुनने लगा।

मादी दाज़ी ने वडी शान दिखाते हुए वताया–

"साथी रूसी डाक्टर ग्रौर मैं कल जव तुम्हारा कुछ ग्रौर इलाज कर देगे, ता तुम इतनी ग्रच्छी तरह सुनने लगोगे, जसे कोई स्वस्थ वालक। दादा, ग्रव जाकर ग्राराम करा!"

वालाद्या न ग्रपने सिर से वह शानदार दपण उतार दिया ग्रौर ग्रव ता दादा पूरी तरह घमड म ग्रा गया–इसका मतलव यह है कि दपण सचमुच उसके लिय ही पहना गया था। दाज़ी ने स्पिरिट के लैम्प वझा दिये। इसका मतलव यह है कि लैम्प भी उसके लिये ही जल रहे थे। यह तो कमाल हो गया! नही, नही, निश्चय ही ऐसा वढिया इलाज मुफ्त नही हो सक्ता। इसलिये दादा न चेतावनी देत हुए कहा–

"देखो न, मैं तो गरीब ग्रादमी हू!"

"हम इससे कोई मतलव नही है!" ग्रकड मे ग्राये हुए दाजी ने कहा।

"म तो किसी तरह भी इसका एहसान नही चुका सकूगा!"

"तुम डाक्टर का सिर नवा सकते हो, तुमसे ग्रौर ग्रधिक कुछ भी नही चाहिये।"

ग्रवाताई ने काखत हुए सिर झुकाया। इसके वाद ता उसन ऐसे सिर झुकाना शुरू किया कि उसके सामने सव कुछ घूम गया–सिर झुकाना ही है, तो खूव झुकाया जाय, उसका क्या जाता है इसम। वह तव तक ऐसे ही करता गया, जव तक कि वोलोद्या न उसके कधे पकडकर विगडते हुए यह नही कहा कि वह यह वर्दाशत नही करेगा। वालाद्या के गुस्से स लाल ग्रौर झुझलाये हुए चेहरे की तरफ देखकर वूढे न गहरी सास ली। फिर भी शायद वह घाडा, हिरन के वच्चे या भेड मागेगा। शायद ग्रभी उस धक्के देकर ग्रस्पताल से निकाल दिया जायेगा। लकिन दादा को किसी ने कही नही निकाला। इसके विपरीत वह वढिया दलिय, किसी मीठी ग्रौर चिपचिपी चीजवाली राटियो ग्रौर दूध के साथ चाय का नाश्ता करने लगा। ग्रव तक जाग चुके दूसरे रागिया ने जान-वूझकर धीमी ग्रावाज मे सवाल करने शुरू किये ग्रौर दादा वडी ग्रकड से उनका रुक रुकक्र जवाब देता। ग्रच्छा है उनके दिल मे धुकधुकी वनी रहे, एक वार ही सव कुछ नही, थाडा थाडा वतायेगा

नौ बजते ही बोगोस्लोव्स्की अपने हाथ धोने लगे। अब बोगोस्लाव्स्की, वालोद्या और दाज़ी मोमजामे के लम्बे कोट पहन थे, जिनकी बनावट वोलोद्या ने सोची थी और जिन्हें "मदाम बावचिन" ने सिया था। इन कोटो के ऊपर नम चागे थे। वोलोद्या की कीटाणुमुक्त करने की विधि से चागे और आपरेशन की बाकी सभी चीज़ें भी नम ही रही थी।

"आपरशन आप करगे," बोगोस्लाव्स्की ने कहा। "मै सहायक और आपरेशन नस का काम करूगा।"

साइन बेलेक खरगोश की तरह डरा-सहमा और अपनी नाक फडफडाता हुआ आपरेशन की मेज पर लेटा था। उसन बडबडाते और शिकायत करते हुए मादी दाज़ी से कहा—

"डाक्टर ने अपने सिर पर गोल दपण क्या नही लगाया? मर लिये हरे लैम्प क्या नही जलाये गय? क्या मैं दादा अबाताई स बुरा हू? दादा अबाताई तो बिल्कुल कगाल ह, बस भिखारी जैसा। लेकिन मै अगर चाहू, तो इन डाक्टरो का भेडें भेट कर सकता हू। कह दो इन डाक्टरो से कि अपने सिरो पर दपण लगा ले।"

हानिया द्विपक्षी, बहुत बडा और ऐसा था कि उसे फिर से उसकी जगह पर लाना सम्भव नही था। वालोद्या खडा हुआ सोच रहा था। बोगास्लोव्स्को ने हानिया के आस पास की जगह को सुन करनवाली दवा की सूई लगा दी।

'किस नतीजे पर पहुचे है?" बोगोस्लोव्स्की ने पूछा।

"स्पासोकुकोत्स्की का तरीका अपनाना होगा।"

"सो तो ज़ाहिर ही है," बोगोस्लोव्स्की मुस्कराये। "अल्लाह ता अल्लाह ही है और मुहम्मद उसका पैगम्बर है।'

"तो इसमे क्या बुराई है?" वोलाद्या न चुनौती के अन्दाज मे जवाब दिया। "मरे लिय ता स्पासोकुकात्स्की एक अन्वेषक, सजन और व्यावहारिक डाक्टर के रूप म भी एक वास्तविक चमत्कार ही है।"

वोलाद्या न बोगास्लाव्स्की के हाथ स नश्तर लेकर वक्षण न कुछ ऊपर चीर दिया। पट की बाहरी, तिरछी मास पशीवधनी दिखाई दी। मादी दाज़ी न खून देखकर धीरे-स "आह" कहा और दरवाज़े की तरफ जान लगा।

"अपनी जगह पर लौट आओ," वागास्लाव्स्की ने उसे आदेश दिया। "सुना, तुमने?"

वालाद्या ने त्वचा के नीचे का ऊतक और संयोगतन्तुओं का पतला कूपर आवरण काटा। वोगास्लाव्स्की निर्देशन किये बिना चुपचाप सहायता कर रहे थे, बहुत ग़ौर से देखते जा रहे थे। रक्त को वे जल्दी जल्दी और असाधारण फुर्ती से साफ कर देते थे। साइन-वेलक कभी-कभी कराहता, कभी-कभी टिप्पणी करने लगता, मगर अगले क्षण ही यह भूल जाता कि वह किस विषय की चर्चा कर रहा था।

"पाठ्यपुस्तक का यह वाक्य मुझे अभी तक याद है,' वागोस्लाव्स्की ने कहा। "पशीवधनी के केन्द्रीय चीर पर सिरे को ऐसे रखो मानो वह कोट का पल्ला हो और उस पर सीते चले जाओ।"

"और उस पर सीते चले जाओ," वोलाद्या ने सावधानी से डोरी खींचते हुए दोहराया। वह महसूस कर रहा था कि उसने अच्छा आपरेशन किया है और इसलिये उसे हर्षपूर्ण उत्तेजना की अनुभूति हो रही थी।

किन्तु इसीलिये यह ज़रूरी था कि वह अपने को "सीमा में रखे", जैसा कि वार्या कहा करती थी। वोगास्लाव्स्की जैसे सज्जन के सामने अपने को इस फन का उस्ताद महसूस करना तो हास्यास्पद होता।

"अच्छा काम करते हैं!" वागास्लाव्स्की ने वालाद्या की तारीफ कर ही दी।

'आपकी उपस्थिति में तो डर नहीं लगता!" वोलाद्या ने ईमानदारी से उस समय जवाब दिया, जब वे दोनों अगले आपरेशन से पहले अपने हाथ धो रहे थे।

'डर, वडर ' वागास्लाव्स्की बड़बड़ाये।

अगला आपरेशन कूक-वोम्टा नाम की औरत का करना था, जो अभी अधेड़ उम्र की थी। वह बहुत अर्से से चल फिर नहीं सकती थी और उसका पेट बेहद फूल गया था। लामा ऊया ने फतवा दे दिया था कि वह जल्द ही अपनी "आयु से वंचित" हो जायेगी। वोगोस्लाव्स्की का ख्याल था कि उसके पेट में बहुत बड़ा जलोदर है। वोलोद्या ने अस्थि-संगम तक पेट को काटा और विशेष औज़ार लेकर जलोदर के सामनेवाले भाग में छेद कर दिया। इनेमल की बालटी फौरन उसके नीचे

रख दो गयी और कई लीटर तरल पदार्थ पट म से बहकर बालटी म गिरने लगा। पहले से ही सभी तरह की सावधानी बरतने के बावजूद भी कूक-वास्टा शाक के कारण मरते मरते बची। जब तक बागास्लाव्स्की वह सब कुछ करत रह, जो ऐसी स्थिति मे किया जाना चाहिय, दुष्ट मादी दाज़ी चुपके से बाहर खिसक गया और उसने सब से यह कह दिया कि कूक-वास्टा "आयु से वचित" हा गयी।

इसी बीच बोलोद्या ने पट के चीर मे से जलोदर का बाहर निकाल कर काट डाला। बागोस्लाव्स्की ने उसे सूई दी और बालोद्या ने तन्तु स घाव को सी दिया। कूक बोस्टा अब समगति से, लम्बी और शान्तिपूर्ण सास लेने लगी थी।

"शाबाश!" बोगोस्लाव्स्की ने कहा।

"आपका चेला हू!" बोलाद्या ने जवाब दिया।

दोनो मिलकर कूक-बोस्टा को कमरे मे लाये और बिस्तर पर लिटा दिया। श्रम और विजय के इन दिना म रोगिया को उठाकर ले जाने का काम भी इन्ह खुद ही करना पडा।

रागी उत्तेजनापूवक एक-दूसरे से बरामदे मे कह रहे थे – मादी दाज़ी ने झूठ बोला था। कितनी भली-चगी लटी हुई है कूक-बोस्टा, सास ले रही हे और पेट भी अब फूला हुआ नही है। नही, महान सोवियत डाक्टरा न इसे भी "आयु स वचित" नही किया।

यह समझते हुए कि आज का अपना काम व खत्म कर चुके है, इन दोनो ने हाथ मुह धो लिया और बागास्लाव्स्की पतली सी सिगरेट जलाकर उसके कश खीचने लगे। बालोद्या नज़दीक खडा कुछ सोच रहा था।

"एक डाक्टर का, जिसे मूख नही माना जा सकता, कहना है कि मर्दों के मुकाबले म औरत कही ज्यादा बहादुर है। निश्चय ही पुरुष लडाई के मैदान म ज्यादा बहादुर हात है, क्योकि वहा हर गोला सीधी सनिक को नही लगती, कुछ चूककर झाडिया म भी जा गिरती है। लेकिन आपरेशन के कमरे म तो हर हालत म नश्तर स वास्ता पडता है, उससे किसी तरह भी बचा नही जा सकता।'

ट्रे म चाय क प्याल रखे हुए पीछे स दाज़ी इनके पास आया।

"यह भी सूरमा है, बागास्लाव्स्की व्यग्यपूवक मुस्कराये। "इस

आदमी पर तो पूरी तरह भरोसा किया जा सकता है न, व्लादीमिर अफानास्येविच?"

दाज्जी मुस्कराया, उसने सिर झुकाया।

"ऐसा एक और किस्सा हो जायगा तो व्लादीमिर अफानास्येविच आपको अपने इस सहायक को निकाल बाहर करना होगा,' बोगोस्लाव्स्की ने बड़ी गम्भीरता से, ऊंचे और साफ-साफ शब्दों में कहा। "देखते हुए नफरत होती है कि जवान मर्द ऐसा बुजदिल हो। आपरेशन के कमरे से खिसक गया और सब से कह दिया कि कूक-योस्टा मर गयी।"

"तब तो वह मर गयी थी!" मादी-दाज्जी ने काफी हद तक ठीक ही आपत्ति की।

"और अब जिन्दा है!" बुझ चुकी सिगरेट का कश खींचते हुए बोगोस्लोव्स्की ने कहा। "थोड़े में इतना समझ लो कि फिर कभी ऐसा नहीं होना चाहिये।"

बोगोस्लोव्स्की ने अभी अपनी बुझी हुई सिगरेट जलाई भी नहीं थी कि टोड-जीन अपराधी की सी सूरत बनाये हुए दो अन्य रोगियों को ले आया। इनमें से एक थी जवान विधवा तूश, जिसे छः महीने का गर्भ था और इस वक्त अपेंडिसाइटिस से पीड़ित थी। दूसरी स्त्री को स्तन शोथ था। तूश की हालत बड़ी खराब थी और बोगोस्लाव्स्की ने उस्तिमेन्को को कनखियों से देखकर स्वयं आपरेशन शुरू कर दिया। तूश सरसाम में बड़बड़ा रही थी। सोलह वर्षीया यह विधवा अभी किशोरी ही थी। यहां दो प्राणियों के लिये एकसाथ संघर्ष हो रहा था और यह संघर्ष बड़ा विकट था। अपेंडिक्स सूजे हुए ऊतकों के पीछे छिपा हुआ था और बोगोस्लोव्स्की ने जब उसे खोज लिया, तो पाया कि वह फटा हुआ है। बोगोस्लाव्स्की ने सिर हिलाया और गहरी सांस भी ली। अब गर्भपात होने की प्रतीक्षा करना जरूरी था, क्योंकि सभी लक्षण उसी बात का संकेत कर रहे थे। इसके अलावा तूश की प्रतिरोध-क्षमता इतनी कम थी कि पीपवाले अपेन्डिसाइटिस से पार पाना ही उसके लिये कठिन था।

स्तन शोथवाली नारी रूदा और गलगंड से बुरी तरह परेशान कून चेन दोदज़ीवा के ऑपरेशनों को अगले दिन के लिये स्थगित कर दिया गया। हाथ धो लेने के बाद बोगोस्लाव्स्की ने कहा—

"यह तूश मर जायगी क्या? हैं? वेडा ग्रक हो, वडे ग्रफ्सोस की बात है मगर किया क्या जाय?"

तूश को एक ग्रलग कमरे म रखा गया। फिलहाल तो दाजी उसके पास वठा था, मगर रात के लिए वोगोस्लाव्स्की ग्रौर वोलोद्या न उसकी देखभाल करने का काम ग्रापस म वाट लिया। जव टाड-जीन ग्रौर दोनो डाक्टर वालोद्या के कमरे म खाना खा रहे थे, तो दादा ग्रवाताई ने वहा झाका ग्रौर टोड जीन की ग्रार देखते हुए उसन कहा कि इलाज के वदले म वह ग्रस्पताल म ग्रगीठिया गमाने का काम करने को तयार है। मादी दाजी तो ग्रव वडा ग्रादमी वन गया है, डाक्टर हो गया है (टाड जीन तनिक मुस्कराया), वह हर समय व्यस्त रहता है ग्रौर ग्रगीठिया तो गर्मायी ही जानी चाहिये न? झाड लगाना भी जरूरी है? यह सही है कि दादा ग्रवाताई ने ग्रव तक कभी झाडू नही लगाया, मगर ग्रपनी समझ-बूझ, ग्रक्ल ग्रौर चतुर हाथो की वदौलत वह किसी न किसी तरह यह काम तो सीख ही जायगा। रसोईघर म भी वह मदद कर सकता है। ऐसा काम करनेवाला तो सारे खारा म नही मिलेगा ग्रपने वारे मे विनम्र दादा ग्रवाताई कह रहा था। उन्हे तो यह मालूम ही नही था कि वह कितना समझदार ग्रादमी है। इसस क्या फर्क पडता है कि वह ग्रव जवान नहा है। लेकिन उसे वहुत से वढिया किस्से कहानिया ग्राते है, जो वह रोगियो को सुना सकता है। मिसाल के लिये, वह उस ग्रक्लमन्द शीशकोश परिन्दे का यह किस्सा जानता है कि कैसे उसने लोमडी को चकमा दिया, या वढे तेचीवेया का, कि उसने ऊट की गर्दन जितनी लम्बी थैली हासिल की, या उस चालाक ग्रौर कमीने भालू का, जो "

"ग्रच्छी वात है," टोड जीन ने कहा, 'मैं साथी डाक्टर के साथ सलाह कर लेता हू। तुम जरा इन्तजार करो।"

वोलोद्या ने चुपचाप टाड जीन की वात सुनी ग्रौर फिर जवाव दिया—

"जैसा ग्राप ठीक समझते हैं, हम वसा ही कर लते है। मगर मुझे कुछ ग्रौर लोगो की जरूरत तो होगी ही।"

टाड-जीन ने वूढे की तरफ मुह किया।

"मैं यही काम करूगा न?' ग्रवाताई न पूछा।

"हा, करोगे।"

"किस हैसियत से?"

"तुम वहुत वडे ग्रादमी होगे!" टोड-जीन न उछाह स कहा। "वहुत-से कठिन ग्रौर सम्मानित काम करने हागे तुम्हे।'

"कमचारी हूगा न मैं?" ग्रवाताई ने पूछा, जिसे ग्रव किसी भी वात से जरा भी हैरानी नही हाती थी।

"नही, दादा, तुम सफाई का काम करोगे।"

"मुझे उम्मीद है कि यह कुछ कम सम्मानपूण नही होगा।"

"ग्राह् नही," टोड-जीन ने मुस्कराये विना उत्तर दिया। "कमचारी की तुलना म यह कही ग्रधिक सम्मानपूण है!"

ग्रवाताई उन तीना के मवेशिया ग्रौर परिवारा के स्वास्थ्य की कामना करन के वाद ग्रपने कमरे म वापस चला गया। ग्रपने विस्तर पर लेटकर तथा घसके हुए पेट पर दोना हाथ फेरने के वाद उसने कहा कि जल्द ही वह यानी ग्रवाताई इतना मोटा हो जायगा कि लोग दग रह जायेंगे ग्रौर ग्रपने भाव व्यक्त करन के लिये उन्हे शब्द भी नही मिलेंगे। ग्रवाताई न उन्हे समझाया कि रूसी डाक्टरा ग्रौर खुद टोड-जीन न उमस ग्रस्पताल मे रुकने ग्रौर काम करन के लिये मिन्नत की है। उसका काम किसी भी कमचारी के काम से ज्यादा मुश्किल होगा।

"ग्रौर झूठ वोला!" साइन-वेलेक ने कराहते हुए कहा। "किस जरूरत है तुम जसे भिखमगा की? ग्रगर कोई कमचारी वनन के लायक है, तो वह मैं हू।"

ग्राधी रात को तूश ने मरा हुग्रा वच्चा जना। वालाद्या ने वोगोस्लोव्स्की का जगा दिया ग्रौर तूश की जान वचान का सघप शुरू हुग्रा। "इस दुनिया मे वह एकदम ग्रकेली है," टोड जीन ने उसके वारे मे कहा। "वहुत ग्रच्छा हो, ग्रगर वह 'ग्रायु से वचित' होने से वच जाय। सिफ सोलह साल की है ग्रभी वह '

किन्तु तूश मे तो चीखने चिल्लाने की भी शक्ति नही थी।

फिर भी तूश जिन्दा रही। वोलोद्या क लिये यह वहुत कठिन रात थी, ऐसी कठिन, जसी उसन पहले कभी नही जानी थी। दिन भी वहुत कठिन रहा, क्याकि उसने दो मुश्किल ग्रॉपरेशन किये ग्रौर इसके वाद रात भी ढग की नीद के विना ही गुजर गयी। वह कुछ-कुछ देर के लिये ही झपकी ले पाया। केवल इसी रात के वाद पौ फटने के वक्त, कडे

पाल की उषा वेला म ही सोलह साल की तूश की हालत कुछ सुधरी। क्षारीय घोल और ग्लूकोस के इजेक्शनो और गर्म पानी की बोतल, जो वालोद्या इन रातो म "मदाम वावचिन" स तूश के कमरे म लाता रहा था तथा जिस सावधानी स व दोनो, वालोद्या तथा वागोस्लोव्स्की, उसके रोये जैसे हल्के फुल्के शरीर को अधलेटी स्थिति म रखते थे, इन सभी चीजो न उसकी जान बचा ली। एक दिन बाद तो वह अपने पहले बच्चे के लिये रो भी ली और इसके बाद दूध पीकर सो रही। वोलोद्या उसके ऊपर झुका हुआ यह देख रहा था कि उसकी सास कैसे चल रही है। उसके नजदीक, कधे स कधा सटाकर खडा हुआ टोड-जीन भी तूश को अपनी निडर, कठोर और निश्चल उन उकावी आखो से देख रहा था, जो सूरज से भी नही डरती थी।

"साथी, यह तुम्हारे पास अस्पताल म काम करेगी, हा, यही काम करेगी," टोड जीन न कहा। "यह समझदार और चुस्त लडकी है, सच। मैं इसके पति को भी जानता था, अच्छा आदमी था। उसकी इसलिये मौत हो गयी कि साथी, तुम यहा नही थे। घोडे पर लादकर उसे कही दूर ल गये, मगर वह मर गया, और जब उसकी लाश को चीर फाडकर देखा गया, तो पता चला कि उसका बहुत आसानी से इलाज हो सकता था। वह हमारी पार्टी का यहा पहला सदस्य था, सच।"

तूश की जब आख खुली, तो टोड-जीन उसके बिस्तर के करीब स्टूल पर अकेला बैठा था। तूश ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। टोड जीन ने धीमे धीमे कहना आरम्भ किया—

"यहा अस्पताल मे तुम्हारी आयु बचा दी गयी है, तूश। तुम अब इस दुनिया म अकेली हो, तूश। अगर तुम यही रह जाओ, तो एकाकी नही होगी। आदमी को कुछ नेक काम करने चाहिये। तुम व नेक काम यहा करोगी। बाद म, कुछ अर्से बाद, अगर तुम अपने को इस लायक साबित कर दोगी, तो हम तुम्हे नगरो के नगर, यानी मास्को म पढने के लिये भेज देगे। तुम तो अभी बहुत कमउम्र हो, इसलिये डाक्टरो की पढाई कर सकती हो, वह व्यक्ति बन सकती हो, जो लोगो को जीवन-दान देता है। तुम्हारे पति की यह आशा थी कि

वह तुम्ह साथ लेकर पढने के लिये जा सकेगा। तुम्ह उसकी इच्छा पूरी करनी चाहिये।"

"हा," तूश ने कहा।

"तुम मेरी सारी बात समझ गयी न?'

"हा।"

"पर तुम रो क्या रही हो?"

"इसलिये, टोड-जीन, कि न तो मरा पति ही रहा और न बच्चा ही।"

"नही रास्रो, तूश। वे इसलिय मर गये कि हम अभी जगली और पिछडेपन की जिन्दगी बिता रहे हैं। तुम्ह अपडिसाइटिस था। बहुत पहले ही उसम सूजन शुरू हुई। उन दिना ही, जब पिछले जाडे म मैं तुम्हारे यहा था। अगर उस वक्त हमारे यहा डाक्टर होता, ता तुम्हारा पति भी जिन्दा रहता और बच्चा भी। समझ गयी मेरी बात?'

"हा।"

"तो मैं तुमसे विदा लता हू, तूश।"

"विदा, टोड जीन।"

बोगोस्लोव्स्की और टोड जीन इसी दिन चल गय। जाने के समय बोलाद्या स हाथ मिलाते हुए बोगोस्लाव्स्की ने कहा—

"अलविदा, ब्लादीमिर अफानास्यविच। आपके साथ यहा कुछ समय बिताकर खुशी हुई। आशा है कि हम फिर मिलगे। यह समझ लीजिय कि मैं कही भी क्या न हू, अगर आपको काई आपत्ति नही होगी, ता आपको अपने पास खीचता रहूगा "

कुछ सोचकर उन्हाने गम्भीरता स इतना और जोड दिया—

"मुझ लगता है कि आप पर भरोसा किया जा सकता है।"

बोलाद्या खुशी की उत्तेजना से लाल हो गया था। अगर बोगो स्लोव्स्की उसके बारे म ऐसे शब्द कहते है, ता इसका मतलब निकलता है कि वह काई बुरा डाक्टर नही है। टाड जीन ने अनुराध किया—

"तूश पर पूरा-पूरा विश्वास करना। वह तुम्हारी अच्छी मदद करगी सच। बुढिया ओपाई पर भी भरासा कर सकते हो, वह भी मदद कर सकती है। अगर तुम सही तरीका अपनाओगे, तो बहुत से लाग मदद कर सकेगे। ठीक है न?"

"हा!" वोलोद्या ने सहमति प्रकट की।

वे दोनो चले गये और वालाद्या उस्तिमेन्को अपन अस्पताल तथा अपने रागियो क साथ अकेला रह गया। हा, उसकी आरम्भ होती हुई ख्याति भी अब उसके साथ थी।

कितना भय अनुभव हुआ था उस इस रात का!

फिर एकाकी

दादा अबाताई अब सचमुच ही जवानी के दिनो की भाति सुनता था और खारा की बस्ती म लोग इस छोटे-स चमत्कार से आश्चय चकित होते नही थकते थे। खारा के ही नही, बल्कि दूरस्थ चरागाहो के बहरे भी उस्तिमेन्का के पास चले आते थे। जब वह यह कहता कि इस या उस बहरे का इलाज करने मे असमथ है, तो उन्ह इस पर विश्वास न हाता और वे हिरन, भेड या घोडा भेंट करने की बात करते। एक बूढे विधुर ने तो "बिल्कुल अच्छा ऊट" देने का भी वादा किया। यह बूढा शादी करना चाहता था और एकदम बहरा हाते हुए शादी करने मे उसे कुछ झेप महसूस हो रही थी। दादा अबाताई न, जिस वोलोद्या की चिकित्सीय शक्ति मे बडी आस्था थी, उसे सलाह दी—

"आपने डाक्टर की काफी मिन्नत नही की। अच्छी तरह से, बहुत देर तक मिन्नत-समाजत कीजिये, आसू बहाइये, उनके सामन जमीन पर माथा टेकिये। महान शमान है वे ता!"

बहरो के साथ वोलाद्या को काफी मुसीबत का सामना करना पडा।

किन्तु दूसरी आर कूक-वोस्टा, जिसके पेट से वालोद्या और वागोस्लोव्स्की न तीन बल्टिया तरल पदाथ निकाला था, उदार और मोटी आपाई तथा चुस्त फुर्तीली तूश ने सावियत डाक्टर वोलाद्या रूसी अस्पताल और नये रूसिया की, जा वसे लोग नहा थे, सभी आर कीति फैला दी थी। "वसे नही" स उनका अभिप्राय यह था कि मार्कोलाव जस नही। मार्कोलोव से यहा लोग डरते और उसम घणा करत थ। मगर क्या? वोलाद्या इसका कारण अच्छी तरह म नही जानता था।

वोलाद्या जब दूर के खेमा म बीमारा का दखने जाता, तो मार्कोलाव

से अक्सर उसकी मुलाकात होती। मार्केलोव बहुत गौर से वोलोद्या को देखता, बड़ी शिष्टता से अभिवादन करता और फिर देर तक अपनी मनहूस जिप्सी आंखों से वोलोद्या को जाते देखता रहता। एक बार वोलोद्या को ऐसे लगा कि मार्केलोव उससे कुछ कहना चाहता है और इसलिये वह रुक गया। किन्तु मार्केलोव अपना भारी सोटा टेकता और पांव घसीटता हुआ आगे निकल गया।

जब से वोलोद्या उस्तिमेंको को बीमारों को देखने के लिये बुलाया जाने लगा, लामा ऊया और शमान ओगू का धंधा बड़ा डावांडोल हो गया था। चालाक लामा तो खारा छोड़कर ही चला गया। मगर ओगू वहीं बना रहा और जान-बूझकर शमानों के पूरे टाट-बाट के साथ बाहर निकलता। वह यह समझता कि ऐसे उसका अधिक रोब पड़ता है और वह कहीं ज्यादा भयावह दिखाई देता है। मगर दादा अबाताई ने मन से बनाकर यह बात फैला दी कि बहुत ही सम्मानित रूसी डाक्टरों को उसने यह कहते सुना है कि ओगू जादू टोने से बहुत सारे लोगों को खुद ही बीमार कर देता है। कूक-वोस्टा के साथ भी ऐसा ही हुआ था, क्योंकि उसने ओगू को एक भेड़ कम दी थी। इसके बाद तो ओगू की बिल्कुल ही लुटिया डूब गयी। वह अब चिकित्सक नहीं, क्रूर जादूगर ही रह गया था। ऐसे आदमी की तो किसी पर बुरा जादू टोना करान के अलावा किसी को क्या जरूरत हो सकती थी। लेकिन इतनी थोड़ी आमदनी से तो चिड़िया का पेट भी भरना मुमकिन नहीं था। फिर ओगू की तो बात ही क्या की जाये, जो वोदका भी पीता था और मांस के बिना खाना नहीं खा सकता था।

"किस्मत के मारे ओगू का तो अब बिल्कुल ही बुरा हाल हो गया है!" दादा अबाताई ढोंग करते हुए गहरी सांस लेता।

और तो और बच्चे भी ओगू पर उस समय तरह-तरह की फब्तियां कसते, जब वह अपने भयानक भेस में खंजड़ी बजाता हुआ खेमों के बीच से गुज़रता। वह ऊंची टोपी पहने होता, जिस पर तांबे से मानव का घिनौना चेहरा कढ़ा था और फीते से लिपटा हुआ डंडा उसके हाथ में होता। इस डंडे पर तीन पोटलियां लटकी होतीं। पहली में "नभ पाषाण", दूसरी में "भू-पाषाण" और तीसरी में इन 'प्राणवान" पाषाणों के लिये भोजन होता।

"ऐ कुत्ते हमारी भेड वापस दे," कोई उद्दड लडका चिल्लाता।

'खबरदार, जा हमारे खेमे के पास से गुजरा," दूसरा सुनाकर कहता।

"हम तुमसे नही डरते है!" तीसरा जोर से उसे सुनाता। मगर यह सफेद झूठ होता था। वे सभी उससे डरते थे और सो भी ऐसे कि क्या कहे जाय।

शमान आगू के नुकीला हडीला मुह फेरते, भयानक शक्ल बनाते और इसके अलावा फीता से लिपटा हुआ डडा जोर से हिलाते ही सभी तीसमार खा सिर पर पाव रखकर भाग उठते थे और फिर दर तक खेमा मे थरथर कापते तथा दुष्ट जादूगर की बुरी नजर के प्रभाव से बचने के लिये मन्त्रो का जाप करते रहते थे। वह अगर चाहे तो किसी के भी पेट म कूक-वास्टा की तरह) तीन बल्टिया पानी भर सकता है और फिर उसे काटकर निकालना होगा। आह, कितना दर्द होता है पेट कटने पर!

वोलोद्या को बहुत काम करना पडता था और अब बडा दूरी से आनेवाली मास्को रेडियो की आवाज सुनते हुए उसे शर्म नही आती थी – वह अपना काम कर रहा था और सम्भवत कुछ बुरा नही। बस ठीक ही था कि उसे यहा भेजा गया। शायद पीच और ओगुर्त्सोव भी यहा निभा लेते, मगर स्वत्लाना और न्यूस्या के बारे म उसे बहुत यकीन नही था।

एक बार मास्का रेडियो सुनने के बाद उसने सगीत सुनने के लिये वियना रेडियो लगाया। उसने लेटकर आखे मूद ली। मगर अगले ही क्षण वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया। सगीत की जगह आस्ट्रिया के चासलर शूशनीग की आवाज सुनाई दी, जो हिटलर के बेर्खतसगादेन निवास-स्थान से उसी समय लौटा था।

रेडियो बहुत ही साफ सुनाई दे रहा था और आधी रात होते होते वालोद्या सारी बात समझ गया। फासिस्ट जेस इन्क्वात ने यह घोषणा की थी कि भूतपूर्व चासलर की जगह लेकर उसने हिटलर से आस्ट्रिया म फौजें भेजने का कहा है। वाल्ज-सगीत प्रसारित नहा किये गये और शूबेत की अपूर्ण सिम्फनी की जगह, जिसे वालोद्या पहले अक्सर सुनता था, फौजी आर्केस्ट्रा बज उठा और भद्दी आवाजो म

नाजिया या "होस्ट वसेल" सम्बन्धी गीत गूजन लगा। तो वही शुरू हो गया, जिसकी पिताजी न उस वक्त चेतावनी दी थी जब यह कहा था कि युद्ध "विज्ञान की प्रगति का रोकेगा" वही शुरू हो रहा है, जिसकी रादिमान मफादियेविच न भी चर्चा की थी।

वालोद्या अभी तक रेडियो की सूई इधर उधर घुमा रहा था।

सभी स्टेशनो स सगीत प्रसारित हो रहा था। नाच हो रहा है!

वालोद्या न कटुता स सोचा। "परिस म लन्दन म रोम म सभी जगह लोग नाच रह हैं आह काश कि इस वक्त बूग्रा स एकाध घण्टा बातचीत कर सकता "

वालोद्या सोन क लिए लेटन ही वाला था कि मदाम वावचिन ' न दरवाजा खटखटाया। खान-क्षेत्र स एक जला हुआ लडका लाया गया था

अब वालोद्या का अवसर उनीदी रात बितानी पडती थी।

मौसम क कुछ गम होत ही शमान म्रोगू खारा स गायब हो गया। लोगो का कहना था कि ताइगा म भाग जाने के पहल वह देर तक अस्पताल क सामने जादू-टोना करता रहा। लोगो को डर था कि या तो अस्पताल जमीन म धस जायगा, या डाक्टर वालोद्या मर जायगा या फिर कोई बडी आग लग जायगी। लकिन वक्त गुजरता गया और एसा कुछ नही हुआ।

कोल-त्राल का आतशक का भयानक घाव लगभग पूरी तरह ठीक हो गया। खारा क रहनवालो न जब कोल-त्राल क अपन खेमे म वापस आ जान पर यह समझ लिया कि आतशक का भी इलाज होता है, तो उनकी तो भीड ही उमड पडी। दूसरे रोगो के बीमारो की भी बहुत बडी सख्या थी। अब तो बरामदे, बडे सायबाना और "मदाम वावचिन" क रसोईघर की ओर जानेवाले छोटे स बरामदे म भी चारपाइया लगा दी गयी थी। दो मौत हो जाने स भी लोग भयभीत नही हुए। वालोद्या न अपने कीमती वक्त की परवाह न करते हुए रोगियो को यह समझाया कि इन दोनो बदकिस्मतो ने बहुत देर तक अपने रोग की अवहलना की और इसलिए कोई भी चिकित्सा विज्ञान उन्ह ठीक करने म असमर्थ था।

"मेरे पास ठीक वक्त पर आना चाहिये," उसन कडाई से कहा। "तब कोई भी आयु स वंचित नही होगा।"

यह ठीक ही कहा जाता है कि अपने हर रोगी के साथ सर्जन की भी मौत होती है। दोनो मुर्दा के शवो की अकेले ही चीरफाड करते हुए वालोद्या न ऐसा ही महसूस किया। इन मौतो के लिय वह दोषी नही था, फिर भी यह जानना चाहता था कि ताइगा स लाये गये उदरावरण शोथ के रोगी जवान चरवाहे और भालू द्वारा बुरी तरह घायल किय गये प्रौढ शिकारी के लिये उसने सब कुछ किया था या नहा? "वे दोनो आपरेशन के बाद मरे थे, जिसका मतलब था कि ऑपरेशन के फलस्वरूप मरे थे।" बेशक यह सही था कि शिकारी ग्यारह दिन तक अपने खेमे म पडा रहा था और इसके बाद ही उसके रिश्तेदार उसे अस्पताल लाय थे। मगर फिर भी मन को कचोटनवाले इस वाक्य का क्या किया जाये—आपरेशन के बाद, जिसका मतलब था ऑपरेशन के फलस्वरूप।

स्थानीय रिवाज के मुताबिक मुर्दों का घोडा पर लादकर पहाडा पर ले जाया गया। वोलोद्या की उनके रिश्तेदारो से आख मिलान की हिम्मत नहा हुई थी। उसे इन्स्टीटयूट के अपने साथिया, सहपाठिया सहपाठिनिया—स्वेत्लाना, येव्गेनी स्तेपानाव और मीशा शेरवुड की याद हो आयी। "ऐ सहायक डाक्टरो, विज्ञान के भावी सितारो, हरामखोरो, परापजीवियो, क्या हाल है तुम्हारा?' और अपनी तग चारपाई पर किसी तरह उनीदी तथा यातनापूर्ण रात बिताते हुए वह कल्पना कर रहा था—"कोई बात नही, हम कभी तो मिलेगे ही और तब मैं तुम्हे बताऊगा कि तुम्हारे बार म मेरी क्या राय है, तुम जानवरा के बारे मे!"

"कुल मिलाकर' जसे कि यव्गेनी स्तेपानाव कहने का आदी था, वोलोद्या बेहद थक जाता था, काम का दिन समाप्त होने पर इस हद तक थक जाता था कि रात को सा भी नहा पाता था। सुबह और शाम का वह दवाखान म आनवाले रोगिया का देखता। लेकिन उनकी सख्या इतनी अधिक हाती कि उसके लिये उनसे निपटना मुश्किल हा जाता। इसके अलावा उसे अस्पताल क मरीजा को भी देखना होता था, उनके लिय इलाज और दवाइया निश्चित करनी हाती थी और

खेमा और घरा मे पड रोगिया को भी देखने जाना होता था। अगर उस किसी वीमार को दखने के लिये बुलाया जाता था, तो वह जाय बिना रह ही कैसे सकता था? फिर हफ्ते म दा वार आपरेशन भी करने हाते थ। सो भी सहायका, औज़ार देनेवाली नस और मददगार सजना के बिना। बुज़दिल दाज़ी तो होने न हान के वरावर था। आह, ये ऑपरेशन कसी यातना हात थ, कितना भयानक श्रम होते थे, कितनी शक्ति उसे इनमे लगानी पडती थी और कैसे-कैसे उल्टे सीधे करतब करने पडते थ वोलाद्या को! सरकस का नट भी उसस क्या वेहतर हागा! कैसे वह अपने को सयम म रखना सीख गया था, अपनी खीझ और गुस्से को, जिन्हे अव वह महसूस करने लगा था, क़ावू म रखना, आपे से वाहर न होना सीख गया था।

"किसी दिन तुम्हारा अचानक दम निकल जायगा, मेरे प्यारे बेटे!" वूआ अग्लाया ने उसे लिखा। "तुम इतना वोझ वर्दाश्त नही कर पाओगे। छुट्टी लेकर आ जाओ, काले सागर के तट पर आराम करने चलेंगे।"

वालोद्या के होठा पर उदासी भरी मुस्कान झलक उठी। क्या वे वहा, सावियत सघ म वैठे हुए यहा की वास्तविक स्थिति को समझ सकते है? यहा तक कि वूआ और रोदिओन मफोदियेविच जैसे बुद्धिमान लोग भी? वह अस्पताल को किसके सहारे छाडे? जो कुछ इतनी मुश्किल से वनाया गया है, उसे छोडकर चला जाय, इसका मतलब है सव कुछ चौपट कर दना, फिर से अविश्वास के वीज वो देना, जो कुछ प्राप्त किया है, उसे खो दना। वसे रादिओन मफोदियेविच तो इस वात को समझते थे। उन्हान वोलोद्या को लिखा था— "मेरी वात पर यकीन कर सक्त हो, तुम्हारे पिता को तुमसे खुशी होती। अगर ज़रा गौर किया जाये, तो यही कहना उचित होगा कि तुम अपने पिता, अफानासी पत्रोविच के ध्येय को आगे वढा रहे हो और वही कुछ कर रहे हो, जो उसने वहा किया, जहा हम दोनो साथ थे। फिर भी तुम्हे अपना ध्यान रखना चाहिये, अग्लाया की यह वात सही है।"

तूश नाम की प्यारी-सी नारी को वोलोद्या पहले से ही सर्जन की सहायक नस का काम सिखाने लगा था। यह खासा मुश्किल मामला

था लेकिन तूश इतनी लगन दिखाती थी, सीखने के लिये इतनी अधिक उत्सुक थी, वोलोद्या के बिगड़ उठने पर ऐसे फूट-फूटकर रोती थी, वोलोद्या के मनोभावों को समझने, उसके अनुदशा का पूर्वानुमान लगाने के लिए ऐसे उसकी आंखों में झांकती थी कि कुछ वक्त गुज़रने पर वोलोद्या ने उसे झिड़कना डांटना बन्द कर दिया और वह धीरे-से उसे केवल इतना ही कहता—

"तूश, तुम बस, घबराओ नहीं, सब कुछ ठीक ठाक हो जायगा।"

तूश बड़ी समझदार थी, चतुर फुर्तीली थी और उसके छोटे छोटे, सांवले तथा चुस्त हाथ बड़ी खुशी और होशियारी से वह सब कुछ करते, जो रोगी, आपरेशन तथा उसके उस काम के लिए ज़रूरी होता, जिसे वह अभी सीख ही रही थी। रोगी हमेशा तूश को पुकारते, उसके बिना काम नहीं चलता था और वह सबसे कठिन, अप्रिय तथा गन्दे काम को भी ऐसे शुरू और खत्म करती मानो वह काम न होकर उसे अचानक मिल जानेवाला कोई सुख हो।

वोलोद्या का तूश अपनी जनता की भाषा सिखाती। यह काम भी वह हल्के हल्के सुनहरे डोरोंवाली काली आंखों में चमक तथा छोटे-से गुलाबी मुंह पर हल्की सी मुस्कान लाकर बहुत खुशी और ज़िन्दादिली से तथा हंसते-हंसते करती।

वसन्त आते न आते वोलोद्या बेशक मुश्किल से, फिर भी शिकारियों, पशुपालकों और हलवाहों को (जिन्हें यहां भूमि सिंचक कहा जाता था, क्योंकि वे भूमि की सिंचाई के लिये नालियां बनाते थे) समझने लगा था। वह केवल समझता ही नहीं था, बल्कि ऐसी मुख्य मुख्य बातों को खुद भी स्थानीय भाषा में कहने लगा था, जिनके बिना काम चलाना सम्भव नहीं था। अब वह परम्परागत अभिवादन के उत्तर में मुस्कराये बिना यह कहता था कि उसके मवेशी ठीक-ठाक हैं और खुद भी वह सब पूछता था, जो सदियों से चली आ रही शिष्टता के अनुसार उचित था। तूश नम्रता से आंखें झुकाये हुए वोलोद्या की भाषा सम्बन्धी भूलें सुधारती।

मादी दाज़ी को तूश फूटी आंखों नहीं सुहाती थी, मगर वह यह मानते हुए कि वोलोद्या को नारी के रूप में इसकी ज़रूरत है, क्योंकि वह सुन्दर और जवान है और वोलोद्या भी खूबसूरत तथा जवान मर्द

है, अपनी घृणा को छिपाये रखता था। कभी-कभी इस बात की तरफ भी उसका ध्यान जाता कि तूश कैसे वोलोद्या की ओर देखती है, उसकी आँखों में श्रद्धा की कैसी ज्योति आ जाती है और यह भी देखता कि तूश की उपस्थिति में वोलोद्या अकारण ही शर्माकर लाल हो उठता है। दाज़ी को सिर्फ यही बात अजीब सी लगती थी कि तूश अभी तक डाक्टर के साथ सोती क्यों नहीं थी। बस यह बात उसके लिये बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं थी। इससे कहीं अधिक चुभनेवाली बात यह थी कि तूश को दाज़ी से अधिक महत्ता मिल गयी थी। इतना ही नहीं, दादा अवाताई भी उस पर कभी-कभार कोई हुक्म चला देता था। कुल मिलाकर यह कि तूश और अवाताई डाक्टर और मादी दाज़ी के बीच आ गये थे और उन्होंने दाज़ी के बारे में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और डाक्टर के लिये सबसे आवश्यक व्यक्ति बनने में बाधा डाल दी थी।

इन पर विजय पाना तो उसके लिये सम्भव नहीं था।

"मदाम वाबचिन" तूश को बहुत प्यार करती थी और दादा अवाताई भी इनके ही पक्ष में था। अकेला दाज़ी तीन जनों से तो नहीं निपट सकता था और उस दिन की प्रतीक्षा में यह सब कुछ बर्दाश्त कर रहा था, जब राजधानी से वह आयेगा और दाज़ी उसे बतायेगा कि ये तीनों वास्तविक हैं! इन तीनों को निकाल बाहर करना चाहिये। इसके बाद क्या होगा, मादी दाज़ी ने इस बारे में सोचने की तकलीफ नहीं की।

शामों को अस्पताल में जब कुछ शान्ति हो जाती, तो वोलोद्या देर-देर तक बड़ी कटुता और प्यार से वार्या के सम्बन्ध में सोचता रहता। उसकी कनपटियाँ जलने लगतीं, चेहरा तमतमा उठता और उसका मन होता कि वार्या को पुकारे। वह कल्पना करता कि वार्या अचानक उसकी पुकार का जवाब देगी, जैसा कि कभी पहले होता था, अचानक उसके पास आयेगी और पूछेगी—

"क्या बात है वोलोद्या?"

मगर कोई उसके पास न आता। उष्णकटिबन्धीय चिकित्साशास्त्र-सम्बन्धी पुस्तक को अपनी ओर खींचता हुआ वह बरबस दाँत भींच लेता। फिर भी वार्या का बिम्ब ओझल न होता। इतना आसान तो नहीं था उसके लिये इस बिम्ब से पिंड छुड़ाना। वोलोद्या सिर पटकता, अपने को भला

वुरा कहता और वार्या की वुरे से वुरे रूप म कल्पना करने की काशिश करता। जो उसका मन मान, वह करे! वोलाद्या का अपना जीवन है और वार्या का अपना! हर कोई अपनी राह चलता है! थियेटर कमच की जगमगाती वत्तिया, फूल गुलदस्ते, वाल्ज नाच, चुम्बन और जाहिर है उसके वाद वह, जिस यव्गेनी शरीर जगत कहता था। वालोद्या का माथा पसीने से तर हो जाता, हाथ कापने लगत और दम घुटने लगता। वह खिडकी का झराखा खोल देता और फिर स मेज पर किताव पढ़ने वठ जाता। उसने जो कुछ पढा होता, उस पर ध्यान केद्रित करने, सोचने विचारने के लिये उसे काफी यत्न करना पडता। फिर भी वह पढता, उसके लिये ऐसा करना लाजिमी था।

टोड जीन अपने सभी डाक्टरा के लिय भिन्न भाषाओ म किताबें और पत्र-पत्रिकाए मगवाता था। वोलोद्या को इनसे वहुत मदद मिलती थी। वात यह है कि वह न ता चिकित्सा शिक्षालयो मे जा सकता था, न वज्ञानिक सम्मेलनो और वैठको मे भाग ले सकता था। वह तो सिर्फ पढ ही सकता था। काम करना, पढना, चिन्तन मे डूवना और खत लिखना, वस यही थी उसकी जिन्दगी।

वोगोस्लोव्स्की को अव वह अक्सर और लम्वे लम्वे खत लिखता तथा ऐसा करने म उसे आनन्द मिलता। अजीव स खत होते थे ये। आम तौर पर तो वह उनस सलाह लेता, लेकिन कभी-कभी अचानक भाषण, कार्य-याजना या निवन्ध जैसी कोई चीज भी लिख डालता। मिसाल के लिय, उसन एक वार वागोस्लोव्स्की को यह लिखा कि स्कूल के फौरन वाद युवाजन का उच्च शिक्षा सस्थाओ मे दाखिल करना ठीक नही है। "अगर हमारी न्यूस्याए और स्वेत्लानाए तीन चार-पाच साला के लिये परिचारिकाओ या नर्सा के रूप म काम कर लेती, तो य महारानिया समझ जाती कि डाक्टर वनना चाहती है या नहा या केवल सरकारी खर्च पर उच्च शिक्षा पाना चाहती है। क्या मेरी वात सही है?'

वोगोस्लोव्स्की हर पत्र का उत्तर दते वालोद्या के कुछ विचारा का विरोध करते, मगर उपदश न दत। वे 'न्यूस्याओ और स्वेत्लानाओ' क वारे म वालाद्या स सहमत नही थे। उनके मतानुसार इस मामल म सभी को एक लाठी स हाकना ठीक नही होगा प्रत्यक व्यक्ति पर

प्रलग से विचार करना चाहिये। "उदाहरण के लिए," चागास्लाव्स्की ने लिखा था, "प्राप तो शुरू से ही प्रच्छी तरह जानते-समझते थे कि प्रापकी मंज़िल कौन-सी है। ठीक है न? तो किसलिए प्रापने श्रेष्ठ वर्षों का परिचारक के रूप में नष्ट किया जाता? अपने बारे में भी मेरा ऐसा ही विचार है। पुरुष-नर्स के रूप में कई सालों तक मरे काम करने में भी कोई तुक नहीं थी।'

अपने काम के सम्बन्ध में कठिन चिन्तन, थकन, मयाकाव्स्की के शब्दों में "जी हुज़ूरी और खुशामद के बल पर जवें गर्म करने और मजे की ज़िन्दगी बितानेवाले" सभी लोगों पर अत्यधिक खीझ-झल्लाहट के दिनों में ही उसे अचानक वार्या का खत मिला। उसके अन्दाज़ बढ़िया और कुछ-कुछ सुगंधित कागज़, मोटे लिफ़ाफ़े और हल्के फुल्के मज़ाकोंवाले इस खत से वोलोद्या फ़ौरन ही बुरा मान गया। वार्या ने लिखा था कि जैसे-तैसे उसने घृणित भूतत्वीय विद्यालय की पढ़ाई समाप्त कर ली है, कि अब वह आज़ाद हो गया है, और यद्यपि उसके पिता रोदिम्रोन मेफ़ादियेविच उसका समर्थन नहीं कर रहे हैं, उसने थियेटर में अभिनेत्री बनने का पक्का और आख़िरी फ़ैसला कर लिया है। सम्भवतः पतझड़ में, मगर इसके बाद नहीं, और हो सकता है कि पहले ही, वह मास्को के एक थियेटर के अन्तर्गत विद्यालय में दाख़िल हो जायेगी। किस थियेटर के अन्तर्गत—वोलोद्या यह समझ न पाया। उसने यह भी लिखा था कि शायद बुढ़ापे में, जब वोलोद्या किसी चिकित्सालय में जानी-मानी हस्ती होगा, उनकी मुलाक़ात हो सकेगी। हमेशा ही तो वह विदेशों में घूमता नहीं रहेगा और आख़िर तो सभी बड़े-बड़े प्रादमी अपने देश लौट आते हैं। तब वह उस मामूली-सी अभिनेत्री को मास्को में कहीं ढूंढ ले और शायद तब उसके साथ अपने अटपट बचपन की यादें ताज़ा करने में वह कोई बुराई नहीं समझेगा।

वोलोद्या ने इस खत को दो बार पढ़ा और जवाब लिखने बैठ गया।

वोलोद्या ने इतना लम्बा, ऐसा निर्मम और दो टूक पत्र शायद अपने जीवन में कभी नहीं लिखा था। वह उतना निर्मम होना चाहता नहीं था, अपने आप ही ऐसा हो गया। उसने यहां तक कि अपने बारे में स्वप्न लिया और यह बताया कि उसे अब अन्य लोगों के लिए भलाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता था। उसने ऐसे ही लिखा था—

तुम नही, वल्कि तुम सव—तुम्हारे जस, यानी यग्रोनी, स्वेत्लाना, यूस्या, ग्रादि! तुम सवका यह ख्याल है कि म शामा को फ्राककाट पहनकर माज मनाता हू। ठीक है न? तो पढ लो कि कसी है यहा मरी जिन्दगी! यह गवजनित निममता थी। उसन काई शिकवा नही किया था सव से इसी तरह के काम की माग की थी, भगोडा पर झल्लाया विगडा था उनका मजाक उडाया था, उनके लिय वुर स बरे विशेषणा का उपयोग किया था। ग्रपनी भावी ग्रौजार दनवाली नस तूश की भी उसन चर्चा की ग्रौर लिखा कि वे सव मिलाकर भी उसकी जूती क वरावर नही है। वोलोद्या न उन ग्रापरेशना का भी जिक्र किया जो वह ग्रकेला करता था, वर्फीले तूफानो तथा शमाना, ५० दर्जे की भयानक ठण्ड ग्रौर टोड-जीन का भी उल्लेख किया। उसन उन दिनो की ग्रपनी वचेनी भी वयान की, जव उसके पास एक भी रोगी नहा ग्राता था ग्रौर लिखा कि इस चीज के वावजूद कि वाया ने उसक साथ **वेवफाई की है, वह पूरी तरह ग्रौर बेहद सुखी है।**

"तुमने मेरे साथ वेवफाई की है, मुझे इस शब्द का उपयाग करते हुए जरा भी झिझक महसूस नही हो रही," वोलोद्या न लिखा था। 'तुम यहा ग्राकर उस काम म मेरी सहायिका हो सकती थी, जिसमे वेशक तडक भडक नही है, मगर जो वहुत जरूरी है। तुम रोगियो का सवेदनहीन वनानवाली मेरी सहायिका, मेरी साथी ग्रौर पत्नी हा सकती थी मगर तुम ग्रव फला ग्रौर रगमच की वत्तियो के ग्रपने वेसिरपैर के सपने देख रही हो। मेरी वात पर यकीन करो, यह सव कुछ वेकार है ग्रसली चीज तो ग्रपने काय का वहुत ग्रच्छे ढग से करने का सुख ग्रौर सन्तोष है। क्या हो तुम ग्रव? भूगभशास्त्री? नही! ग्रभिनेत्री? वह ता विल्कुल नही! तुम चन से जी ग्रौर मजाक भी कसे कर सकती हो, सा भी युवा कम्युनिस्ट लीग की मदस्य होते हुए? यदि तुम ग्रपना रास्ता न जानकर ऐस ही भटक रही हो, तो युवा कम्युनिस्ट लीग से नाता तोड लो!'

न जाने कैसा था यह खत मगर उसन उसे दुवारा नही पढा। सच्च सुख के वारे मे सभी शब्दो के वावजूद ग्रव उसका जीवन ग्रौर काय—दोना ही काफी कठिन थे। व रात काफी लम्वी थी, जव वह वहुत ही देर-देर तक उस ग्रापरशन के वारे म साचता रहता

था, जो उसे अगले दिन करना होता था। उसके हाथों में सौंपी गई इन्सानी जिन्दगी की बहुत ही ज्यादा लगभग असह्य जिम्मेदारी महसूस करता था वह। बहुत ही गहन-गम्भीर चिन्तन करता था वह मानव के कर्तव्य और मनमाने ढंग से जान लेने तथा धरती पर अपने लक्ष्य तथा इस अधिकार के बारे में कि जब लाखों सेना मानवहृत्य के मार्चे पर धावा बोल रही थी, तो उसे 'चैन से बैठने' का क्या अधिकार है।

बोलोद्या ने दो बार वोगोस्लाव्स्की से यह लिखकर मांग की कि उसे मार्चे पर भेजा जाये, लेकिन दोनों बार ही बोगोस्लाव्स्की ने रुखाई से यह उत्तर दिया कि उसकी भावनाओं का अनुभव करते हुए भी वे यानी कि अस्पताल बन्द नहीं कर सकते।

वसन्त की शामों को बोलोद्या का मन उदास होने लगा। अचानक ही उसे थियेटर जाने की बेहद चाह महसूस हुई। सो भी सुन्दर, समारोही बड़े थियेटर में और अनिवार्य रूप से वार्या के साथ ही। वह चाहता था कि वार्या वहां पास में बैठी हुई अपनी वही उल्टी-सीधी बातें करती रहे और वह उससे कहे "बन्द करो ये फजूल की बातें", कि अस्पताल की गंध न हो, कि थियेटर के बाद बारिश के कारण बन डबरोंवाली चौड़ी, रोशन सड़क हो, डबरों में बिजली की दूधिया बत्तियों का प्रकाश प्रतिबिम्बित हो रहा हो कि रात को कुश के दरवाजा खटखटाने और यह कहने पर कि "बहुत बुरी हालत में एक रोगी को लाया गया है और वह अभी आयु से वंचित हो जायगा," उसे उछलकर बिस्तर से न उठना पड़े। बोलोद्या ने घर की इस याद इस तड़प पर भी काबू पा लिया, आसानी से तो नहीं, फिर भी हावी हो ही गया वह इस पर। उसने अपने आपको मजबूर किया कि उन चीजों के बारे में न सोचे, जिनके बारे में उसे सोचना नहीं चाहिये था।

पन्द्रहवा अध्याय

मदारी

मार्च म जब जाडे के प्रकोप म कुछ कमी आयी, दिन को सूरज चमकने लगा, और पहले जसा तन काटता हुआ पाला न रहा, तो खारा म वालोद्या का एक सहायक पहुचा। यह था फूले फूले हाठोवाला बहुत ही भला नौजवान, लेनिनग्राद का डाक्टर वास्या बेलाव। बोगास्लोव्स्की और टोड-जीन की तरह वह भी रास्ते म कुछ पिघली हुई नदी मे भीग आया था, और भूखे भेडिया के झुड भी उसने देखे थे। वह अच्छी सी बदूक, जिसके बारे म उसने कहा, "जानते हैं पापा की है?" ढेरो कारतूस, बारूद, छर्रे, बसिया-काटे, बारूद की डाटे और चिकित्सा-सम्बधी सदभ-पुस्तके भी अपने साथ लाया था। ब्राडी की बोतल, एक छविचित्र "कह सकते है कि बचपन की एक सहेली का" और धूम्रपान का पाइप "जिससे फालतू वक्त म मन बहलाया जा सकता है," भी उसके पास था। वास्या वोलोद्या का बडा आदर करता था, रोगिया के प्रति श्रद्धा का भाव रखता था और तूश के बारे मे उसने यह राय जाहिर की कि उसके रूप म वह "करोडा श्रेष्ठ लोगा की पलक खोलती राष्ट्रीय गरिमा" को देख पाता है। वास्या के साथ वोलोद्या सब कुछ देख जान चुके बजुग के धीर गम्भीर अन्दाज़ म बात करता। फूले फूल होठोवाले इस डाक्टर के साथ वह किसी दूसरे ढग से बात कर भी कसे सकता था। कारण कि वह अक्सर इस तरह के सवाल पूछता रहता था—

'ब्लादीमिर अफानास्येविच यह बताइय कि यहा शेर होते हैं?"

'मुझे तो उनके दशन करने का सौभाग्य प्राप्त नही हुआ।

"और मिक?"

"आप दादा अवाताई से इसके बारे म बात कीजिये।"

"और ज़हरीले साप? माफ कीजिय, अगर हाते ह, तो कौन स और आप उनसे कस निपटते है?"

"सापो के बारे म मैंने कभी कुछ सुना नही वास्या,' वालाद्या न जवाव दिया, मगर बोगोस्लोव्स्की के बात करने का ढग याद आने पर उसने अपनी भूल सुधारते हुए पूछा—"क्षमा कीजिये, वसीली "

"इवानाविच," वास्या ने झेपते हुए कहा।

"वसीली इवानोविच, सापा का जिक्र मैन यहा नही सुना और उनके ज़हर से मुये निपटना भी नही पडा।"

"वडे अफसोस की बात ह। मै तो 'जहरीले साप' नामक निवध खास तौर पर अपने साथ लाया था।'

"इस मामले म मैं आपकी कोई मदद नही कर सकता।"

"वसे यहा कुछ असाधारण बात भी हुई है?

"वसीली इवानोविच, यहा सभी कुछ असाधारण है।'

"नही, मेरा कुछ दूसरा ही मतलव है, व्लादीमिर अफानास्येविच। वात यह है कि मुझे युवाजन के एक अखवार ने सवाददाता नियुक्त किया है और अगर आपको कोई आपत्ति न होगी, तो मैं जव-तव कुछ टिप्पणिया या शब्द चित्र, आदि लिखकर हमारे दैनिक जीवन पर प्रकाश डालना पसन्द करूगा।"

"खुशी से प्रकाश डालिय। लेकिन अपने यहा के काम का हज करके नही, क्योकि यहा उसकी आपके लिये कुछ कमी नही हागी "

ये दोना एक ही कमर म रहते थे। शामो को वास्या या तो "अस्पताल का दनिक जीवन" नामक एक ही शब्द चित्र रचता रहता या फिर वहुत लम्वे-लम्वे खत लिखता। एक वार सयोग से ही एक कागज वालोद्या के हाथ लग गया, जिसम उसने पढा—' दभुत, कमाल का व्यक्ति है वह। उसका दृढ सकल्प और वैज्ञानिक दूरदर्शिता तथा अपन ध्येय के प्रति उसकी सैद्धान्तिक निष्ठा मुझे यह मानन का अधिकार देती है मरी वहुत दूर वैठी रानी, कि व्ला० अ० उस्तिमेन्का ही वह व्यक्ति है, जिस मुये अपना आदश मान लेना चाहिए "

इसके आगे वालोद्या न नही पढा। उस अचानक किसी कारण शम

महसूस हुई मानो वह वास्या को धोखा देता रहा हो। मगर ऐसा तो कुछ नहीं था।

अबाताई के साथ भी वास्या की दोस्ती हो गयी थी। बूढ़ा अब कुछ-कुछ रूसी भी बोल लेता था। तूश इन दोनों की मदद करती थी। वास्या बहुत देर देर तक दादा की सीधी-सादी, किन्तु बड़ी मजेदार कहानियां और किस्से सुनता तथा खारा के अस्पताल के बारे में अपनी भावी "पुस्तिका" के लिए कुछ लिख भी लेता।

काम तो पहले की भांति ही बहुत अधिक था, लेकिन वास्या बेलाव के आने से वोलोद्या की जिन्दगी काफी आसान हो गयी। वोलोद्या बड़ी खुशी से लगभग हर दिन वास्या को इस बारे में कहता। वास्या हास्यास्पद ढंग से शर्माकर लाल हो जाता, गुद्दी खुजलाता और कहता —

"क्या कह रहे हैं आप... तारीफ कर-करके मेरा दिमाग बिल्कुल खराब कर देंगे आप, व्लादीमिर अफ़ानास्येविच... अगर आप न होते..."

और वास्या पहले से भी ज्यादा मन लगाकर तथा अधिक उत्साह के साथ कहीं अधिक काम करता। तारीफ होने पर वह बेहतर हो जाता और बहुत मामूली तथा छोटी-सी आलोचना से भी काफी देर के लिए खिन्न तथा उदास हो जाता और उसकी हमेशा खुशी से चमकती, सजीव आंखों की ज्योति गायब हो जाती।

अब वोलोद्या उस्तिमेंको, बेशक थोड़ी देर के लिए ही सही, अपना अस्पताल छोड़कर कहीं जा सकता था। घोड़े पर सवार होकर वह उर्चीस्की खान क्षेत्र में गया और वहां उसने स्वस्थ तथा रोगी — सभी लोगों की जांच की। यह बहुत लम्बा, श्रम साध्य, किन्तु आवश्यक काम था। ओस्त्यून्ये के मछुओं और जीश्ची के अनेक खानाबदोशों के खेमों का भी वह चक्कर लगा आया। आम तौर पर मादी दाजी ही उसके साथ जाता और घोड़ों पर कुछ जरूरी औजार, दवाइयां, तम्बू और सफ़री बिस्तर लदे होते। ताइगा की लगभग अदृश्य पगडंडी या नीचे शोर मचाती ताम्रा-खाम्रो पहाड़ी नदी के किनारे सधे कदम रखते हुए घोड़े पर जाते समय जबकि ऊपर से वसन्तकालीन सूरज की तेज और सुहानी किरणें तन गर्माती होतीं, वोलोद्या का मन खिल उठता।

जब उसके पहुचने पर सभी खेमा म खलवली मच जाती और खुशी की लहर दौड जाती, जब बच्चा के दल स्वागत के लिए भागे आते जब उनके पीछे अपना महत्त्व समझनेवाले धीर गम्भीर वुजुग और दूसरे पुरुष इतमीनान से वाहर निकलते, जब नारिया चुककर अभिवादन करती और जब सभी गह स्वामी और गहिणिया उसे खाने या यो हा बातचीत के लिए आमन्त्रित करते, ता उसे बहुत अच्छा लगता। बालोद्या के लिए परम्परागत अभिवादन के ढग स मवेशिया के स्वास्थ्य क बारे म पूछना और आखो मे हास्यपूण चमक के साथ, क्याकि उन्ह ज्ञान था कि रूसी डाक्टर के पास मवशी नही है, गह स्वामिया का उसस ऐसा ही प्रश्न करना भी उसे सुखकर प्रतीत हाता।

हा, इन खेमो, झोपडा और मछुआ के बाडो म उसे जुआ, कुकरा और आतशक के रोगियो स वास्ता पडता। कभी-कभी ऐम भयानक दश्य, ऐसे घिनौने चित्र उसके सामन आते कि वालोद्या का भी जो ऐसी चीजा का आदी हो चुका था, वुरा हाल हो जाता। लेकिन अपने डाक्टरी चागे की आस्तीनें चढाकर और बडे-बडे हाथो का धोकर वह अपन वस भर की हर कोशिश करता और इसके बाद वास्या के नाम एक पुर्जा लिखकर दो घाडो के साथ विशेप ढग से वधे हुए स्ट्रेचर पर रोगी को अपन अस्पताल भेज देता। अस्पताल म हमेशा गुजाइश से ज्यादा रोगी रहते, मगर यह सही अथ म अस्पताल था। वहा स आम तौर पर लोग स्वस्थ होकर निकलते और एक खेम स दूसर खेमे तक दूर-दूर तक यह ख्याति फैलती जा रही थी कि खारा म एक असाधारण, एक अद्भुत डाक्टर रहता है। खानावदाश अब शमाना और लामाओ पर अधिकाधिक कम विश्वास करते थे और य लोग ताइगा तथा टुड्रा मे अधिकाधिक दूर भागते जा रहे थ। खारा से दूर वालोद्या, उसके अस्पताल, नये डाक्टर वास्या, तूश जो इन रूसिया के साथ काम करती थी, यहा तक कि दादा अबाताई के विरुद्ध भी उनका गुस्सा बढता और उग्र होता जा रहा था।

बस वोलाद्या का अभी तक तो इससे काई फक नही पड रहा था। लामा और शमान अब उसके रास्त म बाधा नही बनते थे और वह उन्ह बस ही भूल गया था, जसे मार्कलाव को। अपन काम म वह बहुत व्यस्त था, बहुत अधिक लगन से काम करता था और इसलिय

उसके पास इस बात की फुरसत नही थी कि उनके बारे म सोचे, जो फिलहाल उसके जीवन-पथ से लुप्त हो चुके है।

सितम्बर म, पतझर के शुरू मे एक दिन उस मुह अधेरे ही जगा दिया गया। एक लडका उसके पास भेजा गया था और उसन बिना सिलसिले के जो कुछ बताया, उससे वालोद्या इतना ही समझ पाया कि कोई बुरी बात हो गयी है और उसे कही दूरी पर कुछ लोगो की मदद करनी चाहिए। किन्तु घटना स्थल कितनी दूर है, बहुत परेशान और डरा सहमा हुआ लडका यह समझा नही पाया।

मादी दाजी ने घोडे तयार किये, उन पर सफरी सामान लाद दिया। सुबह बहुत ठडी थी, वालोद्या कापता हुआ जम्हाइया ले रहा था और किसी प्रकार भी पूरी तरह जाग नही पा रहा था। दोपहर होते होते यह बात साफ हुई कि सौ किलोमीटर से अधिक रास्ता तय करना है, किन्तु कितना अधिक, लडके को भी यह मालूम नही था। वोलोद्या को इतना भी पता चल गया कि एक नहा, तीन घायल हैं, कि पहला तो सम्भावत अब तक "आयु से वचित" हो चुका होगा, मगर बाकी दो शायद उनके पहुचने तक नही मरगे।

रास्ता बडा मुश्किल था, शुरू मे नदी के किनारे किनारे, जहा से वोलोद्या पहले भी जा चुका था, घोडे बढाते रहे, मगर बाद को फासला कम करने के लिये ताइगा म से हो लिये। टहनिया मुह पर लगती थी, कपडो को फाडती थी, घोडे हाफते थे और थकावट के कारण पहलुआ को झटका देकर आगे बढते थे। वालोद्या जिस जेम चू बस्ती म कभी जा चुका था, उसके वन प्रागन म कोई दसेक घुडसवारो से इनकी मुलाकात हुई। घोडो के अयालो और पूछो पर फीते लिपटे हुए थे। वोलोद्या समझ गया कि शमान घायलो को अपने फेर म डाले हुए है। दाजी ने एक बूढे से, जो वोलोद्या को शत्रुतापूर्ण दृष्टि से देख रहा था, उत्तेजित-सा होकर बातचीत की। बातचीत से यह स्पष्ट हुआ कि खारा से भागनेवाला शमान मागू घायलो की देखभाल कर रहा है। लडका अपनी इच्छा से डाक्टर को बुलाने भाग गया था और बूढा अब उसे कडी सजा देनेवाला था।

झुटपुटा हो गया था जब दाजी और उस लडके के साथ, जिसका नाम लाम्जी था, वालोद्या कोलाहलपूर्ण तामा-हामा नदी के निकट चीड के

वक्षा से ढकी एक ऊची पहाडी पर पहुचा। पहाडी की निर्वात दिशा मे छ अलाव जल रहे थे। झुटपुटे और धुआ उगलती लपटो की पष्ठभूमि म लोगा की आकृतिया वहुत वडी वडी लग रही थी। काई पचास घुडसवार रास्ता रोककर इन तीनो के निकट आन की राह देखने लगे। इन सभी घुडसवारा, यहा तक कि छोकरा के पास भी वन्दूके थी। दाजी का ख्याल था कि वे सभी दूध का अरक पीकर नशे मे धुत्त है। उसन सलाह दी कि अभी, जव तक कि जान सलामत है, उन्ह यहा से लौट जाना चाहिए।

"ये लोग तो वेहद पिये हुए ह, हा," मादी दाजी ने कहा। "वहुत वुरा होगा, वहुत ही वुरा।"

वोलोद्या घाडे स नीचे उतरा, लगाम उसन दाजी की आर फक दी और दढता स कदम रखता हुआ सीधा घुडसवारो की तरफ चल दिया। उन्हाने वोलाद्या को रास्ता नही दिया और उनकी शिकारियोवाली वन्दूका की नलिया माना वालोद्या के चेहरे का वहकी-वहकी सी ताक रही थी। दिल म वेहद डर महसूस करते और यह समझते हुए कि उसक लिय दूसरा कोई रास्ता नही हो सकता, उसन एक घाडे की थूथनी अपनी तरफ से हटाई, किसी की रकाव को कधे से दवाया, कासा और पहाडी पर चढन लगा। वोलोद्या के पीछे पीछे, कुछ-कुछ उसका बगल म होता, डर से धीरे धीरे चीखता और यथासम्भव डाक्टर के निकट रहता हुआ लाम्जी भी आगे वढ गया। यह लाम्जी उसी का वटा था, जो सम्भवत अव तक अपनी "आयु स वचित" हो चुका था।

धुआ उगलत अलावा के वीच दो व्यक्ति लेटे थ और वगला म द्विशाखी टेका के सहारे एक आदमी वठा हुआ था। उसकी यातना और पीडाग्रस्त आखे कही दूर देख रही थी। सम्भवत वह अव कुछ भी नही देख पा रहा था, क्याकि अपने वेटे को भी नही पहचान सका। लाम्जी के वाप के करीव शमान ओगू वैठा था। वोलाद्या की समझ म जस ही यह वात आई कि यहा क्या हा रहा है, वैस ही उसका सारा डर आन की आन म गायव हो गया।

मौत की गोद मे जाते हुए व्यक्ति के निकट वह सभी कुछ रखा था, जिसकी उसे उस दूरस्थ जीवन म या जस कि दाजी कहना पसन्द

करता था अगले जन्म म जरूरत हो सकती थी। यहा तम्बाकू भी रखा था दियासलाई की डिब्बी भी, दूध का ग्ररक भी, मास, नये बूटा का जोडा और चाबुक भी। इस, अभी जीवित व्यक्ति को दूसरी दुनिया म विदा किया जा रहा था और वोलोद्या न यहा आकर, उस मामले म दखल देकर मौत के उस कानून का उल्लघन कर दिया था जिसकी शमान आगू घोषणा कर चुका था। शमान की हैसियत के मुताबिक घुडसवार मौत के कानून की रक्षा कर रह थे। अगर लाम्ज़ो का बाप जिन्दा रह जाता है, तो यह शमान ओगू की मौत होगी, क्योकि तब शमान के रूप म उसका अन्त हो जायगा।

"तुम्हारे लिये सब कुछ तयार है, सब कुछ अच्छी तरह स तयार कर दिया गया है, कुछ भी तो नहीं भूले। जाओ, अब तुम जाओ, अब तुम्हारी और आयु नही रही," शमान ओगू कह रहा था। उसने वोलोद्या को अभी तक न तो देखा था और लपटो म शाखाओ के चिटकने की आवाज़ के कारण न ही उसके परो की आहट सुनी थी। "जाओ, देर नही लगाओ "

"दफा हो यहा से, मदारी!" वोलोद्या चिल्लाया।

आगू ने धीरे स घूमकर देखा और वोलोद्या के बूटा पर नज़र पडते ही उठकर खडा हो गया। वह खडा हो गया, मगर यह वही ओगू नही था, जो खारा म वोलोद्या से कतराता, कन्नी काटता था। यह दूसरा ही आगू था, ताइगा का काफी बेहया स्वामी, सो भी शराब पीकर मद मस्त और हाथ म बडा-सा छुरा लिये, जिससे वह कुछ ही क्षण पहले लाम्ज़ो के बाप की लम्बी यात्रा के लिये मास काटता रहा था। अब वह इस छुरे स हमला करने के लिये तयार था। छुरे का नुकीला और तेज़ भाग ऊपर को उठा हुआ था। ओगू उसे घृणित रूसी डाक्टर के पेट म घोपकर और फिर एक बार घुमाकर उसे मार डालना चाहता था। आगू लोगो का इलाज करना तो नही, पर उनकी जान लेना तो जरूर जानता था।

अलावा की रोशनी मे इन दोनो के चेहरे चमक रहे थे और कुछ क्षणो तक ये ऐसे ही एक दूसरे के सामने खडे रहे। शमान के बाये हाथ म उसकी खजडी कुछ कुछ टनटना रही थी। उसकी ऊची टोपी पर इन्सान से तनिक मिलती-जुलती एक भयानक-सी सूरत कढी हुई थी।

शमान ग्रोगू मौत का कानून लागू करने के लिये यहा उपस्थित था ग्रौर वह मौत की रक्षा कर रहा था। किन्तु वोलाद्या यहा इसलिय ग्राया था कि दम तोडते व्यक्ति के प्राण वापस लौटाये। वह जीवन की रक्षा कर रहा था ग्रौर सो भी ग्रचानक ग्रपने वारे म पूरी तरह भूलकर। वोलाद्या ने पजे के ऊपर शमान का हाथ पकडकर दूसरे हाथ से ऐसे उसकी क्लाई दवाई कि इस मदारी के हाथ से छुरा नीचे गिर गया। शमान कुछ चीखता चिल्लाता ग्रौर खजडी पीटता ग्रलावा के पीछे ग्रधेर म गायव हो गया।

वोलोद्या ग्रव लाम्ज्री के पिता के ऊपर चुका।

मौत निश्चय ही वहुत निकट थी, मगर उससे ग्रभी लाहा लिया जा सकता था।

ग्रपना पडवाला कोट उतारकर वोलाद्या काम म जुट गया। ग्रलावो क पास लेटे वाकी दो शिकारी कराहत हुए ग्रौर रुक रुककर उसे सारी घटना सुनाने लगे। वह उनकी वाता की तरफ कोई खास ध्यान नही दे रहा था, फिर भी टूटे-टूटे ग्रौर ग्रधूरे वाक्य उसके काना म पड ही रहे थे। उसन सुना कि कैसे उन्हान खूव ग्रच्छा शिकार किया, कसे उनके कारतूस चुक गये, कसे शिकारियो का वुरा चाहनवाले ताइगा के भूत प्रेत जूम्ब्र ग्रौर क्रूर लाम्ज्री के वाप को, जा सवस ग्रच्छा शिकारी था, रास्ता काटने म कामयाव हा गये। हुग्रा यह कि कारतूस फट गया, उस वक्त फटा, जव लाम्ज्री का वाप कारतूस भर रहा था। वे सभी सटे वठे थे, किन्तु लाम्ज्री का वाप कारतूस पर झुका हुग्रा था, कारतूस का पूरा मसाला ही उसकी छाती म जा लगा।

'सावधान।" लाम्ज्री खरगाश की सी पतली, वारीक ग्रावाज म चीखा ग्रौर उसी क्षण वोलाद्या को ग्रपन पीछे वन्दूक का धाडा दगन की ग्रावाज सुनाई दी।

वोलाद्या मुडा।

एकदम जर्द चेहरा ग्रौर हाथ मे दुनाली वन्दूक लिय ग्रागू काई दसक कदम की दूरी पर खडा था। उसन दाना घोडे दवा दिय थे, मगर लाम्ज्री के वाप की दुनाली वन्दूक भरी हुई नही थी। सिफ इसीलिये वोलोद्या की "ग्रायु सुरक्षित" रह गयी—ताइगा के लाग पक्के निशानवाज हाते है ग्रौर ग्रोगू का निशाना विल्कुल ग्रचूक सावित हाता।

वालोद्या ने शमान की तरफ कदम बढाना चाहा, मगर उसी क्षण ग्रोगू ने वन्दूक नीचे फेंक दी और हाथा पैरा के बल उस्तिमेन्का की तरफ रेगने लगा। वह रेग रहा था, सिर झुका रहा था, रगता था और ज़मीन पर अपना मुह टेकता था। अब वह उस आदमी से अपनी प्राण रक्षा चाहता था, जिसकी उसने हत्या करनी चाही थी। केवल वोलोद्या ही उसकी जान बचा सकता था, उस ग्रागू की, जिसन मौत के कानून का उल्लघन करके उसकी पीठ को गालिया का निशाना बनाना चाहा था। वोलोद्या का बूट पकडकर ग्रोगू ने उसके साथ अपना गाल सटा दिया और रोते-कलपते, चीखते तथा आह भरते हुए गिडगिडाने लगा

"इस बन्दूक को उठा लो, सुनते हो?" वोलोद्या ने चिल्लाकर कहा। 'इसम गोलिया भरकर मेरी पीठ के पीछे खडे हो जाओ, क्योंकि मुझ काम करना है। तुम ही इसे उठा लो, लाम्जी। बहुत सम्भव है कि अभी तुम्हारा बाप अपनी आयु से वचित न होने पाये। लकिन अगर मरी पीठ पर गोलिया चलायी जायेंगी, ता म इलाज कस करूगा। और यह शमान यहा से दफा हा जाय!"

बहुत ही गुस्से मे आया हुआ था वोलोद्या और न जान क्या, उसे फिर अचानक न्यूस्या योल्किना और स्वेतलाना की याद आ गयी।

लडके लाम्जो ने बन्दूक म दो कारतूस भरे और वोलोद्या की पीठ के पास खडा हो गया। और एक के बाद एक सभी घुडसवार अपन घाडा से नीच उतरकर उस आदमी को अच्छी तरह देख पान के लिय निकट आ गये, जिसके बारे म ग्रागू न यह कहा था कि वह इलाज करना नही, मारना जानता है, उसन दा आदमिया की अपन अस्पताल म जान ल ली और फिर उनकी लाशा का चीर फाडकर उनकी दुर्गति भी की ताकि शिकारिया क अच्छे और मजबूत दिला का अपन पास सुरक्षित रख सके।

किन्तु उस्तिमन्का का अब किसी की भी सुध नहा थी। बुझत अलावा की अस्थिर लाल रोशनी म वह उस घाव का दख रहा था, जिमस पीप की दुगध आन लगी थी। घाव उरास्थि (स्टनम) क दायें सिर पर था, उसके किनार बेजान हा चुके थ और गाली निकलन का छेद वालाद्या का नजर नहा आ रहा था।

"कितन दिना से वह इन कम्वख्त टेका के सहार पडा हुआ है ?" वालाद्या ने पूछा।

"पाच दिन से !" मादी दाज़ी ने फौरन जवाव दिया। ' हा, पाचवा दिन है ! ये लाग कुछ नही समझत, य वुद्ध हं, मूख है "

घाव की जाच जारी रखते हुए वालाद्या न दाज़ी को ग्राज़ार लान, ग्रलावा म ढेर सारी टहनिया डालन ग्रार ग्रापरशन क लिय हाथ धान का पानी तैयार करन का ग्रादेश दिया।

शमान ग्रागू न भेडिये की राल ग्रौर गिलहरी की पिघली चर्वी म भीगी हुई लामडी की तथाकथित स्वास्थ्यप्रद फर के टुकडे घाव म भर दिय थ। फौरन ग्रॉपरेशन करन की जरूरत थी मगर लाम्जी क पिता को ग्रगर सीधे लटाया जाता था, ता उस सास लने म वडी मुश्किल हाती थी। उसे ग्रचेतन करन के लिय इजेक्शन दनवाला भी काइ नहा था।

वोलोद्या न स्पिरिट का ग्राधा मग भरा, उसम पानी मिलाया ग्रौर लाम्ज़ी के पिता के सूखे हाठो के पास ल जाकर ऊची तथा ज़ारदार ग्रावाज़ म वाला —

"इस पिया, मेरे दास्त ! तुम जिन्दा हा, तुम ग्रायु स वचित नही हुए। एक ही सास म पी जाग्रा ग्रार तुम्हारी तवीयत वेहतर हा जायेगी। सुनत हो, मेरे दोस्त ! रोग से हार नही माना, उसे ग्रपन पर हावी नही हाने दो। जल्द ही तुम फिर से शिकार का जाग्रागे।"

ग्रतिशय पीडा से परिपूण ग्राख धीरे स खुली।

"पियो !" उस्तिमेको ने ग्रादश दिया।

लाम्ज़ी के पिता ने जव राहत की सास ली, ता वोलाद्या न उसे मार्फिया की सूई लगाई।

धुग्रा छोडत ग्रौर ज़ार से दहक्त ग्रलावा की रोशनी म वह घाव की जाच करने लगा। धीरे धीर रोते ग्रौर चू चू करते ग्रागू के सामन दावार-स वने ग्रौर डाक्टर का घेर शिकारी खडे थ। लाम्ज़ी के वाप का खरखराती ग्रावाज़ के साथ सास ग्राती थी ग्रौर लडका वोलाद्या क कधे के पास खडा काप तथा सिसक रहा था। चीड वक्षा की फुनगिया म हवा चीख रही थी ग्रौर काफ़ी दूर नीचे ताग्रा-हाम्रा नदी का चचल पानी शार मचा रहा था। दाना ग्रन्य घायल उठकर वठ

गये थे और अपनी पीडा को भूलकर वालोद्या के हाथा, चमकती चिमटो और रूसी डाक्टर के खीझ तथा गुस्स से भरे और तनावपूण चेहरे का दख रहे थे।

घाव कोई ग्यारह सटीमीटर गहरा था। उगली स घाव की जाच करने पर वोलोद्या ने उसके तल म मोटे मोटे छर्रे, तथाकथित स्वास्थ्यप्रद फर और नमदे की डाट को अनुभव किया। उसने यह सभी कुछ बाहर निकाल दिया।

क्षण भर सास लेकर वोलोद्या ने घाव पर रक्तस्राव रोकने के अवरोध, टैम्पन के साथ गीली पट्टी रखी और उठकर खडा हो गया। लाम्जी के पिता की सास अब अधिक समगति से चल रही थी, नब्ज अभी धीमी हाते हुए भी पहले से कही वेहतर थी। दूसरे दोना शिकारियो पर भी कम से कम एक घण्टा तो लग ही गया। लानत के मारे हुए शमान ग्रोगू ने उनका भी उल्टा सीधा इलाज कर डाला था। इसके अलावा वे जले हुए भी थे।

ज़ोर से धकधक करते दिल, टीसती बगल और दुखती टागा के साथ वोलोद्या उठा। वडे वडे अलाव पहले की तरह ही धुआ उगलते हुए खूब दहक रहे थे। हिरन की खाल के छोटे ओवरकोट पहने जतूनी रग की त्वचा और नगे सिरोवाले शिकारी अभी भी दीवार वनाये खडे थे। उन्हाने यह आशा भी नही की थी कि डाक्टर अचानक उनकी ओर घूम जायेगा।

"तो वोलो?" वोलोद्या न उस भाषा मे पूछा, जा वे समझत थे। "वताओ तो? क्यो मेरे यहा आने पर शत्रुता दिखायी थी तुमन? क्या बुराई की है मैंने तुम लोगा के साथ? तुम्हारे इस शमान ग्रोगू ने तो मुझे गोली का निशाना वना देना चाहा था और तुम लोग खडे दखते रहे, तुमम स कोई हिला डुला तक भी नही।'

"हमारी हिम्मत नही हुई!" किसी न अपनी भद्दी सी आवाज म जवाव दिया। "तव हम शमान से डरत थे। वह हम सभी को मटियामट कर सकता था।"

'कुछ भी तो नही कर सकता वह!" उस्तिमन्को न कहा। "वह बुज़दिल उल्लू है! वह तुम्हारी तरह से काम नही करता सिफ तुम्हे लूटता है और तुम उससे डरत हो।'

"नही, अब नही डरते," दूसरा शिकारी बोला। "अब हम उसे मार डालेगे।"

"नही, यह भी नही होगा!" वोलोद्या न चिल्लाकर कहा। "उसकी हत्या नही होगी, सुना तुमने? मै तुम्ह हरगिज ऐसा नहा करने दूगा।"

सुवह का तीनो घायलो का रात के दौरान किसी कैम्प से वहाकर लाय गय वेडे पर पहुचाया गया। शमान ओगू तव तक वोलोद्या के पाव पकडे रहा, जव तक उसन उसे भी वेडे पर जाने के लिए नही कह दिया। लेकिन इस शत पर कि वेडे पर सवार होने के पहले वह अपनी ऊची टापी, खजडी और जीवित पत्थरावाला डडा ताम्रा हाम्रो नदी म फेक द। शमान ऊचे ऊचे रान लगा, तो शिकारी खिलखिलाकर हस पडे। वालाद्या वेडे पर खडा था, उसका चेहरा उतरा था, दाढी वढी हुई थी और हाठ भिचे हुए थे।

"मुझे माफ कर दा!" ओगू चिल्लाया।

"तुम मरे साथ वैसे ही चलागे, जस मैंन कहा है या फिर विल्कुल चलागे ही नही," वालोद्या ने कहा। "समझ गय, ओगू?"

और ग्रागू ने कापते तथा सिसकते हुए अपनी शमानी गरिमा के सभी चिह्न ताम्रा हाम्रो नदी के जारदार पानी म फेक दिये। वेशक यह वडी अजीव सी वात है, मगर उसे अपनी टापी, खजडी और डडे म विश्वास और ग्रास्था थी। जव टापी पानी म इधर उधर डोलने लगी, तो उसने हमेशा के लिए आत्मसमपण कर दिया। हा, वालाद्या स इतना पूछा जरूर-

"अव मैं क्या करूगा? अपना पट वैस भरूगा?"

'तुम अस्पताल मे आकर लकडिया चारा करोगे। इसके वदले म तुम्ह खाने-पीने को काफी मिल जाया करेगा।"

"लेकिन मैं लकडी चीरना नही जानता!" ग्रागू वुरा मान गया।

वालाद्या न कधे झटक दिय। रास्ते म उसन किसी स भी काई वातचीत नही की। मन म वडी कटुता और वडी कसक-सी अनुभव हा रही थी। अपनी पीठ के पीछे दुनाली वन्दूक के घाडा की खटक ग्रनक साला तक उसके मानस-पट पर अकित होकर रह गयी। इस इलाके म सवस पहल वसनेवाला वूढा हीजिक वेडे को चला रहा था,

घायल आपस मे धीरे धीरे बातचीत करते और यह देखते थे कि बेडे के निकट आने के कारण कैसे बतखें और कलहस डर जाते थे, तट पर से नीतर दूर भाग जाते थे। शाम होते होते दहाडते हुए जल प्रपातों का शोर सुनाई देने लगा। लाम्जी के पिता, शमाना के सभी चिह्ला से मुक्त अोगू और दूसरे दो घायल पहले तो ऊपर चढे, जहा एक तरह का प्लेटफार्म-सा बना हुआ था और फिर केवल लाम्जी के पिता को वहा छोडकर जल प्रपात को अपनी भेट—पैसे, रस्क और नमक—देने के लिए नीचे उतर आये।

"सब लोग सम्भले रहे!" हीजिक ने आदेश दिया।

बेडा नीचे को बेहद झुक गया, उसका अग्रभाग पानी मे डूब गया और पृष्ठभाग पत्थरो से टकराता हुआ ऊपर को उठ गया। दहाडती, शोर मचाती हुई एक जोरदार फेनिल लहर ने बेडे को ऊपर उठा दिया वह दायें-बायें घूमा और जल प्रपात से आगे निकल गया। लाम्जी के पिता ने सिर्फ इतना ही पूछा कि उसकी भेट—बन्दूक की बासे की पुरानी गोली भी फेंक दी गयी या नही। इसके बाद गहरी सास लेकर उसने बोलोद्या को सम्बोधित किया—

"मुझे स्वस्थ कर दोगे न, डाक्टर?"

बोलोद्या आह भरकर मुस्करा दिया—क्या वह ऐसे लोगो पर क्रुद्ध हो सकता है, जो जल प्रपात मे भेटे फेंकते हैं?

नवम्बर मे बोलोद्या ने लाम्जी के पिता की छाती की वह हड्डी निकाल दी, जिसके नीचे धातु का बटन और दो छर्रे दबकर रह गये थे। नवम्बर मे ही मार्केलोव की बेटी ने अस्पताल मे आकर बोलोद्या से यह अनुरोध किया कि वह उसके बाप को देखने चले, जो सख्त बीमार था।

'क्या हुआ है उन्हे?" बोलोद्या ने पूछा।

'वे भला बतायेंगे?' पलागेया ने उदासी से उत्तर दिया। 'बस, चुपचाप लेटे रहते हैं। केवल पानी पीते हैं। सूखकर काटा हो गये हैं, खाना तो सात दिन से नहीं।"

"उन्होंने मुझे बुलवाया है या आप अपनी मर्जी से ही लेने आ रही हैं?'

"मै, अपनी मर्जी से!" लडकी ने झेपते हुए स्वीकार किया।

जीवन का उद्देश्य क्या है?

शाम होने को थी, जब टार्च, स्टेथॉस्कोप और ल्यूमीनाल की कुछ गोलियां जेब में डालकर वोलोद्या मार्केलोव के घर की तरफ चल दिया। जंजीरों से बंधे हुए गुस्सैल कुत्ते भौंकने लगे, डरा-सहमा हुआ कारिन्दा लपककर बाहर आया और बड़े दयनीय स्वर में बोला–

'कृपया पधारिये! आपकी प्रतीक्षा हो रही है! पेलागेया यगोरोव्ना आपकी बड़ी राह देख रही है, पधारिये

प्रवेश-कक्ष में सरो के पत्तों, लावान और कुछ अन्य मधुर तथा रुचिकर चीजों की अपरिचित-सी गंध आ रही थी। पेलागेया न जाने क्यों, बनी-ठनी थी, उसकी रेशमी पोशाक सरसरा रही थी, उसकी अंगूठियां और कीमती ब्रोच जगमगा रहे थे। उसने फुसफुसाते हुए वोलोद्या से कहा–

"आप खुद ही उनके पास चले जायेंगे न? कृपया, मुझ पर यह बड़ा एहसान करें। ऐसे जाहिर कीजिये कि इधर से गुजर रहे थे और इसलिए यों ही चले आये। पास से गुजरते हुए, किसी जरूरत के बिना या यह कहिये कि अपना आदर भाव व्यक्त करने के लिए चले आये। बहुत अर्से से उन्हें आपका इन्तजार है, अक्सर आपका जिक्र करते हैं, लेकिन, माफ कीजिये, डाक्टर के नाते नहीं, ऐसे ही याद किया करते हैं "

वोलोद्या ने कंधे झटके, दरवाजे पर दस्तक दी और जवाब न मिलने पर खुद ही भीतर चला गया। नीची छत वाले, बहुत बड़े और खूब तपे हुए कमरे में लम्बा, काला फ्राक कोट पहने, पीठ के पीछे हाथ बांधे, सिर झुकाये, अपनी सफेद दाढ़ी को बकरे की भांति हिलाते-झटकते हुए मार्केलोव इधर उधर आ जा रहा था। वह जब-तब गहरी सांस लेता और धीरे-धीरे कुछ बड़बड़ाता। वोलोद्या की तरफ उसका फौरन ध्यान नहीं गया और देखने पर हैरान हुए बिना इतना ही पूछा–

"आ-प? कैसे मुझ पर यह मेहरबानी की, श्रीमान-साथी डाक्टर?"

वोलोद्या को मार्केलोव के स्वर में कुछ उपहास, कुछ बनावट प्रतीत हुई। उसकी मनहूस आंखों में पहले जैसी गुस्ताखी तो थी, लेकिन

साथ ही उनमे कुछ चिन्ता, सावधानी और घबराहट भी झलक रही थी।

"किसी काम से आये हैं या योही पडोसी होने के नाते? किसलिए जरूरत पड गयी आपको मार्केलोव की?"

"बस, इधर से गुजर रहा था, चला आया," मार्केलोव को बहुत ध्यान से देखते हुए वोलोद्या ने शान्त भाव से उत्तर दिया। "मेरे ख्याल म एक साल हो गया है हम मिले हुए। सोचा, चलकर देखू, कही आप बीमार तो नही पड गये "

मार्केलोव व्यग्यपूवक मुस्कराया—

"मार्केलोव का इलाज करना चाहते हो? तुम जसे छोकरे को अभी यह इज्जत नसीब नही होगी। मार्केलोव तुम सबके मर जाने पर भी जिन्दा रहेगा। हा, तुम सबके!"

वोलोद्या चुप रहा। बूढे ने वोलोद्या के ठण्ड से कुछ खुरदरे हुए, मजबूत और हठीली ठोडीवाले चेहरे को बहुत ध्यान और बचैनी से देखा और उससे आखे मिलानी चाही।

"इधर से गुजर रहा था, चला आया? मुझसे बनते हो, डाक्टर, चालाकी करते हो? और कोई नही, पेलागेया बुला लाई है, ठीक है न? चुप क्यो हो? वसे मैं खुश हू कि तुम आ गये, कुछ देर वठेगे, कुछ पियेगे। मेरे यहा बहुत ही बढिया मारसाला शराब है। लेकिन मारसाला तो उनके लिए ठीक है, जिन्हे मिठास पसन्द है। हम-तुम तो ब्राडी पियेंगे। पियोगे न मेरे साथ?"

"पिऊगा।'

'लेकिन मैं तो तुम्हारा वग शत्रु और शोपक हू? ऐसे घूर क्या रहे हो? मैं सब कुछ जानता हू, मेरे भाई, सब कुछ जानता हू। अब मैं तुम लोगो के दो अखबार पढता हू—मगवाता हू।'

मार्केलोव ने कमरे म कुछ कदम बढाये, छल्लो के सहारे लटके हुए नील रेशमी पर्दे को हटाया और वहा मद्धिम रोशनी वाले कोने म पूजाघर और डेस्क दिखाई दिया। डेस्क के करीब ही बढिया चमडे की जिल्दवाली पुरानी, धार्मिक पुस्तके बेतरतीब पडी थी और वही नयी पत्रिकाए तथा अखबारो का एक ढेर भी नजर आ रहा था। शीघ्र स कागजो को जोर से सरसराते हुए मार्केलोव डेस्क स "प्राव्दा'

ग्रौर "इज़्वेस्तिया" के कुछ ग्रक उठा लाया ग्रौर वालोद्या को दिखात हुए वोला –

"यह दखो, इ ह् पढता हू। लेकिन इसमे खास वात क्या है? तुम लोग सामूहिक फार्मा, योजना, पचवर्षीय याजना, राजकीय फार्मों के वारे मे ग्रौर यह लिखते हो कि तरह-तरह के महनतकशा का सफलताग्रा के लिए पदक मिलते है। लेकिन मै कसे जिऊ? इ टरनशनल के साथ जनगण उठ खडे हागे? यह भी जानता हू! कितु मे कहा जाऊ? ग्रधकार के राज्य मे, भेडा को मूडने के लिए फिर से लौट जाऊ?"

"कैसी भेडे?" वालोद्या समझ नही पाया।

"यह रूपक है, धम के ग्राधार-स्तम्भो से लिया गया है। इमका मतलव है कि स्थानीय लागो को ऐसे निचोडा कि उनका सत निकल ग्राय। वे हमारे पालक है ग्रौर हम उनके कल्याणकर्त्ता। समझ गये न?"

मार्केलाव की ग्राखा म क्रोध भी था ग्रौर व्यथा भी, सफेद दाढी के वीच उसका लाल मुह टेढा-सा हो गया था ग्रौर चेहरा मानो पीडा स काप रहा था। ग्रखवार फेककर वह दरवाज़े की तरफ गया, पेलागेया को पुकारा, ध्यान से उसे देखा ग्रौर व्यग्यपूवक मुस्कराकर वाला –

"कस सज धज गयी है, भैस। हर दिन तो ग दी-म दी घूमती रहती है, मगर ग्राज रशम ग्रौर सोन का ठाठ है। किसके लिए? डाक्टर के लिए? वह तो तुम्ह ग्रपनी वीवी वनान से रहा, उसे काई दिलचस्पी नहा है तुमम। वहा विदेश म कामरेड ढग की नारी उसकी राह देख रही है। उसे बीते युग के ग्रवशेष की क्या ज़रूरत है?"

पेलागेया का चेहरा शम स धीरे धीरे लाल हाता गया, सिर ग्रधिकाधिक झुकता गया ग्रौर वह झेंप से जल्दी-जल्दी ग्रपनी शाल का पल्लू खाचने लगी।

"'मार्टेल' ब्राडी की वोतल ले ग्रा – वहा है, यह ल चावी! मगर ताला वन्द करना नही भूल जाना, नहीं तो तुम्हारी ग्रम्मा जान, वहा पूरी तरह सफाया कर डालेगी," मार्केलाव फिर स वालाद्या की तरफ देखकर व्यग्यपूवक मुस्कराया। "इसकी मा हमारे यहा नगेबाज़ो

का अवशेष है, जिंदगी को रंगीन बनाने के लिए बोतल चढ़ाती रहती हैं वह। अचारी खीरे भी लेती आना। कुछ लोग ब्रांडी के साथ नीबू का उपयोग करते हैं मगर हम अपनी बेवकूफी की वजह से अचारी खीरे खाते हैं। और हां, हमारे इस विद्वान मेहमान, साथी डाक्टर के लिए चर्बीवाला और मजेदार मांस भी लाना नहीं भूलना। देखती हो न कैसा दुबला-पतला है यह! जल्दी जल्दी कदम बढ़ाओ, बहुत ज्यादा चर्बी चढ़ा ली है तुमने दूसरों के शोषण का मांस खा-खाकर, सारी दुनिया को लूट-लूटकर," उन तिरछी आंखों से, जिनमें परेशानी और व्यथा थी, फिर बोलोद्या की तरफ देखते हुए उसने कहा। "जाओ, झटपट!"

बेटी पुराने ढंग के अनुसार सिर झुकाकर दबे पांवों चली गयी। मार्क्लोव ने पुरानी, खस्ताहाल आरामकुर्सी के पीछे से, जो फटे पुराने कालीन से ढकी हुई थी, एक शुरू की हुई शराब की बोतल निकाली, बड़ी अधीरता से उसने एक घूंट गले के नीचे उतारा और पूछा—

"यह बताओ कि कैसे जिऊंगा अब मैं? मेरे दादा-परदादा ज़ार पिता के अत्याचार से तंग होकर यहां आ बसे, उन्होंने मुझे अपने ढंग से जीना सिखाया। उन्होंने मुझसे पुरानी रूसी में पूछा—'कहो भैया, कौन ऐसा होता, जो मरकर धरती में नहीं सड़ता?' मैंने बेधड़क जवाब दिया—'मां मरियम, वह मरी, मगर धरती में नहीं सड़ी, जीवित ही स्वर्ग में ले जायी गयी।' एक और भी अक्ल चकरानेवाली बात पूछी गयी—'नौजवान, यह बताओ कि हज़रत नूह के जहाज़ में कौन-सा जीव नहीं था?' मैंने जवाब दिया—'मछली, क्योंकि वह तो पानी में भी रहकर जी सकती है।' कुछ बुरे तो नहीं थे न ये सबक? मुझे यह भी सिखाया गया कि स्थानीय लोगों की तुलना में मुझे अपने को ऊंचा रखना चाहिए। कारण कि यहां आनेवाला किसी दूसरी जाति का विदेशी अपने को मुझसे ऊंचा उठा सकता है और यहां के लोगों को मुझसे ज्यादा अच्छी तरह निचोड़ सकता है। मेरे मां-बाप ने मुझे अपने दांत पैने करने की भी शिक्षा दी क्योंकि एक आदमी दूसरे के लिए भेड़िया है। लेकिन पुराने धर्म की यहां आनेवाली प्रचारिका जिन धार्मिक गुणों की चर्चा करती रहती थी, वे थे—नम्रता, बुद्धिमत्ता, आत्म संयम, दया, भ्रातृत्व, मेल मिलाप

ग्रोर प्यार। ग्रब लगाग्रा जोर यह जानन के लिए कि धन दाता ग्रौर भ्रातत्व के बीच कस ताल-माल विठाया जाय? दया ग्रौर इस हुनर का वस एक साथ निभाया जाय कि यहा के लागा के लिए ऐसी वादका तयार हो, जा हमार लिए कौडिया के मोल पडे ग्रौर इनकी ग्रक्ल ठिकान न रह? प्यार ग्रौर मा-बाप की इस सीख पर कम एकसाथ ग्रमल किया जाय कि सवल की फर का कुछ खाली ग्राभा दो धुग्रा दो, ताकि उसका तिगुना मूल्य मिल सके? ग्रात्म सयम ग्रौर समझ बूझ के साथ हम यह भी सिखाया गया कि ग्रगर कोई विधर्मा कोई काफिर तुम्हार लिए काटा वन जाय, ता किसी घने जगल म उसका ऐसे काम तमाम कर डाला कि किसी का काना कान खवर न हा। हा ऐसा हुग्रा भी। हम सिखाया गया कि चूकि हम पुरान सच्चे धम के ग्रनुयायी ह, इसलिए जा भी चाह, कर सक्त है ग्रौर जहन्नुम की ग्राग म हम किसी भी सूरत म नही जलाया जायेगा। हम मालूम है कि कुछ लाग सुम की तरह दो उगलिया जाडकर क्राम वनात हे, कुछ चुटकी की तरह तीन उगलिया से, लकिन हम धम की ग्राधार शिलाग्रा क ग्रनुसार दीक्षित ह, इसलिए हम सव कुछ माफ है। यह सव शिक्षा मैंन ग्रच्छी तरह स ग्रहण कर ली यद्यपि इसम से कुछ की उपक्षा कर दी। स्थानीय लागा का खून मैंन नही वहाया, घिन ग्राती थी ऐसा करत हुए। लेकिन मरे दिवगत वुजुर्गा न वह खून जरूर वहाया ग्रौर सा भी थाडा-सा नही। ग्रव वही खून जार-जार स चीख रहा है। इसीलिए मरा दिमाग चक्कर खा रहा ह। है काई एसी वीमारी?"

"मुझे मालूम नही, मैंने ता नही सुनी।" वालाद्या न जवाब दिया।

"ता ग्रव सुन लागे।" मार्केलोव ने विश्वास दिलाया।

पलागेया हाथ म ट्रे लिये हुए ग्राई। यगार फामीच मार्केलाव न ब्राडी की वातल ले ली, वडो फुर्ती स हथेली मारकर वोतल की डाट निकाल दी, वेटी को कडी नजर स घूरा ग्रार खदडने के वजाय उस ग्राराम स वैठकर सुनने का कहा।

"खास तौर पर इसलिए कि तुम रशमी कपडे पहन हा। हा, तो सुना, साथी डाक्टर। दिमाग का चक्कर खाना ग्रौर उलझाव?"

पेलागेया ने हरे शीशे के बडे-बडे गिलासो म ब्राडी डाली और एक गिलास वोलोद्या की तरफ बढा दिया। वोलाद्या ने एक घूट पिया। बूढा मार्केलाव सारी ब्राडी एक बार ही गले के नीचे उतार गया और अचारी खीरे को क्चर-कचर की ग्रावाज करते हुए चवान लगा।

"उलझाव!" मार्केलोव ने दोहराया। "एक ख्याल ग्राता है दिमाग म – ग्रादमी किसलिए जीता है?"

वोलोद्या को झुरझुरी सी महसूस हुई। उसे लगा कि मार्केलाव नशे म उसके यानी वोलोद्या के विचारा को ही बाहर लाकर उसका मुह चिढा रहा है, उसका मजाक उडा रहा है।

"दौलत जमा करन के लिए?" मार्केलोव ने सवाल किया। "चला मान लेते है कि बुजुर्गो ने यह काम शुरू किया। लेकिन किसलिए दौलत जमा की जाये? वारिस बेटी का देने के लिए? चला, एसा ही सही। लेकिन ग्रगर वह मूख हो और उसे कोई महत्त्व न दे, ता? तव क्या किया जाये? मान लो कि मेरा दिमाग खराव हाता जा रहा है यानी तुम लोगो के ग्रखवारो के शब्दो मे मेरा पतन हाता जा रहा है। लेकिन जब और किसी चीज म कोई तुक नही है, तो मैं इस रोकने की कोशिश किसलिए करू? यह सम्भव है कि मैं वक म कुछ और रकम डाल दू, और दो-तीन विधमियो, काफिरा का चालाकी स या हसकर भी लूट लू। मगर किसलिए? मैं ग्रपनी वात बुरे, ग्रस्पष्ट और ग्रटपटे ढग से कह रहा हू, मगर ग्रब जब तुम ग्रा ही गये हा, ता जो म कहता हू, उसे सुन ला "

"मै सुन रहा हू।"

"यह ग्रच्छा है। तुम्ह यह समझना चाहिए, डाक्टर, कि कुछ ऐसी बीमारिया भी है, जो न तो पटा म हाती है, और न सीनो म। कही ज्यादा बुरी हाती है। ग्रब तुम समझो उन्ह "

मार्केलाव ने ग्रपन गिलास म और ब्राडी डाली, उस पी लिया, मुह पाछा और दढतापूवक कहने लगा–

"नीचता, औरतबाजी और बेईमानी म शुरू हुई मरी जिदगी बदमाशी म ही गुजर गयी है। सहारा लने के लिए कुछ भी नही, रास्त स भटक गया हू, ग्रधा हाना जा रहा हू। मर भाई, मरी बीवी बिल्कुल उल्लू है, मास और चर्बी ता बहुत है उसम, लकिन

ग्रादमी कही दिखाई नही देता। ग्रपनी वेटी के लिए ग्रफ्सास हाता है, इसका भी कुछ वने-वनायेगा नही।"

"पापा, मेरा जिक्र न करो," पेलागेया न ग्रनुराध किया।

"नही चाहती, तो नही करूगा।"

मार्केलाव कुछ दर के लिए ग्रपन ख्यालो म खो गया, ग्राडी क वडे-वडे घूट पीता रहा। वालोद्या चुप था। उसके परिचित, विना शड क "विजली" लम्प की तेज राशनी ग्राखा म ग्रग्वर रही थी।

"कचौडी लीजिय न!" कमर के कान स पलागेया न कहा।

वोलोद्या ने कचौडी ले ली।

"हा, इसके लिए ग्रफसोस होता है," मार्केलाव न सोचते हुए दाहराया। "वाकी चीजो को तो खर गोली मारी जा सकती है। खुद मुझे तो ग्रव वहुत जीना नही ग्रौर उम्र भी काफी हा चुकी है ग्रौर रास्ता भी ग्रव क्या ढूढूगा। मरी तो यहा, खारा म वहुत गहरी जडें हैं। मेरी तो कब्र यही है, हमारे परिवार की समाधि है यहा। जिद्दी मिजाज के ये हमारे सभी लोग। रूसी इटा से जा हजारा कासा स लाई गयी, समाधि वनवाई, ताकि मौत के वाद ग्रपनी चन की जगह हा। काफिरो के वडे-वूढा से लकर दूध पीते वच्चा तक सभी हमारे नामी कुल का जानते है ग्रौर हमस डरत है। मैं तो देखा, कितना विनम्र हा गया हू, फिर भी मुझसे डरत ह। डरते हैं, समझते हा न? ग्रौर तुम्ह भी जानत है, लेकिन तुमस य लाग डरत नही। तुम भी रूसी हो ग्रौर र्म भी रूसी हू। फिर ऐसा क्या है, वताग्रो मुझे?"

ग्राडी का ग्रौर ग्राधा गिलास गले स नीचे उतारकर मार्केलोव सिहरा ग्रौर वाला—

"कोई उपहार, कोई तोहफा भी नही लेते मुझसे। तोहफा लत हुए डरते हैं, उसम भी कोई चालाकी समझते है। मेरी उदारता म भी विश्वास नही करत। हा सकता है कि मैं सचमुच ही उदार हो गया हू? हो सकता है न?"

ग्रौर वह कटुता तथा गुस्से स फुसफुसाने लगा—

"शमाना ने तुम्हारी हत्या कर देनी चाही थी—मैंने सुना है, मुझे मालूम है। तुम वुद्धू, किसलिए ग्रपनी जान का खतर म डाल

रह हो ' ज़ाहिर है कि मैं तो शौकत के लिए ऐसा कर रहा हू। मगर तुम किसलिए ' ऐसा भी क्या बड़ा तनख्वाह पा रहे हो ? कौन-सा बड़ा इनाम मिलेगा तुम्हें यहा पर इस तरह अपना जानमारी करने के लिए ' समझा ? मै तो अगर चाहू, तो कल कान्ता-पानियों का राम जैसे अमर नगर में जा सकता हू। मेरे पास तो सब कुछ है। मगर तुम्हारे पास क्या है ? तुम बूढ़े हो पास तो औरत भी नहीं है, बाल-बच्चे भी तुम पास नहीं हो। कितना अर्सा हुआ तुम्हें यहा आये हुए ? याद रख भाई ! कुछ ही दिन पहले मैंने अपना आखों से यह देखा था कि तुम सड़क पर ऊपर की तरफ़ जा रहे थे। एक कुत्ता तुम्हें काटने के लिए लपटा। एक औरत, माइन-चलर की बीवी ने डडा लेकर उस कुत्ते को दूर भगा दिया। लेकिन अगर सच हाथ ऐसा हुआ होता तो ? पकड़ना भाई उस कुत्ते को ? बताओ मुझे, यह समझने में मेरी मदद करो कि क्या आदमी का दिमाग चक्कर खाने लगता है ? तुम कामरेड, मुझको मुझ बूढ़े को इस बात का जवाब दो कि आदमी किसलिए जाता है ? '

'काम के लिए !' बालोचा ने खिन्नता और मुश्किल से सुनाई देनेवाली आवाज़ में जवाब दिया।

'क्या कहा ?'

"काम के लिए।"

"मगर काम किसलिए ? क्या मैंने काम नहीं किया ? क्या मैं हाथ पर हाथ धर बैठा रहा ? तुम जैसा पिल्ला तो यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि घने ताइगा जगलों और यहा की कैसी भयानक दलदलों में हम भटकते रहे, कैसे साथ, कैसी-कैसी रात गुज़ारी, कैसे खूनी भेड़िये हम पर झपटे, कैसे यहा के काफिरों ने मेरे बाप पर मोटे मोटे छर्रे चलाये मानो वह इन्सान न होकर कोई भालू हो ! हाथापाई करनी पड़ी—क्या यह काम नहीं है ?"

"नहीं, यह काम नहीं है। तुमने काम नहीं किया पैसा बनाया।

"यानी अपने फायदे के लिए ?"

"हा, अपने फायदे के लिए।"

"और मेरा जो यह दिमाग़ चल निकला है, क्या अब वह किसी तरह ठीक नहीं हो सकता ?"

"ग्राप मुझसे डाक्टर के नाते यह पूछ रहे है?"

"भाड म जाग्रो तुम ग्रौर तुम्हारी डाक्टरी। हसी ग्राती है मुये तुम्हारी डाक्टरी का नाम सुनकर। मै तुमसे एक रूसी ग्रादमी के नात पूछ रहा हू "

"हम दानो रूसी है, मगर ग्रलग ग्रलग तरह के रूसी हैं," मार्केलोव की ग्रोर दढता से दखते हुए वालोद्या ने जवाव दिया। "मं सावियत रूसी हू, लेकिन ग्राप केवल रूसी जाति के है, भूतपूव रूसी हैं, रूसी इटा की समाधिवाले रूसी हं, मानवता के नाते रूसी नही हैं। ग्राज का रूसी पहले के रूसी स विल्कुल भिन्न है। ग्राज के रूसी को कोई मेहनतकश माटे छर्रे से नही मारगा। इसीलिए ग्राप डग्न है ग्रौर मैं नही डरता।"

मार्केलाव शायद सुन नही रहा था।

"खर," उसने कटुता से कहा, "जिसके सामने धूपदान ग्राता है, वही सिर झुकाता है। तुम मुझे एक वात वताग्रा, शायद मरे लिए ग्रपनी दौलत ग्रस्पताल को भेट कर देना ठीक रहेगा? शायद तव मै तुम्हार मुकावले म कुछ वुरा नही रहूगा, श्रीमान-साथी?'

"यह दौलत ग्रापकी नही हे। ग्रौर लूटी हुई दालत भेट करना मूखता है।"

मार्केलाव का यह जवाब सुनकर काई हैरानी नही हुई। कवल वोलाद्या के कुछ निकट हाते हुए उसने पूछा—

"ग्रार शमान ग्रोगू को माफ करना मूखता नही है? वह गाली मारकर तुम्हारी जान लेना चाहता था ग्रौर तुम ग्रव उसका पेट पालत हा? उस कुत्ते के पिल्ल को वही किसी तन पर लटकाकर गला घाट देना ग्रौर उसके तलव ग्रलाव पर भूनने चाहिए थे। तव इन लोगा की वरसो तक ग्रक्ल ठिकान रहती।'

"ग्रोगू का काई दोप नही," वोलोद्या न रुखाई से कहा। "दाप ग्रापका है।"

'फिर म ही दोपी हू? सुनती हो पेलागेया, इस वात के लिए भी मै ही दोपी हू। दखा? वडे तेज हा डाक्टर, वहुत ही तज हा। जरा मुझे वताग्रा तो, मेरे वहुत ही प्यार दास्त, क्या कुसूर है मरा?"

"आप तो खुद ही जानते है, सकडा साल तक "

"हटाओ इस वकवास को," मार्केलोव न उसे टोक दिया। "मैंने तुम्हारी जगह पूरा जोर लगा दिया है, जिसे और जो कुछ लिखना चाहिए था, लिख भेजा। तुम्हारे उस शमान का अच्छे मजबूत सीखचा के पीछे विठा दिया जायेगा।"

"लेकिन मै किसी को ऐसा नही करने दूगा।"

"करने नही दोगे?" मार्केलोव हैरान हुआ।

"किसी हालत मे भी ऐसा नही करन दूगा।"

"ईसाई धम के मुताबिक?"

"ईसाई धम का इस मामले से कोई वास्ता नही है।"

"तो जहनुम मे जाओ! एक आखिरी वात और पूछना चाहता हू—कौन सा वह ऐसा काम है, जिसके निए आदमी जिये?"

"कोई भी ऐसा काम, जिसस लोगा का भला हो। वस, इतना ही," वोलोद्या न पहल की भाति चिडचिडेपन, यहा तक कि गुस्से से कहा। "कोई भी काम।"

"लोग—वे तो कूडा-करकट है!"

"तव तो हमारे और आपके वक्त वरवाद करन मे काई तुक नही है!" वोलोद्या ने उठत हुए कहा। "हा, यह जरूर सोचता हू मैं, येगोर फोमीच, कि कोई वहुत ही वुरा आदमी ऐसा मान सकता है कि लोग कूडा-करकट है।"

"मैं ता वुरा हू ही!" मार्केलोव ने व्यग्य से मुस्कराकर जवाब दिया।

वोलोद्या के वाहर जान से पहले उसने पुकारकर इतना और कहा—

"मुझ मूख का अक्ल देने के लिए फिर कभी भी आ जाना।"

"नही आऊगा!" वोलाद्या ने जवाव दिया। "आपके साथ काई अक्ल की वात करना आसान नही। और वेकार भी है "

क्षण भर को वे दोनो एक-दूसरे को देखत खडे रहे—मार्केलोव चकराया-सा और वोलोद्या शान्त तथा उदास।

चवूतरे पर कारिदा ठण्डी वारिश मे ठिठुरता हुआ वोलोद्या का इन्तजार कर रहा था।

"जल्दी ही इनका खेल? " उसन फुसफुसाकर पूछा।

पा मतलब—जल्दी स?"
व और वदाश्त करने की ताकत नही रही। इतना विगडते
कोई हद ही नही, इन्सान तो विल्कुल रहे ही नही। अब ता
ा दना चाहिए इस दुनिया से। श्रीमान डाक्टर, मैं तो आपको
वता भी नही सक्ता, जो कुछ वे करते हैं।"
गाद्या ने टाच जला ली और अपने अस्पताल की तरफ चल
वास्या वेलोव साफ-सुथरे विस्तर पर खुद भी नहाया-धोया
ा स लेटा हुआ कुछ भावुकतापूण कविताए पढकर आनन्द-विभोर
था।
आपकी अनुपस्थिति म ओश के वच्चा हो गया है," उसने
"वस, अभी कुछ देर पहले। वडा प्यारा मुन्ना है।"
लाद्या न हाथ मुह धोकर अपना डाक्टरी चोगा पहना और
के कमरे म चला गया। ओश अभी तक झपकी ले रही थी और
मूर्ति-कक्ष को ठीक ठाक किया जा रहा था। दादा अवाताई
म उक्डू वैठा शिकारी रागी कूरी के साथ अगीठी मे जलती
या की रोशनी म ड्राफ्ट का खेल खेल रहा था। चौथे कमरे म
गम का वह दस साला लडका कराह रहा था जिसका उसी दिन
शन किया गया था। वालोद्या उसके पास कुछ दर रुका, उसका
दखा और टाग का छूकर दखा कि वह गम है या नही। टाग
थी। अव यह लडका लगडा-लूला नही होगा। इस कमरे से वाहर
न पर उस तूश नजर आई। दुवली-पतली, हल्की-फुल्की और
ती आखावाली तूश फुर्ती और तेजी से वालोद्या की तरफ ही
रही थी।
"तो मास्का क वारे म क्या फैसला किया?" वालोद्या न पूछा।
भोगी न, तूश?"
'नहा," वालाद्या के चेहरे पर नजर टिकाते हुए उसने खुशमिजाजी
जवाव दिया।
' क्या?"
"अभी मैं वहुत वुद्धू हू, सच," वह वोली। "वहा मरा मजाक
गा। वाद को, कुछ अर्से वाद जाऊगी। जब आप कहेंगे—जाओ,
हार वहा जान का वक्त आ गया। ठीक है न?'

—1549

वोलाद्या उससे आखें नहीं मिला पा रहा था, क्योंकि इतनी अधिक चमक रही थी तूश की आखों और बहुत ही प्यार तथा स्नेहपूर्ण थी यह चमक।

काली मौत

वसन्त मे अस्पताल की दूसरी इमारत की नीव रखी गयी। नीव समारोह के दिन ही एक लेडी डाक्टर, सोफिया इवानोव्ना सोल्न तेन्कोवा यहा पहुची। अधेड उम्र की यह नारी वडी हठी और अपनी गति विधि म ढीली-ढाली थी। इस नयी आनवाली डाक्टर ने सबसे पहले तो दो-टूक ढग से यह माग की कि शमान आगू को अस्पताल से निकाल बाहर किया जाये।

"वडी अजीब-सी बात है!" सोफिया इवानोव्ना ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, "भूतपूर्व पुजारी या जिसे यहा शमान कहते हैं, रसोईघर के लिए लकडिया चीरता है। मैंने अपनी आखो स देखा है। बडी अनहोनी सी बात है! रोगियो के कमरो के लिए भी लकडी चीरता है! बहुत ही अजीब बात है!"

"मगर वह अस्पताल म जादू टोने तो नहीं करता!" वोलोद्या न माथे पर बल डालते हुए विरोध किया। "इसके अलावा यह आदमी अब तो शमान रहा भी नहीं। न तो उसके पास खजडी है और न डडा।"

"कैसी अजीब बात है! पुजारी हमेशा पुजारी रहता है—उसके पास डडा हो या न हो। इसके अतिरिक्त मुझे यह भी ज्ञात है कि उसने आपके विरुद्ध आतक क्रिया की।"

"कैसी क्रिया?"

"आतकवादी क्रिया। और आपने नर्मी तथा बुद्धिजावियोवाली उदारता दिखायी तथा इस नीच को जेल नहीं भिजवाया। वर्ग शत्रुओ के हमलो का मुह-तोड जवाब देना चाहिए, समझे न?"

"वह वर्ग शत्रु नहीं, एक बदकिस्मत और रास्ते स भटका हुआ आदमी है," वोलोद्या न कठोरता से जवाब दिया। "फिर मुझे यह सिखाना भी आपका काम नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। आपको यहा आये दिन ही कितने हुए हैं और मैं "

"तो आलोचना के प्रति यह रवया है आपका?" साफिया इवा-नोव्ना ने व्यग्यपूर्वक कहा। "वैसे मैंने कुछ ऐसी ही उम्मीद भी की थी—आत्म-तुष्टि, अपनी ख्याति की मौज लूटना, एक दूसरे की प्रशसा करना "

सचमुच वडी अद्‌भुत चीज थी कि इस औरत के पास हर मामले के बारे म पहले से ही वाक्य तयार थे। वहुत ही आसान थी उसके लिए जिन्दगी।

"थोडे म यह कि ओगू यहा काम करता है और करता रहेगा," वालाद्या न उठते हुए कहा। "अगर आपको यह पसन्द नही है, तो आप टोड-जीन को लिख सकती हैं। उसे किस्से की पूरी जानकारी है। यह वात हम यही खत्म कर देते ह। और किसे आप यहा वग शत्रु मानती हैं?"

साफिया इवानोव्ना ने गहरी सास ली—

"ध्यान से देखना हागा। जाहिर है कि यहा सव कुछ बुरा नही है, कुछ उपलब्धिया भी हुई हैं, हमारे प्रति वफादार लोग भी हैं।"

सोफिया इवानोव्ना वडी मेहनत से, वहुत अधिक और नीरस ढग से काम करती। उसके ख्याल के मुताविक अस्पताल म रोगा का ब्योरा वहुत सक्षिप्त रूप से लिखा जाता था और कुल मिलाकर रिकाड का मामला वहुत गडवड था। सोफिया इवानोव्ना ने इस मामले म "आमूल चूल" परिवतन कर डाला। वह सुवह, दोपहर और शाम को भी वहुत लम्बा-लम्बा, विस्तारपूवक और ब्योरेवार विवरण लिखती रहती। उसकी उगलियो, यहा तक कि गालो पर भी स्याही के धब्वे लगे रहते और अपने माथे पर वल डालकर और गहरी सास लेकर वह कहती—

"अभी वहुत कुछ, वहुत ज्यादा, वहुत ही ज्यादा टीक-टाक करन की जरूरत है, साथी वडे डाक्टर। वडी अजीव वात है, वहुत ही अजीव वात है कि इस मामले म ऐसी लापरवाही दिखायी गयी है। फ़िलहाल तो मैं सव चीजो को जाच-पडताल कर रही हू, लकिन वक्त आने पर हमारी वातचीत हागी, वडी खुली और वेरहमी से, किसी भी तरह के लिहाज-मुलाहजे के विना "

31*

एक अंधेरी रात को पेलागेया मार्केलोवा वोलोद्या के पास आई। उसकी आंखें रो रोकर सूजी हुई थी, देर तक वह कुछ भी नही कह पाई और बाद मे उसने अनुरोध किया—

"श्रीमान डाक्टर, मुझे अपने यहा कोई काम दे दीजिये। मैं सभी कुछ कर सकती हू, आपको पछताना नही पडेगा"

"मगर आपके पिता का क्या रवैया होगा इसके बारे मे?"

"क्या मानी रखता है उनका रवैया!" पेलागेया ने गुस्से से जवाब दिया। "वे क्या अब इन्सान रह गये हैं? बहुत ही बुरे हो गये हैं, सुबह से रात तक पीते रहते हैं, बेमतलब किताबें पढते हैं और कोसते है।"

"वे आपको काम नही करने देंगे!"

"मैं तो अस्पताल मे ही रहना चाहूगी। जिस कोने मे हुक्म देंगे, वही पड रहूगी। यही मेरी जिन्दगी होगी। दे दीजिये मुझे यहा कोई काम, श्रीमान डाक्टर। नही तो सच कहती हू कि मैं गले मे फंदा डालकर झूल जाऊगी। आपके सिर होगा मेरी हत्या का पाप। रख लीजिये मुझे यहा कोई काम करने के लिए!"

पेलागेया घुटनो के बल होकर विनय अनुनय करने लगी।

"आप यह क्या कर रही है!" उस्तिमेन्को ने चिल्लाकर कहा। "सुनती है? यह सब बन्द करे। फौरन उठकर खडी हो जायें"

इसी समय सोफिया इवानोव्ना विवरण-पत्र लिये कमरे मे आई। उसने पूछा कि यह क्या मामला है। वोलोद्या ने उसे बताया। डाक्टरनी ने माथे पर गहरे बल डालते हुए पूछा—

"अरे, उसी मार्केलोव की बात कर रहे है न? वह जो यहा का रॉकफेलर है। हा, हा, सुना है, बेशक सुना है मैने उसका नाम"

वोलोद्या ने पेलागेया को सम्बोधित करते हुए कहा—

"कल काम पर आ जाइये। सुबह ही। आपको पहले से ही आगाह किये देता हू—हमारे यहा काम बहुत होता है और वह मेहनत भी बहुत मागता है। कामचोरो की हमे जरूरत नही है"

पेलागेया के जाने पर वोलोद्या ने सोफिया इवानोव्ना से विवरण पत्र लेकर उस पर हस्ताक्षर किये, कमरे मे चक्कर लगाया, पर्दे के बिना अंधेरी खिडकी से बाहर झाका और रेडियो चालू कर दिया।

वह महीने भर से नयी बैटरियों की राह देख रहा था पुरानी खत्म होने को थी। रेडियो में बहुत शोर मच रहा था और वोलोद्या देर तक कोशिश करने पर भी मास्को रेडियो की आवाज़ नहीं सुन पाया। अचानक उसे स्नायु-झाँपा में किसी प्रसारण-केन्द्र की आवाज़ सुनाई दी और वह मानो बुत बना रह गया—हिटलर ने सोवियत संघ पर हमला कर दिया था। वहां जंग छिड़ गयी थी बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी जा रही थी, मानवजाति के इतिहास की अनजानी अनसुनी घमासान लड़ाई।

अपने डाक्टरी लबादे की आस्तीन ऊपर चढ़ाये और कोई धुन गुनगुनाता हुआ वास्या कमरे में दाखिल हुआ। वोलोद्या ने चीखकर उसे चुप रहने के लिए कहा। सोफिया इवानोव्ना जर्द चेहरे के साथ भौचक्की-सी भागी आई। उसके पीछे पीछे बरामदे में तूश दाजी और बूढ़ा अगाताई भी दिखाई दिये। धीरे धीरे वोलोद्या यह समझ पाया कि २२ जून की सुबह के साढ़े तीन बजे फासिस्टों ने काले सागर से बाल्टिक सागर तक के बहुत बड़े मोर्चे पर हमला शुरू किया। इस वक्त कोई फील्डमार्शल फ़ान बाक, गुदेरियान श्त्राउस और बोट सीमावर्ती नगरों की ओर बढ़ जा रहे थे। लेकिन किन नगरों की ओर—यह समझ में नहीं आया। इसके बाद तांगो नाच की धुन बजने लगी, रेडियो पर गड़गड़ और सीटियों का शोर मचने लगा। वास्या ने कहा—

"यह असम्भव है! उकसावा है, बकवास है!"

तड़के ही वोलोद्या ने टाड जीन को तार भेजा, जिसमें वास्या वेलाव को अस्पताल का बड़ा डाक्टर नियुक्त करने का अनुरोध किया। दो घण्टे बाद जवाब आया और वोलोद्या को स्पष्ट हो गया कि वह सोवियत संघ जा सकता है। खास तौर पर इसलिए कि बोगोस्लोव्स्की तो मास्को जा भी चुके थे।

तूश ने भारी मन से वोलोद्या को बताया कि कारवां खारा से अगले दिन रवाना होगा। उसने कहा कि वह सामान, आदि समेटने में मदद करने को तैयार है।

"मुझे तो सामान ही कौन-सा समेटना है?" वोलोद्या ने जवाब दिया। "बस, यह सफरी थैला ही तैयार करना है। तूश आप जाये, यही क्या कम काम है आपके पास?"

तूश चली गयी।

वोलाद्या ने रेडियो पर कुछ और सुन पाने की कोशिश की, मगर हिटलर के किसी पुछल्लगू फासिस्ट की कुत्ते जैसी भूक ही सुनाई दी। कुछ भी न समझ पाने पर उसने रेडियो बन्द कर दिया। "खर, कोई बात नही," वोलाद्या ने अपने को तसल्ली दी। "घबराने की कोई बात नही है। ज्यादा से ज्यादा एक महीने बाद मैं मोर्चे पर पहुच जाऊगा। इस तरह से परेशान होना ठीक नही।"

इसी क्षण वालोद्या को दाजी सामने दिखाई दिया। उसके चेहरे पर हवाइया उड रही थी। वह काफी देर से दरवाजे के पास खडा था। जब उसने कुछ कहने की कोशिश की, तो उसके जबडे का निचला भाग काप रहा था और उसकी आवाज़ गले मे ही अटक सी गयी।

"खाक भी तो मेरे पल्ले नही पडा!" वोलोद्या ने झल्लाकर कहा।

"खेमे के ऊपर काली झडी," मादी दाज़ी ने रुधी सी आवाज़ मे कहा। "खारा म जल्द ही मार्मोट राग आ जायगा। जावान इलीर मे तो काली मौत मडरा भी रही है। जाओ, तुम जाओ, साथी डाक्टर। मैंने बूढे को यहा नही आने दिया, वह यह भयानक खबर लाया है और खुद उसकी अपनी मौत भी लाजिमी है। फिर वैसा ही होगा, जसा कि कई साल पहले हुआ था, जब खारा म भी सभी मर गये थे, छोटे से छोटे बच्चे तक भी। जो वक्त पर भाग नहा गये, वे सभी मर गये।"

यहा प्लेग को ही मार्मोट राग या काली मौत कहा जाता था। १६१६ म यह महामारी आखिरी बार और बहुत भयानक रूप म फैली थी। वोलाद्या यहा के पुराने वासियो से कई बार यह सुन चुका था कि कैसे तब यहा का राज्यपाल भाग गया था, लोग कसे डर दहशत से पागल हो गये थे और लाशें उठानेवाला भी कोई नही रहा था

बहुत व्यथित, धस गालो और बिना दातोवाला गजा बूढा अस्पताल के चबूतरे के करीब उकडू बठा हुआ दादा अबाताई, आगू, सोफिया इवानोव्ना और डाक्टर वास्या को मार्मोट राग के बारे म बता रहा था। तूश दुभाषिये का काम कर रही थी।

इस वसन्त मे मार्मोट (जगली चूहा या गिलहरी जैसा फ़रवाला एक जगली जानवर) के शिकारियो को यह खबर मिली कि व्यापार-केन्द्रा म मार्मोट की फर के लिए पिछले साल के मुकाबले मे इस बार पाच छ गुना ज्यादा कीमत मिलती है। यह खबर सीमा के पार स आई, और सूर्योदय के देश के राज्यपाल क निवास स्थानवाले पस वा नगर के शिकारी यह खबर लाये थे। उन्होने बताया था कि मार्मोट की खाल को ऐसे सवारा और रगा जाता है कि फर व्यापारी उन्हे बेचकर बेतहाशा पैसे कमा रहे हैं। जाहिर है कि शिकारियो ने भी मालामाल होने की सोची। वे सभी मार्मोटो को, यहा तक कि उन्ह भी पकडने लगे, जो बोलते नही थे। यह तो सभी जानते है कि मार्मोट अगर बोलता नही है, तो उसे छूना नही चाहिए, क्योकि वह बीमार होता है। स्वस्थ मार्मोट बडबडाता रहता है—"डर नही, डर नही"—यह बात भी सभी को मालूम है

बूढे ने तामचीनी के सफेद मग से पानी पिया और पाइप सुलगा लिया।

"इससे कहो कि वह बताये, जो उसने अपनी आखो से देखा है!" बोलाद्या ने कहा।

मगर बूढे न उतावली नही की। शिकारियो ने बीमार मार्मोटो को मारा ही नही, उनका मास भी खाया। सबसे पहले मुग वो का छोटा भाई बीमार हुआ। वे दोनो भाई—बडा और छोटा भी—मार्मोटो के बिलो पर फदे लगान म बडे माहिर और बढिया निशानबाज भी माने जाते थे। छोटा मुग-वो स्तेपी म बीमार होकर मर गया। बडे न उसे दफना दिया।

"गिलटीवाली प्लेग है!" साफ़िया इवानोव्ना न कहा।

"भाई को दफ़ना दिया और इसके बाद काफ़ी देर तक शिकार करता रहा, उसको किस्मत ने साथ दिया," तूश ने अनुवाद किया। "लेकिन कुछ दिनो बाद लोगो ने उसे अपने खेमे म ऐसे डोलते-लडखडाते हुए जाते देखा, मानो वह नशे म धुत्त हो। अगर आदमी ऐसे लडखडाये, तो यही समझना चाहिए कि सम्भवत वह मार्मोट रोग से पीडित है और जल्द ही वह अपनी 'आयु से वचित' हो जायेगा।"

"बड़े को फेफड़ावाली प्लग हुई थी। अक्सर ऐसा ही होना है," साफ़िया इवानोव्ना ने समझाया। "ऐसी स्थिति म सक्रिय सावजनिक क्षेत्रा म स्पष्टीकरण का काम करना चाहिए।"

'सक्रिय, निष्क्रिय!" डाक्टर वास्या झुझलाहट से बड़बड़ाया।

बूढ़े ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा–"बड़ा मुग-बो ता अपन खेमे म भी नही जा पाया और सिफ इतना ही कह सका कि उसके खेम के ऊपर बास पर एक काला कपड़ा लटका दिया जाय। स्तेपी क लाग जानत है कि अगर किसी खेमे के ऊपर काला कपड़ा लटका हुआ ह, तो इसका मतलब है–वहा मौत मडरा रही है और किसी का भी खेम के नजदीक नही जाना चाहिए।"

"इस नागरिक स पूछा कि क्या वह रागिया क सम्पक म आया है?' सोफ़िया इवानोव्ना ने तूश को यह जानने का आदश दिया।

तूश यह समझ नहा पायी।

"उसने यह काली झडी ही देखी है या वहा, उस जगह, उस खेमे मे भी गया था?' वास्या ने तूश को समझाया।

बूढ़े ने व्यग्यपूवक मुस्कराकर जवाब दिया कि मार्मोट रोग के करीब भी उस नही फटकना चाहिए, इस बात की उसे अक्ल है। तब, बहुत साल पहले उसके सभी रिश्तदार इस रोग से मर गय थ और वह अच्छी तरह जानता है कि यह कैसी खतरनाक बीमारी है।

सुबह को बड़ा मुग बो खून की कै करने लगा। कुछ दिना बाद सभी खेमा के ऊपर काल कपड़े लटकते नज़र आने लगे। मार्मोट रोग जावान इलीर म फैल गया था। बूढ़े ने अपन घोड़े पर जीन कसा और यहा महान सोवियत शमान के पास चला आया। सोवियत शमान के बारे म उसन तरह-तरह के अच्छे किस्स सुने थ। अगर रूसी शमान सचमुच ऐसा ही महान है, जसा कि लाग उसक बारे म कहत हैं, तो वह मदद करे। और अगर वह कुछ नहा कर सकता, तो फ़ौरन साफ कह द। इसके बाद उसे परेशान नही किया जायेगा।

"नाम कमाना चाहा, तो उसका मान भी चुकाओ!" साफ़िया इवानोव्ना इतना कहकर अस्पताल मे चली गयी।

वोलोद्या न तूश स बूढ़े का यह बतान के लिए कहा कि फिलहाल वह खुद तो कुछ नही कर सकता, लेकिन बहुत-से डाक्टर, उनका

पूरा दल बुलाने का यत्न करेगा, जो अवश्य ही मदद करेंगे। वास्या और तूश को बूढ़े को दूसरों से अलग रखने का आदेश देकर खुद खारा प्रान्त के राज्यपाल उदावा से मिलने चला गया।

राज्यपाल ने बड़ी रुखाई दिखायी। वह इसलिए कि सूर्योदय के देश की सीमा रेखा बिल्कुल निकट थी और सीमा के पार सूर्योदय के देश का शासक रहता था। अगर हिटलर रूस को हड़प गया तो सूर्योदय का देश खारा पर कब्जा कर लेगा और तब वहां का शासक रूसी डाक्टर के साथ अच्छा बर्ताव करने के लिए उसकी अक्ल ठिकाने करेगा। इसलिए उदावा ने तो वालोद्या को बैठने तक के लिए नहीं कहा। किन्तु मार्मोट रोग फैलने की बात सुनते ही राज्यपाल का रवैया एकदम बदल गया। उसने चिल्लाकर वोलोद्या के लिए चाय लाने को कहा और अपने सेक्रेटरी को फौरन स्वास्थ्य विभाग के साथ टेलीफोन लाइन मिलाने का आदेश दिया। स्वास्थ्य विभाग से कोई उत्तर नहीं मिला और वालोद्या ने इस बात से लाभ उठाते हुए राज्यपाल को टाड-जीन के घर पर टेलीफोन करने की सलाह दी।

सौभाग्य की बात थी, बहुत बड़े सौभाग्य की बात थी कि टाड जीन ने ही रिसीवर उठाया और वालोद्या ने खुद उसे वह सब कुछ बताया, जो जावान इलोर के इलाके में हुआ था। रिसीवर में तरह तरह का शोर और आवाजें सुनाई दे रही थी। टोड जीन खामोश रहा।

"मास्को के महामारी रोकथाम संघटन से मदद करने के लिए कहिये," वोलोद्या ने कहा। "वहां से मदद मिल जायेगी।"

"जंग चल रही है!" टाड जीन बोला।

"वहां से मदद मिल जायेगी," वालोद्या ने दोहराया। "जरूर मदद मिल जायगी! मैं आपको पक्का यकीन दिलाता हूं, सुनते हैं, साथी टाड-जीन? वहां समझदार लोग हैं, वे समझते हैं, वे समझ सकते है कि आपके जनतन्त्र पर कितनी बड़ी मुसीबत आ गयी है। वे जरूर ही मदद करेंगे।"

"अच्छी बात है, ऐसे ही सही," टोड जीन ने सोचते हुए और धीरे धीरे जवाब दिया तथा राज्यपाल को रिसीवर देने का अनुरोध किया।

पन्द्रह मिनट बाद राज्यपाल ने गरिज़न के कमाडर, दुबले-पतले तथा पके बालोवाले लेफ्टीनेन्ट को जावान इलीर क्षेत्र को घेर म लेन का आदेश दिया ताकि वहा से न तो कोई आ सके और न काई वहा जा सके। लफ्टीनेन्ट ने चुपचाप यह आदेश सुना, एडिया बजायी और रुपहली तथा सफेद फौजी टोपी के लम्बे छज्जे को हाथ मे छूकर बाहर चला गया। और राज्यपाल के घर के पिछवाडे मे इसी वक्त ऊटा, घाडा और घोडा-गाडिया पर सामान लादा जा रहा था और राज्यपाल की बेटिया, बहुए और बीबी — सभी औरत रो धो रही थी। उन्हे यहा से, छ कमरा के इस महल से, जिसके आगन मे जाडा के लिए दो खेमे भी थे, पहाडा पर भाग जाने की बात सोचकर डर महसूस हो रहा था।

बोलोद्या को रात के वक्त कई पृष्ठो का लम्बा तार मिला। टाड जीन न खबर दी थी कि मास्को से मदद मिल गयी है, कि दवाइया, डाक्टरी साज-सामान और डाक्टरो को लेकर हवाई जहाज वहा से रवाना हो गय हैं। प्रोफेसर वारिनाव इस डाक्टर दल के मुखिया थे। मेहनतकश पार्टी की केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी के साथ टाड-जीन खुद अगले दिन हवाई जहाज स वहा पहुचनेवाला था। तार मे आगे वे सलाह और हिदायत थी, जो प्रोफेसर वारिनाव ने हवाई जहाज से दी थी।

इस फौरी तार को बार-बार पढत हुए बालाद्या का बगल के कमरे मे सोफिया इवानोव्ना की आवाज सुनाई दी, जो तूश को प्लेग से बचने का सूट पहनने की विधि सिखा रही थी।

"हा, मैं जानती हू कि आपका बडी ऊब महसूस हो रहा है," साफिया इवानोव्ना अपने नीरस स्वर म कह रही थी, "लेकिन हमारे काम म अपने का राग से बचाये रखने के उपाय बहुत बडी भूमिका अदा करते हैं। यह कोई मर्दानगी की बात नही है कि आदमी अपन का प्लेग की छूत लगा ले और अपनी लापरवाही की वजह स मौत के मुह म चला जाये। सबसे पहले चोगा पहना जाता है, दख रही हैं न? इन फीता स पतलून की मोहरिया का बहुत कसकर बाध दना चाहिए।"

"पिस्सुआ म बचन के लिए?" तूश ने धीरे-स पूछा।

"मार्मोटा के पिस्सू मार्मोटा के मर जान पर उनकी लाशा तथा

विला का छोड देते है," सोफिया इवानोव्ना माना किसी किताव से पढ़ती जा रही हो, "तथाकथित मुक्त होनेवाले पिस्सू वडी खुशी मे लोगा के शरीरा पर जा जमते है। अब यह देखिये सायी तूश, टोपी के निचले सिरे को लवादे के कॉलर के नीचे ऐसे दवा देना चाहिए। और आखिरी चीज़ है सास लेने का नक़ाव। नाक के दाना ओर की खाली जगहो का रूई के गाला से इस तरह भर लेना चाहिए "

वोलाद्या ने बरामदे मे आकर सोफिया इवानोव्ना के कमरे के दरवाज़े पर धीरे से दस्तक दी। साफिया इवानोव्ना और तूश – ये दोना ही प्लेग से वचने के सूट पहने कमरे के वीचोवीच खडी थी।

"यह सब क्या है?" वोलोद्या ने पूछा।

"वात यह है कि मैं महामारी विशेषज्ञा हू ' साफिया इवानोव्ना ने समझाया। "इसलिए मेरे दिमाग म यह ख्याल आया कि तूश के साथ हम दोनो प्लग के इलाक़े म जाये, शव परीक्षा करे, सारी स्थिति का जाच और मदद करे। सूट हमारे पास हैं, माइक्रोस्कोप (खुर्दवीन) भी है, लाइसोल, कार्वोलिक एसिड और सवलीमेट भी हमारे पास है। वस ता आप यहा के वडे डाक्टर है लकिन मरा ख्याल है कि '

"आप जायें!" वोलाद्या न कहा।

'शायद हम दौरे पर जाने के अनुमति-पत्र की आवश्यकता हागी?"

"नही, साफिया इवानोव्ना, इसकी ज़रूरत नही है। वहा उस दखनेवाला ही कोई नही है।"

"कसा जगलीपन है!" साफिया इवानाव्ना ने कधे झटके। "विल्कुल मध्य युग, सामन्तकाल की सी वात है। मैं ता स्वास्थ्य और सफाई के मामले म सक्रियता दिखानेवाले लोगा से वातचीत करना चाहती थी, मैंने ता कई और वात भी सोची थी "

उनीदे-से वास्या न भीतर झाककर पूछा—

"तो मैं भी चलू?"

"किसलिए?" साफिया इवानोव्ना न पूछा। 'चीर-फाड की गयी लाश का दफ़नान का काम हम दानो कर लगी। सूट भी हमारे पास दो ही हैं। अस्पताल मे डाक्टरा की कमी की स्थिति पदा करने का हम अधिकार नही है। वस भी ऐसा करना अक्लमन्दी नही हागा।

हमेशा समझदारी से काम करना चाहिए, वेसमझी नही करनी चाहिए। हा, सयोगवश यह तो साफ ही है कि इस किस्स के पूरी तरह खत्म होने से पहले मै यहा नही लौटूगी। शायद ग्राप लोगो को मुगवो के इलाके मे ही हमारी खोज कग्नी होगी "

रवाना होने के पहल माफिया इवानोव्ना एक खत लेकर वालाद्या के पास ग्राई ग्रौर वोली—

"ग्रगर मुझे वहा कुछ हो जाये, ता कृपया यह खत मेरी बेटी का भेज देना। इस दुनिया मे वस वही मेरी एक ग्रपनी है। उसके वाप ने हमे छाड दिया ग्रौर ग्रव उसका दूसरा परिवार है। मै ग्रौर नूस्या ग्रकेली ही रहती हैं। पर खैर, यह ता कोई ऐसी वात नही है! ग्रापसी प्यार के ग्राधार पर ही शादी होनी चाहिए। ग्रगर ऐसा प्यार नहा है, तो शादी का कोई मतलव नही रहता। नमस्त, व्लादीमिर ग्रफानास्येविच "

ग्रौर ये दोना चली गयी—नारी, दुवली-पतली ग्रार काले बाला वाली तूश तथा भारी भरकम सोफिया इवानाव्ना। य दानो घोडो पर सवार हाकर चली गयी तथा इनके पीछे घाडो पर लदे हुए थे तम्बू, दवाइया छिडकने के यन्त्र, फावडे, दवाइया ग्रार विशेष, ढ्वाक्न्द डिव्वा म खाने पीने की चीज़े। विदा होत वक्त साफिया इवानाव्ना ने कहा—

"व्लादीमिर ग्रफानास्यविच, जिसे ग्राप 'कागज़ी काम' कहत है, उसकी तरफ घ्यान देना न भूलिये। मैंने ग्रभी ग्रभी उस कुछ ठीक-ठाक किया है ग्रौर ग्रव ग्रचानक छाडकर जाना पड रहा है "

"कहिये, क्या कहते है इस ग्रौरत के वारे मे?' जव छाटा-सा कारवा ग्राखा से ग्रोझल हो गया, ता वोलाद्या ने वास्या स पूछा।

"इससे कभी ऐसी उम्मीद नही थी!" डाक्टर वास्या न जवाव दिया।

ग्रादर्श की साधना

शाम हान का थी, जव खारा के लागा ने पहला हवाई जहाज देखा। यह उस हवाई जहाज जसा ही था, जिसम कभी वोलोद्या के दिवगत पिता ग्रफ़ानासी पत्रोविच ग्रपन शहर ग्राय थ। खारा म हवाई

अड्डा नही था और इसलिए हवाई जहाज़ देर तक अपने नीचे उतरने के लिए जगह ढूढता रहा। वोलोद्या को लगा उसका इजन मानो चिन्ता और प्रश्नसूचक ढग से शोर मचा रहा था। हवाई जहाज़ कई वार ज़मीन के विल्कुल नज़दीक पहुचकर फिर से ऊपर चला गया।

आखिर वह ज़मीन पर उतर ही गया।

इस हवाई जहाज़ म से तीन आदमी वाहर निकले – एकदम नौजवान नकचप्पा हवावाज़, जिसके माथे पर विरजित वाला की सफ़ेद लट लहरा रही थी, टोड-जीन और मेहनतकश पार्टी की केद्रीय समिति का सेक्रेटरी। साही जैसे छोटे छाटे तथा घन वालावाला सेक्रेटरी लगभग पचास साल का हृष्ट-पुष्ट आदमी था। उसन प्रान्त के राज्यपाल स हाथ नही मिलाया, उसे एक तरफ़ को ले गया और वहा दवी घुटी, मगर गुस्से से भरी आवाज़ मे उसके साथ वातचीत करन लगा। राज्यपाल ख़दावा धीरे-धीरे कुछ कहता और सिर झुकाता जा रहा था। टोड-जीन ने शब्दो पर ज़ोर देते हुए वोलोद्या को वतलाया –

"केन्द्रीय समिति के साथी सेक्रेटरी अव खुद यहा काम करेगे। बहुत ही कमाल के साथी है ये। हमारे विरोधिया ने उन्ह अनक सालो तक हथकडिया-वेडिया पहनाकर लकडी के पिजरे म वन्द रखा, हा, सच। हमारे सभी लोग इन्ह जानते है, महनतकश इन पर भरासा करत है और इस तरह के लाग इनसे डरते कापते है। डरत रह।"

केद्रीय समिति का सेक्रेटरी घोडे पर सवार होकर लेफ्टीनन्ट के साथ महामारी रक्षा घेरा देखने चला गया। खारा के लोग मशालो की रोशनी म रात भर काम करते और भारी परिवहन हवाई जहाज़ा के उतरने के लिए हवाई अड्डा वनाते रहे। ये हवाई जहाज़ सरातावं से दिन रात उडे चले आ रह थे, ताकि काली मौत को रोक सक। माथे पर वाला की लटवाले हवावाज़ पाशा ने सुवह के वक्त तली हुई मुर्गी खात और उसे ठण्डे दूध के साथ नीचे उतारत हुए वालाद्या से पूछा –

"यह प्लेग क्या सचमुच ही इतना भयानक छूत का रोग है? क्या? शायद राग से इसका आतक ज्यादा है! मेरे यहा तो पूल्का नाम का कुत्ता था, वहुत ही लाडला। उसे भी प्लेग हो गयी थी और मैं, मरी मा और वहन उसे गोद म उठाय रहत थे। हम तो कुछ

नही हुआ। किसी को छूत नही लगी। मेरी बहन तो, जिसे बहुत ही दया आती थी, कुत्ते का चूम तक लेती थी "

"वह दूसरी किस्म की प्लेग है!" वोलोद्या ने कहा।

"दूसरी किस्म की प्लेग से क्या मतलब है? प्लेग तो प्लेग है!" उसने अपनी लट झटकी।

कुछ रुककर उसने कहा—

"न जाने क्या मुझे हड्डी चिचोडना इतना अधिक पसन्द है? क्या यह आदत मुझे अपने बुजुर्गो से खून म मिली है, साथी डाक्टर? क्या इसका कोई वैज्ञानिक स्पष्टीकरण है?"

वोलोद्या ने उससे युद्ध की स्थिति के बारे मे पूछा।

"फिलहाल तो व बढते जा रहे है," पाशा ने कहा। "हमे काफी जोर से पीछे धकेलते जा रहे है। हमने कुछ इलाके, ज़ाहिर है कि वक्ती तौर पर, खो भी दिये है। लेकिन मेरे ख्याल म तो आपकी इस प्लेग जैसा ही मामला है। ठीक ही उसे खाकी प्लेग कहा जाता है। जब तक हम अच्छी तरह से सगठित नही हो जाते, यह खाकी प्लेग हमे हडपती जायेगी। लेकिन जैसे ही हम पूरी ताकत से उसके सामने डट जायेगे, सब कुछ ठीक ठाक हो जायगा। सबसे बडी चीज़ तो यह है कि हम बौखला न उठे और अपनी हिम्मत बनाये रखे। आखिर प्लेग सारी मानवजाति को तो नही हडप सकती! इसी तरह फासिज्म भी सोवियत सत्ता का खात्मा नही कर सकता।"

कुछ देर बाद टोड जीन आया और उसने वोलोद्या से पूछा कि क्या मास्को से आनेवाले डाक्टरो के सम्मान म फौजी सलामी दी जाये? कूटनीति की किताबो मे इस सम्बन्ध मे क्या लिखा हुआ है? वोलोद्या को यह मालूम नही था। हवाबाज़ पाशा को भी इसकी जानकारी नही थी, लेकिन उसने इतना ज़रूर कहा कि ऐसा करने म "कोई हर्ज" नही है। केन्द्रीय समिति के सेक्रेटरी ने कुछ सोच विचारकर यह फैसला किया कि डाक्टरो के सम्मान म फौजी सलामी भी दी जाय और बैंड पर 'इटरनेशनल" की धुन भी बजे।

जैसा कि पहले से तय था, सुबह के छ बजे वोलोद्या घोडे पर सवार होकर तिराहे के बीच बहुत बडे सफेद पत्थर के करीब पहुचा।

यहा रोग रक्षा घेरे की चौकी थी और बन्दूक लिये हुए जनतन्त्र के सनिक किसी को भी जावान इलीर क्षेत्र से खारा म नही आने दे रह थे।

घोडे पर सवार तूश इन्तजार कर रही थी। बडे-बडे अयालवाला उसका छोटा-सा घोडा सिर झटककर पशुओ को डसनेवाली मक्खिया को दूर भगा रहा था। हवा का रुख वोलोद्या के अनुकूल था, इसलिए उसे चिल्लाना नही पडा। मगर इसके विपरीत बहुत जोर लगाकर बोलने से तूश का तो चेहरा भी लाल हो गया।

"लाइसोल चाहिए," उसने चिल्लाकर कहा। "बहुत अधिक लाइसोल चाहिए! फेफडावाली प्लेग है, हा। बहुत-से मर चुके हैं, रोगी बहुत हैं, उन्हे खिलाना पिलाना चाहिए, एक-दो डाक्टरो से काम नही चलेगा, बहुत बडी महामारी है। और वैक्सीन चाहिए, बहुत सारी वक्सीन "

तूश के काले बाल हवा म लहरा रहे थे। रोग-रक्षा घेरे की चौकी के सनिक इस जवान औरत को भय और प्रशसा की दृष्टि से देख रहे थे।

"शाबाश, तूश!" वोलोद्या ने चिल्लाकर कहा। "जल्द ही हम सभी तुम्हारी मदद को आ जायेंगे। रूस से डाक्टर, बहुत-से डाक्टर उडे आ रहे है। हवा म, हवाई जहाजा मे! थोडा और डटी रहो, तूश, कुछ घण्टे और!"

"हम डटी रहगी!" तूश ने चिल्लाकर जवाब दिया।

और चाबुक सटकारकर अपने घाडे को उस तरफ भगा ले चली, जिधर खेमा के ऊपर काले कपडे लटक रह थे।

इसी वक्त खारा मे हवाई जहाजा के उतरने के लिए बनाये गय मदान म पहला परिवहन हवाई जहाज उतर भी चुका था। इस हवाई जहाज के दायें-बायें पहलुओ और पखो पर रेड आम तथा सोवियत सघ के परिचय चिह्न बन हुए थे। सफेद फौजी जाकेटे पहने सनिक, जिनके कधा पर फीतिया तथा रुपहले अधिकार चिह्न लगे थे, बन्दूकें सीधी करके फौजी सलामी दने को तयार हो गये। बड-मास्टर न अपनी छडी हिलायी और छाटा-सा बैंड "इटरनशनल" की धुन बजान

नगा। वोलोद्या को अपना गला रुधता सा प्रतीत हुआ। सम्भवत उनींदी राता ने अपना रग दिखाया था।

'इटरनेशनल' के गूजते स्वरो के वातावरण मे हवाई जहाज का दरवाज़ा खला और धातु की सीढी बाहर लटकायी गयी। टोड जीन और केन्द्रीय समिति का सेक्रेटरी अपनी टापिया क छज्जा के साथ हाथ सटाये निश्चल खडे थे।

अगर सभी शोषक, जल्लादा
पर भारी तूफान घिर,
तो भी सूरज चमके हम पर
किरणे मदु खिलवाड करे

बिल्कुल साधारण-स रूसी डाक्टर सफर म सिलवटें पडे कोट और वरसातिया पहने तथा सफरी थैले, पोटफोलियो और सूटकेस उठाये हुए हवाई जहाज के करीव एक क्तार म खडे होकर "इटरनेशनल" गा रहे थे। व सम्मान सूचक सनिक अभिवादन से अपरिचित थे, अथवा यह कहना अधिक सही होगा कि उन्होने ऐसे अभिवादन की आशा नही की थी। इसलिए जव पके वालावाला लफ्टीनेट खास ढग स ऊचे-ऊचे कदम उठाता हुआ अपने सनिका का महमाना के करीव स लेकर गुजरा, ता वे क्षण भर को स्तम्भित रह गये। प्रोफेसर वारिनाव न रिपाट सुनकर शिष्टतापूवक कहा—

"वहुत धयवाद दता हू आपको। वडी खुशी हुई!"

सनिका के जाने पर बुनी हुई जाकेट पहने, तादवाल एक वुजुग डाक्टर न वालाद्या से पूछा—

"ता क्या यही महामारी फली हुई है?'

दूसरे, अपेक्षाकृत कुछ जवान डाक्टर ने कहा—

"मुझे लगता है कि हवाई जहाज के हिचकाला स मरी तवीयत कुछ खराव हो गयी है।'

एक जवान डाक्टरनी न डाक्टर वास्या स कहा—

'गर्मागम शारवा खान का कितना मन हा रहा है। मास्को म पिछल चार दिना स दापहर का खाना नहा खा पायी। हवाई जहाज म सडविच ही मिलत रहे। यहा हम कुछ खिलायेंगे पिलायेंगे या नही?'

खिलाने पिलान की पूरी तैयारी थी। "मदाम बावचिन" ने रात भर म वह सब कुछ कर डाला था, जो उसके बस मे था। दादा अबाताइ न उसकी मदद की थी, और भूतपूर्व शमान ओगू ने आटा गूधा था। यही, हवाई जहाजो के उतरने के मैदान के करीब ही मेजे लगा दी गयी। वोलाद्या की बाते सुनते हुए प्रोफेसर अर्कादी वालेन्ती नाविच वारिनोव बडे मजे से पत्ता गोभी का शोरवा खा रहे थे। और प्रोफेसर के दुबले पतले चेहरे, उनकी पुराने ढग की दाढी, चश्मे की टूटी कमानी और आखो के करीब झुरियो को एक पहलू से देखते हुए वोलोद्या मन ही मन सोच रहा था कि बीसवी सदी म प्लेग की एक भी ता ऐसी महामारी नही थी, जिसमे इस दुबले-पतले और छोटे-स आदमी ने हिस्सा न लिया हो। ओदेस्सा मे गामालेय न, भारत और मगोलिया म जावोलोत्नी ने इनसे हाथ मिलाया, यह देमीन्स्की स परिचित थे, इन्हाने मचूरिया मे प्लेग के रोगिया का इलाज किया और अस्त्राखान की महामारी म मरते मरते बचे। इ होने ओश्ताद्त के करीब प्लग की प्रयागशाला मे काम किया, यह डाक्टर विज्निकेविच को जानते थे और इन्होने उसे तथा डाक्टर श्राइबेर को अपने हाथा स मिट्टी दी। फिर भी मैदान मे डटे रहे और अब सत्तर साल की उम्र म भी प्लग के खिलाफ जूझ रहे है।

"हा, हा, कहते जाइये।" वालोद्या को सुनते हुए वारिनोव सिर हिलाते जा रहे थे। "हा, हा, समझ गया "

जब तक डाक्टरो, नर्सो और परिचारक-परिचारिकाओ का खाना-पीना खत्म हुआ, तब तक दूसरा और फिर तीसरा हवाई जहाज साज-सामान लकर आ गय। हजारा खारावासी हवाई जहाजो के उतरन के मदान को घेरे खडे थे, अद्भुत मेहमाना के प्रति आदर भाव दिखाते हुए फुसर-फुसर कर रहे थे, पर चूकि सभी कानाफूसी कर रहे थे, इसलिए ऐसा प्रतीत होता था मानो हवा सरसरा रही हो। बस मुख्यतया उनकी फुसर-फुसर वोलोद्या के बारे म ही थी। यह तो इसी आदमी म इतनी ताक्त है कि इसके चाहते ही इतन बडे-बडे हवाई जहाज उडत हुए यहा आ पहुचे। भूतपूर्व शमान ओगू भीड म स रास्ता बनाता हुआ हर आदमी के कान म यह कह रहा था—

"सब कुछ कर सकता है यह महान सोवियत डाक्टर वालाद्य मैं याही तो उसकी मदद करने को राजी नही हो गया था। वहुत तक उसने मेरी मिन्नत समाजत की, तव में मान गया। यकीन मानि जल्द ही मैं उससे सव कुछ सीख जाऊगा!"

शाम को वोलोद्या सराताव से आये इन प्लेग विशेषज्ञो के स महामारी के गढ – जावान इलीर – मे पहुच गया। प्रोफेसर वारिनो टोड-जीन और वालोद्या के घाडे एक दूसर के पास पास चल रहे इसीलिए वारिनोव ने मजाक म इन तीना का "तीन सूरमा" क था। इनके पीछे पीछे दूसरे डाक्टर, नर्सें, परिचारक परिचारिकाए अ कीटाणुओ का नाश करनेवाले लोग दवाए छिडकने के अपने यन्त वातल, सास लने के नकाब और कनस्तर, आदि लिये घोडो चुपचाप चले आ रहे थे। वोलोद्या न जब मुडकर देखा, तो उसे ल कि मानो एक अनुशासित, शस्त्रास्त्र स अच्छी तरह लस, अ काय म दक्ष और अजेय सेना बढी जा रही है। उसे इस चेत से गव की अनुभूति हुई कि वह खुद भी इस सना का ए सैनिक है।

डूबते सूरज की गुलाबी राशनी म जब काल मनहूस कपडे सा नज़र आने लगे, तो उनमे कोई तीन सौ मीटर की दूरी पर बारिनो न "प्लेग विरोधी सूट पहन लो" का आदेश दिया। यह आदेश वोलोद्या को फौजी हुक्म जैसा लगा। उसन महसूस किया मानो य "धावा वोलन" का सकेत था।

लाग जल्दी जल्दी रवड के ऊचे जूत और सूट पहनन लगे, फी कसने, हसी मजाको के बिना चुपचाप एक दूसरे की मदद करने लगे इस अनुशासन और शान्ति न भी वोलोद्या को बार बार सेना की या दिलायी।

"अरे, वाह," प्रोफेसर बारिनोव ने अचानक डीग हाकी। "मैं यह ता कभी सोचा ही नही था कि अभी भी मैं घाडे की सवारी क सक्ता हू। गुदास्थि म भी अब वैसे दद नही हाता, जस जवानी के दिना म होता था।"

घाडे को लगाम स पकडकर ले जाते हुए उन्होने झुझलाकर इतना और जोड दिया –

"शोरवा ज्यादा नही खाना चाहिए था। कितनी वार मन मे यह प्रतिज्ञा की है कि चर्बीवाली चीजा का अधिक उपयोग नही करुगा '

डडा पर काले कपडोवाले खेमे अधिकाधिक निकट आते जा रहे थे। काफी दर से विना दुही एक गाय खरखरी और दद भारी आवाज म रभाती हुई वोलोद्या के करीब भाग रही थी। वारिनाव न उससे कहा—

"दूर भाग गऊ! हम तुझे दुहना नही आता!"

सास लेने के नकाव के नीचे स उनकी आवाज़ दवी-घुटी सी सुनाई दी।

साफिया इवानाव्ना आर तूश पहले, वडे सारे खेमे के पास खडी थी। थकान के कारण वे मुश्किल से ही खडी रह पा रही थी। मोफिया इवानोव्ना स पूरा हाल चाल सुनन के वाद वारिनाव न उसे और तूश को आराम करन का आदेश दिया। वालोद्या का फिर से यह महसूस हुआ कि ये गैरफौजी प्राफेसर एक जनरल की तरह हुक्म दे सकते हैं। डाक्टर लावोदा, दल का "क्वाटर-व्यावस्थापक", डाक्टरा के लिए शिविर तैयार करने के काम म जुटा हुआ था। रहन के लिए तम्बू-घरा, प्रयागशालाओ और गादामो की भी व्यवस्था की जा रही थी। एक झील और कीक-जूब की सुदर चट्टाने भी करीव ही थी। यद्यपि रात हाते तक सव व्यवस्था हो गयी थी, तथापि काई भी डाक्टर, नस या परिचारक सोया नही। अपनी टार्चो से अधेरे तथा सुनसान खेमा का रोशन करते हुए वे लाशो का वाहर लाते, स्थाना का साफ और कीटाणुमुक्त करत रह, रोगिया को खिलाते पिलाते, उनके फेफडा, दिला और नब्जो को जाचते तथा वारिनाव और उनके वडे सहायक शुमीलाव के आदेशा की राह देखते रहे। सास लेन के नकाव और आखा की सुरक्षा के चश्म लगाये तथा रवड के ऊचे जूत पहने डाक्टरा की सफेद आकृतिया अटपटे ढग से, किन्तु दवे पाव हिलती डुलती रहा, रोगिया की वुदवुदाहट और आह-कराह डाक्टरा की धीमी धीमी और दवी घुटी आवाजे, दवाइया छिडकन के यन्त्रो की सू-सू और आधी रात स शुरू हो गयी वारिश की उदासी भरी रिमझिम की आवाज से घुलती मिलती रही।

प्लेग विराधी सूटा म गर्मी महसूस हो रही थी, चिपचिपा पसीना चेहरे, पीठ और कधा पर वहा आ रहा था, दस्तानावाले हाथा म

पिचकारी मुश्किल से पकडी जा रही थी, यहा तक कि स्टेथास्कोप का उपयोग भी असुविधाजनक था। वालोद्या की कनपटिया म खून वज रहा था और सुवह हाते तक उसका सिर चकराने लगा। लेकिन अगर प्रोफेसर वारिनोव डटे हुए थे, ता वालाद्या कस मदान छाड सकता था?

उस सारी लम्बी रात को व घोडा पर एक शिविर स दूसरे तक जाते, स्वस्थ लोगा का रागिया स अलग करते, हरारत जाचते और वैक्सीन के टीके लगाते रहे। उन्हान यह तय किया कि रागिया को कहा अलग रखा जाये, कहा खाना पके और स्वस्थ लोग कहा रह। टोड-जीन यातनाग्रस्त और डरे-सहमे लागा को कडाई स शिक्षा देता रहा, उसकी आवाज अवाध शक्ति से गूजती रही और कही तथा किसी ने भी उसकी वात का विरोध नही किया।

परेशानी की इस रात म जव वे चौथे शिविर म पहुचे, तो वोलोद्या ही सबस पहले उस खेमे मे गया, जहा सिफ मुर्दे ही पडे थे। नीचे झुककर टाच की रोशनी म उसे एठन स खुले हुए मुन्दर और मजबूत दात, प्राण निकल जाने के कारण सफेद और ज्यातिहीन हुई आखे और मुडी हुई बाहे दिखाई दी। मौत क इस सन्नाटे म वोलोद्या को मानो किसी बच्चे के राने की वहुत ही क्षीण, वडी मुश्किल स सुनाई देनेवाली आवाज का आभास हुआ।

"खामोशी!" वोलोद्या ने उन परिचारको से कहा, जो मुर्दों के इस खेमे मे यन्त्र से दवाई छिडक रहे थे।

वोलोद्या एक कदम आगे बढकर रुक गया। मृत मा अभी तक जीवित बच्चे को वाहा मे भर हुए छाती से चिपकाये थी। मुर्दा मा की ठण्डी बाहा से दबा हुआ शिशु धीरे धीरे छटपटा और रो रहा था।

वालोद्या बच्चे की ओर झुका। टाड-जीन ने उसकी मदद की और परिचारक ने वच्चे को वोलोद्या के हाथ से ले लिया। नस बच्चे को उस खेमे म ले गयी, जहा रोगिया को अलग रखने की व्यवस्था थी।

उषा आई, बहुत नम और असह्य रूप से उमस भरी। स्तेपी म वारिश की चादर-सी छा गयी। वारिनोव तिरपाल के शामियाने

के नीचे वठे हुए नक्शे की मदद स महामारीग्रस्त क्षेत्रो की जानकारी प्राप्त कर रहे थे। उनके निकट ही रेडियो ऑपरेटर कीक जूव म डाक्टर लोवादा क साथ रडियो-सम्पक स्थापित करने की कोशिश कर रहा था। प्राफेसर वारिनाव का सास लेने का नकाव इस वक्त छाती पर लटक रहा था, सुरक्षा चश्मे को उन्हाने उतारकर अपनी जेव म डाल लिया था और टोपी को पीछे पीठ पर खिसका दिया था।

"थक गय?" वारिनोव ने वोलोद्या से पूछा।

"ज़रा भी नही!" वालाद्या न वडी शान से जवाव दिया।

पीछे की भ्रार स टाइ-जीन तिरपाल के शामियाने म आया और वोला—

"कितनी भारी मुसीवत है, है न। साथी प्रोफेसर, कसे ऐसी मुसीवत का हमेशा-हमेशा के लिए अन्त किया जा सकता है?"

प्रोफ़ेसर वारिनोव ने सिगरेट का लम्बा कश खीचा, टोटा बुझाया और सोचते हुए जवाव दिया—

"मेरे प्यारे साथी, डाक्टर के नाते मुझे आपसे यह कहना होगा कि ऐसी मुसीवत का राज्य का ढाचा वदलकर ही खत्म किया जा सकता है। सोवियत सघ मे अब न तो प्लेग है, न चेचक और न दूसरे महामारी रोग ही वहा रहे है। लेकिन कुछ ही अर्सा पहले, मेरे अपने ही वक्तो म रूस म हर साल चालीस हज़ार आदमी चेचक से मरते थे और कम से कम दो लाख आदमी अधे, वहरे यानी काय अक्षम हो जाते थे "

"मैं स्वित्स्यूक वोल रहा हू!" रेडियो ऑपरेटर खुशी से चिल्ला उठा। "मैं स्वित्स्यूक वोल रहा हू! साथी लोवोदा, हमे बीस थर्मामीटर, तामचीनी की वालटिया और अकुडा भेज दीजिये और यह भी "

उसन हाठ हिलाते हुए नोट-वुक देखी और फिर वोलोद्या से कहा—

"साथी डाक्टर, मुझसे यह शब्द वोला नही जा रहा।"

"फोनेनडोस्कोप!" वोलोद्या ने पढा और उसे रिसीवर पर दोहरा दिया—फो-नेन डास्कोप।"

इन लागो ने थमस से गम काको पिया और घोडो पर सवार हो गये। रडियो ऑपरेटर अभी भी चिल्लाता जा रहा था—

"एक रमीज, बच्चे की। हे भगवान, यह नही, बच्चे की! ए
बच्चा मिला है उसकी मा से! मा मर गयी, लेकिन बच्चा हम मि
गया है।"

"स्त्रित्स्पूर, काम की बात करो!" वारिनोव न घाडे की लगा
हाथ म लेते हुए कहा।

अचानक कुछ दूरी पर मशीनगन की गोलियो की धीमी बौछा
सुनाई दी।

"यह क्या है?" वोलोद्या न पूछा।

टोड-जीन न रकाबो म ऊचा उठकर बहुत ध्यान से सुनने व
कोशिश की। कुछ और बौछार हुई।

"यहा सीमा रेखा बहुत निकट है," टाड-जीन न कहा। "यह
र्वालन राम-टाकियो का सगम है! फासिज्म, हा! आइये चल!"

उसने घोडे को चाबुक मारा और काठी के ऊच अग्रभाग प
झुक गया। हवा वोलोद्या के कानो म फौरन सीटी बजाने लगी, घा
तनिक हिनहिनाते हुए ऐसे जोर स सरपट दौडने लगे मानो रास्ते वे
बिना नम खड्ड म उडे जा रहे हो। पन्द्रह मिनट से अधिक उन्होन इस
तरह घाडे नही दौडाये और वोलोद्या लगातार मुड मुडकर बुजु
वारिनोव की तरफ देखता रहा। आखिर वे एक टीले पर पहुचे
वोलोद्या को वहा से फौरन ऊची बरसातियो पहने जनतन्त्र के सीमा
सनिक दिखाई दिय, पीली, ऊची और लपलपाती ज्वाला नजर आई
और सिर के ऊपर हवाई जहाजो का शोर सुनाई दिया। बहुत छोटे,
मानो कटे हुए बाडीवाले जहाजो के पखो पर दोरगे घेरे थे। य जनतत्र
के जगी, लडाकू हवाई जहाज थे।

"कुछ भी समझ मे नही आ रहा!" वारिनोव ने परेशान होते
हुए कहा। "यहा आग लगी है क्या?"

बडी मुश्किल से सास लेता और मुट्ठिया भीचता हुआ वोलोद्या
टकटकी बाधकर वहा देख रहा था राज्य-सीमा के परे, जनतन्त्रीय
सेनाओ के रोग रक्षा घेरे के परे सम्राट की सेनाए प्लेग की महामारी
के विरुद्ध सघर्ष कर रही थी। सम्भवत उन्होने यन्त्रो से तरल आग
फेंककर सीमावर्ती बस्तो को जला डाला था और अब मशीनगन चालक
गोलियो की बौछारो से उन सभी को भून रहे थे जो लपटो म से

निकल भागने की कोशिश कर रहे थे। वोलोद्या ने देखा कि मशीनगना और उन्ह चलानवालो की सख्या वहुत वडी है और फिर इधर उधर नजर दौडाने पर उसे मोटर साइकला की साइडकारो पर तरल ग्राग फेंकनेवाले यन्त्र भी नजर ग्राये। ऊपर, टीले की चोटी पर तोपे रखी हुई थी और उनके मुह जलती हुई वस्ती की तरफ ये

"यह ग्रसम्भव है!" प्रोफेसर वारिनाव ने कहा। "या यह "

वात उनके मुह म ग्रधूरी ही रह गयी।

हाथ ऊपर उठाये कुछ छोटी छोटी मानव ग्राकृतिया ग्राग की लपटो म से वाहर निकली। वे वारिश मे भाग रही थी, लपटो म से वच निकली थी, वच गयी थी

इसी वक्त कई मशीनगनो ने एक साथ गालिया की छोटी छोटी वौछार की। खाकी वर्दिया ग्रौर हवावाजा जसी तिरछी टापिया पहन छोटे छोटे खिलौनो जैसे सैनिका न वहुत ही थोडी थोडी गोलिया वरसायी। डर स पगलाये ग्रौर वदहवास लोगा का मारना तो कुछ मुश्किल नही होता।

फिर भी एक ग्रादमी भागता रहा। वह वहुत तेजी से एक तरफ को, सीधे ग्रौर फिर वाये दौडा। वह सीमा रखा की तरफ दौड रहा था। वह जानता था कि वहा उसे गिरफ्तार किया जा सकता है, दूसरो से ग्रलग रखा जा सकता है, मगर मारा नही जायगा। यहा उसे मारा नही जा सकता।

मगर उन्हाने उसे वही मार डाला!

उन्होन गोलिया की एक लवी वौछार की ग्रौर एक ग्रोर का भागता हुग्रा ग्रादमी गिर पडा।

तव ग्रचानक छा गयी खामोशी म ग्राग फकने के यत्रवाली एक मोटर साइकल फट फट का शार करने लगी। छोटे छोटे, चित, निश्चल तथा वेजान पडे हुए लोगा पर ग्राग की तेज ग्रौर पीली-सी लपट गिरी। वालोद्या ने मुह फेर लिया, उसके दात वज रहे थ ग्रौर ग्राख ग्रासुग्रा से धुधला गयी थी। वस्ती हल्की वूदा-वादी म जल रही थी, जलती जा रही थी, लपटे पहल की तरह ही फडफडा तथा सिसक रही थी ग्रौर धुए के काल घने लहरिये जमीन के नजदीक ही लटके हुए थे मानो उन्ह ऊचे उठते हुए डर महसूस हो रहा हा।

"सुनिये तो!" बारिनोव न अचानक टोड जीन स कहा। "उनके स्वास्थ्य रक्षा दल के कमाडर को यह सूचना भिजवा दीजिय कि मै उससे बात करना चाहता हू। मै—प्राफेसर बारिनोव, जो उनकी विज्ञान अकादमी का सम्मानित सदस्य हू और उन्ही अन्तर्राष्ट्रीय सभा सम्मेलनो मे भाग ले चुका हू, जिनमे उन्होने भी भाग लिया।" टोड-जीन ने सीमा सेना के एक अफसर का अपने पास बुलाकर यह सन्देश दिया। यह अफसर वद माग अवरोध के करीव गया और वहा उसने सम्राट की सीमा-सेना के कप्तान से कुछ बातचीत की। कप्तान न फौजी सलामी दी। जनतत्र के सेना अफसर ने भी ऐसा हो किया। सम्राट की सेना के सैनिक अपनी सुस्ती दूर करने के लिए मशीनगना क निकट कुश्ती लड रहे थे, जब-तब जलती बस्ती पर नजर डाल लेते थे। हवाई जहाज चले गये।

मेढक जैसे रग से रगी हुई साइडकारवाली माटर साइकल जोर से ब्रेको की आवाज करती हुई माग अवराघ के कराब रुकी। साइड कार मे से नाटा, खाकी वर्दी मे बहुत ही ठाठदार अफसर निकला। वह मोटे शीशो का चश्मा, ऊचे सिग्वाली फौजी टापी और बढिया, चमकत चमडे का पायतावा पहने था। अपने जवडे का कसकर भीचे हुए प्रोफेसर बारिनोव ने घोडे को एड लगायी। टोड जीन और वालोद्या ने उनके पीछे पीछे अपन घोडे वढाये। जव वे माग अवरोध के निकट पहुचे, तो सम्राट की सेना के डाक्टर ने अपनी सिगरेट खत्म की। वारिनाव का नाम और उनकी सभी उपाधिया और सम्मान-पद सुनन क बाद डाक्टर न अपनी हथेली को वाहर करके फौजी सलामी दी। वहुत ही सम्मानसूचक ढग से अपने हाथ को फौजी टोपी स सटाय हुए ही इस फौजी डाक्टर ने वताया कि वलिन की प्रयोगशालाओ और अपन देश के प्रायोगिक महामारी सस्थान म भी उसे प्रोफेसर बारिनोव के ग्रन्थ पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जहा तक प्लेग विरोधी विशेष फौजी दस्ते द्वारा यहा की गयी कारवाइया का सम्बध है, जिन्ह प्रोफेसर ने दखा है, तो निश्चय ही इससे मन पर वहुत असर पडता है। लेकिन अगर फेफडावाली प्लेग म सौ प्रतिशत मृत्यु-दर हो, तो दूसरा रास्ता ही कौन-सा हो सकता है? स्पष्ट है कि एसी स्थिति

म सबसे विवेकसगत और मानवीय उपाय यही रह जाता है कि महामारी की लपट म प्राय क्षेत्र को जला डाला जाय। खास तौर पर इसलिए भी कि इस वक्त यह रोग बहुत ही नीचे स्तर की पतनामुख और कुल मिलाकर अनुपयोगी अल्प जाति म ही फला हुआ है। वैसे इस प्रश्न पर, जस कि साम्राज्य के सर्वोच्च महामारी केन्द्र के किसी भी अन्य आदेश पर भी कोई वाद विवाद सम्भव नही।

इतना कहकर पतले-पतले होठ पर पतली-पतली मूछोवाले इस बन-ठन डाक्टर ने एड़िया बजायी।

"अपनी अकादमी को सूचित कर दीजिये कि मैं उसका सम्मानित सदस्य नही रहना चाहता!" वारिनोव ने अग्रेजी म बहुत ऊची आवाज़ म कहा। "और खुद भी यह याद कर लीजिये कि जब आप पर मुकदमा चलाया जायेगा और अगर मैं तब तक ज़िन्दा रहा, तो खुद अभियोक्ता होना चाहूगा। और उन सभी डाक्टरो का प्रतिनिधित्व करूगा, जिन्होने प्लेग के विरुद्ध सघर्ष करते हुए अपने प्राण दिये। मुझे इसका हक हासिल है। समझ गये?"

"समझ गया!" फौजी डाक्टर ने, जिसके चेहरे का रग उड गया था और जो अभी तक अपनी टोपी से हाथ सटाये था, जवाब दिया। "मगर शायद ही प्रोफेसर उस मुकदमे के दिन तक ज़िन्दा रह पायेंगे। पश्चिमी देशो के छक्के छूट रहे हैं और हिटलर की फौजे जीत के झण्डे फहराती बढी जा रही है।"

जल्दी से एड़िया बजाकर वह अपनी मोटर साइकल की साइडकार म जा बैठा।

इनके घोडे जब खड्ड से बाहर निकल आये, तो वारिनोव ने रूमाल निकालकर बारिश से भीगा हुआ अपना चेहरा पोछा, गहरी सास ली और यह अफसोस ज़ाहिर किया—

"बडा मन हो रहा था उसे चाबुक मारने को। तोबड़े पर! खैर कोई बात नही, मुकदमा होने तक तो मैं ज़िन्दा रह ही जाऊगा।"

"ज़रूर ज़िन्दा रह जायेंगे!" बोलोद्या ने बडी गम्भीरता से विश्वास दिलाया।

इस दिन इन्होने छ अन्य खेमो का दौरा कर लिया। शाम को शिविर म घण्टी बजी। यह तो प्रोफेसर वारिनोव ने "लघु बैठक"

बुलायी थी। अब हर दिन ऐसी छोटी बैठके होती थी और वे वोलोद्या को हमेशा *निर्णायक लडाइया के पहले सैनिक-परिषदा या मुख्य सैनिक कार्यालया* मे होनेवाली उन बैठको की याद दिलाती थी, जिनके बारे मे वोलोद्या ने किताबो मे पढा था।

सैनिक परिषदो की बैठको की भाति डाक्टरो की इन बैठको म भी बहुत सक्षिप्त तथा काम-काजी ढग से शत्रु की शक्ति के बारे मे गुप्त रूप से प्राप्त सूचनाए दी जाती थी, अपनी हानियो का उल्लेख किया जाता था, हथियारा और लडाई के साज-सामान यानी सीरम, वैक्सीन, रसद, दवाइयो और परिवहन-सुविधाओ, आदि का हिसाब-किताब जोडा जाता था। यहा मज पर नक्शा बिछा हुआ था और जनरल (डाक्टर प्रोफेसर वारिनोव को अपना जनरल ही कहते थे) काले चौकारा से अकित स्थाना पर देर तक विचार करते थे। इन्ही स्थाना पर शत्रु था यानी प्लेग का राग फैला हुआ था। युद्ध-क्षेत्र से सम्पक जाडनेवाला टेलीफान भी जनरल के खेम मे लगा हुआ था और रेडियो आपरेटर प्राप्त होनेवाले सन्देशो का जल्दी से वारिनोव के सामने रख दता था। कमिसार टोड-जीन सीधे सम्पक द्वारा हर दिन खारा मे प्लेग विराधी परिषद के अध्यक्ष का स्थिति की सूचना देता। वह यही कहता—

"सब कुछ ठीक ठाक है! रोगग्रस्त क्षेत्र के बाहर कोई घटना नही हुई, हा!"

डाक्टर केवल "लघु बैठका" म ही मिलते। बाकी सारे वक्त रूसी डाक्टर और नर्से, दिन रात प्लग के विरुद्ध, "*काली मौत*", "मार्मोट रोग" के विरुद्ध जूझत रहते, जो इस छाटे-से पूरे देश, उसके *पशुपालका और हलवाहा, शिकारिया और मजदूरो*, वद्धो, जवानो और बच्चा, इसके पूरे भविष्य को ही हडप सकता था।

वारिनोव ने अपन डाक्टरो के सान के बारे मे बहुत कठार नियम बना रखा था। उन्होंने जो *काय-तालिका* बनायी थी, उसका कडाई से पालन करवाते थे। सान और अच्छी तरह से खान का हुक्म द रखा था। उनीदा और भूखे पेट डाक्टर वहूत भयानक, काई ऐसी भूल कर सकता था, जिस सुधारना असम्भव हो सकता था। वह, जसा

कि बार्तिनोव कहते थे, अपनी "वेध्यानी" के कारण अपने को प्लेग की छूत लगा सकता था।

"यह बिल्कुल सही है!" हवाबाज़ पाशा इस बात का समर्थन करता। "हमारी वायुसेना में भी इस मामले में बड़ी सख्ती बरती जाती है। तीन चार घण्टे न सोने का मतलब हो सकता है आसानी से मौत के मुंह में चले जाना। या तो हवाई जहाज़ में ही नींद आ जायगी या फिर वैसे ही ऊंघाई पैदा हो जायगी।"

पाशा अपने एयरोप्लेन में (वह हवाई जहाज़ की जगह एयरोप्लेन कहना ही पसन्द करता था) बहुत ही कम ऊंचाई पर पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण में उस सारे इलाके के ऊपर उड़ान करता, जहां महामारी फैली थी। वह खेमों को देखता कि कहीं काला कपड़ा तो नहीं लटकता, डाक्टर लोग राकेट छोड़कर किसी तरह की मदद पाने के लिए तो नहीं बुला रहे, खेमों से धुआं निकल रहा है या नहीं। कुल मिलाकर सब कुछ "ठीक-ठाक" है या नहीं, जैसा कि बड़ा चुस्त-फुर्तीला, गाने वाला और खरखरी आवाज़ वाला डाक्टर लोबोदा कहा करता था। बहुत नीची उड़ान करते हुए पाशा उन लोगों के सिरों के ऊपर से गुज़रता, जो मार्मोटों को मिटा रहे थे, चौड़े मुंहवाले दस्ताने से हाथ हिलाकर उनका अभिवादन करता, मानो यह कहता कि जुटे रहो अपने काम में, मैंने तो इधर से गुज़रते हुए ऐसे ही तुम्हारा हालचाल जानना चाहा है। वह शिविर में वापस आता, फव्वारा स्नान करता, खाता-पीता और फिर से उड़ान भरने लगता। डाक्टर और नर्सें इस सारे क्षेत्र के लोगों के शरीर का ताप जांचते, बीमारों को सीरम और स्वस्थों को वैक्सीन के टीके लगाते और परिचारक मुर्दों को दफ़्नाते। दूर के शिविरों में, जहां रोगी थे, गतिशील रसोईघर गर्म भोजन लेकर पहुंचता और निरोग होते हुए लोग, डाक्टर तथा अलग खेमों में रखे गये लोग उसे खाते।

रेडियो ऑपरेटरों से सन्देश मिलने पर बार्तिनोव अक्सर पाशा के साथ हवाई जहाज़ में जाते और जटिल रोगियों के मामले में सलाह-मशविरा देते। एक दिन उन्होंने अपनी "लघु बैठक" में कहा—

"साथियो, मैं आपको बधाई दे सकता हूं! अब बिल्कुल स्पष्ट हो चुका है कि महामारी इस क्षेत्र में सीमित हो गयी है, उसका ज़ोर

घटने लगा है और कुछ दिन बाद हम यहां अपना काम पूरा कर देंगे।"

उस रात को शिविर में आनेवाले सभी डाक्टर वारिनोव के आदेशानुसार नहा, बल्कि अपनी खुशी से मीठी नींद सोये। सुबह को नाश्ते के वक्त वालोद्या को खारो से डाक्टर वास्या का तार मिला। उसने बहुत ही भावुकतापूर्ण शब्दों में यह मांग की थी कि उसे "असली काम" के लिए बुलाया जाय। सोफिया इवानोव्ना ने कहा—

"हर आदमी को वही करना चाहिए, जो वह कर रहा है, यह उसका कर्त्तव्य है। और जो वह नहीं कर रहा है, दूसरे कर रहे हैं "

वालोद्या मुस्करा दिया। सोफिया इवानोव्ना में अब उसे कभी भी झल्लाहट नहीं होती थी। वह अब उसका वास्तविक, मानवीय महत्त्व जानता था।

शुक्र के दिन उन्होंने वहां से अपना शिविर समेटना शुरू किया। वोलोद्या खेमों का दौरा करके लौटा ही था, घोड़े से उतरा, तो उसे अपनी तबीयत कुछ खराब महसूस हुई। वह एक दो बार लड़खड़ाया भी। डाक्टर लोबोदा ने उसके क़रीब आकर सावधानी से कहा—

"शायद ठण्ड लग गयी है आपको?"

"हो सकता है!" वालोद्या ने रुखाई से जवाब दिया।

और खुद ज़रा मुस्कराकर रोगियों को अलग रखने के खेमे में चला गया। उसे इस बात का ज़रा भी शक नहीं रह गया था कि उसे प्लेग हो गयी है। उसकी बगल में दर्द हो रहा था और चाल भी प्लेग के रोगी की भांति "शराबी" जैसी थी। ज़बान पर "सफ़ेदी" थी, जो इस रोग का विशेष लक्षण है।

वालोद्या लेटा ही था कि वारिनोव चोगा पहने, किन्तु श्वास के नकाब के बिना खेमे में आये।

"ढंग से सब कुछ पहन लीजिये!" वालोद्या ने कहा। "नहीं तो मैं आप पर स्टूल फेंक मारूंगा।"

"आप मुझे अक्ल नहीं सिखायें!" वारिनोव ने जवाब में वोलोद्या को डांटा।

"दाहराता हू—मैं स्टूल फेंक मारूगा आप पर। मुझे प्लग है।"
वारिनोव वाहर चले गये। वोलोद्या न थर्मामीटर लगाया— ३८६ सटीग्रेड ताप था। वारिनोव और लोवादा सास लेने क नकाव पहन हुए खेम म आय और उनके पीछे तूश की झलक मिली। वोलोद्या अव खुद प्लग विराधी सूट, रक्षा चश्मे और सास लेन के नकाव के विना था और इन लागा की नकाव म स सुनाई दनेवाली दवी घुटी आवाज उसे वडी अजीव सी लग रही थी।

जव तक वालाद्या के वलगम की प्रयागशाला म जाच की गयी, वह खत लिखता रहा। उसका सिर चकरा रहा था गला सूख रहा था, इस वुरी तरह सूख रहा था कि वह लगातार पानी पीता जा रहा था। उसने लिखा—

"वार्या! इस खत का कीटाणुमुक्त कर दिया गया है, इसलिए तुम डरो नही। अजीव, पागलपन का किस्सा हा गया है। जव तुम इस खत को पढोगी, तो उस वक्त तक मुझे दफनाया जा चुका हागा। इस वक्त मैं कुछ कमजारी महसूस कर रहा हू मरना नही चाहता और यह है भी वेतुकी वात। वार्या मैं तुम्ह प्यार करता हू हमेशा प्यार करता रहा हू। समझी

वारिनाव फिर स खेम म आय और उन्हाने खुशमिजाजी से ऊचे कहा—

"सहयोगी, मर ख्याल म तो यह द्विपक्षी निमानिया है "

वोलोद्या ने रक्षा चश्म से ढकी हुई वारिनाव की आखा को गौर स दखकर कहा—

"आपन तो खुद ही वताया था कि अगर डाक्टर वीमार पड जाये, तो उन्ह आम तौर पर ऐस ही तसल्ली दी जाती है।"

"खैर आप लेट जाइये!" वारिनाव न वोलोद्या से कहा।

तूश फिर स दरवाजे पर दिखाई दी। वह वार्या और अग्लाया के पत्र लायी थी। वार्या ने समुद्री वेडे से खत लिखा था। "मैं समुद्री वेडे म हू," वोलोद्या ने पढा और आगे फिर से थियेटर की चर्चा थी। युद्ध के वारे म भी कुछ शब्द थे और यह भी लिखा था कि वोलोद्या क स्वभाव को ध्यान म रखते हुए अव उसके लिय वहा

"म्राकाइटिस म्रपेंडिसाइटिस", म्रादि का इलाज करना कितना मुश्किल होगा। वूम्रा म्रग्लाया ने भी जग के वारे मे लिखा था।

वोलोद्या खासा, मगर बलगम म लहू नही ग्राया। शाम को हवावाज पाशा खिडकी के वाहर प्रकट हुम्रा। उसने शीशे के साथ लगाकर यह नोट दिखाया—"मरे पास ब्राडी है, शायद पीना चाहोगे, डाक्टर?" वोलोद्या ने उसे ठेंगा दिखाया ग्रौर विस्तर पर लेट गया।

प्रयोगशाला मे वालोद्या के बलगम की दूसरी जाच से भी कुछ नतीजा नही निकला। इन्तजार करना जरूरी था।

दीवार के पीछे, दरवाजे के पास तूश लगातार वठी थी। वोलोद्या को उसकी हल्की फुल्की चाल ग्रौर फुसफुसाहट सुनाई द रही थी। सोफिया इवानाव्ना कई वार भीतर ग्राई ग्रौर उसने वोलोद्या से ऐसे हालचाल पूछा मानो वह वच्चा हो—

"हा, तो कैसी तवीयत है हमारी? हमने खाना खा लिया?"

"हम चाहते है कि ग्रपनी इस चतुराई के साथ सभी जहन्नुम मे चले जायें!" वोलोद्या ने जवाव दिया।

वोलोद्या के हाथ म थर्मामीटर था। ३९.६ सटीग्रेड। उसका जी मतला रहा था, वहुत वुरी तरह जी मतला रहा था।

रात को डाक्टर लोवोदा उसके विस्तर के करीव वठा रहा। वालोद्या सरसाम मे वडवडा रहा था। वाद को मोटा डाक्टर शुमीलोव वहा लावोदा की जगह ग्रा वैठा। निठल्लेपन से ऊवकर उसने मज से वह खत उठा लिया जो वालोद्या ने ग्रपनी वूम्रा ग्रग्लाया को लिखा था, पर पूरा नही कर पाया था। शुमीलोव ने पढा—"वहुत ही ग्रफसोस है कि कुछ भी नही कर पाया। वूम्रा, काश ग्रापने महामारी के विशेषज्ञो की यह महान सेना देखी होती काश ग्राप समझ सकती कि कसे लोग हैं ये। मिसाल के तौर पर डाक्टर शुमीलोव को लिया जा सकता है। देखने मे वह मोटे ठूठ जसा है, वेतुके लतीफे सुनाता है ग्रौर खुद ही पहले जोर स हसने लगता ह '

"यह भी खूब रही!" परेशान होते ग्रौर वुरा मानते हुए शुमीलोव न कहा। "मैं कव पहले ही हसन लगता हू?'

खत को मेज पर रखकर शुमीलोव ने सोते हुए वोलोद्या की नब्ज जाची ग्रौर ग्रचानक उस ठोडी तथा नाक पर एक सफेद तिकोण दिखाई दिया।

"तूश!" उसने पुकारा। "मेरी मदद कीजिये!"

इन दोनो ने सरसाम म बडबडाते हुए वोलोद्या को चित लेटा दिया और शुमीलोव न उसकी कमीज ऊपर उठायी।

"दाने!" खुशी भरी आवाज म उसन कहा। "आप देख रही हैं न, तूश? यह सच है कि मैं मोटा ठूठ हू। ठूठ ही नही, मैं तो उल्लू भी हू। वारिनोव को फौरन जगाइये। फौरन!"

अपनी मोटी-छोटी उगलियो से उसन सास लेने के नवन्च की डोरी खोली, चश्मा उतारा और टोपी को पीछे की ओर खिसका दिया। गर्मी के कारण पसीने से तर उसके मोटे, फूल गालोवाले चेहरे पर खुशी झलक रही थी।

"लाल बुखार है!" उसने वारिनोव से कहा। "हमारा प्यारा लाल बुखार है। सो भी कितना प्यारा अपने स्पष्ट रूप म किसी विद्यार्थी के लिए, हर पाठ्यपुस्तक मे वर्णित अपने लक्षणो के साथ। किस काम के हैं हम और आप? सब कुछ ही भूल गये? मत मा की बाहो से बच्ची तो वोलोद्या ने ही मुक्त की थी। बच्ची को तो लाल बुखार है। हे भगवान, कितनी शर्म की बात है! जरा जिस्म पर निकले दानो को तो देखिये – छाती और पेट पूरी तरह इनसे भर हुए हैं। और चेहरे पर लाल बुखार की 'तितली' भी साफ दिखाई दे रही है। तो यह किस्सा है, साथी प्रोफेसर"

"हुम," वारिनोव ने कहा। "बूढो की अक्ल भी कभी-कभी घास चरने चली जाती है। शायद पाशा को जगाना होगा, हवाई जहाज म जाकर सीरम ले आये। हमने तो सारी सीरम उस बच्ची पर ही खत्म कर दी है।"

पाशा को जगाया गया।

कुछ देर बाद तूश ने धीरे-से पूछा –

"तो उसे प्लेग तो नही है न, साथी प्रोफेसर?"

"नही प्यारी, यह लाल बुखार है!" शुमीलोव ने जवाब दिया और उसका पूरा चेहरा खुशी से चमक रहा था। "यह तो लाल बुखार है, प्यारा लाल बुखार!"

वारिनोव अभी तक वोलोद्या की ओर देखते जा रहे थे।

वे अचानक कह उठे –

'जानते हैं मेरे दिमाग में क्या ख्याल आया है, साथी शुमीलोव? वहां, भोजनालय में शेम्पेन की एक बोतल रखी है। चलिये, चलकर उसे पियें। हमारी जगह लेनेवाली नयी पीढ़ी के लिए! वोलोद्या जैसे नौजवानों के स्वास्थ्य के लिए!"

ये दोनों चले गये और तूश यहीं रह गयी। देर तक वह वोलोद्या की सरसाम में बड़बड़ाते सुनती रही और फिर उसका बड़ा सा गर्म हाथ अपने हाथ में लेकर उसने उसे चूम लिया

सुबह को प्रोफ़ेसर बारिनोव का पूरा दल खारा चला गया। उसी दिन तीनों भारी हवाई जहाज़ खारा के मैदान से उड़े, उन्होंने नगर को विदा कहने के लिए उसके ऊपर एक चक्कर लगाया और मास्को की ओर उड़ चले। डाक्टरों का यह दल मूसलधार बारिश में अचानक ही चला गया और केवल टोडजीन ने उन्हें विदा किया।

"इन्हें सबसे आखिरी खेमे में ले जाइये," वोलोद्या इसी वक्त सरसाम में बड़बड़ा रहा था। "सबसे आखिरी खेमे में। और वहां सब के आने-जाने की मनाही कर दीजिये। मनाही कर दीजिये!"

• • •

अक्तूबर की दो तारीख को वोलोद्या खारा से रवाना हुआ। सुबह उसने अस्पताल का चक्कर लगाया, रोगियों और दादा अबाताई से विदा ली, तूश को ढूंढता रहा, मगर वह कहीं नज़र न आयी। पलागेया मार्केलोवा आपरेशन का कमरा धो रही थी। वोलोद्या ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए पूछा —

"कहिये, काम कैसा लगता है? ठीक है न?"

"ठीक है!" सकुचाकर नजर नीची करते हुए उसने जवाब दिया। "मुझे तो अच्छा लगता है, लेकिन सोफ़िया इवानोव्ना ..."

"सोफ़िया इवानोव्ना बहुत अच्छी औरत है!" वोलोद्या ने कड़ाई से उसकी बात बीच में ही काट दी। "और सही मानों में डाक्टर है। हम और आप उसकी आलोचना करने का हक नहीं रखते! सो यह समझ लीजिये। नमस्ते पलागेया येगोरोव्ना।'

वास्या बेलोव के साथ वोलोद्या गले मिला और तीन-तीन बार उन्होंने एक-दूसरे को चूमा।

"नया साल आते आते हम फासिस्टा को पीस डालगे!" इस नय वडे डाक्टर ने कहा। "पेट्रोल के मामल मे उनकी वडी वुरी हालत है। इसके अलावा उनके अपने देश म विस्फोट की भी आशा करनी चाहिये। मैंन इस वारे म सोचा है। आपन विचार किया?"

"हा, किया है!" वोलोद्या ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

न जाने क्या, लेकिन वोलोद्या जव भी वास्या स वात करता, तो उसका मुस्करान का मन होता।

नौ वजे वह रवाना होने के लिए वाहर निकला। सात घुडसवारा और कुछ लद्दू घोडा का कारवा तैयार था। वहुत सख्त गर्मी थी। पतझर की अप्रत्याशित गर्मी से खारा मे वडी परशानी हो रही थी। मादी-दाढ़ी डाक्टर वास्या के ऊपर छतरी किय हुए था और वोलोद्या की तरफ अव वह कोई ध्यान नही दे रहा था। सोफिया इवानाव्ना न वोलोद्या को कडी हिदायत की कि वह उसे मास्को स कुछ फाम और टँगावाली फाइले जरूर भेजे। वालोद्या ने चाहा कि वह उसे चूमकर विदा ले, लेकिन वह तिमाही रिपोट म नज़र आनवाली गडवड के कारण वहुत मल्लायी हुई थी। वोलाद्या को सोफिया इवानाव्ना के जो अन्तिम शब्द सुनाई दिये, वे ये "वडी अजीव वात है"। लकिन क्या अजीव वात है, वोलोद्या ने इसम काई दिलचस्पी जाहिर नही की।

रोगी खिडकिया म से झाक रहे थे। दादा अवाताई सामान स लदे घोडा की पेटिया कस रहा था, थला और पाटलिया का ढग स रख रहा था, हिदायत दे रहा था, सारी व्यवस्था कर रहा था। भूतपूव शमान ओगू भौह चढाकर खडा था। वालाद्या न उस अपने पास वुलाया। ओगू न विगडकर कहा—

"तुमने ऐसा वुरा क्या किया, खजडी, टोपी और डडा पानी मे, ताम्रा-खाम्रो नदी म क्यो गिरवा दिये? अव मैं तुम्हारी शुभ यात्रा के लिए कुछ भी तो नही कर सकता। क्या ऐसा किया?"

"उसके विना ही मरा काम चल जायेगा," वालोद्या मुस्कराया। "इन निकम्मी चीज़ो के वार मे भूल जाओ। टोड जीन स मिलूगा, तो कहूगा कि ओगू अव भला आदमी वन गया है। टोड-जीन वुम्ह

परिचारक बना दगा। लेकिन अगर वोदका पीने लगोगे, तो डाक्टर वास्या तुम्हे निकाल देंगे। नमस्ते।"

वोलोद्या घोडे पर सवार हो गया और इस वक्त ही उसे तूश दिखाई दी। अस्पताल के फाटक का सहारा लिये वह कापते हाथो से वोलोद्या की तरफ देखती हुई मुस्करा रही थी।

"मैं आपको पत्र लिखूगा," वोलोद्या ने एड लगाकर अपने घोडे को तूश के सामने ले जाकर कहा। "बहुत बडा खत लिखूगा मैं आपको। डाक्टर वास्या आपको पढकर सुना देंगे। ठीक है न?"

"नही ठीक है!" अपनी काली लटा को झटकते हुए उसने कहा। "जब तक आप लिखेंगे, मैं खुद अच्छी तरह पढना सीख जाऊगी। जल्दी ही तो आपका खत नही आयेगा न? ठीक कहा मैंने?"

और अपने छोटे स हाथ से वोलोद्या की रकाब थाम ली, लेकिन उसी क्षण छोड दी। कारण कि अगर नारी रकाब थामती है, तो इसका मतलब होता है कि घोडे पर वह आदमी सवार है, जो उसे प्यार करता है। मगर वोलोद्या तो उसे प्यार नही करता था।

"सब को नमस्ते!" वोलोद्या ने कहा।

कारवा चल पडा। दादा अबाताई वोलोद्या के घोडे के साथ-साथ भागने लगा। इस कारवा के घोडे धूल उडाते हुए ज्या ज्या खारा मे आगे बढते गये, त्यो-त्या लोगो की भीड अधिकाधिक होती गयी। परिचित और बहुत कम परिचित लोग वोलोद्या के घोडे के आस-पास चलते हुए उसकी ओर खट्टा पनीर बढा रहे थे, जो उन्हे मालूम था कि वोलोद्या को पसन्द है।

"यह पनीर ले लो!" वे चिल्लाकर कहते। "ले लो यह पनीर, तुम इसे मोर्चे पर खाना।"

"यह छेना ले लो!" वोलोद्या की तरफ सुखाया हुआ छेना बढाते हुए वे चिल्लाते। "यह छेना खराब नही होता। तुम इसे लडाई खत्म होते तक उपयोग मे ला सकते हो और युद्ध के बाद भी हम याद करोगे।"

"यह बारहसिगे का पनीर ले लो!" ऐसे पनीर की गालिया उसकी तरफ बढाते हुए कोई चिल्लाता। "ले लो, डाक्टर वोलाद्या!

या तुमने मुझे पहचाना नही ? तुमने तुमने मुझे तव ग्रायु से वचित नही होने दिया था, जब हम तुम्हारे ग्रस्पताल से डरते थे।"

वोलोद्या कुछ को पहचान पा रहा था, कुछ को नही पहचान पा रहा था। एक ही तरह की दढ ग्रौर सूखी-सी मुस्कान उसके हाठा पर थी ग्रौर वह जल्दी से ग्रपने ग्रासुग्रो को पी जाता था। धूल वढती गयी, ग्रधिकाधिक घनी होती गयी ग्रौर न तो किसी ने देखा ग्रौर न कोई देख ही सकता था कि डाक्टर वोलोद्या रो रहा है। शायद उसे पसीना ग्रा रहा था। हा, सचमुच ही उस दिन वहुत गर्मी थी ग्रौर वोलोद्या रूई भरी हुई जाकेट पहने था।

"तुमने खारा को काली मौत से वचाया!" लाग चिल्लाय। "हम तुम्ह कभी नही भूलेगे।"

नही, उसने नही वचाया उन्हे! ग्रकेला ग्रादमी प्लेग पर विजय नही प्राप्त कर सकता। ग्रौर वोलोद्या की ग्राखो म छलकनेवाले ग्रासू भावुकता के ग्रासू नही थे! ये कुछ ग्रजीव-से, गव के ग्रासू थे। य ग्रासू उस व्यक्ति की खुशी के ग्रासू थे, जो काली मौत पर विजय पान म समय महान देश का नागरिक था। उस महान देश का, जो ग्रजेय काली मौत, भयानक मार्मोट रोग, प्लेग पर विजय पा सकता था! ग्रौर इस वक्त खारा के लाग डाक्टर वोलोद्या उस्तिमेन्को को नही, वल्कि एक दोस्त, भाई, मजदूरा ग्रौर किसाना के देश, महनतकश जनता के देश, नेकी ग्रौर विवेक के दश के नागरिक का विदा कर रहे थे।

"तुम ग्रपने दुश्मना पर विजय पाग्रो!" कारवा को घेरे हुए भीड म से कुछ लोगा ने चिल्लाकर कहा।

"हम ग्रपने दुश्मना पर विजय प्राप्त करगे!" वालाद्या माना प्रतिज्ञा करते हुए फुसफुसाया ग्रौर उसकी ग्राखा के सामन प्राफेसर वारिनोव, डाक्टर लोवोदा ग्रौर शुमीलाव घूम गये।

"तुम्हारे देश के लोग सुखी हा, क्याकि वे इसके ग्रधिकारी हैं!"

"हा, वे सुख के ग्रधिकारी हं!" वोलाद्या ने दोहराया ग्रौर उसे हवावाज पाशा, वोगोस्लोव्स्की ग्रौर वूग्रा ग्रग्लाया याद हो ग्राय।

'ग्रपने घायला का भी तुम वैसे ही स्वस्थ करना, जस तुमन हम स्वस्थ किया!"

"हां, ज़रूर ऐसा ही करूंगा!" वोलोद्या ने मानो शपथ ली।
"फिर से यहां आ जाना, डाक्टर वोलोद्या!"

घोड़े हिनहिना और डर रहे थे, लोगों की भीड़ लगातार बढ़ती चली जा रही थी। खारा से बाहर निकलते समय वोलोद्या को लाम्ज़ी का पिता दिखाई दिया, जो अपने शिकारियों के साथ रास्ते से कुछ ऊंचाई पर खड़ा था। शिकारियों की संख्या काफ़ी थी, कोई पचास और हर कोई अपने घोड़े के अयालों पर बन्दूक टिकाये था। उन्होंने दो बार हवा में गोलियों की बौछार के साथ वोलोद्या का स्वागत किया। इसके बाद उनके बढ़िया, छोटे छोटे और घने अयालोंवाले घोड़े इस उद्देश्य से कारवां के आगे आगे भाग चले कि दूरस्थ शिविरों के ख़ानाबदोशों को सोवियत डाक्टर वोलोद्या की विदाई के लिए तैयार हो जाने की सूचना दे दें।

और ख़ानाबदोश इसके लिए तैयार हो गये थे। वोलोद्या बहुत ग़ौर से उनके चेहरों को देख रहा था, यह याद करने की बड़ी कोशिश कर रहा था कि इनमें से कौन उसके दवाखाने में आया था, किसके रोग की उसने उसके ख़ेमे में जांच की थी, किसका आपरेशन किया था और किसे अस्पताल में रखकर चिकित्सा की थी।

मगर वह पूरी तरह से किसी को भी नहीं पहचान पा रहा था। अब वे सभी मुस्करा रहे थे, पर जिस वक़्त वोलोद्या का उनसे वास्ता पड़ा था, पीड़ाग्रस्त थे। अब वे फिर सबलाये हुए और हृष्ट पुष्ट थे, किन्तु जब उसके पास लाये गये थे, तो दुबले पतले थे, चेहरों पर पीलापन था। अब वे अपने घोड़ों की लगामें खींचे थे, मगर तब लेटे हुए थे या उन्हें सहारा देकर अथवा स्ट्रेचरों पर डालकर लाया गया था। भला क्या वह अब यह जान सकता था कि इन घुड़सवारों में से उसने किस किस की "आयु बचायी" थी।

वैसे इस बात का कोई महत्त्व भी नहीं था। महत्त्व की बात तो दूसरी, और यही थी कि यहां उसने अपना काम किया था। लगातार अपना काम किया था और अपनी पूरी ताक़त लगाकर। और लोग यह समझते भी थे। शायद जो आँपरेशन उसने किये थे, उनमें से कुछ तो बेहतर हो सकते थे, फिर भी यहां के लोगों का "कुछ" भला तो हुआ ही था।

"कुछ!" वोलोद्या सोच रहा था। "बहुत ही मामूली! लेकिन प्रोफेसर वारिनोव के दल का काम—क्या यह कुछ कम महत्त्व रखता है? और मैं उसका एक अंश था। सारे काम का एक अंश, अपने देश का एक अंश!"

और वह दूरी पर उन पहाड़ों, उस दिशा की तरफ देख रहा था, जहां युद्ध की ज्वालाएं धधक रही थी और जहां वह काम उसकी राह देख रहा था, जिसे उसने अपने को समर्पित कर रखा था।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये

प्रगति प्रकाशन, २१, जूबोव्स्की
बुल्वार, मास्को, सोवियत संघ।

प्रकाशित हो चुकी हैं

गोर्की, मक्सिम, "मेरा बचपन" (उपन्यास)

"मेरा बचपन" गोर्की की आत्मकथात्मक उपन्यासत्रयी की पहली पुस्तक है। समाजवादी क्रांति के पूर्व लिखित यह कृति आज भी सोवियत तथा विदेशी पाठकों में अत्यंत लोकप्रिय है। इसका प्रत्येक संस्करण बड़ी संख्या में प्रकाशित किया जाता है और संसार की कितनी ही भाषाओं में इसका अनुवाद किया जा चुका है। इस पुस्तक में साधारण स्थिति के माता पिता के एक बच्चे अल्योशा पेश्कोव की आंखों से, जो अपने आसपास के लोगों पर बड़े ध्यान से दृष्टिपात करता है, पाठक उन्नीसवीं सदी के अंतिम चरण के पुराने निरंकुश रूस की दुनिया को देखते हैं। इस पुस्तक में भावी लेखक को "इस दिलचस्प, गो मुश्किल ज़िंदगी" में लानेवालों का बड़ी हार्दिकता के साथ वर्णन किया गया है। पूरी पुस्तक गोर्की के सामान्य जन में उत्कट विश्वास से और उसके अंतर के सौंदर्य और भव्यता से ओतप्रोत है।